Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलते जमाने का आगाज़

जमाना बदल गया-2

गुरुदत्त

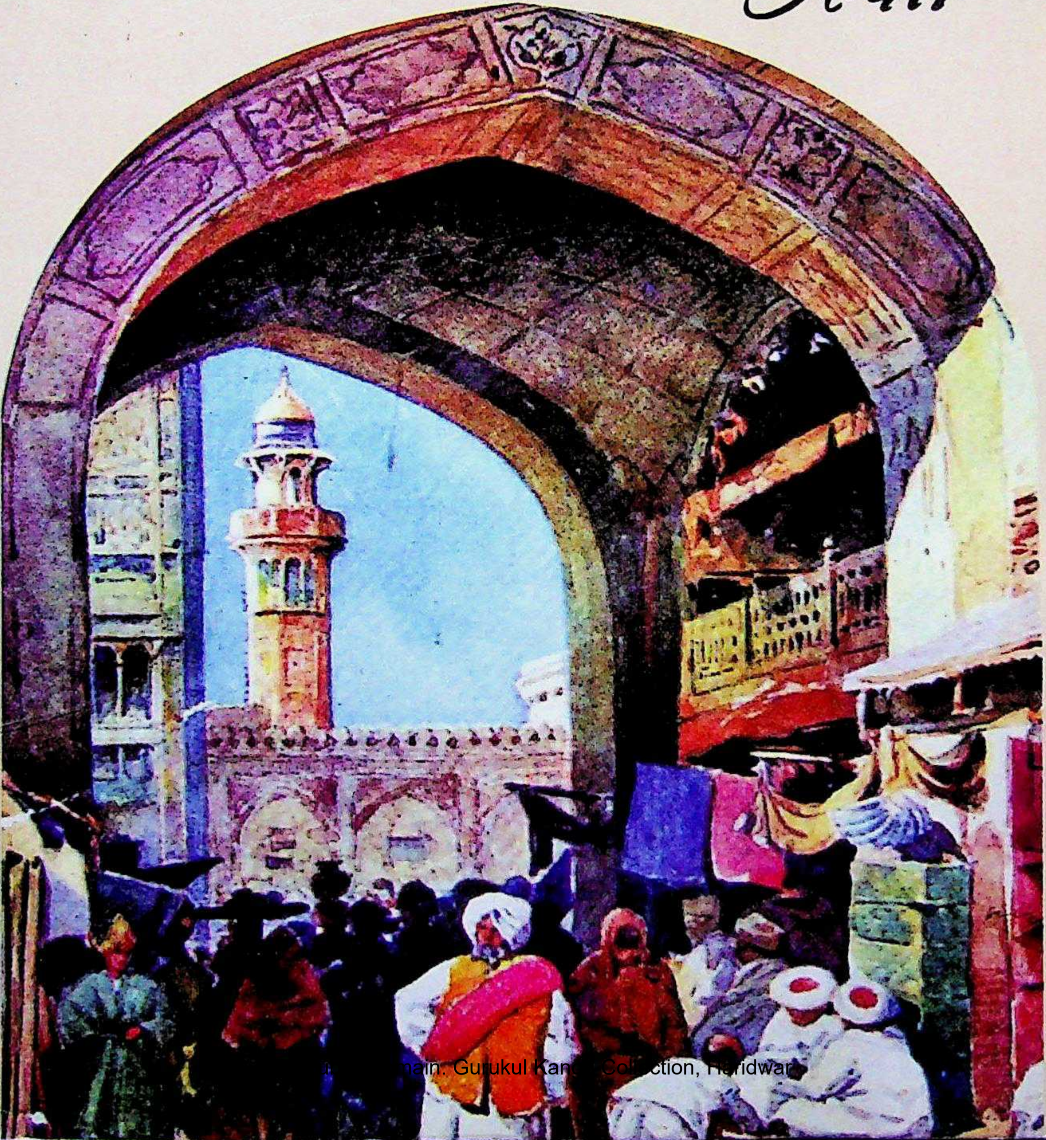

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167946
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलते जमाने का आगाज़

जमाना बदल गया भाग-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलते जमाने का आगाज़

जमाना बदल गया भाग–2

Central Library
167946
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
167946

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-B

बदलते जमाने का आगाज़

जमाना बदल गया भाग–2

© ईशान दत्त

मूल्य	:	रु. 550/–
संस्करण	:	प्रस्तुत रूप में प्रथम बार 2020
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
ई–मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	9213527666, 07065618655, 011–23553624
ऑफिशियल व्हाट्सऐप	:	9213527666
पृष्ठ संयोजन	:	विकास सैनी (09971840182)
मुद्रक	:	गोयल एन्टरप्राइसिस, नोएडा

Badalte Jamane Ka Agaz (Jamana Badal Gya Part-2)

By Guru Dutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्रम विषय	पृष्ठ
भूमिका	7
1. प्रथम परिच्छेद	11
2. द्वितीय परिच्छेद	104
3. तृतीय परिच्छेद	190
4. चतुर्थ परिच्छेद	304
5. पंचम परिच्छेद	419

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

इस उपन्यास के प्रथम भाग की भूमिका में हमने अतीव संक्षिप्त रूप में यह बताने का यत्न किया था कि भारत की दासता का कारण एक ओर तो बौद्ध–जैन मीमांसा तथा दूसरी ओर नवीन वेदान्त है। जहाँ बौद्ध–जैन मतावलम्बी भारत के जन–मानस को वेदों से पृथक् करने के लिए यत्नशील रहे, वहाँ नवीन वेदान्तियों ने जन–मानस को वेदों से दूर तो नहीं किया, परन्तु वेदों को जन–मानस से दूर कर दिया। हमारा अभिप्राय यह है कि वेदों के स्थान पर उपनिषद और गीता को लाकर प्रतिष्ठित कर दिया। यह एक विडम्बना–सी प्रतीत होती है कि स्वामी शंकराचार्यजी ने अपने प्रस्थानत्रयी के भाष्य में अनेक स्थलों पर वेद–संहिताओं को कर्मकाण्ड की पुस्तकें कह कर उन्हें केवल अज्ञानियों के लिए स्वर्गारोहण के निमित्त बताया है। परन्तु किसी भी स्थल पर संहिताओं का प्रमाण नहीं दिया। एक ढंग से चारों वेदों को, जिनका नव–संकलन श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यासजी ने किया था, उन्होंने अनादर की वस्तु बना कर केवल उपनिषदों को ही परम ज्ञान की वस्तु सिद्ध करने का प्रयास किया है।

इस प्रकार अनजाने में अथवा जानबूझ कर श्री शंकराचार्यजी ने वही कुछ किया जो बौद्ध और जैन मतावलम्बियों ने किया। अर्थात् भारत के जन–मानस को वैदिक–साहित्य से पृथक् करके रख दिया। इतिहासवेत्ता यह भी जानते हैं कि श्री गौड़पादाचार्य और श्री शंकराचार्यजी के जन्म से पूर्व ही हिन्दू सनातन–धर्म ने इस देश से बौद्धों को निष्कासित कर दिया था। इन महानुभावों ने तो तत्कालीन हिन्दू–धर्म में बौद्ध–धर्म की मूल बात, कि वेदों को छोड़ो, का पुनः समावेश ही किया था और इसी कारण कई विद्वान् इन दोनों को प्रच्छन्न अर्थात् छिपे हुए क्रियाशील बौद्ध ही मानते हैं।

जन–मानस को वेद–वेदांगों और पुराण इतिहास से पृथक् करने का परिणाम यह हुआ कि ज्ञान–विज्ञान, आचार–विचार, जो कुछ भी वैदिककाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से चला आता था, वह सब विलुप्त हो गया। नवीन परम्पराएँ और ज्ञान–विज्ञान तथा आचार–संहिता बन नहीं सकीं और मानव सहस्रों वर्ष के प्रयास से संकलित ज्ञान–विज्ञान, कला–साहित्य से वंचित होकर अकिंचन हो गया।

इस प्रकार की अकिंचनता का परिणाम अति भयंकर हुआ और हिन्दू–मानस दासता की ठोकरें खाता हुआ भी जाग नहीं सका। हमारा यह कहना है कि सात–सौ वर्ष के इस्लामी राज्य के बाद भी यदि हिन्दू–मानस पुनः स्वाभिमानयुक्त, बुद्धिशील और परिवर्तित युग के अनुकूल नहीं बन सका तो हिन्दू–धर्म में नवीन–वेदान्त का प्रबल पुट लग जाने के कारण ही ऐसा नहीं हो सका।

श्री अरविन्द ने वेदों पर अपनी पुस्तक में लिखा है कि भारतवर्ष में पूरे दो सहस्र वर्ष में केवल एक व्यक्ति पैदा हुआ है, जो भारत के जन–मानस को वेदों से जोड़ने के लिए यत्नशील हुआ है और वह स्वामी दयानन्द थे। स्वामी दयानन्द के वेदार्थों से भले ही कोई सहमत न हो, परन्तु यह निर्विवाद है कि भारत के जन–मानस को वेद–संहिताओं अर्थात् ऋक्, यजुः, साम, अथर्व से जोड़ने का यत्न स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त इतनी सुदीर्घ अवधि में किसी ने नहीं किया।

बौद्ध तथा जैन मतावलम्बियों ने तो वेदों को तिरस्कृत माना। नवीन वेदान्तियों ने वेदों के स्थान पर उपनिषदों को लाकर बैठा दिया और वैष्णव मतावलम्बी भी वेद के नाम को तो ग्रहण किए रहे, परन्तु उनको जन–साधारण के लिए दुर्गम्य कह कर पौराणिक साहित्य को ही प्राथमिकता देने का यत्न करते रहे। दो सहस्र वर्ष में महर्षि स्वामी दयानन्द ही एक ऐसे व्यक्ति हुए, जिन्होंने भारतवासियों की दृष्टि वेद–संहिताओं की ओर ले जाने का यत्न किया।

स्वामीजी के इस प्रयास का फल भी हुआ। संस्कृत और अंग्रेजी के अनेक विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ और वेदों में अनुसंधान और वैदिक–साहित्य का अन्वेषण होने लगा। साथ ही इसको मानव–ज्ञान की सर्वोत्कृष्ट उपज भी कहा जाने लगा। स्वामी दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने ईसाई पादरियों के भारत के इतिहास, शास्त्र और वेद–ज्ञान को कलंकित करने के षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ किया था।

परन्तु देश का दुर्भाग्य अभी छूटा नहीं था। स्वामीजी के इस आह्वान पर जब विद्वानों का ध्यान आकर्षित होने लगा तो स्वामीजी की उत्तराधिकारिणी संस्था आर्य–समाज ने अपनी पूर्ण शक्ति उस शिक्षा के प्रसार में लगा दी जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वेदों को गपोड़, हीन मानव–मन की बकवास तथा थर्ड–रेट कविता की पुस्तक बताती थी। स्वामीजी की, देश के प्राचीन ज्ञान–विज्ञान तथा अध्यात्म पर अगाध श्रद्धा थी। वे परम देश–भक्त थे और वैदिक संस्कृति के प्रशंसक थे। परन्तु आर्यसमाजी स्कूलों में पढ़ाया जाने लगा, 'मनुष्य बन्दर सदृश जन्तु की सन्तान है। आदि–मानव किसी सर्वसत्य का प्रतिपादन करने वाला नहीं, प्रत्युत एक जंगली, गुफाओं में रहने वाला प्राणी था।'

जो कुछ स्वामीजी कहते थे, उनके नाम पर पैसा एकत्रित करने वाले, उससे सर्वथा विपरीत करने लगे। एक समय ऐसा भी आया कि जब देश–भक्त स्वामीजी के शिष्य सरकारी स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा पा कर एक विदेशीय सरकार की जड़ों को भारत में सुदृढ़ करने में लग गए।

आर्य–समाज का प्रभाव सबसे अधिक पंजाब में रहा और पंजाब के प्रायः कांग्रेसी नेता अंग्रेजी सरकार के तो विरोधी हुए, परन्तु वहाँ पर इस्लामी राज्य स्थापित करने वाले बन गए। क्या यह आश्चर्य का विषय नहीं कि गुरुकुल कांगड़ी के एक प्रमुख स्नातक पंजाब सरकार के मंत्री बन, पंजाब राज्य में कम्युनिज्म के प्रचारक और प्रसारक सिद्ध हुए? हिन्दी के स्थान पर वे गुरुमुखी लिपि के समर्थक बन गये।

हमारा दृढ़ मत है कि यह सब उस शिक्षा के दोष के कारण हुआ है। आर्य–समाज, जनता के लाखों रुपए स्वामी दयानन्द के नाम पर एकत्रित कर उसका दुरुपयोग करता रहा है।

'जमाना बदल गया' का द्वितीय भाग भारत के उस काल की पृष्ठभूमि पर लिखित उपन्यास है, जब अंग्रेजी सरकार अपने पूरे बल से भारत की शिक्षा को वह रंग दे रही थी, जिससे भारत का जन–जन देश, भारतीयता और धर्म का द्रोही हो जाये और देश की सब शक्तियाँ आर्य–समाज से लेकर महात्मा गांधी तक–सरकार के इस कार्य में स्वेच्छा से तथा सहर्ष सहयोग दे रही थीं।

जमाना बदल रहा था। परन्तु किस ओर? यह इसी पुस्तक के तीसरे भाग में पढ़ने को प्राप्त होगा। यह द्वितीय भाग तो प्रथम तथा तृतीय भाग की कड़ी मात्र है।

1857 में, सात सौ वर्ष के मुसलमानी राज्य के बाद भी हिन्दू–मन 1927 के हिन्दू–मन से अधिक नेक, सत्यवादी और देशभक्त था। वह अधिक धर्मपरायण था और हिन्दू–संस्कृति का भक्त था। सत्तर वर्ष में हिन्दूपन में भारी हीनता आई है। क्यों? लेखक का मत इस उपन्यास में पढ़ने के लिए उपलब्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास होने से इसके पात्र, इसमें वर्णित स्थान और औपन्यासिक घटनाएँ काल्पनिक हैं। इसमें तत्कालीन कुछ महापुरुषों और नेताओं के विचार लिखे हैं। ये उनके जीवन–चरित्रों से लिए गये हैं और कुछ लेखक के अपने अनुभव के परिणाम हैं। यह सम्भव है कि किसी अन्य का अनुभव, और घटनाओं के परिणामों का अनुमान भिन्न हो। इस पर भी यह एक दृष्टिकोण है। इससे किसी के मानापमान का सम्बन्ध नहीं है।

–गुरुदत्त

दिसम्बर, 1962

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

''1857 के स्वतन्त्रता–संग्राम को बीते आज पचास वर्ष हो रहे हैं। अतः इस संग्राम की अर्ध–शताब्दी मनाने के लिए आज हम यहाँ एकत्रित हुए हैं। मुझसे पूर्व प्रो. लेखराज ने आपको उस संग्राम का संक्षिप्त विवरण सुनाया है। हम इतिहास के विद्यार्थी उस विवरण से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और उस महायज्ञ में अपने–आपको स्वाहा करने वालों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने मन में संकल्प कर सकते हैं। हमारा यह दृढ़ सकल्प होना चाहिए कि जिस प्रयास में उस समय सफलना प्राप्त नहीं हो सकी थी, उसको प्राप्त करने के लिए हम निरन्तर प्रयत्न करते रहेंगे। स्वराज्य परम–पवित्र अधिकार है, जिसे प्राप्त करने के लिए प्रत्येक जाति को कटिबद्ध रहना चाहिए। साथ ही हमको अपना प्रयत्न ऐसे ढंग से चलाना चाहिए कि हम उन भूलों की पुनरावृत्ति न कर सकें, जिनके कारण वह प्रयास असफल हुआ था।''

लाहौर के कूचा मुहयालाँ में एक छोटे–से मकान के छोटे–से कमरे में दस–ग्यारह युवक बैठे गोष्ठी कर रहे थे। उस गोष्ठी में बैठे मास्टर कृपाराम उक्त वक्तव्य दे रहे थे। मास्टर कृपाराम डी.ए.वी. स्कूल में इतिहास पढ़ाते थे और इन उपस्थित युवकों में से प्रायः सब उनके शिष्य ही थे। प्रोफेसर लेखराज, जो 1857 के स्वतन्त्रता–संग्राम का संक्षिप्त इतिहास सुना चुके थे, मास्टरजी के परम मित्रों में से एक थे। यह गोष्ठी मास्टर कृपाराम जी के घर पर हो रही थी।

उपस्थित युवक सातवीं, आठवीं, नौवीं और दसवीं श्रेणी के कुछ विद्यार्थी ही थे। 10 मई 1907 का दिन था। मास्टरजी का, आज स्कूल जाते–जाते 10 मई की ओर ध्यान चला गया और वे स्कूल में नियमित पाठ पढ़ाने के स्थान पर 1857 के स्वतन्त्रता–संग्राम के विषय में बताने का संकल्प कर बैठे। वे आज इसी का इतिहास सुनाते रहे। इतिहास से प्रेरणा पाने वाले किसी विद्यार्थी की भाँति वे भारत की इस पुण्य–तिथि की स्मृति में विद्यार्थियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बताते–बताते उमंगों से भर जाते थे और झाँसी की रानी तथा ताँतिया टोपे के शौर्यपूर्ण कृत्यों का उल्लेख करते–करते उनके नेत्र तरल हो जाते थे।

सदानारायण अपने ताया रामरक्खामल्ल से भी इस संग्राम की अनेक घटनाओं का विवरण सुन चुका था और इसके विषय में अपने मन में एक चित्र बना चुका था। अपनी इतिहास की पुस्तक में लिखे और अपने ताया के मुख से सुने वर्णन में अन्तर देख कर वह मन में संशय अनुभव किया करता था। आज मास्टर को श्रेणी में इस विषय पर विस्तार से कहते सुन, उसके मन के संशय उभर आये थे और वह शंका–समाधान के लिए व्याकुल हो उठा। मास्टरजी का वक्तव्य पूर्ण होने से पूर्व ही, उसने अपना हाथ खड़ा कर, उनका ध्यान आकर्षित कर पूछ लिया–

"मास्टरजी! आप कहते हैं कि 1857 में जो विद्रोह हुआ वह स्वतंत्रता के लिए युद्ध था, परन्तु हमारी पाठ्य–पुस्तक में लिखा है कि यह केवल सैनिक–विद्रोह था और विद्रोहियों को पकड़–पकड़ कर कठोर दण्ड दिया गया था। इसमें कौन–सी बात ठीक है और कौन–सी गलत?"

मास्टर कृपाराम इस प्रश्न का उत्तर देना चाहता था, परन्तु 1907 के अप्रैल मास में लाहौर में पकड़–धकड़ के बाद यह स्पष्ट आदेश मिल चुका था कि स्कूल में स्कूल की पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ नहीं पढ़ाया जाय। यह स्मरण कर वह गम्भीर हो सदानारायण का मुख देखने लगा। वह यह भली–भाँति जानता था कि सदानारायण श्रेणी का सब से योग्य विद्यार्थी है और उसको बातों में टालना न तो सम्भव होगा न ही उचित। इस कारण उसके मन में घर पर एक गोष्ठी बुलाने का विचार आ गया। उसने कह दिया, "मैं जो कुछ कहता हूँ, उसे सुन लो और फिर यदि किसी विषय में शंका हो तो मेरे घर पर आज सायं छः बजे एक गोष्ठी होने वाली है, वहाँ आ जाना, मैं समाधान करने का यत्न करूँगा।"

मास्टर कृपाराम ने उसी समय कुछ मुख्य–मुख्य विद्यार्थियों को गोष्ठी में आने का निमन्त्रण भी दे दिया।

ठीक छः बजे ये लोग उपस्थित हुए तो प्रोफेसर लेखराज ने आधा घंटा–भर उस संग्राम के करणों, उसकी गतिविधियों और उसके परिणामों पर वक्तव्य दिया। मास्टर कृपाराम ने अन्त में विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उपरलिखित वक्तव्य दिया।

सदानारायण से नहीं रहा गया। उसने वही प्रश्न जो उसने श्रेणी में पूछा था, यहाँ भी पूछ लिया। अब मास्टर ने इसका उत्तर देते हुए कहा, "यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
संग्राम ही था और देश को स्वतन्त्र करने के लिए था। देश को स्वतन्त्र करना धर्म–कार्य था। इस कारण यह धर्म–युद्ध था।''

''परन्तु मास्टरजी! धर्म–युद्ध में तो पराजय नहीं होती। हमारे शास्त्र में लिखा है–

'न चैव शक्यं संयन्तु यतो धर्मस्ततो जयः।'

''इससे तो स्कूल की पुस्तक में लिखी बात सत्य प्रतीत होती है। यह विद्रोह ही था, धर्म–युद्ध नहीं।''

मास्टर को कुछ इसी प्रकार की बात की आशंका थी। वह सदानारायण के स्वभाव से परिचित था। इसलिए वह उत्तर के लिए तैयार था। उसने कह दिया, ''सदानारायण! शास्त्र ठीक कहता है, परन्तु यह भी सत्य ही है कि यह युद्ध भी धर्म–युद्ध ही था। हाँ, इसको चलाने वाले व्यक्ति धर्मात्मा नहीं थे। आततायी के विपरीत युद्ध करना धर्म–युद्ध ही कहाता है। परन्तु, युद्ध का संचालन करने वाला भी तो धर्मात्मा होना चाहिये? और इसमें कार्य करने वाले नेता चरित्र से भी धर्मात्मा नहीं थे तथा वे इस कार्य को धर्म समझ कर भी नहीं कर रहे थे।''

''इसमें कौन लोग नेता थे और उनमें क्या खराबी थी?''

''इसमें मुसलमान सम्मिलित थे। वे बहादुरशाह जफर को अपना सम्राट समझते थे। इस सम्राट के पूर्वज और मुसलमान सात सौ वर्ष तक भारतवर्ष पर पापमय राज्य कर चुके थे। 1857 में मुसलमान शक्तिहीन हो चुके थे और अपने पूर्व–कर्मों से बदनाम हो चुके थे।

''इस संग्राम में मराठे सरदार सम्मिलित थे। वे भी अपने काल में भारी अत्याचार और अनाचार कर चुके थे। मराठे सरदार परस्पर एक–दूसरे के शत्रु थे। एक–दूसरे को पराजित करने के लिए पहले मुसलमानों और पीछे अंग्रेजों से, जो देश के शत्रु थे, सहायता लेते रहे थे।

''भारत का भाग्य बदलने वाला मराठों और मुहम्मदशाह अब्दाली के मध्य पानीपत का तृतीय युद्ध था। मरहठे केवल इस कारण हारे थे कि वे परस्पर द्वेष रखते थे। आपस की शत्रुता और स्वार्थ के हेतु उन्होंने मराठों की पराजय करा दी थी। जन–जन उनके देश और जाति से प्रेम पर सन्देह करता था।

''पराजय का सबसे बड़ा कारण यह था कि मराठों ने अपने प्रभुत्वकाल में अपने साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी की हिन्दूपद–पादशाही का आदर्श भूलकर सिंधिया, होल्कर अथवा पेशवाओं की समृद्धि का आदर्श मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में स्थापित कर लिया था। इन मराठों ने सदा अपने स्वार्थ के लिए मुसलमानी सुलतानों और निजामों से सुलह की और देश के अन्य भागों की हिन्दू–शक्तियों की अवहेलना की थी।

"1857 का प्रयास तो स्वतन्त्रता का संग्राम ही था। यह धर्म–युद्ध भी था। यह देश को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आततायी राज्य से बचाने के लिए किया गया था।

"अपने उद्‌देश्य में यह एक सीमा तक सफल भी हुआ था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का राज्य इस युद्ध के कारण ही समाप्त हुआ था, परन्तु हिन्दुस्तानी राज्य स्थापित नहीं हो सका। कारण स्पष्ट है कि मराठे बिना मुसलमानों के, युद्ध चलाने में सफल नहीं हुए और मुसलमान स्वतः मृतप्राय थे और मराठों के आश्रय ही विजय प्राप्त करने की आशा कर रहे थे। यों दोनों एक–दूसरे के घोर शत्रु थे। कहीं ये विजय प्राप्त कर भी लेते तो उस विजय के बाद वे पुनः परस्पर लड़ते और एक–दूसरे को मार–काट कर समाप्त करने का यत्न करते।"

सदानारायण ने पूछा, "ऐसा क्यों होता?"

"यह इस कारण कि मुसलमान स्वेच्छा से किसी गैर–मुसलमान के राज्य में रहना नहीं चाहता। यह इनके मजहब में मान्य नहीं। इनके यहाँ देशीय और विदेशीय का विचार नहीं, प्रत्युत दाराउल–हरब और दाराउल–इस्लाम का प्रश्न है।"

"परन्तु मास्टरजी! यदि मुसलमानों से मिल कर यह युद्ध न किया जाता तो क्या आप समझते हैं कि अधिक सफलता मिलती?"

"सदानारायण! जो बात बीत गयी, उसमें मीन–मेख निकालने से कुछ अधिक लाभ नहीं। यह यदि होता तो क्या होता और वह होता तो क्या होता? विचार करने से लाभ नहीं। परन्तु आगे के लिए विचार करने के लिए मुसलमानों के विषय में विचार करने की नितान्त आवश्यकता है।

"मैं समझता हूँ भारत में राष्ट्र हिन्दू है। हिन्दू के नाम पर ही जो युद्ध लड़ा जायेगा, वही सफल होगा।

"आज देश में कांग्रेस नाम की एक संस्था है। वह संस्था स्वराज्य–प्राप्ति के लिए यत्न नहीं कर रही। इस पर भी उसमें कुछ लोग ऐसे हैं, जो उस संस्था का लक्ष्य स्वराज्य–प्राप्ति बनाना चाहते हैं। धीरे–धीरे वे लोग कांग्रेस में बल पकड़ रहे हैं। ज्यों–ज्यों देश के सामने अंग्रेजों से स्वराज्य–प्राप्ति का प्रश्न प्रमुख बनता जाता है, त्यों–त्यों मुसलमान अंग्रेजों से गठजोड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य के विरोधी बनते जाते हैं।

''मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिलकर कभी भी न तो स्वराज्य–प्राप्ति के लिए और न ही स्वराज्य के भोग के लिए तैयार होंगे। इसी कारण महर्षि स्वामी दयानन्द ने यह कहा था कि इस देश में सर्वप्रथम एक धर्म होना चाहिए और तदनन्तर यहाँ स्वराज्य होना चाहिये।''

''तो मुसलमानों के साथ मिल कर स्वराज्य–प्राप्ति का यत्न करना ठीक नहीं था?''

''नहीं, वह उस समय भी ठीक नहीं था और अब भी ठीक नहीं है।''

सदानारायण का समाधान हो गया। उसका ताया रामरक्खामल्ल भी यही कहा करता था। इस पर उसने अपनी बाल–बुद्धि से विचार कर एक प्रश्न पूछ लिया, ''क्या यह ठीक नहीं कि पहले अंग्रेजों से मिल कर मुसलमानों को समाप्त कर लिया जाये और फिर अंग्रेजों को देश से निकाला जाये?''

''नहीं। एक पाप से छूटने के लिए दूसरे पाप का सहयोग तो कभी भी उचित नहीं कहा जा सकता। एक ही उपाय है कि धर्म की शक्ति को प्रबल बनाया जाये। तब धर्म एक ओर होगा और पाप दूसरी ओर। और धर्म की विजय होगी और पाप की पराजय।

''मराठे 1857 में यही भूल कर रहे थे। एक आततायी को परास्त करने के लिए वे दूसरे आततायी से सहयोग करने लगे थे। अतः पराजय निश्चित थी।''

''परन्तु मास्टरजी! अब तो मुसलमान हिन्दुओं का विरोध नहीं करते। हमारे पड़ोस में एक हुसैनबख्श ठेकेदार रहते हैं। उनके लड़के की शादी थी और हमारे पिताजी को उसमें सम्मिलित होने का निमन्त्रण आया था। ठेकेदार साहब ने अपने सब हिन्दू–मित्रों को मिठाई एक हिन्दू दूकानदार से लेकर एक हिन्दू के ही हाथ से भिजवाई थी।''

''इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। तुमको स्मरण है क्या कि जिला कचैहरी में तुम्हारे ताया की हत्या करने का यत्न किया गया था। जानते हो, यह क्यों किया गया?''

सदानारायण को इस बात की स्मृति थी। इससे उसने कह दिया, ''जी, याद तो है। परन्तु यह क्यों किया गया? यह हुसैनबख्श भी उनमें सम्मिलित थे, जिन्होंने तायाजी पर आक्रमण किया था।''

''हाँ, उस व्यवहार में और दूसरे व्यवहार में कोई समानता नहीं है। इस मिठाई बाँटने से 'तम्बोल' मिलता है। कल को हुसैनबख्श की लड़की का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह होगा तो तुम्हारे पिता उसको भेंट देंगे। इसमें मजहब का विरोध नहीं हो रहा। न मिठाई बाँटने में न तम्बोल और भेंट लेने में। परन्तु ज्योंही इन मुसलनानों को पता चलेगा कि अब राज्य हिन्दुओं के हाथ में जा रहा है तो उस राज्य में इनके लिए रहना हराम हो जायेगा। यह उनका मजहब कहता है।''

''तो फिर क्या किया जाय?''

''केवल एक ही उपाय है। देश में धर्म की शक्ति को प्रबल करना चाहिये। धर्म की विजय कराने के लिए ही युद्ध करना चाहिये। उस युद्ध में ही विजय होगी।

''यों तो प्रत्येक प्रयत्न अपना फल लाता है और 1857 का प्रयत्न भी अपना फल लाया था। ईस्ट इण्डिया कंपनी का राज्य हटा और बिटिश सम्राट अर्थात् इंग्लैंड की पार्लियामैण्ट का राज्य कायम हुआ था।''

''तो क्या यह परिवर्तन बहुत अच्छा था?''

''बहुत अच्छा तो नहीं कहा जा सकता। इस पर भी यह परिवर्तन ठीक दिशा में ही था। इसमें हमने अनेक नयी बातें सीखीं और शासन में भी बहुत सीमा तक सुधार हुआ।''

गोष्ठी के उपरान्त मास्टरजी ने उपस्थित बच्चों में भुने चने और गुड़ बाँटा। सब ने खाया और ठंडा पानी पिया। तदनन्तर विद्यार्थी अपने-अपने घरों को चल दिए।

सदानारायण अपने घर को जा रहा था और मन में हिन्दू-मुसलमान की समस्या पर विचार कर रहा था। वह अपनी बाल-बुद्धि से मास्टरजी की बातों का मन्थन कर रहा था। धर्म के पक्ष को बलवान बनाना चाहिए। अतः अब विचार करने पर वह सोचता था कि धर्म का पक्ष क्या है? मुसलमान भी अपने पक्ष को धर्म का पक्ष कहते होंगे। यह कैसे निर्णय हो कि धर्म का पक्ष हिन्दुओं का है। साथ ही प्रश्न यह था कि कैसे इसको प्रबल किया जाये।

जब उसका ताया लाहौर में था तो वह ऐसे संशय मन में उत्पन्न होने पर उससे समाधान करा लिया करता था। किन्तु आजकल वह बम्बई में रहता था। पिछले फरवरी-मार्च के महीने में प्लेग के कारण पूर्ण परिवार बम्बई गया था और उसका ताया रामरक्खामल्ल वहीं पर रह गया था। अपने मन में उसके अभाव को अनुभव करता दुआ वह घर पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 2 :

सदानारायण घर आया तो मोहिनी भाभी का भाई सोहनलाल उससे मिलने आया हुआ था। सोहनलाल दयालसिंह स्कूल में पढ़ता था। दोनों दसवीं श्रेणी में पढ़ते थे। इससे दोनों में एक प्रकार का लगाव हो गया था। सोहन जब भी बहन से मिलने के लिए आता था, सदानारायण से मिल कर जाया करता था।

आज वह आया तो सदानारायण घ़र पर नहीं था। उसने अपनी बहन से पूछा तो बहन ने बताया, "वह कह रहा था कि आज 10 मई है और उनके मास्टर के घर में एक गोष्ठी है। वह आठ बजे आयेगा।"

इससे तो सोहनलाल के मन में सदानारायण से मिलने की इच्छा और भी बढ़ गई। वह बातें करता हुआ बैठा रहा। वह अभी बैठा ही था कि नीचे दरवाजा खटखटाने का शब्द हुआ। वह उठ कर खिड़की में से झाँक कर देखने लगा। एक मुसलमान स्त्री बुर्का पहने खड़ी दरवाजा खटखटा रही थी। उसने बहन को बताया तो मोहिनी समझ गई कि जवाहरलाल के मित्र शमशाद खाँ के परिवार में से कोई हो सकता है। अन्य किसी मुसलमान परिवार से उनका ऐसा सम्बन्ध नहीं था कि कोई औरत इस प्रकार अकेली उनके घर में आ सके।

इससे वह उठी और नीचे उतर आई। आज घर में लेखवती नहीं थी। सतवन्ती और लाजवन्ती तो इस प्रकार अपरिचित को द्वार खोलने कभी जाती नहीं थीं।

मोहिनी ने द्वार खोला तो उस औरत ने बुर्का उठा लिया। यह शमशाद की सौतेली माँ सुल्ताना थी। मोहिनी ने पहचाना तो कहा, "ओह! आप? कहाँ घूम रही हैं यहाँ?"

पूर्व इसके कि सुलताना किसी प्रकार का उत्तर दे, मोहिनी ने बैठक खोल दी और कहा, "आइये, बैठिये।"

सोहन उत्सुकता से देखता हुआ बहन के पास खड़ा था। मोहिनी ने सुलताना को बैठाया और सोहन से कहा, "सोहन! जाओ माताजी तथा बहन साधना को बुला लाओ।"

सोहन अपनी बहन की सास को बुलाने गया तो मोहिनी ने पूछ लिया, "कैसे आना हुआ है आप का?"

"मैं और सरवर के वालिद शरीफ लाहौर आए हैं। वे तो विलायत जा रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। वहाँ प्रिवी कौंसिल में शमशाद की अपील दायर करने का इरादा है। मैं उनको यहाँ तक छोड़ने आई थी। शमशाद से कुछ कागजों पर दस्तखत कराने थे और उससे मुलाकात भी करनी थी।''

''सरवर नहीं आई?''

''नहीं, वह शमशाद से सख्त नाराज है। उसका खयाल है कि उसने उसकी जिन्दगी खराब कर दी है।''

''विलायत में मुकदमे पर तो बहुत रुपया खर्च होगा?''

''हाँ, मुकदमे पर खर्च का रुपया मैं दे रही हूँ और वकील साहब अपने विलायत जाने का खर्च खुद कर रहे हैं।

''हकीकत में वकील साहब भी शमशाद में अब कुछ दिलचस्पी नहीं रखते। यह तो मैंने कहा था कि हमें उसको छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए। वे मान गए हैं।''

''तो आपकी बात मानते हैं वे?''

''हाँ।'' सुलताना ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैंने उनसे निकाह पढ़ा लिया है।''

''सत्य?'' मोहिनी ने विस्मय में पूछा।

इस समय सुमित्रा और साधना आ गईं। लाज को पता चला तो वह भी विस्मय करती हुई आ गई। लाज को मेहमान के लिए दूध–मिठाई लाने को कहा गया।

सुलताना ने अपनी इच्छा व्यक्त की, ''मैं जवाहर के भापा से मिलना चाहती थी।''

सुमित्रा ने सतर्क हो पूछ लिया, ''क्या काम है उनसे?''

''बता नहीं सकती। मेरे दिमाग पर उनका एक अजीब असर हुआ है। उनसे मिलने को तबियत करती है। लाहौर में आई तो उनसे मिलने की ख्वाहिश करने लगी थी। सरवर के वालिद तो मेरा आना पसन्द नहीं करते, इसलिए मैं उनको बताये बिना चली आई हूँ।''

''परन्तु वे तो यहाँ नहीं हैं। वे बम्बई में हैं।''

''कब तक आयेंगे?''

''अभी तो उनके आने का इरादा नहीं है। वहाँ उन्होंने राधा और एक अन्य धनी औरत रुक्मिणी के सहयोग से एक संगीत विद्यालय खोल दिया है।''

''ओह!'' विस्मय में सुलताना सब का मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचार कर पूछने लगी, ''क्या पता है उनका?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"संगीत भवन, धोबी तालाब, बम्बई।" सुमित्रा ने बता दिया।

इस पर सुलताना ने कहा, "मैं यहीं से झेलम लौट जाना चाहती थी। पर अब मैं वकील साहब को जहाज में चढ़ाने का बहाना करके बम्बई तक जाने की कोशिश करूँगी और वहाँ उनसे मिलूँगी।"

इस समय लाज दूध और मिठाई ले आई। सुलताना ने जल–पान किया और फिर बहुत खुले दिल से सबसे मिली और चली गई। उसको गये अभी दस मिनट भी नहीं हुए थे कि सदानारायण आ गया। सोहन घर के द्वार पर खड़ा था और घर की स्त्रियाँ अभी तक बैठक में ही बैठी थीं।

स्त्रियाँ सुलताना के आने और भापा से मिलने की इच्छा करने के विषय पर चिन्ता कर रही थीं। सोहन ने सदानारायण से पूछ लिया, "कहाँ गए थे तुम?"

"एक बहुत मजेदार सभा में गया था।"

इतना कहते–कहते वे बैठक में आ गये। सदानारायण माताजी, भाभियों और बहन को बैठक में गम्भीर विचार में मग्न बैठे देख सोहन से कहता–कहता रुक गया। उसने पूछ लिया, "माँ! क्या बात है?"

"बेटा! वह आई थी।"

"कौन आई थी?"

लाज ने सुलताना का परिचय देकर कहा, "वह बड़े भापाजी से मिलने आई थी और उनका बम्बई का पता पूछ गई है।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"हम सब का मन डर रहा है। इस औरत के मन में शमशाद के लिए बहुत सहानुभूति मालूम होती है। वह अपने पास से रुपया खर्च कर उसकी विलायत में अपील करा रही है। यहाँ भी कुछ गड़बड़ कर सकती है।"

सदानारायण समझ गया और कहने लगा, "बहन! कुछ नहीं होगा। इस पर भी मैं समझता हूँ कि भापाजी को चिट्ठी लिख देनी चाहिये कि जिससे वे धोखे में न मारे जावें।"

"हाँ बेटा! लिख दो। मुसलमान किसी मुसलमान के हिन्दू होने को सहन नहीं कर सकते। इस अपराध में किसी मुसलमान ने पंडित लेखराम की हत्या कर दी थी। भापाजी और राधा पर भी इसी कारण आक्रमण किया गया था।

मोहिनी भागी हुई गई और अपने पति की सन्दूकची में से एक पोस्ट कार्ड निकाल कर ले आई। सदानारायण ने लिखा–

"बड़े भापाजी के चरणों में सदानारायण की वन्दना पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आगे हाल यह है कि शमशाद भापा की अम्मी सुलताना बेगम आज यहाँ आई थी और आपके विषय में पूछ रही थी। माताजी ने आपका बम्बई का पता बताया तो वह वहाँ जाने का विचार करने लगी। इससे हम सब को चिन्ता लग रही है। माताजी कह रही हैं कि बड़े भापाजी को सचेत रहना चाहिये।

''और यहाँ सब कुशल–मंगल है। आपकी कुशल–क्षेम परमात्मा से शुभ चाहते हैं। हमारे योग्य कोई सेवा हो तो लिखें।

आपका स्नेहाकांक्षी–

सदानारायण।''

पत्र लिख कर वह उसको डाक के डब्बे में डालने चल पड़ा। सोहन उसके साथ–साथ था। मार्ग में उसने पूछ लिया, ''कैसी सभा थी आज?''

''आज दस मई है न?'' सदानारायण ने 'वाहे भगत के स्थान' की ओर जाते हुए कहा।

''दस मई को क्या होता है?''

''वाह! तुमको पता ही नहीं?''

''नहीं। मुझको तो पता नहीं।''

''इतिहास में 1857 के गदर की बात पढ़ी है?''

''क्यों, उसका क्या है?''

''वह गदर आज के दिन आरम्भ किया गया था। उसको आज ठीक पचास वर्ष हुए हैं। उस गदर में बहुत–से देश–भक्त मारे गये थे। उन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अंग्रेजों से युद्ध किया था। इस कारण हम उनकी यादगार मनाने के लिए एकत्रित हुए थे।''

''पर वे तो बागी थे?''

''हाँ, अंग्रेजों के। देखो सोहन! तुम मेरे मित्र और भाई हो। जो तुम्हारा मित्र होगा वह मेरा भी मित्र होगा और मैं तुम्हारे शत्रु का शत्रु हूँ। इसी प्रकार जो हमारा मित्र है वह अंग्रेज का शत्रु है। गदर करने वाले भारत के मित्र थे, इसी कारण अंग्रेज उनको बागी कहते हैं।''

''तो अंग्रेज हिन्दुस्तान के शत्रु हैं?''

''हाँ, इसमें सन्देह नहीं।''

''पर हमारे मास्टर तो कुछ और बताते थे?''

''क्या बताते थे?''

''हम जाहिल थे, अंग्रेजी राज से ही हमको अक्ल आई है। ये स्कूल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-B
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलिज, यूनिवर्सिटी अंग्रेजों के पहले यहाँ पर नहीं थे।''

''परन्तु सोहन! हमारे बड़े भापा तो किसी स्कूल, कॉलिज में नहीं पढ़े और वे बहुतों से विद्वान् हैं।''

''तुम्हारे बड़े भापा तो साधु रहे हैं न?''

''स्वामी दयानन्द भी किसी स्कूल, कॉलिज में नहीं पढ़े थे।''

''परन्तु वह तो मूर्तियाँ तोड़ता था।''

''नहीं तो। मूर्तियाँ तो मुसलमानों ने तोड़ी हैं। हमारे भापा तो शिवालय में जल चढ़ाते हैं और वे स्वामी दयानन्द के अनुयायी हैं।''

सोहन के लिए ये सब नवीन बातें थीं। दोनों में अन्तर उनके स्कूल तथा घर के वातावरण के कारण था। साथ ही सदानारायण अपने बड़े भापा के कहने के अनुसार आर्य–समाज के साप्ताहिक सत्संग में भी जाता था।

दोनों ने डाक में पत्र डाला तो सोहन अपने घर को चला गया। सोहन को कुछ ऐसा अनुभव हुआ था कि सदानारायण उससे बहुत अधिक जानता है।

Central Library
167946
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

: 3 :

सदानारायण ज्यों–ज्यों किशोरावस्था को प्राप्त होता जाता था, त्यों–त्यों वह अपने समक्ष कार्य–क्षेत्र का विस्तार पा रहा था। एक तो वह अपनी पढ़ाई में इतना लीन रहता था कि उसको अपने स्कूल के साथियों से मेल–जोल और उनके गन्दे विचार सुनने का अवसर ही नहीं था। साथ ही वह आर्य–समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाने से अनेकानेक विषयों पर नवीन विचारों को सुनता रहता था। वहाँ कई बार इस बात पर व्याख्यान होते थे कि शिक्षा का अर्थ नौकरी प्राप्त करना नहीं, प्रत्युत ज्ञान प्राप्त करना है।

श्यामनारायण की शिक्षा उससे भिन्न थी। वह दयालसिंह स्कूल में पढ़ा था और उसके मन में हिन्दू–धर्म, साधु–सन्त, महात्मा तथा वेद शास्त्र के लिए किसी प्रकार का आदर नहीं था। इसका एक परिणाम यह हुआ था कि श्यामनारायण के मन में अपने बड़े भापा के लिए भी कोई मान नहीं था। वह साधु रह चुका था। उसके फटे कान इस बात का प्रमाण थे। जब बड़े भापा के लिए मन में आदर नहीं था तो उसके कथन, उसके जीवन और आचार–व्यवहार से उसे किसी प्रकार का लाभ नहीं हुआ था।

जवाहरलाल डी.ए.वी. स्कूल में पढ़ा था और फिर रामरक्खामल्ल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का होने के कारण श्यामनारायण से भिन्न विचार बना बैठा था। इस पर भी माँ का एक ही पुत्र होने से लाड़–प्यार के कारण हठी और स्वेच्छाचारी हो गया था। इसके अतिरिक्त श्यामनारायण की परछाईं उस पर यह पड़ी थी कि वह घर के बाहर वालों का अधिक आदर करने लगा था।

सदानारायण के शिक्षा–काल में उसके स्कूल में भारी परिवर्तन आया था। डी.ए.वी. स्कूल और कॉलिज के संचालकों का विचार था कि वे स्कूल और कॉलिज को तथा वहाँ दी जाने वाली शिक्षा को सरकारी नियंत्रण से सर्वथा पृथक् रख सकेंगे। सरकार ने भी इसको एक साधारण बात समझा था, परन्तु 1904–1907 के स्वदेशी आन्दोलन से सरकार सतर्क हो गई थी। वह समझने लगी थी कि डी.ए.वी. स्कूल तथा कॉलिज धीरे–धीरे सरकार के प्रति विद्रोह की भावना फैलाने वाले केन्द्र बन रहे हैं। अतः लाला लाजपतराय को रेगुलेशन 1918 के अन्तर्गत पकड़ने के बाद आर्य–समाज और डी.ए.वी. शिक्षा–केन्द्र को निस्तेज करने का उपाय किया जाने लगा। आर्य–समाज के एक प्रमुख नेता से तो यह कहला दिया कि आर्य–समाज और राजनीति का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। और डी.ए.वी. स्कूल तथा कॉलिज को तो सरकारी शिक्षा–विभाग के अधीन करने का आदेश पहले ही दिया जा चुका था।

जब सदानारायण नौवीं श्रेणी में पढ़ता था, तब स्कूल के इतिहास में पहली बार, शिक्षा के सरकारी इन्स्पैक्टर स्कूल का निरीक्षण करने आये और धीरे–धीरे सरकारी नियन्त्रण इतना सुदृढ़ हुआ कि डी.ए.वी. शिक्षा–संस्थान सरकारी शिक्षा–केन्द्र से अधिक सरकारी हो गए।

1906 में तो इस प्रक्रिया का अभी आरम्भ ही हुआ था। इस पर भी सदानारायण इस परिवर्तन को अनुभव करने लगा था। 10 मई को, जब उसने मास्टर कृपाराम से यह पूछा था कि स्कूल में पढ़ाये जाने वाली इतिहास की पुस्तक में तो ऐसी बात नहीं, जैसी वह बता रहा है तो मास्टर ने उसको घर पर बुला लिया था। यद्यपि घर पर भी मास्टर स्पष्ट शब्दों में नहीं कह सकता था कि स्कूल की पुस्तक में तथ्य नहीं है और विद्यार्थियों को पथभ्रष्ट करने के लिप्त तथ्य को विकृत किया गया है, परन्तु सदानारायण–जैसे प्रतिभाशाली विद्यार्थी और फिर लाला रामरक्खामल्ल के निर्भीक प्रवचन सुनने वाले से यह बात छिपी नहीं रह सकी थी। इसका यह परिणाम भी उसके मस्तिष्क में स्पष्ट हो गया था कि सरकार स्कूल में सत्य बात पढ़ाना अपने हित में नहीं समझती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले ही दिन उसने रही–सही शंका का समाधान कर लिया। इतिहास की घंटी में पाठ आरम्भ होने से पूर्व ही उसने मास्टरजी से पूछ लिया, "मास्टरजी! पिछले सप्ताह आर्य–समाज के अधिवेशन में डी.ए.वी. कॉलेज के प्राध्यापक पं. राजारामजी यह व्याख्यान दे रहे थे कि आदि काल में भारतवर्ष के आर्य शस्त्रास्त्र और अन्य ज्ञान–विज्ञान की बातों में बहुत उन्नति किये हुए थे और लैथब्रिज लिखित इतिहास में, जो हमको पढ़ाया जाता है, यह लिखा है कि भारतवर्ष के आदिमवासी जंगली, जाहिल और पत्थरों को रगड़–रगड़ कर अपने अस्त्र–शस्त्र बनाते थे। वे जंगलों, झोंपड़ों तथा गुफाओं में रहते थे और मकान बनाना नहीं जानते थे। इनमें कौन–सी बात गलत है?"

मास्टर कृपाराम के मन में द्वन्द्व चल पड़ा था। वह विचार करने लगा था कि अपने मन की बात कहे अथवा स्कूल की पढ़ाई की। जब वह इसका निर्णय नहीं कर सका कि क्या करे तो उसने बात टालने के लिए कह दिया, "सदा! यह आज के पाठ का विषय नहीं है।"

"परन्तु मास्टरजी! यह तो हम पढ़ चुके हैं और शंका अब उत्पन्न हुई है। अपने कॉलेज के एक प्रोफेसर का भाषण सुनकर मेरे मन में शंका उत्पन्न हुई है।"

"दोनों बातें ठीक हैं।"

"क्या मतलब? मास्टरजी! ये दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं?"

"हाँ। इस पर भी दोनों ठीक हैं। एक स्कूल में बैठे हुए और दूसरे अपने सर्व–साधारण जीवन में। परीक्षा में वह लिखो जो यहाँ पढ़ते हो और ठीक वह समझो जो संस्कृत के विद्वान् पंडित कहते हैं।"

"तो क्या यहाँ पढ़ने के लिए आपको कोई विवश करता है?"

"हमको विवश करते हैं आपके माता–पिता। वे तुमको सरकारी नौकरी के योग्य बनाना चाहते हैं और उसके लिए परीक्षा लेने वाले जो ठीक समझते हैं, वही लिखना चाहिए।"

"परन्तु मास्टरजी! हममें से कुछ ऐसे भी हैं जो सरकारी नौकरी करना नहीं चाहते। उनको यह गलत बात क्यों पढ़ाई जाती है?"

"यहाँ बहुसंख्या में वे पढ़ते हैं जो सरकारी नौकरी की इच्छा रखते हैं।"

इसने सदानारायण का मुख बन्द कर दिया। अर्द्ध–विश्रान्ति के समय उसने अपने दो–चार मित्रों से पता भी किया, "क्या तुम भी नौकरी करने के लिए पढ़ते हो?"

एक ने बताया, "मेरे पिता कहते हैं कि मुझको जज बनना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और ने कहा, "मैं तो वकील बनूँगा।"

उसको स्मरण हो आया कि जवाहरलाल डाक्टर बनने के लिए विलायत गया हुआ है। इस पर भी उसके मन में झूठी बात पढ़ने से ग्लानि भरती जाती थी। वह मन में संकल्प करने लगा था कि वह कोई ऐसा काम नहीं करेगा, जिसमें वह सरकार के आश्रय पर रहे। तो फिर क्या उसको यह झूठी शिक्षा लेनी चाहिए?

इससे उसके मन में अपने तथा रामरक्खामल्ल से राय करने की लालसा जाग पड़ी। उसने उसको यह कहते हुए सुना था कि शिक्षा से ज्ञान–वृद्धि होती है। ज्ञानी व्यक्ति की तो लक्ष्मी चेरी है।

वह मन में यह कल्पना करने लगा था कि वह ज्ञान प्राप्त करेगा। इस प्रकार के विचारों में कई दिन बीत गये। एक दिन वह स्कूल से घर पहुँचा तो घर की बैठक में सुलताना, साधना और उसकी माँ बैठी बातें कर रही थीं। सुलताना मध्याह्न का भोजन कर रही थी। साधना और सुमित्रा भोजन कर चुकी थीं।

जब सदानारायण आया तो माँ ने उसको आवाज दे वहीं बैठक में बुला कर कहा, "सदा! कपड़े बदल यहीं आ जाओ। भोजन यहीं आ रहा है।"

सदानारायण अपने कमरे में गया। स्कूल के कपड़े उतार हाथ धो बैठक में आ गया। इस समय लाज उसके लिए एक थाली में भोजन ले आई थी। सदा वहीं बैठ कर खाने लगा तो माँ ने कह दिया, "बड़े भापा का तुम्हारे नाम पत्र आया है।

"सत्य! क्या लिखा है?"

"यह सुलताना बहन लाई है।"

"तो ये बम्बई में उनसे मिली थीं?"

उत्तर सुलताना ने स्वयं दिया, "हाँ बेटा! सरवर के पिता के साथ मैं बम्बई गई थी। उनको विलायत के लिए जहाज पर चढ़ा कर मैं उनसे मिलने चल पड़ी। मैंने अपने होटल के मैनेजर से संगीत–भवन का पता पूछा। इस पर मैनेजर ने अपनी मेज पर रखे एक विज्ञापन को मेरे हाथ में पकड़ा दिया। मैंने उसका मतलब पूछा तो मैनेजर ने बताया, 'यह उस भवन का विज्ञापन है। यह भवन 10 अगस्त से कार्यारम्भ करने वाला है। इसमें बिना फीस के शिक्षा दी जायेगी, परन्तु सीखने वालों में संगीत सीखने की योग्यता होने पर ही उनको भरती किया जायेगा।'

"मैं वह विज्ञापन हाथ में ले पूछती–पूछती वहाँ जा पहुँची। भापाजी मिले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा भी मिली और मैं वहाँ एक दिन बहन लेखवती के साथ रह भी आई हूँ।''

इस समय सुलताना खाना खा चुकी थी और सदानारायण खाता हुआ सुलताना की बात सुन रहा था।

सुलताना ने उठ कर हाथ साफ किए और आकर कहने लगी, ''भापाजी ने आप सब के लिए पत्र दिये हैं। साथ ही उन्होंने तुमको गर्मियों की छुट्टियों में बम्बई आने के लिए कहा है।''

इतना कह उसने सदा के नाम का पत्र सुमित्रा के हाथ से लेकर सदानारायण को दे दिया। सदानारायण ने पत्र खोल कर माँ को सुनाना आरम्भ कर दिया। पत्र हिन्दी में था और उसमें लिखा था—

''प्रिय सदा! तुम्हारा पोस्ट कार्ड यथा—समय मिल गया। पढ़ कर विस्मय हुआ। तुम भी औरतों की भाँति मौत से डरने लगे हो। यह अच्छी बात नहीं है।

''देखो, हमारा इस संसार में आना किसी प्रयोजन से है। यह अकारण नहीं है। मानव—जीवन कर्मप्रधान है। यह मृत्यु से भयभीत होने के लिए नहीं। कर्म करते हुए मृत्यु तो किसी प्रकार भी भय का कारण नहीं होनी चाहिये। हाँ, अकर्मण्य जीवन भय का विषय हो सकता है। अकर्मण्य जीवन तो मनुष्य के वे सब पुण्य—कर्म क्षीण कर देता है, जिनके कारण उसको यह जीवन मिला है। उनके क्षीण होने से आत्मा पुनः इतर योनियों में चली जाती है, जो केवल भोग—योनियाँ हैं।

''सदा! इन ग्रीष्म की छुट्टियों में यहाँ चले आओ। मैंने भैया को लिख दिया है। आओगे तो तुमको पता चलेगा कि कर्म—क्षेत्र कहाँ है।

तुम्हारा बड़ा भापा

रामरक्खामल्ल।''

इस प्रकार घर के सब प्राणियों के लिए पत्र थे। सब में इसी प्रकार की बातें लिखी थीं।

बम्बई में सुलताना की रामरक्खामल्ल ने बहुत खातिर की थी। उसको कई बातें बताई भी थीं और अगले दिन बम्बई स्टेशन पर लेखवती के साथ उसको छोड़ने भी आया था।

सुलताना के मन में रामरक्खामल्ल और इस परिवार का विशेष प्रभाव हो रहा था। वह इसके व्यवहार का मूल्यांकन करती थी। सरवर के पिता के कथनानुसार अब्दुलमजीद खाँ मुतास्सिब मुसलमान था। उसको किसी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू से मेलजोल पसन्द नहीं था। वह अपनी नई बीवी सुलताना से कहता रहता था कि शमशाद की मुसीबतों का सबसे बड़ा कारण उसका जवाहरलाल से मेल–मुलाकात और जवाहरलाल के पिता के घर में अपनी बीवी नासिरा को ले जाना ही है। परन्तु सुलताना इस परिवार में बैठ सुख और शान्ति अनुभव करती थी। रामरक्खामल्ल भी उसको सदा नेक राह दिखाने वाला प्रतीत होता था।

वह अपने नये पति को बताये बिना इनसे मिल रही थी। रामरक्खामल्ल से उसने अपने नये विवाह की बात बताई तो रामरक्खामल्ल ने कह दिया, ''इसकी जरूरत थी क्या?''

''सिर्फ इसलिए कि मैं औरत जात हूँ। मुझको किसी मर्द की सरपरस्ती की जरूरत महसूस हुई थी।''

''तो तुमने ही वकील साहब को शादी के लिए कहा है?''

''जी नहीं। शादी की बात शुरू उन्होंने ही की थी। उनको मैं सरवर की माँ से अधिक खूबसूरत मालूम हुई हूँ। मैं तो अपनी उस जरूरत की वजह से ही मानी हूँ, जो मैंने बताई है।''

इस पर रामरक्खामल्ल ने यह कह दिया, ''पर सुलताना बहन! यह शादी रहेगी नहीं।''

''क्यों?''

''इसका आधार बहुत ही कमजोर है। वह किसी वक्त भी, मामूली–से झटके से टूट–फूट जाएगा।''

यद्यपि विदा होने के दिन तक उसको अब्दुलमजीद खाँ में अपने प्रति किसी प्रकार की अरुचि प्रतीत नहीं हुई थी, इस पर भी उसको रामरक्खामल्ल की बात दिल लगी थी। वह विचार करने लगी थी कि वह सरवर की माँ से उमर में पन्द्रह वर्ष छोटी है और इस जवानी को ही उसका पति सौन्दर्य समझ बैठा है। कोई उससे अधिक युवा मिल गई तो वह असुन्दर दिखाई देने लगेगी।

सुलताना रामरक्खामल्ल के परिवार के व्यवहार का अनुमान शमशाद के कथन से भी विचार करती थी। शमशाद का कहना था कि किसी मुसलमान को मजहब बदलने के लिए कहने का किसी को हक नहीं है। जिसने नासिरा को राधा बनाया है, उसने भारी गुनाह किया है। अगर इस्लामी हकूमत होती तो देसाई की बीवी को फाँसी पर लटका दिया जाता।

रामरक्खामल्ल ने इस विषय में उसको बताया, ''इन्सान की रूह खुदा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक जुज (भाग) है। वह खुदा की तरह आजाद रहना चाहती है। यही वजह है कि दुनिया–भर से इस्लाम, जो रूह को कैद कर रखना चाहता है, खत्म होता जाता है।

"रूह को दुनियावी लालच देकर कुछ अर्से के लिए कैद कर सकते हैं। मगर जब भी इसको अपनी असलियत का इल्म होता है, यह उस कैद की जंजीरे तोड़ आजाद हो जाता है।"

सुलताना अपने साथ भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रही थी। यही कारण था कि वह इन लोगों से अपने पति और पुत्र के इल्म के बिना मिलने आ गई थी। इस बार मेल का प्रभाव और भी अधिक मधुर हुआ था।

सुलताना लाहौर से झेलम चली गई। वहाँ वह सरवर के साथ रहती थी। वह अपने सत्य–हृदय से चाहती थी कि सरवर से शमशाद की सुलह हो जाये। परन्तु उसकी इच्छा तो शमशाद के जेल से छूटने पर ही पूर्ण हो सकती थी। इसी के लिए वह यत्न करने लगी थी। उसने अपने पास से रुपया देकर उसकी प्रिवी कौंसिल में अपील करवाई थी।

सुलताना ने रामरक्खामल्ल की बहुत प्रशंसा की थी और इसने सदानारायण के मस्तिष्क में भापा के पास जाने की और भी अधिक इच्छा उत्पन्न कर दी थी। वह अपने पिता से बम्बई जाने की स्वीकृति ले चुका था और बहुत उत्सुकता से छुट्टियों की प्रतीक्षा कर रहा था।

: 4 :

उसके बम्बई जाने से पूर्व सोहन उससे फिर मिला। सोहन बहन से मिलने आया तो उसकी माँ ने मोहिनी के लिए बेसन के लड्डू, जो घर पर बनाये गए थे, भेजे। मोहिनी ने वे लड्डू अपनी सास को दे दिये। सुमित्रा ने लड्डू लिए और दो मोहिनी को दे दिये। एक उसके अपने लिए था और एक सोहन के लिए। मोहिनी के बच्चों को सुमित्रा ने बुलाकर पृथक् में एक–एक लड्डू दे दिया। इसी प्रकार घर के सब प्राणियों में वे लड्डू बँटे। सदा को भी बुलाकर एक दिया गया तो उसने पूछ लिया, "कहाँ से आए हैं? माँ!"

"सोहन भैया लाया है।"

"तो सोहन आया है?"

"हाँ, वह तुम को पूछ रहा था।"

सदानारायण भाग कर भाभी के कमरे में जा पहुँचा और सोहन से पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा, "इस बार बहुत दिन के बाद आये हो?"

"हाँ, भैया! पिछली बार दस मई को आया था। आज जून की बीस तारीख है। ग्यारह मई को मैंने अपने मास्टर को वही बात बताई थी, जो तुमने मुझको गदर के विषय में कही थी। मैंने कहा था– 'मास्टरजी, आज हम को सन् 1857 के स्वतन्त्रता के संग्राम का हाल बताइये।'

" 'क्यों?' मास्टरजी ने पूछा।

"मैंने बताया, 'दस मई को वह आरम्भ हुआ था और हमारा चित्त उसके विषय में सुनने के लिए करता है।'

"इस पर मास्टरजी ने कह दिया, 'सरकार सुनेगी तो पकड़ लेगी। यह सरकार के खिलाफ बात है।'

"मेरा प्रश्न था–'मास्टरजी! सरकार पकड़ क्यों लेगी? अपने देश को आजाद करना बुरी बात है क्या?'

"मास्टर ने डाँट कर कहा, 'सोहन! बैंच पर खड़े हो जाओ।"

"मुझको भी क्रोध आ गया। मैंने पूछ लिया, 'क्यों? मैंने कौन–सी बुरी बात की है?"

" 'खड़े हो जाओ।' मास्टरजी ने मुझको डाँटते हुए कहा।

"मैं खड़ा नहीं हुआ तो मास्टरजी ने मुझको चपत लगाने आरम्भ कर दिये और फिर लातों से भी पीटा।

"हमारी कक्षा में एक नरेन्द्र नाम का लड़का है। उसने मेरी पिटाई होती देख नारा लगा दिया, 'भारत माता की जय'।

"इस पर मास्टर मुझको छोड़ उसकी ओर लपका। परन्तु वह कक्षा से भाग गया।

"मास्टर यह समझा कि हम दोनों ने षड्यन्त्र कर इस विषय पर बात चलाई थी। इस कारण वह मुझको पकड़ कर हैडमास्टर के पास ले गया और उसे बताया कि हम दोनों ने म्युटिनी की अर्द्ध–शताब्दी मनाने का षड्यन्त्र किया है। मास्टर की चपतों से मेरे गालों पर निशान बन गये थे। इस पर हैडमास्टर ने मास्टरजी को वापस भेज दिया और मुझसे पूछने लगा कि क्या हुआ है। मैंने सत्य–सत्य कथा बता दी। मैंने तुम्हारे साथ हुई बात भी बताई तो हैडमास्टर ने चपरासी से कह कर जल मँगाया और मुझको जल पीने के लिए कहा। मैंने जल पिया और जब कुछ शान्त हुआ तो हैडमास्टर ने कहा, 'देखो सोहन! गदर हिन्दुस्तान के बहादुर आदमियों ने किया था। वह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अत्याचारों से देश को मुक्त कराने के लिए किया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। हम उन वीर पुरुषों का आदर करते हैं, परन्तु तुमको पता होना चाहिए कि सरकार नहीं चाहती कि हम उन बहादुरों की याद मनायें। सरकार को भय है कि उस संग्राम की पुनरावृत्ति न हो जाये। इस कारण अगर तुमको अपनी जान प्यारी है तो इस बात को किसी से मत कहना। उस लड़के से मिलना भी नहीं। वह किसी क्रान्तिकारी का पुत्र प्रतीत होता है। हमारे स्कूल में सरकार के विरोध में कुछ भी कहना मना है।

'' 'देखो, नरेन्द्र को भी समझा देना। लाला जपतराय पकड़े गये। अजीतसिंह भी कैद कर लिये गये। 'भारत माता' के अन्य सदस्यों का कहीं पता नहीं चलता। सरकार के पास बहुत शक्ति है। हम–तुम उसका विरोध नहीं कर सकते।'

''उस दिन मुझको स्कूल से छुट्टी दे दी गई। मैंने घर पर आकर बहुत विचार किया और मैं यही समझ सका हूँ कि हैडमास्टर साहब सत्य कह रहे हैं। इसी कारण मैं तुमसे मिलने नहीं आया।''

सदानारायण इतनी लम्बी बात सुन खिलखिलाकर हँस पड़ा। जब सोहन ने उसकी ओर प्रश्न–भरी दृष्टि से देखा तो सदा ने पूछा, ''तुम सरकारी नौकरी करना चाहते हो?''

''क्यों? यह किसलिये पूछते हो?''

''मैं समझता हूँ कि यदि तुम्हें सरकारी नौकरी नहीं करनी तो स्कूल छोड़ दो। झूठी बातें पढ़ने से क्या लाभ?''

''यही बात पिताजी कहते थे। उन्होंने मेरे मुख पर चपत के निशान देखे तो कह दिया कि मुझको स्कूल जाने की आवश्यकता नहीं। वे स्वयं दुकान करते हैं और समझते हैं कि मैं भी कहीं दुकान करूँगा। परन्तु माँ ने कहा, 'हमको उन्नति करनी है। यह लड़का पढ़कर बाबू बनेगा और घर का नाम उज्ज्वल करेगा।' इससे अगले दिन पिताजी मुझको स्वयं स्कूल छोड़ने गये थे।''

यह सुन तो सदानारायण और भी जोर से हँसने लगा। हँसकर बोला, ''सोहन! तुम हमको अपने परिवार से उन्नत समझते हो अथवा नहीं?''

''हाँ भैया! तुम लोगों के पास पैसा है।''

''तो समझ लो कि यह पैसा सरकारी नौकरी करने से नहीं आया। मेरे बड़े भैया हैं। वे चार–पाँच सौ महीना वेतन भी लेते हैं, परन्तु वे भी दुःखी हैं। भाभी कहीं भाग गई हैं और वे अपनी सारी धन–दौलत और बाबूपन से भी भाभी को बाँध कर नहीं रख सके।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"पर भैया! तुम बड़े आदमी हो और हम निर्धन हैं।"

"मेरे साथ बम्बई चलोगे?"

अब हँसने की बारी सोहन की थी। हँसते हुए उसने पूछा, "कितना भाड़ा लगता है, वहाँ जाने का?"

"पन्द्रह रुपये जाने के और पन्द्रह रुपये आने के।"

"तीस रुपये पिताजी नहीं दे सकेंगे।"

सदा ने भाभी को कह दिया, "भाभी!"

वह इनकी बातें नहीं सुन रही थी। सदानारायण के सम्बोधन करने पर इधर देख पूछने लगी, "हाँ भैया!"

"सोहन भैया को तीस रुपये उधार दे दो।"

"उधार? किसलिये।"

"यह मेरे साथ बम्बई जायेगा।"

"क्या करेगा जाकर?"

"मुझ से बातें करेगा।"

"बस! तो उधार कैसे उतारेगा?"

"वह तो भाभी! यह नौकर होकर उतार देगा।"

मोहिनी हँस पड़ी। उसने पूछा, "क्यों सोहन! जाओगे बम्बई?"

सोहन लालसा–भरी दृष्टि से बहन के मुख पर देखता रहा। मोहिनी समझ गई कि उसके मन में जाने की इच्छा है, परन्तु अपनी निर्धनता का विचार कर कुछ कह नहीं रहा। उसके मन में विचार आया कि अपने पति से पूछ कर ही वह उसको रुपये दे सकती है। उसके पास अपने जेब खर्च में से बचे हुए सौ रुपये के लगभग जमा थे। इस पर भी वह समझती थी कि बिना बताये देना ठीक नहीं होगा। उसने कह दिया, "सोहन! मैं कल माँ से मिलने आऊँगी। तुम बम्बई के लिए कपड़े तैयार कर लो। क्यों सदा! ठीक है न?"

"भाभी! तुम बहुत अच्छी हो।" फिर उसने सोहन से कहा, "अच्छा देखो सोहन! हम यह तुम्हारे हैड मास्टर की बात और तुम्हारी माँ की बात बड़े भापा से पूछेंगे?"

इससे तो मोहिनी विस्मय में मुख देखती रह गई। उसने विस्मय से पूछ लिया, "सदा! क्या बात है इसके हैडमास्टर की और फिर माताजी की?"

"इसका हैडमास्टर कहता है कि अगर इसको अपनी जान प्यारी है तो हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने की बात किसी से न कहे। न ही यह मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिले। इसकी माँ कहती है कि इसको सरकारी नौकरी करनी है, जिससे इनका परिवार उन्नति करेगा। यह बाबू बनेगा और माँ–बाप का नाम उज्ज्वल करेगा।''

''और यह बात भापाजी से पूछने के लिए इसको ले जा रहे हो?

हाँ, भाभी! मुझको दोनों बातें गलत मालूम हुई हैं, परन्तु मैं तो सोहन भैया जितनी ही आयु का हूँ। इससे बड़े भापा से पूछेंगे?''

''और सोहन! तुम भी इसीलिए जाना चाहते हो?''

''नहीं बहन! मेरा तो सैर करने को चित्त करता है।''

''देखो सदा! बड़े भापाजी से मेरी माताजी की शिकायत मत करना। माँ ठीक कहती हैं। मेरा भी जी करता है कि सोहन भैया बाबू बने और हमारा भी समाज में मान तथा आदर हो।''

सदानारायण समझ नहीं सका कि यह औरतों के मन में क्या भूत सवार है? वे अपने घर वालों और लड़कों को बाबू देखना चाहती हैं। इस पर सदा ने एक और बात कह दी, ''तो भाभी! तुम भी कला भाभी की तरह विचार करती हो?''

मोहिनी के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने कहा, ''कुछ मूर्ख हो रहे हो सदा! बड़ों की बातें छोटे नहीं किया करते।''

सदा को अपनी भूल समझ में आ गई। उसने भाभी के चरण–स्पर्श कर कह दिया, ''क्षमा कर दो भाभी! गलती हो गई है।''

''अच्छा सोहन!'' मोहिनी ने बात बदल कर कहा, ''जाना चाहते हो तो तैयारी कर दो। मैं कल माँ से मिलने आऊँगी और रुपयों का प्रबन्ध हो जायेगा।''

कला भाभी की बात करने पर मोहिनी भाभी के डाँटने ने सदानारायण के मन में श्याम भैया की बात उत्पन्न कर दी थी। उसी सायंकाल वह घर से निकला और श्याम भैया के घर ग्वालमंडी जा पहुँचा।

सदा की भाँति पुनः श्याम बाबू के मित्र बैठक में आने लग गये थे। कला के भाग जाने की बात पुरानी होती जा रही थी। मित्र तो ताश, शतरंज और चौपड़ खेल रहे थे। श्याम एक कोने में दीवार से ढासना लगाये बैठा था। गरमी का मौसम था और मकान के नीचे की मंजिल ठंडी होने पर भी पंखा करने की आवश्यकता अनुभव हो रही थी। सब के हाथ में एक–एक पंखा था और सब रह–रह कर हवा कर रहे थे। श्यामनारायण के हाथ में पंखा नहीं था। उसको गरमी अनुभव नहीं हो रही थी। वास्तव में वह अपने जीवन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करवट पर विचार में लीन स्थित–प्रश्न–सा हो रहा था।

सदा आया तो उसका ध्यान भंग हुआ, ''आओ सदा! आज तुमको मेरी भी याद आई है?''

''भैया! तुम भी तो उधर नहीं आते?''

इससे श्याम विचार करने लगा कि यह भी ठीक कह रहा है। फिर कुछ विचार कर बोला, ''मुझको उस घर में जाते लज्जा लगती है।''

''भैया! तुमने तो कोई ऐसी बात नहीं की जो लज्जाजनक हो।''

''सदा! तुम नहीं जानते। अपनी मुसीबत का मैं ही सबसे बड़ा कारण हूँ। मैं उसका कहा मानता गया और अपने मित्र और परिचितों की प्रशंसा का पात्र होने के बाद अब दया का पात्र हो गया हूँ। यह बहुत हीन अवस्था है। मुझको प्रत्येक की आँख दयापूर्ण भाव में अपनी ओर देखती लगती है।''

''भापा तो तुमको बहुत याद करते हैं।''

''तो उनको कहना, यहाँ आकर मिल जायें।''

''माताजी आपके नवीन विवाह की बात कर रही हैं।''

''उनसे कह देना व्यर्थ है।''

इस समय सदा ने कह दिया, ''भैया! मैं बड़े भापाजी से मिलने के लिए बम्बई जा रहा हूँ।''

''कब जा रहे हो?''

''चार–पाँच दिन में, इस शनिवार हमारा स्कूल बन्द होगा और उसके बाद किसी दिन भी जा सकता हूँ।''

''बड़े भापा को कहना कि मैं अपनी मूर्खता पर लज्जित हूँ। इस पर भी उनके आदेशानुसार यहाँ पर बैठा हूँ।''

''कह दूँगा। पर मेरी राय है स्वयं चलो न?''

''नहीं, अभी मैं दफ्तर से छुट्टी नहीं ले सकता। तुम जाओ और मेरी ओर से उनके चरण स्पर्श कर क्षमा माँगना।''

श्याम की आँखें डबडबाने लगी थीं। वह उठा और ऊपर की मंजिल पर चला गया। सदानारायण उसके पीछे–पीछे वहाँ जा पहुँचा। श्याम ने पानी से मुख धोया, आँखों पर छींटे दिये और तौलिये से मुँह पोंछ कर कहने लगा, ''अच्छा अब तुम जाओ। जाने से पहले मुझसे मिल कर जाना। मैं तायी के लिए कुछ यहाँ से भेजूँगा।''

सदा की समझ में आ गया कि कला भाभी की बात सत्य ही अत्यन्त दुःखद है। इससे उसको उल्हाने के रूप में मोहिनी भाभी से कहने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात्ताप लगने लगा। वह इस विषय में बहुत सतर्क हो गया।

: 5 :

सदानारायण और सोहन दोनों बम्बई गए और डेढ़ मास वहीं रह कर लौट आये। सोहन का तो मानसिक कल्प हो गया। उसने आते ही अपने माता–पिता से कह कर स्कूल बदलने का यत्न आरम्भ कर दिया। सोहन का पिता रामदास तो सोहन की माँग सुन कर भौचक्का रह गया। अगले ही दिन वह सदानारायण से मिलने उनके घर पर जा पहुँचा। उसने मोहिनी के सामने ही सदानारायण से कह दिया, "भैया! सोहन को यह क्या सिखा कर ले आये हो?"

"मौसाजी! मैंने कुछ नहीं सिखाया। यह तो बड़े भापाजी ने उसको बताया है कि उसे वह स्कूल बदल लेना चाहिए।"

"क्यों? किताबें तो दोनों जगह पर एक–जैसी लगी हैं।"

"भापाजी का कहना है कि स्कूलों में किताबों के अतिरिक्त भी कुछ पढ़ाया जाता है।"

"सत्य? तो वह बात इस स्कूल में क्यों नहीं पढ़ाते?"

"यह तो स्कूल वाले जानें।"

"पर वह तो एक बात और कहता है।"

"क्या कहता है?"

"कि वह नौकरी नहीं करेगा।"

"हाँ, भापाजी ने इसको समझाया था कि नौकरी करना कोई अच्छी बात नहीं। मैट्रिक पास करने के बाद भापाजी ने इसको वहाँ बुला लिया है और वे इसको कोई कारोबार कराने का विचार करते हैं।"

"वहाँ बम्बई में?"

"हाँ, मौसाजी!"

"और तुम्हारे बड़े भापा वहाँ क्या करते हैं?"

"एक संगीत भवन है। उसमें चार अध्यापिकाएँ संगीत और नृत्य सिखाती हैं। भापाजी उसके मैनेजर हैं।"

"क्या वेतन पाते हैं?"

"यह तो मैं जानता नहीं। परन्तु उनको रुपये–पैसे की कमी प्रतीत नहीं होती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात ने लाला रामदास का समाधान कर दिया। परन्तु सोहनलाल डी.ए.वी. स्कूल में वर्ष के मध्य में प्रवेश नहीं पा सका। हैडमास्टर ने कह दिया, "जब से इस स्कूल में सरकारी शिक्षा–विभाग के नियमोपनियम लागू हुए हैं तब से स्कूल केवल वार्षिक परीक्षाओं के अनन्तर बदला जा सकता है। इस पर भी सोहन की समझ में आ गया था कि विद्यार्थियों की शिक्षा का बलिदान कर उनके स्कूल की रक्षा की जा रही है। सोहन अब सदा के साथ आर्य–समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में जाता था और उसकी बुद्धि का विकास द्रुत–गति से हो रहा था।

सदानारायण श्याम भैया से मिलने गया तो वह उसको अपने कमरे में, जो ऊपर की मंजिल पर था, ले गया और बम्बई के विषय में पूछने लगा। सदानारायण ने एक पत्र, जो बड़े भापा ने श्याम के लिए लिख कर दिया था, दे दिया। श्याम ने वह पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था–

"प्रिय श्याम!"

"यह जान कि अभी तक कला का पता नहीं चला, सत्य ही विस्मय हुआ है। मैंने लाहौर में जब तुमको अपने मकान में जाकर रहने के लिए कहा था, मुझे तब भी और अब भी चिन्तन करने से कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम और कला उसी मकान में सुखपूर्वक रह रहे हो। इस कारण मेरी सम्मति यही है कि तुम अभी कुछ देर तक और वहीं ठहरो।

"संसार बहुत बड़ा है और कला–जैसी स्त्री का पता करना कि इस समय वह कहाँ है, अति कठिन है। इस पर भी ईश्वर पर भरोसा कर वहाँ डटे रहो। भगवान की कृपा होगी तो जीवन सुखकारक हो जाएगा।

"लेख ने तुम्हारे लिर एक बहुत सुन्दर कलमदान भेजा है। उसकी हार्दिक इच्छा है कि तुम उससे अपनी तायी को कम–से–कम महीने में एक पत्र अवश्य भेजाकरो।

"तुमने लेख के लिर एक शाल भेजी है। वह यहाँ घर से बाहर घूमने नहीं जाती। न ही यहाँ का जलवायु ऐसा है कि शाल की आवश्यकता पड़ती है। इस पर भी तुम्हारी शाल आने पर वह एक दिन उसको ओढ़कर सदा, सोहन और रत्न को लेकर समुद्र के तट पर भ्रमण करने गई थी। यह केवल यह प्रकट करने के लिए कि अपने पुत्र द्वारा भेजी गई वस्तु का वह कितना आदर करती है।

"वह चाहती है कि तुम उसके द्वारा भेजे कलमदान का भी आदर करोगे और उसका प्रयोग किया करोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र पढ़ कर श्यामनारायण चिरकाल तक आँखें मूँद बैठा रहा। सदानारायण उसको देखता रहा। मन का संतुलन ठीक कर वह वहाँ के विषय में पूछने लगा, ''रत्नलाल कौन–सी श्रेणी में पढ़ता है?''

''वह घर पर ही पढ़ता है। केवल संस्कृत और गणित।''

''बस?''

''हाँ! भापाजी कह रहे थे कि स्कूलों में शिक्षा का ढंग गलत है। चार–पाँच वर्ष में संस्कृत भाषा का ज्ञान बहुत सुदृढ़ हो जाना चाहिये। तदनन्तर कोई भी भाषा और कोई भी ज्ञान–विज्ञान अल्पकाल में और भली प्रकार पढ़ा जा सकता है।

''भापाजी तो मुझको भी स्कूल की पढ़ाई छोड़ संस्कृत पढ़ने के लिए वहीं आने की बात कह रहे थे। परन्तु ताईजी के कहने पर वे चुप कर गये और फिर बोले, कि जब तक रत्नलाल जीवन में सफल होकर नहीं दिखा देता, तब तक मेरा अधिकार नहीं कि मैं किसी अन्य के लड़के पर अपने परीक्षण करूँ।''

''और तुम क्या कहते हो?''

''मुझको तो बड़े भापा की बात ठीक प्रतीत हुई है। भैया! इस समय मैं आठ विषय पढ़ता हूँ। अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, गणित, भूगोल, इतिहास, धर्म–शिक्षा और संगीत। थोड़ा–थोड़ा सब पढ़ता हूँ और वास्तव में नौ वर्ष तक पढ़ने पर भी मुझको एक भी विषय नहीं आता। रत्नलाल अब साढ़े सात वर्ष का है और वह संस्कृत तो मुझसे अधिक बोल–पढ़ और लिख सकता है। वैसे उसको इतिहास और भूगोल का ज्ञान भी है। गणित वह एक मास्टर से पढ़ता है। ये तीनों बातें वह मुझसे कम जानता है। परन्तु संस्कृत पढ़ने से वह हिन्दी बहुत अच्छी लिखने और बोलने लगा है।

''भापाजी का कहना है कि बारह वर्ष की आयु में वह संस्कृत भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेगा। तब वह अंग्रेजी और विज्ञान पढ़ेगा। इतिहास, भूगोल में उसकी रुचि होगी तो, स्वयं ही पुस्तकों से पढ़ लेगा। भापाजी का विचार है कि तीन वर्ष में विज्ञान की योग्यता एम.एस.–सी. के बराबर हो जायेगी।''

श्यामनारायण को इन बातों पर विश्वास नहीं आया, परन्तु सदानारायण, जो रत्नलाल की संस्कृत भाषा की योग्यता देख आया था, इस बात पर विश्वास करता था।

''स्कूल में कितने लोग पढ़ने आते हैं?'' श्यामनारायण ने पूछ लिया।

''संगीत भवन का उद्घाटन मेरे सामने हुआ था। एक रुक्मिणी देवी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो उस भवन का सब खर्चा वहन कर रही है। इस समय बीस लड़कियाँ पढ़ने आती हैं। और उनको सिखाने के लिए राधा और तीन अन्य अध्यापिकाएँ संगीत तथा नृत्य सिखाती हैं। भापा उनको उपनिषद् पढ़ाते हैं।''

श्याम ने मुस्करा कर कह दिया, ''बहुत धन व्यर्थ गँवाया जा रहा है।''

''रुक्मिणी देवी ऐसा नहीं समझती। प्रातःकाल जब भापाजी उपनिषद् पढ़ाते हैं तो वे और कभी तो उनके पति भी पढ़ने आते हैं।''

''भला संगीत और उपनिषद् की पढ़ाई का क्या सम्बन्ध है?''

''भैया! यह मैं तो जानता नहीं। मैं तो बम्बई खेल–कूद के लिए गया था और वहाँ बहुत मजा रहा है। मोहिनी भाभी का भाई सोहन मेरे साथ था। हमने पूर्ण बम्बई पैदल घूम–घूम कर देख ली है।''

''कैसी है बम्बई?''

''बहुत सुन्दर और बहुत गन्दी भी। बहुत भीड़–भाड़ वाली और सर्वथा वीरान। बहुत धन–धान्य सम्पन्न और अति निर्धन..।''

श्याम हँस पड़ा, ''यह क्या पहेलियाँ डाल रहे हो?''

''नहीं भापा! यह अक्षरशः सत्य बात है। भापाजी का कहना है कि नगरों के जीवन में ऐसा सर्वत्र ही दिखाई देगा। जहाँ ऊँचे–ऊँचे पहाड़ होते हैं, वहाँ गहरी घाटियाँ भी होती हैं। मैदानों में न ऊँचाई होती है न गहराई।''

श्यामनारायण के लिए चुप कर रहने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं था।

इधर कुछ दिनों से श्याम बाबू की बैठक में एक परिवर्तन दिखाई देने लगा था। जब से कला लापता हुई थी, मित्र–मंडली में एक प्रकार का अभाव दिखाई देने लगा था। सब मित्र इस अभाव का अनुभव करते थे। परन्तु इसकी पूर्ति का उपाय न जानने के कारण सभी मौन थे।

श्याम बाबू का नौकर वसन्ता एकत्रित होने वाले मित्रों को चाय इत्यादि पिलाता था, परन्तु पीने वालों को उसकी चाय में वह आनन्द नहीं आता था, जो कला की बनाई हुई चाय में आता था। चाय तो तब भी वसन्ता ही बनाता था, परन्तु कला चाय वितरण करते समय सदा हँसमुख होती थी। वह हास्य–रस की बातें करती रहती थी। साथ ही कला के कारण कई विशेष समारोहों का आयोजन होता रहता था। इससे स्त्रियाँ भी आमन्त्रित होती रहती थीं। परन्तु अब न कोई स्त्री आमन्त्रित करने वाली थी, न ही स्त्रियाँ अब इस घर में आती थीं।

श्रावण का अन्तिम रविवार था। पहले इस दिन मित्र–मंडली में गाना–बजाना हुआ करता था। इस बार रविवार से दो दिन पूर्व ही श्याम बाबू के पड़ोसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरंजीवलाल ने सब के सामने यह विचार उपस्थित करते हुए कहा, "क्या इस बार श्रावणी नहीं मनाई जायेगी?"

श्याम का कहना था, "मनाई जा सकती है। गाने–बजाने वालों का प्रबन्ध मैं कर दूँगा।"

"परन्तु श्याम बाबू! कला का अभाव तो मिट नहीं सकेगा।"

"तो भाई! अपने–अपने घरों में पूछो। कोई 'होस्ट' बन मुहल्ले की स्त्रियों को निमन्त्रण देने के लिए तैयार है अथवा नहीं।"

इस पर सब एक–दूसरे का मुख देखने लगे। एकाएक एक सज्जन बोल उठे, "होस्ट का प्रबन्ध तो हो सकता है, परन्तु वह कला जितना सुघड़ नहीं होगा।"

"कौन है?" चिरंजीवलाल ने पूछ लिया।

"हमारे रिश्तेदारों की एक लड़की मेरे घर में रहती है। वह मुझको कई बार कह चुकी है कि इस बार स्त्रियों का समारोह होगा तो वह कुछ सेवा कर देगी।"

यह बात साधुराम ने कही थी। साधुराम दलाली का काम करता था। वह सातवीं–आठवीं कक्षा तक पढ़ा था। सब्जी–मण्डी में काम करता था। स्वयं जालंधर के समीप एक गाँव का रहने वाला था।

साधुराम की एक रिश्ते में बहन थी सोहनी। वह विधवा थी और कई वर्ष से साधुराम के घर में ही रहती थी। सोहनी को संगीत सुनने का बहुत शौक था और जब भी श्याम बाबू के घर में इसका आयोजन होता था वह आती थी।

साधुराम ने कहा, "यदि आप कहें तो मैं उसको समय पर यहाँ आने वाली स्त्रियों के स्वागत का कार्य करने के लिए कह सकता हूँ।"

इस प्रस्ताव का सब ने स्वागत किया और सोहनी के हस्ताक्षरों से निमन्त्रण–पत्र वितरित हो गये। श्रावणी का समारोह हुआ। और कला का अभाव बहुत अंशों में मिट गया।

इसके बाद तो सोहनी नित्य ही आने लगी और वसन्ता की सहायता से आने वाली मित्र–मण्डली के चाय–पानी का प्रबन्ध होने लगा। जब सदानारायण बम्बई से लौटा तो सोहनी कला के स्थान पर सार्वजनिक सेवा का कार्य करने लगी थी। साधुराम तो मित्र–मण्डली में कभी–कभी आता था, परन्तु सोहनी नित्य ही आ जाती थी और वह अपने नीरस जीवन में रस भरने लगी थी। वह श्यामनारायण के ऊपर रसोई–घर में जाती थी। वसन्ता से जल–पान का प्रबन्ध कराती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रसोई–घर गृहिणी की अनुपस्थिति में गन्दा रहता था। सोहनी ने वसन्ता को डाँट–डपट कर ठीक कर दिया। इसी समय उसको श्यामनारायण का घर एक अविवाहित के घर की भाँति अस्त–व्यस्त दिखाई दिया तो उसने उसमें भी सुव्यवस्था करानी आरम्भ कर दी।

जो मैले कपड़े यत्र–तत्र खूँटियों पर लटके रहते थे अथवा कोनों में पड़े रहते थे, वे अब एक सन्दूक में बन्द हो गए। धोबी से धुलाकर आये कपड़े विधिवत् एक अन्य सन्दूक में रखे जाने लगे। बिस्तर नित्य झाड़–फूँक कर साफ होने लगा। सप्ताह में चादरें बदली जाने लगीं। पलंग के पास पड़ा लैम्प पोंछकर साफ कर दिया गया। पुस्तकों की अलमारी में पुस्तकें झाड़–फूँक कर तरतीब से लगा दी गईं।

एक दिन श्याम रात को सोने के कमरे में आया तो उसमें उसको स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। वह वसन्ता के काम से प्रसन्न हो, उसको इनाम देने का विचार करने लगा।

उसने वसन्ता को आवाज देकर कहा, "वसन्ते! आज तो तुमने इनाम का काम किया है।

"परन्तु बाबूजी! यह तो बहन सोहनी ने स्वयं और कुछ मुझसे कराया है।"

"कब?"

"जब आप सब में नीचे बैठे थे और मैं सब के लिए शर्बत बना रहा था। उन्होंने इस कमरे को झाड़–फूँक कर साफ किया। इसका फालतू सामान निकाल बाहर सन्दूक में बन्द कर दिया और फिर मुझसे बिस्तर करवा सब सामान लगवा दिया।

श्यामनारायण अभी भी मकान की छत पर सोता था। इस पर भी वह सोने का कमरा दफ्तर से आने पर प्रयोग होता था। रविवार और छुट्टी के दिन तो मध्याह्न को वहाँ विश्राम होता ही था।

श्यामनारायण स्तब्ध रह गया। वह घर में किसी स्त्री के अभाव का परिणाम समझने लगा था। अब नित्य उसको घर में कहीं–न–कहीं परिवर्तन दिखाई देने लगा। एक दिन वह मजलिस के बीच में ही उठ कर ऊपर गया तो सोहनी को धुले कपड़ों को सन्दूक में रखते देख लिया। वह सोहनी को कपड़े ठीक करते देख चकित खड़ा रह गया।

सोहनी ने उसे खड़ा देखा तो निःसंकोच–भाव में कह दिया, "मैं देख रही थी कि खिड़कियों के पर्दों का कोई दूसरा सैट हो तो इनको धोने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दे दूँ। ये बहुत मैले हो गये हैं।''

''एक सैट और है तो।'' श्यामनारायण ने कह दिया।

''हाँ, परन्तु वह गहरे लाल रंग का है और अभी ऋतु गरमी की है। वह आँखों को चुभेगा। मैं तो यह कहूँगी कि एक सैट हलके नीले रंग का बनवा लीजिये।''

''आजकल अवकाश मिलता नहीं। दफ्तर में दो–दो बाबू छुट्टी पर हैं। सप्ताह का रुका काम रविवार को जाकर करता हूँ।''

''तो मैं खरीद कर ला दूँ आप को?''

''परन्तु तुम यह सब कष्ट क्यों करती हो?''

''आपके घर में कोई माँ–बहन या पत्नी नहीं है। यह काम औरतों का है।''

श्याम बाबू को स्मरण आ गया कि उसके पिता के घर में भी महानारायण की पत्नी इस प्रकार के काम करती है और बहुत सुघड़ाई से करती है। सब घर वाले उससे इसी कारण प्रसन्न रहते थे।

श्याम ने कह दिया, ''आपको इतना कष्ट करते देख मुझको पहले ही बहुत लज्जा लग रही है।''

''इसमें लज्जा की कौन–सी बात है? यह औरतों का काम है। 'जिसका काम उसी को साजे।' स्त्रियों का काम पुरुष अथवा नौकर नहीं कर सकते।''

आज नीचे एक पड़ोसी की नयी बहू आई हुई थी। मित्र–मण्डली ने उसका रिशैप्शन (चाय–पानी का आयोजन) किया था। वसन्ता ऊपर आया और बोला, ''बहनजी! चिरंजीवलाल का भाई और उसकी बहू आई है।''

''ठीक है।'' यह कह सोहनी नीचे उतर गई।

चिरंजीवलाल के भाई काहनचन्द का विवाह हो गया था और वह उसे गाँव से विवाह कर लाया था। दो दिन से वह अपने भाई के यहाँ लाहौर में ठहरा हुआ था और रात की गाड़ी से बम्बई जाने वाला था। मित्र–मण्डली ने उसका स्वागत किया था।

श्याम बाबू भी सोहनी के पीछे–पीछे नीचे उतर गया। वह चिरंजीवलाल के पास बैठ काहनचन्द को सम्बोधन कर बोला, ''काहन भैया! बहुत–बहुत बधाई हो। यदि आज कला यहाँ होती तो निःसन्देह तुम्हारी बहू की बहुत खातिरदारी की जाती। कुछ भेंट देने का भी प्रबन्ध हो जाता। अब तो भाई साहब! इसके लिए तुम स्वयं ही कुछ इसकी रुचि अनुसार ही खरीद लेना।'' इतना कह श्याम ने इक्कीस रुपये निकाल कर काहनचन्द के आगे कर दिये।

काहनचन्द हँसता–हँसता गम्भीर हो गया। कला का नाम सुनते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको अपने पर अत्यन्त ग्लानि और लज़्जा अनुभव होने लगी थी। उसका हाथ रुपये लेने के लिए बढ़ा नहीं।

इस समय चिरंजीवलाल ने बहू को कहा, "ले लो बहू! यह भी तुम्हारे एक जेठ हैं। इनके चरण स्पर्श करो।"

काहन की पत्नी ने श्याम के चरण छुए तो श्याम ने कह दिया, "बहू! सौभाग्यवती रहो। भगवान करे सुन्दर, सबल और मेधावी सन्तान का मुख देखो।"

काहनचन्द की आँखों में आँसू छलकने लगे थे। उसको स्मरण आ रहा था कि उसने इस भले पुरुष की पत्नी से कैसा व्यवहार किया है। वह अपने आँसू छिपाने के लिए थूकने के बहाने से उठकर बैठक से बाहर निकल आया। खाँसकर वह अपने मन के उद्‌गारों को नियन्त्रित करने का यत्न कर रहा था कि सदानारायण घर में आया और काहनचन्द को देख पहचान गया। वह उसको गेटवे ऑफ इण्डिया पर घूमते देख चुका था।

सदानारायण ने काहनचन्द को कह दिया, "भापा! बम्बई में रहते हो न?"

काहनचन्द के पूर्ण शरीर में कँपकँपी हो उठी। उसने उसके ज्ञान की सीमा जानने के लिए पूछ लिया, "तो तुम भी बम्बई में रहते हो?"

"जी नहीं। मैं स्कूल की छुट्‌टियों में वहाँ अपने ताऊजी के पास गया था।"

"तुम्हारे ताऊ वहाँ क्या करते हैं?"

"वे एक संगीत भवन में पढ़ाते हैं।"

काहनचन्द ऐसे डरा था मानो चोरी करता पकड़ा गया हो। परन्तु यह जानकर कि सामने खड़ा युवक कुछ जानता नहीं, उसका चित्त स्थिर हुआ, तो वह उससे पूछने लगा, "तुमने मुझको कहाँ देखा है?"

"ऐपोलो पायर पर घूमते हुए।"

"हाँ, मैं प्रायः नित्य वहाँ घूमने जाया करता था। यहाँ क्या करते हो?"

"मैं श्यामजी का छोटा भाई हूँ।"

इससे तो काहनचन्द सर्वथा सन्तुष्ट हो गया। वह समझ गया कि इसने यदि अपनी भाभी को उसके साथ देखा होता तो पहचान गया होता। इससे वह कमरे में लौट आया और एक चाय का प्याला पी अपनी पत्नी को लेकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसको उस घर में और अधिक ठहरना अशुभ प्रतीत होने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 6 :

सोहनी के आने से मित्र–मण्डली में पुनः चहल–पहल आरम्भ होने लगी। वहाँ का वातावरण ही बदल गया था। अब फिर मित्रों की पत्नियाँ बहने और लड़कियाँ वहाँ निःसंकोच आने लगीं। एक दिन श्याम ने साधुराम से कह ही दिया, "हमारी मंडली के सब लोग सोहनी की सेवा से बहुत प्रसन्न हैं। सोहनी के आने से तो वसन्ता भी अब काम चित्त लगा कर करने लगा है। आप बताइये कि मित्र–मंडली उसकी सेवाओं का प्रतिकार किस प्रकार दे?"

साधुराम ने कह दिया, "आपका धन्यवाद तो मैं उस तक पहुँचा दूँगा। वैसे यह मेरी मौसी की लड़की है। एक अच्छे घर में विवाही गई थी। इसका घर वाला दुराचारी था। वह मद्य पीकर वेश्याओं के घरों में पड़ा रहता था। इसने उसको समझाने का यत्न किया तो वह इससे नाराज रहने लगा।

"उसकी एक मित्र वेश्या ने उसे एक बार बहुत फटकारा और अपनी पत्नी की सुध लेने को कहा। वास्तव में उस वेश्या का इस लड़के से किसी अधिक धनवान से सम्बन्ध बन गया था। इस पर भी उसने इसको ऐसे डाँटा मानो वह सोहनी पर दया अनुभव कर रही है। लड़के ने समझा कि सोहनी ने उस वेश्या से उसकी शिकायत की है। इससे वह घर आया। उसने अपनी पत्नी (सोहनी) को खूब पीटा और फिर स्वयं ही विष खाकर मर गया।

"सोहनी के श्वसुराल वालों ने समझा कि सोहनी ने अपने पति की हत्या कर दी है। उन्होंने इसको पुलिस के हवाले तो नहीं किया, हाँ घर से निकाल दिया। इसके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया था। इसकी सौतेली माँ को भी यही पता चला कि यह पति की हत्या कर वहाँ पहुँची है। इससे उसने इसको अपने घर में नहीं रखा। इस पर यह मेरी माँ अर्थात् अपनी मौसी के पास आ गई। माँ ने दया कर इसको घर में रख लिया। तब से यह मेरे पास ही रहती है। इसको यहाँ के संगीत–समारोहों में विशेष रुचि थी। इस कारण यह काम उसको अपनी रुचि के अनुसार ही मिला है। वह बहुत प्रसन्न है।

"सोहनी को हमारे घर में आये आठ वर्ष हो चुके हैं। इस काल में इसने हिन्दी पढ़ी है। रामायण पढ़ने लगी है और कुछ अन्य पुस्तकें भी पाती रहती है।"

"हमारी मित्र–मंडली इसको इसकी सेवाओं के लिए कुछ एलाउन्स निश्चय करना चाहती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह कुछ नहीं लेगी। वह निर्धन तो है। उसके श्वसुराल वाले उसको कुछ नहीं देते। उसकी विमाता उसके पिता को उसकी सहायता करने नहीं देती। उसका भी यह आरोप है कि उसने अपने पति की हत्या की है।

"इस पर भी वह किसी की नौकरी करना नहीं चाहती। मैंने उससे कहा था कि उसको यहाँ नित्य आने की आवश्यकता नहीं। इस पर उसने पूछा कि क्या मैं उसके यहाँ आने पर नाराज हूँ? मुझको चुप देख उसने कह दिया कि उसके यहाँ आने से उसका जी बहल जाता है।

"इस पर मैंने कह दिया कि मैं नाराज नहीं हूँ। यदि वह यहाँ नित्य आना चाहती है तो मैं उसका कुछ वेतन लगवा सकता हूँ।

"इस पर तो वह कुछ नाराज होकर कहने लगी कि मुझे क्या उसके रोटी–कपड़े का बोझा प्रतीत होने लगा है? मैंने उसे समझाया कि ऐसी कोई बात नहीं। इस पर उसने स्पष्ट कह दिया कि उसे इसमें कुछ कहने–सुनने की आवश्यकता नहीं। तब से मैं चुप हूँ।"

साधुराम उसी मुहल्ले में श्यामनारायण के घर के कुछ अन्तर पर रहता था। उसी रात श्याम को यह पता चला कि सोहनी प्रायः नित्य दोपहर के समय आती है और नौकर से श्याम बाबू के घर का कामकाज कराती है और उसके कपड़े मुरम्मत कर जाती है।

एक दिन श्यामनारायण ने सायंकाल दफ्तर से आकर देखा कि बैठक के दरवाजे और सोने के कमरे की खिड़कियाँ इत्यादि में हलके नीले रंग के पर्दे लगे हैं और पुराने पर्दे उतर गये हैं।

श्याम ने वसन्ता से पूछा, "ये किसने लगाये हैं?"

"बहनजी ने। वे इन्हें अपने घर से लाई थीं। पुराने पर्दे धोबी के पास भेज दिये हैं।"

श्याम नौकर का मुख देखता रह गया। नौकर ने एक लिफाफा मालिक के हाथ में दे दिया। श्याम ने लिफाफा खोल कर देखा। उसमें पर्दों का बिल था। उनतालीस रुपये आठ आने थे। कपड़ा पच्चीस गज सैंतीस रुपये आठ आने का। सिलाई दो रुपये। कुल उनतालीस रुपये आठ आने थे।

श्याम इस तत्परता पर बहुत प्रसन्न था। बिल पर दुकानदार का नाम लिखा था। इसका अर्थ यह था कि वह चाहे तो बिल का दाम स्वयं जाकर चुकता करा सकता है। श्याम ने यह ठीक नहीं समझा। उसने उस लिफाफे में सौ रुपये का नोट और बिल रख कर वसन्ता को कह दिया, "यह बहनजी को दे देना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन शेष साठ रुपये आठ आने लिफाफे में रुपयों की रसीद के साथ वापस मिल गये। श्यामनारायण समझ नहीं सका कि किस प्रकार वह इसका प्रतिकार दे सकेगा।

दिन व्यतीत होते गये। दिवाली आयी। घर–घर में दीप जले। श्यामनारायण को सदानारायण बुला कर अपने घर ले गया। उस दिन मित्र–मंडली की बैठक नहीं हुई थी। श्याम ने वसन्ता को एक रुपया दे, दिवाली मनाने के लिए कह दिया और स्वयं सदानारायण के साथ चला गया।

वह पिता के घर से रात के दस बजे लौटा। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने अपने घर में दीपक जले हुए देखे। एक क्षण तक वह देखता रह गया। तुरन्त उसकी समझ में आ गया कि यह भी सोहनी की करनी है। वह भीतर पहुँचा तो उसने देखा कि सोहनी बैठक में बैठी है। वसन्ता एक ओर खड़ा देख रहा था। सोहनी एक थाल में केसर से गणेश बना सामने रख, बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

''आप आ गये? आइये!''

''तुम यहाँ इस समय आयी हो? यह तो ठीक नहीं किया?''

''क्यों?''

''मैं लोक–निन्दा की बात कह रहा हूँ।''

''क्या पति की हत्या से अधिक निन्दनीय भी कोई आरोप हो सकता है?''

''वह तो असत्य था।''

''इससे तो घृणित ही था। आइये, बैठिये।''

श्यामनारायण नौकर के सामने इससे अधिक कुछ कह नहीं सका। उसके मन में सोहनी के प्रति मधुर भावनाएँ उत्पन्न होने लगी थीं।

वह चुपचाप बैठ गया। पूजा होने लगी। फिर जो मिठाई सोहनी ने लाकर रखी थी, श्याम को खाने को दी। वसन्ता को भी मिठाई दी गई और फिर एक दोने में अपने लिए ले वह बोली, ''लो अब मैं चली।''

''चलो मैं तुमको छोड़ आता हूँ। साथ ही साधु भैया को तुम्हारे इस काम के लिए धन्यवाद दे आऊँगा।''

सोहनी एक क्षण तक अनिश्चित मन खड़ी रही। फिर बोली, ''आइये! वहाँ भी दिवाली मनाई जा रही है।''

दोनों घर से निकले तो श्याम ने जेब से दस रुपये निकाल कर सोहनी को देते हुए कहा, ''ये बिल के रुपये हैं।''

सोहनी हँस पड़ी। उसने रुपये ले लिए और अपने सलूके की जेब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हुए कहा, ''बाकी इस समय नहीं हैं। कल लौटा दूँगी।''

''इसकी आवश्यकता नहीं।''

''तो ये चार रुपये दस आने मेरी नौकरी का वेतन है?''

''नहीं, यह बात नहीं, सोहनी! जो कुछ तुम कर रही हो उसका प्रतिदान तो मैं अभी विचार ही नहीं कर सका।''

''विचार करिये। पता चल जाएगा। मैं इतनी सस्ती नहीं हूँ।''

''तो एक बात कहूँ?''

''हाँ, कहिये।''

इस समय वे साधुराम के मकान के बाहर जा पहुँचे थे। सोहनी श्याम बाबू की बात सुनने वहीं मकान के बाहर ही खड़ी हो गई। श्याम ने एक क्षण विचार किया और कह दिया, ''यदि कुछ ऐसा प्रबन्ध हो सके जिससे तुम उस घर में स्थायी रूप में रह सको तो मैं कुछ तो इसका प्रतिदान दे सकूँगा।''

सोहनी मुस्कराई और घर के भीतर चली गई। श्याम ने समझा कि उसको उसके व्यवहार में कारण समझ आ गया है। वह उससे विवाह की इच्छुक है।

साधुराम अपने सोने के कमरे में था। सोहनी ने कमरे के बाहर से आवाज दे दी, ''भैया! मैं आ गई हूँ।''

''अच्छी बात है। खाना रखा है। खा लो।''

''श्याम बाबू आये हैं।''

''तो ठहरो। श्याम भैया! ठहरो मैं आया।''

साधुराम समझा कि श्याम बाबू के घर दिवाली नहीं मनाई गई। इस कारण सोहनी उसको इस घर में ले आई है। वह श्याम बाबू को मिठाई इत्यादि खिलाने के लिए सोने के कमरे से निकल आया।

वह श्याम और सोहनी को उस कमरे में ले गया, जहाँ उन्होंने पूजा की थी। साधुराम की पत्नी और उसके बच्चे वहाँ कमरे में भूमि पर बिस्तर लगाये सो रहे थे। साधुराम को भूमि पर लेटने से कमर दर्द होने लगता था। इस कारण वह सोने के कमरे में पलंग पर लेटने चला आया था।

''मुझको यह विचार ही नहीं आया कि तुम भी साथ हो।'' साधुराम ने कह दिया।

इस समय सोहनी रसोई–घर में चली गई। लक्ष्मी की मूर्ति के सामने अभी भी दीपक जल रहे थे। साधुराम और श्याम बाबू को आया देख साधुराम की पत्नी उठ कर बैठ गई। बच्चे गहरी नींद सो रहे थे। ये भी वहाँ पर बिछी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चटाई पर बैठे तो साधुराम की पत्नी ने एक तश्तरी में चार टुकड़े मिठाई के रख कर तश्तरी अपने पति के हाथ में दे दी। साधुराम ने श्याम बाबू के सामने करते हुए कहा, ''भैया! थोड़ा प्रसाद ले लो।''

श्याम ने एक टुकड़ा उठाते हुए कहा, ''पिताजी के घर से पेट भर कर आया था कि सोहनी घर में पूजा का सामान सजाये बैठी थी। पूजा की और इसने भी मिठाई खिलाई है।''

उसने खाते हुए फिर कहा, ''साधु भैया! मैं यदि यह प्रस्ताव करूँ कि सोहनी का मुझ से विवाह कर दो तो मेरा बहुत कल्याण हो जायेगा। वह विधवा है, पुनर्विवाह कर सकती है।''

''तो उसने कुछ कहा है?''

''नहीं! उसने तो कुछ नहीं कहा। मैंने इस विषय में संकेत किया तो वह मौन रही, उसने अस्वीकार नहीं किया।''

''देखो श्याम! मैंने भी पिछले तीन–चार मास से उसके व्यवहार से यही अनुमान लगाया था। इस पर भी मैं उसको कुछ सुझाव नहीं दे सका। एक बार मैंने नौकरी और कुछ वेतन की बात कही थी तो उस ने पूछ लिया कि क्या मैं उसके रोटी–कपड़े का बोझा अनुभव करने लगा हूँ? इस कारण अब उससे इस विषय पर बात करते डर लगता है। अब तुम कहते हो तो मैं उससे पता कर सकता हूँ।''

''हाँ, भैया! पूछ लेना। मुझे कुछ ऐसा भास हो रहा है कि वह मेरे इस प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं करेगी।''

''वह हमको कह कर गई थी कि वह तुम्हारे घर दीपावली जलाने जा रही है। मैंने उसको कहा था कि वह आयेगी तो बता दे। वह तुम से बहुत सहानुभूति रखती है। हमें आशा करनी चाहिये कि यह काम हो जाये तो दोनों का जीवन स्थिर हो जायेगा।

''मैं कल इस विषय में उससे बात करूँगा।''

: 7 :

दो दिन बाद भैया–दूज थी। श्याम स्नान कर कपड़े पहन रहा था। उसको दफ्तर जाने से पूर्व अपने माता–पिता के घर जाना था। वहाँ लाज से और दिल्ली वाली बहन तारा से टीका करवाना था। तारा इन दिनों मायके रहने के लिए आई हुई थी। इस कारण श्याम जल्दी में था। इस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधुराम का लड़का माधव आ पहुँचा। उसने आते ही कहा, "श्याम भापा! पिताजी बुलाते हैं।"

"क्या बात है?"

"मालूम नहीं।"

"तुम चलो मैं अभी आता हूँ।"

माधव चला गया। श्याम को विश्वास हो रहा था कि उसके प्रस्ताव का उत्तर मिलने वाला है। इससे उसने कपड़े पहने और अविलम्ब साधुराम के घर जा पहुँचा।

उसी कमरे में, जिसमें दीवाली की पूजा हुई थी, साधुराम और उसका पूर्ण परिवार एकत्रित था। स्वयं साधुराम के दो साले भी आये हुए थे।

श्याम के वहाँ पहुँचते ही साधुराम ने कहा, "आओ भैया! तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है।"

श्यामनारायण बैठा तो सोहनी एक थाली में मिठाई लिये हुए आ गई। थाली में पिसा हुआ केसर और चावल भी रखे थे। सोहनी ने श्यामनारायण के सामने बैठते हुए कहा, "भैया! तुमने कहा था न कि हमारा सम्बन्ध पक्का हो जाना चाहिए? सो आज में उसे पक्के सम्बन्ध का रूप दे रही हूँ।"

इतना कह उसने श्याम के माथे पर केसर से तिलक कर दिया। उसने कहा, "आज से मैं आपकी बहन हुई। मुझको यह सम्बन्ध अधिक मधुर और स्थायी प्रतीत हुआ है। भगवान करे कि यह जीवन–पर्यन्त चल सके।"

एक क्षाण तक तो श्याम भौचक्का हो देखता रह गया, फिर मुस्कराया और बोला, "इससे एक अधिकार तो तुमने मुझको दे ही दिया है। मैं अब तुम्हारे प्रत्येक प्रकार के शुभाशुभ में भागीदार तो हो ही गया हूँ। इसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ।"

"और अब तुम मेरी आर्थिक सहायता भी निस्वार्थ–भाव से कर सकोगे।"

श्याम ने दस रुपए का एक नोट सोहनी के हाथ में दिया तो सोहनी ने नोट को माथे से लगा लिया।

श्याम जब रूमाल से मिठाई ढाँप चलने लगा तो साधुराम अपनी पत्नी को यह कह, "मैं अपनी बहन के घर जा रहा हूँ और वहाँ से ही काम पर चला जाऊँगा," श्याम बाबू के साथ ही घर से बाहर निकल आया। दोनों माथे पर तिलक लगे घर से निकले तो सामने से चिरंजीवलाल आता दिखाई दिया। साधुराम के हाथ में मिठाई की थाली थी और श्यामनारायण एक रूमाल में मिठाई बाँधे ला रहा था। चिरंजीवलाल ने श्यामनारायण को देखा तो समझ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्याम बाबू यह टीका...।" वह कहता–कहता रुक गया। मित्रमंडली में श्याम और सोहनी के सम्बन्धों की चर्चा होने लगी थी। प्रायः सब का विचार था कि सोहनी श्याम बाबू की अविवाहित पत्नी बन चुकी है। कुछ तो यह भी आशा करने लगे थे कि बच्चा होगा तो उनको सोहनी और श्याम का पक्ष लेना होगा। यही कारण था कि चिरंजीवलाल कहता–कहता रुक गया।

श्याम बाबू चिरंजीवलाल के मन की द्विविधा को समझ गया और उसने स्पष्टीकरण दे दिया, "हाँ भैया। यह सोहनी बहन ने लगाया है। भगवान उसका भला करे।"

साधुराम ने श्याम बाबू के घर पहुँच कर कहा, "कल मैंने तुम्हारी बात उससे कही थी। इस पर वह कहने लगी, कि तुमने उसके उस समय के मौन का अर्थ गलत समझा है। वह तुम्हारा भ्रम निवारण कर देगी। कहने लगी कि तुम मेरे साथ विधवा बहन का बोझा बाँट लोगे।

"मेरा कहना था कि मुझमें इतनी सामर्थ्य तो है ही कि उसको रोटी–कपड़ा दे सकूँ, परन्तु मनुष्य इसके अतिरिक्त भी तो कई बातों का अभाव अनुभव करता है। इस पर उसका कहना था कि उसके लिए वह अभाव नहीं रहा। वह अब अपने को परमात्मा के अर्पण समझती है। परमात्मा की सेवा में तो न कोई अभिलाषा रह जाती है, न ही कोई अभाव रहता है।

"सो श्याम भैया! वह आज प्रातःकाल उठ स्नान कर केसर, चावल, मिठाई ले मुझको टीका लगा बोली, 'भैया, श्याम बाबू को बुला दो। मैं उनसे अपने सम्बन्ध स्थायी और मधुर करने जा रही हूँ।' "

श्याम ने पूरी बात सुन कह दिया, "हम पुरुष अति स्वार्थी जीव हैं। हमारा चित्त इच्छाओं की पूर्ति में रत रहता है और औरतें हमारा कान पकड़ कर हमको सीधे मार्ग पर लाती रहती हैं।"

"सब भगवान की माया है, श्याम बाबू!"

श्याम को अपने पिता के घर बहनों से टीका लगवाने जाना था। इसी कारण उसने सोहनी वाली मिठाई वसन्ता को रखने के लिए दी और सूई बाजार की ओर चल पड़ा। साधु भी कूचा भूलो माई की ओर जा रहा था। वह भी श्याम बाबू के साथ चल पड़ा। साधुराम ने चलते हुए पूछ लिया, "कुछ कला का पता नहीं मिला?"

"अब क्या मिलेगा। दुनिया बहुत लम्बी–चौड़ी है। इसकी जनसंख्या दो अरब के लगभग है। इनमें से कला को ढूँढ निकालना तो भूसे के ढेर में सूई ढूँढ़ने से भी अधिक कठिन काम है। ढूँढ़ भी लो तो अब उसको घर लाना ठीक रहेगा क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक और गलत का निर्णय करना अति कठिन है। बाबू! देखा, यदि सोहनी अपना हाथ तुमको पकड़ा देती और तुम्हरी पत्नी बनना स्वीकार कर लेती तो मैं और अपनी मित्र-मंडली के अन्य सदस्य इसको ही ठीक समझ लेते। अब उसने तुमको अपना भाई बनाना स्वीकार किया है, तो यही ठीक प्रतीत होने लगा है। इससे पहले बात गलत थी अथवा यह गलत है? कोई नहीं कह सकता।"

श्याम और सदा की बहन तारा दिल्ली के एक सनातन-धर्मी विचार के परिवार में विवाही गई थी। वहाँ पर्दा और औरतों को घर में बन्द रखने का रिवाज लाहौर से अधिक कठोर था। पंजाब का स्त्री वर्ग सिक्खों के गुरुद्वारों में स्त्रियों के जाने, बैठने और गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ सुनने के कारण दिल्ली के स्त्री वर्ग से बहुत अंशों में भिन्न था। इस पर आर्य-समाज ने भी प्रभाव डाला था। दिल्ली में ये दोनों धर्म इतने व्यापक नहीं हो पाये थे, जितने लाहौर में।

तारा अपने श्वसुर के परिवार वालों के कर्म-काण्ड को सीख गई थी। विवाह के बाद वह केवल तीसरी बार लाहौर आई थी और अपने माता-पिता के घर से, जिसकी गतिविधि रामरक्खामल्ल के हाथ में थी, वह बहुत दूर रह गई थी।

श्याम वहाँ पहुँचा तो वह पूजा में बैठी थी। पूजा-गृह में, जहाँ बूआ सतवंती के ठाकुर रखे रहते थे और परिवार के सब लोग प्रातःकाल हवन-संध्या किया करते थे, तारा बैठी अपने ठाकुरों को, जिनकी पिटारी वह अपने संदूक में बन्द कर लाई थी, चन्दन, कुमकुम से चर्चित कर पूजा कर रही थी।

श्याम ने बहन को पूजा में लीन देखा तो उसने माँ से कह दिया, "माँ, मुझको अपने कार्यालय में साढ़े नौ बजे हाजिर होना है।" परन्तु तारा की पूजा और समाधि को कौन भंग कर सकता था। सवा नौ बजे वह लाज से टीका करवा दफ्तर जाने के लिए तैयार हो गया। साढ़े नौ बजे सदानारायण भी अपने स्कूल चला गया। दोनों भाई तारा के भाग का भी टीका लगवा गये और अपनी-अपनी भेंट उसके लिए दे गये। महानारायण बैठा था।

तारा की पूजा साढ़े दस बजे समाप्त हुई। उसने देखा कि केवल महानारायण बैठा है और लाज उसको भी टीका लगा चुकी है तो उसने पूछ लिया, "श्याम भापा आया था क्या?"

"हाँ! उसको साढ़े नौ बजे दफ्तर जाना था। वह तुम्हारी ओर से टीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाज से ही लगवा गया है।''

''आज की छुट्टी नहीं ली जा सकती थी?''

''यह तो बहन! तुम उससे ही पूछना।'' महानारायण ने कह दिया, ''मैं तो दुकान से छुट्टी किये हुए हूँ।''

''यह तो उसने ठीक नहीं किया।''

''बहन! भगवान तो सदा हमारे साथ रहते हैं। तुम पूजा पीछे भी तो कर सकती थीं। अथवा बहुत सुबह ही पूजा पर बैठ जातीं।''

''ठीक है। बहन के स्थान बीवी का कुछ काम होता तो देखती कैसे छुट्टी नहीं लेता?''

महानारायण की हँसी निकल गई। उसने कह दिया, ''मुझको तो टीका लगा दो।''

''तुम भी तो लगवा चुके हो?''

''हाँ, लाज बहन ने हम तीनों को लगा दिया है।''

''तो फिर ठीक है। मेरी अब क्या आवश्यकता रह गई है?''

''बहन! नाराज होने की बात नहीं। आजकल काम–काज ऐसे ही चल रहे हैं।''

''कैसे नाराज होने की बात नहीं? मैं इतनी दूर से आई हूँ और वे मेरी प्रतीक्षा भी नहीं कर सके।''

महानारायण ने उत्तर देना उचित नहीं समझा। वह चुप रहा। तारा ने क्रोध में ही महानारायण को टीका लगाया, उससे भेंट ली, परन्तु श्याम और सदा की भेंट स्वीकार नहीं की। कह दिया, ''वे शाम को आयेंगे तो लगा कर ही भेंट लूँगी।''

इसके बाद वह अपनी लड़की से अपनी 'मलहौरे' के लड़के को टीका लगवाने के लिए अनारकली को चल पड़ी। महानारायण को यह बात ठीक प्रतीत नहीं हुई थी। यहाँ घर में इन छोटी–छोटी बातों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था।

सायंकाल तारा साढ़े पाँच बजे लौटी। आते ही उसने पूछा, ''श्याम भैया आया था?''

माँ ने बताया, ''नहीं।''

''और सदा?''

''वह स्कूल से आया था। बैठा प्रतीक्षा करता रहा। जब तुमने बहुत देरी कर दी तो वह खेलने चला गया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा अब तो दूज की तिथि समाप्त हो रही है। तीज में टीका नहीं लगाऊँगी।"

माँ ने भी कुछ डाँट के साथ कहा, "तारा! यदि ऐसा विचार था तो जरा जल्दी आ जाती?"

"मुझको क्या मालूम था कि वह यहाँ आयेगा ही नहीं।"

"मेरा कहा मानो, उसके घर चली चलो। लड़की को लेकर पति के मामा के घर गई हो न? भाई के पर भी चली चलो।"

"पर मुहूर्त तो टल जायेगा।"

"परन्तु भाई तो नहीं टल रहा। कुछ अक्ल की बात करो। चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ।"

लाज भी साथ चल पड़ी। तीनों श्यामनारायण के घर जा पहुँचीं। बैठक में मित्र-मण्डली एकत्रित हो रही थी। सुमित्रा और लाज को तो विदित था कि श्याम के मित्र एकत्रित हुआ करते हैं। तारा को यह बात बिलकुल नहीं भाई। इस पर वे तीनों ऊपर की मंजिल पर चढ़ गईं। वहाँ रसोई-घर में सोहनी पकौड़े बना रही थी। वसन्ता नीचे मित्रों को खिला रहा था। ये तीनों एक युवती को रसोई-घर में काम करते देख स्तब्ध खड़ी रह गईं। सोहनी इन तीनों में से किसी को भी नहीं जानती थी। उसने समझा कि मुहल्ले की स्त्रियाँ आई हैं। उसने कह दिया, "माताजी! आप नीचे चल कर बैठें।"

"क्यों?" सुमित्रा ने विस्मय से सोहनी के मुख पर देखते हुए पूछ लिया। सोहनी इस 'क्यों' का उत्तर देने ही वाली थी कि श्याम, जिसने उनको ऊपर आते देख लिया था, उनके पीछे-पीछे ऊपर चढ़ आया।

"माँ!" श्याम ने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया, "इधर आओ।" उसने उनको ऊपर की मंजिल वाली बैठक में बैठा कर कहा, "तारा! लो अब टीका लगा लो।"

तारा ने थाल भूमि पर रख दिया और बैठ गई। श्याम सामने बैठा तो उसने कह दिया, "पर टीका तो लगा है।"

"हाँ, लाज बहन ने लगाया था।"

"और यह रसोई में कौन है? बिना हमको बताये बहू ले आए हो क्या?"

"तारा बहन! ऐसा नहीं। यह एक और बहन है। इसने भी प्रातःकाल टीका लगाया था।"

"झूठ मत बोलो भैया!" तारा ने माथे पर त्योरी चढ़ा कर कह दिया, "तुम एक के स्थान दस लाओ। हमें क्या? बहन तो तुम्हारे दस...।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम ने बात बीच में ही काट कर कह दिया, "देखो तारा! मैं उसको बुलाता हूँ और तुम्हारा उससे परिचय कराता हूँ। विश्वास जानो वह मेरी बहन ही है।"

श्याम ने आवाज दे दी, "सोहनी बहन! सोहनी!"

सोहनी चली आई। श्याम ने उसको बैठने का संकेत कर कहा, "देखो, ये माताजी हैं और ये दोनों मेरी बहन हैं। यह है बहन लाज और यह बहन तारा।

"और माँ! यह तुम्हरी एक और लड़की है, सोहनी! बेचारी विधवा है और मेरी बहुत सहायता करती है।"

सोहनी अभी हाथ जोड़ कर नमस्कार ही कर रही थी कि तारा ने हाथ पर बँधी घड़ी में समय देख कह दिया, "श्याम भैया! यह तुम्हारी बहन है या बीवी है? हमको क्या? मैं तो टीका लगाने आई थी, परन्तु अब तो तीज हो गई है–टीका तो अब लगाऊँगी नहीं। हाँ, इस मिठाई में से कुछ खा लोगे तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

श्याम ने चुपचाप एक डली मिठाई की उठा कर मुख में रख ली। सोहनी रसोई–घर में से एक प्लेट में पकौड़े रख कर ले आई और प्लेट तारा के सामने रख कर बोली, "लीजिये, खाइये! इनकी बीवी हूँ तो भी और बहन हूँ तो भी, आपकी तो बहन ही हुई। आपको तो अन्तर नहीं पड़ता? खाइये! मैं चाय बनाकर लाती हूँ।"

सोहनी फिर रसोई–घर में चली गई। तारा ने कह दिया, "बात करने में तो तेज है। ठीक कह गई है। हमको तो नाराज होने का कोई कारण नहीं।"

श्याम ने कह दिया, "तारा बहन! बीवी बिना भाग्य के नहीं मिलती।"

"ऐसी तो बहुत मिल जायेंगी। दिल्ली में तो चावड़ी बाजार भरा पड़ा है।"

श्याम को विकृत–मानस का रूप दिखाई दे रहा था। वह समझ गया कि तारा सोहनी का अपमान करने पर तुल गई है। वह उनको बिना खिलाये–पिलाये ही विदा करने वाला था।

बात माँ ने सम्हाल ली। उसने पूछ लिया, "यह कहाँ रहती है?"

"पड़ोस में एक मित्र है, साधुराम। यह उसकी बहन है। नीचे जो मित्र बैठे हैं, यह उनके जल–पान का प्रबन्ध करने आती है।"

"अच्छी सुन्दर लड़की है।" माँ ने कह दिया।

"माँ! सुन्दर है और समझदार भी है, साथ ही चरित्रवान भी।"

तारा फिर हँसी। लाज ने तारा की कुक्षि में उँगली चुभो कर उसको चुप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करा दिया। सोहनी चाय लेकर आ गई थी। तारा को बात करने का अवसर न देते हुए लाज ने कह दिया, ''सोहनी बहन! तुम नीचे मेहमानों की भी सुध लो न?''

''वसन्ता उनको खिला रहा है और फिर मैं इन बहनजी के मधुर आशीर्वाद से वंचित रहना नहीं चाहती।''

लाज ने अब तारा को बात करने नहीं दी और उसको अपने घर लाने के लिए कह दिया, ''श्याम भैया! बहन बनाई है तो माँ के पास भी तो लाना चाहिये।''

: 8 :

जब तारा उठ कर घर को चली तो सुमित्रा ने सुख का साँस लिया। उसको डर लग रहा था कि तारा और सोहनी कहीं लड़ न पड़ें।

श्याम बाबू माँ और बहनों को गली के बाहर तक छोड़ने आया। मार्ग में उसने माँ को कहा, ''माँ! तुम भी वही समझती हो जो तारा समझती है?''

''मुझ को अपने पुत्र के कथन पर विश्वास है। इस पर भी मैं कहती हूँ कि आवश्यकता थी बीवी की और बना रहे हो बहन। यह सौदा हानि का है।''

''माँ! बीवी बनाऊँगा तो आप सबसे राय करके ही बनाऊँगा।''

गली के बाहर से टाँगा कर उसमें तीनों को बैठा वह लौट आया और सीधा ऊपर चढ़ गया। वह तारा के कटु वाक्यों के लिए सोहनी से क्षमा माँगना चाहता था।

सोहनी रसोई का काम समाप्त कर नीचे आने के लिए तैयार खड़ी थी। आज दो शायर आये हुए थे और वे अपना कलाम कहने वाले थे। श्याम ने सोहनी के सामने खड़े होकर कहा, ''क्षमा करना सोहनी बहन!...''

सोहनी ने बात समाप्त करने नहीं दी और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

श्याम ने मुस्कराते हुए कहा, ''यह बहन दिल्ली में रहती है। यहाँ के रीति–रिवाज नहीं जानती।''

''इसी से तो हँसी आ रही है। मूर्खों की मूर्खता पर तो हँसना ही चाहिये।''

इतना कह सोहनी नीचे उतर गई। श्याम भी नीचे आ गया। वह अभी नीचे पहुँचा ही था कि सदानारायण आ गया। उसने आते ही कहा, ''भैया! तारा बहन नाराज हो रही थी। तुमको दफ्तर से ही आना चाहिये था।''

श्याम ने हँसते हुए कह दिया, ''वे डाँट गई हैं। तुम कहाँ थे?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो फुटबॉल खेलने गया था।"

"तो जल्दी जाओ। उनकी डाँट तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी।"

सदानारायण पिछले पाँव लौट गया। श्यामनारायण देख रहा था कि जमाने की गति के साथ जो नहीं चलते, उनको ठीक बात भी गलत लगने लगती है। वह विचार कर रहा था कि तारा अब घर जायेगी, पिताजी के पास शिकायत करेगी। पिताजी बड़े भापा को लिखेंगे और वे उसको कहेंगे कि मैं विवाह कर सोहनी को घर में रखूँ। बिना विवाह के ठीक नहीं। धर्म–शास्त्र इसकी स्वीकृति नहीं देते।

श्याम को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि तारा बहती नदी में से किनारे पर अटका हुआ घास–फूस है। वह स्वयं को मँझधार में बहने वाली लकड़ी की भाँति पाता था जो किनारे पर अटके घास–फूस को बहुत पीछे छोड़ आया था।

इस समय उसको कला की धृष्टता याद आ गई। मँझधार में बहने वाली दो लकड़ियों के पृथक्–पृथक् हो जाने पर विस्मय करने की बात नहीं थी। किनारे पर अटका हुआ घास–फूस तो वर्षों तक एक–दूसरे की संगति का भोग कर सकता है।

भाई–दूज के बाद तो सोहनी निश्शंक श्याम के घर में आने–जाने लगी। उसको साधुराम और श्याम में न तो कुछ अन्तर प्रतीत हुआ और न ही उसके मन ने इसे स्वीकार किया।

परन्तु मुहल्ले वाले और मित्र–मंडली भी इस संयोग को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। सब सोहनी को श्याम को बुलाते समय 'भैया' कह कर सम्बोधन करते सुनते थे और श्याम भी सदा उसको 'सोहनी बहन' कह कर पुकारता था। इस पर भी धीरे–धीरे उन लोगों की संख्या बढ़ रही थी, जो दोनों बहन–भाई के अतिरिक्त सम्बन्ध मानने लगे थे।

मित्र–मण्डली में चौधरी था चिरंजीवलाल और मित्र–मण्डली के सदस्य काना–फूसी करने लगे तो उसके कान में भी यह समाचार पहुँचा। बहू तो सोहनी के टीका लगाने की बात जानता था। इससे उसने पहले तो इनके विषय में निन्दा करने वालों को डाँटा, परन्तु बात बढ़ती गई। एक दिन श्यामनारायण ऊपर गया, जहाँ सोहनी पहले ही गई हुई थी और वसन्ता चाय पिला रहा था तो सब ने प्रश्न–भरी दृष्टि से एक–दूसरे को देखा। वासुदेव से नहीं रहा गया। वह उठ कर चिरंजीवलाल और साधुराम के पास आकर बैठ गया। वासुदेव ने आते ही कहा, "चाचा!" चिरंजीवलाल को सब इसी प्रकार सम्बोधन किया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरंजीवलाल ने प्रश्न–भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो वह कहने लगा, ''इस बात को रोकना चाहिए।''

''किस बात को?''

''श्याम बाबू और सोहनी के सम्बन्ध को।''

''क्यों?''

''कहीं कुछ गड़बड़ हो गई तो यह गोष्ठी चलनी कठिन हो जायेगी।''

चिरंजीवलाल विस्मय से वासुदेव का मुख देखने लगा। साधुराम समीप बैठा सुन रहा था। उसने कह दिया, ''तो नगर में जितने स्त्री–पुरुषों के सम्बन्ध बनते हैं, क्या वे सब इस मित्र–गोष्ठी के द्वारा ही बनते हैं?''

''साधु भैया! बहुत बदनामी हो रही है।''

''कौन बदनामी कर रहा है?'' चिरंजीवलाल ने पूछा।

''मुहल्ले के लोग।''

''वे सब तुमको ही कहने आते हैं? और किसी को नहीं?''

''सब सुन रहे हैं, परन्तु तुमको कोई कहने का साहस नहीं करता।''

''क्यों?''

''तुम सबके चाचा हो न।''

इस समय श्यामनारायण नीचे बैठक में आ गया। चिरंजीवलाल ने उसे अपने पास बैठा लिया। बैठा कर कहा, ''वासुदेवजी कह रहे हैं कि लोग तुम्हारी और सोहनी की निन्दा करते हैं।''

''तो इसमें वासुदेव भैया को क्या? उसकी तो निन्दा नहीं करते।''

''हमारी इस मण्डली की भी निन्दा होने लगी है।'' वासुदेव ने कह दिया।

''क्या निन्दा होने लगी है?'' श्याम ने मुस्कराते हुए पूछा।

''मुहल्ले के लोग कहते हैं कि यह एक 'ब्रौथल' (रंडीखाना) है।''

''यह तो सत्य ही बहुत बड़ी बात है। भैया वासुदेव! तुमको तो यहाँ नहीं आना चाहिये।''

''मेरे न आने से क्या होगा?''

''इस प्रकार इस निन्दा से डर कर जब आप सब आना छोड़ देंगे तो फिर कोई निन्दा की वस्तु ही नहीं रह जायेगी।''

इस उत्तर को सुन वासुदेव निरुत्तर हो गया। उसने इसका एक ही उत्तर समझा। उसने सबको सम्बोधित कर कह दिया, ''मित्रो! आप सब के मन में जो बात है वह मैंने श्याम बाबू से कही है और यह कहता है कि यदि उसके तथा सोहनी के कारण किसी की बदनामी होती है तो वह यहाँ न आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस कारण मैं आप से यही कहूँगा कि हम सबको यहाँ आना बन्द कर देना चाहिये।"

पूर्व इसके कि कोई अन्य कुछ कहे, चिरंजीवलाल ने कह दिया, "मैं यह कहता हूँ कि सोहनी का भाई यहाँ बैठा है। और...।" इस समय सोहनी भी ऊपर से नीचे आ गई थी। उसका रसोई–घर का काम समाप्त हो गया था। उसे आया देख चिरंजीवलाल एक क्षण के लिए झिझक कर चुप रहा। फिर कहने लगा, "मैं कह रहा था कि सोहनी का भाई, सोहनी और फिर श्याम भी यहाँ बैठे हैं। सोहनी श्याम को भैया कहती है। श्याम सोहनी को बहन कहता है। साधुराम दोनों के मेल–जोल को सुनता है। यदि किसी को ये सब झूठे और फरेबी प्रतीत होते हैं तो उसको इनसे मेल–जोल बन्द कर देना चाहिये। यहाँ तो वे ही आ सकते हैं जो परस्पर एक–दूसरे का विश्वास करते हैं।

"श्याम बाबू ने कहा कि यदि सबको उसके कथन पर विश्वास नहीं तो कोई भी यहाँ नहीं आयेगा। इससे यह मित्र–मण्डली टूट जायेगी और फिर कोई निन्दा का विषय नहीं रहेगा। वे भी साधारण पड़ोसियों की भाँति मिलते–जुलते रहेंगे। अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे।

"जो जाना चाहें जा सकते हैं।"

वासुदेव ने उठ कर कह दिया, "हम सब को चल देना चाहिये।"

सोहनी उनके जाने के लिए द्वार से एक ओर हट कर खड़ी हो गई। वासुदेव का विचार था कि सब नहीं तो अधिकांश मित्र लोग उठ कर बाहर निकल जायेंगे। परन्तु वासुदेव के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं निकला। वासुदेव मकान के बाहर दो मिनट तक अकेला किसी अन्य के आने की प्रतीक्षा करता रहा। जब अन्य कोई नहीं आया तो वह अपने घर की ओर जाने के स्थान गली से बाहर निकल गया।

इसका एक परिणाम हुआ। अगले दिन ग्वाल मण्डी थाने का एक हैड कान्स्टेबल मध्याह्न के समय श्याम बाबू का पता पूछता हुआ आया और नौकर से यह जान कि बाबू दफ्तर गया है, उसको यह कह गया कि बाबू आये तो उसको थाने में भेज दे।

सायंकाल श्याम घर आया तो नौकर ने बता दिया, कि एक सिपाही आया था और आपको थाने में बुला गया है। श्याम बाबू ने इतने मात्र से जाना उचित नहीं समझा।

उस दिन उसने साधारण रूप में मित्र–गोष्ठी में सिपाही की बात बताई। किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। किसी को इस बात का सम्बन्ध वासुदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जाने से प्रतीत नहीं हुआ। श्याम बाबू समझता था कि अब तनिक साहस से काम लेना पड़ेगा। बात दूर तक पहुँच गई है।

अगले दिन वही हैड कान्स्टेबल, दो अन्य सिपाहियों के साथ उस समय आ गया, जब चाय का दौर चल रहा था। उस दिन एक पंजाबी के बैत गाने वाला आया हुआ था।

अभी गाने वाले ने पहला ही बैत आरम्भ किया था। वह गा रहा था–

'धर्म देश दे प्रेम दे लई जिसने
छड दित्ता सी रब दी राह नूँ वी।
ओस वीर दे की मैं गुण गावाँ,
जो ललकारदा दिल्ली दे शाह नूँवी।'

इस समय हैड कान्स्टेबल बैठक के द्वार पर आ खड़ा हुआ। श्याम बाबू ने उसे देखा तो कह दिया, "आइये, मीर साहब! आ जाइये। ओ वसन्ते! इधर भी चाय लाओ।"

"मैं चाय पीने नहीं आया।"

"तो फरमाइये! किसलिए आये हैं?"

"कल आपको बुलाया था और आप थाने में नहीं आये।"

"बिना लिखे हुक्म की तामील करना मेरी आदत से बाहर है। नौकर ने बताया था। परन्तु यह बुलाने का तरीका अनपढ़ों के लिए तो हो सकता है, पढ़े–लिखों के लिए नहीं।"

हैड कान्स्टेबल इस निर्भीक उत्तर पर मुख देखता रह गया। वह सब के सामने इस बात को सुन अपना अपमान मानने लगा। कोई लिखित आज्ञा उसके पास इस समय भी नहीं थी। इससे कुछ विचार कर बोला, "मुझको एक मुआमले में तहकीकात करनी थी।"

"कहिये! क्या कोई खुफिया तहकीकात है?"

"खुफिया तो नहीं।"

"तो फिर आइये! बैठिये। पूछिये, क्या जानना चाहते हैं?"

विवश हैड कान्स्टेबल भीतर आ गया और श्याम बाबू के सामने बैठ गया। वह अपने साथ कागज, कलम–दवात लाया था। उनको निकाल वह लिखने लगा। इस समय वसन्ता चाय का प्याला हैड कांस्टेबल के सामने रख गया। उसने चाय नहीं पी। वह पूछने लगा––

"इस होटल का क्या नाम है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह होटल नहीं है। इस घर में मैं रहता हूँ। मेरा नाम श्यामनारायण है।"

"तो तुम यह चाय क्यों पिलाते हो?"

"इसलिए कि इसको पिलाना कानूनन मना नहीं है।"

"परन्तु, चाय तो होटलों में ही पिलाई जाती है?"

"हाँ, होटलों में वे पीते हैं जिनके घर न बनती हो, अथवा जिनको बनाने का ढंग न आता हो।"

"परन्तु यहाँ ये सब लोग क्यों इकट्ठे होते हैं?"

"मित्र लोग काम–धन्धे से आकर मनोरंजन के लिए एकत्रित हो जाते हैं।"

"तो यह क्लब है?"

"क्लब के ये अर्थ नहीं होते। यहाँ आने वालों से न तो चन्दा लिया जाता है न ही किसी किस्म की फीस।"

"खर्चा कौन देता है?"

"जिस की जेब में उस समय होते हैं, जब खर्चा हो रहा होता है।"

"आप का वेतन कितना है?"

"साढ़े पाँच सौ रुपया महीना।"

"मगर हमारे यहाँ रिपोर्ट हुई है कि यहाँ क्लब है। यहाँ औरतें आती हैं।"

"औरतें तो आती हैं। मगर यहाँ आने वालों की माँ, बहन, बीवियाँ ही होती हैं। कोई अपरिचित स्त्री नहीं आती। यह क्लब नहीं है।"

"तो रिपोर्ट करने वाले ने यह क्यों लिखाया है?"

"यह तो उससे ही पूछना चाहिये। उसके मन की बात मैं कैसे बता सकता हूँ?"

"तुम भी तो झूठ बोल सकते हो?"

"तो चालान कर दो। मैजिस्ट्रेट को मैं बता दूँगा।"

हेड कांस्टेबल ने चिरंजीवलाल की ओर घूम कर पूछ लिया, "मेरे आने पर क्या हो रहा था।"

"शम्भु पण्डित के बैत हो रहे थे।"

"तो यह बदमाशों का अड्डा है?"

"जी हजूर!" चिरंजीवलाल ने कह दिया, "अब आप तशरीफ ले जाइये। अपनी जाँच के आधार पर दावा दायर करिये, हम समझ लेंगे।"

हैड कांस्टेबल ने चारों तरफ नजर दौड़ाई। बैठक के बगल वाले कमरे में कुछ औरतें भी बैठी थीं। उसने यह भी नोट किया और फिर वहाँ से चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाने की रिपोर्ट फाइल हो गई। वासुदेव ने एक पत्र डिप्टी कमिश्नर को भी लिखा। परन्तु डिप्टी कमिश्नर को लिखी चिट्ठी पुनः थाने में ही जाँच के लिए आई और बात समाप्त हो गयी।

इस जाँच के बाद मित्र–मंडली का काम शान्ति से निर्विघ्न चलता रहा। हाँ, वासुदेव ने मुहल्ले में अपना निन्दात्मक प्रचार जारी रखा।

: 9 :

कला के मिल जाने पर बम्बई में विचार होने लगा कि उसकी श्यामनारायण से सुलह हो जाने की कुछ भी आशा है? लेखवती का विचार था कि उसका अपने पति से अब मेल–जोल नहीं हो सकता। रामरक्खामल्ल का विचार था कि उसका अपने पति से मेल–जोल उत्पन्न हो सकता है। इस पर भी इसके लिए यत्न करना पड़ेगा।

यह सितम्बर का महीना था। सदानारायण बम्बई आकर वापस लाहौर जा चुका था। रामरक्खामल्ल ने उसके हाथ श्याम को भी पत्र लिखा था, जिसमें उसने लिखा था कि उसको कला अपने पति के साथ दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करती दिखाई देती है। उस समय कला अभी मिली नहीं थी।

अब मिली तो वह अंधी हो चुकी थी। भिखारियों का जीवन व्यतीत करने से निस्तेज और दुर्बल हो चुकी थी। इस अवस्था में तो कोई भी भला पुरुष उसको पत्नी के रूप में स्वीकार करेगा, यह सम्भव प्रतीत नहीं होता था।

रामरक्खामल्ल ने उसकी आँखों की चिकित्सा करने का यत्न आरम्भ कर दिया और उसका स्वास्थ्य सुधारने के लिए अच्छा भोजन, प्रातः–सायं भ्रमण और प्राणायाम का कार्यक्रम बना दिया।

इस समय तक देसाई संगीत भवन को खुले दो मास हो चुके थे। शिक्षा पूर्ण ढंग से होने लगी थी। राधा आरम्भ में तो कुछ समय के लिए ही शिक्षा देने आया करती थी। उसने खटाऊजी की थियेट्रिकल कम्पनी से त्याग–पत्र दिया हुआ था। खटाऊजी उसके त्याग–पत्र के विषय में टाल–मटोल कर रहा था। उसका विचार था कि वह अध्यापन–कार्य को नीरस पाकर ऊब जाएगी और तब तक के लिए उसके त्याग–पत्र को स्वीकार नहीं करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नसीरा को संगीत–भवन में प्रवेश मिला तो राधा के लिए भवन में अपना पूरा समय देने के लिए थिएटर छोड़ने की आवश्यकता अनुभव हुई। अगले ही दिन वह खटाऊजी के मकान पर पहुँच गई। खटाऊजी अपने फ्लैट के बरामदे में बैठा अभी शेव कर रहा था। राधा उठ स्नानादि से निवृत्त हो, समुद्र तट पर भ्रमण कर वहाँ पहुँची थी। स्वाभाविक रूप में उसका स्वास्थ्य सुधर रहा था। खटाऊजी ने राधा को देखा तो वह उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो देखता ही रह गया।

"क्या देख रहे हैं, जो आज बैठने को भी नहीं कहते?"

"मैं यही देख रहा हूँ तुम्हारे भापा तुमको क्या खिलाते हैं, जो तुम दिन–प्रतिदिन अधिक–से–अधिक सुन्दर होती जा रही हो?"

"बस छोड़िये व्यर्थ की खुशामद। मैं आज आप से अपने त्याग–पत्र के विषय में जानने आई हूँ। उसको दिये दो मास हो चुके हैं। शर्त के अनुसार मुझको केवल एक सप्ताह का नोटिस देना आवश्यक है।"

यह सुन खटाऊजी गम्भीर हो गया। उसने अभी आधी दाढ़ी पर उस्तरा चलाया था। उसने उस्तरा मेज पर दर्पण के पास रख दिया और राधा की ओर देख कर कहा, "बैठ जाओ।"

राधा समीप रखी कुर्सी पर बैठ गई। खटाऊ ने पूछ लिया, "अब तुम रात को संगीत–भवन में रहती हो। थिएटर में सप्ताह में दो बार काम करती हो और दो बार ही रिहर्सल करने आती हो। शेष सप्ताह में पाँच दिन तुम भवन का काम करती हो। बताओ इतना अवकाश पर्याप्त नहीं?"

"जी नहीं। मैं तो आपके नये खेल रुक्मिणी–हरण में एक महीना तक काम करने के लिए इस प्रबन्ध को मान गई थी। मैं नहीं चाहती थी कि आपके इस खेल की तैयारी में लगे हुए हजारों रुपये व्यर्थ जायें। अब एक मास के स्थान पर दो मास व्यतीत हो गये हैं। अब मैं छुट्टी चाहती हूँ।"

"परन्तु क्या यह तुम्हारे हित में होगा?"

"हित–अहित की बात का निर्णय करना अति कठिन है। भापाजी ने समझाया है कि यह कार्य अधिक उपयोगी होगा। उनकी बात मेरी समझ में आ गई है।"

"किसके लिए उपयोगी होगा?"

"सबके लिए। सीखने और सिखाने वालों के लिए भी।"

"मैं तो पूछ रहा हूँ तुमको क्या लाभ होगा? वह ख्याति, वह आर्थिक लाभ और समाज में प्रतिष्ठा, जो तुमको थिएटर से प्राप्त हुई है, भला वहाँ मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेगी। इसके अतिरिक्त मैंने तुमको सब प्रकार की सुविधा और लाभ पहुँचाने का यत्न किया है।''

''यह सब मानती हूँ। परन्तु धन, ख्याति और प्रतिष्ठा से भी ऊपर है लोक कल्याण का कार्य। इससे भविष्य बनता है।''

''यह मिथ्या दृष्टि है। 'आप जिये, जग जिये। आप मरे जग मरे।' तुम्हारे पास धन होगा तो लोग तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे। तुम्हारी कला की भी पूछ होगी। समाज तुम्हारे दर्शनों के लिए लालायित रहेगा। वहाँ एक साधारण संगीत–अध्यापिका–मात्र रह जाओगी। कलाकार भी नहीं।''

''देखिये सेठजी! यह सब बात मैं मानती हूँ। अपनी सब बात आप स्वयं को केन्द्र–बिन्दु मानकर कह रहे हैं। मैंने स्वयं को केन्द्र–बिन्दु मानना छोड़ दिया है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि मैं अपने लाभ से अधिक दूसरों के भले में अपना कल्याण मानने लगी हूँ। दूसरों का भला मैं अपनी सामर्थ्यानुसार करना चाहती हूँ।''

''क्या वेतन मिलेगा वहाँ पर?''

''मैंने अभी पूछा नहीं।''

''पूछा नहीं तो खाओ–पिओगी कहाँ से?''

''कुछ तो मिलेगा ही। मेरे अपने पास भी कुछ है। मैं समझती हूँ कि जीवन निकल जायेगा।''

''मुझको कुछ ऐसा लग रहा है कि लाला रामरक्खामल्ल ने तुमको 'डोमेस्टिकेट' (पालतू जानवर) बना लिया है। उसने तुम्हारी सब उच्च आकांक्षाओं का मलियामेट कर दिया है।

''अब तुम बम्बई में बसने वाली लाखों में एक होने जा रही हो। मेरा कहा मानो, तुम विवाह कर लो और एक पालतू जानवर की भाँति अपने पति के पीछे उसके मुख की ओर देखती हुई चलने में ही अपना कल्याण समझो। तुम्हारी इस अवस्था में तो पति के संरक्षण के बिना रहना अत्यंत भयंकर हो सकता है।''

''परन्तु कौन करेगा मुझसे विवाहं?''

खटाऊजी ने मुस्कराते हुए कहा, ''चाहो तो मैं भी कर सकता हूँ। जो पहले केवल व्यवहार में है, वह अब कानून से भी हो जाय।''

''और आप मुझको पालतू जानवर की भाँति गले में पट्टा डाल कर साथ–साथ लिए हुए फिरेंगे?''

''जब तुम यही पसन्द करती हो तो यह पुण्य का कार्य मैं ही कर दूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है। जब मुझको इस प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता अनुभव होगी, तब मैं अपना गला आपके पट्टे में देने के लिए चली आऊँगी।"

दोनों हँसने लगे। खटाऊजी एकाएक गम्भीर हो, पुनः दाढ़ी को साबुन लगाने लगा। सानुन लगाते हुए उसने कहा, "मैं विचार करता हूँ कि मेरी कम्पनी का क्या होगा?"

"जो अब हो रहा है। मैं वर्ष में केवल एक–दो नाटकों में भाग लेती हूँ और फिर जब तक वे नाटक चलते हैं, मैं मंच पर आती हूँ। शेष तो मुझको पैन्शन ही मिलती है।"

"इस पर भी पिछले वर्ष तीन नाटकों में तुमने दो सौ पन्द्रह 'शो' में भाग लिया और मेरी तो वर्ष–भर की कमाई उसमें से ही निकल आई थी। शेष दिन तुम मंच पर नहीं आईं और प्रति–दिन का खर्चा भी कठिनाई से निकलता रहा है।"

"तो एक बात करिए। आप कम्पनी बन्द कर दीजिये और हमारे संगीत–भवन में सहयोग दीजिये।"

"क्या इसमें उतनी आय हो जायेगी जो कम्पनी में होती है?"

"कम्पनी से पिछले वर्ष आपको क्या मिला था?"

"सब प्रकार के खर्चे निकाल कर, यहाँ तक कि इन्कम–टैक्स भी देकर सवा लाख नकद बचा है। बचत और भी अधिक होती, यदि तुम्हारे पतिदेव झगड़ा खड़ा न कर देते।"

"तब तो आप कम्पनी रखिये। इतनी आय तो संगीत–भवन से नहीं हो सकती। हाँ, पाँच सौ रुपया महीने तक का प्रबन्ध हो सकता है।"

"परन्तु राधा! तुम्हारे बिना तो यह कुछ नहीं होगा।"

"तब भवन में कार्य करना लाभप्रद होगा।"

"यदि तुम मुझसे विवाह कर लो?"

"इसका आपकी आय से क्या सम्बन्ध है? भवन में कार्य के लिए तो इस कारण कह रही हूँ, जिससे आपकी कम्पनी में हानि के स्थान कुछ तो प्राप्ति होने लगे।"

"इसका तुम्हारे कम्पनी का कार्य छोड़ने से सम्बन्ध है। क्या हमारा पूर्ववत् सम्बन्ध रह सकेगा?"

"मुझको तो यह असम्भव प्रतीत नहीं होता।"

"तुम्हारे भापाजी तुमको इस काम की छुट्टी देंगे?"

"दे देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तुमने पूछा है?"

राधा ने सिर हिला कर स्वीकारोक्ति प्रकट की।

"और तुमने पूर्ण बात बता दी है?"

"हाँ। मैं उनके सामने न तो झूठ बोलती हूँ, न ही कुछ छिपा कर रखती हूँ।"

"और वे क्या कहते थे?"

"उनका कहना है कि पुरुष–स्त्री के सहवास के लिए विवाह की अवस्था सर्वोत्तम है। विवाह में पति–पत्नी में सामंजस्य आवश्यक है। दोनों के जीवन–उद्देश्य में समानता होनी आवश्यक है। जीवन–कार्य भिन्न–भिन्न हो सकते हैं, परन्तु उन दोनों कार्यों में भी जीवन का उद्देश्य एक होना चाहिए। विवाह वासना–तृप्ति से कहीं अधिक विस्तृत योजना है। यह मनुष्य और पालतू कुत्ते की बात–मात्र नहीं।"

"विवाह से उतर कर वासना–तृप्ति के लिए केवल मैत्री–सम्बन्ध भी क्षम्य है। इसमें भी शर्त है। वह है एक–दूसरे से मोह। मोह का अर्थ है अटैचमैन्ट। यह मोह अर्थात् अटैचमैंट ऐसा होना चाहिए कि कोई भाई भी एक–दूसरे पर आधिपत्य जमाने अथवा आर्थिक या किसी अन्य प्रकार का लाभ उठाने की भावना न रखे।

"इससे निष्कृट है वेश्यावृत्ति। इसमें वासना लाभ उठाने का साधन बन जाती है।

"विवाह में वासना एक विवशता है। विवाह–सम्बन्ध समाज का ऋण उतारने के लिए है। मैत्री में वासना–तृप्ति मुख्य है और परस्पर निर्भरता है। वेश्यावृत्ति में वासना भी कम–से–कम एक पक्ष के लिए गौण हो जाती है। आर्थिक अथवा अन्य स्वार्थमय लाभ मुख्य हो जाते हैं।

"इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हारे भापा हमारे वर्तमान सम्बन्ध को जो कम्पनी के कार्य से अतिरिक्त है, भी जानते हैं और उसको मध्यम श्रेणी का प्रबन्ध मानते हैं।"

"हाँ, परन्तु यह तो मुझको आज ही पता चला है कि आप इस सम्बन्ध से, मुझको अपनी कम्पनी से और फिर अपने आर्थिक लाभ से जोड़कर रखना आवश्यक समझते हैं। अर्थात् आप मुझ से वेश्यावृत्ति करा रहे थे।"

"तो तुम क्या समझती थीं?"

"मैं समझती थी कि कम्पनी में मैं नौकरी करती हूँ और उसका वेतन पाती हूँ। जब काम नहीं करूँगी तो वेतन नहीं मिलेगा। अपना अतिरिक्त सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो दोनों के हानि–लाभ से परे की बात है। परन्तु आप का यह कहना कि मेरे कम्पनी से कार्य छोड़ने पर वह सम्बन्ध भी टूटेगा यह आपके मनोभावों को प्रकट करता है। अर्थात् आप मुझको उस सम्बन्ध द्वारा कम्पनी से बाँध रखना चाहते हैं।''

''नहीं, नहीं। यह बात नहीं राधा! मैंने तो दोनों की पृथक्–पृथक् सम्भावना का ही वर्णन किया है।''

''तब ठीक है। बताइये कब तक मुझको कम्पनी से छुट्टी मिल सकेगी?''

''एक बात का मुझको सन्तोष है कि भापाजी ने राधा को बात करने का ढंग सिखा दिया है।''

''करने का ही नहीं, प्रत्युत बात को समझने का भी। देखिये, मैं अपने भापाजी के सम्पर्क में आने की कथा बताती हूँ। इससे पता चल जायेगा कि कैसे मैं, इनके कारण ही, पशु से मानव बन पाई हूँ।

''मैं वेश्या का कार्य करती थी। दलालों से त्रस्त, कृत्रिम सुख–साधनों से तृप्त और अपने को संसार में असहाय पाती थी।

''दलालों ने मेरे साथ एक अन्य लड़की को लाकर रख दिया। वह वेश्यावृत्ति से घृणा करती थी, परन्तु परिस्थितियों से विवश मेरे साथ कार्य करती थी। मैं अपने व्यवसाय के विषय में किसी प्रकार की भावना नहीं रखती थी। दिन चढ़ने पर रात की दुर्दशा भूल जाती थी। परन्तु मेरी साथिन की स्मृति मुझ से तीव्र थी। वह दिन के समय भोजन करती अथवा वस्त्राभूषण पहनती तो स्मरण रखती थी कि उन सबके लिए क्या मूल्य उसने दिया है।

''उसके भावों का प्रभाव मुझ पर भी हुआ। उसको अवसर मिला तो उसने वह व्यवसाय छोड़ने का यत्न किया। उसका प्रथम प्रेमी भापाजी का लड़का था। उसने उस लड़के से सम्पर्क बनाने पर इस कार्य से बाहर होने के लिए प्रयास किया। उस लड़के और भापाजी ने सहयोग दिया और जान–जोखम में डाल मेरी साथिन को व्यवसाय से बाहर कर दिया। मैंने भी देखा, समझा और इस कीचड़ से बाहर निकलने का सफल प्रयास किया। साथिन के प्रेमी का मित्र मेरा प्रथम पति बन गया।

''अभी भी मेरा पूर्ण उद्धार नहीं हुआ। भापाजी के परिवार से सम्पर्क बना और मुझको मानवता का ज्ञान हुआ और उस ज्ञान के आधार पर ही मुझको अपने उस पति से पृथक् होना ठीक प्रतीत हुआ। मेरे मन में वेश्यावृत्ति से घृणा और असत्य व्यहार से अरुचि मुझको खींच कर रुक्मिणीजी के सम्पर्क में ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये और भापाजी के घर में आरम्भ हुआ परिवर्तन रुक्मिणी और वर्माजी ने पूर्ण कर दिया।

"अब मैं पुनः भापाजी के सम्पर्क में आ गई हूँ और जो कुछ रुक्मिणी और वर्माजी ने मुझ में निर्माण किया है, अब उसको चमका कर मुझको कुन्दन का रूप दिया जा रहा है। कम–से–कम मैं ऐसा अनुभव कर रही हूँ।"

खटाऊजी ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा और कह दिया, "अच्छा राधा! मैं तुमको आज से पन्द्रह दिन में कम्पनी के काम से मुक्त कर दूँगा।"

: 10 :

उसी दिन खटाऊजी ने समाचार–पत्र में और 'पोस्टरों' द्वारा यह घोषित कर दिया कि राधादेवी के मंच पर अन्तिम पन्द्रह दिवस में राधाजी के विख्यात सात खेल दो–दो बार दिखाये जायेंगे। प्रवेश–शुल्क दुगना लिया जायेगा और सीमित संख्या में ही टिकिट होने के कारण स्थान पहले ही सुरक्षित किया जायेगा।

इस प्रकार एक दिन के नोटिस पर, राधा को लगातार चौदह दिन तक अपने नाटक करने पड़े। पहले ही दो दिन में पूर्ण भवन चौदह दिन के लिए दुगने शुल्क पर दर्शकों ने सुरक्षित कर लिया।

रंगमंच छोड़ने पर राधा पर अनेक टीका–टिप्पणियाँ हुईं। समाचार–पत्रों में इस पर विवेचनाएँ लिखी गईं। राधा की कला पर विशेषांक निकाले गये और राधा के चित्रों से पत्रों के पन्ने रंगीन किये गए। कुछ लिखते थे राधाजी और खटाऊजी का विवाह होने वाला है। कुछ लिखते थे कि वह अभी भी गर्भवती है। ऐसे अनुमान लगाने वाले भी कम नहीं थे कि राधा साध्वी होने वाली है। इसके साथ कहीं से यह समाचार छप गया कि राधा का पति शमशाद खाँ, जो राधा की हत्या करने के अपराध में आजन्म–कैद का दण्ड भोग रहा था, प्रिवि कौंसिल से छूट गया है। उसने राधा की हत्या करने का यत्न उस समय किया था, जब वह मंच पर अभिनय कर रही थी। इस कारण वह भयभीत हो मंच को छोड़ कहीं छिप कर जीवन व्यतीत करने का विचार कर रही है। समाचार–पत्रों के प्रतिनिधियों ने उसे बार–बार मिलकर इस कहानी और उसके मंच त्यागने के विषय में कारण जानने का यत्न किया।

राधा ने कुछ नहीं बताया। साथ ही उसने कह दिया कि अपने मन से जो इच्छा हो लिखे, वह उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगी परन्तु यदि उसकी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से किसी भी बात को लिखा गया तो वह असत्य भाषण और अपमान का दावा कर देगी।

रामरक्खामल्ल की यह सम्मति थी कि उसको इस विषय में न कोई वक्तव्य देना चाहिए, न ही किसी बात को गलत बताना चाहिए। उसे सर्वथा चुप रहना चाहिये। साथ ही उसको जब तक यह बवंडर शान्त नहीं हो जाता, संगीत–भवन में नहीं आना चाहिए।

खटाऊजी ने चौदह दिन में एक महीने की कमाई और वह भी बिना एक पाई भी अधिक व्यय किये प्राप्त कर ली। दर्शकों को भी यह समझ आया कि इन दिनों राधा अपनी सर्वश्रेष्ठ कला का निरूपण करती रही है। किसी को भी धन व्यय करने का दुःख नहीं था।

यह बवंडर शान्त होते–होते अक्टूबर मास समाप्त हो गया। इस सब अवधि में रामरक्खामल्ल भी सेठ देसाई के साथ एक अन्य काम में व्यस्त हो गया था। देश की राजनीतिक अवस्था में द्रुतगति से परिवर्तन हो रहा था और इस बदल रही अवस्था से अलिप्त रहना असम्भव हो गया। जब से इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई थी, तब से ही वह देश के मूक विशेष स्वभाव और चरित्र के लोगों के हाथ में काम कर रही थी। ये ही वे लोग थे, जिनको देश में सरकारी शिक्षा का सफल परिणाम कहा जा सकता था। ये लेग समझते थे कि अंग्रेजों का भारतवर्ष में आना देश का सौभाग्य है और अंग्रेज से लड़ कर अथवा उसको नाराज कर कोई भी कार्य शुभ नहीं हो सकता।

इस समय इस कांग्रेस के अतिरिक्त भी देश में ऐसे लोग पैदा हो गये थे जो न तो अंग्रेजों का इस देश में आना किसी शुभ बात का लक्षण समझते थे, न ही वे अंग्रेजों को नाराज करने में किसी प्रकार की हानि मानते थे। ये लोग देश में तुरन्त स्वराज्य की स्थापना के लिए उत्सुक थे। किन्तु अंग्रेजों की मरजी और प्रसन्नता से वे तुरन्त स्वराज्य की स्थापना सम्भव नहीं मानते थे। इस कारण वे आतंकवाद का प्रयोग करने लगे थे।

विट्ठलभाई देसाई इस समुदाय के सम्पर्क में रहता था, परन्तु आतंकवाद तथा सशस्त्र क्रांति में एक लम्बा मार्ग था और हिन्दुस्तान–जैसे देश को उस मार्ग पर ले जाने के लिए विपुल प्रयत्न की आवश्यकता थी।

अंग्रेज के आने से पूर्व मुसलमानों, सिक्खों और मराठों के अनियमित तथा शुद्ध स्वार्थमय राज्यों के कारण, भारत के जन–जन ने अंग्रेजों का मन से स्वागत किया था। दूसरे विचार पर जनता को अंग्रेज का राज्य और व्यवहार भी पसन्द नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल से अथवा विचार कर तत्कालीन अंग्रेज यह समझते थे कि ईसाई पादरी अंग्रेजी राज्य को भारत में सुदृढ़ कर रहे हैं। सरकार इन पादरियों की और हिन्दुस्तानी ईसाइयों की सदा सहायक रही और ये लोग भारत के रहने वालों के रहन–सहन, परम्पराओं और विचारों की खिल्ली उड़ाते तथा उनके प्रति घृणा उत्पन्न करते रहे।

मुसलमान भी अपने राज्य में हिन्दुओं के प्रति ऐसा ही व्यवहार करते थे और परिणामस्वरूप इस्लाम की नौका हिन्दू–विचार की चट्टान पर टकरा कर चूर–चूर हो गई।

यही बात भारत में अंग्रेजी राज्य के साथ होने जा रही थी। हिन्दू, ईसाइयों की इस घृणा की प्रतिक्रिया से न केवल ईसाइयों का विरोध करने के लिए लंगोट कसने लगे, प्रत्युत ईसाइयों की सहायक अंग्रेजी सरकार का भी विरोध होने लगा।

इस समय अंग्रेजी सरकार ने ईसाई पादरियों के अतिरिक्त अपनी सहायता के लिए हिन्दुस्तानी जनता में एक ऐसा समुदाय उत्पन्न करने का यत्न किया जो अंग्रेजी सरकार के बिना हिन्दुस्तान की कल्पना ही मन में न ला सके। यह कार्य सरकारी शिक्षा द्वारा करना आरम्भ किया गया।

तीस वर्ष के सरकारी स्कूलों तथा कॉलिजों के प्रयास से कुछ लोग ऐसे तैयार हो गये। तब सरकार ने इस अंग्रेजी शिक्षा–प्राप्त समुदाय के हाथ में हिन्दुस्तान का नेतृत्व देने के लिए 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' नामक संस्था की स्थापना कर दी। 1886 से लेकर 1907 तक यह संस्था उन लोगों का संगम–स्थल बनी रही, जो अपने अधिवेशनों में इंग्लैड के राजा और भारत के सम्राट क्वीन विक्टोरिया तथा किंग ऐडवर्ड के दीर्घ जीवन के लिए शुभ कामना करते थे और भारत में अंग्रेजी राज के चिर–स्थायित्व के लिए भगवान से प्रार्थना करते थे।

कभी–कभी तिलक–जैसे स्वतन्त्र विचार के व्यक्ति कांग्रेस में जाकर भारत की आत्मा की पुकार सुनाते। परन्तु वहाँ उनकी सुनने वाला कोई नहीं था। इस पर जब बंगाल इत्यादि में बम्ब और पिस्तौल चलाने से अंग्रेज को आतंकित करने का यत्न किया गया तो देसाई उसमें कूद पड़ा। इस समय रामरक्खामल्ल और देसाई का सम्पर्क हुआ और रामरक्खामल्ल ने देसाई को आतंकवाद और क्रान्ति में अन्तर बता दिया।

देसाई ने जब रामरक्खामल्ल के सामने अपना कांग्रेसियों की मान्यता पर अविश्वास प्रकट किया तो बाल गंगाधर तिलक की ओर भी संकेत कर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। रामरक्खामल्ल का कहना था कि बाल गंगाधर तिलक देश के सशस्त्र क्रांति की ओर ले जा रहे हैं।

सन् 1906 में कांग्रेस का अधिवेशन कलकत्ते में हुआ था और उसमें लोकमान्य तिलक जी को कांग्रेस का प्रधान बनाने का प्रस्ताव किया गया था। परन्तु उन लोगों ने, जो कांग्रेस पर अपना आधिपत्य जमाये हुए थे, चतुराई से तिलकजी को इस पद से वंचित कर दिया। इसी अधिवेशन में यह निश्चय हुआ था कि आगामी वर्ष के लिए प्रधान का निर्वाचन स्वागत–समिति करेगी। अधिवेशन नागपुर में होने वाला था। अतः रामरक्खामल्ल ने देसाई को बताया कि देश की राजनीति को मोड़ देने के लिए तिलक को कांग्रेस का प्रधान बनाना परमावश्यक है। इस पर दोनों नागपुर में बनने वाली स्वागत–समिति में नए रक्त का समावेश करने के लिए चल पड़े।

देसाई धन के बल से अपने विचार के स्वागत–समिति के सदस्य बनाने का यत्न करने लगा, जिससे तिलक को प्रधान बनाया जा सके। नरम दल, जो अभी तक कांग्रेस को अपनी बपौती बनाये हुए था, तिलक के साथियों के प्रयत्नों को जान गया और स्वागत–समिति में अपने विचार के लोगों को भरती करने लगा।

डॉ. मुंजे तिलक के पक्ष में काम कर रहा था और देसाई के रुपये से वह अठारह सौ सदस्य बनाने में सफल हो गया। नरम दल के लोग केवल आठ सौ सदस्य बना पाये थे। इस पर भी कांग्रेस–क्षेत्र में यह अभूतपूर्व बात थी। इतनी संख्या में इसकी स्वागतकारिणी के सदस्य पहले कभी नहीं बने थे।

नवम्बर मास के आरम्भ होते ही यह स्पष्ट हो गया कि इस वर्ष कांग्रेस का अध्यक्ष कोई गरम दल का व्यक्ति चुना जायेगा और सम्भवतः वह श्री बाल गंगाधर तिलक होगा। चालू वर्ष के प्रधान श्री फिरोजशाह मेहता थे। वे इस नई स्थिति को पसन्द नहीं करते थे।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की एक बैठक इस स्थिति को सुलझाने के लिए बम्बई में फिरोजशाह मेहता के घर पर की गई। उसमें स्वागताध्यक्ष डॉ. मुंजे को बुलाया गया। परन्तु निर्णय लेते समय डॉ. मुंजे से बात तक नहीं की गई और जब डॉ. मुंजे अभी फ़िरोजशाह मेहता से बात करने के लिए बरामदे में प्रतीक्षा ही कर रहा था कि भीतर कांग्रेस के तेरह सदस्यों ने यह झूठा बहाना बनाकर कि नागपुर में हैजा फैला हुआ है, यह निश्चय कर दिया कि अधिवेशन नागपुर में होने के स्थान पर अब सूरत में होगा और सूरत वालों ने डॉ. रासबिहारी को चुन लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरम दल वालों ने तिलक के विरुद्ध आन्दोलन भी आरम्भ कर दिया। इसकी देशव्यापी प्रतिक्रिया हुई। तिलक–पक्ष के लोगों ने मध्यवर्ती मार्ग निकालने की दृष्टि से श्री लाला लाजपराय का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तावित कर दिया। लालाजी 11 नवम्बर, 1907 को मॉडले जेल से छूट कर आ गये थे।

सूरत में एक छोटी–सी स्वागत–समिति ने डॉ. रासबिहारी का नाम ही अध्यक्ष पद के लिए स्वीकार किया। स्वागत–समिति में जब लाला लाजपतराय का नाम कुछ लोगों ने उपस्थित किया तो उनको धमकी दी गई कि लालाजी–जैसा 'बागी' यदि कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया तो सरकार इसको अवैध घोषित कर देगी।

लाला लाजपतराय ने अपना नाम वापस ले लिया और समाचार–पत्रों में घोषणा कर दी कि वे प्रधान पद के लिए प्रत्याशी नहीं। इस पर तिलक ने कांग्रेस में झगड़ा उत्पन्न न हो, इस विचार से, कांग्रेसी नेताओं से यह आश्वासन माँगा कि स्वदेशी, बहिष्कार और कौमी शिक्षा का कलकत्ता का त्रिसूत्री प्रस्ताव रद्द नहीं किया जायेगा। यह आश्वासन नहीं दिया गया।

परिणाम यह हुआ कि अधिवेशन के आरम्भ में प्रधान पद के लिए डॉ. रासबिहारी का नाम प्रस्तावित होने पर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के इसके समर्थन के लिए खड़े होने से पूर्व प्रतिनिधियों ने प्रस्ताव का घोर विरोध किया। श्री बनर्जी बोल नहीं सके और सभा विसर्जित कर दी गई।

अगले दिन पुनः सभा हुई। तिलकजी के कहने पर प्रतिनिधियों ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को प्रस्ताव का समर्थन करने दिया। परन्तु जब तिलक इस प्रस्ता; पर संशोधन करने के लिए खड़े हुए तो डॉ. रासबिहारी अध्यक्षीय कुर्सी पर आ बैठे और कहने लगे कि वे अध्यक्ष निर्वाचित हो गये हैं। अब इस विषय पर तिलकजी को बोलने की स्वीकृति नहीं दी जा सकती।

इस पर भी जब तिलक ने बोलने का यत्न किया तो नरम दल के सदस्यों ने हल्ला करना आरम्भ कर दिया। कुछ सदस्य कूद कर मंच पर आ गये और तिलक को प्लेटफार्म से नीचे धकेलने लगे। इस पर पंडाल में से किसी ने एक जूता फिरोजशाह मेहता की ओर फेंका। वह प्रधान के पीछे बैठे सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की गाल पर जा लगा।

फिर तो प्रतिनिधियों में मुक्का–मुक्की होने लगी और सभा विसर्जित कर दी गई। रामरक्खामल्ल और देसाई इस सभा में उपस्थित थे। वे सभा के इस शोकमय अन्त पर विस्मित से खड़े रह गये। देसाई की इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लालाजी के दर्शन करने की थी। वह यह जानता था कि रामरक्खामल्ल का उनसे परिचय है। अतः दोनों लालाजी के ठहरने के स्थान पर जा पहुँचे। लालाजी ने उस दिन की दुर्घटना का विश्लेषण स्वीकार करते हुए कहा, "यह मानव-प्रकृति है कि अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति अपना अधिकार छोड़ना नहीं चाहता।"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "ठीक है, परन्तु लालाजी! यह उचित धर्मविहीन व्यक्तियों के लिए ही ठीक है। इस राजनीति में धर्म का अभाव है, तभी यह धोखा-धड़ी की गई है।"

"परन्तु रामरक्खामल्लजी! इस संस्था पर अधिकार जमाने की आवश्यकता ही क्या है? जिनका विचार इसके नेताओं से नहीं मिलता, वे अपना नया संगठन पैदा करें।"

"तो आप करिये।"

"मैं इतना झगड़ा पसन्द नहीं करता। मैं तो प्रतिनिधियों में अपना बहुमत बनाकर अपने ढंग के प्रस्ताव पास करा लेना ठीक समझता हूँ।"

"वैसे प्रस्ताव के समय पुनः वैसा ही हल्ला होता। पुनः जूता चलता। मुक्का-मुक्की चलती और सभा विसर्जित हो जाती। वास्तव में प्रधान का निर्वाचन ही एक टैस्ट प्रस्ताव बनाया गया था।"

लालाजी मुस्करा कर पूछने लगे, "तो क्या करना चाहिये?"

"यह धर्म-विहीन सभा टूट जानी चाहिये। अच्छा हो, यदि जनता ऐसा कर दे, अथवा सरकार कर देगी।"

"मिस्टर सूद! आप तो क्रांतिकारी हैं।"

"जी हाँ! किन्तु वैधानिक क्रांतिकारी।"

लालाजी और देसाई हँस पड़े। एकाएक लालाजी ने गम्भीर हो कहा, "ऐसा कुछ भी नहीं होगा। नरम दल वालों ने कांग्रेस पर गरम दल वालों का अधिकार नहीं होने दिया। इस प्रकार उन्होंने कांग्रेस को एक वर्ष के लिए सुरक्षित करा है। इस अवधि में सरकार इस संस्था के विरोधियों का समूल नाश करने का यत्न करेगी।"

रामरक्खामल्ल के मस्तिष्क में प्रकाश हो गया। वह लालाजी का अर्थ समझ गया। उसने अपने मन में आई हुई बात कह दी, "तो क्या आपका मतलब यह है कि ये नरम दल के लोग सरकार के बल पर ही देश के बहुमत का विरोध कर रहे हैं?"

लालाजी ने गम्भीर भाव में कह दिया, "मैं कुछ नहीं कहता। मैं तो यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहता हूँ कि यह राजनीति है। सरकार के हाथ में शक्ति है। यह जब चाहे, जिसको चाहे बना सकती है अथवा बिगाड़ सकती है।''

देसाई और रामरक्खामल्ल की इच्छा तिलकजी से मिलने की भी हुई। तिलकजी से मिलने पर उन्होंने कह दिया, ''अति खेद का विषय है कि यह दुर्घटना हो गई। मुझको इससे प्रसन्नता नहीं है।''

''तो क्या आप समझते हैं कि नरम दल वालों के साथ अन्याय हुआ है?'' देसाई का प्रश्न था।

''अन्याय तो हमारे साथ हुआ है। इस पर भी मंच पर जूता फेंककर ठीक नहीं किया गया। इसका प्रायश्चित्त करना चाहिये।''

रामरक्खामल्ल को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि तिलकजी धर्मभीरु हैं। तिलकजी के कथन को तो देसाई ने भी पसन्द नहीं किया। उसने कह दिया, ''परन्तु महराज! क्या यह निश्चय हो गया है कि जूता किसी आपके पक्षपाती ने फेंका है?''

''वह महाराष्ट्रियन जूता तो यही प्रकट करता है कि जूता फेंकने वाला कोई हमारे पक्ष का व्यक्ति था। साथ ही विपक्षी फेंकता तो मुझ पर फेंकता।''

''महाराज! ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी नरम दल वाले ने आपके ऊपर ही फेंका हो और भीड़ के कारण निशाना चूक गया हो अथवा किसी ईमानदार नरम दल वाले ने अपने दल वालों की बेईमानी से क्रोध में आकर अपने दल वालों पर ही फेंका हो। महाराष्ट्रियनों में भी तो नरम दल के लोग हैं। इस कारण जूता महाराष्ट्रियन ढंग का है और आप महाराष्ट्रियन हैं। यह तो कुछ सिद्ध नहीं करता।''

तिलक हँस पड़ा और कहने लगा, ''मिस्टर देसाई! तुम वकालत पढ़ लेते तो सफल होते।''

''महाराज! अपने कार्य में तो मैं अभी भी सफल हूँ। युक्ति और प्रमाण तो सब स्थान पर सहायक होते हैं। इस पर भी मेरे ये जो मित्र हैं,'' देसाई ने मिस्टर सूद की ओर संकेत कर कहा, ''ये पंजाब के रहने वाले हैं। ये कह रहे हैं कि व्यक्तिगत अपराध का निर्णय इस भीड़ में करना कठिन था। दलों के संघर्ष में व्यक्तिगत आचरण नगण्य होता है। दल का सामूहिक आचरण ही दल की नीति को प्रकट करता है। आपके दल ने क्या यह जूता फेंकने का निर्णय कर किसी को इस काम पर नियुक्त किया था?

''मिस्टर सूद का कहना है कि गरम दल की नीति थी नरम दल वालों की धींगा–मस्ती का विरोध करना। वह विरोध सफलतापूर्वक हुआ है। आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहते थे कि कांग्रेस कलकत्ता का त्रिसूत्रीय प्रस्ताव रद्द न कर सके। आप इसमें सफल हुए हैं।''

तिलकजी ने बात बदल दी। वे पूछने लगे, ''इनका परिचय?''

''ये लाहौर के रहने वाले हैं। स्वामी दयानन्द की राजनीति में विश्वास रखते हैं। बम्बई में विट्ठलभाई संगीत भवन में उपनिषद् के अध्यापक हैं।''

''ओह!'' तिलक ने रामरक्खामल्ल से संस्कृत भाषा में वार्तालाप आरम्भ कर दिया। उन्होंने पूछा, ''भला संगीत और उपनिषद् का परस्पर क्या सम्बन्ध है?''

''संगीत और नृत्य कलेवर हैं और अध्यात्मवाद है उस कलेवर की आत्मा। अध्यात्मवाद उपनिषद् में बहुत भली भाँति प्रख्यात है। अतः प्रत्येक विद्यार्थी के लिए संगीत तथा नृत्य के साथ ईशावास्योपनिषद् का अध्ययन आवश्यक रखा गया है।''

''आप सब उपनिषदों को परमात्मा और आत्मा के विषय में सहमत मानते है?''

''उनमें परस्पर विरोध नहीं। भिन्न–भिन्न उपनिषदों में विवेच्य विषय भिन्न–भिन्न होने से विषय की विवेचना में कही भिन्नता आ जाती है। इसको मतभेद नहीं कह सकते।

''चेतना रहित प्रकृति है। चेतन परमात्मा है। प्राणी प्रकृति, मन और आत्मा का संजोग है। बस ले–दे कर ये तीन ही तो विषय हैं जिन पर उपनिषद् लिखे गए हैं। आत्मा परमात्मा का अंश है अथवा दोनों भिन्न–भिन्न हैं–इसमें मत अस्पष्ट है। इस पर भी अध्यात्मवादी इस संसार में परमात्मा और आत्मा को पृथक्–पृथक् देखता है। मोक्ष के समय क्या होता है? मतभेद उसी के विषय में है।

''सम्यक् ज्ञान के लिए तीनों के ज्ञान की आवश्यकता रहती है। ऐसे ज्ञानी का ज्ञान विरोधाभास से मुक्त रहता है।''

''परन्तु पंडितवर! इसका संगीत–विद्या से क्या सम्बन्ध है?''

''राग–रागिनियों में प्राण डालने के लिए। कभी बम्बई आयेंगे तो आपको प्राणहीन और सप्राण कलाओं में प्रत्यक्ष भेद दिखाऊँगा।''

तिलक ने फिर वार्तालाप बदली–''स्वामी दयानन्द की राजनीति क्या है?''

''वे मानते थे कि समाज एक सजीव पदार्थ का नाम है। इसमें भी आत्मा है। जो समाज आत्मवाद से रिक्त हो जाता है, वह मृत शरीर की भाँति रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। जैसे शव को सुगन्धित पदार्थों का लेप लगा कुछ काल तक रखा जा सकता है, परन्तु शीघ्र ही वह दुर्गन्धि छोड़ने लगता है, वैसी ही अवस्था आत्माविहीन समाज की हो जाती है।

"मैं आपकी राजनीति को स्वामी दयानन्द की राजनीति ही मानता हूँ। आप भी धर्म और संस्कृति को राजनीति से बहिष्कृत नहीं मानते। स्वामीजी भी इसको जीवन के भिन्न–भिन्न अंग ही मानते थे।"

"परन्तु मैं तो धर्म और संस्कृति के विषय में स्वामीजी से मत–भेद रखता हूँ।"

"इसमें कोई हानि नहीं। जब तक आप धर्म और संस्कृति का आधार वेद और स्मृति मानते हैं तब तक यह मत–भेद व्याख्या की बात है। यह मतभेद झगड़े का सूचक नहीं प्रत्युत विचार का विषय ही हो सकता है।"

लाला लाजपतराय की राय से कांग्रेस के भीतर एक राष्ट्रवादी दल बना लिया गया।

: 11 :

सूरत से लौटते समय रामरक्खामल्ल ने देसाई को बताया, "ये नरम दल के लोग गरम दल वालों को कांग्रेस से निकालते–निकालते उन्हें देश से निकालने में ही सरकार का सहयोग देंगे।"

"क्या मतलब?"

"लालाजी के कथन से भी मेरी समझ में यही बात आई है। ये नरम दल वाले धर्मविहीन नास्तिक हैं। ये अपना प्रभाव और प्रभुत्व स्थायी रखने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।"

"बहुत दुष्ट हैं ये लोग?"

"धर्मविहीन ऐसे ही होते हैं?"

"परन्तु धर्म से आपका क्या मतलब है?"

"धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धीः, विद्या, सत्य और अक्रोध; ये व्यापक धर्म के लक्षण हैं। ये लोग, मैं देख आया हूँ, कांग्रेस पर अपना अधिकार रखने के लिए धैर्य खो बैठे थे। झूठ बोलने के कारण दम–विहीन हो गए थे और क्रोध के वशीभूत अनर्गल बातें भी करने लगे थे।"

"तो क्या गरम दल वालों में धर्म के ये लक्षण दिखाई देते हैं?"

"अभी उनकी परीक्षा का समय नहीं आया। परीक्षा होने पर ही इस विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बताया जा सकेगा। परन्तु सेठ साहब! मैं गरम दल वालों के व्यवहार की भविष्यवाणी नहीं कर रहा। मैं नरम दल वालों के लक्षण देखकर आया हूँ। मुझको वे धर्मविहीन ही प्रतीत हुए हैं।

"देखिए! मैं आपको एक बात बताता हूँ। जब मैं लाहौर में था, मेरे यहाँ सायंकाल एक अंग्रेजी समाचार–पत्र नित्य पढ़ा जाता था। एक बार एक समाचार–पत्र छपा था। गोपालकृष्ण गोखले लन्दन में थे। उन्होंने मॉनचेस्टर गार्डियन के संवाददाता को एक वक्तव्य दिया। वक्तव्य यह था कि उनको पूना से विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि पूना के एक सैनिक अधिकारी ने सत्य ही जनता से अनुत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार किया है।

"इस वक्तव्य पर पार्लियामेंट में प्रश्न पूछे गये। लार्ड हैमिल्टन, सेक्रेटरी आफ स्टेट फॉर इण्डिया ने प्रश्नों के उत्तर में गोखले को झूठा कहा। गोखले वैल्वी कमीशन के सम्बन्ध में वहाँ था। वह भयभीत हो गया और सेक्रेटरी आफ स्टेट के वक्तव्य का खण्डन करने और मिस्टर रोड के व्यवहार की जाँच की माँग करने के स्थान पर अपना वक्तव्य वापस ले बैठा और क्षमा माँगने लगा।

"ऐसे हैं नरम दल के लोग। गोखले के लिए भारत का मान–अपमान अपनी पदवी के समक्ष कुछ भी मूल्य नहीं रखता। गोखले ने अपने को एक ईमानदार पदवीधारी सिद्ध करने के लिए सत्य का झूठ और झूठ का सत्य बता दिया। क्षमा माँगने की आवश्यकता तब होती, जब किसी न्यायाधीश द्वारा जाँच से सिद्ध हो जाता कि मिस्टर रोड ने ऐसा कुछ नहीं किया जिसको पूना के समाचार–पत्र छाप रहे हैं।

"मिस्टर देसाई! मुझको तो ऐसा लगने लगा है कि ये नरम दल वाले गरम दल वालों को पकड़ कर फाँसियाँ दिलवाने में सरकार की सहायता करने लगेंगे।"

देसाई रामरक्खामल्ल की इस भविष्यवाणी को सुन काँप उठा। रामरक्खामल्ल का यह कहना था कि कोई भी नास्तिक निर्भीक नहीं हो सकता। रामरक्खामल्ल जनवरी में बम्बई पहुँचा था। अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर वह इस राजनीतिक झगड़े में भाग–दौड़ करता रहा था। जब वहाँ निश्चिन्त होकर बैठा तो कला की समस्या आ उपस्थित हुई। इस समय तक बम्बई के प्रसिद्ध आँखों के डॉक्टरों से राय ली गई थी और उनका यह कहना था कि आँखें बन नहीं सकतीं। वह अब जीवन–पर्यन्त दृष्टिविहीन रहेगी।

राधा का कहना था कि काहनचन्द पर हर्जाने का दावा कर दिया जाए। रामरक्खामल्ल इसको उचित नहीं मानता था। उसका कहना था कि नैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और व्यावहारिक दृष्टि से भी यह गलत बात होगी।

चार मास के स्वस्थ वातावरण में रहने से और पौष्टिक भोजन करने से कला का मुर्झाया मुख पुनः प्रफुल्लित हो गया था। कला जब से इस भवन में ठहरी थी चुपचाप वहाँ का कार्यक्रम सुना करती थी। उसको संगीत में रुचि भी थी। अपने पति की मित्र–मंडली में संगीत–समारोहों का आयोजन उसके द्वारा ही हुआ करता था।

इस भवन में पहुँची तो उसकी इस ओर प्रवृत्ति जाग पड़ी। जिस दिन वह इस भवन में आई थी, उसी दिन नसीरा बाई भी आई थी। मैजिस्ट्रेट की आज्ञा थी कि वह यहाँ ठहर सकती है, परन्तु वयस्क होने तक वह किसी से विवाह नहीं कर सकेगी।

मनोहरलाल वर्मा ने उसकी दस हजार की जमानत दी थी। भवन की तीसरी मंजिल पर उसको भी एक कमरा रहने को मिल गया था। संगीत–भवन का अभी कोई होस्टल नहीं था। अभी कोई ऐसी लड़की भी प्रविष्ट नहीं हुई थी जिसके निवास का प्रबन्ध भी करना पड़ता। नसीरा ही पहली लड़की थी जिसके लिए रहने का प्रबन्ध करना पड़ा था और इसको भवन की ऊपर की मंजिल पर एक कमरा दे दिया गया था।

एक दिन नसीरा मध्याह्न के भोजन के पूर्व अपने कमरे में बैठी राग सारंग गा रही थी। नसीरा ने देखा कि एक अन्धी औरत टटोल–टटोल कर चलती हुई उसके कमरे के बाहर आकर बैठ उसको गाते सुनने लगी है।

राधा भवन की दूसरी मंजिल पर लड़कियों को सिखा रही थी। मधु, रत्नलाल और सन्तोष के समीप बैठ पाठ स्मरण करने लगा था। लेखवती घर के प्राणियों के कपड़े मरम्मत कर रही थी। कला को जब एक अति मधुर स्वर में उसी मंजिल पर आलाप गाये जाते सुनाई दिये तो वह उठी, अपने कमरे से निकली और टटोलती–टटोलती दीवार के साथ–साथ चलती हुई नसीरा के कमरे के बाहर आकर भूमि पर ही बैठ गई। नसीरा बाई ने उसको आते और चुपचाप बैठते देखा तो कोई घर की नौकरानी समझ अपने अभ्यास में लीन रही।

वह गा रही थी–

ये स्वप्न हों साकार मेरे,
मन को रहते हैं जो घेरे,
ये बालपन के हैं बनाये
उठ धरा से हैं ये आये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगन के बन रहे हैं तारे
भाग्य भवन के ले–ले फेरे,
ये स्वप्न हों साकार मेरे।

तानालाप के बाद जब उसने अभ्यास बन्द किया तो खाने का घंटा बज गया। कला भी उठी और अपने कमरे में, टटोल कर जाने लगी तो नसीरा ने उसका हाथ पकड़ कर पूछ लिया, ''किधर जा रही हो? चलो मैं ले चलूँ।''

''माताजी के कमरे में।'' लेख को सब इसी प्रकार पुकारते थे। नसीरा ने उधर ले जाते हुए पूछ लिया, ''क्या नाम है तुम्हारा?''

''कला।''

''क्या करती हो यहाँ?''

''अभी चार दिन से ही यहाँ आई हूँ। अभी कुछ नहीं करती।''

''कहाँ रहती हैं?''

''माताजी के साथ वाले कमरे में। वे मेरी ताई हैं।''

''संगीत में रुचि है आपकी?''

''केवल सुनने में।''

इस समय वे लेखवती के कमरे के बाहर जा पहुँचीं। लेख खाना खाने के लिए नीचे की मंजिल पर जा रही थी। लेखवती ने कहा, ''कला! चलो भोजन के लिए।''

कला ने कह दिया, ''माताजी! अभी सब मार्ग समझ में नहीं आये। ये बहन इधर ला रही हैं।''

''तो तुम्हें भी भोजन के लिए चलना है। चलो। मैं ही ले चलती हूँ।'' नसीरा ने कहा।

मध्याह्न का भोजन सब विद्यार्थियों के साथ दूसरी मंजिल पर किया जाता था। नसीरा कला का हाथ पकड़े हुए नीचे की मंजिल को चल पड़ी। अब कला ने प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये, ''बहन! क्या नाम है तुम्हारा?''

''नसीरा बाई।''

''तुम मुसलमान हो?''

''मैं कलाकार हूँ।''

''वह तो हो ही। परन्तु किसी मुसलमान माता–पिता की लड़की हो?''

नसीरा विचार करने लगी कि वह क्या है, बताये अथवा नहीं? कुछ विचार कर बोली, ''हाँ, मुसलमान माँ की तो लड़की हूँ। पिता की बाबत नहीं जानती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद मेरी माँ भी नहीं जानती कि वह कौन था।''

कला ने बात बदल कर पूछा, ''कहाँ रहती हैं अब?''

''उसी कमरे में जिसके बाहर आप बैठी सुन रही थीं।''

''और माँ?''

''वह मर गई है।''

''आप यहाँ गाना सिखाती हैं?''

''नहीं, सीखती हूँ।''

''परन्तु आप तो बहुत अच्छा गाती हैं।''

''और आप इस विषय में समझती हैं?''

''हाँ! आप सारंग गा रही थीं।''

इस समय वे नीचे की मंजिल के उस हॉल में जा पहुँचीं जहाँ सब बैठ खाना खाती थीं। वहाँ आज नसीरा और कला इकट्ठी बैठीं। भोज़नोपरान्त वही उसको, पकड़ कर ऊपर ले आई और उसके कमरे में छोड़ गई।

परिचय बढ़ता गया। दोनों एक–दूसरे का पूर्ण इतिहास जान गईं। इसके साथ ही नसीरा लेखवती, रामरक्खामल्ल और राधा के विषय में भी जान गई। उसको पता चला कि राधा भी एक मुसलमान की लड़की है तो वह उसके कमरे में पहुँच पूछने लगी, ''राधाजी! आपके माता–पिता मुसलमान हैं क्या?''

''हाँ! किसलिए पूछ रही हो?''

नसीरा बाई सायंकाल गाना सीखा करती थी। प्रातःकाल तो प्रारम्भिक श्रेणी की लड़कियाँ ही सीखती थीं। नसीरा तो बहुत कुछ जानती थी। इस कारण उसको दूसरों से पृथक् सिखाने का प्रबन्ध था।

सायंकाल का पाठ ले नसीरा बाई खाली हुई तो उसने यह प्रश्न पूछ लिया।

नसीरा ने कहा, ''ऐसे ही। मैं विस्मय करती थी कि आपने हिन्दुआना नाम क्यों रख लिया है?''

''पहले तो अपने को अपने पूर्व के जीवन से पृथक् करने के लिए रखा था, लेकिन बाद में रंगमंच पर नर्तकी का काम करने के लिए यह नाम लाभकारी प्रतीत हुआ था और अब इस नाम को सार्थक करने के लिए अपने में उन्नति कर रही हूँ।''

''क्या उन्नति कर रही हैं?''

''एक भले समाज में सम्मिलित हो भली बन रही हूँ।''

''क्या मुसलमान समाज भला नहीं है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वास्तव में मैं इस्लाम के विषय में कुछ नहीं जानती। कुछ मुसलमानों का कटु अनुभव है, और हिन्दुओं में रुक्मिणीदेवी तथा भापाजी को जानती हूँ। इनकी संगति का अनुभव अति मधुर है। मुझको भापाजी और रुक्मिणीदेवीजी का समाज ही अच्छा प्रतीत हुआ है।"

"मुसलमान समाज के विषय में मैं भी कुछ नहीं जानती। जिस समाज में मैं रहती रही हूँ, वह तो हिन्दू–मुसलमान दोनों समाजों का कूड़ा–करकट ही था।"

"एक बार रुक्मिणी देवी ने कहा था कि मुसलमानी राज्य ने लोगों को मुसलमान बनाने के बहुत–से अनुचित उपाय प्रयोग किये थे। उनका कहना था कि इस्लाम तीन उपायों से हिन्दुस्तान में फैला है। एक तलवार के डर से। दूसरे राज्य की ओर से मिलने वाले प्रलोभनों से और तीसरे औरतों तथा पुरुषों की वासना उभारने से। एक बार इन उपायों से जो मुसलमान हो गया सो हो गया। पुनः वह इस्लाम छोड़ नहीं सका।"

"क्यों?"

"मुसलमान किसी मुसलमान का इस्लाम छोड़ना पसन्द नहीं करते। मुझको तो इस नाम बदलने के कारण मार ही देने लगे थे।"

"तो क्या हिन्दू ऐसा नहीं करते?"

"हिन्दू मजहब बदलने में कोई महत्त्व नहीं मानते। तुम अपनी ही बात देख लो। तुमको यहाँ आये दो मास के लगभग होने जा रहे हैं। तुमको किसी ने नाम या मजहब बदलने के लिए नहीं कहा। यह नहीं कि ये हिन्दूधर्म पर विश्वास नहीं रखते अथवा हिन्दू होने को अच्छा नहीं मानते। ये सब–के–सब कट्टर हिन्दू हैं, परन्तु ये मजहब बदलना किसी व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत काम समझते हैं। कोई व्यक्ति अपनी आत्मा की प्रेरणा से ही मजहब बदल सकता है। किसी दूसरे के कहने से तो दबाव का ख्याल हो सकता है।

"तुम्हारे अलावा इस भवन में एक और मुसलमान लड़की आती है। वह मजहब से आगाखानी है। उसको भी कभी किसी ने मजहब के विषय में कुछ नहीं कहा।"

राधा की इस बात ने नसीरा के मन में उथल–पुथल मचा दी। उसकी माँ वेश्यावृत्ति करती और कराती थी। वह भी नसीरा को मुसलमान बनी रहने के लिए कहा करती थी। एक बार कोटा रियासत के जागीरदार उसको अपनी रखैल बनाने का प्रस्ताव कर रहे थे। तब उसकी माँ ने उसको कहा था कि मुसलमान अपना मजहब कभी नहीं बदलते। उसे भी अपने दीन पर कायम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना चाहिए। उस समय वह समझ नहीं सकी थी और न ही उसकी माँ उसको समझा सकी थी कि क्यों वह इस्लाम छोड़ नहीं सकती, और मुसलमान बने रहने से क्या लाभ होगा।

अब वह देख रही थी कि वह हिन्दुओं में रहती हुई भी उतनी ही मुसलमान है जितनी वह अपनी माँ के घर में थी। अपनी पूर्ण बात को समझ उसने राधा से कहा, ''अकसर हिन्दू तो मुसलमानों से नफरत करते हैं। ये लोग ऐसा नहीं करते। क्यों?''

''भापाजी बहुत ही उदार–हृदय हैं। इस पर भी दूसरे हिन्दुओं के नफरत करने में अन्य अनेक कारण हैं। एक कारण तो यह भी है कि मुसलमान अपने राज्यकाल में गैर–मुसलमानों पर बहुत जुल्म करते रहे हैं। दूसरे हिन्दू लोग गाय को बहुत मुतबर्रक मानते हैं और मुसलमान सिर्फ हिन्दुओं को चिढ़ाने के लिए इसकी हत्या करते हैं। तीसरे मुसलमान बहुत गन्दे रहते हैं।

''हिन्दुओं की सबसे प्रिय बात इनकी विचार–स्वतन्त्रता है। मुसलमानों ने अपने राज्य–काल में यह भी छीनने की कोशिश की।''

''तुम कहती हो कि तुमको नाम बदलने पर मार डालने की कोशिश की थी। तुम्हारे वालिद ने ऐसा किया था अथवा किसी अन्य मुसलमान ने?''

''मेरे खाविन्द के कहने पर उनके एक तालिब–इल्म ने। वह पकड़ा गया तो बक गया। मेरे खाविन्द पकड़ लिए गये और उन पर मुकदमा हुआ। उनको आजन्म कारावास का दण्ड हुआ। अब सुना है कि प्रिवि कौंसिल ने उनको छोड़ दिया है।''

''तो वह फिर तुम पर हमला कर सकता है?''

''हाँ, मगर इस बार वह हमला करता पकड़ा गया तो फिर छूट नहीं सकेगा। साथ ही मुझको भी अब मरने से डर नहीं लगता।''

''क्यों?''

''मुझको हिन्दू–धर्म के मूल सिद्धान्तों पर विश्वास होता जाता है। बिना मृत्यु का समय आये कोई मर नहीं सकता और ऐसा समय आ जाने पर कोई उसको बचा नहीं सकता। साथ ही मृत्यु होने पर मुझको अपने अमालों के मुताबिक तुरन्त जन्म मिलेगा। मेरे मरने का समय अभी नहीं आया।''

''कैसे जानती हो यह सब कुछ?''

''बड़े भापा ने बताया है।''

''तो वे नजूमी भी हैं क्या?''

नसीरा के मन में ऐसी हलचल मची कि वह जब भी अवसर पाती राधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास जा बैठती और उससे इस विषय में बातें करने लगती।

इसके अतिरिक्त संगीत–भवन की दिनचर्या ऐसी थी कि वह भी अपना प्रभाव जमा रही थी।

सब सीखने वाली छात्राएँ ठीक आठ बजे विद्यालय में उपस्थित होती थीं। उनके आते ही सब दूसरी मंजिल पर बड़े कमरे में एकत्रित हो जाती थीं। सिखाने वाले भी वहीं आ जाते थे। कभी कोई बाहरी स्त्री अथवा पुरुष अध्यक्ष की स्वीकृति से आता तो वह भी इस समारोह में आ सकता था।

सब उपस्थित गण मिलकर प्रार्थना करते–

प्रभु तुम अब की बेर उभारो,
है पतित पावन विरद तिहारो।।
प्रभु तुम अबकी बेर उभारो।
अज्ञानी हूँ पग–पग भटकता,
दीन–हीन चरण में ठाड़ो।।
प्रभु तुम अब की बेर उभारो।
मानव मानवता–विहीन है,
जानत नाहीं अज्ञ निकारो।।
प्रभु तुम अब की बेर उभारो।
दल–गत मत–गत भेद–भाव में,
मलिन हुओं को सदा सँवारो।
प्रभु तुम अब की बेर उभारो।
एक भेद तुम मानत सब में,
भले बुरे में है बँटवारो।।
प्रभु तुम अब की बेर उभारो।
ऐसा कर दो नेक बनूँ मैं,
और लगूँ तुम को भी प्यारो।।
प्रभु तुम अब की बेर उभारो।।

इस प्रार्थना के उपरान्त रामरक्खामल्ल ईशावास्योपनिषद् का पाठ करता। सब मिलकर स्वर–सहित अठारह मन्त्र गाते। प्रातः समय वेद–मन्त्र भैरवी रागनी में गाये जाते थे। इसके बाद रामरक्खामल्ल इन अठारह मन्त्रों में से एक की व्याख्या करता। पन्द्रह मिनट तक मन्त्र की व्याख्या में प्रवचन देता। तदनन्तर यह सभा विसर्जित होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः का अल्पाहार होता और ठीक नौ बजे संगीत और नृत्य की शिक्षा आरम्भ हो जाती। यह शिक्षा साढ़े दस बजे तक चलती, तदनन्तर सबको संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती। एक घण्टा पढ़ाई के उपरान्त साढ़े ग्यारह बजे विश्राम तथा भोजन का समय हो जाता।

दो बजे तक छात्र आराम करते और दो से पाँच बजे तक एक घण्टा–भर की शिक्षा के बाद दो घण्टा–भर उनको वाद्य–यन्त्रों के साथ अपने–अपने पाठ का अभ्यास करने का अवसर दिया जाता। इसके लिए कई कमरे थे और अभ्यास करने वाले पृथक्–पृथक् उन कमरों में चले जाते और अभ्यास करते। सायं पाँच बजे चाय होती और भवन का कार्यक्रम समाप्त हो जाता।

एक दिन नसीरा को कला ने वह भविष्यवाणी सुनाई जो रामरक्खामल्ल ने उसके और साधना के विषय में की थी। इस भविष्यवाणी की बात सुन तो नसीरा अपने भविष्य के विषय में पूछने के लिए रामरक्खामल्ल के पास जा पहुँची। रामरक्खामल्ल सूरत से लौट कर कला के भविष्य के विषय में चिन्तन कर रहा था।

: 12 :

प्रातः की प्रार्थना और उपदेश के उपरान्त रामरक्खामल्ल अपना अल्पाहार लेने ऊपर अपने कमरे में आ जाया करता था। कला और लेख रामरक्खामल्ल को अल्पाहार देने के बाद स्वयं रसोई–घर में खाने चली जाया करती थीं।

उस दिन वे गईं तो नसीरा रामरक्खामल्ल के कमरे के बाहर आकर खड़ी हो पूछने लगी, ''क्या मैं भीतर आ सकती हूँ।''

''हाँ, आओ बेटी! बैठो, क्या बात है?''

नसीरा सामने भूमि पर ही बैठ गई। रामरक्खामल्ल अपने कमरे में भूमि पर दरी और चादर बिछाकर ही बैठा करता था। नसीरा ने बैठ कर कहा, ''भापा! सुना है आप मुस्तकबिल की बातें सत्य–सत्य बता सकते हैं।''

रामरक्खामल्ल नसीरा, कला और राधा में विशेष मेल–जोल देख रहा था। इससे वह समझ गया कि उन्होंने अवश्य उसके विषय में इसको कुछ बताया है। उसने सब बात ठीक ढंग से समझाने के लिए कह दिया–''नसीरा बेटी! मैं ज्योतिषी नहीं हूँ। इस पर भी मेरे मन की आँखें अभ्यास से कुछ आगे और कुछ पीछे दूसरों से कुछ अधिक देखने लगी हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने कलाजी को बताया है कि उनकी आत्मा को शान्ति उनके खाविंद के घर में ही मिलेगी।"

"हाँ, कुछ ऐसा ही दिखाई दिया है। इस पर भी इसको कोई बदल भी सकता है। यदि कला अपने मन से यत्न करेगी तो उसको वहाँ सुख मिलेगा। इसमें कला का क्या व्यवहार रहेगा कहना कठिन है। वह अपने कर्मों की मालिक है। वह अपना भाग्य बदल भी सकती है। कोई अन्य औरत भी बीच में टपक सकती है।"

"मैं आपसे अपने विषय में पूछना चाहती हूँ।"

"तुम्हारी क्या समस्या है?"

"मैं महान कलाकार बनना चाहती हूँ।"

रामरक्खामल्ल गम्भीर हो गया। उसने आँखें मूँदकर कुछ देर तक चिन्तन किया और फिर आँखें खोल कह दिया, "नसीरा बेटी! मैं कुछ ऐसा देखता हूँ कि तुम बहुत ख्याति प्राप्त कर चुकी हो। परन्तु यहाँ नहीं। किसी अपरिचित स्थान पर। वह अवश्य देश के बाहर होगा क्योंकि यह देश तो मैंने पूर्ण देखा है।

"मैं समझता हूँ कि तुम कुछ दिन ठहरो। मुझको इस दृश्य पर विचार करने दो। मैं समझ सका तो बताऊँगा।"

इस पर नसीरा ने दूसरा प्रश्न कर दिया, "मैं क्या हिन्दू बन जाऊँगी?"

"हाँ, परन्तु कब तक? कहा नहीं जा सकता। कलाकार हिन्दू–मुसलमान से बहुत ऊँची पदवी है। कलाकार मानव होता है और मानव होने के लिए पहले वास्तविक अर्थों में मानव होना परमावश्यक है।"

"राधा बहन की तरह बन सकूँगी क्या?"

"नहीं, वैसी नहीं। वह भी ऐसी नहीं रह सकेगी।"

"मैं मुसलमान रहूँगी अथवा नहीं?"

"मुसलमान तो तुम अब भी नहीं हो।"

"मेरा नाम नसीरा है।"

"मैं जानता हूँ, परन्तु नाम से कोई मुसलमान अथवा हिन्दू नहीं होता। हिन्दू और मुसलमान अपने कर्मों से होते हैं। तुम्हारे अमाल मुसलमानों के से नहीं हैं।

"देखो नसीरा! खुदा को मानना और नेक, पाक, साफ बनना तो हिन्दू–मुसलमानों में एक–जैसी बातें हैं। परन्तु कुछ अन्य बातें हैं जिनसे हिन्दू और मुसलमान में अन्तर आता है। हिन्दू–मुसलमान में एक मुख्य अन्तर यह है कि किसी भी विषय में मतभेद जहाँ हिन्दुओं में एक स्वाभाविक बात मानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाती है, वहाँ मुसलमानों में इसको सहन नहीं किया जाता।

"मुसलमानों में जो खुदा पर ईमान नहीं लाता अथवा लाता है पर मुहम्मद साहब को उसका रसूल नहीं मानता, वह काफिर समझा जाता है और उसके साथ घटिया सलूक किया जाता है।

"हिन्दुओं में विचार पर प्रतिबन्ध नहीं है। कोई कुछ भी मान सकता है। केवल व्यवहार से वह मानवों में दी श्रेणियाँ ही मानता है। एक दैवी प्रवृत्ति वाले और दूसरे आसुरी प्रवृत्ति वाले। प्रवृत्ति का अर्थ विचार–भेद से नहीं प्रत्युत व्यवहार–भेद से है। अतः कोई मुहम्मद साहब को पैगम्बर माने अथवा न माने, इससे किसी प्रकार का झगड़ा नहीं। झगड़ा तब होता है जब कोई आसुरी व्यवहार अपनाता है।

"बताओ तुम खुदा के विषय में क्या जानती हो?"

"मैं कुछ नहीं जानती थी। यदि कुछ जान पाई हूँ तो आपके हर रोज के प्रार्थना के बाद दिये जाने वाले उपदेशों से ही।"

"इसी कारण तो कहता हूँ कि तुम मुसलमान नहीं हो।"

"परन्तु यह दैवी और आसुरी प्रवृत्ति का क्या मतलब है?"

"दैवी प्रवृत्ति वाले वे लोग हैं जो निडर–मन तथा शरीर से शुद्ध होते हैं, जिनके कर्म ज्ञान के अधीन होते हैं, दानी, संयमी, लोक–कल्याण में रत, तपस्वी और अपनी आजीविका मेहनत से उत्पन्न करने वाले, दूसरों को दुःख न देने वाले, सत्यवादी, क्रोध न करने वाले, त्यागी, शान्त–स्वभाव और उदार इत्यादि गुण रखते हैं।

"इनके विपरीत आसुरी प्रवृत्ति वाले होते हैं। साथ ही वे कर्तव्य और अकर्तव्य में भेद नहीं कर सकते। क्रूर–कर्मी, जगत का नाश करने वाले, कामी, विषयी, दम्भी, अभिमानी, सैकड़ों आशा–पाशों से जकड़े हुए, लोभी, क्रोधी, इत्यादि दुर्गुणों वाले होते हैं।"

"भापा! आपके कहने के मुताबिक मैं मुसलमान तो हूँ नहीं। फिर मुसलमानी नाम से क्या लाभ?"

"नसीरा मुसलमानी नाम नहीं है। मुझको तो इसमें मुसलमानीपन नहीं प्रत्युत विदेशीपन दिखाई देता है। यह फारसी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है लेखिका। इसमें इस्लाम की गन्ध भी नहीं।"

"मगर फारसी भाषा के नाम मुसलमान ही रखते हैं। यह क्यों?"

"मुसलमान अपने को हिन्दुस्तान का नागरिक नहीं मानते। इससे वे विदेशी भाषा में नाम रखते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर मेरा तो ईरान से दूर का भी सम्बन्ध नहीं। फिर मैं वहाँ की भाषा का नाम क्यों रखूँ?"

"हाँ, इस विचार से तो नाम बदल सकती हो। इसमें हिन्दू–मुसलमान का प्रश्न नहीं।"

"तो आप बताइए क्या नाम रख लूँ?"

"तुम अपने लिए कोई हिन्दुस्तानी जबान का नाम चुन लो।"

"मैंने बहुत विचार से एक नाम चुना है। यदि आप मंजूरी दें तो मैं यह रख लूँगी।"

"क्या?"

"सरस्वती।"

"नाम तो अच्छा है। कम–से–कम यह तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक तो है।"

"आज से मैं सरस्वती हुई।"

रामरक्खामल्ल मुस्कराता रहा।

नसीरा ने संगीत–भवन में अपना नाम सरस्वती विख्यात कर दिया। उसको विस्मय इस बात पर हुआ कि भवन में इस नाम–परिवर्तन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। केवल एक लड़की को ही यह कुछ विचित्र प्रतीत हुआ। वह एक धनी आगाखानी की लड़की थी। नाम था रहमत।

रहमत ने सरस्वती के नाम–परिवर्तन की बात सुनी तो मध्याह्न के भोजनोपरान्त उससे मिलकर पूछने लगी, "बहन! तुम हिन्दू हो गई हो?"

"नहीं तो।"

"नाम जो बदल लिया है?"

"मेरा नाम फारसी भाषा का था। मैं तो हिन्दुस्तान की रहने वाली हूँ। इसलिए हिन्दुस्तानी भाषा का नाम रख लिया है।"

"मगर सरस्वती तो हिन्दुआना नाम है।"

"हाँ! हो सकता है। हिन्दू भी हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं। वे भी जरूर हिन्दुस्तानी जबान में ही नाम रखते होंगे। गैर–मुल्की नाम उनको पसन्द नहीं होगा। मुझको भी पसन्द नहीं आया।"

"तुम मुसलमान हो क्या?"

"यह तो मैं कभी भी नहीं थी। जब नसीरा थी तब भी नहीं थी।"

"तो तुम क्या थीं तब?"

"वेश्या की लड़की। जिसके बाप का भी पता नहीं था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अब क्या हो?"

"एक कलाकार बनने की इच्छा करने वाली।"

"पर तुम्हारा मजहब क्या है?"

"इन्सानियत (मानवता)।"

"वह क्या होती है?"

"ख्यालात और अमालों (विचार और व्यवहार) की पाकीजगी (शुद्धता)।"

"यह बिना पीर–पैगम्बर की रहनुमाई के आ नहीं सकेगी।"

"यह ठीक है। मैं इस समय दो रहनुमाओं की रहनुमाई में हूँ। एक राधा की और दूसरे भापाजी की। राधा से संगीत सीखती हूँ और भापाजी से इन्सानियत (मानवता)।"

"देखो, अपने–अपने फन में उस्ताद तो वे हो सकते हैं मगर दोनों पैगम्बर का रुतबा (पदवी) नहीं रख सकते।"

"पैगम्बर में क्या खुसूसियत (विशेषता) होती है?"

"उसके चेहरे पर खुदाई नूर टपकता हो। उसके कलाम (वाणी) में जादू हो। उसके कहने में सच्चाई और रहबरी हो।"

"मुझको भापा में ये सब औसाफ (गुण) दिखाई देते हैं।"

"अगर उनमें ये औसाफ (गुण) होते तो जो भी उनसे मिलता, उनका कायल हो जाता।"

"मैं तो उनकी कायल हो गई हूँ।"

"मतलब यह कि तुम हिन्दू हो गई हो?"

"नहीं रहमत! कायल होने के यह माने नहीं। न ही उन्होंने मुझ को हिन्दू होने के लिए कहा है। मैंने हिन्दू होने की ख्वाहिश जाहिर भी नहीं की। मैं अभी हिन्दू नहीं बनी।

"मैं उनकी एक बात में कायल हुई हैं। उस दिन उन्होंने अपनी पुस्तक में से यह पढ़ाया था–

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।"

रामरक्खामल्ल नित्य उपनिषद् के अठारह मन्त्रों का स्वर–सहित पाठ करता था। इससे विद्यार्थियों को कुछ दिनों में ही मन्त्र कण्ठस्थ हो जाते थे। वह एक मन्त्र की नित्य व्याख्या करता था। जब अठारह मन्त्रों की व्याख्या समाप्त हो जाती थी तो पुनः प्रारम्भ से व्याख्या आरम्भ कर देता था। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरे–धीरे मन्त्रों के अर्थ भी मस्तिष्क में बैठते जाते थे। उसका यह पढ़ाने का ढंग प्राचीन पद्धति के अनुसार ही था। सरस्वती ने अपने कण्ठस्थ किये मन्त्रों में से ही सुनाया था।

"जो सब प्राणियों में परमात्मा को मौजूद देखता है, उसको मोह और शोक नहीं रह जाता। भापा ने बताया था सब में खुदा का जहूर देख लेने पर किसी से दुश्मनी नहीं रह जाती। सब के साथ बराबरी का सलूक होने लगता है।"

सरस्वती की यह बात सुनकर भी रहमत रामरक्खामल्ल को पैगम्बर स्वीकार नहीं कर सकी। वह और उसके परिवार के सब लोग सर आगा खाँ को ही पीर मानते थे और उस पर विश्वास रखते थे। इस पर भी वह सरस्वती की बात का उत्तर नहीं दे सकी।

वह आराम करने अन्य लड़कियों के साथ चली गई। उस दिन–भर उसके दिमाग में सरस्वती की बात चक्कर काटती रही। घर जाकर उसने अपने वालिद साहब को सरस्वती की बात सुना दी। उसके पिता ने पैगम्बर के औसाफ बताने पर अपनी कहानी सुनाते हुए कहा, "हम मौजूदा आगा खाँ के बाबा के मुरीद बने थे। मेरे दादा के घर में कोई औलाद नहीं थी। वे हिन्दू थे। उनका नाम कृष्णराव था। वे औलाद के लिए अपने सब देवी–देवताओं की मिन्नत–समाजत कर चुके थे मगर औलाद नहीं हुई। तीन बार तो पुरन्दर में विट्ठलजी के मन्दिर की यात्रा कर चुके थे। एक दिन हजरत के एक पैराओ ने कृष्णराव से कहा, 'हजरत की कदम–बोसी करो तो मुँह–माँगी मुराद पाओगे।'

"कृष्णराव दरबार में हाजिर हो गये और यह चमत्कार हुआ कि उसी महीने मेरी दादी के हमल रह गया। उनके घर में लड़का हुआ और वह लड़का उन्होंने हजरत के कदमों में डाल दिया।

"हजरत ने उसका नाम करीमबख्श रखा। करीमबख्श की शादी हजरत के मुरीद गजनफर की लड़की से हुई थी। उन दोनों की औलाद मेरे वालिद, चाचा और फूफी हुए। और अब मैं हूँ। तब से हम सब के नाम मुसलमानी नाम हो गये हैं। मेरे वालिद का नाम अब्दुल्ला और मैं मोहसिन हूँ।

"हम मुसलमान नहीं हैं मगर हम सब के नाम मुसलमानी हैं। करीमबख्श की औलाद में इस वक्त पचास प्राणी हैं। हम सब आगा खाँ की मेहर का नतीजा हैं।"

"मगर अब्बाजान!" रहमत ने सरस्वती की बात कह दी, "हम मुसलमान नहीं। और ये नाम भी मुसलमानी नहीं हैं। ये तो, फारसी जबान के नाम हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तो सरस्वती की बात ठीक हो गई कि वह नाम बदलने से हिन्दू नहीं हुई।''

इससे मोहसिन खाँ सोचने लगा। उसको युक्ति से बात ठीक ही मालूम हुई थी। मगर वह ऐसा कहीं देखता नहीं था कि किसी मुसलमान का नाम हिन्दू देवी–देवताओं पर हो। आगाखानियों में तो ऐसे लोग थे जो हिन्दू थे मगर उनके नाम फारसी भाषा के थे। परन्तु हिन्दुओं और मुसलमानों में ऐसा होता उसने सुना नहीं था।

उसे चुप देख रहमत ने कह दिया, ''सरस्वती कहती है कि वह यह मानती है कि खुदा सब में मौजूद है और ओसा मानने से उसकी किसी से दुश्मनी नहीं रही।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है।''

''मगर यह बात हमारे भवन के मैनेजर भापाजी ने उसे सिखाई है। और वह इसलिए उनको पैगम्बर मानने लगी है।''

''इतना कह देने से कोई पैगम्बर नहीं हो सकता। पैगम्बर वह होता है जब वह कोई मोजिजा (चमत्कार) दिखाये। कुछ ऐसा चमत्कार जैसा मेरे परदादा के साथ हुआ था।''

''मैं पता करूँगी।''

''मुझको विश्वास है कि ऐसा हो नहीं सकता। वह कुछ भी मोजिजा दिखा नहीं सकेगा।''

रहमत चुप रही। वह मन में निश्चय कर चुकी थी कि वह इस विषय पर सरस्वती और भापाजी से बात करेगी।

: 13 :

सूरत से आने के पाँच–छः दिन बाद रामरक्खामल्ल ने श्यामनारायण को तार भेजकर बम्बई बुला लिया। तार में केवल यह लिखा था, ''शीघ्रातिशीघ्र बम्बई चले आओ।''

श्यामनारायण को तार मिला तो वह इसका कुछ सिर–पैर न समझ अपने पिताजी से राय करने चल पड़ा। दुकान पर पहुँच उसने बड़े भापा को तार पढ़कर सुनाया तो विष्णुनारायण ने बताया, ''मुझको भी तार आया है। उसमें लिखा है, श्याम को शीघ्र बम्बई भेज दो।

''मैंने सदा को तुम्हें बुलाने के लिए तुम्हारे घर भेजा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो दफ्तर से आ रहा हूँ। तार दफ्तर के पते पर आया था।"

"मैं समझता हूँ कि कला के विषय में कुछ बात है। इसलिए तुमको बुलाया है।"

"परन्तु यदि वह मिल गई है तो लिखा क्यों नहीं?"

"श्याम! यहाँ बैठ अनुमान लगाने की अपेक्षा तुम जाने की तैयारी कर लो।"

"मैं दफ्तर से एक सप्ताह की छुट्टी ले आया हूँ और रात को ही चला जाऊँगा।"

"ठीक है। अब यहाँ ठहरने से कोई मतलब नहीं।"

श्याम तीसरे दिन प्रातःकाल बम्बई पहुँचा। वह सदानारायण से सब पता और पहुँचने का तरीका जान गया था। परन्तु रामरक्खामल्ल को विष्णुनाराण्ण का तार पहुँच चुका था, इस कारण वह विक्टोरिया टर्मिनल पर उसको लेने पहुँचा हुआ था।

रामरक्खामल्ल ने श्याम के लिए पंजाब–सिंध होटल में एक डबल सीटिड कमरा लिया हुआ था। वहाँ उसका सामान रख वह उसे संगीत–भवन में ले गया। श्याम ने ताई लेखवती के चरण–स्पर्श किए तो उसके पास बैठी कला अपने पति की आवाज सुन उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़ खड़ी रह गई।

श्यामनारायण ने कला को देखा तो स्तब्ध खड़ा रह गया। श्याम ने देख लिया था कि कला की आँखें निस्तेज हैं। वे केवल सफेद बटनों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रही थीं। यों देखने में कला लगभग वैसी ही थी जैसी पहले थी। परन्तु आँखों के कारण श्याम का चित्त उसके मुख पर भी देखने को नहीं किया।

एकाएक कला जहाँ खड़ी थी वहीं बैठ, भूमि पर माथा टेकने झुक गई।

लेख ने श्याम को कहा, "बैठो बेटा!" तदनन्तर उसने कला को भूमि पर से उठाया और श्याम के सामने बैठा दिया। वह अविरल आँसू बहा रही थी।

श्याम ने ही चुप्पी भंग करते हुए। पूछ लिया, "कहाँ रही हो कला! इतने दिन? और अपनी सुन्दर आँखें कहाँ फेंक आई हो?"

कला चुपचाप बैठी रो रही थी। रामरक्खामल्ल ने राधा के साथ मधु की भेंट और फिर कला का यहाँ आना सब बता दिया। आगे कहा, "देखो श्याम! इसको यहाँ आये तीन महीने से अधिक हो चुके हैं। हमने इसकी आँखों के इलाज का यत्न किया है किन्तु यह ठीक नहीं हो सकीं।

"मैंने अब उचित समझा है कि तुम्हारा इससे साक्षात्कार करा दूँ। अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम यहाँ ठहरो। मध्याह्न का भोजन यहाँ करना और फिर इसको होटल में ले जाना। एकान्त में इससे सब पूछना और निश्चय कर लेना कि तुम दोनों किस प्रकार रहना चाहते हो।

''वहाँ होटल में तुम एक–दूसरे से ठीक–ठीक बात कर सकोगे। दो–तीन दिन रहकर निश्चय करो कि यह तुम्हारे साथ जा रही है अथवा नहीं।''

''और अगर न ले जाना चाहूँ तो?'' श्याम ने पूछ लिया।

''अगर तुम इसको नहीं ले जाना चाहोगे अथवा यह तुम्हारे साथ जाना नहीं चाहेगी तो तुम दोनों की रुचि–अनुसार कुछ प्रबन्ध कर दूँगा।''

''भापा! इसकी सूरत देख मेरा मस्तिष्क भन्ना उठा है और मैं स्वयं को नियन्त्रित करने में कठिनाई अनुभव कर रहा हूँ।''

''देखो, तुमको हम इसे ले जाने के लिए विवश नहीं कर रहे। मैं तुम दोनों के बीच में कोई राय देना नहीं चाहता। इस पर भी इतना कहना चाहता हूँ कि तुम्हारे इसको मारने–पीटने में कोई कारण नहीं।

''मैंने कला को समझा दिया है कि वह अपनी सत्य कथा और अपने मन की सत्य अवस्था बता दे। जब यह अपनी बात सत्य–सत्य तुमसे कहने को तैयार है तो तुमको क्रोध करने की आवश्यकता नहीं। तुमको पूर्ण स्वतन्त्रता है कि तुम इसको साथ ले जाओ अथवा न ले जाओ।''

श्याम बहुत देर तक कला को देखता रहा। अन्त में बोला, ''क्यों कला! मेरे साथ होटल में चलने का साहस है?''

''मैं अपने पाप–कर्मों के लिए आप से क्षमा माँगना चाहती हूँ।''

''क्या वे ऐसे हैं कि मैं क्षमा कर सकूँगा? मैं आश्वासन नहीं दे सकता। क्षमा करने पर भी मैं तुमको साथ ले चलूँगा या नहीं कह नहीं सकता। ले भी गया तो वहाँ किस प्रकार रख सकूँगा यह भी बताना अभी बहुत कठिन है। अब बताओ चलोगी होटल में? वहाँ मेरे साथ एकान्त में रहोगी। मैं तुम्हारा गला घोंट कर स्वयं को पुलिस के हवाले भी कर सकता हूँ।''

''मैं यह समझती हूँ। इस पर भी अपनी अर्जी आपके सामने रखना चाहती हूँ। फिर आपको गला घोंटने का कष्ट करने की आवश्यकता नहीं होगी। मैं स्वयं भी समुद्र में डूबकर अपने को समाप्त कर सकती हूँ।''

श्याम घबराया हुआ अनिश्चित–मन बैठा था कि मधु आ गया। वह अपने पिता को वहाँ बैठा देख आश्चर्यचकित खड़ा रहा। फिर एकाएक भागकर पिता के गले से चिपट कर रोने लगा। श्याम की शिराओं का तनाव ढीला हुआ और जब मधु उसके गले से चिपटा हुआ सिसकियाँ भर रहा था श्याम उसकी पीठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हाथ फेरता हुआ प्यार देने लगा था।

श्याम को एकाएक लड़की का विचार आ गया। उसने मधु से पूछ लिया, "सुनीता कहाँ है?"

"वह चोरी हो गई है।"

"और तुम चोरी नहीं हुए?"

"नहीं।"

श्याम ने मधु को अपने से पृथक् कर पूछा, "आजकल क्या करते हो?"

"बड़े भापाजी से पढ़ता हूँ।"

"क्या पढ़ते हो?"

"संस्कृत पढ़ता हूँ।"

श्याम इस विषय में भी कुछ सम्मति नहीं बना सका कि मधु का क्या किया जाए। वास्तव में यह सब इतना एकाएक घटित हुआ था कि उसके मस्तिष्क ने काम करना छोड़ दिया था।

रामरक्खामल्ल ने श्याम के मस्तिष्क को उत्तेजना देने के लिए कह दिया, "यदि मधु तुम्हारे साथ नहीं गया तो रत्न की भाँति उसकी भी पढ़ाई का प्रबन्ध हो जायेगा। रत्न अभी अष्टाध्यायी और पंचतन्त्र पढ़ रहा है। बारह वर्ष की आयु तक वह संस्कृत तथा हिन्दी भाषाएँ भलीभाँति पढ़ लेगा। फिर अंग्रेजी, गणित और विज्ञान की शिक्षा दिलवा दूँगा। इतिहास–भूगोल तो स्वयं ही पढ़ जायेंगे।"

भोजन का समय हुआ तो भोजन किया गया। कला और लेख तो नीचे लड़कियों के साथ खाने चली गईं और रामरक्खामल्ल, रत्नलाल मधु और श्याम वहीं बैठ खाने लगे।

खाना खाते हुए मधु ने कहा, "पिताजी! मैं आपके साथ चलूँगा।"

"कहाँ?"

"लाहौर।"

श्याम विचार करता था कि कैसे होगा यह।

भोजनोपरान्त श्याम कला को लेकर होटल चला गया। रामरक्खामल्ल और लेखवती उनको होटल तक छोड़ने गए। उनको कमरे में पहुँचा रामरक्खामल्ल ने कला को कह दिया, "कलावती! सरलता श्रेष्ठ चित्त का अति उज्ज्वल लक्षण है। कोई बात नहीं जो सरलता से सम्पन्न न की जा सके।"

तदनन्तर उसने श्याम को सम्बोधन कर कहा, "देखो श्याम! ऐसे ही मत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग जाना। मिल कर जाना।''

दो दिन तक श्याम का कोई समाचार नहीं आया। रामरक्खामल्ल ने भी वहाँ जाना ठीक नहीं समझा। इस पर भी वे होटल पर आदमी भेजकर पता करते रहते थे कि लाहौर वाला बाबू टिका है अथवा चला गया है।

तीसरे दिन रामरक्खामल्ल अकेला होटल में गया और यह जान उसको प्रसन्नता हुई कि श्याम और कला की सुलह हो गई है और दोनों लाहौर जाने की तैयारी कर रहे हैं। रामरक्खामल्ल ने कमरे के बाहर से आवाज दी तो कला ने कुर्सी से उठ दरवाजे की ओर मुख कर हाथ जोड़ दिये। कला ने मुस्कराते हुए कहा, ''बड़े भापा! ये मान गये हैं और मुझको लाहौर ले जा रहे हैं।''

''मैं तुमको बधाई देता हूँ कला! भगवान तुम दोनों को सुमति दे, जिससे तुम दोनों का शेष जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत हो सके।''

श्याम ने गम्भीर हो कह दिया, ''बड़े भापा! मधु हमारे साथ चलेगा।''

''ठीक है। कब जाने का विचार है?''

''परसों सायं पाँच बजे की गाड़ी से जाने का निश्चय है। मैंने सेकेण्ड क्लास की रिजर्वेशन करा ली है।''

''ठीक है। कला! तुम्हारी सहेली सरस्वती तुमको स्मरण करती है।''

''हम आज सायं पाँच बजे पढ़ाई के समय के बाद भवन में आवेंगे।''

श्याम ने बताया, ''मैं इस बात के लिए मान गया हूँ कि इसको लाहौर ले जाकर अपने घर में रखूँ। शर्त यह है कि इसको शान्ति से अपना शेष जीवन परमात्मा की भक्ति में व्यतीत करना होगा।

''भापा! इसने मद्य–पान आरम्भ कर दिया था और मैं समझता हूँ कि इस कारण ही इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी।''

''और तुम सिगरेट पी–पी कर अपनी बुद्धि की शुद्धि किया करते थे?''

''मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है।''

''और तुमने शराब पीनी कब से छोड़ी है?''

''आँखों की दुर्घटना के बाद नहीं पी।''

''परन्तु भापा! हुक्का तो,'' श्यामनारायण ने कह दिया, ''आप भी पीते हैं।''

''हाँ, किसी समय चरस भी पीता था। परन्तु मुझको कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि इनके बिना मैं रह नहीं सकता। तुम तो सिगरेट के बिना व्याकुल हो जाया करते थे।''

''इस पर भी अब नौ मास से ऊपर हो चुके हैं। मैंने सिगरेट नहीं पी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो बीवी का भागना लाभकारक हो गया। इसकी शराब छूटी और तुम्हारी सिगरेट छूटी।"

श्याम अथवा कला ने बताया नहीं कि सुलह होने में किस भावना ने काम किया है। इस पर भी ऐसा प्रतीत होता था कि दोनों समझ गये थे कि परिस्थिति ऐसी है कि दोनों को इकट्ठे रहना ही चाहिए। अन्यथा कल्याण नहीं। मधु का पालन–पोषण, उसकी शिक्षा–दीक्षा माता–पिता से पृथक् हो नहीं सकेगी। साथ ही सुनीता का चुराया जाना ऐसी घटना थी कि अब मधु के जीवन से खिलवाड़ नहीं की जा सकती थी।

पहले ही दिन जब श्याम और कला को एकान्त मिला तो श्याम ने पूछ लिया, "अब बताओ, तुम मुझसे क्या चाहती हो?"

"भीख माँगने आई हूँ।"

"क्या माँगती हो, माँगो!"

"दाता का कल्याण हो। जो मन में आये झोली में डाल दे। भिखारी तो दुत्कार कर द्वार से भगा दिये जाने से लेकर दाता का सर्वस्व तक लेने की कामना कर सकता है।"

"परन्तु कला! तुम भिखारी बनी क्यों?"

"बिलकुल उसी तरह जैसे एक करोड़पति दिवालिया हो जाता है। अपनी सम्पत्ति को वह सट्टे में जूए की भाँति दाँव पर लगा देता है और कौड़ी–कौड़ी के लिए मोहताज हो जाता है।

"सटोरिया इस सम्भावना को सदा मन में रखता है कि वह बाजी हार भी सकता है। इस पर भी वह अपनी व्यावसायिक प्रतिभा पर भरोसा रखता है कि वह अपनी बुरी–से–बुरी हालत में भी पुनः टाँगों पर खड़ा हो सकेगा।

"यही अवस्था मेरी थी। मैंने सुख–प्राप्ति जीवन का उद्देश्य समझ लिया था और पहले दो पतियों के सुख की अनुभूति की लालसा जागी। फिर दोनों में तुलना होने लगी। सबसे बड़ी बात थी बम्बई और लाहौर में तुलना।

"बम्बई बाजी ले गई और मैं यहाँ आ पहुँची। यह सब कुछ अपने भाग्य को उन्नत करने की लालसा से ही कर रही थी।

"यहाँ पहुँचने के एक सप्ताह के भीतर ही उन्नति की आशा विलीन होने लगी। मैं बाजी हारती हुई अनुभव करने लगी। सीमा का उल्लंघन हो चुका था और लौटने का मार्ग नहीं रहा था।

"सारी बाजी तो उस दिन हारी जब खौलती चाय का प्याला आपके प्रतिस्पर्धी ने मेरे मुख पर उछाल दिया। रात–भर पीड़ा से कराहती रही। प्रातः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्पताल में भरती कर दी गई। वहाँ लावारिस पड़ी रही। जली आँखों के घाव तो ठीक हो गये। परन्तु दृष्टि नहीं लौटी।

"हस्पताल से छुट्टी मिलने पर उसके निवास स्थान पर पहुँची परन्तु श्रीमान मकान छोड़ गये थे। उसको दफ्तर में जा पकड़ा तो वह अपने निवासस्थान पर ले गया और कहने लगा, कि वह मुझको नहीं रख सकता। उसको अंधी कला नहीं चाहिये।

"मेरा कहना था कि मुझे अन्धी भी तो उसने ही बनाया है। वह कहने लगा कि कुछ भी हो, अपने बच्चों को लेकर जहाँ चाहे चली जाऊँ। इतना कहकर उसने मेरा हाथ पकड़ा और मधु तथा सुनीता को लेकर हमको चौपाटी पर छोड़ दिया। मैं समुद्र में डूब मर जाना चाहती थी, परन्तु मधु और सुनीता मुझसे चिपट गये और रोने लगे। आखिर भीख माँग कर निर्वाह होने लगा। दिन–भर भीख माँग रात को पटरी पर सो रहते। एक दिन सोकर उठी तो सुनीता गायब हो गई। बहुत हल्ला किया, परन्तु एक अन्धी क्या कर सकती थी।

"एक दिन एक आदमी मुझको बैठे–बैठे रोटी देने लगा। वह मधु को जेब कतरने का व्यवसाय सिखाने लगा। मधु चतुर हुआ तो दोनों यह काम करने लगे। वह मुझे एक जगह पर ले गया और यहाँ हम रहने लगे। एक कपड़े के गोदाम के पीछे कोठरी थी। वहाँ गर्मी बहुत रहती थी। आधी रात वह मुझको उस कोठरी में रखता और आधी रात हम पटरी पर आकर सो जाते।

"मधु और वह दिन–भर जेबें कतरते। सायंकाल जूआ खेलते। रात को वह मुझसे वासना–तृप्ति करता और आधी रात पटरी पर सो कर व्यतीत कर देते।

"भाग्य का खेल। मधु ने राधा के पर्स पर उस्तरा चलाया और पकड़ा गया। मधु ने अपना नाम बताया तो राधा को हमारी कहानी स्मरण हो आई। वह उसको पकड़ कर बड़े भापा के पास ले गई। उन्होंने मधु को पहचाना और मुझको लेने चल पड़े। मुझको मधु के उस्ताद जेबकतरे से छुट्टी दिलवाकर अपने भवन में ले गए।

"इस प्रकार एक रानी से भिखारिन बन गई। वह भिखारिन झोली फैलाकर भीख माँग रही है।"

"और वह कौन था जो रानी को राजा से भी अधिक पसन्द आया था?"

"क्या करेंगे जान कर? दोषी मैं हूँ। मैंने ही स्वेच्छा से उसका वरण किया था और बम्बई चली आई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तुम्हारी बुद्धि की परख का अनुमान लगाना चाहता हूँ।"

उस समय बुद्धि तो थी नहीं। मद्य–सेवन से वह लुप्त हो चुकी थी। अब विचार करती हूँ तो अपनी बुद्धि और सूझ–बूझ पर आश्चर्य करती हूँ।"

"इस पर भी वह कौन था? क्या मैं उसको जानता हूँ?"

आपका पड़ोसी तथा मित्र चिरंजीवलाल का छोटा भाई काहनचन्द। उस समय वह मुझको दिव्य रूप–राशि का युवक प्रतीत हुआ था।"

"यह चाय की घटना किस तारीख की है?"

"जुलाई की बीस तारीख की।"

"जुलाई के प्रथम सप्ताह में उसकी सगाई पक्की हुई थी। उसके गाँव की ही एक लड़की हूँ, सुन्दरी। सितम्बर में उसका विवाह हुआ था।"

"अब समझ रही हूँ। चाय की घटना से पहले ही वह मुझसे झगड़ा करने लगा था। अब मैं समझती हूँ कि कितनी मामूली बात पर उसने जलती चाय जान–बूझ कर मेरी आँखों पर छिटक दी थी।"

श्याम ने कह दिया, "देखो ! अब तुममें वह आकर्षण नहीं रहा, जो एक वर्ष पूर्व था। सौन्दर्य का परिचय आँखों से मिलता है और वे अब हैं नहीं। केवल दो मटियाले श्वेत रंग के बिल्यौरी बटन से रह गए हैं। परन्तु मैं विचार करता हूँ कि सुनीता तो गई। भय है कि कहीं मधु भी न चला जाय। प्रश्न यही है कि मधु को तुम्हारे बिना ले जाना ठीक होगा क्या? मैं अभी निर्णय नहीं कर सका।"

"विचार कर लीजिए। भिखारिन दाता को क्या राय दे सकती है।"

"भीख में क्या चाहती हो?"

"अपने पूर्व के प्रतिष्ठित पत्नी–पद से लेकर एक अन्धी अपाहिज ड्योढ़ी में बैठी भिखारिन की स्थिति तक, जो कुछ आप दे सकें।"

"मुझको भय है कि रेगिस्तान के ऊँट की भाँति किंचित्मात्र स्थान दिया तो कहीं खेमे के मालिक को ही बाहर कर स्वयं पूर्ण मालकिन न बन जाओ।"

"क्या इस अवस्था में ऐसा कर सकूँगी?"

"एक बार मैंने तुम पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था और तुम सुखकारक बन गई थीं, परन्तु फिर धीरे–धीरे तुमने अपना पूर्व अधिकार ही प्राप्त नहीं किया, प्रत्युत मुझको पंगु बना दिया था।"

"पहले में और अब में अन्तर नहीं हो गया क्या? मेरे अपाहिज होने की बात छोड़ भी दें तो भी जो ज्ञान की वृद्धि मुझमें हुई है, क्या उसने मुझ में कुछ अन्तर उत्पन्न नहीं किया? मैं तो सब कुछ नष्ट–भ्रष्ट कर लौटी हूँ। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको मुझसे भय करने में कोई कारण नहीं। मेरे नाखून टूट चुके हैं।"

: 14 :

उस दिन कुछ भी निश्चय नहीं हो सका। अगले दिन–भर के चिन्तन, विचार–विनिमय के उपरान्त मधु का प्रश्न प्रबल सिद्ध हुआ और कला तथा मधु को लाहौर ले जाने का निर्णय हो गया। रामरक्खामल्ल के आने से पूर्व समझौता हो लाहौर जाने का कार्यक्रम बन चुका था और गाड़ी में सीटें रिजर्व हो चुकी थीं।

श्याम, मधु और कला अपने ग्वाल–मंडी वाले मकान में पहुँचे तो पूर्ण मित्र और परिचित वर्ग कला को देखने के लिए उमड़ पड़ा। यह देख कि वह चक्षुविहीन हो गई है, सब उसके सामने बैठ मुख से सहानुभूति प्रकट करते थे। दो स्त्रियाँ आतीं, दो जातीं। मीठी–मीठी बातें करतीं और सीढ़ियाँ उतरते समय गालियाँ देती जाती थीं, "चुड़ैल कहीं की। स्थान–स्थान की गन्दगी का स्वाद लेकर आ गई है।"

"पर श्याम झुड्डू है। क्या देखा है उसने इस अंधी में?"

"ऐसी औरतें जादूगरनी होती हैं। कील रखा है इसने अपने पति को।"

वे, जो श्याम और सोहनी के सम्बन्ध पर विश्वास रखती थीं, यह कहती हुई गईं, "अब मजा आयेगा?"

"क्या मजा आएगा?"

"दोनों में लड़ाई होगी।"

"इस अन्धी को क्या पता चलेगा कि सोहनी कब आती है और कब जाती है।"

"मैंने वसन्ते से पूछा था और वह कहता था कि दोनों बहन–भाई की भाँति रहते हैं।"

एक तीसरी ने कह दिया, "उसको क्या पता चल सकता है?"

"और तुमको पता चल गया है?"

इस पर सुनने वाली हँस पड़ती।

कला के आने का समाचार साधुराम के घर पर पहुँचा। साधुराम की पत्नी ने सोहनी को बताया, "सोहनी! तुम्हारे श्याम की बीवी कला आ गई है।"

"सत्य?" सोहनी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए पूछ लिया।

"हाँ, सन्तराम की पत्नी बता गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो भाभी! मैं जाती हूँ। जरा खबर ले आऊँ।"

"कहती थी, वहाँ औरतों की भीड़ लगी है।"

"और श्याम भैया?"

"वे अपने कमरे में घुसे बैठे हैं। वे औरतों को मुख नहीं दिखा सकते।"

"मूर्ख औरतें उसको परेशान कर रही होंगी। मेरा विचार है मुझको तुरन्त जाना चाहिये।"

वह कपड़े बदलने चली गई। कपड़े पहन बाहर आई तो माधव अपनी माँ को सुना रहा था, "माँ! कला रानी आ गई है।"

सोहनी आई तो माधव ने कह दिया, "बूआ! कला बैठी रो रही है और मुहल्ले की बहुत–सी औरतें उसके पास बैठी अनेक प्रश्न पूछ रही हैं।"

इस पर माधव की माँ ने कह दिया, "सन्तराम की पत्नी यह भी बता गई है कि वह दोनों आँखों से अंधी हो गई है।"

"अन्धी हो गई है?"

"हाँ, और सब औरतें उसकी खिल्ली उड़ा रही हैं।"

सोहनी ने एक भी शब्द और नहीं कहा और वह अपने घर से निकल श्याम के मकान पर जा पहुँची। ऊपर से दो स्त्रियाँ उतर रही थीं। अभी–अभी तीन बजे थे। मित्र–मंडली के एकत्रित होने में तीन घंटे थे। सोहनी सीढ़ियाँ चढ़ने लगी तो एक ने कह दिया, "सोहनी बहन! चिन्ता करने की कोई बात नहीं। वह बिलकुल अन्धी हो गई है। कुछ देख नहीं सकेगी।"

सोहनी इस व्यंग्य का अर्थ समझती थी। इस पर भी उसने उत्तर नहीं दिया, और सीधी ऊपर चढ़ गई। ऊपर की बैठक पर कला बैठी थी। पाँच–छः स्त्रियाँ उसके सामने बैठी आँखों–ही–आँखों से संकेत कर रही थीं। सोहनी वहाँ जा, कला के पास बैठ गई और पूछने लगी, "कला बहन! कब आई हो?"

कला किसी की भी बात का उत्तर नहीं दे रही थी। सोहनी ने अपना परिचय दे दिया, "मैं साधु भैया की बहन सोहनी हूँ। कहाँ से आ रही हो?"

कला पूर्ववत् चुप रही। इस पर सोहनी ने पूछ लिया, "मधु कहाँ है?"

इसका उत्तर एक अन्य स्त्री ने दे दिया, "वह अपने पिता के साथ सोने के कमरे में है।"

"मेरा विचार है कि कला को विश्राम करने देना चाहिये। क्यों कला! थकी हुई हो न?"

कला थकी हुई नहीं थी। इस पर भी वह चुपचाप बैठी थी। तब एक स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने उठते हुए कहा, "चलो बहन! चलें। दोनों को परस्पर बातचीत करने का अवसर मिलना ही चाहिए।"

सब उठ खड़ी हुईं। सोहनी भी उठ खड़ी हुई और स्त्रियों के साथ नीचे उतरने की अपेक्षा सोने के कमरे के बाहर जा आवाज देने लगी, "भैया! भैया!!"

मधु बाहर आया तो श्याम भी निकल आया। सोहनी ने मधु को कह दिया, "नीचे का द्वार बन्द कर दो।"

मधु पहचानता तो था, परन्तु वह प्रश्न–भरी दृष्टि से सोहनी के मुख पर देखता रह गया। इस समय श्याम बाहर आया तो कहने लगा, "सोहनी बहन! तो तुमको भी पता चल गया है। क्या वे सब चुड़ैलें चली गईं?"

"हाँ!"

"मधु! जाओ, दरवाजा बन्द कर दो। जब वसंता आयेगा तो खोल देंगे।"

"वह कहाँ गया है?"

"लाहौरी दरवाजे के बाहर से पूरी लेने गया है।"

मधु द्वार बन्द करने चला गया। अब सोहनी, श्याम और मधु कला के पास आ बैठे। सोहनी का व्यवहार अन्य औरतों से भिन्न था। इसको समझ कला ने अपनी आँखें उसकी ओर उठाईं तो सोहनी उसके मन का आशय समझ गई और बोली, "देखो बहन कला! ये मुहल्ले की चुड़ैलें तुम्हारी हँसी उड़ा रही थीं। तुमको दृष्टि–विहीन जान तुम से मीठी–मीठी बातें करती थीं, परन्तु मुख और आँखों से घृणा प्रकट कर रही थीं। मैंने सबको भगा दिया है।"

कला ने पहली बार मुख खोला, "तो वे गईं?"

"हाँ, मैं श्याम भैया से कहने आई थी कि इनको मुँह न लगने दें।"

"और तुम कौन हो? मुझको तो अभी याद नहीं आ रहा।"

"साधुराम याद है? यहाँ से चार–पाँच मकान दूर रहता है। वही इन्द्रकौर का घरवाला?"

"हाँ।"

"मैं उसकी विधवा बहन सोहनी हूँ।"

"हाँ, तुम्हारे विषय में मधु के पिता ने कुछ बताया था।"

"क्या बताया था?"

"यही कि तुम उनकी बहन बन उनको टीका लगा चुकी हो।"

श्यामनारायण ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "मैं मुहल्लेवालियों से झगड़ा करना नहीं चाहता था। मैंने विचार किया कि उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक–दो दिन अपना गुब्बार निकाल लेने दूँ। वे आईं तो मैं सोने के कमरे में चला गया।

कला ने कह दिया, ''सोहनी बहन न आतीं तो वे जाती नहीं। मैंने भी निश्चय कर लिया था कि उनकी एक भी बात का उत्तर नहीं दूँगी।

''कला बहन! यह प्रायश्चित है अपनी भूलों का। यदि एक–दो महीने इन मूर्खों की बात की अवहेलना कर सकी तो फिर ये ही तुम्हारी मान–प्रतिष्ठा करने लगेंगी।''

इस समय वसन्ता पूरी लेकर आ गया। श्याम, कला, मधु ने पूरियाँ खाईं। बहुत–सी बच गईं। वे वसन्ते को मिल गईं। श्याम ने बताया, ''मार्ग में कुछ खाने को मिला नहीं। इस कारण भूख तंग कर रही थी।''

फिर उसने मधु से कहा, ''अच्छा, मधु! तुम छोटे भापा के घर चले जाओ और उनको अपने और माँ के आने की सूचना दे आओ।''

मधु गया तो सोहनी ने श्याम से पूछ लिया, ''भैया! कहाँ पा गये हो भाभी को?''

''पूर्ण कथा तो यह किसी अवकाश के समय बतायेगी। अब तो मैं तुमसे राय करना चाहता हूँ कि मित्र–मंडली और मुहल्लेवालों को कुछ तो बताना ही पड़ेगा। क्या बताया जाय? यह सोचने की बात है।''

सोहनी का सतर्क उत्तर था, ''केवल उतना ही बताया जाय, जितना जानना उनका अधिकार है।''

''कितना जानना अधिकार है?''

''मैं पूर्ण घटना तो जानती नहीं। हाँ एक कहानी तो बना ही सकती हूँ।''

''क्या?'' श्याम ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

''यही कि कला को हरिद्वार से एक गुण्डा बरगला कर ले गया था। उसने इसको कैद कर रखा था। अवसर पाकर यह वहाँ से भागी और चोट खा गई। इसकी आँखें जाती रहीं। हस्पताल वालों को इसने अपना पता बताया तो आपको सूचना मिल गई। आप जाकर इसको ले आये हैं।''

''और मधु तथा सुनीता का क्या हुआ?''

''सुनीता है किधर?''

''वह नहीं मिल रही। लापता है।''

''तो कह देना कि मधु और सुनीता भी इसके साथ भागी थीं। रात का समय था और यह तो चोट से अचेत हो गई थी। लोग इसको उठा कर हस्पताल ले गए थे। उस गड़बड़ी में ही सुनीता लापता हो गई है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'पुलिस में रिपोर्ट लिखाई है क्या?' वे पूछेंगे।

" 'उन गुण्डों की तो नहीं लिखाई, हाँ सुनीता की लिखा रखी है। परन्तु वह मिली नहीं।' "

"बात तो लगभग ठीक ही है। इसको भगाने वाला तो गुण्डा था ही। उसने इसको मोह–जाल में फँसा रखा था। यह भागी और हस्पताल भी गई थी। थोड़ा ही अन्तर है। वह किसी के जानने का अधिकार भी नहीं।

"अच्छा कला! अब तुम कहानी को दुहराओ तो।"

कला ने दुहराया। इसको और ठीक कर लिया गया और यह निश्चय हुआ कि इससे अधिक किसी को बताने की आवश्यकता भी नहीं।

श्याम ने कला को बताया, "सोहनी मेरी बहन बनी हुई है। यद्यपि मुहल्ले की कुछ औरतें और मर्द इससे मेरा अनुचित सम्बन्ध भी समझते हैं। सोहनी का कहना है कि कुत्ते भौंका करते हैं और हाथी मस्त चाल चला करते हैं। इसने निन्दा करने वालों की सदा अवहेलना ही की है। तुमको भी ऐसा ही व्यवहार अपनाना चाहिए।"

सोहनी मकान की सफाई और वसन्ते का काम देखने लगी। इस समय नीचे मित्र–मंडली एकत्रित होने लगी थी और श्याम बाबू नीचे चला गया। जब वसन्ता नीचे आने वालों के लिए चाय–पानी बनाने लगा तो सोहनी ने कला के समीप बैठ पूछ लिया, "भाभी! भैया को प्रसन्न कर सकी हो अथवा नहीं?"

कला इसका अर्थ नहीं समझी। इस कारण विस्मय में मुख देखती रही। सोहनी ने अपने कहने का आशय समझाते हुए पूछा, "तुम परस्पर पति–पत्नी हो अथवा नहीं?"

कला ने समझते हुए कहा, "सोहनी बहन! मैं किसी योग्य रह गई हूँ क्या?"

"क्यों, क्या खराबी हो गयी है तुम में?"

"वे कहते हैं कि मेरी आँखें देख उन्हें मुझसे घृणा होती है।"

सोहनी ने देखा तो समझ गई। एकाएक उसके मन में एक विचार आया। उसने कहा, "भाभी! आँखों के अतिरिक्त तो तुम सब प्रकार से सुन्दर ही प्रतीत होती हो। एक–दो बाल पक रहे प्रतीत होते हैं। और तो कुछ भी नहीं।"

"आँखें ही तो औरत की सर्वोत्तम निधि हैं।"

"मेरा विचार है कि मैं तुम्हारे लिए काले शीशे का चश्मा ला दूँ। वह तुम पहन लो तो फिर आँखों का दुर्गुण छिपाया जा सकता है।

कला विस्मय में चुप बैठी रह गई। उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली, "क्या होगा इससे?"

सोहनी ने कहा, "मैं ला देती हूँ। तुम पहन कर देखो।"

"तो बहन! उनको बताये बिना ला दो।"

"ठीक है। यह काम मैं सबसे पहले करती हूँ।"

"दाम तो मेरे पास हैं नहीं।"

"रुपये मेरे पास हैं। भैया ने घर के खर्च के लिए दे रखे हैं।"

सोहनी उठी। जूता पहना और मकान के नीचे उतर गई।

श्यामनारायण अभी मित्र–मण्डली में बैठा था कि साधना, मोहिनी, लाज, सतवन्ती और सुमित्रा आ गईं। सब कला के पास बैठ कुशल–समाचार पूछने लगीं। कला ने वही संक्षिप्त–सा वत्तान्त बता दिया, जो सोहनी के साथ बैठकर बनाया था।

सुमित्रा ने कहा, "कला! हम मधु को बच्चों के पास छोड़ आये हैं। इस कारण हम शीघ्र ही जा रहे हैं। कल फिर आयेंगे।"

श्यामनारायण आया तो सुमित्रा ने कह दिया, "श्याम! पिछली बातें भूल जाओ। अब आगे की बात सोचो। नियमपूर्वक रहोगे तो अभी जीवन में मिठास उत्पन्न हो सकती है।"

श्यामनारायण जब कला की आँखों की ओर देखता था तो उसको माँ के कहने पर विश्वास नहीं आता था। वह चुप रहा। इस पर माँ ने कहा, "अब वसन्ते से काम नहीं चलेगा। एक नौकरानी रख लो। जो कला की सहायता कर सके।"

"हाँ माँ! अभी तो सोहनी बहन है। शीघ्र ही कुछ और प्रबन्ध भी कर लूँगा।"

माँ, बहन, भाभी और बूआ गईं तो श्याम फिर मित्र–मण्डली में जा बैठा। इस समय सोहनी बाजार से लौट आयी। वह अनारकली बाजार से सुनहरी फ्रेम की काली ऐनक खरीद लाई थी। साथ ही एक डब्बी पाउडर तथा रूज और लिपस्टिक भी ले आयी भी। इन सब पर बीस रुपये व्यय कर आई थी।

कला को शयनागार में ले जाकर उसका शृंगार किया। हलका–सा पाउडर का छींटा और उससे भी हलका रूज लगा दिया। होठों पर हलकी–सी सुर्खी और नाखूनों पर पेंट लगा दिया। फिर काला चश्मा लगा कर उससे कहा, "अब तुम बैठो, मैं चलती हूँ। देखो घबराना नहीं। मैं सत्य–कहती हूँ, चश्मा लगाने के उपरान्त तो तुम पूर्ववत् कला रानी ही दिखाई देती हों।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात श्याम आया तो कला को अपने पलंग पर चश्मा लगाये बैठे देख चकित रह गया। चश्मे पहने हुए तो उसको वह पुरानी ही कला दिखाई दी। उसने आवाज दी, "कला! सो रही हो?"

कला उठ बैठी। कानों में कर्णफूल और गले में कण्ठी भी थी। श्याम ने उसके समीप बैठ पूछ लिया, "भूख है?"

"जी नहीं, अभी तो पेट भरा है।"

"यह चश्मा कहाँ से मिल गया?"

"यह सोहनी बहन लेकर दे गई है।"

"और यह श्रृंगार–प्रसाधन?"

"यह भी वही ले आई है और जबरदस्ती लगा गई है। आप नाराज हैं इससे?"

श्याम खिलखिलाकर हँस पड़ा।

अगले दिन सोहनी बहुत प्रातःकाल आई। वह देखना चाहती थी कि कला की नित्यक्रिया में वह क्या सहायता दे सकती है। श्याम स्नानादि कर अपने पिता से मिलने चला गया था। कला स्नानादि से निवृत्त हो ऊपर की बैठक में पलथी मारे पूजा के लिए बैठी थी।

सोहनी ने देखा तो दबे पाँव बैठक में पहुँच, चुपचाप उसके सामने बैठ गई। कला उसी स्वर में, जिस स्वर में बम्बई के संगीत–भवन में प्रार्थना की जाती थी, गा रही थी–

प्रभु तुम अब की बेर उभारो,
है पतित पावन विरद तिहारो।
ऐसा कर दो नेक बनूँ मैं,
और लगूँ तुम को भी प्यारो।।
प्रभु तुम अब की बेर उभारो।

कला ने संगीत–भवन में तीन मास रह कर जहाँ आरती कण्ठस्थ कर ली थी, वहाँ इसके स्वर भी सीख लिए थे। साथ ही वह ईशावास्योपनिषद का पाठ स्मरण कर आई थी। इस पाठ के बाद कला ने आँखें खोलीं तो सोहनी ने कह दिया, "कला! तुम तो बहुत ही मीठा गाती हो?"

"तो तुम बैठी रही थीं?"

"हाँ, पहले तुम को गाते कभी नहीं सुना था।"

"यह बम्बई के संगीत–भवन का प्रसाद लेकर आई हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ और भी तो गाया है तुम ने?"

"हाँ, वह ईशावास्योपनिषद् का पाठ भी वहीं से सीख आई हूँ।"

"क्या अर्थ है इन मन्त्रों का?"

"इन में परमात्मा की महिमा और ज्ञान है।"

"तो तुम अब परमात्मा को मानने लगी हो?"

"जब निस्सहाय हो गई और अति अधम पतितावस्था में रहने लगी तो अन्धकार में वह मुस्कराता प्रतीत हुआ था। इस पर भी उसके रूप का स्पष्ट ज्ञान तो उस दिन हुआ था, जब मैं संगीत–भवन में पहुँची थी। नरक से एकदम स्वर्ग में पहुँचने से उसके प्रति भक्ति की भावना जाग पड़ी।

"उस पतितावस्था में तो प्रथम वाक्य यह निकले थे, 'हे भगवन्! अब बस करो। बहुत हो गई।'

"जिस दिन मधु राधा का पर्स कतरता पकड़ा गया था, वह मेरे जगने से पहले ही चला गया था। उससे पहली रात मधु का उस्ताद जूए में सब कुछ हार चुका था। इस कारण वह कमाई करने बहुत प्रातःकाल ही मधु को ले गया था।

"मैं जागी तो कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि कोई मुझको हिला–हिला कर जगा रहा है। मैं उठ कर बैठ गई। पटरी पर सोने वाले भी उठ कर टट्टी–पेशाब के लिए जा रहे थे। मैं अभी नींद ही खोल रही थी कि मेरे समीप ही एक सोने वाली ने कह दिया, 'अपने मनसेधु को कह दो कि भलमनै बन सोया करे। नहीं तो हल्ला कर पकड़वा दूँगी।'

"मैं अपने स्वप्नों से जाग पूछने लगी, कि क्या हुआ है? उसने कहा कि रात को वह उसकी गुदड़ी में घुसा आता था।

"मैंने कहा, शायद उसको वह मुझसे अधिक सुन्दर लगी होगी। इस पर उसने कह दिया कि सुन्दर हूँ तो अपने घर वाले के लिए। उसको कह देना। जूतों से पीट दूँगी। कई रात से मुझको तंग कर रहा है।

"मैं विचार कर रही थी कि कहाँ से कहाँ पहुँच गई हूँ? इस समय मधु का उस्ताद आया और कहने लगा, 'मधु की माँ! मधु पकड़ा गया है। एक बाई उसको पकड़ कर एक बड़े–से मकान में ले गई है। तुम उसकी मिन्नत करोगी तो वह उसे छोड़ देगी।"

"मैं उठ कर चल दी। वहाँ पहुँच मुझको बड़े भापा की आवाज सुनाई दी। मैं समझ गई कि भगवान ने सुन ली। मैं भूमि पर माथा रख उनको नमस्कार करने लगी। बड़े भापा ने मुझको बाँह से पकड़ उठाया तो मुझको कुछ ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत हुआ कि भगवान मुझको कीचड़ से बाहर निकाल रहे हैं।

"परमात्मा को स्मरण करने का ढंग वहाँ सीखा है। मैं वहीं सत्य हृदय से उसका धन्यवाद किया करती थी। मुझको विश्वास नहीं आता था कि ये मुझको लाहौर ले आयेंगे। बड़े भापा सदा कहा करते थे कि मेरा शेष जीवन पति की सेवा में व्यतीत होगा। मैं समझ नहीं सकती थी कि यह कैसे होगा। क्या सेवा करने के योग्य रह गई हूँ मैं? समझ नहीं सकती थी। अन्धी, कुरूप, दुश्चरित्रा, पतिता। कोई भी तो गुण नहीं रहा था।

"यह भगवान का चमत्कार ही हुआ कि ये मुझको यहाँ लाने के लिए तैयार हो गए। भगवान मधु के रूप में आश्रय बन गए। इस पर भी चार रात वहाँ होटल में अकेली इनके पास रही, परन्तु इन्होंने छुआ तक नहीं।

"कल तुम मेरा शृंगार कर गई थीं और मेरी कुरूप आँखों को छिपाने के लिए ऐनक दे गई थीं। भगवान तुम्हारे रूप में प्रकट हुए और वे मुझ पर दयालु हो गए। उन्होंने मुझको अपना लिया।

"विचार आया कि भगवान का लड़ पकड़ा है तो पकड़े रक्खूँ। इस कारण बम्बई वाली प्रार्थना करने लगी थी।"

सोहनी देख रही थी कि वह चंचल, असन्तुष्ट और सदा बेचैन रहने वाली कला अब सर्वथा बदल गई है। वह सन्तुष्ट और धैर्यवती हो गई थी।

अपनी यह योजना की सफलता का ज्ञान प्राप्त कर सोहनी ने कहा, "कला! मैं जब तुम्हारे लिए ऐनक खरीद चुकी तो अनायास ही विचार आया कि कुछ शृंगार के लिए भी ले चलूँ। अतः पाउडर इत्यादि भी खरीद लिए। मैं जानती थी कि तुम अपने आप नहीं लगा सकोगी। इस पर मैंने निश्चय किया कि इतना कुछ मैं तुम्हारे लिए कर दूँगी।

"मेरी इच्छा पूर्ण हुई। भैया को भाभी मिली और भाभी को भैया। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

सोहनी ने वसन्ते को कह भोजन की व्यवस्था भी कर दी। फिर वह अपने घर चली गई। श्याम नौ बजे आया और कला के साथ बैठ भोजन करने लगा।

उसने पूछा, "सोहनी आई थी क्या?"

"हाँ, आई थी और मध्याह्न के समय फिर आने को कह गई है।"

"मैं उसका धन्यवाद करना चाहता था।"

"क्यों?"

"उसने तुमको स्वीकार करने योग्य बना दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहती थी, ननद तो यह किया ही करती हैं। उसको हमारे व्यवहार से बहुत प्रसन्नता हुई है।"

कला की आँखों से आँसू टपकने लगे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

कला अपने घर वाले के साथ गई तो सरस्वती को भापा की दिव्य–दृष्टि पर विश्वास बढ़ गया। रामरक्खामल्ल ने कहा था कि वह सरस्वती के विषय में विचार कर बतायेगा और इसको एक सप्ताह से अधिक हो चुका था वह तो यह विचार कर रही थी कि रामरक्खामल्ल जब उसके भविष्य के विषय में जान जायेगा तो स्वयं उसको बुला कर बतायेगा। परन्तु रहमत ने उसके सामने अपनी ही समस्या रख दी।

एक दिन रहमत मध्याह्न के भोजन के बाद उसके साथ उसके कमरे में ही चली आई। उसने कहा, ''बहन नसीरा! पैगम्बर में कोई मोजजा करने की ताकत होनी चाहिए। अन्यथा वह तो एक मामूली इन्सान ही माना जाएगा।''

''एक मोजजा तो भापाजी ने भी किया है?''

''क्या?''

''कला को देखा था?''

''हाँ।''

''कितनी डरावनी थीं उसकी आँखें। परन्तु जब से वह संगीत–भवन में आई थी, भापा कह रहे थे कि वह अपने पति के घर में बसेगी। और उसका पति आया था। उसका गला घोंटने का विचार छोड़ उसको लाहौर अपने घर पर ले गया है।

''कल बड़े भापा को कला का पत्र आया है। उसने लिखा है कि उसको जिस बात की कभी आशा नहीं थी वह भी पूर्ण हो गई है। उसने अपने पहले जीवन में माता लेखवती की बहुत निन्दा की थी और वह माताजी से उसके लिए क्षमा माँगती थी।

''भापा ने राधा के विषय में भी एक पेशीनगोई की हुई है और मेरे विषय में भी कुछ बताने वाले हैं।''

''मुझको भी उनके पास ले चलो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलो। इस समय वे बिलकुल खाली होंगे।"

भोजन कर वह एक प्याला चाय लिया करता था। वह अभी पी ही रहा था कि उसके कमरे के बाहर पहुँच सरस्वती ने आवाज दे दी, "क्या मैं आपसे मिल सकती हूँ?"

"आ जाओ।" रामरक्खामल्ल ने कहा तो दोनों लड़कियाँ कमरे में चली गईं। रामरक्खामल्ल रहमत को जानता था और वह उसको सरस्वती के साथ आया देख उनके बैठने पर प्रश्न–भरी दृष्टि से देखने लगा।

बात सरस्वती ने की, "भापाजी! मैंने रहमत को यह बताया था कि आप मेरे रहबर हैं तो यह कहने लगी कि रहबर तो सिर्फ पैगम्बर ही हो सकता है। मेरा कहना है कि रहबर तो आप हैं ही, तो क्या आप पैगम्बर भी हैं?"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। हँस कर उसने रहमत से पूछा, "और रहमत बेटी! पैगम्बर में क्या सिफ्त होनी चाहिए?"

"वह कोई चमत्कार करने की शक्ति रखता हो।"

"वह तो कई लोग रखते हैं। इस पर भी वे पैगम्बर नहीं होते।"

"कोई मिसाल देकर बताइये।"

"मैंने एक आदमी देखा है। वह एक साधुमात्र था। वह अकेला अपने झोंपड़े में बैठा था कि इलाके का राजा हाथ में तलवार ले उसकी हत्या करने वहाँ आ पहुँचा। राजा कर्णसिंह जब स्वामी दयानन्द के झोंपड़े में पहुँच तलवार उठा चलाने लगा तो स्वामीजी को मुस्कराते हुए अपनी ओर देखते हुए पा चकित रह गया। उसने तलवार वाला हाथ उठाये हुए कहा, 'मैं तुम्हारी हत्या करने आया हूँ?' स्वामीजी बोले, 'सो तो देख रहा हूँ। परन्तु रुक क्यों गये हो? शीघ्र करो।' यह सुन कर वह कहने लगा, 'तो आपको डर नहीं लगता?' इस पर स्वामीजी ने कह दिया कि अभी उनकी मृत्यु का समय नहीं आया है।

"कर्णसिंह का हाथ धीरे–धीरे झुक गया और उसने तलवार फेंक, उनके चरणों पर माथा रख दिया।

"स्वामीजी ने तलवार को मोड़ कर दो टूक कर दिया और झोंपड़े से बाहर फेंक दी। बताओ यह मोजजा हुआ अथवा नहीं?"

दोनों लड़कियाँ आश्चर्यचकित रामरक्खामल्ल का मुख देखती रह गईं। रामरक्खामल्ल ने कहा, "मगर स्वामी दयानन्द अपने को पैगम्बर नहीं कहता था।

"एक और घटना सुनाता हूँ। एक बारह वर्ष की लड़की एक चालीस वर्ष के साधु को देख एक कथा बताने लगी। उसने बताया कि उस समय से बीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष पूर्व वह लड़की अपने बूढ़े पति की खोज में घर से लड़कों के कपड़े पहन निकल पड़ी थी। उसने एक सिख लड़के का पहरावा पहना हुआ था। वह साधु उस समय अविवाहित युवक था। वह अपनी जान बचा भागा जा रहा था। दोनों का एक धर्मशाला में मेल हो गया। वह युवक पहचान गया कि वह लड़की है। और लड़की ने अपना खोज का विषय बता दिया। लड़की ने युवक से अपने पति की खोज में सहायता माँगी और युवक ने सहायता देने का वचन दिया। वे हरिद्वार, जहाँ उस लड़की के पति के जाने का समाचार था, चले गए और वहाँ दो वर्ष तक बहन–भाई के रूप में रहते हुए लड़की के पति की खोज करते रहे।

"जब विश्वास हो गया कि पति नहीं रहा तो युवक ने लड़की से विवाह की याचना की। लड़की न चाहते हुए भी इस माँग से भौचक्की हो बैठी रह गई। युवक ने इसे स्वीकृति समझ लड़की को पत्नी बना लिया।

"अगले दिन उस लड़की ने स्वयं को अपवित्र समझ नदी में डूब कर आत्महत्या कर ली। युवक अपने पाप–कर्म से भयभीत साधु हो गया। लड़की को छः वर्ष तक एक नीच योनि मिली। छः वर्ष उस योनि में अपने पाप का दण्ड भोग वह पुनः लड़की बन कर पैदा हुई।

"बात करने के समय वह बारह वर्ष की थी और वह साधु जिसको वह पहचान गई थी कि वही युवक था जिसने उससे पत्नी का–सा व्यवहार किया था, उस समय चालीस वर्ष का था। बीस वर्ष पूर्व यह घटना घटी थी।

"बताओ इस प्रकार अपने पिछले जन्म की बात एक मोजजा (चमत्कार) है अथवा नहीं? परन्तु वह औरत अपने को पैगम्बर नहीं कहती।"

"और भापाजी!" सरस्वती ने कहा, "आपने कला के विषय में जो पेशीनगोई की है, वह क्या मोजजा नहीं?"

मोजजा तो है, मगर इससे मैं पैगम्बर नहीं हो गया। हमारे यहाँ पैगम्बर का नाम अवतार है। उसके लक्षण बहुत अधिक हैं। इन छोटी–छोटी बातों से कोई पैगम्बर नहीं कहाता।"

"एक आदमी है। उन्होंने आशीर्वाद दे एक ऐसे आदमी को सन्तान दी थी जो सन्तान के लिए सब उपाय कर चुका था और देवी–देवताओं से भी निराश हो चुका था। उसको भी आप पैगम्बर कहेंगे अथवा नहीं?"

"इतने–मात्र से तो पैगम्बर नहीं हो जाता। पैगम्बर होने के लिए यह आवश्यक है कि वह पूर्ण ज्ञान का मालिक हो।"

"पूर्ण ज्ञान क्या है?" सरस्वती का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस दुनिया के विषय में मुकम्मल इल्म उसे होना चाहिए और वह अपने इल्म का इस्तेमाल कर जन–जन की कठिन–से–कठिन समस्याओं को सुलझा सके।"

"तो आप पैगम्बर नहीं हैं?"

"नहीं। मैं तो तुम्हारे जैसा ही इन्सान हूँ।"

"तो आप मुस्तकबिल की गैबी बातें कैसे बता देते हैं?"

"यह शक्ति मैंने अपनी तपस्या और योग से प्राप्त की है।"

"तो क्या यह हर एक इन्सान अपने में पैदा कर सकता है?"

"हाँ, मगर इसके लिए बहुत कठिन मेहनत करनी पड़ती है।"

रहमत ने पूछ लिया, "क्या मैं भी वह ताकत अपने में ला सकती हूँ?"

"क्यों नहीं?"

"आप बतायेंगे वह तरीका?"

"हाँ; यह करने की विद्या है। इसका अभ्यास करने के लिए दिन निकलने से अढ़ाई घंटा पूर्व यहाँ आकर एक प्रकार का व्यायाम करना पड़ेगा।"

"मैं अपने वालिद साहब से पूछ कर आपसे यह सीखना चाहती हूँ।"

"इसके लिए रहन–सहन और खान–पान का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।"

"मैं रखूँगी।"

"मेरे विषय में आपने क्या देखा है?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"तुम संगीत–विद्या में निपुणता प्राप्त नहीं कर सकोगी। उसके पूर्व ही तुम किसी के मोह–जाल में फँस यहाँ से विदेश जाओगी। वहाँ एक कलाकार के रूप में बहुत ख्याति प्राप्त करोगी। फिर अतुल धन प्राप्त कर तुम भारत में लौटोगी। यहाँ जनता तुम्हारा आदर करेगी और तुम्हारा पति तुम से घृणा करेगा।

"अन्त में पति से सम्बन्ध–विच्छेद होगा और तुम्हारा जीवन सुलभ, सरस और उपकारी हो जायेगा।"

"क्या मैं भी अपने विषय में कुछ जान सकती हूँ?" रहमत ने पूछा।

"किस विषय में जानना चाहती हो?"

"अपने मुस्तकबिल के विषय में?"

"तुम्हारा विवाह करने का विचार हो रहा है। परन्तु यह विवाह नहीं होगा। यदि हो गया तो स्थायी नहीं रहेगा।"

"उसके बाद क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल ने आँखें मूँदे हुए कहा, "तुम अपने माता–पिता के घर नहीं रह सकोगी। तदनन्तर तुम्हारा जीवन काले बादलों में छिप गया है।"

रामरक्खामल्ल ने उससे कह दिया, "देखो सरस्वती! मनुष्य स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। वह अपने कर्मों का आप मालिक है। यदि जो कुछ मैंने बताया है यह तुमको पसन्द नहीं तो तुम वह मत करना। तुम इस राह पर चलने से इन्कार कर सकती हो। यद्यपि ऐसा करना बहुत कठिन होगा, इस पर भी यह असम्भव नहीं।

"अब तुम दोनों जाओ। अपनी राह सोच–समझ कर ग्रहण करो। मैं आराम करना चाहता हूँ।"

दोनों ने घड़ी में समय देखा। रहमत के पढ़ाई के लिए जाने में अभी आधा घंटा था। इस कारण रहमत सरस्वती के साथ ही उसके कमरे में चली गई। रहमत ने बताया, "एक बात तो भापा ने ठीक कही है कि मेरे विवाह की चर्चा हो रही है। मुझको लड़का देखने की इजाजत नहीं मिल रही। मैं विवाह से अभी इन्कार कर रही हूँ। हम ऐसे शख्स को रहनुमा, पैगम्बर कहते हैं।"

"यह तो तुमने बहुत विचित्र बात बताई है। भापा को यह कैसे पता चल गया कि तुम्हारा विवाह हो रहा है।"

"हो नहीं रहा, विवाह करने का यत्न किया जा रहा है। मैं अभी मान नहीं रही।"

"तुम मान क्यों नहीं रहीं?"

"यह मेरी भी समझ में नहीं आ रहा, कि क्यों?"

"तुम भी खूब लड़की हो। इन्कार भी कर रही हो और तुम जानती भी नहीं कि क्यों इन्कार कर रही हो?"

रहमत बहुत घबराई हुई अपने घर गई। उसने अपने मन के विचारों की बात बताने के लिए अपनी माता से पूछा, "माँ! हम मुसलमान हैं क्या?"

"किसलिए पूछ रही हो?"

"उस दिन अब्बा जान से पूछा था तो वे कहने लगे कि हम मुसलमान नहीं हैं। इस पर भी हम हिन्दू भी नहीं। हम आगाखानी हैं।"

"हाँ, बेटा! ऐसा ही है।"

"मुसलमान और आगाखानी में क्या फरक है?"

"मुसलमान यह समझता है कि हजरत सुलाउल–इस्लाम के बाद कोई पैगम्बर नहीं हो सकता। हम मानते हैं कि कम–से–कम आगाखान एक पैगम्बर हुआ है और उसके सब जाँनशीन पैगम्बर होते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो जब तक आगाखान का परिवार चलेगा, पैगम्बर होते रहेंगे?"

"हाँ।"

"इस परिवार के खत्म होने पर क्या होगा?"

"फिर खुदा किसी को हमारी रहनुमाई के लिए भेज देगा। इन्सान बिना रहनुमाई के जिन्दगी चला नहीं सकता।"

रहमत कुछ देर तक माँ की बात पर विचार करती रही। फिर बोली, "रहनुमा पैगम्बर नहीं भी हो सकता क्या?"

"तो फिर रहनुमाई कैसे कर सकता है?"

"अपने इल्म की बिना पर। हमारे संगीत–भवन के भापाजी भी एक रहनुमा हैं। मगर वे कहते हैं कि वे पैगम्बर नहीं हैं।"

इस वक्त बाहर बैठक से नौकर आया और बोला, "अब्बाजान आये हैं उनके साथ एक और साहब हैं। अब्बाजान ने कहा है कि रहमत उन दोनों के लिए चाय बनाकर ले आये। बिस्कुट वगैरा खाने के लिए भी लेती आये।"

माँ समझ गई कि रहमत से शादी की ख्वाहिश करने वाला आया है। उसने उठते हुए कहा, "चलो रहमत! जरा कपड़े बदल लो। तब तक मैं चाय बनवाती हूँ।"

"कपड़े बदलने की क्या जरूरत है? अभी तो अच्छे हैं।"

"नहीं, गन्दे हो गये हैं। जरा बाल भी सँवार लो। सब बिखर रहे हैं।"

यह कह माँ रसोई–घर की ओर चल पड़ी। लड़की माँ को जाते देखती रह गई। एकाएक उसकी भी समझ में आने लगा कि कदाचित् उसको देखने वाला कोई आया है। वह मन में विचार करती थी कि उसने अपने को दिखाने की इच्छा प्रकट की नहीं थी। उसने तो अपने से शादी का इरादा करने वाले को देखने की इच्छा की थी।

इस समय उसकी समझ में आ गया कि बिना अपने को दिखाये कैसे किसी को देख सकती है? इस निष्कर्ष पर पहुँच वह अपने को दिखाने का विचार करने लगी।

वह अपने कमरे में गई और सफेद धुले हुए सूती कपड़े पहन और जल से अपने सिर के बालों को बैठा, चाय ले जाने के लिए तैयार हो गई। माँ उसको ढूँढ़ती हुई उसके कमरे में आई तो उसको और भी साधारण कपड़े पहने हुए देख विस्मय से मुख देखती रह गई। उसने अचम्भे में पूछ लिया, "यह क्या किया है तुमने?"

"साफ धुले हुए कपड़े पहन लिए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पगली! वह तुमको देखने आया है, शादी के लिए।"

"शादी मुझसे करेगा या मेरे कपड़ों से?"

इतना कह वह चाय ले जाने को चल पड़ी। माँ मुख देखती रह गई। ट्रे में चाय, बिस्कुट, पेस्ट्री सजा कर रखी थी। प्याले आदि और दूध तथा चीनी के पौट भी थे। ये सब उठकर रहमत बैठक–घर में जा पहुँची।

रहमत का पिता एक युवक के साथ बातें कर रहा था। रहमत को आया देख मोहसिन खाँ ने कहा, "आओ बेटा, रहमत! इधर ले आओ।"

वह युवक एक सोफे पर बैठा था। मोहसिन कुर्सी पर था। दोनों के बीच एक तिपाई थी। रहमत ट्रे को एक तिपाई पर रख बैठने के लिए दूर रखी कुर्सी को लेने चली गई।

"रहमत! क्या जरूरत है उसकी। बहुत जगह है बैठने के लिये।"

इस पर भी रहमत कुर्सी ले आई और उस पर बैठ चाय के बर्तन लगाने लगी। जब वह बर्तन लगा रही थी तो मोहसिन खाँ ने लड़की का परिचय करा दिया, "यह है मेरी एक ही लड़की रहमत। इसका भाई यासीन विलायत गया हुआ है। वह वहाँ वकालत कर रहा है।

"और रहमत! ये हैं ख्वाजा इब्राहीम खाँ के बड़े सुपुत्र ख्वाजा रुस्तम खाँ।"

इस परिचय के समय रहमत ने रुस्तम की ओर देखा। दोनों की आँखें मिलीं और रहमत ने उसको अपने मन से अस्वीकार कर दिया। फिर वह तीन प्याले चाय बनाने लगी।

मोहसिन ने अपनी बात, जो वह रहमत के आने से पहले कर रहा था, जारी रखी। वह कह रहा था, "हमारे यहाँ यह कायदा है कि जब हमारी कोई सन्तान होती है तो हम उसको हजरत की दरगाह में ले जाते हैं और अगर उस वक्त हजरत खुद हाजिर हों तो वे खुद, नहीं तो उनके मीर हमारे बच्चों का नाम रख देते हैं। हम उनको अपना पीर–पैगम्बर मानते हैं। इससे जो नाम वे रख देते हैं, हम उसी नाम को मंजूर कर लेते हैं।

"वे सब नाम फारसी जबान में रखते हैं और इससे लोग हमको मुसलमान मानते हैं। हकीकत में हम न हिन्दू हैं न मुसलमान। हम आगाखानी हैं।"

रुस्तम खाँ ने बताया, "मेरे नाना आगाखानी थे और मेरे वालिद मुसलमान हैं। इससे माँ भी मुसलमान हो गई हैं और मैं तो मुसलमान हूँ ही। देखिये, इस्लाम एक समुद्र है। सब नदी–नाले उसमें आकर गिर जाते हैं और फिर सब उसमें ही मिल जाते हैं।"

मोहसिन का अपनी बात बताने का अभिप्राय यह था कि अगर शादी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसकी लड़की मुसलमान नहीं होगी। रुस्तम ने कहा था कि मुसलमान तो वे सब हैं ही। उनके नाम मुसलमानी हैं। मोहसिन ने नामों के फारसी जबान में होने का रहस्य बता दिया। इस पर रुस्तम ने अपनी माँ की बात बता दी।

इस समय रुस्तम के सामने चाय का प्याला रखते हुए रहमत ने कहा, "मगर समुद्र तो खारी होता है। उसका पानी किसी के पीने के काम नहीं आता। समुद्र के पानी से तो आब–पाशी भी नहीं की जा सकती।"

मोहसिन ने, जब से रहमत को संगीत–भवन में गाना सीखने के लिए भेजना शुरू किया था, वह युक्ति ऐसी करने लगी थी कि बात करने वाला निरुत्तर हो जाता था। इस दलील से जो रहमत ने दी, मोहसिन चित्त में बहुत प्रसन्न हुआ, परन्तु प्रत्यक्ष में वह चुप था और चाहता था कि रुस्तम इसका उत्तर दे। रुस्तम समुद्र की खूबियाँ बयान करना चाहता था, परन्तु उसको खारे पानी का खण्डन करने के लिए कुछ सूझ नहीं रहा था। रुस्तम ने यह कह कर बात टालनी चाही, "है तो पानी का सबसे बड़ा जखीरा। यह बड़ा होना ही इसकी सबसे बड़ी सिफ्त है।"

"पर हजरत!" रहमत ने तुरन्त उत्तर दिया, "भूसा अधिक होता है और मतलब का अनाज बहुत कम। आम में गुठली अधिक वजन की होती है, और खाने वाला गूदा कम। इसी तरह दुनिया में घटिया, गुनाहगार और बेवकूफों की तादाद बहुत ज्यादा होती है और अक्लमन्दों और नेक आदमियों की बहुत कम। इससे तादाद या मिकदार से ज्यादा होना किसी के अच्छा होने की सिफ्त नहीं है।

"देखिये जी!" रहमत ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "हिन्दू लोग गंगा का जल इसके बम्बे से जाकर लाते और पीते हैं। इसका जल दहाने अथवा समुद्र से लाकर कोई नहीं पीता। वहाँ पर यह गँदा और पीने के नाकाबिल होता है।

"खुदा ने सूर्य बनाया है, जो समुद्र के जल को भाप बनाकर ऊपर खींच लेता है। यह शुद्ध जल होता है। खुदा इसको फिर पहाड़ों की चोटियों पर ले जाकर लोगों के पीने के लिए फेंक देता है। उससे इन्सान को राहत मिलती है।

"इसी तरह इस्लाम में दुनिया–भर के नदी–नाले गिर रहे हैं। सब दुनिया की गलाजत उसमें जमा हो रही है। हमको साफ–सुथरा जल लेने के लिए पहाड़ों की चोटियों पर जाना चाहिये, जहाँ खुदा गन्दे समुद्र में से खालिस जल कशीद कर लाकर देता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वह पहाड़ों की चोटियाँ कहाँ हैं?" रुस्तम खाँ ने निरुत्तर होते हुए पूछ लिया।

यह सब युक्ति रामरक्खामल्ल की सुनाई हुई थी। इस प्रश्न का उत्तर भी उसी ने दिया हुआ था। वही उत्तर रहमत ने देते हुए कहा, "दुनिया के आगाज में खुदाबन्द करीम से बिलकुल खालिस इल्म इन्सान को दिया था, यही वह खालिस जल है, जो वक्त गुजरने पर इनसानी गन्दगी को लेता हुआ बहता चला आता है। वक्त के साथ-साथ वह गन्दा होता हुआ चला आ रहा है। दहाने के करीब नदी जैसे गँदली और गन्दी होती है, उसी तरह वे मजहब जो पीछे बने हैं, अपने में बहुत कूड़ा-करकट रखते हैं। हम वहाँ से जल पीकर बीमार हो जाते हैं। इसलिए इन्सान को तन्दुरुस्त रहने के लिए मजहबों के आगाजों पर जाना चाहिये।"

"वह कहाँ है?"

"देखिये, हजरत मुहम्मद से पहले हजरत ईसा हुए। इससे पहले मूसा हुए। मूसा से पहले कई पीर-पैगम्बर हो चुके हैं। इससे पहले एक पैगम्बर हुआ था। वह ब्रह्मा था। उसका मजहब उस शुद्ध पवित्र जल की तरह है, जैसा गंगाजल गंगोत्री पर है।"

"मोहसिन खाँ!" रुस्तम ने कुछ आवेश में कह दिया, "आपकी लड़की तो काफिर हो गई है।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि हम मुसलमान नहीं हैं। अगर एक गैर-मुसलमान की लड़की से शादी कर सकते हो तो बात हो सकती है।"

"और हजरत! मैं यही तो कह रहा था कि समुद्र में सब नदी-नाले आकर समा जाते हैं।"

"और मैं कह रही हूँ।" रहमत ने कह दिया, "कि मैं नदी-नाला नहीं हूँ। नदी नाले हैं मुख्तलिफ मजहब। या यह कहिये मुख्तलिफ पीर-पैगम्बरों के ख्यालात बदलते जमाने में गँदले होते चले आ रहे हैं। मैं तो उस मजहब के जल से गुसल करना चाहती हूँ, जो दुनिया के आगाज में था।

"इस्लाम तो तेरह सौ वर्ष से ही पैदा हुआ है। इसके बाद भी कई मजहब हुए हैं। इनके गँदले जल को लेना नहीं चाहती।"

"लेकिन क्या सबूत है कि जिसको तुम पाक-साफ समझ रही हो, वह इससे भी ज्यादा गँदा और गँदला नहीं है?"

"यह तो दोनों के पानी का सैम्पल लेकर टैस्ट करने से पता चलेगा। देखिए, मेरे पास उस पानी का नमूना है जो दुनिया के आगाज में खुदावन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीम ने दिया था। सुनेंगे आप?''

"हाँ, सुनाइए।''

रहमत ने नित्य के पाठ का पहला मंत्र सुना दिया–

"ॐ ईशा वास्यमिद ७ सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

"खुदा, जो कुछ इस 'यूनिवर्स' में चल रहा है अथवा ठहरा हुआ है हम सब में मौजूद है और उस पर छाया हुआ है। वह सबको देख रहा है, सब की सुन रहा है और सब के मन की बात को जान रहा है। इसलिए किसी चीज को, जो तुम्हारी अपनी नहीं, मत लेने की ख्वाहिश करो।

"यह एक नमूना है उस पाक–साफ पानी का, जो खुदा ने दुनिया के आगाज में हमको दिया था। और इस्लाम ने भी एक हिदायत दी है। हदीस का यह कहना है कि जो मुहम्मद साहब पर ईमान नहीं लाते वे काफिर हैं और काफिरों का माल, जन छीन लेना हलाल है।

"यह है नमूना इस्लाम का। बताइए, समझ में आई?''

रुस्तम उठ खड़ा हुआ और यह कह, "मोहसिन खाँ! आपने अपनी लड़की किसी आर्य–समाजी के हवाले कर रखी है। मैं इससे शादी नहीं कर सकता।'' वह बैठक–पर से बाहर निकल गया।

: 2 :

रुस्तम के चले जाने के बाद मोहसिन अपनी लड़की का मुख देखता रह गया। लड़की ने कहा, "अब्बाजान! आपने तो चाय पी ही नहीं?''

"मैं तुम्हारी बातें सुनता रह गया था। अगरचे मुझको ये पसन्द नहीं। इस पर भी तुमने कमाल की दलील दी है। वह लाजवाब हो गया है।''

रहमत ने एक प्याला गरमा–गरम चाय बना दी और अपने पिताजी को देते हुए कहा, "पर अब्बाजान! यह मुझसे शादी की ख्वाहिश क्यों करने लगा था?''

"बात यह है कि पिछले पखवाड़े में तुम्हारे संगीत–भवन में यह अपने एक मित्र के साथ चला गया था। वहाँ तुमने गाना गाया था। तुम्हारे गाने पर मस्त हो इसने तुमसे शादी का इरादा किया था। मैंने इसके सामने दो शर्तें रखी थीं। एक तो यह कि तुम आगाखानी रहोगी और दूसरी यह कि जब तक तुम उसे पसन्द नहीं कर लेतीं, शादी नहीं हो सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज यह तुमसे मंजूर होने के लिए खूब बन–ठन कर आया था।"

"तो ठीक हुआ। अब्बाजान! मैं इससे शादी नहीं करना चाहती थी।"

"क्यों? तुमने इसको कहीं देखा था?"

"नहीं। आज भापाजी ने नजूम लगाया था कि मेरी शादी पर विचार हो रहा है मगर शादी यहाँ नहीं होगी। होगी भी तो वह देर तक कायम नहीं रह सकेगी।"

"तो तुम्हारे भापा नजूमी हैं?"

"उन्होंने मेरी एक सहेली के मुताल्लिक यह नजूम लगाया है कि वह गाने की पढ़ाई तो मुकम्मल नहीं कर सकेगी। वह किसी के इश्क में फँस विलायत चली जायेगी। वहाँ वह बहुत नाम कमायेगी। वहाँ से बहुत–सा धन जमा कर वह हिन्दुस्तान में आएगी। यहाँ लोग उसका बहुत सत्कार करेंगे। मगर उसका खाविन्द उससे नाराज रहने लगेगा और आखिर में तलाक होगा और फिर उसकी जिन्दगी आराम की और खुशी की होगी।"

"तो तुम्हारे मुताल्लिक और क्या कहा है?"

"बस, यही कहा है कि मेरा विवाह यहाँ नहीं होगा।"

"मगर मेरे पास एक और तजवीज है तुम्हारे लिए।"

"क्या?"

"सर आगा खाँ के भाई, जो इस समय मीर का काम कर रहे हैं, उनका लड़का लियाकत तुमसे शादी करने का ख्वाहिशमन्द है।"

"और वह मुझको कैसे जानता है?"

"यह तो मैंने पूछा नहीं। कहो तो इसके मुताल्लिक बातचीत करूँ?"

"मैं उससे मिल कर और बातचीत कर ही फैसला करूँगी।"

"तो बात करूँगा?"

इस घटना के दो सप्ताह बाद मोहिसन खाँ ने रहमत को कह दिया, "लियाकत अली खाँ आज छः बजे चाय पर आयेगा। इसलिए तुम भवन से सीधी यहाँ चली आना।"

"अच्छी बात।" रहमत ने कह दिया।

"यह याद रखना कि इसको तुम दलीलों से मत भगा देना। यह रुस्तम से कहीं अच्छा आदमी है।"

रहमत ने जवाब नहीं दिया और संगीत–भवन को चली गई। आज फिर वह सरस्वती को लेकर बड़े भापा के कमरे के बाहर जा भीतर जाने की स्वीकृति माँगने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल राधा से बातचीत कर रहा था। उसने इन दोनों को भी भीतर बुला लिया। जब ये आकर बैठीं तो रामरक्खामल्ल ने राधा से कह दिया, "ये दोनों मेरी नवीन शिष्याएँ हैं। तुम भी इनके संशय और समाधान सुनती जाओ।"

राधा उठती–उठती बैठ गई। ये दोनों राधा से भी बहुत कुछ पूछती रहती थीं। इससे वह इस वार्तालाप में रुचि अनुभव करने लगी थी।

रहमत ने बैठते ही बताया, "भापा ! आपका कहना ठीक निकला। जिससे मेरी शादी का विचार किया जा रहा था, वह मेरी एक ही बात करने से भाग खड़ा हुआ। जाते हुए वह फतवा दे गया कि मेरे पिता ने मुझे किसी आर्य–समाजी के हाथ में दे रखा है।"

रामरक्खामल्ल की हँसी निकल गई। रहमत भी हँस रही थी। हँस कर उसने वह पूर्ण वार्तालाप जो उसके और रुस्तम खाँ के मध्य हुआ था, सुना दिया। इस पर रामरक्खामल्ल ने कहा, "परन्तु तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध तो हो रहा है।"

"हाँ, वालिद शरीफ अब एक और से बातचीत कर रहे हैं। वह हमारे मीर साहब के भाई का लड़का है। कहीं उसकी नजर मुझ पर पड़ गई है। आज वह मुझसे मुलाकात करने आ रहा है।"

"तुम्हारा इससे विवाह होगा और तुम फिर बादलों के पीछे छिप जाओगी।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि वह तुमको अपने हरम में ले जाकर रखेगा। वहाँ तुम बाहर के संसार से ओझल हो जाओगी।"

"अर्थात् मैं पर्दे में डाल दी जाऊँगी?"

"हाँ। यों तो उस पर्दे के पीछे भी एक छोटी–सी अपनी दुनिया होगी। परन्तु तुम्हारा ताल्लुक बाहर से नहीं रहेगा।"

"यह मेरे लिए अच्छा होगा अथवा बुरा?"

"संसार में दो राहें हैं। एक को श्रेय की राह कहते हैं और दूसरी को प्रेय की राह कहते हैं। एक खुदा की राह है और दूसरी दुनियादारी है। खुदा की राह फीकी, मगर बहुत ही अच्छे नतीजे (अन्त) वाली है। दुनिया की राह निहायत दिलचस्प और सुख देने वाली है। मगर इसका नतीजा अच्छा नहीं होता।

"तुम्हारे लिए यह विवाह प्रेय का मार्ग होता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मुझको यह रास्ता नहीं पकड़ना चाहिए?"

"मैंने यह नहीं कहा। प्रेय का रास्ता तो सबके सामने खुला है। इस दुनिया में आकर तो दुनियादारी छोड़ी नहीं जा सकती। इसलिए इस पर चलते हुए भी श्रेय की राह पर चला जा सकता है। मेरा कहने का मतलब यह है कि तुम्हारा होने वाला खाविन्द तुमको श्रेय की राह पर ले जाने का विचार नहीं रखता। मगर तुम यदि चाहो तो इस राह पर चलती हुई श्रेय की राह भी पकड़ सकती हो।"

"वह कैसे?"

"प्रेय के मार्ग में जो कुछ आये, उसे स्वीकार करते हुए उसमें लिप्त न हो जाओ। मसलन बिजली के पंखे हैं, गद्देदार पलंग हैं, मखमली कालीन हैं और दूसरे ऐशो–इशरत के सामान हैं। इनका भोग करते हुए खुद इनकी भुक्त न बन जाओ। यह न हो कि तुम इन चीजों की गुलाम बन जाओ। अपने अन्दर हमेशा ऐसी काबलियत बनाये रखो कि इनको छोड़ते समय इनके जाने का दुःख न हो। ये जिन्दगी का मकसद न बन जायें।

"जिन्दगी का मकसद श्रेय–मार्ग है, जो दुनियादारी से दूसरा है। दुनियादारी पर चलता हुआ उसमें लीन होकर श्रेय–मार्ग को भूल न जाने में ही इस जिन्दगी की कामयाबी है।"

"और वह राह कौन–सी है?"

"वह है जिन्दगी को 'यज्ञ' रूप बना देने की। यज्ञ के अर्थ हैं–खल्के खुदा को सुख और आराम पहुँचाना। हमारी भाषा में इसके लिए एक लफज है 'लोक–कल्याण'। धन–दौलत को अपने निर्वाह के लिए अपने पर प्रयोग कर बाकी सब–का–सब दूसरों के सुख और आराम के लिए खर्च कर देना यज्ञमय जीवन कहलाता है।

"रुपया, मकान, वस्त्र, सामान और फिर जिस्मानी और दिमागी ताकत, सब अपनी जायदाद है। इसका अपने सुख और आराम के लिए इस्तेमाल कर बकाया दूसरों के सुख और आराम के लिए इस्तेमाल करना श्रेय का मार्ग है।

"अपनी जरूरियात इतनी बनानी चाहिए, जितनी से हम दूसरों के लिए ज्यादा–से–ज्यादा निकाल सकें।"

जब रामरक्खामल्ल ने अपना कहना समाप्त किया तो रहमत ने गम्भीर भाव धारण कर पूछा, "क्या मैं ऐसा कर सकूँगी"

"यह मैं नहीं बता सकता। इन्सान अपने अमालों का मालिक है। वह राह जानता हुआ भी उस पर चल नहीं सकता। कभी चलना नहीं चाहता। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी–अपनी तबियत और हिम्मत पर दारोमदार रखता है।

"मसलन एक शख्स की जेब में पाँच रुपये हैं। वह अपने दिन–भर का खर्चा आठ आने में भी चला सकता है और पाँच रुपये में भी उसका खर्चा पूरा नहीं हो सकता। वह कितना दूसरों के लिए बचाता है, उसकी काबलियत और हिम्मत पर है।"

"आप मुझको क्या राय देते हैं?"

"मैंने राय दे दी है। मैंने उसको समझाने की कोशिश भी की है। अब इसको समझ अमल में लाना तुम्हारा काम है।"

"मगर, यह तो कोई मुसलमान रहता हुआ भी कर सकता है। इसमें हिन्दू की बात कहाँ रह गई?"

"तुम्हें हिन्दू बन कर क्या करना है?"

"मेरे बुजुर्ग हिन्दू थे। वे आगाखानी इसलिए बने थे कि एक आगाखान ने उनको मुश्किल में राहत बख्शी थी। इस पर भी हम मुसलमान नहीं हुए। हम उनके, जिन्होंने हमको राहत दी थी, एहसानमन्द थे और हैं। अब जमाना बदल रहा है। हमारे समुदाय में एक तरफ होने की बात हो रही है। मेरे बालिद और अम्मी फैसला नहीं कर सकते। इस पर भी वे सोचते हैं और मैं भी सोचती हूँ।"

"मैंने जो कुछ तुमको बताया है वह उस अमृत–जल में से एक घूँट है, जो इस दुनिया के आगाज (आरम्भ) में परमात्मा ने नौ–इन्सान (मनुष्य मात्र) के लिए दिया था।

"यह हिन्दूपन हो भी सकता है। हिन्दू इस इल्म को अपना कहते हैं। यह उनका नहीं भी हो सकता। क्योंकि अक्सर हिन्दू इस पर अमल नहीं करते। हिन्दू इस पर अमल करने या न करने से नहीं होता। हिन्दू तो इस मुल्क को अपना मानने वाले को कहते हैं। जो इस मुल्क को अपना नहीं मानता; जो इस मुल्क की भाषा, वेश और तहजीब को अपना नहीं मानता, वह हिन्दू नहीं। जो मानता है, वह हिन्दू है।"

"तो हम क्या हैं?"

"तुम रहमत हो। यह तो फारसी का लफज है। हिन्दुस्तानी भाषा का नहीं। तुम साड़ी–जम्पर पहनती हो। यह हिन्दुस्तानी है। तुम एक परमात्मा को मानती हो और उसके हर शै और शख्स में हाजर–नाजर समझती हो। इसलिए तुम हिन्दुस्तानी, मेरा मतलब है, हिन्दू हो।

"अगर तुम रहमत के स्थान पर अपना नाम दयावती रख लो तो बिल्कुल हिन्दू हो जाओगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''क्या तब भी मैं आगाखानी रह सकूँगी?''

''यह तो तुम आगाखान साहब से पता करो। हमारे लिए तो तुम अब अभी भी, जब रहमत हो, हिन्दू हो और रह सकती हो। हिन्दू बनने के लिए तो सिर्फ इस मुल्क के साथ और इसकी हर शै के साथ मुहब्बत रखने की शर्त है।''

रहमत और सरस्वती आज इतना कुछ सुन कर गईं कि उसको हजम करने में उनको बहुत मेहनत करनी पड़ी। सरस्वती के कमरे में जाकर रहमत ने कह दिया, ''मैं आज गाने के अभ्यास के लिए नहीं जा रही।''

''क्यों?''

''मेरा होने वाला खाविन्द आज मुझसे मुलाकात करने के लिए आ रहा है। मुझे फैसला करना है कि मुझे उसकी बीवी बनना है या नहीं। इसके लिए भापाजी ने मेरे सामने एक नई दुनिया खोल दी और मैं उससे चकाचौंध हुई राह नहीं पा रही। मैं शाम के पहले–पहले अपने लिए राह ढूँढ़ने की कोशिश करना चाहती हूँ। इसके लिए तन्हाई की जरूरत है। सो मैं आज अभी अपने घर जा रही हूँ।''

: 3 :

जब सरस्वती और रहमत रामरक्खामल्ल के कमरे से निकल गईं तो राधा ने कह दिया, ''आपने बहुत बड़ी डोज (औषधि की मात्रा) इसको दे दी है। मुझको डर है कि यह इस सब को हजम नहीं कर सकेगी।''

''मैं इससे कम अथवा अधिक कर नहीं सका। यह इसके भाग्य की बात है कि यह इससे कुछ लाभ उठायेगी अथवा नहीं। आज इसके जीवन का काँटा बदलने वाला है; इसके भाग्य में तो लिखा है कि यह बादलों के पीछे छिप जायेगी। मगर राधा! मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। यह क्या करेगी? देखने की बात है।''

राधा अपनी परेशानी लेकर आई हुई थी। उसने बताया था कि उसका लड़का सन्तोष उससे पूछ रहा है कि वह हिन्दू है या मुसलमान? अभी तो उसने उसे टाल दिया है मगर वह उसको अधिक काल तक टाल नहीं सकेगी। रामरक्खामल्ल का कहना था कि झूठ नहीं बोलना चाहिये। मगर उसको उतना ही बताना चाहिए जितना समझने की उसमें योग्यता हो।

सन्तोष के मन में सरस्वती के नाम बदलने पर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हुई थी। उसको अपने लाहौर के जीवन का एक धुँधला–सा चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण हो आया था। एक छोटा–सा मकान था। उसमें एक आदमी और एक औरत तथा औरत के दो बच्चे रहते थे। वह औरत उससे खूब काम लेती थी और उसको खाने के लिए दूसरे बच्चों से कम देती थी। उसको याद आ रहा था कि औरत का नाम अम्मी था और उस आदमी का नाम शमशाद खाँ था। कुछ लोग घर पर आया करते थे और उस आदमी को प्रोफेसर साहब कह कर पुकारा करते थे।

उसको इस चित्र से कुछ अधिक स्पष्ट वह चित्र स्मरण था, जब एक मकान के बैठकखाने में वह आदमी उसको एक अन्य औरत के साथ लेकर आये थे और उसकी मौजूदा मम्मी भी वहाँ आ गई थीं। बहुत बातें हुई थीं, जिसका अर्थ वह समझ नहीं सका था। मम्मी और अब्बाजान में झगड़ा हुआ था। माताजी ने कहा था, 'समद! चलोगे मेरे साथ बम्बई को?' समद को मम्मी बहुत अच्छी, उसके वस्त्र और भूषण बहुत बढ़िया लगे थे और बम्बई की बात ने फैसला कर दिया था। उसने कह दिया था, 'मैं बम्बई चलूँगा।'

इस पर वह औरत और आदमी, जिनको वह अम्मी और अब्बाजान कहा करता था, उठकर चले गये। उनके साथ वह औरत भी चली गई थी, जिसको वह दादी कहा करता था।

इससे स्पष्ट दृश्य उसकी दादी का बम्बई आना और उससे मिलने का था। उसने सन्तोष को छाती से लगाकर बहुत प्यार किया था। फिर उससे किसी प्रकार की बात न कर दादी ने उसकी माताजी तथा भापाजी से बातचीत की थी।

सन्तोष इन सब चित्रों में एक सूत्र ढूँढ़ रहा था और पा नहीं रहा था नसीरा से सरस्वती हुई तो उसको याद आ गया कि वह भी समद से सन्तोष बन गया था। यही बात थी जिससे वह अपनी भूतकाल की स्मृतियों को समझाने का यत्न करने लगा था और उनका वर्तमान के साथ सम्बन्ध जानने का यत्न करना चाहता था।

आज सन्तोष रत्नलाल के साथ प्रातः का भ्रमण कर लौटा तो मम्मी से पूछने लगा, कि उसका नाम समद क्यों नहीं और सन्तोष क्यों है?

राधा इस प्रश्न पर विस्मय से सन्तोष का मुख देखती रह गई। कुछ देर विचार कर बात टालने के लिए उसने कह दिया, "अभी प्रार्थना और पढ़ाई का समय हो रहा है। तुम्हारा पढ़ने का और मेरा पढ़ाने का। रात को याद कराना। मैं तुमको समझाऊँगी।"

सन्तोष मान गया और स्नानादि के लिए चला गया। राधा इस समय

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने संगीत का अभ्यास किया करती थी। उसने नित्य की भाँति पाँच बजे से अभ्यास आरम्भ किया था और अब साढ़े सात बज रहे थे। और पन्द्रह मिनट में उसको तैयार होकर प्रार्थना के लिए जाना था। आज उसने पन्द्रह मिनट पहले ही तानपूरा रख दिया और सन्तोष के प्रश्न पर विचार करती हुई अपने शयनागार में वस्त्र बदलने चली गई।

मध्याह्न के भोजन के बाद उसने सन्तोष का प्रश्न रामरक्खामल्ल के सामने रख कर पूछ लिया, "क्या उत्तर दूँ?"

"वही जो इसका उत्तर है।"

"उसको उसका पूर्व इतिहास बताना पड़ेगा।"

"बता देना। सत्य–सत्य। परन्तु उतना जितना समझने की उसकी योग्यता होगी।"

इसी समय रहमत और सरस्वती आ गई थीं। राधा सुन रही थी और उसके मन में रहमत के विषय में और अधिक जानने की लालसा जाग पड़ी थी। वह रामरक्खामल्ल के कमरे से निकली तो सरस्वती अपनी शिक्षा के लिए तैयार खड़ी थी। राधा ने पूछ लिया, "रहमत नीचे अभ्यास के लिए गई?"

"नहीं, वह अपने घर चली गई है।"

"क्यों?"

"आज उसकी परीक्षा होने वाली है। वह अपनी परीक्षा की तैयारी में चिन्तन करने के लिर एकान्त की खोज में गई है।"

"मैं उसको कहने आई थी कि उसको अपने को ईश्वरार्पण कर देना चाहिए।"

"आज तो वह अपने को अपने खाविन्द के अर्पण करने गई है।"

राधा मुस्कराई तो सरस्वती हँस पड़ी। दोनों नीचे की मंजिल पर चली गईं। कुछ दिन से एक शेवड़े नाम के संगीतज्ञ उन दोनों को सप्ताह में तीन दिन संगीत सिखाने आया करते थे। आज उनके आने का दिन था।

रत्नलाल और सन्तोष का भी कार्यक्रम ऐसा बनाया हुआ था कि उनको दिन से लेकर सायं पाँच बजे तक सिर खुजलाने की फुरसत नहीं होती थी। इस समय वे सायं की चाय पीकर समुद्रतट अथवा किसी उद्यान में भ्रमण के लिये जाया करते थे। उनके साथ प्रायः लेखवती अथवा राधा होती थी। कभी–कभी सरस्वती भी होती थी। साढ़े पाँच बजे से साढ़े सात बजे तक घूमने के बाद आकर वे भोजन करते और तदनन्तर दस बजे तक वे भापाजी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बड़ी माताजी (लेखवती) और मम्मी (राधा) से बातें किया करते थे। फिर दस बजे सो जाते थे।

आज जब सब लोग भोजनोपरान्त रामरक्खामल्ल के कमरे में पहुँचे तो बात राधा ने ही आरम्भ कर दी। उसने कहा, ''भापाजी! सन्तोष पूछ रहा है कि उसका नाम समद था। वह किसलिए बदल कर संतोष किया गया है?''

''ओह! तो तुमको याद है कि तुम्हारा नाम समद था?''

''जी! हम सरला दादी के घर पर गये थे और वहीं यह परिवर्तन हुआ था। अब नसीरा को सरस्वती-होते देखा है। इसी से अम्मा से पूछ रहा था कि ऐसा क्यों हुआ?''

''तो सरस्वती से नहीं पूछा?''

''पूछा था। उसने तो यह बताया है कि वह हिन्दू हो गयी है। इस कारण नाम बदल लिया है। इससे मैं विचार करता हूँ कि मैंने और मम्मी ने भी हिन्दू होने से नाम बदला है क्या? हम कभी हिन्दू नहीं भी थे?''

''हाँ!'' रामरक्खामल्ल ने उत्तर दिया, ''जैसे नसीरा हिन्दू नहीं थी, इसी तरह तुम्हारी मम्मी और तुम भी कभी हिन्दू नहीं थे।

''नसीरा क्या थी, हम नहीं जानते। मगर तुम और तुम्हारी मम्मी तो हिन्दू होने से पहले मुसलमान थे।''

''हिन्दू कैसे होते हैं?''

''हिन्दू हिन्दुस्तान के बाशिन्दे को कहते हैं। जो व्यक्ति अपने को हिन्दुस्तान का रहने वाला समझे, इस देश की भलाई में अपनी भलाई माने और इसकी भलाई में अपना सर्वस्व भी बलिदान करने को तैयार हो जाये, वह हिन्दू होता है। जो यहाँ का रहने वाला हिन्दुस्तान की भाषा, वेशभूषा और भावना का आदर करता है तथा उसको स्वीकार करता है, वह हिन्दू है।

''तुम्हारी मम्मी और नसीरा ने यह समझ लिया है। इसलिए वे हिन्दू हो गई हैं। अपनी मम्मी के बेटे होने से तुम भी हिन्दू हो गये हो। जब ये हिन्दू हुई तो पहली बात इन्होंने यह की कि अपना नाम, जो विदेशी भाषा में था, बदल कर हिन्दुस्तानी भाषा का नाम रख लिया। तुम्हारा नाम भी फारसी भाषा का था। इसलिये वह भी हमने हिंदुस्तानी भाषा, जो आजकल तुम सीख रहे हो, में रख दिया है।''

''तो क्या मुसलमान हिन्दुस्तान के बाशिन्दे नहीं?''

''यह तो वे बतायेंगे। जब तुम बड़े हो जाओगे तो किसी पढ़े–लिखे मुसलमान से पूछना कि वह अपना नाम फारसी में क्यों रखे हुए है? क्या वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारस का रहने वाला है? फिर वह हिन्दुस्तान की भलाई के लिए क्या त्याग करने को तैयार है? एक मुसलमान का वेश भी वह नहीं जो हिन्दुस्तान के लोगों का है। अक्सर मुसलमान तुर्की टोपी पहनते हैं। क्या वे तुर्किस्तान के रहने वाले हैं? उनकी भावना भी हिन्दुस्तानी नहीं है। यह तुम अभी समझ नहीं सकते। इस पर भी एक मिसाल तुमको सुनाता हूँ।

"तुम्हारी मम्मी को तुम्हारे वालिद ने अकारण घर से निकाल दिया था। वह समझता था कि उसकी गरीबी का कारण तुम्हारी मम्मी है। यह बात गलत थी। गरीबी का असल कारण यह था कि तुम्हारे वालिद ने दो विवाह कर लिए थे। वे दो पत्नियों का खर्चा नहीं चला सके। तुम्हारी दूसरी माँ पीछे आई थी और तुम्हारी माँ से अधिक सुन्दर थी। इस कारण उसने तुम्हारी मम्मी को घर से निकाल दिया।

"तुम्हारी मम्मी वहाँ से बम्बई चली आई। यहाँ वह रुक्मिणी देवी और सरलादेवी से मिली और उन्होंने तुम्हारी मम्मी को संगीत–विद्या सिखाई और थिएटर में काम करना सिखाया। सरला के पति मिस्टर वर्मा का थिएटर था और तुम्हारी मम्मी उसमें नौकर हो गई। पीछे वह थिएटर खटाऊजी ने खरीद लिया। तुम्हारी मम्मी उसमें काम करती रही।

"रुक्मिणी और सरला की संगति से तुम्हारी मम्मी हिन्दू हो गई और इसने अपना नाम नासिरा से राधा रख लिया। यह इसने स्वेच्छा से रक्खा था। एक बार यह थिएटर के साथ लाहौर गई। वहाँ तुम्हरे वालिद साहब ने इसे देख लिया। तब तक यह अमीर हो चुकी थी। तुम्हारे वालिद ने इसको उसके घर में जाकर रहने को कहा। यह मानी नहीं।

"इसके न मानने का कारण था कि वहाँ रहकर यह थिएटर का काम नहीं कर सकती थी। साथ ही यह हिन्दू बन उसके घर में रह नहीं सकती थी। वह अपने को मुसलमान मानता था और हिन्दू को दुश्मन समझता था।

"तुमने अपनी मम्मी के साथ बम्बई आना चाहा तो उसने तुमको भी निकाल दिया। इसके बाद उसने तुम्हारी मम्मी का कत्ल करने के लिए हत्यारा भेजा। हत्यारे ने हत्या करने के लिए तुम्हारी मम्मी पर छुरी चलाई। भाग्य से निशाना चूक गया और तुम्हारी मम्मी बच गई। हत्यारा और तुम्हारे वालिद हत्या करने का यत्न करने के अपराध में पकड़े गये और दण्ड पा गये। दो वर्ष की कैद भुगत कर वे अब छूटे हैं। इस समय वे अपने गाँव में रहते हैं।"

"भापा! ये वही थे जो प्रोफेसर थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ! लाहौर में इस्लामिया कॉलेज में पढ़ाते थे। ये लोग अपना मजहब ही अपनी कौमियत समझते हैं। अर्थात् इस्लाम ही उनकी राष्ट्रीयता है।"

इसका परिणाम यह हुआ कि सन्तोष को विचार करने की एक दिशा मिल गई। साथ ही उसकी यह भी समझ में आ गया कि मम्मी से पूछने के स्थान भापाजी से पूछना ठीक रहेगा। संस्कृत पढ़ने से उसमें भारत और भारतीयता का समावेश हो रहा था। उसके विचार का ढंग भी दूसरों से विलक्षण होता जाता था।

उस दिन तो उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका समाधान हो गया है। उसकी माँ राधा ही ठीक है और वह सन्तोष ही ठीक है। परन्तु मानसिक विकास के साथ–साथ उसके मन में अन्य प्रश्न उठने लगे और उन प्रश्नों में से कई थे, जिनको वह स्वयं समझ नहीं सकता था। अतः दूसरे–तीसरे दिन वह कोई–न–कोई नया प्रश्न लेकर भापाजी के पास आ जाता और पूछ लेता।

एक सायंकाल भोजनोपरान्त उसने पूछ लिया, "भापा! जब हिन्दू हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं तो मुसलमान नहीं हैं क्या!"

"हमने तो यह कह दिया है कि मुसलमान भी हिन्दुस्तान के बाशिन्दे हो सकते हैं। वे अपने नाम हिन्दुस्तानी जबानी में रखें। पोशाक हिन्दुस्तानी पहनें और भावना हिन्दुस्तानी रखें। वे फारसी भाषा और अरबी भाषा में नाम रखते हैं। वे हिन्दुस्तान की जबान हिन्दी को पढ़ने की जगह अरबी और फारसी पढ़ते हैं। वे तुर्की टोपी पहनते हैं और हिन्दुस्तान में बहुसंख्यक हिन्दुओं से घृणा करते हैं।"

"क्यों?"

"इसलिए कि उनकी वफादारी हिन्दुस्तान के स्थान अरब, तुर्की और फारस से है।"

"तो फिर क्या किया जाय?"

"उनके ये गलत ख्याल बदले जायें। जब उनकी समझ में आ जायेगा कि वे गलती पर हैं तो वे रहीम खाँ से रामदीन हो जायेंगे। उनकी वफादारी तुर्की की जगह पर हिन्दुस्तान से हो जायेगी।"

"प्रश्न तो यह है कि तब तक उनका क्या किया जाय?"

"अभी तो हिन्दू स्वयं परतन्त्र हैं। इस देश में अंग्रेज का राज्य है। अंग्रेज के आने से पहले हिन्दू और मुसलमान यहाँ राज्य पाने के लिए परस्पर प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। इस बीच में यहाँ अंग्रेज पहुँचे। उन्होंने इनकी लड़ाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का लाभ उठाया और अपना राज्य जमा लिया।

"जब तक ये अंग्रेज हैं, हिन्दू–मुसलमान का परस्पर का मतभेद मिट नहीं सकता। मुसलमानों को समझाने में अंग्रेज बाधा बने हुए हैं।"

"ऐसा नहीं हो सकता कि हिन्दू–मुसलमान परस्पर मिल जायें और अंग्रेजों से लड़ कर उन्हें निकाल दें।"

"हो सकता है। इसमें शर्त यह है कि अंग्रेजों को निकालने में उद्देश्य एक हो। हिन्दू और मुसलमान हिन्दुस्तान को आजाद कर परस्पर मिलकर न्याय का राज्य बनाने का उद्देश्य बना लें तो मेल–मिलाप हो सकता है।"

"तो क्या हिन्दू–मुसलमान इस बात में सहमत नहीं हैं?"

"नहीं! बाईस वर्ष हो गये हैं कांग्रेस को बने हुए। कांग्रेस भारत में रहने वाले सब समुदायों की संस्था है। इस पर भी मुसलमान इसमें आने से संकोच करते हैं। अब मुसलमानों ने एक नई संस्था बनाने का आयोजन किया है। उसमें केवल मुसलमान ही आ सकेंगे। गैर–मुसलमान उसमें सम्मिलित नहीं हो सकेंगे।"

"भापा! ये ऐसा क्यों करते हैं?"

"केवल इसलिए कि वे हिन्दू को अपने बराबर नहीं समझते। वे उसको अपने अधीन रखने का विचार रखते हैं।"

पुनः बात यहाँ समाप्त हो गई। सन्तोष इससे अधिक पूछ नहीं सका।

: 4 :

कला के लौट आने का समाचार उसके माता–पिता को भी मिला। कमला और मास्टर दूनीचन्द उससे मिलने आए। उनके आने से कला को प्रसन्नता नहीं हुई। उसके विचारों में भारी अन्तर आ चुका था।

कला के घर से भागने के पूर्व भी कला के माता–पिता उसे इस ग्वाल मंडी वाले मकान में मिलने आया करते थे। वे अपनी लड़की को मुहल्ले के स्त्री–पुरुषों में नेत्री बनी विचरती देख अपनी शिक्षा–दीक्षा पर गर्व किया करते थे। उनका विचार था कि श्यामनारायण के मित्रों की, उसकी बैठक में नित्य होने वाली गोष्ठी की सफलता उनकी लड़की पर ही निर्भर है। यह बात बहुत सीमा तक ठीक भी थी। परन्तु वे भावी दुर्घटना के परिणामों का अनुमान नहीं लगा सके थे। उस समय कला भी अपने काम को देख मन में फूली नहीं समाया करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय भी कमला और दूनीचन्द में लड़की के व्यवहार पर मतभेद था। कमला समझती थी कि यह सामाजिक जीवन ठीक है, परन्तु यह भयावह भी है। लड़की का पतन भी हो सकता है। अतः जब मास्टर लड़की की पीठ ठोका करता था, कमला उसको जीवन के भय से सचेत और सतर्क किया करती थी। कभी–कभी तो कला अपनी माता की चेतावनियों से ऊब जाती थी और उसको डाँट भी दिया करती थी।

परन्तु अब परिस्थिति बदल गई थी। अब वह समझती थी कि उसके पतन का उसके मन में बीजारोपण, उसके माता–पिता के जीवन में ही हुआ था। अतः वह उनके मिलने के लिए आने पर प्रसन्न नहीं हुई।

कला ने काला चश्मा पहना हुआ था। माँ ने आवाज दी, "कला!"

उसने कह दिया, "माँ! आओ बैठो।"

कला ने एक बार चश्मा उतार अपनी माता की ओर देखा। उन्होंने भी उसकी आँखों की कुरूपता देखी। वे स्तम्भित–से बैठे रह गए। कला ने पुनः चश्मा चढ़ा कर पूछ लिया, "माँ! ठीक हो?"

"हाँ बेटी!"

"पिताजी भी आए हैं क्या?"

इस पर मास्टरजी ने पूछ लिया, "कला, कहाँ रही हो इतने दिन?"

"नरक में।"

माँ ने पूछ लिया, "वहाँ गई क्यों थी?"

"जो जहाँ के योग्य होता है, वहीं पहुँच जाता है।"

"तुमको तो मैंने कई बार कहा था कि तुम फिसलनी भूमि पर चल रही हो। पति का आश्रय नहीं छोड़ना। छोड़ा तो नरक–कुण्ड में गिरना ही था।"

"माँ, मुझको तुम्हारी चेतावनी स्मरण है, परन्तु अपने पढ़े–लिखे विद्वान् पिता की बात पर अधिक विश्वास था। वे कहा करते थे कि मेरे व्यवहार को देख वे गर्व से फूले नहीं समाते। मैं इस प्रशंसा पर फूली नहीं समाई और लम्बी–लम्बी छलाँगें लगाने लगी। एक बार फिसली तो उस गन्दगी के कुण्ड से इधर रुक ही नहीं सकी।"

दूनीचन्द ने कह दिया, "फिर भी तुम्हारे बचकर आ जाने पर मुझको प्रसन्नता ही हुई है। मैं तो अभी भी यही समझता हूँ कि यह मेरी शिक्षा–दीक्षा का ही फल है, जो तुम उस नरक–कुण्ड से निकल आई हो।"

"हाँ, यह गर्व करने की बात तो है। परन्तु इसका श्रेय न तो आप को है, न ही आपकी शिक्षा–दीक्षा को।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला ने अपनी पूर्ण कथा, सविस्तार वर्णन कर दी। वृत्तान्त के अन्त में उसने कह दिया, "पिताजी! आपकी लड़की कला रानी का तो देहान्त हो गया समझना चाहिए। यह कला तो किसी अन्य की कृपा का फल है।

"यदि आप अब यहाँ न आया करें तो क्या ठीक नहीं? पराई लड़की के घर आप–जैसे पुरुष का आना तो लोक–निन्दा का कारण हो जाएगा।"

"तो अब तुम अपने पति की मित्र–मंडली में नहीं जातीं?"

"यहाँ आये एक सप्ताह हो चुका है। वहाँ जाने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। वे लोग कभी–कभी ऊपर आकर नमस्कार कर जाया करते हैं। धीरे–धीरे उनका आना भी कम होता जाता है। मुझको अब उनकी बातें और व्यवहार निकृष्ट प्रतीत होने लगे हैं।"

दूनीचन्द ने कह दिया, "यह उस दुःख और कष्ट की प्रतिक्रिया ही है। शीघ्र ही ठीक हो जाओगी। साहस से काम लो। यह तो ठीक है कि अब तुम वह जीवन न तो ला सकती हो, न ही उसका रसास्वादन कर सकती हो। इस पर भी एक नवीन जीवन की सृष्टि तो हो ही सकती है। प्रकृति अति प्रबल है। वह अपना मार्ग बना ही लेती है।"

"अच्छी बात है। आप जा सकते हैं। मैं प्रकृति के मार्ग में बाधा नहीं बन रही। मैं आपसे पुनः आग्रह करती हूँ कि आप इधर न आया करें। माँ! यदि पिताजी के बिना आ सको तो आ जाया करो।"

कला का मुख क्रोध से लाल हो रहा था। कमला ने बात बदलते हुए कहा, "जब तक नौकरानी नहीं मिल जाती, तब तक नित्य आने का विचार करके आई थी। कुछ तो सहायता मैं कर ही सकूँगी।"

"नहीं, माँ! कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। बहन सोहनी आ जाती है और अब मैं, धीरे–धीरे अपना बोझा ढोने का ढंग सीख रही हूँ।"

"सोहनी कौन है?"

"यह बैठी है। भैया साधुराम की विधवा बहन है। इसको मुझ पर दया आ गई है और इसके सहारे जीवन की कठिन घड़ियाँ सरल हो रही हैं।"

कमला ने सोहनी की ओर देखा। युवा, सुन्दर और ओजस्वी मुख को देख कमला गम्भीर विचार में डूब गई। फिर अपने व्यवहार को संयत करते हुए बोली, "सोहनी बेटी! मैं तुम्हारी बहुत ही कृतज्ञ हूँ। हम जीवन–भर तुम्हारे आभारी रहेंगे।"

"माँ जी!" सोहनी ने कह दिया, "आप चिन्ता न करें। जीवन होता ही कितना है। पलक की झपक में व्यतीत हो जाएगा। बाल्यकाल, यौवन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बुढ़ापा और बस फिर समाप्त।"

"अच्छा, समाचार लेती रहूँगी। वसन्त को हमारा घर बता देना। कभी आवश्यकता पड़े तो उसके द्वारा बुलाने में सुविधा रहेगी।"

पति–पत्नी दोनों अपनी लड़की की दयनीय अवस्था पर विचार करते हुए अपने घर को लौट पड़े। दोनों अपने–अपने विचारों में लीन जा रहे थे। कमला विचार कर रही थी कि कैसे निकल सकेगा कला का जीवन! दूनीचन्द विचार कर रहा था कि श्याम ने सोहनी को कला के पास रखकर अच्छा नहीं किया। सोहनी से सम्बन्ध बना तो दोनों के बीच कला चक्की के पाटों में आ जाने की भाँति पिस जाएगी। किसी दिन भी ये कला की हत्या कर उसको श्मशान–भूमि में जला आयेंगे।

इस पर भी उसका विचार था कि प्रकृति अपना मार्ग बना रही है। दीन–हीन दीवार की ओर धकेले जा रहे हैं। योग्य और सबल फल–फूल रहे हैं।

कला ने सोहनी को बताया कि क्यों वह अपने पिता से इतनी नाराज है। कला ने कहा, "वे नास्तिक हैं। समझते हैं कि इस संसार में प्रकृति ही जीवन धारण कर पैदा होती और मरती है। प्रकृति अपना मार्ग बनाती है और इस मार्ग में बाधक बनना अपने को तबाह कर लेना है।

"इसके विपरीत भापाजी ने मुझको दूसरा मार्ग बताया है। उनका कहना है कि इस सृष्टि का नियन्ता परमात्मा है। मनुष्य की आत्मा परमात्मा से पृथक् है। वह कर्म करता है और फल भोगता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र है।

"दोनों बातों में आकाश–पाताल का अन्तर है। मुझको भापाजी की बात ठीक प्रतीत हुई है। पिताजी अभी भी प्रकृति की डीग हाँक रहे थे। इससे मेरी रुचि उनसे मिलने की नहीं होती।"

समय व्यतीत हो रहा था और सोहनी अब कभी–कभी रात को भी कला के पास रह जाती थी। वह समझने लगी थी कि जीवन कर्मक्षेत्र है। और साधुराम के घर में उसके करने को कुछ काम नहीं, श्याम भैया के घर में सेवा करने का क्षेत्र खुल गया है। यहाँ उसके चित्त को अधिक शान्ति मिलती थी।

प्रातःकाल से रात के सोने तक कला और श्याम बाबू के घर के काम में वह लगी रहती थी। कला स्नानादि से निवृत्त हो पूजा पर बैठती तो वह उसके साथ आ बैठती। श्याम तो रात को उपन्यास पढ़ता–पढ़ता देर तक जागता रहता था। अतः वह प्रातः उठ नहीं सकता था। उसके उठने तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनी और कला पूजा–पाठ से निपट अल्पाहार भी तैयार कर लेती थीं।

गरमियों में सायंकाल और सर्दियों में दोपहर के समय सोहनी कला को घुमाने भी ले जाती थी। सफाई इत्यादि तो वसन्ता करता था, परन्तु सोहनी कला को वस्त्र, अनाज इत्यादि बाजार से खरीदने और घूमने के लिए जाने में सहायता कर रही थी।

सोहनी के दिन–रात श्याम के घर में रहने की प्रतिक्रिया मुहल्ले में पुनः होने लगी थी। लोग पुनः उसकी निन्दा करने लगे थे। वासुदेव इस निन्दा का केन्द्र था। वह यह तो समझ गया था कि श्याम बाबू की गोष्ठी तुड़वाने से भी सोहनी और श्याम का सम्बन्ध टूटेगा नहीं। इससे उसने गोष्ठी का विचार छोड़, मुहल्ले वालों में उत्तेजना उत्पन्न करनी आरम्भ कर दी।

जब निन्दा होने लगी तो गोष्ठी के भीतर और बाहर श्याम और सोहिनी के सहायकों की आत्मा दुर्बल पड़ने लगी। इस निन्दा का प्रभाव सबसे पहले साधुराम की पत्नी इन्द्रकौर पर हुआ। उसने अपने पति को बताया, "देखो जी! सोहनी के श्याम बाबू के घर दिन–रात रहने पर तो मुहल्ले की औरतों ने नाक में दम कर दिया है।"

"क्या कहती हैं?"

"कहती हैं कि आप अपनी बहन से पेशा करवाते हैं।"

"तुम यह सत्य मानती हो क्या?"

"मैं तुम्हारे विषय में तो बात झूठ समझती हूँ। परन्तु सोहनी का व्यवहार भी तो समझ में नहीं आता। वह खाना वहीं खाती है। वस्त्र वहाँ से पाती है। यहाँ तक कि अब हमारे घर से साबुन, तेल, कंघी, जूता तक भी तो नहीं लेती। मैं कभी विचार करती हूँ कि श्याम बाबू क्या यह सब उसको व्यर्थ में देता है?"

"मैं भी तो उसको यह सब कुछ देता था। मैं उससे क्या लेता था?"

"वह आपकी बहन है। बहन को भाई देते ही हैं।"

"माँ–जाई तो थी नहीं। रिश्ते में मौसी की लड़की थी। माँ की बूआ की लड़की की लड़की। श्याम ने भी उसको बहन मान रखा है और वह उसी भाव में देता है।"

"इस पर भी लोक–लाज की बात तो है ही।"

"देखो रानी! तुम कहती तो ठीक हो, पर मैं उसको कुछ कह नहीं सकता। एक दिन मैंने उससे लोक–लाज की बात कही थी। उसने कह दिया, भैया! तुम ठीक कहते हो। जब तक मैं तुम्हारे घर में रहती हूँ, मेरी बदनामी तुम्हारी बदनामी है। इस कारण मैं, तुम और अपने में पृथकत्व उत्पन्न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूँगी। इसके बाद उसने बिलकुल ही श्याम बाबू के घर में रहना आरम्भ कर दिया है। उसने मुझसे एक पैसे की भी सहायता लेनी छोड़ दी है।''

''इससे तो बदनामी और भी बढ़ गई है। अब भी वह दिन के समय दोपहर को ही आती है।''

''कहूँगा तो वह दोपहर के समय भी आना बन्द कर देगी। फिर क्या करोगी? देखो इन्द्र! वह वयस्क युवती है। अपने कामों की वह स्वयं उत्तरदायिनी है। मेरी सगी बहन भी होती तो भी मैं उसको मना नहीं कर सकता था।''

''आप भाई–बहनों की बुद्धि विलक्षण है। परन्तु मेरी लड़कियाँ और लड़का है। मुझे उनके विवाह करने हैं। इस बदनामी की अवस्था में तो उनकी ओर कोई देखेगा भी नहीं।''

''तो क्या चाहती हो?''

''मैं चाहती हूँ कि उसको कह दो कि इस घर में आकर रहे। मित्र–गोष्ठी में जाना बन्द कर दे। यहाँ आराम से जीवन व्यतीत करे। यदि यह विधवा का जीवन खलने लगा है तो कहीं विवाह कर भली औरतों की भाँति रहे।''

''तो ऐसा करो। इस बार तुम ही उसको समझाकर देख लो। यदि न मानी तो फिर हमको क्या करना चाहिए, यह भी विचार कर लेना।''

''उस अवस्था में हमको यह मुहल्ला छोड़ कहीं अन्यत्र चल कर रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नहीं।''

साधुराम हँस पड़ा। उसने कहा, ''भूत से डरो तो वह लाठी ले सिर पर सवार हो जाता है और उसको आँखें दिखाओ तो वह भाग खड़ा होता है।''

''ठीक है, परन्तु जहाँ आँख दिखाने की शक्ति न हो तो भूत वाला घर ही छोड़ नहीं देना चाहिए क्या?''

साधुराम ने कह दिया, ''अच्छा उससे बात कर लो फिर विचार कर लेंगे।''

साधुराम, यद्यपि सोहनी को निर्दोष समझता था, इस पर भी उसने उससे लगभग सम्बन्ध तोड़ा हुआ था। अब वह श्यामबाबू की बैठक में भी नहीं जाता था।

मध्याह्नोत्तर सोहनी प्रायः अपनी भाभी से मिलने आया करती थी। उस समय साधुराम भी घर पर होता था। इन्द्रकौर ने बात आरम्भ कर दी। साधुराम अपने कमरे में सो रहा था।

इन्द्रकौर ने कहा, ''सोहनी! मुहल्ले की कुछ स्त्रियाँ आई थीं और कहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं कि तुमको अपने घर में ही रहना चाहिए। श्यामनारायण से अधिक मेल–मुलाकात नहीं रखनी चाहिए। उसकी पत्नी आ गई है और किसी बाहरी व्यक्ति को, विशेष रूप से किसी स्त्री को पति–पत्नी के पास जाकर नहीं बैठना चाहिये।''

''भाभी! मुहल्ले वाले क्या कहते हैं और क्या नहीं कहते, इसकी मुझको चिन्ता नहीं। एक तो वे लोग मुझसे बात करते नहीं। श्यामबाबू कहते–कहते थक गये हैं तो एक ओर कला को और दूसरी ओर तुमको भड़काने लगे हैं। मुझसे कहते तो मैं समझा देती। छिपकर बात करने वालों से क्या कहूँ? अब तुम उनकी बात कहती हो तो बताओ तुम मुझमें क्या चाहते हो?''

''मैं भी वही कहती हूँ जो वे कहती हैं।''

''क्यों?''

''इसलिए कि वह पराया आदमी है। उसके साथ एकान्त वास से बदनामी होती है।''

''एकान्तवास तो अनेक से होता है। भाई–बहन में भी होता है। पिता–पुत्री में भी होता है।''

''पराये आदमी से एकान्तवास में सम्भोग भी सम्मिलित माना जाता है।''

''भाभी! सम्भोग तो लुक–छिपकर भी हो जाता है। इसके लिए किसी के घर में जाकर रहने की क्या आवश्यकता है? तुम्हारे घर में रहती हुई भी यह कर सकती हूँ।''

''परन्तु सोहनी! तुम कर सकती हो अथवा नहीं, एक तो तुम मानोगी कि निन्दा के लिए सत्यता में दोष होने की आवश्यकता नहीं। दोषी होने का भास ही पर्याप्त है। मैं तो उस भास से बचने की बात कह रही हूँ। नेकी करनी ही पर्याप्त नहीं। इसके साथ नेक नाम होना भी आवश्यक है।''

''भाभी! निराधार होने वाली बदनामी की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। केवल बदनामी–मात्र से डरने लगे तो स्वतन्त्र, स्वाभिमान का जीवन दूभर हो जायेगा।

''इसी से मैं पूछ रही हूँ कि तुम इस लोक–निन्दा में कुछ भी सच्चाई पाती हो?''

''मेरे सच्चाई के विषय में समझने अथवा कहने का प्रश्न नहीं। बात है समाज की। हमें समाज में रहना है तो समाज की सम्मति का आदर भी करना होगा।''

''तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमको अपना जीवन समाज की निराधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारणाओं पर चलाना है। भाभी! यह बहुत बड़ी बात है। मुझको इस पर विचार करने का अवसर दो। मैं एक–दो दिन में निर्णय कर दूँगी कि मुझको क्या करना चाहिये।

"मैं यह जानती हूँ कि मैं कुछ भी धर्म–विरुद्ध नहीं कर रही। यह समाज की अनधिकार चेष्टा है कि वह मूर्खता से मेरा मार्ग–दर्शन कर रहा है। मेरे लिए समस्या यह उत्पन्न हो गई है कि मैं समाज से विद्रोह करूँ अथवा उसकी अनुचित बात को मान लूँ।

"यदि मैं श्याम बाबू को भाई के स्थान पति मान कर विवाह कर लेती तो समाज प्रसन्न था। अर्थात् भाई के सम्बन्ध से पति का सम्बन्ध अधिक पवित्र हो गया। समाज की यह अनर्गल बात मैं मानूँ अथवा नहीं, इस पर विचार करूँगी।

"अच्छा भाभी! अब मैं जा रही हूँ। भैया से मिल नहीं सकी। फिर मिलूँगी।"

"हाँ, विचार करते समय यह भी देख लेना कि हमारा तुम से सम्बन्ध होने से तुम्हारी बदनामी हमारे और फिर हमारे बच्चों के भविष्य को भी दूषित कर सकती है।"

: 5 :

विचार के लिए दो–तीन दिन की अवधि माँगने का उद्देश्य यह था कि वह श्याम तथा कला से भी विचार करना चाहती थी। समाज से विद्रोह में उनके सहयोग की अत्यंत आवश्यकता थी। वह इस विषय में अपने को श्याम बाबू की नौका में बैठी अनुभव करती थी। बिना उनके सहयोग के वह कैसे इस नौका को इस समाज के तूफान में ले जा सकती थी?

मुहल्ले की स्त्रियाँ कला को भी भड़काने आया करती थीं। कला को उन स्त्रियों के कहने पर विश्वास नहीं आ रहा था। वह उनको मूर्ख और ईर्ष्यालु समझती थी। इस पर भी उसके विचार करने का ढंग अब वह नहीं रहा था, जो बम्बई जाने से पूर्व था। यदि यह परिस्थिति तब होती तो वह मुहल्ले वालों को दो–चार सुनाती और उनको कह देती कि वे मूर्ख हैं। परन्तु अब सोहनी का सहयोग उसको सुख और सुविधाकारक हो रहा था। इस कारण अब सोहनी को किसी कारण से भी अपने साथ बाँध, बदनाम होने देना उसको अपना स्वार्थ प्रतीत हुआ था। यह वह अपने मन की वर्तमान परिस्थिति में स्वीकार नहीं कर सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तक तो वह यह समझ रही थी कि सोहनी उसके पति की निन्दा का ही कारण बनी है। पति उसको अपनी इच्छा से लेकर आया था। इस कारण उसकी बदनामी की उसे चिन्ता नहीं थी।

उसको लाहौर आये छः मास होने जा रहे थे और यह सोहनी की पहली समस्या थी, जब उसके कारण एक तीसरा प्राणी बदनाम किया जा रहा था। अतः सोहनी की अपनी इच्छा जाननी अत्यावश्यक थी।

सोहनी की इच्छा जानने से पूर्व उसने अपने पति से बात कर लेनी उचित समझी। उसने अपने पति से एक दिन बात कर दी। रविवार का दिन था, पति घर पर था और सोहनी मध्याह्न के समय अपने भाई और भाभी से मिलने गयी हुई थी श्यामनारायण बैठक में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था कि कला दीवारों को टटोलती हुई वहाँ आ पहुँची। श्याम समझ गया कि वह किसी प्रयोजन से आयी है। उसने पुस्तक रख दी और उसकी बाँह पकड़कर अपने समीप बैठाकर पूछ लिया, "क्या कहने आई हो, कला !"

"जी, मैं आई हूँ कि सोहनी की अनुपस्थिति में एक बात करूँ।"

"बताओ।"

"मुझको कुछ ऐसा अनुभव हो रहा है कि आपके और सोहनी के विषय में चर्चा फिर जोरों पर है।"

"यह मैं भी सुन रहा हूँ। तुमको किसने कहा है?"

"वसन्ता नित्य, कोई–न–कोई बात बता जाता है।"

"देखो कला! मैंने सोहनी के भाई द्वारा सोहनी से विवाह का प्रस्ताव किया था। उसके उत्तर में उसने मुझको भाई दूज के दिन टीका लगा दिया था। मैंने अपने मन से वह विचार निकाल दिया है। इस पर भी लोगों के हमारे वर्तमान सम्बन्ध का विश्वास नहीं आता तो क्या किया जाये? मैं तो दोषी नहीं हूँ।"

"मेरा कहना यह है कि मुझको सोहनी के यहाँ रहने से बहुत सुख मिल रहा है। आपके लिए भी उसका यहाँ रहना सरस ही प्रतीत होता है। उसके यहाँ रहने से हमारा स्वार्थ सिद्ध हो रहा है। अपने स्वार्थ के लिए हमारा उसे बाँध कर रखना ठीक नहीं होगा। इस कारण यदि उसके मन में, इस बदनामी से भयभीत, किंचित् भी हमसे पृथक् होने का विचार हो तो हमको इसमें उसे प्रोत्साहन ही देना चाहिए। उसको यह विश्वास हो जाना चाहिए कि उसके हमसे पृथक् होने पर भी हमारी कृतज्ञता उसके प्रति वैसी ही बनी रहेगी जैसी अब है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कला! तुम उसको जानती नहीं। तभी ऐसा कह रही हो। वास्तव में वह साधारण हिन्दू स्त्रियों से विलक्षण है। अदम्य साहस और विशाल हृदय की वह स्वामिनी है। मैं जानता हूँ कि वह तब तक यहाँ से नहीं जायेगी जब तक हम उसको यहाँ से चले जाने को नहीं कह देंगे।

"इस पर भी तुम उससे बात कर लो। इतना मैं तुम से कहूँगा कि तुम्हारी निन्दा तो होती नहीं। निन्दा होती है मेरी और सोहनी की। इस कारण तुमको तो केवल उसे सतर्क ही करना चाहिए। उसको कोई आदेशात्मक बात नहीं कहनी चाहिए। हममें यह प्रकट नहीं करना चाहिए कि यदि वह लोक–निन्दा का विरोध करना चाहती है, तो हम उससे कन्धे–से–कन्धा भिड़ाकर उसके साथ खड़े होने को तैयार नहीं। उसके मन में अपनी भीरुता का भास कराना भी भारी कृतघ्नता होगी।"

श्यामनारायण के इस प्रकार कहने पर कला डर गई और इच्छा रहते भी वह सोहनी को कुछ कह नहीं सकी। इस पर भी वह अब अपना जीवन सरलतापूर्वक चलाने का यत्न करने लगी थी।

इन्हीं विचारों पर सप्ताह–पर–सप्ताह व्यतीत हो रहे थे। घर से बाहर मुहल्ले में तूफान उग्र हो रहा था। श्याम ने अपनी समस्या रामरक्खामल्ल को भी लिखी थी। उसमें उसने सोहनी का पूर्ण इतिहास और अपने साथ सम्बन्ध का उल्लेख भी कर दिया था।

एक दिन सोहनी अपने भाई के घर से आई और कला के पास जा बैठी। उसने कला को सम्बोधन कर पूछा, "कला भाभी! लोग मेरी निन्दा करते हैं। वे मुझको तुम्हारी सौतन विख्यात कर रहे हैं। क्या तुम भी यही समझती हो?"

इस प्रकार बात आरम्भ होती देख, कला ने सुख की साँस ली। अब उसको अपने मन की बात कहने का अवसर मिल गया। उसने कह दिया, "सोहनी बहन! मुझको तो ऐसी कोई बात नहीं लगती। ऐसा समझने में कोई कारण भी नहीं। इस पर भी प्रश्न यह नहीं कि मैं क्या समझती हूँ। प्रश्न यह है कि लोक–निन्दा सहने की तुम में कितनी क्षमता है?"

"क्या केवल मेरा ही प्रश्न है?"

"तुम्हारे साथ तुम्हारे भैया का प्रश्न है। मेरा मतलब है मधु के पिता का। मैंने उनसे पूछा था। वे कहने लगे कि जब सोहनी बहन यह सब कुछ सहन कर रही है तो क्या हमारा कर्तव्य नहीं कि हम उसके साथ कन्धे–से–कन्धा भिड़ाकर इस निन्दा को सहन करें।"

"और तुम अपने विषय में क्या समझती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो इस निन्दा में कहीं हूँ ही नहीं। साथ ही मैं तो स्वयं इतनी निन्दनीय हूँ कि उससे अधिक मेरी निन्दा कोई कर सकता ही नहीं।"

"परन्तु तुम अपने पति की निंदा से क्रुद्ध नहीं हो क्या?"

"क्रोध किस पर करूँ? पति तो दोषी है नहीं। बहन सोहनी भी दोषी नहीं। जो दोषी हैं, वे मेरे अधीन नहीं। साथ ही वे अनभिज्ञ लोग दया के पात्र ही तो हैं।

"हाँ कभी–कभी साधुराम भैया का विचार आता है। उनको इससे दुःख होता होगा। उनके तीन बच्चे भी हैं। दो लड़कियाँ हैं। एक तो एक–दो वर्ष में विवाहने योग्य हो रही है। उनमें इस निन्दा को सहन करने की कितनी सामर्थ्य है, मैं जानती नहीं।"

यही बात तो सोहनी को उसकी भाभी इन्द्रकौर ने कही थी। अतः इस प्रश्न के यहाँ भी उपस्थित होने पर सोहनी ने कहा, "यह तो मैं जान गई कि तुम मुझ में और भैया श्याम में किसी प्रकार का निन्दनीय सम्बन्ध नहीं मानतीं। परन्तु तुम यह बताओ कि मुहल्ले में चल रही निन्दा के होते हुए तुम मुझको इस घर में रख सकोगी अथवा मेरा यहाँ से चला जाना पसन्द करोगी?"

"जब मैं यह जानती हूँ कि तुम्हारे और मधु के पिता का बहन–भाई का सम्बन्ध है तो मुझको विधवा बहन का भाई के घर में रहना बुरा लग सकता ही नहीं। यह तो बहन! तुम बताओ, तुम इस निन्दा की अवहेलना कर यहाँ रहने का हठ क्यों कर रही हो?"

"मेरे इस हठ में कई कारण हैं। मैं अपने मन में मनन कर निश्चय करूँगी कि वर्तमान परिस्थिति में मेरे लिए क्या ठीक है। मैं कला बहन के घर में रहती हूँ, उसका अन्न खाती हूँ। उसके घर से कपड़े पहनती हूँ और कुछ रुपये भी लेती रहती हूँ। इस सबके प्रतिकार में मैं उसकी बदनामी में कारण बन रही हूँ। मैं यह जानना चाहती थी कि कला बहन तो मुझको विवाह कर कहीं जीवन में स्थिर होने की राय नहीं दे रही?

"एक बार भैया साधुराम ने मुझ से कहा था कि मैं नौकरी कर लूँ। मैंने दूसरा भाई बनाने का निश्चय कर लिया। फिर उसने मुझको कहा कि मैं विवाह कर लूँ, तो मैंने यह समझा कि वह मेरा बोझा सहन करते–करते थक गया है। मैंने नये भाई के घर रहना आरम्भ कर दिया। अतः मेरे लिए यह जानना आवश्यक हो गया है कि क्या यह नया भाई भी इस बनाई बहन के बोझे से थक गया है? इस कारण भाभी से पूछ रही हूँ?"

"ऐसी कोई बात नहीं सोहनी! हम दोनों तो तुम्हारे अत्यन्त आभारी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम हमारे लिए बहुत कुछ कर रही हो। तुम हमारा विचार छोड़ो। अपने को ही दृष्टिगत रखकर इस समस्या पर विचार करो।''

''सत्य कहती हो भाभी!''

''हाँ, मेरी उनसे इस विषय पर बात हुई है और यह हम दोनों का मत है।''

''तो सुनो। मैं विवाह करना नहीं चाहती। मैं वह सुख अपने भाग्य में नहीं समझती। आज से कई वर्ष पूर्व की बात है। मैं राम द्वारे में भाभी इन्द्रकौर के साथ कथा सुनने गई थी। वहाँ कथा कहने वाले सीता महारानी को सती अनुसूया का उपदेश सुना रहे थे। सती अनुसूया ने बताया था कि एक गृहस्थी का मुख्य कार्य तो समाज–सेवा है। घर के वृद्ध–जनों का, घर के बाल–बच्चों का, समाज में ब्राह्मण, संन्यासी अपाहिजों और दीन–हीनों की सेवा करना एक गृहस्थी का मुख्य कार्य है। विषय–भोग तो अत्यन्त ही गौण बात है। केवल इसके लिए इस पवित्र आश्रम को समझ लेना तो मोती का काँच के मनके के समान मूल्य लगाना होगा।

''तब से ही मैं यह समझती थी कि मुझको दूसरे विवाह की आवश्यकता नहीं। विषय–वासना के अतिरिक्त गृहस्थ का कर्तव्य तो मैं पालन कर ही सकती हूँ। यह मैं भैया साधुराम के घर पर कर रही थी और अब भैया श्याम के घर पर करने लगी हूँ।''

उसी दिन श्याम से भी बात हो गयी। यह कला के सामने ही हुई। श्यामनारायण से भी वैसा ही आश्वासन पाकर, जैसा कला ने दिया था, सोहनी साधुराम से मिलने चली गई। मध्याह्न के समय अपने स्वभावानुभार ही वह वहाँ गई थी। उसने भैया और भाभी को बता दिया।

''भैया! छः वर्ष के लगभग मैं तुम्हारे आश्रय जीवन व्यतीत करती रही हूँ। इसके लिए मैं तुम्हरी आभारी हूँ। अब मैं इस घर से संबंध–विच्छेद कर रही हूँ। अब जो कोई मेरे विषय में तुमसे कुछ कहे तो तुम उसको कह देना कि लड़कियाँ ससुराल जाती हैं। जाने पर अपने माता–पिता का घर छोड़ देती हैं। सो कह देना मैं भी अपने बड़े भाई का घर छोड़ गई हूँ।''

इन्द्रकौर ने पूछ लिया, ''तो तुम अब श्याम बाबू से विवाह कर रही हो?''

''मैं माता–पिता के घर से जाकर क्या करती हूँ, माता–पिता नहीं पूछते।''

यह कह वह मुस्कराकर साधुराम का मुख देखने लगी। वह अपने कथन की प्रतिक्रिया उनके मन में देखना चाहती थी। साधुराम अवाक् बैठा रहा। साधुराम को चुप देख सोहनी वहाँ से उठी और चल दी।

साधुराम ने उसे गया देख, अपनी पत्नी से कहा, ''अब तो यह मुहल्ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
छोड़ देना चाहिए।'' दो–तीन दिन में ही उसने पुरानी अनारकली में एक मकान भाड़े पर ले लिया और यह मकान छोड़ कर चला गया।

साधुराम के एक दिन मुहल्ला छोड़ जाने पर तो मुहल्ले वालों को विश्वास हो गया कि उनका अनुमान, कि श्याम बाबू और सोहनी का घनिष्ठ सम्बन्ध है, ठीक है। इससे उत्साहित हो श्याम बाबू के घर के सामने ही मुहल्ले के कुछ वृद्ध–जनों ने रोष प्रकट किया और अगले दिन बैठक में मित्रगोष्ठी को उठवाने के लिए घर के बाहर धरना देना आरम्भ कर दिया।

उस दिन चिरंजीवलाल दफ्तर से आया तो श्याम बाबू के घर के बाहर दस–बारह आदमियों को बैठा देख, विस्मय में खड़ा रह गया। वह इसका अर्थ समझ नहीं सका। उसने एक से पूछा, ''लक्ष्मण जी! क्या बात है यहाँ?''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''हमने यह फैसला किया है कि इस बदमाशी के अड्डे को तोड़ कर रहेंगे।''

''किस बदमाशी के अड्डे को?''

''यहाँ जो क्लब लगती है।''

''भैया, यह क्लब नहीं है। कुछ मित्र सायंकाल घंटा–दो–घंटा इकट्ठे बैठ, दिल बहलाया करते हैं। भला इससे आपको क्या कष्ट होता है?''

''घर में अपनी पत्नियों के साथ दिल–बहलावा करो। न कि दूसरों की पत्नियों और बहनों के साथ। यह दिल–बहलावा नहीं होने देंगे।''

चिरंजीवलाल का मुख क्रोध से लाल हो गया। वह लक्ष्मण के मुख पर एक चपत लगाने की इच्छा करने लगा था। इस समय श्यामनारायण दफ्तर से आ गया। श्यामनारायण को लक्ष्मण ने कह दिया, ''श्याम बाबू! जाइये, आपको हम मना नहीं करेंगे।''

''और किसको मना कर रहे हो?''

''जो घर से बाहर के लोग आते हैं?''

''क्यों?''

''यह क्लब बदमाशी का गढ़ है।''

श्याम ने चिरंजीवलाल के मुख पर इस धींगामस्ती की प्रतिक्रिया देखी तो उसे धरना देने वालों से कुछ दूर ले जाकर कहा, ''भैया! मेरी इच्छा फौजदारी करने की नहीं है।''

''तो पुलिस में रिपोर्ट करोगे?''

''नहीं, यह भी नहीं।''

''तो इस जबरदस्ती को सहन करोगे?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं भैया! यह भी नहीं। मैं नरम घास की भाँति इस आँधी के सामने अस्थायी रूप में झुक जाऊँगा। जब आँधी निकल जायेगी, पुनः अपना व्यवहार अपनी इच्छा के अनुसार निश्चय करूँगा।"

"जानते हो! इस प्रयास में सफल हो ये क्या करेंगे? इन्होंने कल रात तुम्हारे मकान के बाहर खड़े हो तुम को गालियाँ दी थीं। तुम चुप रहे और आज से यह धरना देने बैठ गये हैं। इसमें सफल हो कल यह सोहनी को तुम्हारे घर में घुसने से मना करेंगे और तुमको विवश करेंगे कि तुम कला को घर से निकाल दो।"

"परन्तु भैया! फौजदारी और पुलिस में रिपोर्ट करने से लाभ कुछ नहीं होगा। दोनों बातों से हम स्वयं मूर्ख बनेंगे। मैंने इस सब सम्भावना का अनुमान लगा लिया है। सब देवताओं से मरुत देवता अधिक मूर्ख है। यह सब से पहले अपना बल प्रदर्शन करने के लिए तैयार रहता है। यह जनता का रोष आँधी की तरह का होता है। इसका प्रतिकार है, नरम घास की भाँति झुक जाना। यह रोष आँधी की भाँति शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा।"

"तो अब क्या करोगे।

"मैं सोहनी बहन और कला से राय कर निश्चय करूँगा।"

: 6 :

यह धरने की बात श्याम के मन में नहीं थी और उसने यह रामरक्खामल्ल को लिखी नहीं थी। आज रामरक्खामल्ल का उत्तर आया था और वह भापा के सुझाव और इस नई परिस्थिति पर कला और सोहनी से विचार करना चाहता था।

उसने ऊपर की मंजिल पर जा, कपड़े बदल, बैठक में सोहनी और कला को बुला कर कह दिया, "आज तो मुहल्ले के कुछ लोगों ने हमारे घर के बाहर धरना देना आरम्भ कर दिया है।"

"जी!" सोहनी ने उत्तर में कहा, "हमको वसन्ता ने पूर्ण परिस्थिति बताई है। वसन्ते के आने–जाने को उन्होंने रोका नहीं।"

"मुझको भी नहीं रोका। वे चिरंजीवलाल को नीचे की बैठक में आने से रोक रहे थे।

"पूर्व इसके कि हम इस परिस्थिति में कोई व्यवहार निश्चय करें मैं आप दोनों से राय करना चाहता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने यहाँ की अवस्था भापाजी को लिखी थी। उसमें धरना देने की बात तो लिखी नहीं, परन्तु उन्होंने इस बात का अनुमान अपने आप लगा लिया प्रतीत होता है।

"मैं तुम दोनों को भापाजी का पत्र सुनाता हूँ। उन्होंने लिखा है–

" 'बेटा श्याम! सोहनी वाली बात तुमने यहाँ रहते समय बताई नहीं थी। हाँ मैं कला के विषय में मुहल्ले वालों की, उसके प्रति घृणा का अनुमान लगा रहा था।

" 'श्याम! यह हिन्दू–समाज है। इसको अपने हित और अहित का ज्ञान नहीं रहा। जानते हो क्यों? इसमें ब्राह्मण–वर्ग सर्वथा लोप हो चुका है। प्राचीन काल में जब हिन्दू संसार–भर के नेता थे तब इसके सर्वश्रेष्ठ, त्यागी, तपस्वी, विद्वान् और अनुभवी लोग ब्राह्मण–वर्ग में होते थे और पूर्ण समाज उनके कथनानुसार अपना व्यवहार निश्चय करता था।

" 'एक समय आया, जब मूर्ख मीमांसकों ने युक्ति कर, दो सिद्धांत प्रतिपादित किये। एक यह कि कर्म बन्धन है। मोक्ष ज्ञान है। इन मीमांसकों की बात साहित्यकारों, कथाकारों और पुराण–लेखकों ने तोते की भाँति रटनी आरम्भ कर दी। परिणाम यह हुआ कि जाति के सब श्रेष्ठ त्यागी–तपस्वी अकर्मण्य होकर बैठ गये। उन्होंने ज्ञान में रत रहना ही मोक्ष–प्राप्ति के लिए पर्याप्त समझा। जन–साधारण का नेतृत्व विद्वान्, अनुभवी श्रेष्ठ वर्ग के हाथ से निकल कर मूर्खों के हाथ में आ गया।

" 'एक दूसरा सिद्धांत भी उन्होंने प्रतिपादित किया। जब जाति पर विपत्ति आती है, तब परमात्मा अवतार लेता है और मानव–संकट मिट जाता है। अतः जब–जब जाति पर विपत्ति आई, जाति के मूर्ख नेताओं ने मन्दिरों में घंटे बजाने आरम्भ कर दिए। इसका परिणाम हुआ है कि भीड़ के समय जाति बुद्धि और पौरुष से काम करने का अभ्यास ही छोड़ बैठी है।

" 'अतः तुम्हारे मुहल्ले के हिन्दू कला के मन की स्थिति जाने बिना उसका बहिष्कार करेंगे। ऐसा मेरा अनुमान था। अब यह मूर्खता का प्रहार सोहनी पर पड़ रहा है। सिद्धांत एक ही है। रूप भिन्न है। तुमको विदित है कि एक आर्य–समाजी को ब्रह्मनाल के शिवाले में पूजा के लिए जाने से मना करने वाले यही हिन्दू थे और उनके मनन करने की विधि वही थी जो एक स्त्री को भाई बनाकर उसके घर में रहने के स्थान, उसके घर में उसकी पत्नी बन रहने को पसन्द करते हैं।

" 'उस समय का मेरा व्यवहार ही तुम्हारी इस समस्या का सुझाव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुझको कुछ मित्र कह रहे थे कि मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँ अथवा स्वयं लड़कर फौजदारी कर लूँ।

" 'यह जनता का रोष एक आँधी के समान होता है। इसका मुकाबला सूखे पेड़ की भाँति अकड़ कर खड़े रहने से नहीं हो सकता। पेड़ आँधी में टूट कर गिर जाते हैं। परन्तु नरम घास समय पर झुक जाती है और अपने को बचा लेती है।

" 'मुख्य बात है अपना स्थान न छोड़ना। वह तो बड़े पेड़ की भाँति घास भी नहीं छोड़ती। परन्तु आँधी घास का कुछ बिगाड़ नहीं कर सकती और बड़े–बड़े पेड़ों को उखाड़ कर फेंक देती है।

" 'चाहे तो रिपोर्ट कर और चाहे फौजदारी कर, किसी भी प्रकार से अदालत में जाना लाभप्रद नहीं हो सकता। अदालतें हमारे सामाजिक विषयों में न्याय करने की योग्यता नहीं रखतीं।

" 'मेरा कहना है कि सोहनी को, वहाँ से कुछ दिन के लिए टल जाना चाहिये। यदि कहीं अन्यत्र स्थान नहीं हो तो उसको हमारे यहाँ भवन में भेज दो।

"मैंने यह योजना कला के लिए विचार की हुई थी, परन्तु बलि का बकरा कला के स्थान सोहनी बन गई है तो उसके स्थान पर सोहनी को ही आ जाना चाहिए।' "

भापाजी की चिट्ठी सुन सोहनी का मुख खिल उठा। भापाजी के संगीत–भवन की कला से वह बहुत बातें सुनती रही थी। इससे उसके मन में बम्बई जा, इस बुद्धिमान व्यक्ति के दर्शन की लालसा जाग पड़ी। उसने श्याम से पूछ लिया, "और भैया! तुम क्या कहते हो?"

"मैंने तो अब अपना पूर्ण जीवन भापाजी के अधीन कर रखा है।"

"तो मुझको वहाँ भेज दो।"

"तुम तैयार हो जाओ। किसी को बताना नहीं। मैं कल कार्यालय से बड़े भापा को तार दे दूँगा। तुम ताँगे में सवार हो साढ़े चार बजे मेरे कार्यालय में आ जाना। छः बजे गाड़ी छूटती है। मैं तुमको गाड़ी में चढ़ा आऊँगा और यहाँ किसी को पता नहीं चलेगा कि तुम कहाँ गई हो।"

"ठीक...।"

सोहनी अभी कह ही रही थी कि मकान के नीचे 'पकड़ो', 'मारो', 'मारो' का शोर सुनाई देने लगा। श्याम उठ कर भागता हुआ नीचे गया। उसका विचार था कि मित्र–गोष्ठी के कुछ लोग धरना देने वालों से झगड़ा कर बैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। कला और सोहनी खिड़की में जा खड़ी हुईं। कला देख नहीं सकती थी। परन्तु सोहनी देख रही थी। उसने बाजार में झाँककर देखा और बताया, "अरे! ये तो सदा, सोहन और मधु हैं।"

सोहनी ने भी एक छड़ी उठाई और भाग गई।

जब से कला बम्बई से आई थी, रामरक्खामल्ल सदानारायण को लिखता रहता था कि मधु का ध्यान रखे। रामरक्खामल्ल का विचार था कि मधु की संगति बिगड़नी नहीं चाहिए।

सदानारायण ने मधु को अपनी फुटबाल की टीम का सदस्य बना लिया था और मधु स्कूल से सीधा सदानारायण के घर चला जाता था। वहाँ से वे सोहनलाल को साथ ले परेड–ग्राउण्ड में खेलने चले जाया करते थे। वहाँ खेल कर वे कभी तो वहाँ से सदा के घर आते और अपने–अपने घर चले जाते और कभी तीनों मधु के घर पर कला भाभी से मिलने चले जाया करते थे।

सदा और सोहन दसवीं श्रेणी की परीक्षा दे चुके थे अभी उनका परीक्षा–फल घोषित नहीं हुआ था। इस पर भी वे फुटबाल खेलने जाते थे।

इस दिन सोहन पहले ही सदा के घर आया हुआ था। जुलाई का प्रथम सप्ताह था। आज गरमी बहुत थी, इस कारण सोहनलाल अपने घर बैठ न सकने के कारण पुस्तकें उठा सदा के घर आ गया। यह घर खुला और ठंडा था इस कारण यहाँ सदा के कमरे में बैठ पढ़ने अथवा सोने का सुभीता था।

वे काम कर अभी खाली ही हुए थे कि मधु आ गया। आते ही उसने बताया, "हमारे घर के नीचे मुहल्ले के बहुत से लोग इकट्ठे हो रहे हैं?"

"क्यों?"

मधु कारण नहीं जानता था। उसने कह दिया, "मैं जानता नहीं।"

सदा ने पूछ लिया, "वे क्या कर रहे हैं?"

"दरवाजे को चारों ओर से घेर कर बैठे हैं।"

"तो तुम कैसे आए हो?"

"मैं नीचे उतरा तो एक आदमी उठ गया। उसने मुझ को निकल जाने दिया। जब मैं उनके घेरे से बाहर निकला तो वह आदमी फिर घेरे में बैठ गया।"

सदा और सोहन विस्मय में एक–दूसरे का मुख देखते रह गये। वे इसका अर्थ नहीं समझ सके। सदा ने कुछ विचार कर मधु से पूछ लिया, "तुमने पूछा नहीं कि वे वहाँ क्यों बैठे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पूछा था। वही आदमी, जिसने मुझको मार्ग दिया था, डाँट कर कहा, 'भाग जाओ।' और मैं चला आया।"

"हमको वहाँ चलना चाहिए और पता करना चाहिए। वे अवश्य कला भाभी से झगड़ा करने के लिए बैठे होंगे।"

"माँ तो ऊपर बैठी थी। सोहनी बूआ भी वहीं थी। उनसे तो कोई कुछ कहता नहीं था।"

"अच्छा! अभी चलते हैं।" सदा ने कहा। तीनों ने स्नान किया। दूध की लस्सी पी और फुटबाल खेलने की पोशाक पहन चल पड़े।

ये अभी मकान से कुछ अन्तर पर ही थे कि वहाँ झगड़ा होता दिखाई दिया। एक स्त्री मकान के भीतर जाना चाहती थी और वहाँ बैठे धरना देने वाले पंजे डाल कर मकान के भीतर जाने का मार्ग रोके हुए थे। वह औरत उनको डाँट रही थी।

सदानारायण वहाँ गया तो उसने देखा कि वह स्त्री कला की माँ कमला थी। सदा ने वहाँ पहुँच कमला से पूछ लिया, "मौसी! क्या बात है?"

"यह मुझको भीतर जाने नहीं देता।"

सदा ने उस आदमी से पूछा, "क्यों जी, जाने क्यों नहीं देते?"

"तुम कौन हो पूछने वाले?"

सदानारायण ने इस प्रश्न के उत्तर में एक घूँसा उसकी कनपटी पर जमा दिया। धरना देने वाले के मुख से 'आ...' का शब्द निकला। अन्य धरना देने वाले उसको बचाने के लिए आगे बढ़े तो सोहन और मधु उन पर पिल पड़े। बस फिर क्या था, मुक्का–मुक्की होने लगी। कमला ने शोर मचा दिया, 'मारो, मारो।' वह सदानारायण को प्रोत्साहन दे रही थी। मधु घाटे में था। वह सब से छोटा था। सोहनलाल तीनों से प्रबल था। जब तक श्यामनारायण ऊपर से नीचे आया। सदा और सोहन ने तीन के दाँत किरकिरे कर दिये थे।

श्याम ने ऊँची आवाज में कहा, "ठहरो, ठहरो।" और पूर्व इसके सोहनी छड़ी लेकर ऊपर से नीचे आई, लड़ाई बन्द हो चुकी थी।

श्याम घायलों और सोहन तथा सदा के बीच खड़ा था।

सोहनी को छड़ी उठाये मारने के लिए तैयार, दरवाजे से निकलते देख धरना देने वाले एक ओर होकर खड़े हो गये। श्यामनारायण ने हाथ खड़ा कर सोहनी को प्रहार करने से रोक दिया।

श्यामनारायण ने सदा से पूछा, "क्या बात थी?"

सदा ने कहा, "भैया! ये मौसी को भीतर जाने नहीं देते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम बाहरी लोगों को भीतर जाने नहीं देंगे।" एक ने जिसके मुख से रक्त वह रहा था, कह दिया।

"भाई!" श्याम ने कह दिया, "ये तो कला की माताजी हैं। घर से बाहर की कैसे हो गईं?

"और यह मेरा छोटा भाई सदानारायण है।"

"इसने मेरी कनपटी फोड़ दी है। मैं तो इससे लड़ूँगा।" उसकी आँख के ऊपर मुक्का लगाने से सूजन आ गई थी।

"आओ, एक–एक कर लड़ लो।" सदा ने कमीज की बाहें ऊपर उठाते हुए लड़ने के लिए पैतरा बाँधते हुए कहा।

श्यामनारायण ने बात शान्त कर दी, "नहीं, लड़ाई नहीं होगी। यह लड़ाई भूल से हुई है। तुम नहीं जानते थे कि ये मेरी माताजी हैं और यह मेरा भाई है।"

इस समय चिरंजीवलाल और दूसरे लोग जो गोष्ठी में आया करते थे, एकत्रित हो गये। चिरंजीवलाल ने आगे बढ़कर कहा, "लड़ना चाहते हो तो लड़ लो। निश्चय जानो तुम सब पीटे जाओगे।"

श्यामनारायण पुनः सबको शान्त करते हुए मित्रों को बैठक में चलने के लिए कहने लगा और धरना देने वालों से बोला, "तुम अभी ठहरो। हम न तो पुलिस में रिपोर्ट करेंगे, न ही तुमसे लड़ेंगे। क्या करेंगे? अभी बताते हैं।"

इस समय व्यासदेव आ गया। यह धरना उसकी राय से नहीं हो रहा था। वह तो यह समझ चुका था कि मित्र–गोष्ठी टूट जाने पर भी सोहनी और श्याम का सम्बन्ध टूट नहीं सकता। उसका तो मुख्य उद्देश्य सोहनी का घर से निकलवाना था और वह समझता था कि यह तो निन्दा करने से ही हो सकेगा। इस कारण उसने भी धरना देने वालों को कहा, "फौजदारी नहीं होनी चाहिए।"

जो घायल हो गये थे, उनको ठंडे पानी की पट्टी करने के लिए घरों में भेज दिया गया। घायलों में मधु भी था। सोहनी मधु को लेकर ऊपर चढ़ गई। कमला भी उसके साथ ऊपर चली गई।

श्यामनारायण के मित्र और सदानारायण तथा सोहनलाल बैठक में अन्य लोगों के साथ चले गये।

सब को बैठाकर श्यामनारायण ने कह दिया, "मेरा विचार नहीं था कि किसी प्रकार का झगड़ा किया जाये। यह झगड़ा तो धरना देने वालों ने कला की माताजी से किया है। मेरा भाई और उसके मित्र ने तो अपनी मौसी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान होने से यह किया है। यह तो है कि इन धरना देने वालों ने यदि फिर किसी स्त्री का अपमान किया तो झगड़ा अवश्य हो जायेगा। शेष रही इनके धरना देने की बात। वे सार्वजनिक स्थान पर बैठे हैं। मैं उनको रोक नहीं सकता।

"मेरा आप से भी आग्रह है कि आप इनसे झगड़ा न करें। मैंने इनके यहाँ बैठे–बैठे थक जाने का प्रबन्ध कर लिया है। ये मूर्ख नहीं जानते कि इस प्रकार विचार और व्यवहार बदला नहीं करते।

"मैं यह कह रहा हूँ कि हमारी मित्र–मण्डली की बैठक पन्द्रह दिन के लिए बन्द होती है। तब तक मुझको विश्वास है कि ये लोग थक कर अपनी गैर–कानूनी कार्यवाही को खत्म कर देंगे।"

जब श्याम बाबू मित्र–गोष्ठी वालों को समझा रहा था, व्यासदेव भी भीतर आ उसकी बात सुन रहा था। श्यामनारायण की बात सुन व्यासदेव ने कह दिया, "जो कुछ हुआ है बहुत ही खेदजनक है। मैं यह नहीं चाहता था। इस पर भी मैं चाहता हूँ कि पुलिस में रिपोर्ट न हो। मैं इनको मना कर रहा हूँ और आप इन लड़कों के माता–पिता को कह दें।"

इस पर चिरंजीवलाल ने क्रोध में कह दिया, "और तुम इन लोगों के क्या हो?"

"मैं सोहनी को निकाल देने के लिए बनी समिति का प्रधान हूँ।"

"ओह!" चिरंजीवलाल ने माथे पर त्योरी चढ़ा कर कहा, "तो यह सब आपकी करतूत है?"

श्यामनारायण ने वाद–विवाद को रोकते हुए कहा, "व्यासदेवजी! आप यहाँ से चले जावें। मुझे जो कहना था कह दिया है। इस पर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि तुमने कुछ भी अदालती कार्यवाही की तो मैं बहुत तंग करूँगा। अब तुम यहाँ से चले जाओ।"

व्यासदेव चुपचाप घर से निकल आया। स्वयंसेवकों का, जो धरना दे रहे थे, आधा उत्साह तो दो के मुक्कों से घायल होने से विलीन हो चुका था। वे तो धरना उठाने के लिए विचार करने लगे थे। इस समय व्यासदेव घर से निकला और उनको समझाने लगा, "आधी से अधिक विजय तो तुम्हारी हो गई है। श्यामबाबू ने डर कर क्लब पन्द्रह दिन के लिए बन्द कर दी है। उसने पुलिस में रिपोर्ट करने से भी मना किया है।

"मैं समझता हूँ कि यदि तुम एक–दो दिन और डटे रहोगे तो सोहनी यहाँ से निकल अपने भाई के घर चली जायेगी। तब तुम्हारी पूर्ण विजय हो जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोहनी के सिवाय और किसी औरत से झगड़ा मत करो। सोहनी को भी छुओ नहीं। औरतों का इतना तो आदर करना ही चाहिए। हाँ, उसकी हँसी उड़ाओ, उसकी निन्दा करो।"

धरना देने वाले इससे उत्साहित हो फिर बैठ गये। व्यासदेव उसके घर चला गया, जो घायल हो पानी की टकोर करने चले गये थे।

मित्र चले गये। नीचे की बैठक बन्द कर ताला लगा दिया गया। धरना देने वालों ने विजय का नारा लगा दिया, "नारा–ए–बजरंगबली। हर हर महादेव।"

श्यामनारायण ऊपर गया। मधु की आँख के नीचे चोट आई थी। उस पर सोहनी ने हल्दी और घी की पट्टी बाँध दी थी। सदानारायण और सोहनलाल के तो मामूली खरोंचों के सिवाय और कोई चोट नहीं आई थी। श्यामनारायण ने सोहनी के बम्बई जाने की बात कला को नहीं बताई।

: 7 :

अगले दिन पूर्व निश्चयानुसार चार बजे वसन्ते को भेजकर ताँगा मँगवा लिया गया और जब वसन्ता सोहनी बहन का बिस्तरा और ट्रंक लेकर नीचे आया तो एक धरना देने वाले ने पूछ लिया, "कौन जा रहा है?"

"पता नहीं।"

"श्याम बाबू ऊपर हैं?"

"वे दफ्तर गये हुए हैं।"

इस समय सोहनी और टटोलती हुई कला नीचे उतर आईं। ड्योढ़ी में खड़े–खड़े कला और सोहनी गले मिलीं और फिर सोहनी ताँगे में बैठ गई। एक स्वयंसेवक ने आगे बढ़कर पूछ लिया, "बहनजी कहाँ जा रही हैं?"

"तुम्हारे सिर में।"

वह मुस्कराया और अपने स्थान पर आ खड़ा हुआ। सब को यही समझ में आया कि सोहनी साधुराम के घर जा रही है। कम–से–कम पन्द्रह–दिन के लिए, जब तक के लिए क्लब बन्द हुआ है। इससे व्यासदेव की भविष्यवाणी सिद्ध हुई समझ, उन्होंने नारा लगा। दिया, "नारा–ए बजरंग–बली। हर हर महादेव।"

कला टटोल–टटोलकर सीढ़ियाँ चढ़ रही थी! वह इस नारे को सुन मुस्कराई। उसने समझा, कितना भोला है इन्सान! भ्रम में रह कर वह कितना प्रसन्न होता है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज सायंकाल श्याम देरी से घर आया। स्वयंसेवकों ने समझा कि क्लब न होने के कारण देरी से आया है।

एक ने व्यंग्य में श्याम से पूछ लिया, "तो भाग गई न?"

"कौन?" श्याम ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछ लिया।

"आपकी प्रेमिका, सोहनी।"

श्यामनारायण ने चिन्ता का भाव प्रकट करते हुए कहा, "तो चली गई?"

सब खिलखिला कर हँसने लगे। श्याम को एक बात सूझी। उसने कह दिया, "आपने सब कुछ बिगाड़ दिया है।"

"क्या बिगाड़ दिया है?"

"वह जरूर मुसलमान हो गई होगी। मैं समझता हूँ कि वह रशीद अहमद के साथ चली गई होगी। मैं उसको समझा रहा था। आपने कल वाला हंगामा कर उसको डरा दिया है।"

मुख पर चिन्ता के लक्षण बनाता हुआ वह ऊपर चढ़ गया। इस समय व्यासदेव आया तो स्वयंसेवकों ने उसको उस दिन की घटना बता दी। इससे तो वह भी चिन्ता अनुभव करने लगा।

व्यासदेव आर्यसमाजी था और एक हिन्दू युवा स्त्री का मुसलमान हो जाना उसको भी नहीं भाया। वह ठीक बात जानने के लिए श्याम के मकान पर चढ़ गया। श्याम के घर कला की माँ आई हुई थी। वह आई तो थी पिछले दिन के हंगामे का परिणाम जानने; परन्तु आने पर उसको पता चला कि सोहनी चली गई है। कमला ने पूछा था, "कहाँ गई है?"

"मुझको बताकर नहीं गई।" कला अपने पति से राय किये बिना पूर्ण बात बताना नहीं चाहती थी। श्याम ने समझा दिया था बम्बई जाने की बात गुप्त रखने से धरना देने वाले सोहनी को शीघ्र मूल जायेंगे और धरना उठ जायेगा।

ऊपर आ उसने अपनी सास को बैठे देखा तो कपड़े बदलने अपने कमरे में चला गया। वह अभी कपड़े बदल कर बैठक में आने ही वाला था कि सीढ़ियों से व्यासदेव की आवाज आ गई, "श्याम बाबू! श्याम बाबू!"

श्याम ने सीढ़ियों में आ पूछा, "क्या बात है?"

"क्या यह सच है कि सोहनी चली गई है?"

श्याम व्यासदेव को लेकर नीचे की बैठक में आ गया। वहाँ व्यासदेव को बैठा कर श्याम ने बताया, "वह अभी साधुराम के घर में ही रहती थी कि उसका परिचय एक रशीद अहमद से हो गया था। रशीद अहमद उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाह पढ़ाने के लिए उसको कह रहा था। इस समय उसका मुझसे परिचय हुआ। उसने मुझको बताया तो मैंने उससे स्वयं विवाह करने के लिए कहा। उसने कहा कि वह विवाह करना नहीं चाहती। मगर क्या करे साधुराम पर बोझा बनी हुई है।

"मैंने कहा कि मैं उसका बोझा बाँट सकता हूँ।

"उसका कहना था कि भाई बन कर बाँटू तो वह रशीद का विचार छोड़ सकती है।

"मैंने हाथ आगे कर दिया और उसने राखी बाँध दी। पीछे भाई–दूज के दिन उसने टीका भी लगा दिया। कला के आने पर तो उसने साधुराम का घर छोड़ दिया। मैं सत्य कहता हूँ, कि उसको एक विधवा बहन के नाते ही घर पर रखे हुए था। कल का हंगामा देख वह चुपचाप अपने कमरे में जाकर रोने लगी थी। रात उसने खाना भी नहीं खाया था। आज सुबह उसकी मिन्नत–खुशामद कर, कुछ खिला–पिला कर गया था और अब आकर पता चला है कि वह चली गई है।

"मैंने कला से पूछा है। वह कहती है कि उसने बताया नहीं कि वह कहाँ जा रही है। इतना कह गई है कि अब इस जीवन में भेंट नहीं होगी। वह दिन–भर हिन्दुओं को गालियाँ देती रही थी।"

"श्याम बाबू! यह तो भारी पाप हो गया है। पता करो वह कहाँ है? मैं आर्यसमाज के उपदेशक उसके पास भेजूँगा।"

"पता तो करूँगा, परन्तु आपके उपदेशक क्या कर सकेंगे?"

"यत्न तो करना चाहिए।"

"मैंने तो अब इस मुआमले से अपने हाथ धो लिए हैं। मैं उसको अपना मुख नहीं दिखा सकता। बदकिस्मती से मैं भी हिन्दू हूँ और मैं आप हिन्दुओं के व्यवहार की सफाई नहीं दे सकता।"

"मेरा तो आशय यह था कि तुम उससे शादी कर लो।"

"भला बहन बना कर कैसे विवाह कर सकता था?"

अगले दिन पुनः व्यासदेव श्याम से मिला तो श्याम ने बताया, "मैंने पता किया है। सोहनी कल रशीद अहमद के साथ कश्मीर चली गई है।"

व्यासदेव ने आर्यसमाज में सोहनी की बात बताई, परन्तु आर्यसमाज क्या कर सकती थी? उसके पास इस काम के लिए कोई पुलिस, सेना तो थी नहीं। धरना तो उस दिन ही उठ गया था, जिस दिन सोहनी ताँगे पर चढ़ कर कहीं गई थी। व्यासदेव ने फिर श्याम को मुख नहीं दिखाया। धरना देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले स्वयंसेवक भी लज्जा के मारे किसी को कहते नहीं थे कि उन्होंने क्या किया है।

कुछ दिन के बाद चिरंजीवलाल ने श्याम बाबू को पुनः अपनी बैठक खोलने के लिए कहा तो उसने सिर हिला कर कह दिया, ''कुछ लाभ नहीं।''

''क्यों?''

''ये लोग इस बात के अधिकारी नहीं। 'बन्दर को अदरक का अचार' वाली बात थी। मैं तो जिमखाना क्लब का सदस्य बनने जा रहा हूँ। मेरा नाम वहाँ प्रपोज हो चुका है। उसका समर्थन भी हो गया है।''

चिरंजीवलाल ने कहा, ''यह तो मुहल्लेवालों के दोष के लिए तुमने हमको दंड दे दिया है।''

''बात यह है कि एक दिन वहाँ मैं गया था। मैंने जब देखा कि मैं उसका सदस्य बन सकता हूँ तो मुझको अपना यह आयोजन फीका–फीका प्रतीत होने लगा है।''

सदानारायण ने इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा दी थी। उसका परीक्षा–फल निकला तो उसने भापा के पास बम्बई जाने की माँग उपस्थित कर दी। सदानारायण के जाने का निश्चय हुआ तो सोहनलाल का भी कार्यक्रम बन गया।

सोहनलाल का पिता रामदास दुकानदारी करता था। बहुत कठिनाई से घर का खर्चा चलता था। सोहन की पढ़ाई भी बहुत मुश्किल से कराई गई थी। रामदास चाहता था कि वह कहीं नौकरी ढूँढ़ ले तो उसको सहायता मिल जावे और वह सोहन के विवाह का प्रबन्ध कर सके। मैट्रिक की परीक्षा के पश्चात् वह पास होने की प्रतीक्षा में बैठा था। इन दिनों में भी वह और सदा इत्यादि प्रातः इकट्ठे भ्रमण करने जाते थे और सायंकाल फुटबाल खेलते थे।

जुलाई के मध्य में परीक्षा–फल निकला तो यह निश्चय हो गया कि सदानारायण कॉलेज में पढ़ेगा। अब घर वालों के सामने जवाहरलाल का उदाहरण उपस्थित था। वह डाक्टर बन कर उच्च शिक्षा के लिए विलायत गया हुआ था।

इस कारण सदानारायण की भी इच्छा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की थी। इस पर भी सायंस पढ़ने में उसकी रुचि नहीं थी। उसका प्रिय विषय था, इतिहास।

कॉलेज में प्रवेश सितम्बर में होने वाला था। इस कारण डेढ़ मास के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो बम्बई जाया जा सकता था। सदानारायण ने अपने बम्बई जाने का निश्चय बताया तो सोहन दीर्घ निःश्वास छोड़ चुप रहा। इस पर सदा ने पूछ लिया–"क्यों? तुम चलोगे न?"

"नहीं सदा! मैं कल से नौकरी की खोज में जाऊँगा। श्याम भैया से कहा था। उन्होंने कहा है कि मैं कल उनके दफ्तर में आ जाऊँ। मुझको हिसाब–किताब रखने का ढंग सिखा देंगे। और तब कहीं किसी फर्म में भरती करवा देंगे।"

"पर मैं कहता हूँ कि यह बम्बई से लौटने पर होगा।"

"पिताजी नाराज हो रहे हैं। उनका कहना है कि काम सीखना था तो परीक्षा के बाद तीन महीने व्यर्थ क्यों गँवाये हैं?"

"जहाँ तीन महीने गये हैं वहाँ डेढ़ महीना और सही। अच्छा देखो, तुम इन्कार न करना। मैं तुम्हारे लिए बात करूँगा।"

उसी दिन उसने एक योजना बनाई और मोहनी भाभी से कह दिया, "सोहन मेरे साथ बम्बई जाएगा।"

"नहीं सदा भैया! उसको कुछ काम–धंधा सीखना है।"

"भाभी! इसीलिए तो उसको ले जा रहा हूँ। बम्बई में यहाँ से नौकरियाँ अधिक हैं। बम्बई में यहाँ से कारखाने और दुकानें बड़ी हैं। वहाँ नौकरियाँ भी बड़ी–बड़ी मिलेंगी। भापाजी ने पिछली बार कहा भी था कि सोहन को बम्बई में दुकान करा देंगे।"

मोहनी के मन में लालच आ गया। उसने कहा, "देखो सदा! भापा से इसकी सिफारिश करनी है तो मैं अपने पिताजी को राजी कर लूँगी।"

"भाभी! तुम एक पत्र लिख दो न। तुम्हारी सिफारिश तो मुझसे भी जबरदस्त होगी। मैं तो कहूँगा ही। और फिर भापाजी ने तो स्वयं ही कहा था।"

मोहनी ने कुछ विचार कर कहा, "भापा को नहीं। उनको लिखने में मुझको लज्जा लगती है। मैं ताई लेखवती को लिख देती हूँ। ठीक है न?"

सदा ने कह दिया, "ठीक है।" परन्तु वह मन में अनुभव करने लगा था कि यदि भापा ने ध्यान न दिया तो काम बहुत खराब होना। यों तो उसका मन कहता था कि बड़े भापा अवश्य सोहन की सहायता करेंगे।

सोहन की समस्या सुलझा वह श्याम भापा के घर जा पहुँचा। श्याम वास्तव में जिमखाना क्लब का सदस्य बन चुका था। दो सौ रुपया वर्ष का क्लब का चन्दा था। यह श्याम ने जमा करा दिया था। अब श्याम नित्य रात के नौ बजे घर आया करता था। इतनी गनीमत थी, कला की माँ कमला अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला के पास रहने लगी थी। वह, जब से सोहनी बम्बई गई थी, कला के साथ रहने आ गई थी। मास्टर दुनीचन्द अब अकेला रहता था। इस पर भी दोनों दिन में एक समय मिल लिया करते थे। कमला चार बजे अपने घर चली जाया करती थी और सायंकाल का भोजन पति को खिलाकर नौ बजे कला के घर आ जाया करती थी।

आज मधु सदानारायण के घर गया तो उसके सामने भी बम्बई चलने का प्रस्ताव रख दिया गया और मधु सदा के साथ ही अपने घर आ, पिता से बम्बई जाने का आग्रह करना चाहता था।

सदानारायण को रात के नौ बजे तक बैठना पड़ा। तब कहीं भैया श्याम के दर्शन हुए। श्याम आया तो पूछने लगा, "सदा! अभी तक यहीं बैठे हो?"

"हाँ, भैया! मैं कल बम्बई जा रहा हूँ।"

"परीक्षा–फल निकल गया?"

"हाँ भैया! मैं पास हो गया हूँ।"

"कितने अंक प्राप्त किये हैं?"

"छः सौ बियासी। प्रान्त में तीसरे नम्बर पर हूँ।"

"तो आगे पढ़ोगे?"

"हाँ, भैया!"

"तुम भी डाक्टर बनोगे?"

"नहीं, मैं प्रोफेसर बनना चाहता हूँ।"

"यह बड़े भापा की राय है?"

"हाँ, पिछले वर्ष तो यही राय हुई थी। अब फिर विचार कर लेंगे।"

"प्रोफेसर का वेतन बहुत कम होता है?"

"पर काम मजेदार होता है।"

"डाक्टर से भी अधिक?"

"मुझको पसन्द है।"

"अच्छी बात है। बड़े भापा से मेरी चरण–वन्दना कहना।"

"भैया! मैं कहने आया था कि मधु को भी भेज दो। बहुत मजा रहेगा।"

"और सोहन? तभी तो त्रिकटी टिकेगी।"

"हाँ, सोहन तो जा रहा है।"

"तो मधु भी जायेगा। ओ मधु!" श्याम ने आवाज दे दी।

मधु तो किवाड़ के पीछे छिपा सदा की बात सुन रहा था। वह भीतर आ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों मधु! बड़े भापाजी के पास जाओगे?"

"डैडी!" यह शब्द उसने बम्बई में आकर सीखा था, "डैडी! माँ भी जाना चाहती है।"

"माँ? बुलाओ तो उसको।"

"डैडी! उसको डाँटना नहीं।"

"क्यों?"

"मैंने उससे कहा था कि बड़े भापाजी से मिलने चलोगी तो वह रोने लगी। मैंने पूछा कि क्यों रोती हो? कहने लगी, 'मैं जाऊँगी तो डैडी का बहुत रुपया खर्च हो जायेगा और मैं नहीं जानती कि किस मुख से कहूँ।'

"अच्छा, नहीं डाँटूँगा। बुलाओ।"

मधु गया और कला का हाथ पकड़ कर ले आया। कला अपराधी की भाँति सामने आ खड़ी हो गई। श्याम ने उसे देखा और पूछ लिया, "वहाँ क्यों खड़ी हो, इधर आओ।"

कला ने हाथ फैला कर टटोलते हुए कुर्सी ढूँढ़ी और उस पर बैठ गई। श्याम ने पूछा, "बहुत जी करता है जाने को?"

"अब तो मेरे माता–पिता सब–कुछ वही हैं। उनके आशीर्वाद से ही मैं आज की स्थिति में हूँ। उनके चरणों में सिर रखने को जी करता है।"

"तो जा सकती हो।"

"देखो सदा! मैं, तुम, मधु, मधु की माँ और सोहन पाँच सवारियाँ जायेगी। मैं सबके लिए सीट बुक करा दूँगा। तुम यहाँ आ जाना। यहाँ से ही सब चलेंगे।"

"भैया! तो आप भी चलेंगे?"

"हाँ, एक बार कला को अकेले बम्बई जाने दिया था और मुझको अब तक पश्चात्ताप लग रहा है। अब मैं उसको अकेला नहीं छोड़ सकता!"

"पर भैया! दफ्तर?"

"छुट्टी मिल जायेगी। एक महीना वहाँ रहूँगा और तब तुम भी आ जाना। ठीक है न?"

: 8 :

रहमत बड़े भापा की सम्मति सुनकर गम्भीर विचार में पड़ गई थी। भापा की भविष्यवाणी थी कि उसका विवाह लियाकतअली खाँ के साथ होगा। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भावना पर विचार करने वह घर जा पहुँची। घर पर अपने कमरे में जा भीतर से दरवाजा बन्द कर लेट रही। माँ ने देखा और आकर दरवाजे के पास खड़े होकर आवाज दे दी, "रहमत! रहमत!!"

कमरे के भीतर से आवाज आई, "हाँ माँ!"

"आज क्या बात है? जल्दी क्यों आ गई हो?"

"माँ! मेरी तबियत ठीक नहीं। मुझको सोने दो।"

सोने का तो बहाना था। परन्तु माँ को इससे सन्तोष हो गया और वह अपने घर के काम में लग गई। ठीक साढ़े चार बजे लियाकतअली खाँ आया। मोहसिन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह उसको घर के बैठने के कमरे में ले गया। रहमत की माँ को कहा कि वह रहमत को ले आये, खुद उससे बात करने लगा। उसने कहा, "हजरत! लड़की बहुत दलीलें करना सीख गई है। यों तो वह बी.ए. पास है और अब सात–आठ महीने से इल्म–मासूकी सीख रही है। बहुत समझदार है। यही वजह है कि वह हर एक बात में तन्कीह निकालती रहती है। जरा मुहब्बत से बात करेंगे तो खुदा की महर हो जायेगी।"

लियाकत ने मुस्कराते हुए कहा, "तो फिर एक बात करिये। हमारा परिचय कराने के बाद आप हमको जरा तन्हाई में बातचीत करने दें। मैं यकीन दिलाता हूँ कि आज रात ही हमारा निकाह पढ़ा जावेगा।"

मोहसिन के दिमाग में यह बात आई ही नहीं थी कि तन्हाई में औरत–मर्द दलील अच्छी प्रकार कर सकते हैं। अब उसकी समझ में आ गई और उसने अपने मन में निश्चय कर लिया।

इस समय रहमत की माँ आई और पूछने लगी, "वह पूछ रही है कि चाय बनाकर ले आये?"

"नहीं।" उत्तर लियाकतअली खाँ ने दिया, "अभी चाय पीने का वक्त नहीं। उससे कहिये, इन्शा अल्लाह! हमारी सगाई के बाद पहली चाय यहाँ होगी।"

अब रहमत अपने बिलकुल मामूली कपड़ों में चली आई। इससे मोहसिन को भारी निराशा हुई। इस पर भी लड़की को डाँट कर चिढ़ाना नहीं चाहता था। उसने उसे अपने पास कुर्सी पर बैठाकर उसका परिचय करा दिया, "हजरत! यह आपके खादिम की लड़की रहमत। यह कॉलेज में हिन्दू, पारसी और ईसाई लड़कियों के साथ पढ़ती रही है। इसलिए इसके खयालात कुछ वमीह हो गये हैं। मेरा खयाल है कि आप आपस में बातचीत कर फैसला कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें। मैं इसमें दखल देना नही चाहता। अगर आप इजाजत दें तो हम आपको तन्हाई में बातें तय कर लेने दें। क्या मैं गलत कह रहा हूँ।''

यद्यपि मुलाकात का यह ढंग रहमत के दिमाग में नहीं था। इस पर भी उसने अपने मन में एक बात विचार कर रखी थी और वह बात भापाजी के वार्तालाप का निचोड़ थी। इस कारण वह गम्भीर हो बैठी रही।

मोहसिन ने उठते हुए कहा, ''यह इस कौच के साथ घंटी का बटन लगा है। जब बन्दे की जरूरत हो तो यह बटन दबा दीजिएगा और हम हाजिर हो जायेंगे।''

वह रहमत की माँ को लेकर बाहर निकल गया। उनके चले जाने पर लियाकत ने कहा, ''आपके वालिद शरीफ ने मुझको अपना तआरूफ (परिचय) कराने के किए कहा है। मैं हूँ लियाकत अली। आलिजाह, माजूदा आगा खाँ साहब का भतीजा। मेरे वालिद साहब गद्दी के मीर के तौर पर काम करते हैं।

''मैं ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट हूँ। हिस्टरी और इकानोमिक्स मेरे चाहते मजमून रहे हैं। मैं हजूरेवाला को अपनी मलिका बनाने के खयाल से यहाँ आया हूँ।

''मुझको आगा खाँ पैलेस में रहने के लिए अलहदा जगह मिली हुई है और पाँच सौ रुपया महीना पैन्शन मिलती है। मकान, खाना, कपड़े, नौकर इसके अलावा हैं। जब हुजूर वहाँ तशरीफ ले जावेंगी तो पाँच सौ रुपया महीना आपकी भी पैन्शन लग जावेगी।''

''यह तो ठीक है। मगर मैं तो सिर्फ एक बात आपसे जानना चाहती हूँ। क्या आप मोमिन हैं?''

''हाँ, मगर उससे भी बढ़कर मैं आगाखानी हूँ।''

''क्या किसी आगाखानी के लिए मुसलमान होना जरूरी है?''

''नहीं।''

''क्या आगाखानी के लिए अपना नाम और अपनी जबान फारसीनुमा रखनी जरूरी है?

''नाम तो हजरत आलीजा या उनके मीर साहब रखते हैं। जो नाम वे रख दें, वह नाम हो जाता है। बातचीत की जबान में किसी किस्म की बंदिश नहीं। आप अंग्रेजी में बात कर सकती हैं।''

''हजरत ने मेरा नाम रहमत रखा है, परन्तु क्या मैं अपने मतलब के लिए और वाकिफों के लिर अपना कोई दूसरा नाम रख सकती हूँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें भला कोई क्यों मना करेगा?"

"क्या मैं अपनी पैन्शन में से कुछ बचाकर जहाँ चाहूँ खर्च कर सकूँगी?"

"हाँ, इसमें क्या ऐतराज हो सकता है?"

"क्या मैं अपनी बीवी के फरायज अदा करने के बाद अपनी आजाद जिन्दगी बसर कर सकूँगी?"

"हाँ; अगर तोफीक और काबलीयत होगी। देखो रहमत! यह बातें तो कुछ भी नहीं। ये और इससे बहुत ज्यादा तुमको शादी के बाद इशारा करने से भी मिल सकती हैं।

"हमारे यहाँ दो पाबन्दियाँ हैं। एक तो पर्दा और दूसरे खाविन्द में वफादारी। और सब मामूली बातें हैं। मैं समझता हूँ कि एक बात मुझको भी देखनी है?

"जरा इधर आओ, उस आईने के सामने।"

रहमत इसका अर्थ नहीं समझ सकी। वह विचार करने लगी कि वह आईने में क्या देखना चाहता है। वह अभी विचार ही कर रही थी कि यह करे अथवा न कि लियाकत ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "जरा आइये, मैं भी कुछ देखना चाहता हूँ।"

रहमत अन्यमनस्क भाव से उठ, उसके साथ एक आदमकद आईने के सामने, जो एक कोने में लगा था, जा खड़ी हुई। खिड़की में से रोशनी उन पर पड़ रही थी। लियाकत रहमत को आईने के सामने खड़ा कर स्वयं उसके साथ जाकर खड़ा हो गया। रहमत उसके कान से जरा ऊपर तक आती थी। लियाकत ने कहा, "ठीक है।"

रहमत ने उसकी ओर घूमकर पूछा, "क्या ठीक है?"

लियाकत ने उसे बाहों से पकड़, अपनी छाती से लगा उसका मुख चूम लिया और फिर छोड़कर कहा, "यह ठीक है। मतलब कि तुम मुझको मंजूर हो।"

रहमत इस एकाएक के व्यवहार से स्तम्भित खड़ी रह गई। पूर्व इसके कि वह कुछ कहे, लियाकत ने उसको हाथ से पकड़ते हुए कहा, "अब हमको चाय के लिए कहना चाहिए।"

"पर हजरत! यह आपने क्या किया है?"

"कुछ नहीं। अपनी 'ऐप्रूवल' (स्वीकृति) अर्ज की है।" उसने कौच पर बैठते ही घंटी का बटन दबा दिया।

रहमत इस स्वीकृति को स्वीकार करने का निर्णय भी नहीं कर पाई थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि लियाकत अपनी जेब से एक हीरे में जड़ित अँगूठी निकालकर रहमत के हाथ में डालने लगा। इस समय मोहसिन और उसकी पत्नी आ गए और लड़की के हाथ में हीरे से चमचमाती अँगूठी डाली जाती देख बोल उठे, "रहमत! मुबारिक हो। परमात्मा तुम दोनों को जिन्दगी दराज करे और उसमें बरकत डाले।"

"क्यों रहमत?" लियाकत ने पूछ लिया, "यह ठीक नहीं है क्या?"

"क्या ठीक नहीं है?"

"यह अँगूठी।"

"अगूँठी तो बहुत खूबसूरत है। मगर..."

"और तुम इससे भी ज्यादा खूबसूरत हो।" लियाकत ने रहमत की माँ की तरफ देखते हुए कहा, "अम्मी! अब चाय आनी चाहिए। हमारी सगाई के बाद पहली चाय।"

मोहसिन ने नौकर को कह रखा था। अतः आवाज देते ही वह एक बहुत बड़ी ट्रे में देसी–अंग्रेजी मिठाइयों की कई प्लेटें और चाय ले आया।

रहमत अपने को आँधी में उड़ा कर ले जाई जाती अनुभव करती थी। उसको तो कहने का अवसर ही नहीं मिला। जब उसने देखा कि उसके माता–पिता उस अँगूठी की प्रशंसा करने लगे हैं जो लियाकत ने उसको पहनाई है, तो वह चाय बनाने लगी।

इस समय लियाकत ने कहा, "चाय के बाद हम दरगाह में चलेंगे। वहाँ हमारा निकाह पढ़ा जाएगा। मीर साहब, मेरे वालिद शरीफ, निकाह पढ़ाएंगे। उसके बाद एक बहुत बड़ी दावत होगी। शादी की दावत। उस दावत के बाद रहमत का घर वह हो जाएगा जो मेरा है।

"कल पी.एण्ड ओ. का डाक का जहाज विलायत के लिए रवाना होने वाला है। मैं उसमें दो बर्थ अभी मारसेल्ज तक के लिए रिजर्व करवा लेता हूँ। हम कुछ दिन पैरिस में रहेंगे। फिर हम स्विट्जरलैंड के भिन्न–भिन्न नगरों में विशेष रूप से जनेवा और बर्न में रहेंगे। वहाँ से मैं अमेरिका जाने का विचार करता हूँ। छः महीने के हनीमूनिंग के बाद बम्बई आने का इरादा है।"

इस कार्यक्रम ने रहमत के मन में रही–सही चिन्ता खत्म कर दी। उसने चाय बनाकर लियाकत को और पीछे अम्मी और वालिद साहब को दी। आखिर में वह खुद बनाकर पीने लगी। लियाकत खूब खाने वाला आदमी था। उसने जी भर कर मिठाई खाई और रहमत का शुक्रिया अदा कर वह उठा। पी. एण्ड ओ. कम्पनी के दफ्तर में दो फर्स्ट–क्लास की सीट का केबिन रिजर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए उसने फोन कर दिया। इसके बाद उसने अपने वालिद साहब को टेलीफून पर बताया, "मेरी शादी आज ख्वाजा मोहसिन की लड़की रहमत से रात के साढ़े सात बजे दरगाह में होगी। उसके बाद अपने घर पर दावत होगी। उसमें आप और अम्मियाँ तथा दरगाह के सब अफसर और दूसरे रिश्तेदार जो इस वक्त बम्बई में हैं, शरीक होंगे। आप सबको दावतनामा भेज दीजिये।

"कल मैं अपनी बीवी के साथ हनीमून के लिए फ्रांस जा रहा हूँ। खजान्ची साहब को भेज कर दो फर्स्ट क्लास के सीट के केबिन, जो मैंने रिजर्व करा लिया है, के दाम भेज दें। मैं साढ़े सात बजे से पहले अपनी बीवी और उसके रिश्तेदारों के साथ दरगाह में पहुँच जाऊँगा।"

कार्यक्रम ठीक समय पर ठीक ढंग पर हुआ। दरगाह में कुरान–शरीफ की आयतों से निकाह पढ़ा दिया गया और फिर दावत हुई जिसमें सौ के करीब मेहमान थे। तदनन्तर रहमत जो अब बुर्के में छिपा दी गई थी, लियाकत के साथ उसके सोने के कमरे में चली गई।

अगले दिन रहमत और लियाकत ठीक ढाई बजे जहाज के डेक पर खड़े हाथ हिला कर अपने रिश्तेदारों से विदा ले रहे थे और जहाज धीरे धीरे पायर से दूर हटता जा रहा था। रहमत रेशमी बुर्के में थी और लियाकत अंग्रेजी पोशाक में।

जब किनारा दृष्टि से ओझल हो गया तो दोनों कुछ देर डेक पर खड़े समुद्र में उठती लहरों को, जो जहाज के साथ टकरा–टकरा कर छितरा रही थीं, देखते हुए खड़े रहे। फिर वे दोनों अपने केबिन में चले गार। केबिन में पहुँचते ही रहमत ने पूछा, "क्या योरुप में भी मुझको इस खेमे को सिर पर उठाये ही चलना–फिरना पड़ेगा?"

"नहीं; मैं तुमको अंग्रेजी ढंग की पोशाक बनवा दूँगा। तब तुम यह उतार देना।"

"अंग्रेजी ढंग की क्यों? देसी ढंग की क्यों नहीं?"

"देसी? कौन–से देश की?"

"हिन्दुस्तानी ढंग की।"

"मगर हिन्दुस्तान तो एक मुल्क नहीं। तुम कहाँ की पोशाक पहनना चाहती हो?"

"मेरे पास फारसी ढंग की साड़ी–जम्पर तैयार है। मद्रासी ढंग की साड़ी चोली भी है और पंजाबी ढंग का सलवार–कुरता भी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको इनमें कोई पसन्द नहीं?"

"मगर जो अब तैयार है, उसको यहाँ जहाज में पहन लेती हूँ। जो और बनवा देंगे, वह जहाँ कहेंगे पहन लूँगी।"

"देखो रहमत! हम हिन्दुस्तानी नहीं हैं। हमारे बुजुर्ग ईरान से हिन्दुस्तान में आये थे। मगर हम ईरानी भी नहीं। हम दुनिया के बाशिन्दे हैं। हम एक ऐसे मजहब को मानते हैं जो यूनिवर्सल (सार्वभौमिक) है। वह मजहब मुल्कों और फिरकों और रंगों की हदूद को पार कर जाता है।"

"मगर आप मजहब और मजहब को हदूद तो मानते हैं।"

"हाँ। वह तो मानता हूँ और इसके सिवाय और कोई हद नहीं है।"

"भले और बुरे की भी?"

"इस्लाम भले लोगों की जमायत है और दीगर सब मजहब बुरे लोगों के हैं।"

रहमत चुप रही। उसे चुप देख लियाकत ने कहा, "खुदा का शुक्र है इस वक्त इस्लाम के पैराओ दुनिया के हर मुल्क में मौजूद हैं। और यह अच्छे इन्सानों की एक जमायत है।"

"अच्छे और बुरे लोगों के औसाफ (लक्षण) क्या हैं!"

"जो मुसलमान है वह अच्छा है, जो गैर–मुसलमान है वह बुरा है।"

बुर्का उतार कर खूँटी से लटकाते हुए रहमत ने कहा, "सब नेक लोग मुसलमान कहाते हैं या सब मुसलमान नेक होते हैं?"

लियाकत ने इस सवाल का अभिप्राय न समझते हुए कह दिया, "एक ही मतलब है।"

रहमत जानती थी कि इन दोनों वाक्यों का अर्थ एक नहीं है। परन्तु पूर्व इसके कि वह इन दोनों वाक्यों में फर्क बताने का यत्न करे, लियाकत ने उसको अपने पास खेंचकर अपने भुजपाश से बाँध लिया।

: 9 :

रहमत रामरक्खामल्ल से अपने भविष्य के विषय में पूछ कर गई तो फिर नहीं लौटी। अगले दिन वह संगीत–भवन में नहीं आई और फिर जब वह कई दिन तक नहीं आई तो समझ लिया गया कि वह काले बादलों के पीछे छिप गई है।

संगीत–भवन का कार्य सरलता से चल रहा था। रामरक्खामल्ल के प्रातः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की प्रार्थना के बाद के प्रवचन सुनने के लिये तो कभी भवन से बाहर के परिचित लोग भी आ जाया करते थे। इनमें सेठ देसाई और सरला वर्मा तो प्रायः नित्य ही आते थे।

रविवार के दिन संगीत–भवन बन्द रहता था और रामरक्खामल्ल प्रायः रुक्मिणी के घर पर आमन्त्रित होता था। प्रायः लेखवती उसके साथ जाया करती थी। वह जाती तो उसके साथ रत्नलाल और संतोषकुमार भी जाते थे।

रत्नलाल और सन्तोष का अधिक आकर्षण मिस्टर मनोहरलाल वर्मा की ओर था। राधा प्रायः सरला और वर्मा के घर जाया करती थी और रत्नलाल तथा सन्तोष उसके साथ जाने में अधिक रुचि प्रकट करते थे।

देसाई के घर पर तो रामरक्खामल्ल और देसाई में राजनीति पर चर्चा चला करती थी और वर्मा के घर पर संगीत पर बातचीत होती थी। लड़के राजनीति से संगीत में अधिक रुचि लेते थे।

कभी–कभी राधा खटाऊजी से मिलने भी जाती थी। लड़के वहाँ जाने में रुचि नहीं रखते थे।

इन दिनों सोहनी लाहौर से आ गई। श्याम का तार आया था कि सोहनी बम्बई अमुक दिन और अमुक गाड़ी में आ रही है। रामरक्खामल्ल ने उसके रहने का प्रबन्ध रुक्मिणी के यहाँ कर दिया था। कुछ दिन तक तो सोहनी वहाँ रही, परन्तु उसकी निश्चल आत्मा काम की भूखी थी। रुक्मिणी ने अपने मिलों के कर्मचारियों के बच्चों के लिए एक प्रारम्भिक विद्यालय बना रखा था। उसने सोहनी को वहाँ अध्यापिका लगा दिया। विद्यालय रविवार को बन्द होता था। अतः रामरक्खामल्ल तथा लेख, सोहनी से भी रविवार के दिन मिल पाते थे।

एक रविवार रामरक्खामल्ल रुक्मिणी से मिलने के लिए जाने लगा तो राधा ने कह दिया कि वह ताई जी के साथ सरला वर्मा से मिलने जाएगी।

इस घोषणा पर तो रत्नलाल और संतोष कूद पड़े तथा बोल उठे, ''हम भी वर्मा जी के घर जाएंगे?''

''और मुझको क्यों साथ ले जा रही हो?'' लेखवती ने पूछ लिया।

''सरला मौसी ने आपको विशेषतया बुलाया है।''

''क्या बात है?''

''यह मुझको मालूम नहीं। कल प्रातःकाल प्रार्थना के बाद सरलाजी ने कहा था कि मुझको उसके घर आना चाहिए।

''मैं सरला जी के घर तो ऐसे जाती हूँ मानो वे मेरी माताजी हैं। अतः मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी नहीं पूछा कि वहाँ कुछ काम है क्या? मैंने जब कहा आऊँगी तो वे कहने लगीं कि ताईजी को भी लेती आना। बहुत दिन से वे नहीं आयीं। मैंने कह दिया कि कह दूँगी।

"इस पर वे बोलीं, सन्तोष और रत्न तो आयेंगे ही।"

इस प्रकार लेखवती राधा, रत्नलाल तथा सन्तोष के साथ सरला के घर को चल पड़ी। आज सरस्वती भी उनके साथ थी।

रामरक्खामल्ल अकेला ही देसाई के घर जा पहुँचा। देसाई ड्राइंगरूम में बैठा शीतल पेय ले रहा था। वह अनानास का शर्बत पी रहा था। रुक्मिणी समीप बैठी कोई पुस्तक पढ़ रही थी।

"आइए मिस्टर सूद! मिसेज नहीं आयीं क्या?"

"आज वह राधा और सरस्वती के साथ सरला जी के घर गई है।"

देसाई खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"क्यों किसलिए हँसे हैं?" रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया।

"मैं इसलिए हँसा हूँ कि आप मुसलमान लड़कियों को हिन्दू बनाते जाते हैं तो उनके साथ शादी करने के लिए हिन्दू लड़के भी तो लाने चाहिये? नहीं तो सब प्रयास विफल जाएगा।"

"मैंने किसी को हिन्दू होने के लिए नहीं कहा। ये लड़कियाँ अपनी इच्छा से अपना नाम हिन्दुओं का–सा रख रही हैं। वे कहती हैं कि वे हिन्दू हैं। मैं तो उनके हिन्दू होने की परीक्षा ही यह समझता हूँ कि जब वे अपना खाविन्द ढूँढ़ें तो हिन्दू ही ढूँढ़ें। मुसलमान अथवा कोई अन्य मजहब वाला उनको पसन्द ही न आये।"

"मगर मैंने तो अनेक हिन्दू लड़कियों को मुसलमानों के साथ भागते देखा है। वे एक बार मुसलमान हो जाती हैं तो फिर हिन्दू बनना पसन्द नहीं करतीं।"

"तो यह बात मैंने नहीं देखी क्या? मगर इसमें कारण यह है कि अकसर हिन्दू परिवारों में हिन्दू के ठीक अर्थ समझे ही नहीं जाते। वे हिन्दू आचरण को जानते ही नहीं। उनके लिए हिन्दू के अर्थ हिन्दू माँ–बाप के घर पैदा होना मात्र है।

"यही कारण है कि जब उन परिवारों के लड़के अथवा लड़कियाँ कभी किसी मुसलमान के पास जाते हैं तो वे उसमें और हिन्दू–श्रेष्ठता में अन्तर नहीं समझ सकते।"

"मिस्टर सूद!" देसाई ने नौकर से एक बड़ा–सा गिलास अनानास के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्बत का भरवा कर रामरक्खामल्ल को देते हुए कहा, "आप तो हिन्दू जीवन मीमांसा को मानते हैं न?"

"हाँ; मगर मैं वर्तमान काल की हिन्दू जीवन मीमांसा को तो कुछ गन्दी वस्तु समझता हूँ। मेरा हिन्दू जीवन मीमांसा से अर्थ उस जीवन–मीमांसा से है, जिसका उल्लेख वेद, स्मृति, दर्शन–शास्त्र, ब्राह्मण ग्रन्थ अथवा रामायण में लिखा मिलता है।"

"मैं तो यह पूछना चाहता हूँ कि पूर्व जन्म के कर्म मनुष्य को इस जन्म में बाँधते हैं अथवा नहीं?"

"तो फिर पूर्व–जन्म के कर्म–बन्धन कष्ट देने लगे हैं आपको?"

"बन्धन तो प्रतीत होते हैं। वे पूर्व–जन्म के हैं अथवा इस जन्म के, कह नहीं सकता और इसी बात की विवेचना के लिए आपको पूछ रहा हूँ।

"सूरत में अरविन्द जी से मिला था। उनकी बातों ने और व्यवहार ने मेरे मस्तिष्क पर भारी प्रभाव डाला था। मेरे मन में उनके लिए भारी श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी।

"पिछले मास एक युवक उनका पत्र लेकर आया था। वह कुछ पटाखे बनाने के लिए आर्थिक सहायता चाहता था। मैंने पूछा' कितना?' इस पर वह बोला, 'पाँच हजार।'

"उससे एक–दो दिन पूर्व मैं श्री तिलक जी से मिलने पूना गया हुआ था। वहाँ बंगाल के 'पटाखे वालों' की चर्चा चल पड़ी थी। श्री तिलक जी का कहना था कि देश में सशस्त्र क्रान्ति का समय नहीं आया। कदाचित् कभी भी नहीं आवेगा। आप की बात, जो आपने लाहौर में समझाई थी, का समर्थन सुन मैं अपने पिछले कई वर्ष के कार्य को छोड़ने पर सन्तुष्ट हो लौट आया था। यहाँ आकर उस युवक की माँग सुन पुनः संशय में पड़ गया हूँ।

"यह अरविन्द जी के भाई वीरेन्द्र घोष हैं। मैंने तिलक जी के शब्दों में उनको कहा कि जब तक सेना अथवा जनता तैयार नहीं हो जाती, तब तक क्रान्ति करने का प्रयास, समाज के सर्वोत्कृष्ट युवकों को अकारण बलि का बकरा बनाना है। न सेना तैयार है न जनता। अभी तो 99.9 प्रतिशत हिन्दुस्तानी यह समझते हैं कि अँग्रेज राज्य हिन्दुस्तान के हित में है और भारत में राज्य करने की योग्यता वाला नेता अभी पैदा नहीं हुआ। सेना में तो 0.00 प्रतिशत ही भारत की स्वतंत्रता में कुछ तथ्य समझते हैं।

"इस पर वीरेन्द्र जी कहने लगे कि कुछ शूर आत्मायें भारत माँ की इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दासता को शृंखलाओं में बँधी देख तड़फड़ा रही हैं। वे इस तड़प को मिटाने का एक ही उपाय समझते हैं। वे चाहते हैं कि माँ के मस्तक पर अपने रक्त से बिन्दियाँ लगा दें, जिससे माँ का मुख देदीप्यमान हो उठे। उसकी कीर्ति संसार में उज्ज्वल हो और वे दुष्ट आततायी उसको सूर पुत्रों की जननी मान, अपना मस्तक उसके चरणों पर झुकाने के लिए विवश हो जायें।

''मुझसे तो वे उन साधनों की प्राप्ति के लिए सहायता माँगने आये हैं, जिनसे वे अपने रक्त से माँ के मस्तक को सुशोभित कर सकें।

''मैं इन्कार नहीं कर सका। मैंने रुपया निकाल उसको दे दिया। आज एक समाचार आया है कि मुजफ्फरपुर में बम फटने से, दो औरतें मारी गई हैं। बम चलाने वाले दो युवक थे। एक का नाम प्रफुल्लचन्द्र चाकी था और दूसरे का खुशीराम बोस। प्रफुल्लचन्द्र ने तो पकड़ जाने से पूर्व अपने को गोली मारकर समाप्त कर लिया है और खुशीराम बोस पकड़ा गया है।

''यह प्रफुल्लचन्द्र वीरेन्द्रजी के साथ रुपया माँगने आया था। मैं विचार कर रहा था कि पाँच हजार रुपये का प्रयोग इस प्रकार हुआ है।''

''तो आपको चिन्ता लग रही है कि यह पकड़ा हुआ युवक कहीं बक न दे?''

देसाई हँस पड़ा। फिर बोला, ''ठीक यही बात रुक्मिणी ने उस दिन कही थी, जब वे रुपया माँगने आये थे। उसने कहा था कि 'युवक बहुत छोटी आयु के हैं। वे बक भी सकते हैं।'

''मैंने कहा था कि मैं पकड़ा भी जा सकता हूँ और इसकी तो मैं कई वर्षों से प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरा जीवन अब अपना नहीं है। यह तो माँ की धरोहर है। जिस समय वह चाहे ले सकती है।

''आज रुक्मिणी को मेरे जीवन का भय नहीं लग रहा। आज इसको उन बेगुनाह औरतों के मारे जाने का शोक हो रहा है। इसका उत्तर मैं नहीं दे सका। मैं भी समझ रहा हूँ कि भारी पाप हो गया है।

''मैंने रुक्मिणी से कह दिया था कि मिस्टर सूद आयेंगे तो बात करेंगे। सो कर्म–बन्धन की बात पूछने लगा हूँ।''

अब हँसने की बारी रामरक्खामल्ल की थी। उसने हँसकर कहा, ''देसाईजी! यह पाप कैसे हो गया और आप पाप के भागी कैसे हो गये?''...

रुक्मिणी, जो पुस्तक का पढ़ना छोड़, इनकी बातें सुनने लगी थी, बीच में बोल उठी, ''आखिर यह मार–धाड़ करने की आवश्यकता है क्या? सरकार राज्य विधान में स्वयं ही संशोधन कर रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रुक्मिणी देवी!" रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "सरकार यह संशोधन क्यों कर रही है?"

"ज्यों–ज्यों अँग्रेज पार्लियामेन्ट को विश्वास हो रहा है कि हिन्दुस्तानी राज्य करने के योग्य हो रहे हैं, त्यों–त्यों वह सुधार लाकर अधिक और अधिक अधिकार देती जा रही है।"

"यह बात कि हम भारत माँ के लिए कितना असीम त्याग करने के लिए उद्यत हैं, उस विश्वास पैदा करने में एक कारण हो रहा है कि हम राज्य भी कर सकेंगे। राज्य करने की योग्यता तो हमारे विद्वानों में है। रक्षा करने की योग्यता भी हमारी सेनाओं में है। यह बात हम कई बार सिद्ध कर चुके हैं। जिस बात की हममें कमी थी और जिस कमी को यह अंग्रेज भाँप गये थे, वह थी मातृ–भूमि के लिए त्याग की भावना। ज्यों–ज्यों ये युवक अपनी इस भावना का प्रदर्शन करते हैं, अंग्रेज को विश्वास होता जाता है कि हम अपनी इस कमी को अपने में से निकाल रहे हैं, और वे शासन में सुधार करते जा रहे हैं।

"रही पाप–पुण्य की बात। मेरा दृढ़ मत है कि यह पाप तो है नहीं। अधिक–से–अधिक यह अपराध है और इस अपराध का फल अपराध करने वाले को मिल जायेगा।

"अपराध यह है कि भूल से मर गया है कोई दूसरा। यदि वही मरता, जिसको मारने के लिए बम फेंका गया था, तो अपराध भी नहीं होता। तब तो यह शुद्ध पुण्य का कार्य होता। पुण्य तो अब भी है। कार्य का उद्देश्य अति पवित्र था। इससे एक का तो स्वर्गारोहण हो गया और दूसरा वहाँ जाने की प्रतीक्षा कर रहा है।"

"निरपराध औरतों को बम से छिप कर मार देना भला पुण्य का कार्य कैसे हो गया?"

"निरपराध थीं क्या, वे?"

"देखो बेटी रुक्मिणी! एक बार युधिष्ठिर के मन में भी यही संशय उत्पन्न हो गया था। महाभारत युद्ध में अठारह अक्षौहिणी सेना की हत्या हो गयी थी। युधिष्ठिर विचार करता था कि वे सब–के–सब पापी ही थे क्या? इससे संशय उत्पन्न हुआ–

यदि दण्डः स्पृशतेऽपुण्यपापं।
पापैः पापे क्रियमाणे विशेषात्।।
कस्य हेतोः सुकृतं नाम कुर्याद्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्कृतं वा कस्य हेतोर्न कुर्यात्।।

"इसका उत्तर श्री भीष्म जी ने दिया है–

असंत्यागात् पापकृतामपापास्तुल्यो।
दण्डः स्पृशतेमिश्रभावात्।।
शुष्केणार्द दह्यते मिश्रभावान्न मिश्रः।
स्याद् पाप कृदिभ कथम्चित्।।

"प्रश्न था–यदि पापियों द्वारा विशेष पाप किये जाने पर साधु और असाधु दोनों का ही संहार होना है तो फिर किसलिए कोई पुण्य करे और पाप न करे।

"उत्तर है–पापाचारियों के संसर्ग का त्याग न करने से पापरहित धर्मात्मा पुरुषों को भी उनसे मेलजोल रखने के कारण उनके समान ही दंड भोगना पड़ता है। ठीक उसी तरह जैसे सूखी लकड़ियों के साथ मिली होने से गीली लकड़ी भी जल जाती है। अतः विवेकी पुरुष को चाहिए, वे पापियों के साथ किसी प्रकार का भी सम्पर्क न रखें।"

"पर भापा! आप एक ओर तो क्रान्ति–कार्य को शक्ति और धन का व्यर्थ अपव्यय मानते हैं, दूसरी ओर इन युवकों के कुकृत्य की सराहना करते हैं।"

"ये युवक क्रान्ति नहीं कर रहे थे। ये तो जन–जन के मन में मातृभूमि के लिए बलिदान की भावना की शिक्षा दे रहे थे। यह तो अत्यन्त शुभकार्य है।

"क्रान्ति तब होगी जब या तो जनता में व्यापक जागृति होगी, अथवा सेना में स्वतंत्र हो देश की सेवा करने की भावना होगी। बिना इन दो में एक कार्य के हुए क्रान्ति सशस्त्र अथवा शान्तिमय होनी सम्भव नहीं। परन्तु ये शौर्य के कार्य तो जनता में जागृति फैलाने के प्रयास हैं।"

"हत्याएँ कर जागृति करने का यह ढंग न्यारा है!"

"हाँ रुक्मिणी! हम हिन्दुओं के सब काम न्यारे हैं। हम मरना–जीना तो कपड़े बदलने के तुल्य मानते हैं। हमारे लिए जीवन यज्ञ–रूप है। यज्ञ का अर्थ है लोक–कल्याण के लिये स्वयं को स्वाहा कर देना।"

"तो आप देसाई जी का यह धन देना गलत नहीं समझते?"

"देसाई जी का धन अपना है क्या? मैं ऐसा नहीं समझता। मैं तो इनको ईश्वर की ओर से धन का संरक्षक मात्र मानता हूँ। यदि इन्होंने सत्य हृदय से इसको ठीक काम समझ कर दिया है तो इन्होंने अपनी संरक्षकता ठीक निभाई है।"

"क्यों जी! आप क्या समझते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आज तक तो इसको ठीक समझता था। इन औरतों की हत्याओं की बात सुन मेरे मन में संशय उत्पन्न हो गया था। अब मिस्टर सूद की बातें सुन तो मेरे मन के संशय का निवारण हो गया है।"

"तब ठीक है। सशस्त्र क्रान्ति एक बात है। वह आप लायलपुर के जाटों से करवाने जा रहे थे। उसके लिए जनता तैयार नहीं थी। आतंक पैदा करना दूसरी बात है। यह आन्दोलन का एक मार्ग है।"

"परन्तु सरकार का इस घटना के बाद एक दमन–चक्र चलेगा। वह हममें अधिक आतंक उत्पन्न कर सकती है।"

"यह तो होगा ही। सरकार हमारे प्रत्येक प्रकार के आन्दोलन का उत्तर तो देती है। इसका भी उत्तर देगी।

"यह अब हमारा काम है कि हम सरकार के आतंक का प्रभाव न होने दें। सरकारी आतंक का प्रभाव मिटाने का उपाय है कि इन हथेली पर जान लिये घूमने वालों को हम शूरवीरों की पदवी दें। हुतात्माओं के लिए शुभ कामना करें। उनकी स्मृति में पर्व मनायें। उनकी समाधियों पर मेले लगावें।"

भोजन का समय हो गया। रुक्मिणी, जिसका चित्त रामरक्खामल्ल के मुख से विवेक की बातें सुनकर हल्का हो गया था, पूछने लगी, "आप ताई जी को लेकर नहीं आये?"

"आज राधा उनको सरला देवी के घर ले गई है।"

"कुछ विशेष बात है वहाँ?"

"यह तो बताया नहीं। हाँ, सरला ने लेखवती को बुलाया अवश्य है।"

: 10 :

सायंकाल आज देसाई और रुक्मिणी रामरक्खामल्ल को संगीत भवन में अपनी मोटरगाड़ी में छोड़ने आये तो राधा इत्यादि लौट चुके थे। उनको छोड़ने के लिए सरला अपनी कार में आई थी। मकान के नीचे सरला की कार खड़ी देखी तो देसाई तथा रुक्मिणी भी मकान पर चढ़ गये। सब दूसरी मंजिल पर ड्राइंग–रूम में बैठे थे। चाय इत्यादि ली जा रही थी। जब रामरक्खामल्ल इत्यादि पहुँचे तो सरला ने कह दिया, "लो भापाजी आ गये।

"तुम लोग अभी चाय ही पी रहे हो?"

"हम जुहू गये थे। वहाँ खाना–पीना बहुत हुआ है। अब रात का भोजन करने का विचार नहीं। इस कारण इस समय की चाय देरी से पीने का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। हमने समझा कि आप आये हुए होंगे और आप के साथ चाय पियेंगे। परन्तु आप थे नहीं। आपकी प्रतीक्षा की तो और भी देरी हो गई। अब चाय पीने लगे हैं तो आप भी आ गये हैं।''

''हम तो सब चाय पीकर आये हैं।'' देसाई ने कह दिया।

''फिर पी लेने में हानि है क्या?''

''तो लाभ है कुछ?'' रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया।

''हाँ।'' सरला ने कहा, ''आपसे एक परामर्श करना है। चाय पीते हुए बात हो जायेगी।''

''तब तो चाय पियेंगे।'' रामरक्खामल्ल ने कहा।

जब इन सबके लिए भी प्याले आ गये तो सरला ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, ''आज राधा, ताईजी, सरस्वती इत्यादि को मैंने विशेष रूप से बुलाया था। हमारे एक दूर के सम्बन्धी कोलम्बो में व्यापार करते हैं। वे एक महीने से अपने व्यापार के सम्बन्ध में आये हुए हैं। एक दिन वे हमारे संगीत–भवन में भापाजी की प्रार्थना सुनने आये थे और वहाँ राधा की रूपरेखा देख वे इस पर मुग्ध हो गये। वे विधुर हैं। उनकी पत्नी का देहान्त हुए छः वर्ष हो चुके हैं। उनकी एक कन्या है। वह इस समय आठ वर्ष की है। इस समय उनकी अपनी आयु चौंतीस वर्ष की है। मैंने आज राधा को बुलाया था, जिससे यह उनको देख ले। मेरा विचार है कि यह सम्बन्ध रुक्मिणी और देसाई जी के सम्बन्ध से घटिया नहीं है।''

''तो राधा ने क्या कहा है?''

''हम दोपहर का खाना खाकर घर से चले थे। वहाँ पर भी और फिर जुहू पर भी मैंने दोनों को परस्पर मिलने का पर्याप्त अवसर दिया है। इनकी इस विषय पर परस्पर बात हुई है अथवा नहीं और हुई है तो क्या हुई है, मुझको विदित नहीं। मैंने आपके सामने ही बात करने का विचार किया हुआ था। यों तो वे सज्जन यहाँ भी आये हुए थे। आपके आने से दस मिनट पूर्व ही वे अपनी लड़की के साथ यहाँ से गये हैं।''

''क्यों राधा! कुछ कहा था उन महाशय ने?''

राधा ने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, ''हम कई घंटे परस्पर बातें करते रहे हैं। हमने चाँद–सितारों की बातों से लेकर 'चार्ली चेपलेन' और 'पैडसे' तक के विषय में बातें की हैं, परन्तु उन्होंने न तो वाणी से, न ही अपनी किसी चेष्टा से यह प्रकट करने का यत्न किया है कि वे मुझसे विवाह के इच्छुक हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती हूँ," सरला ने कहा, "कि वे भी आपके सामने ही प्रस्ताव रखने वाले थे।"

"अच्छा राधा! अब तो प्रस्ताव रख दिया गया है। क्या प्रतिक्रिया है तुम्हारे मन में उसके विषय में?"

"उसके विषय की तो बात पर विचार तब हो, जब मैंने विवाह करने का निश्चय कर लिया हो, जब विवाह करने का निश्चय कर लूँगी तो मैं फिर इनके अथवा उनके विषय में विचार करूँगी।"

"उनके किसके?" सरला ने पूछ लिया।

"कोई क ख ग, जिनका नाम मैं अभी प्रकट करना नहीं चाहती। मैं तो अभी इनका, जो आज मिले हैं, नाम भी नहीं जानती।"

"तो क्या कभी विवाह करने का विचार है भी?"

"अभी तक नहीं, कल को क्या होगा कह नहीं सकती।"

"तो किसी को तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए?"

"मुझको इसकी आवश्यकता अनुभव नहीं होती।"

"कितनी आयु होगी तुम्हारी?" सरला ने पूछ लिया।

"जहाँ तक मुझको ज्ञात है मैं इस समय सत्ताईस–अट्ठाईस वर्ष की हूँ।"

"आयु तो विवाह करने की है।"

"हाँ, मगर विवाह का आयु के साथ अधिक सम्बन्ध नहीं होता।"

"सत्य?"

"भापाजी ने ऐसा ही बताया है।"

सब अर्थ–भरी दृष्टि से लेख की ओर देख हँसने लगे।

चाय समाप्त हुई तो रामरक्खामल्ल ने सरला को कह दिया, "फोकट में चाय पिलाई है तुमने। मतलब की बात तो कुछ भी नहीं हुई।"

"मेरा विचार था कि राधा मान जायेगी।"

"क्या वह सत्य ही बहुत सुन्दर और योग्य व्यक्ति है?"

"जी, सुन्दर, योग्य, धनी और व्यवहारकुशल।"

"तब तो राधा को अपनी बात पर पुनरावलोकन करना चाहिए।"

"विवाह की इच्छा सुन्दर और धनी देख कर करने लगती तो आज तक कई विवाह कर चुकी होती। विवाह की इच्छा तो अपनी अन्तरात्मा से सम्बन्ध रखती है। वह अभी इस बात के लिए तैयार नहीं हो रही।"

"जब बूढ़ी हो जाओगी तब तैयार हुई तो क्या लाभ?"

"सरला जी, आप वर्माजी से पूछ लीजिए कि मुझको क्या करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यदि वे कहेंगे कि मुझको विवाह कर ही लेना चाहिए तो विचार का विषय अवश्य हो जायेगा। वे मेरे पिता तुल्य हैं। उनकी बात को टालना कठिन हो जायेगा।''

''तब तो एक मार्ग अभी है।''

''और मैं पूछ रही हूँ,'' रुक्मिणी ने बातों में दखल देते हुए कहा, ''कि मैं अब माँ नहीं रही क्या? मुझसे पूछने की बात ही नहीं हो रही?''

सब हँस पड़े। राधा ने कहा, ''हाँ माताजी! यदि पिताजी की बात पर इन्जेक्शन लगवाना होगा तो आप से सहायता लूँगी ही।''

''किन्तु यह कैसे समझती हो कि मैं तुम्हारे पिताजी की सम्मति का विरोध करूँगी?''

''जब माता–पिता एकमत होकर विवाह के लिए कहेंगे तो न मानना धृष्टता होगी।''

''खूब!'' सरला ने कह दिया, ''अब तो बात बहुत सरल हो गई है। लाला बनवारीलाल जी से कहूँगी कि वे मिस्टर वर्मा और मिसेज देसाई के सामने अपनी अर्जी पेश कर दें।''

रात भोजन तो होने वाला नहीं था, इस कारण जब सरला, रुक्मिणी और देसाई चले गये और बच्चे अपने–अपने काम में लग गये तो राधा सरस्वती को यह कह, 'भापाजी से एक निजी बात करने जा रही हूँ', अकेली रामरक्खामल्ल के कमरे में जा पहुँची। रामरक्खामल्ल आशा कर रहा था कि वह उससे राय करने आयेगी? इस कारण उसे अकेली आते हुए देख समझ गया कि वह उससे अपने विवाह के विषय में परामर्श करने आई है। उसने कहा, ''आओ राधा! बताओ क्या कहना चाहती हो?''

''आप मेरे खटाऊ जी से सम्बन्ध को जानते हैं। मेरा उनसे मैत्री का–सा सम्बन्ध है। इस मित्रता से हमारा यौन–सम्बन्ध भी बनता रहता है। इस सम्बन्ध के लिए अथवा किसी अन्य परस्पर सहायता के लिए हम एक–दूसरे पर न तो एहसान करते हैं, न ही एहसान मानते हैं। आर्थिक दृष्टि से हम सर्वथा स्वतंत्र हैं। हमारी मैत्री–सम्बन्ध के मूल में धन नहीं है।

''खटाऊ जी मुझसे विवाह करने के लिए कई बार कह चुके हैं। मैंने उनके प्रस्ताव को ठुकराया नहीं, परन्तु मैं सदा यह पूछा करती हूँ कि वर्तमान सम्बन्ध में विवाह करने से क्या अधिक होगा?

''हिन्दू–मीमांसा में तो पति–पत्नी के लिए यौन–सम्बन्ध और परस्पर सहायता के अतिरिक्त भी गृहस्थ में बहुत कुछ है। उदाहरण के रूप में बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पालन–पोषण और शिक्षा–दीक्षा। खटाऊजी के बच्चा तो है नहीं। मुझको कोई और बच्चा होता दिखाई देता नहीं। इस पर भी संतोष तो है ही। उसके पालन–पोषण और उसकी शिक्षा–दीक्षा के विषय में हम सहमत नहीं हो सके। इस कारण विवाह नहीं हो सका। इसके अतिरिक्त भी कई गृहस्थ–सम्बन्धी विषय हैं। वे उनमें मुझसे सहमत नहीं।

"मिस्टर बनवारीलालजी भी इन विषयों में सहमत होंगे अथवा नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। सन्तोष के विषय में मुझसे क्या चाहेंगे मैं जानती नहीं। इसके अतिरिक्त भी मैं अपने को खटाऊजी के अधिक समीप पाती हूँ।"

"हाँ, तो तुम क्या चाहती हो?"

"मैं यह जानना चाहती हूँ कि मेरे भाग्य में विवाहित–जीवन है अथवा नहीं और फिर वह इन दोनों भद्र–पुरुषों में से किसके साथ है, यह आप बता दीजिए।"

रामरक्खामल्ल ने कहा, "मैंने इतना तो तुमको बता रखा है कि तुम इस वर्तमान जीवन में नहीं रहोगी। अब यह बताता हूँ कि मुझको तुम खटाऊजी की पत्नी दिखाई देती हो। इस पर भी तुम चाहो तो भाग्य को बदल सकती हो।"

"मुझको बदलने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती। साथ ही मैं अभी खटाऊजी को विवाह पर उस गम्भीरता से विचार करते नहीं देखती, जिससे कि उन्हें करना चाहिए।"

"तो देख लो। मैं इसमें तुमको कुछ भी राय नहीं दूँगा।"

अगले दिन राधा को मिस्टर वर्मा का टेलीफोन आया। राधा लड़कियों को संगीत सिखा रही थी। राधा को 'क्लास' छोड़नी पड़ी। वह टेलीफोन पर आई तो वर्मा ने पूछ लिया, "राधा! यह तुमने क्या झगड़ा डाल दिया है, मेरे गले में?"

"क्या झगड़ा है?"

"लाला बनवारीलाल मेरे प्रातः के दो घण्टे व्यर्थ गँवा गये हैं। तुमने सरला को कहा प्रतीत होता है कि मैं तुम्हारा पिता हूँ। इस कारण मेरे कहने का तुम आदर करोगी। भला यह कहाँ की शराफत है कि एक तो बिना मेरी स्वीकृति के तुम मेरी लड़की बन बैठी हो, अब किसी को अपना दामाद बनाने के लिए कह रही हो?"

"पिताजी! मैं सत्य कहती हूँ कि मैं स्वयं को आप की इतनी ही आभारी मानती हूँ जितनी कोई लड़की हो सकती है। आप मानें या न मानें, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको आप कैसे मना कर सकते हैं, कि मैं आप में पिता की भावना न रखूँ?"

"यहाँ तक तो ठीक है। तुम ऐसी लड़की हो कि मुझको तुम्हारे विषय में कभी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। परन्तु जब मैं किसी को दामाद बनाऊँगा तो न जाने वह मुझसे क्या–क्या आशा लगाने लगेगा?"

"इसी कारण तो मैंने सरलाजी को आपकी ओर भेज दिया है। मैं जानती थी कि आप मेरे किसी से भी विवाह की बात में हाँ नहीं करेंगे।"

"बहुत चतुर हो तुम! परन्तु यह तो विचार करो कि बनवारीलाल सरला की फूफी का लड़का है। बनवारीलाल का पहला विवाह मैंने बम्बई में एक पारसी की लड़की से, जो मेरे थियेटर में काम करती थी, कराया था। अब सरला चाहती है कि मैं तुमसे बनवारीलाल की सिफारिश कर दूँ। यदि हाँ करता हूँ तो अपनी आत्मा के विरुद्ध कहता हूँ और यदि ना करता हूँ तो सरला नाराज हो सकती है।"

"क्षमा करें पिताजी! मुझको सरलाजी का बनवारीलालजी से सम्बन्ध विदित नहीं था। अब मैं आपको इस झमेले से निकलने का एक मार्ग बता सकती हूँ।"

"हाँ–हाँ! बताओ?"

"लालाजी से कहें कि सरलाजी के साथ भापाजी से मिल लें। यह तो सब लोग जानते हैं कि भापाजी भविष्य का ज्ञान रखते हैं। अतः यदि भापाजी कह देंगे कि मेरा विवाह बनवारीलाल से होना है तो फिर आप के सिर से उत्तरदायित्व टल जायेगा और अगर भापाजी ने इसके विपरीत कहा तो फिर आपको बनवारीलालजी को जवाब देने में सुगमता हो जायेगी?"

"तुमने तो पूछा होगा, भापाजी क्या कहते हैं?"

"मैंने पूछा है और इसी कारण आपको इस झगड़े से मुक्ति पाने के लिए यह मार्ग बता रही हूँ।"

मध्याह्न के भोजन के समय मिस्टर वर्मा और सरला आ गये। जब रामरक्खामल्ल भोजन कर विश्राम करने अपने कमरे में गया तो वर्मा तथा सरला वहाँ आ उपस्थित हुए। रामरक्खामल्ल ने उनका स्वागत करते हुए कहा, "आइये वर्माजी! इस समय आने का कष्ट किस कारण किया है?"

"राधा के विवाह के विषय में आप से परामर्श करने आये हैं।"

"क्या परामर्श करना चाहते हैं?"

"यही कि राधा के भाग्य में विवाह लिखा है अथवा नहीं?"

"मैंने उसके भविष्य को अपनी योग–दृष्टि से देखने का यत्न किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा समझ में आया है कि वह निकट के भविष्य में विवाह करेगी।"

"किसके साथ?"

"यह बताने का अधिकार मेरे पास नहीं है। यह तो मैं उन दोनों को ही बता सकता हूँ, किसी तीसरे को नहीं। साथ ही मैं सदा यह कहता रहता हूँ कि भाग्य बदला जा सकता है।"

"अच्छा एक बात बताइये। राधा का विवाह बनवारीलालजी के साथ होगा अथवा नहीं?"

"मैंने बनवारीलालजी को देखा नहीं। इससे मैं बता नहीं सकता कि राधा का जीवन–साथी बनवारीलाल है अथवा नहीं।"

"तो हम उसको अभी बुला सकते हैं। वह नीचे मोटर में बैठा है।"

"तो बुला लीजिये।"

वर्मा नीचे गया और बनवारीलाल को लेकर ऊपर आ गया। रामरक्खामल्ल लाला बनवारीलाल को अपने समीप बैठाकर उससे बातें करने लगा। उसने पूछा, "आप कोलम्बो में क्या काम करते हैं?"

"मैं जवाहरात का काम करता हूँ।"

"कहाँ के रहने वाले हैं?"

"हम लाहौर के रहने वाले हैं। मैं सरलाजी की फूफी का लड़का हूँ।"

रामरक्खामल्ल ने कुछ क्षण तक विचार कर कह दिया, "राधा का विवाह इनसे नहीं बँधा। मेरी तो एक और सम्मति है कि इनको विवाह करना ही नहीं चाहिए।"

"क्या मतलब आपका?" बनवारीलाल ने पूछ लिया, "क्या आपने मेरा जन्म–पत्र देखे बिना यह ज्योतिष लगा लिया है कि मेरे नक्षत्र राधा के नक्षत्रों से नहीं मिलते?"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं ज्योतिषी नहीं हूँ। मैं तो अपने अनुभव और दूर–दृष्टि के आधार पर ही यह बात कह रहा हूँ। मानना न मानना आपके अधीन है।"

"आपने मिस्टर वर्मा और रुक्मिणी पर ऐसा आतंक बैठा रखा है कि वे आपकी उँगलियों के संकेत पर नाचते हैं और उनके आश्रय आप सुन्दर छोकरियों में, गोपियों में कान्हा की भाँति विचरते हैं।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा और हँस कर बोला, "बनवारीलालजी! यह भाग्य की बात है। इसमें मैं कुछ नहीं कर रहा। अनायास ही ये छोकरियाँ एकत्रित हो रही हैं। अब बताओ मैं कैसे उनको यहाँ से निकाल दूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर वर्मा ने वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "भापाजी की भविष्यवाणी कई बार सत्य होती देखी है। अतः बनवारीलालजी! आपको सतर्क तो रहना चाहिए। जब ये कह रहे हैं कि आपके लिए विवाह शुभ नहीं तो फिर सावधान रहने की आवश्यकता तो है ही।"

"मुझको इनकी भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं। मैं आर्य–समाज में रहा हूँ और ज्योतिष, सिद्धि, साधना को ढोंग समझता हूँ।"

"ठीक है। आपको अधिकार है कि आप मेरी बात पर विश्वास न करें और अपनी रुचि के अनुसार अपना व्यवहार बनायें।"

वर्मा बातों में उग्रता के आने से डर कर उठ बैठा और बोला, "चलिये। मुझको तो अपने दफ्तर में कुछ काम है।"

: 11 :

यह राधा के विवाह की चर्चा अभी समाप्त नहीं हुई थी कि लाहौर से श्याम, कला इत्यादि आ पहुँचे। रामरक्खामल्ल उनको स्टेशन पर लेने गया हुआ था। यह रामरक्खामल्ल का ही निश्चय था कि श्याम और कला तो होटल में ठहरें और सदानारायण, सोहन और मधु संगीत–भवन में लेख के साथ रहें। इस पर भी सायंकाल सब भवन में एकत्रित हो जाते थे। कला ने आते ही सोहनी के विषय में पूछ लिया। रामरक्खामल्ल ने बताया, "वह स्टेशन पर आना चाहती थी, परन्तु वह आ नहीं सकी। वह एक बच्चों के स्कूल में काम करती है। वहाँ से इस समय आ नहीं सकी।

"सायंकाल वह संगीत–भवन में आयेगी। उस समय तुम्हारी सखी सरस्वती भी, जो पहले नसीरा थी, तुमसे मिलेगी। वह तुम्हारे विषय में बहुत पूछगछ करती रहती है।"

श्याम और कला वहाँ से सीधे होटल में चले गये। लेख उनके साथ ही चली गई। रामरक्खामल्ल अन्य सबको लेकर संगीत–भवन में आ गया। सदा इत्यादि को रत्नलाल और सन्तोष के साथ रख दिया गया।

"सुनाओ सदा। परीक्षा–फल कैसा रहा?" सायंकाल जब सब परिवार के लोग एकत्रित हुए तो रामरक्खामल्ल ने लाहौर के विषय में जानने के लिए बात आरम्भ कर दी।

"मैं और सोहन दोनों उत्तीर्ण हो गये हैं। मैं फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ हूँ और सोहन सेकण्ड डिवीजन में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम रामरक्खामल्ल के पास बैठा था और उसके पीछे बैठे थे मधु, रत्नलाल और सन्तोषकुमार। रामरक्खामल्ल के पास बैठी थी लेखवती और उसके साथ कला तथा कला की सहेलियाँ राधा और सरस्वती। सदानारायण रामरक्खामल्ल के सामने और श्याम तथा सोहनी के बीच में बैठा था। सब भूमि पर बैठे चाय पी रहे थे। रामरक्खामल्ल के सामने सदा था। इस कारण बात सदा से ही आरम्भ हुई थी। उसने आगे पूछा, ''अब आगे क्या करने का विचार है?''

''कॉलेज में पढ़ूँगा। विज्ञान पढ़ने में मेरी रुचि नहीं है। मैं इतिहास, गणित, संस्कृत पढ़ना चाहता हूँ।''

''हाँ, यदि तुम इन विषयों को भी ठीक ढंग से पढ़ोगे तो इन्सान बन जाओगे।''

''भापाजी। इन्सान तो मैं हूँ।''

''अपने को इन्सान मानना और वास्तव में इन्सान बनना दो भिन्न–भिन्न बातें हैं। परन्तु जीविकोपार्जन के लिए क्या करना चाहते हो?''

''किसी कॉलेज में प्रोफेसर बनने का विचार रखता हूँ।''

''भैया क्या कहते हैं?''

''वे तो चाहते हैं कि जो भैया जवाहरलाल ने पढ़ा है, वही मैं पढ़ूँ। परन्तु मेरा विचार इतिहास में विशेषाध्ययन करने का है।''

''ठीक है। परन्तु प्रोफेसर की आय तो उतनी नहीं हो सकती, जितनी डाक्टर की होगी।''

''यह छोटे भापा ने भी कहा है, परन्तु मेरी रुचि इतिहास में ही है।''

''तुम्हारी माँ कैसी है?''

''बहुत मजे में है। लाज बहन दुःखी मालूम होती है?''

''क्यों?''

''यह मुझको मालूम नहीं। वह आजकल कभी–कभी रोया करती है।''

इससे रामरक्खामल्ल गम्भीर विचार में पड़ गया। कुछ विचार कर उसने लेख से कहा, ''लेख! तुमको कभी लाहौर जाना चाहिए। डेढ़ वर्ष से अधिक हो गया है। तुम तो गई ही नहीं।''

''अब वहाँ की बातें सुन चित्त करने लगा है। मैं समझती हूँ, हवन, यज्ञ, दान, दक्षिणा इत्यादि कम हो गया है।''

रामरक्खामल्ल को लाज की उदासी का रहस्य पता चल गया। वह सोहनी के काम में सदा संलग्न रहने के स्वभाव को जानता था। उसके प्रसन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और आशावादी रहने का रहस्य ही यह था।

रामरक्खामल्ल ने बात बदल दी–"कला! प्रसन्न हो?"

कला ने अपने स्थान पर बैठे–बैठे ही माथा भूमि पर टेक दिया।

"उठो, उठो। यह क्या कर रही हो।"

"बड़े भापा! मैं अपने सौभाग्य की वन्दना कर रही हूँ।"

"तो तुम बहुत प्रसन्न हो?"

"जी। भगवान की कृपा है कि दिखाई नहीं देता। यदि उस जीवन के बाद जिसमें से निकली हूँ, ये आँखें देखती होतीं, तो जने–खने के तिरस्कार को देखती और दुःखी होती। परमात्मा ने इस सब से बचा लिया है।"

"परन्तु श्याम की सहानुभूति और प्यार को भी तो देख नहीं पातीं?"

"भापा! वह तो बिना आँखों के भी दिखाई देता है।"

"ईश्वर तुमको सुखी रखे।"

कला ने पुनः माथा टेक दिया।

"मधु! क्या होता है आजकल?"

"भापा! मैं सीनियर कैम्ब्रिज स्कूल में पढ़ता हूँ।"

"क्या करोगे वहाँ पढ़ कर?"

"मैं विलायत में जाकर पढ़ना चाहता हूँ।"

"वहाँ क्या रखा है?"

"वह विलायत है। वहाँ बड़े–बड़े कॉलिज और यूनिवर्सिटियाँ हैं।"

"परन्तु वहाँ बड़े–बड़े प्रोफेसर भी हैं।"

"जरूर होंगे।"

"अच्छी बात है। देखेंगे, तुम क्या बनते हो।"

"इसके बाद श्याम से धीरे–धीरे बातें होने लगीं। सरस्वती कला को हाथ से पकड़ अपने कमरे में ले गई। सोहनी और राधा वहीं बैठी रहीं। ये लेखवती के साथ बातें करने लगीं।

सरस्वती यह जानने के लिए उत्सुक थी कि उसका पति उससे कैसा व्यवहार करता है। जब कला ने लाहौर जाने पर पहली ही रात की घटना का वर्णन किया तो सरस्वती को बहुत प्रसन्नता हुई। उसके मन में सोहनी की महिमा बढ़ गई।

इसके पश्चात् सरस्वती ने पूछ लिया, "यह सदा कौन है?"

"मेरा देवर है। ये तीन भाई और दो बहनें हैं। तीनों में मेरे साहब सब से बड़े हैं। यह सदानारायण सब से छोटा है। पढ़ाई में बहुत होशियार है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही मीठे स्वभाव का है। मधु तो उसके पीछे लट्टू हो रहा है।''

''कितनी आयु होगी इसकी?''

''सोलहवें में जा रहा है।''

इससे सरस्वती गम्भीर हो गई। उसे चुप देख कला ने पूछ लिया–

''क्यों, क्या बात है?''

''कुछ नहीं, देखने में तो उन्नीस–बीस का दिखाई देता है।''

''फुटबॉल खेलता है और यों भी बहुत मनचला है। अकेला ही पाँच–दस से भिड़ जाता है।''

सरस्वती ने बात बदल दी–''सोहनी कहाँ से मिल गई तुम्हें?''

''क्यों, कैसी लगी है?''

''उसकी रुचि संगीत में नहीं है। वैसे निरन्तर दिन में पन्द्रह–सोलह घण्टा काम करती है। अपने काम में वह प्रसन्न रहती है। किसी से व्यर्थ में बोलती–चालती नहीं है। राधा बहन कह रही थीं कि छोटे बच्चों की देखभाल में दिन–भर लगी रहती है।''

कला ने सोहनी का पूर्ण इतिहास और उसका मधु के पिता के सम्पर्क में आने की बात बता दी। तदनन्तर सोहनी की उसके प्रति सहानुभूति और सेवा का वर्णन कर दिया।

''हिन्दुओं में विधवाएँ विवाह क्यों नहीं करती?'' सरस्वती ने पूछ लिया।

''कभी भापाजी से पूछना। मैं तो यही कह सकती हूँ कि रिवाज नहीं था। अब तो कानून बन गया है कि विवाह हो सकता है। इस पर भी ऐसी बहुत हैं, जो रिवाज के अधीन दोबारा विवाह करना नहीं चाहतीं।''

''राधा ने सोहनी से कहा था कि विवाह कर ले। इस पर उसने पूछ लिया कि क्या होगा विवाह करने से? राधा का कहना था एक साथी मिल जाता है। इसका उत्तर उसने यह दिया कि जहाँ बिना साथी के काम चल जाये तो फिर साथी के झंझट की क्या आवश्यकता है। राधा ने यह भी बताया था कि उसका मतलब यह नहीं कि वासना–तृप्ति के लिए कोई भाड़े का साथी ले आती है। उसका मतलब है कि वही शक्ति जो भोग–विलास में व्यय होती है, किसी दूसरी ओर व्यय की जाये तो बिना भोग–विलास के भी मनुष्य में तृप्ति रहती है।''

सरस्वती चुप कर गई।

कला ने फिर पूछा, ''चुप क्यों कर गई हो?''

''मैं विचार कर रही थी कि यह किस प्रकार हो सकता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राधा से पूछ लेना कि वह क्या करती है?"

"उसके तो एक बच्चा हो चुका है। एक बच्चा होने से ही शरीर में काम को सहने की शक्ति आ जाती है।"

"मुझ में तो नहीं आई थी। हाँ, वासना के पीछे भागते हुए जीवन के भयंकर परिणाम देखकर मन अवश्य भर गया है। सोहनी की यह बात नहीं। मैं तो इसका रहस्य एक यही समझी हूँ कि वह दूसरों की सेवा में इतना मन लगा लेती है कि शरीर की पूर्ण शक्ति का बहाव उधर ही हो जाता है।"

ये लोग एक मास के लिए बम्बई आये थे और ये नित्य कहीं–न–कहीं घूमने चले जाते थे। नियमानुसार रत्नलाल इत्यादि बहुत प्रातःकाल भ्रमण के लिए चले जाते थे। अब मधु, सोहन और सदा भी उनके साथ जाने लगा था। सदा सब से बड़ा था। इस कारण वह ही उनके घूमने का कार्यक्रम बनाया करता था। ये सब प्रार्थना के समय संगीत–भवन में लौट आते थे और प्रार्थना में सम्मिलित होते थे।

प्रार्थना के उपरान्त सरस्वती अपने अभ्यास में लग जाती थी। रत्न तथा सन्तोष भापाजी से संस्कृत पढ़ते थे। सदा इस समय कमरे में बैठ कोई पुस्तक पढ़ा करता था।

सोहन के विषय में विचार होने लगा था कि वह क्या करेगा। रामरक्खामल्ल का विचार था कि जब तक मैट्रिक में फर्स्ट डिवीजन न आये तब तक कॉलेज में पढ़ने का कुछ भी अर्थ नहीं।

सदानारायण ने आने के दूसरे दिन ही कह दिया था, "भापा! सोहन के लिए किसी काम का प्रबन्ध करना चाहिये।"

"यह आगे नहीं पढ़ेगा क्या?"

"इसके पिता इसकी पढ़ाई का खर्च नहीं दे सकते।"

"ओह! ठीक है। मैं समझता हूँ, आगे पढ़ने में कुछ प्रयोजन भी नहीं। अच्छा, विचार करूँगा।"

विचार हो गया। एक दिन रामरक्खामल्ल ने सोहन को पृथक् में बुलाकर पूछ लिया, "सोहन! किस प्रकार का काम करना चाहते हो?"

"जिससे परिवार की निर्धनता दूर हो। पिताजी तुरन्त नौकरी ढूँढ़ने के लिए कह रहे थे। श्याम भापा से कह रहा था और वे नौकरी की आशा दिला रहे थे। सदा कहने लगा कि बम्बई में काम करना ठीक रहेगा।"

"देखो सोहन! नौकरी पाने के इच्छुकों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। जिस अनुपात से स्कूलों और कॉलेजों में से लड़के निकल रहे हैं, उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार नौकरियाँ अधिक नहीं हो रहीं।

"इससे नौकरी में मुकाबला बढ़ रहा है। काम वह करना चाहिये, जिससे काम करने वालों की वृद्धि के साथ–साथ काम भी बढ़ता जाता हो। वह है व्यापार, उद्योग और मजदूरी। मजदूरी तुम करोगे नहीं। अभी पढ़े–लिखों को मजदूरी करने की आवश्यकता भी नहीं। यदि वर्तमान पढ़ाई की वृद्धि होती गई तो पढ़े–लिखे मजदूरी भी करेंगे।

"उद्योग बिना पूँजी के सम्भव नहीं। यही बात व्यापार की है। परन्तु दोनों में पूँजी का निर्माण किया जा सकता है।

"देखो परिश्रम धन है। परिश्रम से आय करनी चाहिये। आय से व्यय कम रख कर कुछ–न–कुछ बचत करनी चाहिये। यह बचत जब इकट्ठी होकर परिश्रम का मूल्य बढ़ा दे तो इसी को पूँजी कहते हैं।

"बताओ, कर सकोगे?"

"परिश्रम करने के लिए भी तो कोई स्थान, कोई ढंग होना चाहिये।"

"ठीक है। वह मैंने तुम्हारे लिए ढूँढ़ा है। एक कपड़ा मिल की वर्कशाप में तुमको फिटर का काम सीखना होगा। जब तक काम सीखोगे, चालीस रुपया वेतन मिलेगा। काम सीख लोगे तो एक सौ रुपया मासिक। तब अवसर होगा कि तुम पूँजी निर्माण करो। यदि तीन–चार वर्ष में कुछ सहस्र एकत्रित कर सके तो फिर उससे अपनी वर्कशाप खोलने का ढंग बता दूँगा। उन्नति करने का एक गुर है। वह यह कि आय से व्यय कम रखो। बचत को सदा पूँजी के रूप में परिणत करने का उपाय सोचो। आज से दस वर्ष पश्चात तुम्हारे पिता को वह छोटी–सी दुकान करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"मैं तैयार हूँ।"

"तो यह पत्र लेकर इस पर लिखे पते पर चले जाओ। आज वहाँ नाम लिखा आना और कल से काम पर लग जाओगे।"

अगले दिन से सोहन ने काम पर जाना आरम्भ कर दिया। वह सात बजे वर्कशाप में उपस्थित होता था। घर से रोटी कपड़े में बाँध कर ले जाता था। बारह बजे विश्रान्ति होती थी और वह एक पेड़ के नीचे बैठ भोजन करता। नल से ठंडा जल पीता और एक बजे पुनः काम पर लग जाता। पाँच बजे छुट्टी का घंटा बजता और वह अपने रोटी वाले बर्तनों की पोटली उठाता और घर को चल पड़ता।

साढे पाँच बजे घर पहुँच स्नान करता, कपड़े बदलता और सदा इत्यादि के साथ चौपाटी इत्यादि की ओर चल देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा मध्याह्न का भोजन कर अपने कमरे में आराम करता था। एक बजे रत्नलाल और सन्तोष मास्टरजी से गणित और हिन्दी सीखते थे। सदा अकेला बैठा–बैठा ऊब जाता तो तायी लेखवती के पास जा बैठता। एक दिन वह गया तो सरस्वती वहाँ बैठी थी। वह बाहर से ही उसे बैठा देख लौट आना चाहता था, किन्तु लेखवती ने बुला लिया, ''सदा! आओ। किस काम से आये हो?''

''ताई! बिलकुल खाली था। इस कारण विचार आया कि आप से ही कुछ सीख ले लूँ।''

''आओ, बैठो। यह सरस्वती भी सीख ले रही है। तुम भी सीख ले लो।''

सदानारायण बैठ गया। लेख बता रही थी, ''सत्य परम धर्म है। धर्म का फल सुख होता है।

''कई लोग अपने–आप से भी झूठ बोलने लगते हैं। वह इस तरह कि वे जानते हुए भी कि अमुक काम अथवा वचन से हानि होगी, परन्तु वे मन में कल्पना करने लगते हैं कि अमुक काम उसको लाभ पहुँचायेगा। अनुभव और अनुभवी पुरुषों के कथन से तो उस काम से लाभ नहीं होना चाहिए। परन्तु अपनी इच्छा कल्पना के रूप में उसको सुखमयी प्रतीत होने लगती है। यह है अपने–आप से झूठ बोलना।

''यह महापाप है और इसका परिणाम घोर नरक होता है।''

''परन्तु ताईजी!'' सरस्वती ने पूछ लिया, ''यह कैसे पता चले कि हम कल्पना कर रहे हैं अथवा जो कुछ हमारी इच्छा है वह स्वाभाविक और पूरी होने वाली है?''

''किसी बात की यथार्थता जानने के तीन उपाय हैं। इतिहास, अनुभवी पुरुषों का कथन और इच्छा में धर्म–परायणता।''

''और ताई! यदि इतिहास ही अशुद्ध लिखा गया हो तो?'' सदा का प्रश्न था।

''आप्त पुरुषों का कथन उस इतिहास की परीक्षा के लिए एक उपाय है। इच्छा भी धर्मानुकूल होनी चाहिए।''

इस प्रकार एक घंटा–भर लेखवती उनको बताती रही। इस समय सदानारायण जाने लगा तो सरस्वती भी उसके साथ ही चल पड़ी। सदानारायण अपने कमरे में जाने लगा तो सरस्वती उसके साथ ही वहाँ जा पहुँची।

सदानारायण ने उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो सरस्वती बोली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका क्या विचार है? ताईजी की अपने से झूठ बोलने की बात ठीक है?"

"हाँ! मैं बताता हूँ। इसको हम दूसरे शब्दों में कहते हैं, भ्रम में फँस जाना। अंग्रेजी में इसको 'डिल्यूजन' कहते हैं। इसको 'विशफुल थिंकिंग' भी कहते हैं।"

"परन्तु इसको कैसे जाना जा सकता है? मुझको तो भ्रम–निवारण का उपाय समझ नहीं आया।"

"उपाय भी ठीक ही बताया है। इतिहास का सत्य ज्ञान होने से मिथ्या भ्रम नष्ट हो जाते हैं। धर्मपरायणता का मतलब है यह देखना कि नैतिक दृष्टि से इच्छा ठीक है अथवा नहीं।"

इस समय तक सरस्वती अपने–आप ही एक कुर्सी पर बैठ गई थी। उसने कहा, "मैं उनसे अपने मन की एक समस्या का उत्तर पूछने गई थी। मैंने अभी पूछा ही था कि जीवन की कठिन समस्याओं का सुझाव कैसे ढूँढ़ा जाये, तो वे कहने लगीं कि सत्य व्यवहार से। अभी सत्य के विषय में कह रही थीं कि आप आ गये। तब बातें दूसरी ओर चल पड़ीं। और मैं वास्तविक बात जान नहीं सकी।"

"तो, फिर किसी दिन जाकर पूछ लेना। मैं उस समय वहाँ नहीं जाऊँगा।"

"मैं यह जानना चाहती थी कि यदि आप ताईजी की बात समझ गये हों तो आप से ही क्यों न पूछ लूँ।"

"किन्तु मेरा अनुभव तो बहुत कम है।"

"मुझसे तो अधिक ही होगा। मैं तो थोड़ी उर्दू ही पढ़ी थी। यहाँ आकर थोड़ी हिन्दी और थोड़ी संस्कृत पढ़ ली है। आप तो दस जमायतें पढ़े हैं।"

"इस पर भी मैं लड़कियों की कठिन समस्याओं के विषय में कुछ नहीं जानता।"

"परन्तु मेरी समस्या तो एक लड़के के विषय में है।"

"सत्य? तब तो बात अवश्य मजेदार है।"

"हाँ; एक लड़की किसी लड़के से मुहब्बत करने लगी है। तो वह किस प्रकार यह जान ले कि उसकी मुहब्बत सत्य कल्पना है अथवा मिथ्या भ्रम?"

"यह मुहब्बत की बातें तो वे ही बता सकते हैं जो इस विषय में कुछ जानते हों।"

"मैं मुहब्बत करने को तो नहीं कह रही। मैं तो यह जानना चाहती हूँ कि किस प्रकार जानूँ कि यह कल्पना–मात्र है अथवा भ्रम?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा देखो, ताईजी का गुर इसकी परीक्षा में प्रयोग करें। इतिहास क्या कहता है?"

"इतिहास तो यह कहता है कि लड़कियाँ लड़कों से प्रेम करती हैं और लड़के लड़कियों से। इस कारण यह कल्पना नहीं हो सकती।"

"मैं समझता हूँ कि इतिहास यह कहता है कि प्रायः लड़कियाँ लड़कों से प्रेम नहीं करतीं। इस कारण सम्भावना यही है कि तुम्हारी यह मुहब्बत कल्पना मात्र हो।"

"परन्तु एक से तो प्रेम हो सकता है। इतिहास इसका साक्षी है।"

"तो अब यह देखना चाहिये कि उस विशेष लड़के से प्रेम में इतिहास प्रमाण होने पर आप्त पुरुषों की अनुमति है अथवा नहीं?"

"आप्त पुरुषों की बात तो आप कह नहीं सकते इस कारण तीसरे टैस्ट के विषय में आप क्या कहते हैं?"

"धर्म–परायणता के विषय में?"

"हाँ।"

"जो लड़का सपिंड और सगोत्र हो और स्वस्थ न हो, उससे प्रेम धर्म–विरुद्ध है।"

"तब तो ठीक है। अब मैं जाती हूँ।"

"तो बस हो गया संशय निवारण?"

"जी। देखिये वह लड़का, जिससे मैं मुहब्बत करती हूँ, न तो मेरा सपिंड है, न ही सगोत्र और वह स्वस्थ और सबल भी है। इतिहास भी मेरी इच्छा का विरोधी नहीं।"

"परन्तु वह लड़का भी तुमसे प्रेम करता है क्या?"

"इसके लिए तो मैं यत्न करूँगी। पहले अपने मन में यह निश्चय होना चाहिये था कि मुझको इसमें भ्रम तो नहीं है।"

"हाँ, ठीक है।"

सरस्वती उठ कर भागी और थोड़ी ही देर बाद उसके कमरे से संगीत की ध्वनि सुनाई देने लगी। वह सितार–वादन कर रही थी। सदा की समझ में आया कि वह बहुत ही मधुर बजा रही है।

इस छोटे–से वार्तालाप के बाद तो सरस्वती और सदा प्रायः नित्य मिलने लगे। अब कभी–कभी वह उनके साथ प्रातः उठ, भ्रमण के लिये भी जाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 12 :

अभी श्यामनारायण इत्यादि बम्बई में ही थे कि एक दिन प्रातः की प्रार्थना के समय एक औरत बुर्के में ढँपी हुई वहाँ आ बैठी। रामरक्खामल्ल तो समझ गया कि हो–न–हो यह रहमत है। परन्तु अन्य उसकी ओर देख विस्मय करते रहे। जब वेद–मन्त्रों का गायन हो रहा था, वह बुर्का भी गा रहा था। जब एक मन्त्र की व्याख्या और प्रवचन हुआ तो वह बुर्का बैठा सुन रहा था। फिर प्रार्थना समाप्त हुई तो वह बुर्का उठ कर तायी लेखवती के पीछे–पीछे उसके कमरे में चला गया।

श्यामनारायण ने प्रश्न–भरी दृष्टि में रामरक्खामल्ल की ओर देखा तो उसने कह दिया, ''हमारे भवन की एक सीखने वाली है।''

सरस्वती भी सन्देह कर रही थी कि यह बादलों के पीछे छुपी हुई रहमत ही हो सकती है। उसको तो इस समय कोई काम नहीं था। इस कारण वह भी उसके पीछे–पीछे लेखवती के कमरे में जा पहुँची।

लेखवती बैठी तो बुर्का उठ गया। लेखवती ने मुस्कराते हुए कहा, ''बैठो रहमत!''

''तो ताई। तुमने पहचान लिया था?''

''हाँ, जब तुम उपनिषद् के मन्त्र गान कर रही थीं, तब ही।''

''मुझको वे भूले नहीं हैं।''

''यह तो पता चल गया है।''

''मैं नित्य इनको स्वर, ताल, लय से गाती हूँ।''

''इनके अर्थ का भी चिन्तन करती हो?''

''हाँ, जितने मालूम हैं।''

सरस्वती को उसकी इन बातों में रुचि नहीं थी। उसने पूछ लिया, ''यह बताओ किसके साथ कहाँ रही हो?''

''भापाजी ने भविष्यवाणी की थी कि मेरा इसी स्थान पर विवाह होगा। सो हो गया। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि अपने माता–पिता की नौका से सागर में गिर पड़ी थी और सागर की तरंगें मुझको थपेड़े मार–मार कर किनारे पर ले गई और मैं वहाँ बस गई हूँ।''

''अरी पगली!'' सरस्वती ने कहा, ''उस किनारे का ही पता पूछ रही हूँ।''

''जब किनारे लगी तो पता चला कि सब प्रकार के सुख–सुविधाओं से युक्त है वह किनारा। बम्बई में एक आगा खाँ पैलेस के नाम से स्थान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके एक कोने में जा लगी थी। छः मास से अधिक काल तक हम यूरोप, अमेरिका और जापान में भ्रमण करते रहे। दस–बारह दिन हुए, हम लौट कर घर पहुँचे हैं।

''भापाजी की भविष्यवाणी थी कि मैं काले बादलों में छिप जाऊँगी। सो छिप गई। बादल अपने आँचल से निकलने नहीं देते थे। इस कारण बादलों को ही सिर पर उठा यहाँ आ पहुँची हूँ।''

''अच्छा, कुछ नाश्ता करोगी?'' लेखवती ने पूछ लिया।

''यहीं मँगवा दीजिये। मैं भापाजी के भोजन करने के बाद तक यहाँ ठहरने के विचार से आई हूँ। अपनी मोटरगाड़ी वापस भेज दी है। वह डेढ़ बजे से पहले नहीं आयेगी।''

सरस्वती बोली, ''तो चलो मेरे कमरे में। नाश्ता वहीं होगा।''

''मैं इन बादलों के,'' उसने बुर्के की ओर संकेत कर कहा, ''मालिक से यह वचन देकर आई हूँ कि सिवाय भापाजी के अन्य किसी पुरुष के सामने ये मेरे मुख से उठेंगे नहीं।''

''मेरे कमरे में कोई पुरुष नहीं रहता।''

''तो चलो।''

दोनों वहाँ पहुँचीं और चाय तथा नमकीन, जो सब सीखने वालों को मिलता था, रहमत के लिए भी आ गया। तदनन्तर भोजन के समय तक दोनों बैठीं अनेकानेक विषयों पर बातें करती रहीं। रहमत अपने भ्रमण का वृत्तान्त बताती रही।

भोजन के समय रहमत सब लड़कियों के साथ भोजन करने चली गई। फिर वह बुर्का पहन पुनः रामरक्खामल्ल के कमरे में आ गई। रामरक्खामल्ल को लेखवती ने बता दिया था कि रहमत उनसे मिलने के लिए बैठी है। वह एकान्त में मिलना चाहती है।

जब वह आई तो सदा इत्यादि को लेखवती अपने साथ दूसरे कमरे में ले गई। वहाँ रहमत और सरस्वती दोनों थीं। भापा के सामने बैठ उसने बुर्का उठा दिया और कहा, ''आपके सामने बादलों से निकल आने की इजाजत ले आई हूँ।''

इसके बाद औपचारिक बातचीत होती रही। एकाएक रहमत ने घड़ी में समय देख कह दिया, ''मैं आपसे यह कहने आई हूँ कि भाग्य ने प्रेय मार्ग पर तो ला बैठाया है, परन्तु आपने कहा था कि केवल प्रेय मार्ग कल्याण का मार्ग नहीं है। इस कारण मैं आपसे अब श्रेय का मार्ग पूछने आई हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु रहमत...।"

रहमत ने बात बीच में ही काट कर कहा, "मैं आपसे एक बात कह देना चाहती हूँ कि मेरा नाम अब दुर्गा है।"

"यह कैसे हुआ?"

"हुआ इस प्रकार कि अपने हजरत से पहले तो मैंने यह स्वीकार करवाया कि उनका मुल्क हिन्दुस्तान है। वे तो अपने को एक अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्ति मानते थे। कई दिन के समझाने के बाद उनके मस्तिष्क में यह बात बैठी कि वे हिन्दुस्तानी हैं।

"हम स्विट्जरलैड में पहुँचे और वहाँ जब बर्न के एक होटल में ठहरने गये तो क्लर्क ने हमारा नाम–धाम पूछा और फिर नैशनैलिटी इण्डियन लिख ली। मैंने हजरत से कहा, यह गलत लिख रहा है। इसको ठीक करा दीजिए। उन्होंने क्लर्क से कहा, 'हम हिन्दुस्तानी नहीं हैं। हम इन्टरनैशनेलिस्ट हैं।'

"उसने कहा, 'आप पासपोर्ट दिखाइए। पासपोर्ट दिखाया गया। उस पर लिखा था, 'इण्डियन'। क्लर्क ने कह दिया, 'मैं तो आपको हिन्दुस्तानी ही लिख सकता हूँ।'

"विवश हम चुप रहे। कमरे में बैठ मैंने उनकी हँसी उड़ानी आरंभ कर दी। आखिर वे माने कि वे अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्ति नहीं हैं।

"इसके कुछ दिन बाद मैंने कहा कि यह जबान जो आप बोलते हैं यह तो हिन्दुस्तान में कहीं भी बोली नहीं जाती। इस पर वे कहने लगे कि यह हमारी मजहबी जबान है। मैंने उनसे उनका मजहब पूछा तो उन्होंने इस्लाम बताया। मैंने कहा कि इस्लाम की जबान तो अरबी है, उसमें ही उनको बोलना चाहिए। वे कहने लगे, उसमें उनको आनन्द नहीं आता। क्योंकि एक तो हर कोई उसे समझता नहीं और दूसरे बोलने में बहुत कुछ गले में से बोलना पड़ता है।

"मैंने कह दिया कि आप हिन्दुस्तानी बोला करिए। तब वे माने। मैंने उनको पहले हिन्दी बोलनी और फिर लिखनी सिखाई। तब से हम आपस में हिन्दी में बातें करते हैं। उनको अब हिन्दी बोलनी और लिखनी ज्यादा पसन्द है। हम बाहर अंग्रेजी बोलते थे और घर पर हिन्दुस्तानी। जब उन्होंने देखा कि दुनिया–भर के लोग अपने–अपने देश की भाषा बोलते हैं तो उनको भी हिन्दुस्तानी बोलने का शौक हो गया है।

"अब हमने अपने नाम भी हिन्दुस्तानी में रख लिए हैं। उनका नाम शिव है और मैं दुर्गा हूँ। हमारी जबान और हमारे नाम तो हमारी आपस की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दूसरे लोग हमको उसी नाम से पुकारते हैं जो नाम हमारे, उनकी दरगाह में रखे गये हैं। मैं चाहती हूँ कि मैं अपने घर से बाहर दुर्गा ही रहूँ।''

रामरक्खामल्ल मुस्कराता रहा। जब वह बता चुकी तो उसने कहा, ''मुझको डर है कि इस व्यवहार से तुमको तकलीफ होगी।''

''मैं समझती हूँ कि तकलीफ तब होगी, जब मैं रहमत के नाम से बुलाये जाने पर आपत्ति करूँगी। वे मुझको जैसा चाहें बुला सकते हैं। मैं उनको शिव के नाम से पुकारती हूँ। वे मुझको दुर्गा कह कर बुलाते हैं। कभी किसी के सामने रहमत भी कह देते हैं तो आपत्ति नहीं करती। मैं चाहती हूँ कि आप मुझको श्रेय–मार्ग की शिक्षा दें।''

''देखो रहमत! तुम ठीक कर रही हो। और मैं भी तुमको साधारण बात ही बता सकता हूँ। उसका प्रयोग तुम अपने मन से विचार कर करोगी तो सफल हो सकोगी।

''हम जानते हैं कि मनुष्य–शरीर में दस इन्द्रियाँ हैं। इन इन्द्रियों के द्वारा हम इस संसार का भोग करते हैं। इनके अतिरिक्त एक मन है। मन इन इन्द्रियों का संचालन करता है। मन के भी अतिरिक्त एक आत्मा है। वह इस शरीर का स्वामी है।

''इसे एक रथ की भाँति समझो। रथ शरीर है। इसमें घोड़े इन्द्रियाँ हैं और मन सारथी है। आत्मा पूर्ण रथ और सारथी का स्वामी है।

''आत्मा इस रथ में बैठा हुआ एक मार्ग पर जा रहा है। यह रथ उस मार्ग पर चलता जाए, जिस पर उसे जाना है, इसके लिए यह आवश्यक है कि घोड़े सारथी के वश में रहें और सारथी मालिक के काबू में रहे।

''मालिक को श्रेय–मार्ग पर चलना है। इन्द्रियाँ अगर वश में न रहीं तो प्रेय मार्ग पर चल पडेगी। इसलिए घोड़े चलते हुए भी सारथी और मन की आज्ञा के अधीन ही चलें।

''इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि घोड़े अपनी मनमानी उतनी ही कर सकें, जितने से उनका जीवन और स्वास्थ्य बना रहे। इन्द्रियों को अपने विषयों का उतना ही भोग करने दो, जितने से इन्द्रियाँ अर्थात् शरीर का स्वस्थ जीवन रह सके।

''उसके बाद अपने श्रेय मार्ग पर उनको चलाने का यत्न करो। श्रेय मार्ग है जीवन को यज्ञ बना लेना। यज्ञ का अर्थ है लोक–कल्याण। जन–जन के कल्याण में अपनी शेष शक्ति, धन और बुद्धि का प्रयोग करो।

''मनुष्य, भले ही वह बहुत बड़ा हो, सीमित शक्ति वाला होता है और फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ तो वह तब ही कर सकेगा, जब उसका शरीर रहेगा। इस कारण न्यून–से–न्यून सामर्थ्य से शरीर को स्वस्थ, सबल और सक्रिय रख कर शेष सब कुछ अधिक–से–अधिक लोगों के हित में व्यय करो।

"यह है श्रेय का मार्ग और इस मार्ग पर चलने का ढंग। भूल कभी इस कारण हो जाती है कि मनुष्य यज्ञ–कार्य को जान नहीं सकता। वह कभी स्वार्थ को यज्ञ और यज्ञ को स्वार्थ समझने लगता है।

"ऐसी स्थिति में तुम उस विशेष अवस्था को समझने के लिए आ सकती हो।"

"मैं तो आपकी प्रातः की प्रार्थनाओं में नित्य आना चाहती हूँ।"

"हाँ, अपने पति की स्वीकृति से आ सकती हो।"

"आप बताइए कि मुझको पति की स्वीकृति प्राप्त होगी अथवा नहीं?"

एक क्षण तक विचार कर रामरक्खामल्ल ने कहा, "दिखाई तो यह देता है कि वह तुमको यहाँ आने की स्वीकृति नहीं देगा। जो कुछ स्वतन्त्रता तुमको मिल चुकी है, वह भी छीन ली जाएगी।"

"तो फिर मैं क्या करूँगी?"

"यह मैं बताऊँगा नहीं। अपनी आत्मा की प्रेरणा मानो। जो कुछ पति करने को कहे, करो और उसको राजी कर दूसरी बातें करो।

"एक बात और। पति के साथ रह सको तो मैत्री–भाव से रहो, अथवा छोड़ दो। दोनों मार्गों के बीच का मार्ग ठीक नहीं। मैत्री–भाव में लेन–देन बना रहता है। छोटी–मोटी बातों पर झगड़ा व्यर्थ है। जब तक किसी सिद्धान्त की बात पर मतभेद न हो जाए, तब तक झगड़ा व्यर्थ है।"

"सिद्धान्त की बात क्या है?"

"हम मनुष्य हैं। हम मननशील प्राणी हैं। इसमें जो हमारे मनन करने में बाधा डाले, वह सिद्धान्त से हमारी मानवता का विरोधी है। इसे विचार–स्वतन्त्रता कहते हैं।

"दूसरे, हम जो कुछ अपने लिए चाहते हैं, वही हमें दूसरे को देना चाहिए। जो कुछ एक मनुष्य अपने लिए चाहता है, वही कुछ उसे दूसरों को देना चाहिये। इसको मैं समाजवाद का आधार मानता हूँ।"

"तीसरे, संसार में दो प्रकार के लोग हैं–दैवी स्वभाव वाले और आसुरी स्वभाव वाले। हमको दैवी स्वभाव अपने में लाना चाहिये और अपने मित्र दैवी स्वभाव वाले बनाने चाहिये।"

"इसमें हिन्दू–मुसलमान की बात तो आई नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दू तो एक भौगोलिक नाम है। इस देश में रहने वाला हिन्दू है। हाँ, मुसलमान और आर्य का झगड़ा इसमें नहीं है। आर्य का अर्थ है वेद–धर्म को मानने वाला। इस्लाम का अर्थ है मुहम्मद साहब पर ईमान लाने वाला। मैं तो कहता हूँ कि नाम तो अपने–आप स्वीकार हो जायेंगे। मतलब की बात है ऊपर बताये गए तीन गुण। ये तीन बातें ही सिद्धान्त हैं।"

रहमत को प्रथम बड़ी खुराक के बाद यह दूसरी बड़ी खुराक मिली थी।

डेढ़ बज गया था। उसने घड़ी में समय देखा तो हाथ जोड़ नमस्कार कर खड़ी हो गई। कहने लगी, "भापाजी! इस दुर्गा के लिए परमात्मा से प्रार्थना करिए, मैं आपकी जीवन–भर आभारी रहूँगी। मुझको बहुत सुख प्राप्त है, इसमें संदेह नहीं; मगर मैं अपना भविष्य भी बनाना चाहती हूँ और उसकी हानि में मैं अपना कल्याण नहीं मानती। उस अवस्था में तो मैं यह सब सुख छोड़–छाड़ भाग जाऊँगी।"

"भगवान तुम्हारा भला करे!" रामरक्खामल्ल ने आशीर्वाद दिया तो वह नीचे भाग गई। मकान के नीचे मोटर का हॉर्न बज रहा था।

: 13 :

सूरत कांग्रेस अधिवेशन के असफल होने के कारण दो क्षेत्रों में चिन्ता व्यक्त की जाने लगी। सर ए. ओ. ह्यूम और लॉर्ड डफरिन ने जो इन्द्रजाल शिक्षित हिन्दुस्तानियों के सम्मुख बिछाया था, वह जाल बेकार सिद्ध हुआ। अंग्रेज शासक यह समझ गया कि कांग्रेस की मान–प्रतिष्ठा जनसाधारण में से तो गई, साथ ही पढ़े–लिखे मध्यम श्रेणी के लोगों में भी बहुत कम हो गई है। एक तो कांग्रेस में व्याख्यान देने वाले न तो देश की जनता के मनोभावों को प्रकट कर सके, न ही वे जन–साधारण के नेता बन सके। अतः सरकार के सामने यह समस्या उत्पन्न हुई कि किस प्रकार जनता को भुलावे में डालने वाला, नया जाल निर्माण किया जाये।

दूसरे, नरम विचार वालों का क्षेत्र था। नरम दल वाले अपने को तिलक और उसके साथियों के सामने दुर्बल समझ अपनी नेतागिरी की ख्याति को पुनः प्राप्त करने का यत्न करने लगे।

अंग्रेजी शासन के सम्मति–दाता ऐंग्लो इण्डियन समाचार–पत्र तिलक और बंगाल के नेता विपिनचन्द्रपाल के विरुद्ध विष–वमन करने लगे। सरकार भी समाचार–पत्रों से जमानतें माँगने लगी और कुछ समाचार–पत्रों को तो जप्त ही कर बैठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दमन–चक्र की प्रतिक्रिया बम–बाजी में हुई। नरम दल वाले बम–बाजों की निन्दा करने लगे और गरम दल वाले बम–बाजों के शौर्य की सराहना करने लगे।

इन नरम दल वालों का आश्रय लेकर सरकार अपने दमन चक्र को और तीव्र करने लगी। मिदनापुर बम की घटना पर केसरी में एक लेख छपा। उसमें लिखा था कि बम चलाने वाले अधिक–से–अधिक अधीर कहे जा सकते हैं। वास्तविक दोषी हिन्दुस्तान की अंग्रेजी फीताशाही है, जो अपनी करतूतों से राज्य को और अंग्रेजों के नाम को दूषित कर रही है। यदि सरकार सत्य ही इन बम–बाजों को निर्मूल करना चाहती है तो इसको भारत में तुरन्त प्रजा के प्रति उत्तरदायी सरकार कायम कर देनी चाहिए।

इस लेख को विद्रोहात्मक और हिंसा करने वालों को प्रोत्साहन देने वाला समझा गया और तिलकजी पर मुकदमा चलाने का निर्णय हो गया। इसके साथ ही पंजाब, बंगाल और महाराष्ट्र के अनेक समाचार–पत्रों को बन्द कर दिया गया अथवा उनसे भारी जमानतें माँगी गईं। तिलकजी बम्बई आये हुए थे और 'सर्दार–गृह' होटल में ठहरे हुए थे। प्रोफेसर शिवराम महादेव परांजपे, सम्पादक 'काल' पकड़े जा चुके थे और जानकार क्षेत्रों में तिलकजी के पकड़े जाने की आशंका की जा रही थी।

विट्ठलभाई देसाई इसी आशंका के विषय में तिलकजी को सचेत करने के लिए 24 जून को सायंकाल होटल में जा पहुँचा।

तिलकजी साधारण स्थिति में शान्तभाव में बैठे एक पुस्तक पढ़ रहे थे कि मिस्टर देसाई आ गया। तिलक जी ने उन्हें देखा तो कह दिया, "आइए देसाई भाई! सब कुशल तो है?"

देसाई ने हाथ जोड़ कर कहा, "हाँ, महाराज! सब भगवान की कृपा है।"

"रुक्मिणी देवी कैसी है?"

"अपने काम में संलग्न है।"

अवसर पा देसाई ने कह दिया, "महाराज! आपको तो पूना में ही रहना चाहिए था।"

"क्यों?"

"यहाँ यह आशंका की जा रही है कि आप शीघ्र ही पकड़े जाएँगे।"

"तो क्या पूना अंग्रेजी सरकार के अधिकार से बाहर है?"

"मेरा यह अभिप्राय नहीं। मैं समझता था कि किसी प्रबन्ध इत्यादि के लिए अवसर मिल जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे प्रबन्ध का अवसर? क्या मुझे अपनी सुरक्षा के लिए कोई तोपें गाड़नी थीं अथवा आक्रमण से बचने के लिए खाई खोदनी थी?"

देसाई को यह विवेचना सुन लज्जा अनुभव हुई। इस पर भी उसने कह दिया, "जो भी हो, इस बार आपको एक लम्बे काल के लिए जेल जाने की तैयारी रखनी चाहिये।"

"देसाई! मैं तो सदा अपना कफन उठाए–उठाए घूमता हूँ। परन्तु यह आतंक किसनें तुम्हारे मन में उत्पन्न कर दिया है।"

"आतंक नहीं महाराज! यह तो किसी ने मुझको आपके पास आपको सचेत करने के लिए भेजा है।"

"कौन है वह?"

"रुक्मिणी के संगीत विद्यालय के मैनेजर ने मुझे भेजा है। वे पंजाबी हैं। उनके विद्यालय में सर आगा खाँ के परिवार की एक लड़की संगीत सीखने आती है। उनके घर में देश की राजनीति पर चर्चा होती रहती है। लड़की ने संगीत सिखाने वाली राधादेवी को बताया और राधादेवी ने मैनेजर को। उन्होंने मुझको यह कहा है कि तिलकजी को सूचना तो दे ही देनी चाहिए। लड़की का कहना है कि आज रात के बारह बजे से पूर्व आपको पकड़ लिया जाएगा।"

"देसाई भाई! मैं तैयार हूँ।"

इसके बाद देसाई ने बात बदल दी। तिलकजी सायंकाल के संध्योपासना के लिए उठे तो देसाई होटल से नीचे उतर आया। वह अभी होटल के नीचे फुटपाथ पर खड़ा विचार ही कर रहा था कि क्या किया जाय कि पुलिस–वैन में दो दर्जन कान्स्टेबल होटल के नीचे आ खड़े हुए। देसाई समझ गया कि ये लोग तिलकजी को पकड़ने आए हैं।

देसाई सड़क के सामने किनारे पर जा खड़ा हुआ। वह इस महापुरुष के पुनः दर्शन करना चाहता था। उसको सन्देह था कि इसके बाद उनके दर्शन नहीं हो सकेंगे।

कुछ मिनटों में ही पुलिस अधिकारी तिलकजी को बन्दी बना कर नीचे चले आए और वैन में बिठाकर ले गए। जब वैन जाने लगी तो अनायास ही देसाई के हाथ जुड़ गए और शीश झुक गया।

देसाई वहाँ से संगीत–भवन की ओर चल पड़ा। वह रामरक्खामल्ल और राधा को इस घटना की सूचना देना चाहता था। अभी वह संगीत–भवन के नीचे ही पहुँचा था कि एक आदमी उसको हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछने लगा, "आप विट्ठलभाई देसाई हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ! क्या बात है?"

"आपको अभी मेरे साथ चलना होगा।"

"क्यों?"

"आपके वारंट हैं।"

"दिखाओ।"

"वह देखिए इन्स्पेक्टर पुलिस खड़े हैं। वारंट उनके पास हैं।"

"चलो।" देसाई ने देखा कि सड़क के पार एक गोरा पुलिस अफसर खड़ा है। उसने अपने चारों ओर पाँच–दस लोग साधारण मराठा पोशाक में खड़े देखे तो समझ गया कि वह पुलिस के घेरे में हैं।

इस पर भी वह अपने पकड़े जाने और तिलक के पकड़े जाने में अन्तर देख रहा था। वह इसका अर्थ नहीं समझ पाया।

देसाई इन सफेदपोशों में घिरा हुआ पुलिस अफसर के समीप पहुँचा तो एकाएक पुलिस–वैन वहाँ आ खड़ी हुई। पुलिस अधिकारी ने बाँह से पकड़कर उसको पुलिस–वैन में बैठा लिया। उनके बैठते ही वैन चल पड़ी। रात तक जब देसाई घर नहीं लौटा तो रुक्मिणी देवी का संगीत–भवन में टेलीफोन आया और उस पर रामरक्खामल्ल ने देसाई के विषय में अपनी आशंका प्रकट कर दी। उस समय रात के बारह बजे थे।

अगले दिन प्रातःकाल ही रामरक्खामल्ल पुलिस थाने में पता करने गया तो उसको भी वहीं बैठा लिया गया।

तिलकजी को पकड़ा गया था दण्ड विधान की धारा 124–ए तथा 153–ए के अधीन, परन्तु विट्ठलभाई देसाई को और रामरक्खामल्ल को पकड़ा गया था बगाल रेग्युलेशन 1818 के अधीन। जहाँ तिलक पर मुकदमा चला, वहाँ इनको बिना मुकदमे के ऐबटाबाद जेल में भेज दिया गया।

बम्बई में रुक्मिणी और लेखवती को सर्वथा अन्धकार में रखा गया कि इन दोनों भद्र पुरुषों को कहाँ ले जाया गया है। एक महीने की लिखा–पढ़ी के बाद यह तो बता दिया कि उनको किस कानून के अधीन पकड़ा गया है, परन्तु यह नहीं बताया गया कि उनको किस जेल में रखा गया है।

एक मास और व्यतीत हुआ तो दोनों के हैदराबाद जेल से पत्र आये कि वे वहाँ खूब मजे में हैं। इस समय तक सर्दी आ गई थी। उनके लिये ऊनी गरम कपड़े भेज दिये गए।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस अवधि में दोनों के पूर्व जीवन के विषय में पूछ–ताछ की जाती रही होगी। सन् 1909 के आरम्भ में रामरक्खामल्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाएक छूट कर बम्बई आ पहुँचा। देसाई को नहीं छोड़ा गया।

जिस दिन तिलक और देसाई पकड़े गये थे, उस दिन प्रातः की प्रार्थना के समय रहमत आई थी। प्रार्थना के बाद रहमत ने रामरक्खामल्ल से कहा था कि वह उनसे सबसे पृथक् में बात करेगी।

रामरक्खामल्ल उसको अपने कमरे में ले गया। वहाँ जा उसने बताया, "आज रात–भर आगा खाँ, मेरे श्वसुर के बड़े भाई, मेरे श्वसुर और मेरे पति से पृथक् में बातचीत करते रहे हैं। वे बता रहे थे कि हिन्दुओं के एक बड़े नेता बाल गंगाधर तिलक कल पकड़ लिए जायेंगे।

"मैंने पूछा कि क्यों? उन्होंने क्या किया है? तो बोले कि उन्होंने सरकार के खिलाफ मराठी भाषा के 'केसरी' पत्र में कई लेख लिखे हैं। बम–बाज षड्यन्त्रकारियों की तारीफ की है।

"मैं जानती थी कि आप तिलकजी के विषय में बताया करते हैं कि वे महान् देश–भक्त हैं। इस कारण आज आपको यह समाचार देने चली आई हूँ। ताकि यदि हो सके तो उनको लापता कर दिया जाये और किसी न किसी प्रकार देश से बाहर कर दिया जाए।"

"इससे क्या हो जाएगा।"

"उनकी जान बच जायेगी।"

"तो क्या उनकी जान का भय भी है?"

"हाँ, उनको फाँसी तक का दंड दिया जा सकता है। मेरे पति तो कह रहे थे कि बिना मुकदमे के भी सरकार उनको जीवन–भर के लिए कैद कर सकती है।"

"वे छुपकर भागेंगे नहीं। मेरा मन भी यही कहता है कि उनको भागना नहीं चाहिए। जीवन–मरण तो परमात्मा के अधीन है, परन्तु कर्म अपने अधीन हैं। वे इस प्रकार की भीरुता प्रकट करेंगे तो भारी पाप हो जाएगा।"

"वे जीवित रहे तो फिर भी देश के काम आ सकेंगे।"

"जो काम उनका है वह भागने के बाद हो नहीं सकेगा और उनको पकड़ा जाना और किसी भी प्रकार का दंड पा जाना उनके काम को तेजी से करेगा।"

"रहमत को जल्दी थी। वह चली गई। उसके जाने के बाद रामरक्खामल्ल ने विचार किया कि तिलकजी को सूचना तो भेज ही देनी चाहिए। वह स्वयं कौन है यह निर्णय करने वाला कि तिलकजी को भागना नहीं चाहिए?

अतः उसने देसाई को टेलीफोन किया। वह घर पर नहीं था। रुक्मिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को यह कह दिया गया कि उनको शीघ्रातिशीघ्र संगीत–भवन में भेज दिया जाय।

देसाई सायं चार बजे संगीत–भवन में आया और उसको तिलक जी को संकेत करने के लिए भेज दिया गया।

अगले दिन रहमत फिर प्रार्थना के समय आई। रामरक्खामल्ल पुलिस थाने गया हुआ था। वह दोपहर तक उसकी प्रतीक्षा करती रही। जब वह उस समय तक भी नहीं लौटा तो वह चली गई। अगले दिन फिर आई तो लेखवती ने उसको बताया कि मिस्टर देसाई और रामरक्खामल्ल दोनों लौट कर नहीं आये। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि दोनों पकड़ लिये गए हैं। रुक्मिणी ने प्रेजिडैंसी मजिस्ट्रेट के सम्मुख दोनों के विषय में जानकारी प्राप्त करने की प्रार्थना की है। अभी तक कुछ पता नहीं चला।

इसके बाद रहमत प्रायः नित्य संगीत–भवन आती रही। जब रुक्मिणी ने हाईकोर्ट में 'हैबिअस कॉर्पस' की पैटीशन की, तब पुलिस ने बताया कि उनको रेग्युलेशन 1818 के अधीन पकड़ा गया है और समय पर उनके सम्बन्धियों को उनका पत्र मिल जायेगा।

पकड़े जाने से साढ़े सात महीने बाद एक दिन प्रातः आठ बजे रामरक्खामल्ल संगीत–भवन में आ पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही उसने रुक्मिणी को टेलीफोन किया और वह पाँच मिनट में वहाँ आ गई।

रामरक्खामल्ल ने बताया कि सेठ जी प्रसन्न हैं। आजकल नित्य भगवद्गीता का पाठ कर रहे हैं। रुक्मिणी को यह जान कर अति दुःख हुआ कि वे बेकार रहने के कारण बहुत बेचैनी अनुभव कर रहे हैं।

रुक्मिणी के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि देश–भक्तों को आर्थिक सहायता पहुँचाना जो उसके पति का जीवन–कार्य था उसे और भी वेग से करना चाहिए। इसके लिए उसने यह भी समझ लिया कि कारखाने का काम अधिक परिश्रम और सतर्कता से करना चाहिए। कारखानों की आय को देशभक्तों के काम में व्यय करने की योजना में रामरक्खामल्ल एक साधन बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

शमशाद प्रिविकौंसिल के निर्णयानुसार सर्वथा दोषयुक्त तो नहीं हो सका। उसको, जितना दंड वह भोग चुका था उतना उसके लिए पर्याप्त समझ, मुक्त कर दिया गया। सरवर के पिता वकील अब्दुलमजीद खाँ अभी विलायत में ही थे कि शमशाद लाहौर सैन्ट्रल जेल से छूट कर सरवर के पास झेहलम जा पहुँचा।

वहाँ उसके लिए दो आश्चर्य के विषय उपस्थित थे। सुल्ताना कोठी के एक हिस्से में डट कर रह रही थी। जब शमशाद वहाँ पहुँचा तो सुल्ताना उसको अपने कमरे में ले गई। शमशाद सुल्ताना को घर के मालिक की भाँति व्यवहार करते देख पूछने लगा, "अम्मी! तुमको तो रावलपिंडी में होना चाहिये था?"

"क्यों?"

"अपने लड़के के पास।"

"मैंने वकील साहब के साथ शादी कर ली है।"

"ओह! कब?"

"उनके विलायत जाने के दो महीने पहले।"

"अम्मी, मुबारक हो।"

"हाँ, मुबारकबाद की बात तो है ही। इस पर भी मैं अपने लड़कों के कारोबार में पत्तीदार हूँ और रुपये–पैसे के विचार से मैं वकील साहब से बिलकुल आजाद हूँ।"

"सरवर कहाँ है?"

"अपनी दूसरी माँ के साथ रहती है।"

"अम्मी, उसको बुला दो।"

सुल्ताना ने नौकरानी को भेज सरवर को बुलाया। वह आयी तो शमशाद ने सलाम अर्ज कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरवर ने कहा, "बैठिए! आपके छूटने का सब फख्र आप की अम्मी साहबा को है। इन्होंने आपके मुकदमे के लिए रुपया दिया। इन्होंने ही अब्बाजान को मुकदमे की पैरवी के लिए विलायत भेजा। अम्मी के बाद आपको खुदाबन्दताला का शुक्रगुजार होना चाहिए।"

"और सरवर! तुमने मेरे लिए कुछ नहीं किया?"

"कुछ नहीं। मैं अब अपने को आपकी बीवी नहीं समझती।"

"क्यों?"

"मेरे दिल में आपके लिए नफरत पैदा हो गई है।"

"नफरत के लायक क्या किया है मैंने?"

"एक बेकसूर औरत को कत्ल करने की कोशिश की है।"

"उस बेकसूर औरत का तुमसे क्या ताल्लुक है?"

"वह औरत है और मैं भी औरत हूँ।"

"मगर तुम पहले तो उसके खिलाफ रहती थीं?"

"हाँ, वह मेरी हरीफ थी। मैं चाहती थी कि आप उसको अपने घर में न लायें। मगर इसका यह मतलब कहाँ से निकल आया कि आप उसका कत्ल कर दें?"

"ओह! मैं अपने कसूर के लिए मुआफी माँगता हूँ।"

"उसका वक्त गुजर गया है। जब मैं आपसे जेल में मिलने गई थी, तब भी अगर आपने अफसोस जाहिर कर दिया होता तो मैं समझती कि आपका दिमाग सही हो गया है। आपने तो उस वक्त भी यही कहा था कि आप जेल से छूटते ही उसको कत्ल कर देंगे।"

"पर सरवर! उस बदकार औरत के साथ तुम्हारी हमदर्दी तो मेरी हैरानी का वायस हो रही है?"

"वह बदकार तो है नहीं। उसे बदकारी करनी होती तो आपके वालिद शरीफ कोई बुरे आदमी नहीं थे। इसके इलावा भी उसके कोई औलाद नहीं हुई। साथ ही उसके चेहरे पर ईमानदारी का नूर टपकता था। मुझको यही डर लगा रहता है कि कहीं आप मुझसे नाराज हो गये तो मेरा भी गला घोंट देंगे।"

"अच्छा, पिछली बात को छोड़ो सरवर! मैं अब दिल में यह फैसला करके आया हूँ कि अब पाक साफ और तुमसे वफादारी की जिन्दगी बसर करूँगा।"

"अब नहीं हो सकता। मैंने किसी और से शादी की बातचीत कर ली है।"

"यह कैसे हो सकता है! बिना तलाक के शादी हो नहीं सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी मैं यह जानती हूँ।"

"तो फिर?"

"अगर आपने भलमनसाहत से मुझको अपनी आजाद जिन्दगी बसर करने न दी तो मैं पुलिस में रिपोर्ट करके आपको उस अर्से के लिए, जिसकी आपको मुआफी मिली है, फिर कैद करा सकती हूँ।"

"ओह! मगर वह है कौन?"

"आपको पूछने का हक नहीं।"

शमशाद अभी सोच–विचार ही कर रहा था कि सरवर उठकर कमरे से निकल गई।

"शमशाद! तुम बिलकुल बेवकूफ हो।" सुल्ताना ने उसको कहा, "तुम्हें औरत को काबू में करने का ढंग नहीं आता। देखो, मैं जानती हूँ कि सरवर के किससे ताल्लुकात हैं। वह तुमसे हर सूरत में अच्छा आदमी है।

"तुम सरवर का ख्याल छोड़ अपने गुजर के लिए कोई काम करो। पहले रुपया पैदा करो। फिर बीवी भी मिल जायेगी।"

इस पर कारोबार की बात होने लगी। सुल्ताना ने अपने लड़कों के कारोबार की बात बताते हुए कहा, "मुझको और मेरे लड़कों को तुम्हारे वालिद की जायदाद से जो हिस्सा मिला है उससे वे रावलपिंडी–ऐबटाबाद में ताँगे और माल ले जाने के ठेले चलाते हैं। मजीद काम की देखभाल करता है। मेरा कहा मानो, तुम रावलपिंडी चले जाओ और उससे मिल कर काम करने का फैसला कर लो।"

शमशाद की समझ में बात आ गई और वह रावलपिंडी में मजीद से मिला। मजीद ने बताया कि काम में आमदनी तो है, मगर इस काम में तरक्की होती दिखाई नहीं देती। कश्मीर, मरी, रावलपिंडी की सड़क पर अधिक आमदनी है, पर उस सड़क पर नानाजी छोटे भाई के साथ काम करते हैं और उन्होंने रियासत से उस सड़क का ठेका ले रखा है।

मजीद का कहना था कि शमशाद को अगर काम करना है तो कोई ऐसा काम करना चाहिए, जिसमें तरक्की की जा सके। फिर सुल्ताना से राय की गई और यह निश्चय हुआ कि शमशाद ऐबटाबाद का काम देखे और मजीद बम्बई में किसी काम को शुरू करने के लिए वहाँ जाकर विचार करे। सुल्ताना वहाँ छोटे–छोटे दुकानदारों को हजारों कमाने देख आई थी।

मजीद जेब में एक हजार रुपये ले बम्बई पहुँचा। वहाँ मार्केट का हालचाल और ठीक स्थान देखने में एक सप्ताह लग गया। उसने फोर्ट एरिया में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंक की ड्योढ़ी के बाहर, छोटी–सी थड़ी, जो बैंक की दीवार में ही बनी थी, बैंक वालों से किराये पर ली थी। किराया दो रुपये रोज था।

मजीद मार्केट से दस थान कपड़े के ले आता था और परचून बेचने वाले दुकानदारों से भी सस्ते भाव पर बेच देता था। वह तीन प्रकार का ही कपड़ा लाता था। चालू फैशन की कमीजों का कपड़ा। पायजामों के लिए मारकीन और औरतों की कुरतियों के लिए एक–दो प्रकार की छींटें।

पहले दिन से ही बिक्री होने लगी। दुकानदार तो परचून बिक्री पर लाभ पच्चीस प्रतिशत से कम लेकर निर्वाह नहीं कर सकते थे। उनकी दुकानों का खर्चा बहुत अधिक था। मजीद का ऊपर का खर्चा कुछ भी नहीं था। इस कारण वह पन्द्रह–सोलह प्रतिशत लाभ से अधिक नहीं लेता था।

परिणाम यह होने लगा कि दस थान तो दो–तीन घण्टे में निकलने लगे। वह दिन में दो बार थोक दुकानदारों से माल लाने लगा। दुकान पर अधिक माल रखने को स्थान नहीं था। वह केवल दस थान ही अपने पास रख सकता था।

कभी ग्राहक वह माल माँग लेता, जो उसके पास नहीं होता था तो वह उसको अगले दिन आने के लिए कह देता और वही माल लाकर रख छोड़ता। इस प्रकार दुकान चलने लगी। वह इस पर तीस से चालीस रुपये नित्य की आय करने लगा। दुकान के स्थान का भाड़ा, रिहायश की कोठरी का किराया और खाने का खर्चा देकर भी बीस से तीस रुपये नित्य बचाने लगा। छः मास में उसकी पूँजी एक हजार से छः हजार हो गयी। अब वह कोई सस्ती दुकान देखने लगा।

संगीत–भवन के नीचे धोबी तालाब में एक दुकान खाली हुई तो वह संगीत–भवन के क्लर्क के पास जा पहुँचा। दुकान का भाड़ा था चार सौ रुपया। तीन महीने का किराया अग्रिम देकर उसने दुकान भाड़े पर ले ली। उसमें साधारण–सा फर्नीचर लगवा कुछ नकद, कुछ उधार लाकर दुकान में माल भर लिया। वह माल अभी भी कम लाभ पर देता था और दुकान चलने लगी।

अब उसको अनुभव हुआ कि उसको दुकान पर किसी सहायक की आवश्यकता है। उसने अम्मी को लिखा तो शमशाद ऐबटाबाद का काम बंद कर बम्बई आ पहुँचा। काम बंद करने पर चौदह हजार रुपया मिला जो वह साथ ही ले आया।

अब्दुल मजीद खाँ विलायत से लौटा तो अपने साथ एक फ्रांसीसी औरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले आया। वह उसकी अविवाहिता पत्नी थी। उसको साथ लेकर खाँ साहब ने लाहौर में वकालत करनी आरम्भ कर दी। सुल्ताना ने इस नई औरत को देखा तो उसका मन उससे उचाट़ हो गया और वह भी शमशाद के पीछे–पीछे बम्बई चली आयी।

शमशाद के आने और रुपया लाने के कारण दुकान पर अधिक किस्म का माल रखा जाने लगा और बिक्री भी बढ़ने लगी। साथ ही दो आदमी काम करने वाले होने से माल का लाना और दुकान को अधिक काल तक खुला रखना सम्भव हो गया।

शमशाद अभी मजीद के साथ ही एक कटरे में रहता था। इस कटरे में चालीस कोठरियाँ थीं और किरायेदारों के लिए साँझे नहाने के नल, साँझी टट्टियाँ थीं। उस कटरे में मिलों के कर्मचारी ही रहते थे।

मजीद के आने के कुछ ही दिन पीछे सुल्ताना भी बम्बई में आयी। उसको भी उन्होंने उसी कोठरी में रक्खा जिसमें वे स्वयं रहते थे। कटरे में और कोई औरत नहीं थी, इसलिए नहाने इत्यादि की भारी दिक्कत थी।

मजीद और शमशाद को मालूम नहीं था कि शमशाद की बीवी नासिर उनकी दुकान के ऊपर के गाने के स्कूल में सिखाती है। परन्तु एक दिन मुलाकात हो गयी। राधा ने मजीद को बचपन में देखा था। अब तो वह सत्रह वर्ष का युवक था। इस कारण वह कभी मजीद की दुकान के आगे से गुजरती और उसको माल बेचते देखती तो पहचान नहीं पाती थी, परन्तु एक दिन मजीद के स्थान पर शमशाद बैठा काम कर रहा था। राधा की दृष्टि उस तरफ गयी तो वह तुरन्त पहचान गयी। सरस्वती उसके साथ थी। राधा ने शमशाद को पहचाना तो हैरानी में देखती रह गयी। शमशाद की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसके हाथ से गज, जिससे वह कपड़ा नाप रहा था, गिर गया। वह आश्चर्यवत् देखता रह गया। राधा पहले सतर्क हुई। वह दुकान के समीप आ पूछने लगी, "क्यों जी हजरत! क्या कर रहे हैं यहाँ?"

शमशाद ने यत्न कर अपने को सँभाला और मजीद को गज पकड़ा तथा ग्राहकों को माल देने के लिए कह, दुकान से बाहर आ गया। फुटपाथ पर राधा के सामने खड़ा हो बोला, "इस वक्त किधर जा रही हैं?"

"जा तो रही थी कुछ सामान खरीदने, परन्तु अब तो आपका हालचाल जानना ज्यादा जरूरी हो गया है। आइये! मेरे साथ आइये। आराम से बैठ कर बातचीत करूँगी।"

सरस्वती दोनों को बहुत ध्यान से देख रही थी। वह यह तो समझ गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि दोनों में पूर्व का परिचय है। अब सामान खरीदना बन्द कर वापस संगीत–भवन को आते देख वह समझने लगी थी कि काफी घनिष्टता का सम्बन्ध है।

तीनों लिफ्ट से पहली मंजिल पर, बाहर से आये हुओं से मिलने वालों के लिए बनी बैठक में जा पहुँचे। वहाँ जा राधा पूछने लगी, "इस दुकान से आपका क्या सम्बन्ध है?"

"दुकान मेरे भाई मजीद ने खोली थी। अब मैं भी उसमें काम करने लगा हूँ। और तुम?"

"मैं इस मकान में रहती हूँ।"

"यह तो गाने–बजाने का स्कूल है।"

"हाँ।"

"तुम सीखती हो या सिखाती हो?"

शमशाद के दुकान पर काम करने की बात जान राधा ने समझा कि भापाजी से उसकी भेंट करा देनी चाहिए। इस विचार के आते ही वह उठी और बोली, "आइये! ऊपर चलें। आपको यहाँ लाने की इजाजत भी तो लेनी होगी।"

शमशाद और सरस्वती को साथ ले वह सबसे ऊपर की मंजिल पर जा पहुँची। सरस्वती को यह कह कि वह अब बाजार नहीं जा सकेगी, उसको अपने कमरे में छोड़, स्वयं शमशाद के साथ भापाजी के कमरे के बाहर जा पहुँची।

रामरक्खामल्ल कमरे में बैठा स्वाध्याय कर रहा था। राधा ने आवाज दी, "भापाजी! मैं आ सकती हूँ?"

रामरक्खामल्ल ने भीतर से आवाज दे दी, "आओ बेटी, आ जाओ।"

दरवाजा खोल दोनों भीतर जा खड़े हुए। राधा ने शमशाद से पूछ लिया, "इनको पहचानते हैं आप?"

शमशाद ने सलामालेकम की तो रामरक्खामल्ल ने उसे पहचान कर बैठने को कहा, "क्या कर रहे हो शमशाद, यहाँ?"

"इस मकान के नीचे मेरे भाई मजीद ने कपड़े की दुकान की है। मैं उसके साथ काम करने यहाँ आया हूँ। मुझको आये आज एक सप्ताह से ऊपर हो गया है।"

"ओह! तो प्रोफेसर से व्यापारी हो गये हो?"

"जब से छूट कर आया हूँ, व्यापार ही कर रहा हूँ। अम्मी इसमें बहुत मदद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रही हैं। मजीद उन्हीं का लड़का है।''

''मुझको यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई है कि तुम बेकार नहीं हो। राधा कहाँ मिल गई है तुमको?''

''राधा? हाँ! हाँ! मेरे दिमाग में इसका यह नाम बैठने में ही नहीं आता।''

राधा ने स्वयं बताया, ''मैं सरस्वती के साथ बाजार को जा रही थी। ज्यों ही इनकी दुकान पर नजर गई तो ये बैठे माल बेचते दिखाई दिए। नीचे बाजार में बातचीत करने के स्थान इनको अपने साथ ऊपर ले आई हूँ।''

''ठीक है। शमशाद! अम्मी कहाँ है?''

''वह भी बम्बई आ गई है। उसको आये तो चार–पाँच दिन ही हुए हैं। आजकल दिन–भर वे रहने को मकान ढूँढ़ती रहती हैं।''

''उनको कहना कि मुझसे मिलें। मकान ढूँढ़ने में हम उनकी सहायता तो कर ही सकते हैं।''

राधा शमशाद को अपने कमरे में ले गई। वहाँ बैठाकर उसने बताया, ''बिना भापाजी की स्वीकृति के कोई पुरुष यहाँ आ नहीं सकता। इस कारण आपको उनके पास ले जाना आवश्यक था।''

''ये लालाजी यहाँ, क्या हैं?''

''स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के प्रधान हैं। यहाँ शास्त्र पढ़ाते हैं।''

''और तुम क्या करती हो?''

''मैं यहाँ की प्रिन्सिपल हूँ और संगीत सिखाती हूँ।''

''नाटक करना छोड़ दिया है क्या?''

''हाँ।''

''क्या वेतन मिलता है, यहाँ?''

''रोटी, कपड़ा, मकान और दो सौ रुपया एलाउन्स।''

''थियेटर से तो बहुत कम है।''

''हाँ।''

''तो उसको छोड़ क्यों दिया है?''

''यह धर्म का काम है। अधिक लेने को चित्त नहीं करता। देने वाले तो और भी अधिक देने को तैयार हैं।''

''समद कहाँ है?''

''उसका नाम मैंने सन्तोष रख दिया है। वह इस समय भापाजी के छोटे लड़के रत्नलाल के साथ समुद्र तट पर घूमने गया हुआ है।''

''किस श्रेणी में पढ़ता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह स्कूल में नहीं पढ़ता, घर पर ही भापाजी से और एक ट्यूटर से पढ़ता है।"

"ऐसा क्यों?"

"स्कूल की पढ़ाई पसन्द नहीं। उससे अंग्रेजों के तथा अंग्रेजियत के दास ही बनते हैं।"

"यह राजनीति भी भापाजी से सीखी है?"

"हाँ, इस समय जो कुछ भी मैं हूँ, उनकी कृपा से ही हूँ। आपने नरक–कुंड से निकाला था मगर हैवान से इन्सान नहीं बना सके। इत्तफाक से मेरा सम्बन्ध इस स्कूल की मालकिन रुक्मिणी देसाई से हो गया। उन्होंने मुझको बताया कि हैवान और इन्तान में क्या फरक है और फिर इस अन्तर को पार करने का ढंग बताया है भापाजी ने। उन्होंने मुझको वह वस्तु दी है जो अमूल्य है।"

"क्या दिया है उन्होंने? मुझको भी दिखा दो।"

"वह हाथ पर रखकर नहीं दिखाई जा सकती। आप ऐसा करिये कि जिससे आपका उनसे मेलजोल बने। तब वह सब–कुछ जो मुझको उनसे मिला है, आपको दिखाई देने लगेगा। जो कोई भी उनकी संगति में आता है वह इन्सान बन जाता है। इस पर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि अब मैं मनुष्य हूँ और वह भी महान् आत्मा वाली।"

"देखो नासिर! तुम पहले से ज्यादा खूबसूरत हो गई हो। तुम्हारी आवाज में मिठास बढ़ गई है। कपड़े कम कीमती और कम फैशनेबल तो हैं मगर इनमें भी तुम बहुत भली मालूम हो रही हो। पहले से तुम पाने के ज्यादा काबिल हो।"

"यह मैं जानती हूँ। वह इसलिए कि जो चीज मेरे अन्दर सुधरी है, बाहर उसका ही प्रकटीकरण हो रहा है। भापाजी ने मेरी आत्मा को उन्नत किया है और उसको ही आप मेरी सूरत–शक्ल में देख रहे हैं।

"मगर आप क्या हैं? सूरत–शक्ल से तो कुछ ठीक मालूम नहीं होते?"

"हूँ तो वही, जो पहले था। हाँ, पहले से कुछ ज्यादा अमीर हो गया हूँ।"

"मैं यह नहीं पूछ रही। सरवर कहाँ है?"

"वह मुझको छोड़ गई है। लाहौर के एक बैरिस्टर के साथ लन्दन चली गई है। वह लन्दन में वकालत करता है। अपने बच्चों को भी साथ ले गई है।"

"तो वह भी गई?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"आपने अभी और शादी की है या नहीं?"

"अभी नहीं।"

"तो मेरी राय मानिये। कर लीजिए।"

"तुम करोगी शादी मुझसे?"

"तोबा! जो कुछ हो चुका है उसके बाद तो इसका ख्याल भी नहीं करना चाहिए।"

"क्यों? इन्सान सुधर नहीं सकता?"

"हाँ, मगर इन्सान हो तो?"

"मैं समझता हूँ कि मैं इन्सान ही हूँ। इम्तिहान करके देख लीजिये।"

"इम्तिहान? हाँ, हो सकता है।" राधा कुछ गम्भीर हो गई। फिर कुछ विचार कर कहने लगी, "पहले समझ लीजिये कि इम्तिहान के पर्चे में मजबून क्या होगा?"

"बता दीजिये।"

"हैवान और इन्सान में अन्तर। दोनों के व्यवहार में अन्तर और इस इम्तिहान में 'प्रैक्टिकल' (प्रायोगिक) है इन्सान बन कर दिखाना।

"यह है परचा। यदि शौक हो तो इम्तिहान दे सकते हैं।"

"कौन लेगा इम्तिहान?"

"मैं ही लूँगी। आप मिलते रहिएगा। मैं देखूँगी कि कितने इन्सान बने हैं आप?"

"जहे किस्मत। नासिर! मैं इम्तिहान दूँगा।"

"अच्छा, सरवर के वालिद विलायत से लौटे हैं या नहीं?"

"आ गये हैं और एक नई बीवी फ्रांस से ले आये हैं?"

"बहुत मजेदार आदमी हैं। मम्मी को नहीं रखते?"

"रखना चाहते थे। मम्मी उनके पास लाहौर में गई भी थीं, मगर उस औरत का सलूक देख हमारे पास चली आई हैं।"

"खैर कुछ तो है। वह आपको कुछ तो सीख देंगी। मम्मी से कहिएगा कभी आकर मिलें।"

इस समय संतोष सैर कर लौट आया। आते ही कहने लगा, "मम्मी!" किन्तु कहता–कहता रुक गया। एक आदमी को मम्मी के सामने कुर्सी पर बैठे देख वह विस्मय से खड़ा रह गया। एकाएक उसको पहचान आने लगी। उसने समझा कि यह वही आदमी है जिसके पास वह रहता था और जिसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह अब्बाजान कहा करता था। इस विचार के आते ही उसके हाथ धीरे–धीरे उठे और जुड़ गए। उसके मुख से निकल गया, ''नमस्ते।''

''इधर आओ, समद!'' शमशाद ने कहा।

समद का नाम सुन उसको कँपकँपी हुई। इस समय राधा ने कहा, ''संतोष! ये तुम्हारे पिता हैं। इनके चरण स्पर्श करो।''

संतोष अब धीरे–धीरे आगे बढ़ा और झुककर चरण छूने लगा तो शमशाद ने उसको गले लगा लिया।

राधा इस मेल–मुलाकात के परिणामों पर विचार करना चाहती थी। इस कारण उसने उठते हुए कहा, ''अब आपको जाना चाहिए। देरी हो गई है।''

''तो फिर इम्तिहान का परचा देने कब आऊँ?''

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, ''यहाँ पढ़ाई पाँच बजे बन्द हो जाती है। आप साढ़े पाँच बजे नीचे दरवाजे पर आ जाया करिए। मैं वहीं मिला करूँगी। उस समय मैं दो घण्टे के लिए खाली होती हूँ।''

: 2 :

राधा को भय लग गया कि वह शमशाद के मोह में फँसती जा रही है। इस कारण उसने अपने मन की अवस्था का विश्लेषण करने के लिए समय प्राप्त कर लिया।

शमशाद गया तो सरस्वती आ गई। वह राधा के व्यवहार से यह अनुमान लगा रही थी कि यह राधा का कोई प्रिय है। वह जानने की इच्छा करने लगी थी कि कौन है। अतः जब उसको पता चला कि वह चला गया है तो वह आ पहुँची।

उसने राधा के समीप बैठकर पूछा, ''ये कौन साहब थे? राधा बहन!''

''ये संतोप के पिता हैं, वही जिन्होंने मुझको मरवाने का आयोजन किया था।''

''इस पर भी तुमको इनके पास एकान्त में बैठे डर नहीं लगा?''

''पहले देखने पर लगा था, परन्तु वह एक क्षण के लिए ही था। फिर मैंने भय को आँखों में देखा तो वह भाग गया।''

''और क्या कहने के लिए उनको ले आई थीं?''

''यही कि मैं उनसे डरती नहीं। परन्तु फिर उनके घर की बातें जानने की लालसा उत्पन्न हो गई थी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या पुनः सुलह हो जाने की आशा करने लगी हो?"

"आशा तो इच्छा होने पर पैदा होती है। अभी तो इच्छा भी नहीं। उनके मन में क्या है अभी तो यह भी नहीं जानती। मेरी सौतन इनको छोड़ गई है। ये भवन के नीचे दुकान ले बैठे हैं। प्रायः नित्य मेल होगा ही। इस सब का क्या परिणाम होगा, कह नहीं सकती।"

"तो इसका मतलब यह है कि तुम्हारी घृणा मिट रही है?"

"घृणा तो पहले भी नहीं थी। तटस्थता थी। अब भाग्य इनको फिर घेर कर ले आया है। भविष्य के विषय में कह नहीं सकती।"

"तो बहन! सुलह की मिठाई खाने के लिए तैयार रहें?"

"कह नहीं सकती। परन्तु मिठाई तो ऐसे भी मिल सकती है।"

"तो मैं भविष्यवाणी करती हूँ कि राधा एक मुअज्जिज खातून बनेगी और उसका नाम होगा नासिर बेगम।"

"तो तुमको भापाजी ने यह विद्या सिखा दी है?"

सरस्वती हँस पड़ी। हँसकर बोली, "नहीं बहन राधा!" यह विद्या सब लड़कियों को आती है और वे एक–दूसरे की आँखों में देख, उसके मन की बात पढ़ लेती हैं।"

दोनों हँसने लगीं। राधा ने कह दिया, "तुम्हारी भविष्यवाणी की परीक्षा हो जाएगी।"

रात के भोजन के अनन्तर सब रामरक्खामल्ल के कमरे में एकत्रित होने वाले थे कि सुल्ताना आ पहुँची। रामरक्खामल्ल ने देखा तो बुला लिया और बैठाकर पूछने लगा, "बहन! इस समय आने की क्या आवश्यकता थी?"

"शमशाद अभी घर पहुँचा था और उसने बताया कि आपने बुलाया है। आती तो कल सुबह ही, परन्तु यह जान कि नासिर यहीं रहती है और दिन के समय उसको फुरसत नहीं होती इस कारण अभी चली आई हूँ। यदि वह मान गई तो रात यहीं रह जाऊँगी। मैं उस कोठरी में रहती–रहती ऊब गई हूँ। आपने मकान दिलवाने की बात भी तो कही थी?"

"राधा से मिलोगी?"

"नहीं, पहले आप से बात करूँगी।"

"हाँ, बताओ।"

"मकान कब तक दिलवा देंगे?"

"बहुत जल्दी जरूरत है?"

"यह ममझ लीजिए कि बम्बई आए आज छः दिन हुए हैं और मुझको स्नान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने का स्थान नहीं मिला। खुले में स्नान करते मुझसे बना नहीं।''

''क्या किराया दे सकोगी?''

सुल्ताना ने कुछ विचार कर कह दिया, ''एक सौ रुपया महीना तक तो दे ही सकेंगे।''

''मैं समझता हूँ कि अगर आप सवा सौ रुपया महीना तक दे सकें तो मकान कल मिल जाएगा।''

''मैं समझती हूँ कि इतना हो जायेगा।''

''बस, या और कुछ?''

''हाँ! एक बात और है। मैं कोशिश करना चाहती हूँ कि शमशाद और नासिर में सुलह हो जाए। आप क्या कहते हैं?''

''मुझको आपत्ति नहीं। परन्तु मैं इसमें सहायता नहीं दूँगा और विरोध भी नहीं करूँगा।''

''मैं तो चाहती थी कि आप नासिर को राजी करने की कोशिश कर देते।''

''यह शमशाद के व्यवहार पर निर्भर है। उसको कहना कि वह मुझसे एक सूरत में मदद की उम्मीद कर सकता है। वह इन्सान बन कर दिखाये।''

''आप एक बात बताइये कि नासिर का मुसलमान से विवाह आप पसन्द करेंगे?''

''मेरे दिमाग में हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई इत्यादि का ख्याल आता ही नहीं। मैं तो पशु और मनुष्य में फर्क देखता हूँ। बद और नेक में फर्क देखता हूँ।''

''यह तो ठीक है। बस यभी यह दो बातें ही पूछनी थीं। मकान कल दिलवा दीजिये।''

''राधा को कह दूँगा। उसके मकान में एक फ्लैट खाली है। उसका भाड़ा तो डेढ़ सौ रुपया महीना है। कहूँगा कि तुमको सवा सौ में दे दे। आशा है मान जायेगी।''

''उसका अपना मकान है?''

''हाँ। थिएटर की नौकरी छोड़ने पर उसके पास दो लाख रुपये से कुछ अधिक था। उससे उसने यह मकान खरीद लिया है। इसमें छः हिस्से हैं। एक हिस्सा परसों खाली हुआ है।''

इसके बाद रामरक्खामल्ल ने सुल्ताना को साथ लिया और राधा के कमरे में ले गया। वहाँ सरस्वती और लेखवती बैठी बातें कर रही थी। सुल्ताना इस समय आने की सफाई देते हुए बोली, ''जहाँ मजीद रहता है वहाँ एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी–सी कोठरी में तीन आदमी रहते थे। वहाँ नहाने का प्रबन्ध खुले में है। शौचालय आवश्यकता से कम हैं। दस बजे से पहले टट्टी–पेशाब नहीं जा सकती। यह पता लगते ही कि तुम यहाँ हो, चली आई हूँ। रात यहीं रहूँगी।''

अगले दिन प्रार्थना के समय राधा सुल्ताना को लेकर वहाँ आ बैठी। प्रार्थना हुई। तदनन्तर उपनिषद् पाठ होने लगा। सब उपस्थित जन स्वर–सहित वेद–मन्त्र गान करते रहे। अन्त में रामरक्खामल्ल का एक मन्त्र पर व्याख्यान हुआ। आज ईशावास्योपनिषद के तीसरे मन्त्र की व्याख्या हुई। रामरक्खामल्ल ने बताया, ''जो लोग अपनी आत्मा की हत्या करते हैं वे असुर लोक में जाते हैं, जो अन्धकार से ढँपा हुआ है।

असुर–लोक का मतलब है वह योनि, जिसमें प्राणी इन्द्रियों के अधीन हो जाता है। उसमें मन और बुद्धि इतनी घटिया हो जाती है कि वे इन्द्रियों पर काबू नहीं रख सकते। इन्द्रियाँ विषयों के पीछे भागती हैं। मन और बुद्धि दुर्बल होने से उनको रोक नहीं सकते। ये भोग योनियाँ कहाती हैं। जैसे कीट, पतंग, कछुआ, बिच्छू इत्यादि। पेड़–पौधे भी इसी असुर श्रेणी के प्राणी हैं।

''मनुष्य–योनि में भी ऐसे समय आते हैं जब उसकी बुद्धि और संस्कारों को परास्त कर, इन्द्रियाँ उसको विनाश की ओर ले जाती है। तब काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि मन के विकार मनुष्य की बुद्धि और मन से बलवान हो, उसको इन विकारों के अधीन कर देते हैं।

''इस कारण अपनी आत्मा की पुकार सुनो। उसको इन्द्रियों के विषयों में मत फँसने दो।''

आधा घण्टा असुर, देवता, आत्मा, मन और इन्द्रियों की अति सरल भाषा में व्याख्या होती रही।

आज बाहर से रुक्मिणी, सरला, रहमत और मिस्टर वर्मा भी आये हुए थे। सुल्ताना उपस्थित व्यक्तियों को देख और असुर तथा आत्मा की हत्या की व्याख्या सुन अति प्रभावित हुई थी। असुर के लक्षणों से शमशाद के व्यवहार की तुलना कर तो वह काँप उठी। उसकी समझ में आ गया कि भापाजी ने पिछली रात जब बद और नेक की बात की थी तो किस प्रकार वे हिन्दू–मुसलमान की परिधि से पार हो गये थे।

सुल्ताना वहाँ एक औरत को बुर्के में बैठी देख तो आश्चर्य करती रही। जब सब चले गये तो राधा भापाजी से पूछ सुल्ताना को मकान दिखाने ले गई।

जब से रामरक्खामल्ल ऐबटाबाद जेल से छूट कर आया था रहमत प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य प्रार्थना के समय आया करती थी।

इसके लिए उसको अपने पति से बहुत संघर्ष करना पड़ा था। जब तक वे विदेश भ्रमण करते रहे थे रहमत और लियाकतअली खाँ में किसी प्रकार का मतभेद नहीं रहा था। विदेश में वह बुर्का नहीं पहनती थी और सब स्थानों पर मिसेज खान के नाम से पुकारी जाती थी। वहाँ वह औरतों और मर्दों से स्वतन्त्रतापूर्वक मिलती थी।

लियाकत उसके सम्मोहन में फँसा हुआ था और जब भी किसी विषय में मतभेद होता तो यह सम्मोहन रहमत की मदद करता और बात बन जाती। मतभेद तब प्रकट होने लगा जब वे पुनः बम्बई में आये।

उनको आये कई दिन हो चुके थे। एक दिन उसने पूछ लिया, "मैं अपने संगीत–भवन के मैनेजर और हैडमिस्ट्रेस से मिलने के लिए जाना चाहती हूँ।"

"यह तो हमारे यहाँ का रिवाज नहीं है।"

"मगर हजरत! आपमें और मुझमें कुछ कौलो–इकरार हुए थे। आपने सिर्फ दो शर्तें की थीं। एक खाविन्द की वफादारी और दूसरे गैर–मर्दों के सामने पर्दा।

"जहाँ तक मुझको मालूम है मैंने आपकी शर्तें नहीं तोड़ीं। मैं चाहती हूँ कि इनके इलावा बातों में आप मुझको आजादी दीजिए।"

इस पर लम्बी बहस शुरू हो गई। इख्लाक क्या है? औरत और मर्द में फर्क क्या है? क्यों किसी से मिला जाए? इस्लाम के रहते किसी दूसरे से सीख लेने की जरूरत है क्या? वगैरा, वगैरा।

आखिर फैसला हो गया कि आगा खाँ पैलेस में वह हमेशा उनके परिवार के रस्मो–रिवाज और मान–मर्यादा का आदर करेगी और पैलेस के बाहर वह अपने खाविन्द की इजाजत से जाया करेगी।

वह रामरक्खामल्ल से मिलने आने लगी। इन मुलाकातों में देश–विदेश और राजनीति के विषय में बातें होने लगीं तो रहमत के मन की कुंडली खुलने लगी। आगा खाँ पैलेस में भी, परिवार में देश तथा विदेश की राजनीति की बातें होती थी। इसको सुन उसको कुछ बेचैनी महसूस होने लगी थी।

एक दिन सर आगा खाँ बताने लगे, "अंग्रेजी पार्लियामेन्ट में हिन्दुस्तान में रिफोर्म्ज ऐक्ट (शासन सुधार का अधिनियम) मंजूर हो गया है और हमारे खानदान को फख्र करना चाहिए कि इस कानून में हमारा मुख्य हाथ है।"

"क्या हाथ है, हजरत!" लियाकत का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि हिन्दुस्तान की हुकूमत में एक नया दौर आरम्भ हुआ है। कौंसिलों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों और म्यूनिसिपल कमेटियों में मुसलमानों के लिए निशस्तें (स्थान) मुकर्रिर हो गये हैं। इन जगहों पर जाने वाले मुसलमान मुसलमानों द्वारा चुने जाया करेंगे।

"इनसे मुसलमानों को क्या फायदा होगा?"

"वक्त पाकर इस मुल्क में मुसलमानों की हुकूमत कायम हो जायेगी।"

रहमत एक कोने में बैठी परिवार के बुजुर्ग की बात सुन रही थी। मुसलमानों की हुकूमत की बात सुन उसके कान खड़े हो गये। उसके पति को इससे सन्तोष नहीं हुआ। इस कारण उसने पूछ लिया, "आलिजाह! यह मुसलमानों के फायदे की बात होगी क्या?"

"इसमें शक है क्या?"

"जी हाँ! मुसलमानों की हुकूमत होगी तो हिन्दू उनसे झगड़ा करेंगे और हालत वही हो जायेगी जो अंग्रेजों के यहाँ आने से पहले थी। छोटी–छोटी रियासतें हो जायेंगी। वे आपस में लड़ती रहेंगी और फिर कोई गैर–मुल्की ताकत यहाँ आकर दोनों को मगलूब कर लेगी। क्या फायदा होगा इससे?"

"नहीं, अब ऐसा नहीं होगा। अब हम वही बात करेंगे जो इस्लाम ने मिल, फिलस्तीन, ईरान, ट्यूनिस, मोराक्को वगैरा में की थी।"

"वहाँ क्या किया था?"

"बस मुसलमान हो जाओ या तहे–तेरा हो जाओ।"

"आलिजाह! जब मुसलमानों की अपनी हुकूमत थी तब तो वे यह कर नहीं सके। अब तो उतनी जबरदस्त हुकूमत बन नहीं सकेगी जैसी मुगलों और पठानों की थी। अब कैसे यह हो सकेगा? इससे उलटी बात भी हो सकती है। हिन्दू तमाम मुसलमानों को तहे–तेग कर दें?"

"वे ऐसा नहीं करेंगे। उनके दिमाग में यह वहम बैठा दिया गया है कि वे हिन्दुस्तान में कुछ भी हासिल नहीं कर सकते, जब तक मुसलमान उनके साथ न हों। इसलिए वे तो मुसलमानों की खुशामद करेंगे और हम अपनी हालत मजबूत और मजबूत बनाते चले जायेंगे।

"देखो लियाकत! मुझको वाइसराय–हिन्द ने शिमला बुलाया था और मेरे साथ ये सब बातें की थीं। उनका कहना था कि यह अंग्रेज कौम की खसूसियत है कि वह खुद आजाद है और दूसरों को आजाद देखना चाहती है। इसलिए हिन्दुस्तान को आजादी मिलेगी। अफ्रीका, कैनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड की तरह की आजादी यहाँ भी मिलेगी। उस वक्त के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों को तैयार करना है, जिससे वे एक कौम की हैसियत से आजादी का लुत्फ ले सकें।

"इतना तो वाइसराय ने बताया था, मगर मेरे दिमाग में अकबर और औरंगजेब की हुकूमत का नक्शा बनने लगा था। उस वक्त एक भूल हो गई थी। औरंगजेब पहले आना चाहिए था और अकबर पीछे। अगर तलवार के जोर पर हिन्दू, मुसलमान बना लिये जाते तो यही एक मजहब होता, एक हुकूमत होती और फिर अंग्रेज यहाँ आ नहीं सकता। इस बार हम यह करके छोड़ेंगे।

"हिन्दू मुर्दा कौम है। अब तो यह एक झटके से ही हलाल हो जायेगी।"

इस बातचीत ने रहमत के मस्तिष्क में हलचल मचा दी थी। उस रात वह सो नहीं सकी। अगले दिन वह भापाजी की प्रार्थना पर जा पहुँची। यह उन दिनों की बात है जब रामरक्खामल्ल अभी पकड़ा नहीं गया था।

उस दिन एक घण्टे तक रहमत से बात हुई। रामरक्खामल्ल ने रहस्य की बात बता दी, "कोई कौम अपनी इच्छा से किसी मुल्क का राज्य छोड़ नहीं सकती। अच्छी कौमें अपने मातहत लोगों को ओहदे, नौकरियाँ और जागीरें तो दे सकती हैं, मगर हुकूमत कभी नहीं देंगी। अंग्रेज दुनिया की बहुत–सी कौमों से अच्छे हैं और ये सन् 1858 से लेकर आज तक हिन्दुस्तान के रहने वालों को दिनानुदिन अधिकाधिक सहूलियतें देते चले आ रहे हैं। अंग्रेज समझते थे कि वे हम हिन्दुस्तानियों को इन छोटी–छोटी सहूलियतों से खुश कर लेंगे। मगर अब कुछ ऐसे लोग यहाँ पर पैदा हो गये हैं जो इन सहूलियतों से सन्तुष्ट नहीं हो सकते।

"हिन्दू कौम की यह विशेषता रही है कि वह स्वतन्त्रता के लिए प्रत्येक प्रकार का त्याग और तपस्या करने को तैयार रहती है। मुसलमानों के आने से पहले और बाद में भी हिन्दू अपनी आत्मिक, मानसिक और शारीरिक स्वतन्त्रता के लिए लड़ता रहा है। इसने मुसलमान से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी और अब अंग्रेज की हुकूमत को भी चुनौती देने वाले हिन्दू ही हैं।

"मुल्क में राजनीतिक विचार से तीन किस्म के लोग हैं। एक वे जो छोटी–मोटी सहूलियतों से प्रसन्न होने वाले हैं। अंग्रेजों ने ऐसे हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाइयों को कांग्रेस नाम की संस्था में इकट्ठा कर रक्खा है। मगर साधारण जनता में इनकी कोई सुनता ही नहीं।

"दो किस्म के लोग और हैं। ये दोनों अंग्रेज को यहाँ से चले जाने के लिए कह रहे हैं। वे यहाँ स्वराज्य पाना अपना जन्म–सिद्ध अधिकार मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके लिए नौकरियाँ, पदवियाँ और जागीरें कुछ भी प्रलोभन नहीं रखतीं। इन दोनों में फरक यह है कि एक तो बम दिखाकर सशस्त्र क्रान्ति के लिए यत्न कर रहे हैं। मगर दूसरे जन–जागृति कर रहे हैं। इन दूसरों का विचार है कि जब साधारण लोग होशियार हो जायेंगे तो फिर अंग्रेज हुकूमत स्वयमेव समाप्त हो जायेगी।

"बम–रिवाल्वर–पार्टी के कुछ नेता हैं श्री विनायक दामोदर सावरकर, श्री अरविन्द, श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, सरदार अजीतसिंह, खुदीराम बोस आदि आदि और जन–जागृति में विश्वास रखने वाले नेता हैं–श्री बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, श्री विपिन चन्द्र पाल, डॉ. मुंजे इत्यादि।

"इन दोनों दलों के लोग जो स्वराज्य से कम अन्य कुछ नहीं चाहते सब–के–सब हिन्दू हैं। सरकार इनसे डरती है और इनको दुर्बल करने के लिए मुसलमान, जिनकी देश की स्वतन्त्रता में कोई रुचि नहीं है, अंग्रेजों की ओर से खड़े किए जा रहे हैं।

"मुसलमान अंग्रेजों का इतना आश्रय पाकर हिन्दुस्तान में पुनः इस्लामी राज्य की स्थापना चाहते हैं। इस्लामी राज्य भी एक प्रकार से गुलामी ही होगी। जैसे अंग्रेजों की हुकूमत में मानव–आजादी को पनपने का अवसर नहीं मिल रहा, उसी प्रकार इस्लाम में भी होगा। पर्दे में रहो, विदेशी तथा दोषपूर्ण भाषा सीखो, मुहम्मद साहब को ही पैगम्बर मानो, मजहबी बातों में अक्ल का इस्तेमाल मत करो, ये और इसी किस्म की जंजीरें होंगी जो मानव की आत्मा को कैद में रखने का यत्न करेंगी।

"इसलिए हिन्दू की आत्मा इस्लाम की हुकूमत पसन्द नहीं करेगी। कोई हिन्दू किसी को अपनी इच्छा से बँधने से मना नहीं करेगा। परन्तु वह किसी को बलपूर्वक बन्धनों में बाँधा जाता देख नहीं सकेगा।"

रहमत बाम्बे यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएट थी। उसने इतिहास और राजनीति के विषय पढ़े थे। वह नित्य समाचार–पत्र पढ़ती थी। इससे रामरक्खामल्ल की बात को समझ वह मन में बेचैनी अनुभव करने लगी थी।

: 3 :

एक दिन रहमत अपने माँ–बाप से मिलने गई। उसका पिता बम्बई में बहुत बड़ी सम्पत्ति का स्वामी था। उसका भाई यासीन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट हो बैरिस्टर बन, हिन्दुस्तान में आ गया था। वह बम्बई में अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रैक्टिस जमाने में लगा हुआ था। जब रहमत अपने पिता के घर पहुँची तो उसका भाई अपने काम–धन्धे के विषय में अपने पिता से बातचीत कर रहा था। दोनों रहमत को आया देख अपनी बात रोक कर उससे बात करने लगे।

रहमत के आने की बात सुनी तो उसकी माँ भी वहाँ आ गई। इधर–उधर की बातों को बन्द कर रहमत ने अपने वालिद से पूछ लिया, ''अब्बाजान! मैं आज आप से यह जानने आई हूँ कि आप मुसलमान हैं क्या?''

''नहीं तो। मैंने कई बार तुमको बताया है कि हम आगाखानी हैं।''

''आप मुहम्मद साहब को ही एक पैगम्बर मानते हैं क्या?''

''कुछ पागल हो रही हो तुम? क्या बात हुई है?''

''आज एक बहुत बड़े मुसलमान ने यह कहा है कि अंग्रेज यहाँ से जा रहे हैं और वे हिन्दुस्तान को छोड़ने से पहले यहाँ के मुसलमानों के हाथ में यहाँ की हुकूमत दे जायेंगे।''

यासीन ने कह दिया, ''यह कुदरती बात है। हिन्दू अंग्रेजों पर बम चलाते हैं, उनकी औरतों को मार रहे हैं। इसलिए अंग्रेज मुसलमान को अपना जाँ–नशीन बना रहा है।''

''मगर भाई जान! अंग्रेज जा भी तो इसीलिए रहा है कि ये बम चल रहे हैं और हिन्दू लोग अपनी जान हथेली पर रखकर उनको तंग कर रहे हैं। मुसलमान तो मुफ्त में जाँ–नशीन बनने जा रहे हैं।''

''यह पालिटिक्स है, रहमत!''

''उस मुसलमान नेता ने कहा है कि जब मुसलमानों की हुकूमत हो जाएगी तब सब हिन्दुओं को या तो इस्लाम मानना पड़ेगा नहीं तो उन्हें तहे–तेग कर दिया जाएगा।''

''हाँ हो तो सकता है। मगर हम को क्या?''

''तब हम को भी जबरदस्ती इस्लाम मानना पड़ेगा। मुहम्मद को ही खुदा का रसूल मानना होगा। तब हम आगा खाँ को भी पैगम्बर नहीं मान सकेंगे। हम को बुर्का पहनना होगा, हम को अक्ल का इस्तेमाल करना भी मना होगा। हम को गो–मांस खाना पड़ेगा और–और... अभी नहीं बताती।

''बताओ भाईजान! यह कोई अच्छी बात होगी?''

''मगर तुम इसको रोक कैसे सकती हो?''

''मैं अकेली तो रोक नहीं सकती। मगर 'जमात करामात' की कहावत है न। मैं उन लोगों में शामिल हो सकती हूँ जो इसे रोकने की कोशिश कर रहे हैं और जब उस जमात की ताकत बढ़ जाएगी तब यह फतूर बरपा नहीं हो सकेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो जाओ। जो तुम्हारा मन करता है करो। मगर याद रखो कि तुम किसकी बीवी हो, किसकी पतोहू हो, वह क्या कर रहा है, तुम क्या कर सकोगी?"

यासीन विलायत हो आया था। उस पर धन–दौलत, ओहदा और दुनियावी तरक्की का प्रभाव जम चुका था। वह अपना जीवन–मार्ग बनाने में संलग्न था। इस प्रकार की बातों के लिए उसके पास अवकाश नहीं था।

वालिद को अपने खाने–पीने की चिन्ता नहीं थी। उसके मन में दुनियावी उन्नति की लालसा नहीं थी। इस कारण उसकी रुचि इस बात में नहीं थी कि राज किस को मिलता है और किस को नहीं। परन्तु वह इस बात की चिन्ता करने लगा था कि उसको और उसकी पत्नी को बलपूर्वक मुसलमान होने के लिए कहा जाएगा। इससे उसने पूछ लिया, "रहमत! यह किसने कहा है कि सब हिन्दुओं को, जो मुसलमान नहीं होंगे, तहे–तेग किया जाएगा?"

उत्तर यासीन ने दिया, "यह बात सर आगा खाँ ने कहीं है। विलायत में जब मुसलमानों के लिए अलहदा नुमाइन्दगी का कानून बन रहा था, मैं उनसे मिलने गया था। वे इस कानून के पास कराने में खास दिलचस्पी ले रहे थे।

"मैंने उनसे इस दिलचस्पी की वजह पूछी तो उन्होंने मुझसे पूछ लिया कि मैं क्या बनने जा रहा हूँ? मैंने बताया कि मैं कानून पढ़ने आया हुआ हूँ। इस पर वे कहने लगे अगर पार्लियामेंट में यह कानून पास हो गया तो मेरे जैसे आदमी के लिए भी यह मुमकिन हो जायेगा कि मैं कौंसिल का मैम्बर बन सकूँ। नहीं तो हिन्दुओं में इतने लायक–लायक आदमी बैठे हैं कि मुझे कोई पूछेगा ही नहीं।

"मैं देख रहा हूँ कि मैं इस कानून के आश्रय तरक्की कर सकता हूँ।"

"मगर भाईजान!" रहमत ने फिर पूछ लिया, "क्या आपको मुसलमान बनकर कौंसिल में जाना पसन्द है?"

"मुसलमान तो हम हैं ही। कोई हिन्दू हमसे रोटी–बेटी का व्यवहार नहीं रखता।"

"इसकी वजह हैं। हमने हिन्दुस्तान की जबान छोड़ गैरमुल्की जबान में अपने नाम रख लिए हैं। इससे हमने इस मुल्क से ताल्लुक छोड़ा है तो हिन्दुओं ने हमसे ताल्लुक छोड़ दिया है।

"देखिये जी! ऐसे भी हिन्दू हैं जो पीरों के मजार की पूजा करते हैं, मगर उन्होंने अपने नाम यहाँ की देसी जबान में ही रखे हैं और वे हिन्दू ही माने जाते हैं। उनसे उनकी बिरादरी वाले रोटी–बेटी का सम्बन्ध रखते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें गैर–मुल्की क्या है? तुम्हारा नाम रहमत है। वह गैर–मुल्की कैसे हो गया?

"भाईजान! ये सब फारसी, अरबी जबान के नाम हैं। मेरा मतलब यह है कि हमारे बुजुर्ग, जो आगाखानी बने थे, उनका नाम कृष्णराव था। उनका लड़का हुआ तो हजरत ने उसका नाम करीमबख्श रख दिया। अगर वे उसका नाम रामचन्द्र रख देते तो हिन्दू हम से अलैहदा न होते।"

"हिन्दुओं को फारसी से नफरत क्यों है?"

"फारसी–अरबी से नफरत नहीं। वे हिन्दुस्तानी हैं और उनको हिन्दुस्तान की प्रत्येक वस्तु से मुहब्बत है। उनको अपने मुल्क की जबान से भी मुहब्बत है।"

"देखो यासीन!" मोहसन ने कहा, "रहमत ठीक कहती है। हमारे एक किरायेदार, भगौड़ीदास गोयनका हैं। वे दरगाह कालू मजार की परस्तिश करते हैं। हर जुमेरात को वहाँ जाते हैं और वहाँ दिये जलाते हैं और मजार को भेंट–पूजा भी देते हैं। मगर उनसे किसी हिन्दू ने रोटी–बेटी का सम्बन्ध नहीं तोड़ा। मैं समझ रहा हूँ कि यह नाम न बदलने की ही वजह से है।"

"मैं तो हिन्दू–मुसलमान को फजूल की बकवास समझता हूँ। जिस से हमको फायदा पहुँचे हम वही हैं।"

"क्या फायदा चाहते हैं आप?" रहमत ने पूछ लिया।

"पहले तो एक खूबसूरत बीवी चाहता हूँ। फिर बीस–तीस हजार रुपया साल की आमदनी चाहता हूँ।"

"आमदनी तो है। वालिद साहब सब जायदाद आप को ही तो देने वाले हैं और वह इससे ज्यादा है। रही बीवी की बात, भैया! कहो तो मैं कोशिश करूँ इसके लिये?"

"अच्छी खूबसूरत है?"

"बहुत! मुझसे कहीं बहुत ज्यादा।"

"कौन है?"

"जहाँ मैं गाना सीखती थी, वहाँ मेरी एक सहेली है; नाम है सरस्वती। कहो तो बात करूँ?"

"दिखा दो।"

"यह तो मुश्किल नहीं।"

उसी रात जब वह अपने खाविन्द की संगति में थी, उसने एक बात कह दी, "मेरी सहेलियाँ मेरा 'दुर्गा' नाम ज्यादा पसन्द करती हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कहती हैं?"

"कहती हैं कि रहमत से यह नाम ज्यादा मीठा है।"

"यह तो बंगालियों की देवी है।"

"जी! वह नहीं। उसके तो दस हाथ हैं, वह शेर पर सवारी करती है। मैं वह नहीं हूँ। मैं तो आपकी बीवी हूँ। आप मुझको दुर्गा कहते भी हैं वही उनको भी पसन्द है।"

"हाँ! यह तब था जब हम हिन्दुस्तान से बाहर थे। अब यहाँ यह नहीं चलेगा।"

"ठीक है। आप दुर्गा न पुकारियेगा।"

"तो वे क्यों तुमको दुर्गा के नाम से पुकारेंगी?"

"अपना चित्त प्रसन्न करने के लिए।"

"तुम उनको मना कर दो।"

"क्यों?"

"इसलिए कि यह हिन्दुआना नाम है।"

"और रहमत कैसा नाम है?"

"यह मुसलमानी नाम है।"

"पर मैं मुसलमानिन तो हूँ नहीं।"

"वाह! हो क्यों नहीं? एक मुसलमान की बीवी मुसलमान ही तो होगी।"

"मगर शादी के पहले तो आपने यह नहीं कहा था?"

"मुझको याद नहीं।"

"मैं याद दिलाती हूँ। शादी के पहले आप वालिद साहब के घर पर मुझको देखने आये थे। चाय पीने से पहले आपकी मुझसे यह गुफ्तगू हुई थी।

"मैंने पूछा था कि आप मौमिन हैं? आपने फर्माया था कि हैं, मगर उससे भी बढ़ कर आप आगाखानी हैं।"

"मेरा अगला सवाल था कि क्या एक आगाखानी के लिए मुसलमान होना जरूरी है? तो आपका जवाब था कि नहीं। फिर मैंने पूछा था कि किसी आगाखानी के लिए अपना नाम और अपनी जबान फारसीनुमा रखने जरूरी हैं? तो आपने कहा था कि नाम तो आलीजा था उनके मीर साहब रखते हैं। जो नाम वे रख दें, वही नाम होगा। रही जबान की बात, वह मैं कोई भी जबान इस्तेमाल कर सकती हूँ।

"बताइये, यह ठीक है या नहीं?"

"है तो ठीक। मगर उस वक्त मैं तुम्हारी खूबसूरती के जेरे–असर यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कह रहा था।''

"इस बक्त आप मेरी खूबसूरती के असर में हैं या नहीं?''

"मगर अब तो तुम मेरे बच्चे की माँ होने वाली हो?''

"इससे इन्कार कैसे कर सकती हूँ।''

"मेरा बेटा तो मुसलमान होगा।''

"हो जाये?''

"एक मुसलमान की माँ गैर–मुसलमान कैसे हो सकती है?''

"यह तो बहुत होता है। गैर–मुसलमानों की औलाद मुसलमान होती देखी जाती है।''

"तो ठीक है। जो तुम चाहो रहो। मगर तुम्हारी औलाद मुसलमान रहेगी।''

इस प्रकार रहमत के बच्चा हुआ और उसकी परवरिश 'पैलेस' की औरतें करने लगीं।

इन्हीं दिनों आगा खाँ के महल में तिलकजी की चर्चा होने लगी। एक दिन मीर साहब ने बताया, ''कल एक बहुत बड़ा काफिर पकड़ा जाने वाला है।''

"कौन हजरत?'' रहमत ने पूछ लिया।

"एक तिलक नाम का हिन्दू है। वह शिवाजी और गणपति के मेले लगाता है और उसके लगाये हुए मेलों पर लाखों की तादाद में लोग इकट्ठे होते हैं।''

रहमत समझ गई कि उसी के मुताल्लिक भापाजी कहते थे कि वह आम खल्कत में बेदारी पैदा कर रहा है।

अगले दिन वह उनको बताने वहाँ चली गयी।

तिलकजी को छः वर्ष की कैद का दण्ड हुआ और भापाजी जीवन–भर के लिए कैद कर लिए गये। इससे रहमत प्रायः नित्य ही ताई लेखवती और राधा तथा सरस्वती से मिलती रही।

रामरक्खामल्ल सब की उम्मीदों के विपरीत साढ़े सात मास की कैद भुगतकर चला आया। अब तो रहमत और रामरक्खामल्ल में अनेकानेक विषयों पर वार्तालाप होने लगा।

अपने घर में वह अब चुपचाप बातें सुनती थी और उन पर अपने मन में विचार कर अपने परिणाम निकालती रहती थी। कभी कोई बात समझ में नहीं आती तो भापाजी से आकर शंका समाधान कर लेती थी।

वह समझ रही थी कि आगा खाँ के परिवार के सब सदस्य कट्टर मुसलमान हैं। उनका इस्लाम मजहबी आधार पर नहीं था। वे अपने को उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सदस्य मानते थे, जिस समुदाय के, हिन्दुस्तान के मुसलमान, एक छोटा–सा अंशमात्र थे। वे दुनिया में इस समुदाय को प्रबल राजनीतिक शक्ति बनाने की इच्छा करते थे। इस समुदाय का केन्द्र था खलीफा। जो कुस्तुनतुनिया में रहता था और उसके मक्का, मदीना मुतबर्रक स्थान थे।

इस स्पष्ट धारणा के बाद वह अपने को इस परिवार में विवाहे जाने पर खिन्नता अनुभव किया करती थी। जितना ही अधिक वह अपने पति और पति के परिवार वालों से मतभेद अनुभव करती थी, उतनी ही वह खामोश रहने लगी थी।

उस दिन, जिस दिन सुल्ताना राधा के साथ मकान देखने गई थी, दुर्गा रामरक्खामल्ल से एक गूढ़ विषय पर बात करने आई थी। परन्तु राधा को एक अन्य औरत को अम्मी कहते सुन विस्मय से खड़ी रह गई। रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "क्या देख रही हो दुर्गा?"

"यह राधा बहन की माँ हैं क्या?"

"नहीं, उसके बेटे की दादी हैं।"

दुर्गा ने कहा, "मैं आज फिर एक भारी द्विविधा में फँसी हूँ।"

"कुछ समझना चाहती हो?"

"जी।"

"तो आ जाओ।" वह उसको अपने कमरे में ले गया।

बैठकर दुर्गा ने पूछा, "गो–मांस खाने वाले को आप क्या समझते हैं?"

"देश को हानि पहुँचाने वाला। गाय, बैल, भारत के जीवन का अंग हैं। गाय दूध देती है और बैल खेत में काम करते हैं। ये अति उपकारी जन्तु होने से इनकी हत्या देश को हानि पहुँचाती है।"

"परन्तु हिन्दू तो इसको पाप मानते हैं।"

"हाँ। पाप वह कर्म होता है जिससे मन, शरीर और आत्मा को हानि पहुँचे। गाय की हत्या से तीनों बातों में हानि होती है, इसलिए इसको पाप और महापाप कहते हैं।"

"मुझको कल रात गो–मांस खिला दिया गया है। जान–बूझकर तो नहीं, यों ही। परिवार–भर के सदस्यों की एक दावत थी। उसमें गो–मांस बना था। मुझको पता तब चला जब उसके स्वादिष्ट होने की प्रशंसा होने लगी।"

"तब तो यह आत्मिक और मानसिक पाप भी नहीं। यह तो केवल शारीरिक दोष–मात्र है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसकी शुद्धि कैसे हो सकती है?"

"तीन दिन उपवास रखो, सायंकाल फलाहार करो, इससे शरीर की शुद्धि हो जाएगी। यदि तुमने मन से विचारकर गो–मांस मँगवाया और खाया होता तो यह मानसिक पाप होता अथवा संस्कारों से इसको ठीक समझकर खातीं तो यह आत्मिक पाप भी हो जाता। उस अवस्था में जप–तप–प्रायश्चित्त की आवश्यकता होती।"

"परन्तु मैं तो अपने को वहाँ एक कैदी मानकर रहती हूँ। भापाजी! मुझे इससे छुटकारे का उपाय बता दीजिए।"

"मैं समझता हूँ कि तुम गीता पढ़ा करो। उसमें इस प्रकार की समस्याओं का सरल सुझाव बताया गया है।"

"वह भी पढ़ लूँगी। परन्तु मुझको बताइए कि मैं इस आत्म–ग्लानि से कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकती हूँ?"

"देखो दुर्गा! इस समस्या के कई रूप हैं। उन सब पर तो प्रकाश डालना सम्भव नहीं। अब तुम हिन्दी जानती हो। मैं तुमको कल अनुवाद सहित गीता ला दूँगा। तुम उसे पढ़ना और जो समझ में न आए उसे आकर पूछ जाया करना। अभी तो मैं केवल यही बता सकता हूँ–

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु।।

"मतलब यह है कि मनुष्य को इस जगत के नाटक में अपने पूर्व–जन्म के कर्म–फलानुसार अभिनय करने को मिलता है। कोई स्त्री बनी है कोई पुरुष। कोई पत्नी बनी है तो कोई भगिनी। कोई हिन्दू है तो कोई अंग्रेज। कोई मालिक तो कोई नौकर। कोई अफसर और कोई चपरासी।

"इस श्लोक में ग्रंथकार कहता है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी–अपनी स्थिति में कर्म करता हुआ भी सिद्धि अर्थात् जीवन लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। कैसे? इस विषय में कहा है–

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैषकर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति।।

"सब जगह पर अर्थात् जिस–जिस स्थान पर कोई अपना अभिनय कर रहा है, वहाँ–वहाँ वह मोह में फँसे बिना, अपने अन्तःकरण पर काबू पाकर फल की इच्छा छोड़कर कर्म करता रहे तो ऐसा समझो कि उसको फल मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे वह कोई भी कर्म नहीं कर रहा।

"अब इस सिद्धान्त को अपनी स्थिति में लागू करो। तुम अपने कर्म से इस परिवार में विवाही गई हो। यह परिवार इस्लाम–धर्म का मानने वाला है। इस ग्रन्थकार का कहना है कि इस स्थिति में तुम अपना कर्तव्य पालन करती हुई ऐसा व्यवहार रखो कि न तो तुमको वहाँ के कर्मों से मोह हो जाए। अर्थात् तुम पत्नी का कर्म करती हो इस कारण नहीं कि तुमको उस कर्म में मोह है, प्रत्युत वह तुम्हारा कर्तव्य है। उस कर्तव्य–पालन से फल की इच्छा से विरक्त रहो। तब वहाँ के कर्म किए बिना जैसी तुम हो सकती हो वैसी रहोगी।

"आगे तुम्हारा जीवन तुम्हारे उन कर्मों के अधीन होगा जो तुम स्वेच्छा से अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा पर करोगी।"

"परन्तु भापा! एक पत्नी का क्या कर्तव्य है?"

"तुम्हारा विवाह इस कारण हुआ है कि तुम सन्तान उत्पन्न करो। उस सन्तान को समाज का एक उपकारी अंग बनाने का यत्न करो। उसको श्रेष्ठ, धर्मात्मा और मानव बना दो।"

"क्या यह भी पत्नी का कर्तव्य है कि वह अपने पति के कहने पर किसी को विष देकर मार डाले अथवा किसी को झूठ बोलकर पथ–भ्रष्ट कर दे?"

"पत्नी का यह कर्तव्य तो कोई भी नहीं मानेगा। ऐसा करने से इन्कार करने पर तुम पत्नी के धर्म से पतित नहीं होगी और ऐसी बात पर पति से झगड़ा होता है तो समझ लो कि उसकी पत्नी रहने का कर्मफल समाप्त हो गया है। तब तुम अपने अभिनय से मुक्त हो जाओगी।"

"तो अब मैं चलती हूँ।"

"क्यों? क्या बात है? देखो दुर्गा! धैर्य से, विचार कर ही कार्य करना चाहिए।"

"आप कल एक प्रति गीता मेरे लिए ले आइए। मैं परसों आपसे मिलूँगी। तब आपको आज के इस प्रकार चले जाने का रहस्य भी बताऊँगी।"

: 4 :

सुल्ताना ने राधा के मकान में एक फ्लैट ले लिया। शमशाद और मजीद उसमें जाकर रहने लगे। रामरक्खामल्ल के कहने पर राधा ने सुल्ताना से लिखा लिया कि उसने अमुक मकान का अमुक फ्लैट एक सौ पच्चीस रुपये महीने भाड़े पर लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुल्ताना को संगीत–भवन की प्रार्थना में बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। उसके मन में प्रकाश भी होने लगा। मनुष्य और पशु, देवता और असुर, नेक और बद, स्वर्ग और नरक, अन्धकार और प्रकाश की व्याख्या सुन–सुन वह अपने सामने सृष्टि का नया रूप खिलता देखने लगी।

दूसरी ओर शमशाद भी प्रायः नित्य ही साढ़े पाँच बजे भवन के द्वार पर जाया करता। सुल्ताना का निरन्तर यह यत्न था कि राधा और शमशाद का परस्पर मनमुटाव मिट जाए। इसके लिए प्रार्थना के बाद वह नित्य राधा से मिलती और उसके मन से शमशाद के प्रति भावों को मिटाने का यत्न किया करती। कभी–कभी तो सुल्ताना मध्याह्न के भोजन तक वहाँ ठहरती। भोजन करती और रामरक्खामल्ल से भी बातचीत करती।

रामरक्खामल्ल और राधा उससे सभ्य व्यवहार रखते थे। इसका प्रभाव भी सुल्ताना के मन पर हो रहा था। ऐसा जीवन चलते हुए छः मास हो गए। इस सब समय राधा का मन भी शान्त नहीं था। वह सुल्ताना और शमशाद के सम्पर्क में आने से पूर्व की स्मृतियों और वर्तमान के संघात–प्रतिघात में आ रही थी। वह जब भी एकान्त में बैठती अपने जीवन के इस पहलू पर विचार किया करती थी। इस सब विचार का धीरे–धीरे एक परिणाम निकल रहा था। वह अपने विषय में निर्णयात्मक परिणामों पर पहुँचती जाती थी। इस समय उसकी आयु अट्ठाईस वर्ष के लगभग हो रही थी। उसका लड़का संतोष ग्यारहवें वर्ष में पदार्पण कर रहा था और वह अपने पिता के विषय में प्रश्न पूछने लगा था। इस पर भी वह इस परिस्थिति और विचार के परिणामस्वरूप कोई साहस–युक्त पग उठाने में संकोच करती थी।

मन की इस अवस्था को एक भारी धक्का लगा और वह अपने अन्धकारमय भविष्य में छलाँग लगाने के लिए तैयार हो गई।

विलायत से जवाहरलाल का पत्र आया। उसने लिखा था, "मैं एम.डी. की उपाधि से विभूषित भारत लौटने की तैयारी कर रहा हूँ। मैं यहाँ से ही भारत में काई अच्छी–सी नौकरी प्राप्त करने का यत्न कर रहा हूँ। यहाँ से सिफारिश भी लग रही है।

"मेरे साथ एक लड़की आ रही है। वह वहाँ के एक उच्च पदाधिकारी के मित्र की लड़की है। बम्बई में पहुँचते ही मैं उससे विधिवत् विवाह करूँगा। इंग्लैंड में दूसरा विवाह वर्जित है। भारत में हिन्दू–विधि से दूसरा विवाह वर्जित नहीं।

"एमिली को लेकर न तो मैं संगीत–भवन में ठहरूँगा, न ही लाहौर, घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जा सकूँगा। अतः मैं भारत तब आऊँगा जब मेरी नियुक्ति हो जाएगी। इस प्रकार बम्बई पहुँचते ही मैं नौकरी पर चला जाऊँगा।

"साधना को पत्र लिख दिया है और वह वहाँ आ जायेगी जहाँ मैं नियुक्त होकर जाऊँगा।

"इस पर भी आपके स्नेह और सहायता के लिए जीवन भर आभारी रहूँगा। माताजी को मेरी चरण वन्दना दें।"

पत्र मिला तो रामरक्खामल्ल ने वह लेखवती को सुना दिया। पत्र सुन लेखवती के आँसू टपक पड़े। रामरक्खामल्ल मुस्करा रहा था। राधा किसी कारण से वहाँ बैठी थी। उसने भी पत्र सुना था और उससे लेखवती के दुःख का अनुमान लगा स्वयं दुःखी हो रही थी।

रामरक्खामल्ल ने बात स्पष्ट कर दी, "अब क्या करोगी?"

"मुझे क्या करना है?" लेखवती ने आँखें पोंछते हुए कहा–"आप बताइये अब साधना क्या करेगी?"

"मैं भी साधना के विषय में ही कह रहा हूँ। जहाँ तक जवाहरलाल का सम्बन्ध है, मेरी तो पहले ही धारणा बन चुकी है। इस लड़के से हमको न तो इस लोक में न ही परलोक में किसी प्रकार के श्रेय की आशा है। मैंने तो उसका विचार छोड़ रखा है। मेरी दृष्टि अब रत्नलाल की ओर ही है।"

"आपने साधना से इसके विवाह का यत्न किया था। अतः आपका उसके विषय में तो उत्तरदायित्व है।"

"मैंने जो तब देखा था, उसका मार्ग ठीक कर दिया था। जो कुछ अब देख रहा हूँ उसकें लिए भी प्रयत्न करूँगा।"

इससे राधा का ध्यान अपनी समस्या पर चला गया वह विचार करती थी कि इस अंग्रेज लड़की से जवाहरलाल का सम्बन्ध अवश्य बन चुका है। इस पर भी वह उससे विधिवत् विवाह करना चाहती है। क्यों?

साधना को जवाहरलाल ने छोड़ रखा है। इस पर भी वह साधना को लिख रहा है कि वह उसके पास वहाँ आ जाये, जहाँ वह नियुक्त होगा। क्यों?

साधना के जवाहरलाल से विवाह का भापाजी ने यत्न किया था। अब उस सम्बन्ध में अन्तर पड़ता देख भापाजी को चिन्ता लगी है। क्यों?

लेखवती यह जानते हुए भी कि जवाहरलाल उच्छृंखल प्रकृति का है, अब उसकी उच्छृङ्खलता का प्रदर्शन देख रो पड़ी है। क्यों?

उस दिन तो वह चुप रही, परन्तु उसके बाद पहला अवसर मिलते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने रामरक्खामल्ल से पूछ लिया, "विवाह–बन्धन को इतनी महत्ता क्यों दी जाती है?"

"इसलिए कि समाज के निर्माण में परिवारों का बहुत बड़ा हाथ है। जितने ही परिवार स्वस्थ, सबल और सुव्यवस्थित होंगे उतना ही समाज सुदृढ़ होगा और परिवार को जोड़ने वाला सीमेन्ट विवाह–बन्धन है।

"पति–पत्नी ही परिवार की आधार–शिला हैं। भले ही परिवार पति–पत्नी से अधिक विस्तार न पा सके। इस पर भी यह परिवार का केन्द्र है। पति–पत्नी विवाह से ही बनते हैं।

"अर्थात् जब स्त्री–पुरुष का सम्बन्ध समाज द्वारा स्वीकृत विधि से होता है तो वह विवाह कहाता है। इस सम्बन्ध में समाज का भी उत्तरदायित्व हो जाता है। अविवाहित सम्बन्ध में समाज तथा अन्य व्यक्ति, जो स्त्री–पुरुष से वैसे भी सम्पर्क रखते हैं, इसमें किसी प्रकार से भी रुचि ले नहीं सकते।

"जब तक समाज का संगठन रहेगा, परिवारों की महानता बनी रहेगी और विवाह एक अत्यावश्यक सामाजिक कृत्य माना जाता रहेगा।"

"तो खटाऊजी से मेरा सम्बन्ध ठीक नहीं।"

"सम्बन्ध में तो कोई खराबी नहीं। चूँकि यह स्वार्थ और धोखा–धड़ी से परे है। इस कारण यह भी धर्म का सम्बन्ध है, परन्तु यह सामाजिक कृत्य नहीं। अतः समाज इसमें रुचि नहीं ले सकता।"

"सन्तोष के पिता से भी तो मेरा ऐसा ही सम्बन्ध था।"

"हाँ! परन्तु बाद में वह अधर्म का सम्बन्ध बन गया था। वह केवल मात्र एक स्त्री–पुरुष का सम्बन्ध न रहकर आर्थिक उलझनों में उलझ गया था। उसमें मतान्धता का भी समावेश हो गया था। अन्त में क्रोध, लोभ, मोह भी उस सम्बन्ध में घुस आये थे।"

"भापा! मेरे विषय में आप क्या देख रहे हैं?"

"तुम्हारे किस विषय में?"

"मेरे विवाहित जीवन के विषय में।"

"मैं तुमको चौराहे पर खड़ी पाता हूँ। तुम अभी निर्णय नहीं कर पा रही हो कि किस मार्ग का अवलम्बन करो।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि मेरा भाग्य मुझको किधर ले जा रहा है?"

"इसमें मैं कुछ नहीं करूँगा। मेरे कहने का अर्थ होगा कि मैं तुमको उँगली पकड़ कर ले चलूँ। मैं ऐसा करना नहीं चाहता।

"एक बार मैंने साधना के विषय में यही किया था। ठीक उस समय जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साधना और जवाहरलाल के विवाह का विचार छूट चुका था, मैंने साधना के भविष्य को देखते हुए उसकी उँगली पकड़ कर विवाह की वेदी पर ले जाकर बैठाने का यत्न कर दिया था।

"विवाह हुआ। दो सन्तानें भी हो गईं। साधना सर्वथा सन्तुष्ट थी, परन्तु मानव–आत्मा और मन अपने भाग्य को पलट भी सकते हैं और जवाहरलाल की प्रकृति ने भाग्य को पलट दिया प्रतीत होता है।

"अब मैं तुम्हारे विषय में ऐसा कुछ नहीं करूँगा।"

"भापा! मैं सत्य ही अपने को चौराहे पर खड़ी पाती हूँ और नहीं जानती कि किधर जाऊँ।"

"मेरा कहना मानो। इस रहस्य को जानने का यत्न छोड़ो कि तुम्हारे पूर्व–जन्म के अथवा इस जन्म के पूर्वी भाग के कर्म–फलों से क्या होगा। जब तुम उसको बदल भी सकती हो फिर उसकी चिन्ता व्यर्थ है। तुम वर्तमान का विचार करो। यदि समझ में नहीं आवे तो अपने को ईश्वरेच्छा पर छोड़ दो।

"मैं ईश्वर का स्थानापन्न नहीं हूँ। इससे मेरा बताया हुआ मार्ग वही होगा जो ईश्वर का इच्छित मार्ग है, यह मैं नहीं कह सकता।"

"भापा! यह तो आपने मुझको एक नए चौराहे पर ला खड़ा कर दिया है। एक चौराहा तो था खटाऊजी, मियाँ शमशाद और सन्तोष कुमार। अब आपने चौराहा बना दिया है अपनी इच्छा का, भगवदइच्छा का और आप द्वारा इंगित। इससे तो समस्या और भी विकट हो गई है।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, "नहीं राधा! समस्या विकट नहीं अपितु सुगम हो गई है। दोनों चौराहे एक ही स्थान पर हैं। मार्ग वही है केवल नाम–पट्ट भिन्न–भिन्न हैं। दो–दो पट्ट लगे हैं। तनिक ध्यान से पढ़ोगी तो जान जाओगी कि कौन–कौन पट्ट पर्यायवाचक हैं। तुम्हें तो अब यह देखना है कि खटाऊजी वाला मार्ग ईश्वरेच्छा वाला है अथवा शमशाद वाला। मेरे इंगित–मार्ग पर तो तुम चल ही रही थीं। उसी पर चलते–चलते यह चौराहा आया है। अब तुम पढ़ लो कि ईश्वरीय इच्छा का पट्ट किस मार्ग पर लगा है।"

"ईश्वरीय मार्ग को कैसे पहचाना जा सकता है?"

"ठीक पहचान तो योग, ध्यान और समाधि से हो सकती है। धर्मशास्त्र भी इस ओर संकेत करता है। उसकी चर्चा तो मैं नित्य करता रहता हूँ।"

इसके आगे बात नहीं हो सकी। रामरक्खामल्ल अपना निश्चित मत बताने के लिए तैयार नहीं हुआ और राधा बहुत हठ करके पूछ भी नहीं सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज उसने अपनी संगीत की श्रेणियाँ नहीं लीं। उसके स्थान पर सरस्वती काम करती रही। राधा का चित्त संगीत में नहीं था। वह अपने कमरे में बैठी चिन्तन करती रही।

दोपहर के समय वह भोजन करने गई और भोजन करके पुनः अपने कमरे में आकर बैठ गई। उसको शोकग्रस्त देख सरस्वती भी उसके पीछे–पीछे वहाँ आ पहुँची। राधा पलंग पर लेटी थी। सरस्वती उसके पास पलंग पर बैठ उससे पूछने लगी, ''क्या बात है राधा बहन?''

''मेरा चित्त आज स्वस्थ नहीं है।''

''क्या कष्ट है चित्त को?''

''एक अति जटिल समस्या उपस्थित हो गई है।''

''मैं समझ गई हूँ। बताऊँ?''

राधा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''क्या समझ गई हो?'' वह उठकर सतर्क हो पलंग पर बैठ गई।

''हम, मेरा अभिप्राय है आपसे गाना सीखने वाली लड़कियाँ, जानती हैं कि शमशाद मियाँ आपसे नित्य सायंकाल मिलने आते हैं। आप उनके साथ भ्रमण करने जाती हैं। हम यह भी जानती हैं कि आप कभी–कभी रात के दस बजे लौटती हैं। इसका एक ही परिणाम हो सकता है, और हम उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं। मैं यह समझती हूँ कि अब आप भी उसी परिणाम की प्रतीक्षा में हैं।''

राधा गम्भीर हो गई। वह समझ गई कि उसका व्यवहार संगीत–भवन के वातावरण को दूषित कर रहा है। संगीत और नृत्य सीखने के लिए आने वाली लड़कियों में कुछ विवाहिता भी थीं। इससे यह लुकाव–छिपाव का सम्बन्ध ही चर्चा का विषय हो रहा है।

वह समझी थी कि यह लुकाव–छिपाव बन्द होना चाहिए। स्पष्ट और प्रत्यक्ष जीवन ही सुखकारक हो सकता है। उसने सरस्वती को तो यह कह कर टाल दिया, ''तुम सब लाल–बुझक्कड़ हो। तुम समझती हो कि मेरे बच्चा होने वाला है। ठीक है न?''

सरस्वती मुस्कराती हुई राधा की आँखों में देखती रही। राधा ने बात को स्पष्ट करते हुए कहा, ''ऐसा बिलकुल नहीं है। शमशाद मुझसे पुनः पति का सम्बन्ध बनाना चाहता है, और मैं अभी मान नहीं रही। बस मेरी समस्या यही है। अब तुम जाओ। एक–दो दिन में तुम इस चिन्ता का परिणाम जान लोगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने उठते हुए पूछ लिया, "क्या इस विषय में भापाजी सहायता नहीं कर रहे?"

"उन्होंने सिद्धान्त की बात बता दी है। अब उस सिद्धान्त का प्रयोग ही मैं विचार रही हूँ।"

राधा सायंकाल शमशाद के साथ भ्रमण के लिए नहीं गई। शमशाद भवन के द्वार पर खड़ा प्रतीक्षा करता रहा। प्रतीक्षा करते–करते साढ़े छः बज गये। आखिर उसने चपरासी को, जो लिफ्ट चलाने का भी काम करता था, कह कर राधादेवी के विषय में पुछवाया। चपरासी ऊपर गया और वापस आकर बोला, "राधाजी, दूसरी मंजिल पर बैठक में बैठी आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। आप आ सकते हैं।"

"क्या बात है?"

"कुछ रुग्ण प्रतीत होती हैं।"

"तो चलो।"

चपरासी उसको बैठक में ले गया। राधा ने उठकर शमशाद का स्वागत किया और बैठाकर कहा, "मैं आज एक विषय पर विचार कर रही थी। इस कारण घूमने जाने को तबियत नहीं की।"

"क्या विचार हो रहा था? क्या मैं उसमें हाथ बटा सकता हूँ?"

राधा ने कुछ विचार कर कहा, "मैं अब तक आपका इम्तिहान ले रही थी। वह समाप्त हो गया है। अब परीक्षा–फल घोषित करना चाहिए। ठीक है न?"

"तुमने तो मेरी जान ही निकाल दी है। अब तो जल्दी करो। बताओ मेरी किस्मत में क्या है?"

"मैं समझती हूँ कि परीक्षा का परिणाम कुछ ऐसा है कि मैं अब आप के साथ नित्य सायंकाल भ्रमण के लिए नहीं जा सकूँगी। आपमें और मुझमें वही सम्बन्ध हो सकेगा, जो मेरा बम्बई में रहने वाले किसी भी परिचित से है।"

शमशाद का मुख पीला पड़ गया। वह मुख देखता रह गया। इस पर राधा ने कहा, "आपको अब अपना विवाह कर लेना चाहिए और जब तक आप विवाह नहीं कर लेते, मेरा आपसे मेल–मुलाकात रखना असम्भव है।"

"परन्तु बेगम! मेरा विवाह तो हो चुका है।"

"अच्छी बात है। आप अब अपनी पत्नी के बिना पधारने की कृपा न करें।"

"उसके साथ ही आता हूँ। उसके पास ही आता हूँ। देखो नासिर! मैं तुमको अपनी बीवी समझ, तुमसे मिलने आता था। सिरफ फरक इतना था कि तुम रूठी हुई बीवी थीं और मैं तुमको मनाने की कोशिश कर रहा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं। मैं इसको इस प्रकार समझी हूँ कि आप का एक वेश्या से सम्बन्ध था। उस वेश्या ने समझा था कि आप उससे अति प्रेम करते हैं। इस कारण वह अपना वेश्या का धंघा छोड़ आपके पीछे चल पड़ी थी। जब आपने सरवर से विवाह किया था तो वह यह समझी थी कि आप सुन्दर औरत और वालिद साहब के आग्रह के कारण विवाह कर बैठे हैं। अन्यथा आपका प्रेम उससे बना ही है। आपके सरवर से एकाकी सम्बन्ध पर भी वह उसको अस्थायी अवस्था ही समझती थी। वह सरवर के सौंदर्य को न्याय का प्रतीक ही मानती थी। वह निष्ठावान बीवी बनी थी, इस आशा से कि आप उसको दिये गए वचनों का पालन करेंगे और एक दिन उससे भी न्याय करेंगे। परन्तु आपने उसको एक साधारण वेश्या समझ, घर से निकाल दिया।

"फिर आपके घर आने में वह वेश्या अपने को सुरक्षित नहीं मानती थी और आपने उसकी हत्या कर देनी चाही।

"आपने अब सरवर को खो पुनः उस वेश्या से सम्बन्ध बनाने का यत्न किया हैं, परन्तु आप उसका विश्वास खो चुके हैं और वह अपने मन को आपके घर जाने के लिए तैयार नहीं कर सकी।"

"और वह वेश्या अब पुनः वेश्या का पेशा करने लगी है क्या?"

"उसको अब उसकी आवश्यकता अनुभव नहीं होती। परमात्मा ने उसमें एक ऐसी योग्यता उत्पन्न कर दी है कि वह अपना निर्वाह अनायास हो कर सकती है।"

"और मेरी परीक्षा का क्या हुआ?"

"परीक्षा में आप फेल हुए हैं।"

"कैसे?"

"बहुत बुरी तरह। आपने कुछ दिनों से इन्सानियत के वईद (मानवता से इतर) व्यवहार अपनाना आरम्भ कर दिया था। याद है कल आपने क्या किया था?"

शमशाद ने मुस्कराकर कह दिया–

"क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढ़ाना चाहा।
आपने खुद भी तो दामन न बचाना चाहा।।
यों तो फसाना–ए–उल्फत था अजल से रंगीं।
हमने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा।।"

"मैंने कब दामन खोल कर रखा था?" राधा ने माथे पर त्योरी चढ़ा कर कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन छः महीनों में मेरे खर्चे पर दावतें जो खाती रही हो।"

"ओह! भूल हुई। अच्छा ठहरिए। मैं अभी आती हूँ।"

इतना कह राधा उठी और लिफ्ट पर सवार हो, ऊपर की मंजिल पर अपने कमरे में चली गई। वहाँ बैठ उसने ग्यारह सौ रुपये का चेक काट कर और अपने चिट्ठी लिखने के कागज पर 01/100 लिख कर दोनों को पिन से जोड़, चपरासी को देकर कह दिया, "यह नीचे बैठे आदमी को दे दो।"

: 5 :

अगले दिन प्रार्थना के समय सुल्ताना को भी बैठे देख राधा को विस्मय हुआ। वह समझ रही थी पिछले दिन की शमशाद से बात के बाद उसके घर से किसी के आने की आवश्यकता नहीं रही।

और किसी को तो शमशाद से बातचीत का ज्ञान नहीं था। इससे दूसरों ने इसमें कोई विलक्षणता नहीं देखी। प्रार्थना के बाद सुल्ताना राधा के पास आकर कहने लगी, "मैं तुमसे एक बात करना चाहती हूँ।"

"तो अपने कमरे में चलूँ?"

"नहीं, भापाजी के सामने बातचीत होगी।"

राधा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "उनको बीच में लाने की क्या आवश्यकता है?"

"वे तजरबेकार और इल्मदां हैं। उनकी राय से फायदा ही रहेगा।"

राधा उसको लेकर रामरक्खामल्ल के कमरे में जा पहुँची। अब प्रार्थना दूसरी मंजिल के बड़े कमरे में होती थी। सीखने वालों की संख्या अस्सी के लगभग हो गई थी। सिखाने वालों की संख्या तीन के स्थान पर सात हो चुकी थी। ऊपर की मंजिल पर इतनों के समाने के लिए स्थान नहीं था। अतः रामरक्खामल्ल के कमरे में जाने के लिए वे उसके साथ–साथ ही ऊपर की मंजिल पर चले गये।

यह प्रातः के अल्पाहार का समय था। भवन में रहने वालों के लिए अल्पाहार ऊपर की मंजिल पर बनता था और वे वहीं खाते थे। सीखने वाली लड़कियाँ और सिखाने वाली अध्यापिकाएँ दूसरी मंजिल पर ही अल्पाहार लेती थीं और भोजन करती थीं।

सब अपने–अपने कमरे में अल्पाहार लेते थे। राधा ने अपने लिए और सुल्ताना के लिए भी भापा के कमरे में अल्पाहार मँगवा लिया और भापा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "अम्मी आपसे कुछ बात करना चाहती हैं।"

"ठीक है। आहार भी करेंगे और बात भी कर लेंगे।"

जब खाना परोसा जा रहा था सुल्ताना ने अपनी बात बता दी। उसने कहा, "कल रात शमशाद घर पहुँचा तो मुझसे लड़ने लगा। वह मुझको गालियाँ दे–देकर कोसता रहा। उसका मुझ पर यह इल्जाम है कि मैंने उसको उम्मीद दिलाई थी कि राधा उसके घर पर जाकर रहने लगेगी और इसने पिछली रात उसको जवाब दे दिया है।"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए राधा की ओर देखा। राधा चुपचाप बैठी थी। सुल्ताना ने आगे कहा, "वह चाहता है कि जब मैंने उसको उम्मीद दिलवाई है तो मैं उसके लिए राधा को मना लाऊँ।

"मैं राधा को कहना फजूल समझती हूँ। इसलिए मैं आपसे एक बात पर राय करने आई हूँ।"

राधा और रामरक्खामल्ल चुपचाप सुल्ताना को अपनी पूरी बात कहने का अवसर देना चाहते थे। वे उसका मुख देखते रहे। सुल्ताना ने अपने विचारों को सुव्यवस्थित करते हुए कहा, "मैंने जब उसका काम करने से इनकार किया तो उसने मुझको घर से निकाल दिया है। शमशाद ने कहा है कि मैं तब ही उसके घर में जा सकती हूँ, जब नासिर को अपने साथ लेकर जाऊँ।"

रामरक्खामल्ल का प्रश्न था, "उसका घर कहाँ है?"

"वही कम्पिला हिल्ल वाला, जो राधा के मकान का एक हिस्सा है।"

"वह तो राधा ने तुमको किराये पर दिया था। तुमने राधा को लिख कर दिया हुआ है।"

"यह ठीक है। मगर मैं एक औरत क्या कर सकती हूँ?"

"और तुम्हारा लड़का मजीद क्या कहता है?"

"वह शमशाद के साथ मिल गया है। दोनों हम–खयाल हैं।"

"और तुम क्या कहती हो? अम्मी!" राधा ने पूछ लिया। उसके माथे पर त्योरी चढ़ी हुई थी।

"मैं दोनों को काफिर समझती हूँ। मैं भला कैसे एक औरत को उसकी मर्जी के बिना किसी मर्द के पास जाने के लिए कह सकती हूँ। मैं भी औरत हूँ, एक औरत के जजबात को समझती हूँ।"

"पर, मैं तो समझती थी कि इस दुकान में तुम तीसरे हिस्से की पत्तीदार हो?"

"हाँ, वह तो हूँ। मगर कोई लिखत–पढ़त नहीं। रावलपिंडी में टाँगों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम में सिर्फ दो पत्तीदार थे। मैं और मजीद। शमशाद को पीछे मिलाया था।''

''अम्मी! तुम मजीद को समझाओ। वह तुम्हारा लड़का है। जरूर मान जाएगा।''

''उस पर भी अपने बाप का असर मालूम होता है। सुबह इधर आने से पहले मैंने उसको अलैहदा में समझाया था। मैंने कहा कि इतने बड़े शहर में मैं कहाँ जाऊँगी? तो उसने कह दिया कि अगर झगड़ा मुसलमान और मुसलमान में होता तो उसकी हमदर्दी अपनी माँ के साथ होती। मगर झगड़ा मुसलमान और काफिर के दरमियान होने से उसकी हमदर्दी मुसलमान के साथ है।

''मैंने कहा, मैं मुसलमान नहीं हूँ क्या? तो वह कहने लगा कि मैं एक काफिर की हिमायत कर रही हूँ।''

रामरक्खामल्ल ने बात समाप्त करते हुए पूछ लिया, ''तुम बताओ क्या चाहती हो?''

''मैं यही तो आप से पूछने आई हूँ।''

''मैं समझता हूँ कि तुमको अपने बाप के पास रावलपिंडी लौट जाना चाहिए।''

''वे मेरे पहले सलूक की वजह से मुझसे नाराज हैं। मैंने उनकी राय के खिलाफ शमशाद को छुड़ाने की कोशिश की थी।''

''उनके पाँव पकड़ कर क्षमा माँग लो। अपने बाप के पाँव पकड़ना अपने लड़के की मिन्नत–समाजत करने से ज्यादा ठीक रहेगा।''

''उन पर कोई चाराजोई नहीं की जा सकती क्या?''

''मुकदमा कर सकने की बात तो कोई वकील ही बतायेगा। मुझको उन पर उतना ही विश्वास है, जितना किसी भी दुकानदार पर हो सकता है। एक दुकानदार की तरह वकील भी मार्केट में बैठा, दूसरे वकीलों से मुकाबला करता है।

''मैं तो यह कह रहा हूँ कि तुमने अपने वालिद की राय के खिलाफ शमशाद की हिमायत कर भूल की थी। पहले उस भूल का प्रायश्चित्त कर लो। उनकी खिदमत कर पहले उनको प्रसन्न कर लो। पीछे जैसा वे कहें वैसा करना। इस पर भी मेरा तो यही कहना है कि माँ और पुत्र में मुकदमा किसी प्रकार भी शोभा की बात नहीं।''

सुल्ताना चुपचाप रामरक्खामल्ल का मुख देखती रही। वह समझ रही थी कि उसे अपना दुकान में हिस्सा छोड़ने की बात कही जा रही है। वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन को टटोल रही थी कि इतना कुछ कर सकेगी क्या?

साथ ही रामरक्खामल्ल की इस युक्ति को मानती थी कि माँ–पुत्र में मुकदमा सबके लिए हँसी की बात बन जायेगी। वह द्विविधा में फँसी अनिश्चित मन बैठी रही।

उसने एक दूसरी बात कह दी, "मुझको बम्बई से जाने में दुःख महसूस होगा।"

"क्या दुःख होगा?"

"आप सबकी संगति से दूर हो जाऊँगी।"

"हमारी संगति तो भागी नहीं जा रही। जब अपने वालिद साहब से सुलह कर लोगी तब हमारे पास संगति में आओगी तो शोभा होगी। इस तरह तो बदनाम हो जाओगी। औरत को या तो अपने खाविन्द से बना कर रखनी चाहिए या अपने वालिद से। नहीं तो बदनाम हो जाती है।"

सुल्ताना मान गई और उसी दिन राधा से एक सौ रुपया उधार ले रावलपिंडी चली गई।

शमशाद ने जब मजीद से कहा कि अम्मी नासिर के हिन्दू बनी रहने में मदद कर रही है तो मजीद भी अपनी माँ के खिलाफ हो गया था। उसी रात जब राधा ने शमशाद से मेल–मुलाकात रखने से न कर दी थी, शमशाद ने घर पहुँच सुल्ताना को डाँटना आरम्भ कर दिया। दोनों में झगड़ा सुन मजीद भी आ गया। शमशाद कह रहा था, "अम्मी! तुमने मुझको बहुत धोखा दिया है। तुम कहती थीं कि वह मान जायेगी, मगर उस बदकार औरत ने आज जवाब दे दिया है।"

सुल्ताना ने कहा, "मैंने तुमको कब कहा था कि वह मान जायेगी। मैंने तो यह कहा था कि तुम्हारा बम्बई में आना, उसके स्कूल के नीचे दुकान और उसके मकान में रहने की जगह पा जाना, इस बात के लक्षण हैं कि तुम दोनों के ताल्लुकात भी सुधर जायेंगे। तुम कामयाब नहीं हुए तो उसका ख्याल छोड़ दो। कहीं और कोशिश कर सकते हो?"

"उसने मुझको छः महीने तक नाच नचाया है और यह जानकर कि मैं हिन्दू होने के लिए तैयार नहीं हो रहा, मुझको जवाब दे दिया है।"

"मैं इसको यों समझी हूँ कि वह हिन्दू है। तुम छः महीने में भी उसको हिन्दू से मुसलमान नहीं बना सके और हताश हो चले आये हो।"

"तो तुमको नासिर का रवैया पसन्द है?"

"यह उसके जमीर की बात है। इसमें मैं क्या कह सकती हूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारा मजीद क्या कहता है?"

"वह इन्सान के नाते आजाद है। मुसलमान हो या न हो, यह उसके अपने तय करने की बात है।"

"तो तुम भी नीम हिन्दू हो गई हो?"

"नीम हिन्दू नहीं, शमशाद! मैं पूरी हिन्दू हूँ।"

"तो तुम मेरे घर में नहीं रह सकतीं।"

"यह घर तो मेरा है।"

"जबरदस्त की फतह होगी। लड़कर देख लो।"

"तो तुम मुझको घर से निकाल दोगे?"

"हाँ।"

"क्यों?"

"सिरफ इसलिए कि तुम काफिरों की सोहबत में रह कर काफिर हो गई हो।"

"तो तुम काफिर का घर छोड़ दो।"

"घर का किराया तो दुकान देती है।"

"और दुकान में भी मेरा हिस्सा है।"

"कोई लिखत–पढ़त है?"

सुल्ताना मुख देखती रह गई। उसने मजीद की ओर देखा तो मजीद ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया, "अम्मी! दो किश्तियों में पाँव रखकर पार नहीं लगोगी। या तो यहाँ रहो और उस कुफरस्तान में मत जाओ, नहीं तो जाओ वहाँ। न घर पर तुम्हारा अख्त्यार है, न ही दुकान पर।"

सुल्ताना ने कहा, "अब रात हो गई है। सुबह इस बात पर विचार करेंगे।"

अगले दिन जब सुल्ताना गुसलखाने में गई हुई थी तो मजीद ने उसकी कोठरी को ताला लगा दिया। वह स्नान कर बाहर आई तो कमरे को ताला लगा देख मजीद से कहने लगी, "यह क्या किया है?"

"तुमको घर से निकालने का बन्दोबस्त।"

"मजीद! मैं अकेली इतने बड़े शहर में कहाँ जाऊँगी?"

"नासिर के पास, जिसकी हिमायत कर रही हो।"

"इन गीले कपड़ों के साथ? शरम नहीं आती इस तरह आधी नंगी माँ को घर से निकालते हुए?"

मजीद की समझ में बात आ गई। उसने कहा, "अच्छा खोलता हूँ। मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े पहन चली जाना, नहीं तो भीतर ही भूखों मर जाओगी। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा।''

''मजीद! कुछ तो रहम करो।''

''नहीं माँ! हम दोनों भाई इसलिए मेहनत–मशक्कत नहीं करते कि एक काफिर के ऐश–आराम का सामान करें।''

मजीद ने ताला खोल दिया। सुल्ताना कमरे में गई तो मजीद कमरे के बाहर बैठा रहा। सुल्ताना ने कपड़े पहने तो वह भीतर घुस गया और उसकी जेबों की तलाशी ले ली। जो कुछ नकद उसके पास था वह छीन लिया और बाँह पकड़ कमरे से बाहर निकाल दिया।

सुल्ताना ने कहा, ''बेटा! बस का किराया तो दे दो। छः मील पैदल कैसे जाऊँगी।''

मजीद ने अपनी जेब से एक रुपये का नोट निकाल कर देते हुए कहा, ''अच्छा अब तो जाओ।''

मजीद समझ रहा था कि वह अपनी माँ से बहुत सख्त सलूक कर रहा है। मगर शमशाद ने उसको कुरान–मजीद की कसम दिला रखी थी। दोनों ने एक योजना बना, सुल्ताना को घर से निकाला था। वे समझते थे कि वे माँ को मजबूर करेंगे तो वह नासिर पर जोर डालकर उसे लाने की कोशिश करेगी।

सुल्ताना भी इस विचार से संगीत–भवन पहुँची थी कि भापाजी और राधा दुकान में से हिस्सा वसूल करने में उसकी मदद करेंगे। परन्तु रामरक्खामल्ल का विचार करने का ढंग विलक्षण था। उसने यह समझा कि माँ–पुत्र के झगड़े में हिन्दू–मुसलमान का सवाल पैदा होने से मुकदमा चल नहीं सकेगा। यदि सुल्ताना का बाप नालिश करेगा तो मुकदमे का रंग बदल जायेगा। इसी कारण उसने सुल्ताना को रावलपिंडी भेज दिया।

: 6 :

राधा ने अम्मी को विदा करते हुए कहा, ''भापाजी ने ठीक ही कहा है कि औरत अपने माता–पिता, पति अथवा अपनी सन्तान से ही संरक्षण पाती है। तुम्हारी अवस्था में तुम्हारे माता–पिता ही तुम्हारी रक्षा कर सकेंगे। अम्मी! उनकी स्वीकृति से यहाँ रहने आओगी तो मुझको भारी प्रसन्नता होगी। इसके अलावा अगर कभी रुपये–पैसे की जरूरत हो तो पोस्ट–कार्ड लिख देना। यथाशक्ति मदद करती रहूँगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम किसलिए मदद करोगी?"

"तुम अम्मी जो हो। मैं माता–पिताविहीन लड़की सदा माता–पिता ढूँढ़ती रही हूँ। परमात्मा की कृपा से मुझको मिल भी जाते हैं। उनमें एक तुम भी हो।"

सुल्ताना गई तो राधा विचार करने लगी कि यह क्या हुआ? इस पूर्ण झमेले में वह अपने को दोषी मानती थी। अम्मी बेचारी तो व्यर्थ में ही पिस गई थी। यदि वह पहले दिन ही शमशाद को मुँह लगने न देती तो अब यह नौबत न आती। वह अपने मन की दुर्बलता ही इसमें कारण समझती थी।

इस समय उसको ख्याल आया कि शमशाद से मकान खाली कराना चाहिये। इस पर उपाय विचार करने लगी। इसके लिए वकील की आवश्यकता थी। वकील के लिए दो व्यक्ति राय दे सकते थे। एक रुक्मिणी और दूसरे खटाऊजी। उसका निर्वाचन खटाऊजी था। उसने टेलीफोन किया और उसके बँगले पर जा पहुँची।

"मैं आज विचार ही कर रहा था कि तुमको बुलाऊँ और टेलीपैथी से तुम्हारे मन में भी विचार पैदा हो गया।"

राधा ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "मैं आज एक अपने काम से आपके पास आई हूँ।"

"यह तो मेरा सौभाग्य होगा कि तुमको भी कोई काम मेरे लायक सूझा है। बताओ, राधा रानी!"

"एक बार पहले भी आपने मेरी मदद की थी, लाहौर में। जब मुझ पर हत्यारे की छुरी चली थी। आपने मेरे मुकदमे की पैरवी की थी।"

"वह तो अपनी नाटक कम्पनी की एक अभिनेत्री की रक्षा के लिए था। अब तुम्हारा अधिकार उससे बहुत ऊँचा है?"

"मगर काम पहले से छोटा है। उसी प्रोफेसर से, जो अपने को मेरा खाविन्द कहता था, झगड़ा है। वह मेरे मकान में घुस बैठा है। मकान का एक भाग उसकी अम्मी को किराये पर दिया था। उसने माँ को तो निकाल दिया है और खुद वहाँ पर बैठा हुआ है।"

"तो वह बम्बई में आ गया है क्या?"

"हाँ, संगीत–भवन के नीचे एक दुकान ले ली है और अब मकान का मालिक बन बैठा है।"

"कब से आया हुआ है वह?"

"दुकान लिये तो आठ–नौ महीने हो चुके हैं। पहले उसका भाई आया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब छः महीने से वह खुद आया हुआ है। उसकी माँ ने मकान माँगा तो मैंने दे दिया। वह मुझसे पुनः सम्बन्ध बनाना चाहता था। मैंने इनकार किया तो उसने माँ को घर से धक्के दे–देकर बाहर निकाल दिया है और मकान पर स्वयं अधिकार कर बैठा है।''

''तुमने कभी जिक्र नहीं किया। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी जिन्दगी खतरे से बाहर नहीं है।''

''मुझको अब मरने का डर नहीं रहा। यह शरीर काफी गन्दा हो चुका है। इसे बदल देने से कुछ लाभ ही होगा।''

''पागल हो रही हो राधा! माना कि यह आत्मा मरती नहीं। मगर जितना खुबसूरत शरीर, मीठी आवाज और वसीह दिमाग इस आत्मा को मिला है, फिर मिलेगा क्या?''

''इस जन्म के कर्मों की कीमत मैं लगा नहीं सकती। मैं तो कह रही हूँ कि यह संसार अब रहने योग्य नहीं रहा।''

''नहीं रहा होगा कहीं, वहाँ नहीं रहो उसको छोड़ दो। मैंने पहले भी प्रस्ताव किया था कि इधर आ जाओ। वह गन्दगी यहाँ नहीं है। आज फिर कहता हूँ कि इतना बड़ा मकान है। सब खाली पड़ा है।''

''मैं अब विचार तो कर रही हूँ कि आपका निमन्त्रण स्वीकार कर लूँ। मगर इसके लिए एक–दो बातें निश्चय करनी होंगी।''

''क्या?''

''मेरा संगीत–भवन का काम चालू रहेगा।''

''इसमें मुझको क्या आपत्ति हो सकती है?''

''दूसरे, मुझसे कचहरी में चलकर विवाह करना होगा।''

''सत्य? राधा! यह अक्ल की बात तुमको किसने बताई है? मैं उसको साक्षात् भगवान मान दण्डवत–प्रणाम करूँगा।''

''ये वही महापुरुष हैं जिन्होंने मेरे भवन में काम करते हुए भी आप से सम्बन्ध बनाये रखने पर आपत्ति नहीं की थी।''

''मतलब लाला रामरक्खामल्ल ने?''

''जी।''

''जब उनको यह विदित है कि हमारा सम्बन्ध है तो अब शादी का विचार कैसे पैदा हो गया?

''पिछले छः महीने से शमशाद मेरे आगे–पीछे घूम रहा था। वह निरन्तर आग्रह कर रहा था कि मैं उसके घर चल कर रहूँ। दिन–प्रतिदिन उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग्रह बढ़ रहा था। मैंने इस परिस्थिति का भापाजी से वर्णन किया। उन्होंने मेरे मन की बात पूछी। मैंने बता दिया कि मैं अपने जीवन–मार्ग पर चलती–चलती एक चौराहे पर आ पहुँची हूँ। मैंने बताया एक मार्ग शमशाद की ओर जाता है। दूसरा आपकी ओर और तीसरा सन्तोष की ओर।''

''और लालाजी ने मेरे वाला मार्ग बता दिया है?''

''एक ढंग से वे बोले कि संसार में इतने मार्ग नहीं हैं। इनको इतने समझना भूल है। वास्तव में मार्ग दो हैं। एक ईश्वर का और दूसरा 'मैटीरियलिज्म' (भौतिक उपासना) का। इन्हीं दो मार्गों को दूसरे शब्दों में 'गौडली पाथ' और 'वर्डली पाथ' कहते हैं। साधारण भाषा में नेकी और बदी का मार्ग भी कहते हैं। उन्होंने कहा कि मेरे दो मार्गों में कौन क्या है यह मैं विचार कर लूँ।

''शमशाद और आप में तो कुछ बहुत विचार की बात नहीं थी। बात थी सन्तोष की। मैं यह जानना चाहती थी कि वह किस मार्ग को पसन्द करता है। मैंने आज उससे बात की है और उसको आप पिता के रूप में अधिक पसन्द हैं। मैंने जब उससे कहा कि मैं विवाह करना चाहती हूँ तो वह इसके ठीक–ठीक अर्थ न समझ मेरे मुख पर देखने लगा। इस पर मैंने उसको समझाया। मैंने कहा कि प्रत्येक स्त्री विवाह करती है। ताई लेखवती ने भापाजी से विवाह किया है। रुक्मिणी दादी ने सेठ देसाई से किया है। सरला माता ने मिस्टर वर्मा से किया है। इसी प्रकार मैं भी करना चाहती हूँ।

''मैंने उसे यह बताया कि पहले मैंने शमशाद मियाँ से विवाह किया था। उन्होंने मुझको घर से निकाल दिया था। पीछे तुमको भी निकाल दिया। तब से मैं अकेली रहती रही हूँ। अब मैं विवाह कर अपने पति के घर जाकर रहना चाहती हूँ। बताओ! मेरे साथ चलोगे?

''इस पर वह पूछने लगा कि फिर उस शमशाद मियाँ के घर जाऊँगी क्या? मैंने कहा, नहीं, खटाऊजी विवाह के लिए कह रहे हैं। सुख की साँस लेते हुए उसने कहा कि ठीक है, वह वहाँ चलेगा। इस प्रकार सन्तोष का मार्ग और आपका मार्ग एक हो गया है।''

''परन्तु राधा! मैं तो 'गौडली' आदमी नहीं हूँ। मैं तो 'मैटीरियलिस्टिक' (दुनियादार) हूँ।''

''आप समझते नहीं। मुख से कहने पर न तो कोई परमात्मा को मानने वाला बनता है, न ही दुनियादार अथवा भौतिकवादी। यह तो कर्मों से पता चलता है। आपके कर्म ईश्वरीय मार्ग वाले हैं। यह मैं जानती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कोई एक बात तो बताओ जो तुमने मुझ में ईश्वरीय–मार्ग की देखी हो?"

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, "आपने आज तक मुझको पूर्ण स्वतन्त्रता दे रखी है। जब मैं नाटक कम्पनी में थी, तब भी और इस समय विवाह की शर्तों में भी। यह आत्मवादी ही कर सकते हैं। वे आत्मा का मान करते हैं।"

"जैसा समझो। मैं तो तुमसे विवाह के लिए तुम्हारे भापाजी का कोटि–कोटि धन्यवाद ही करूँगा। कहो तो आज ही चलकर उनके चरणस्पर्श कर आऊँ।"

संगीत की पढ़ाई के बाद चाय पी जा रही थी कि खटाऊजी संगीत–भवन में आ गया। वह रामरक्खामल्ल के कमरे में पहुँचा तो रामरक्खामल्ल ने बैठाकर पूछा, "चाय लेंगे?"

"आज तो मैं आपसे बहुत कुछ लेने के लिए आया हूँ?"

"फरमाइये! मैं क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"जरा राधा को बुला दीजिये।"

रामरक्खामल्ल ने घण्टी बजाई तो रत्नलाल आ पहुँचा। रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "किधर जा रहे हो?" वह धुले कपड़े पहने था।

"आज देसाईजी के घर पर निमन्त्रण है।"

"कैसा निमन्त्रण है?"

"टेलीफोन आया है। मुझको और सन्तोष को बुलाया है।"

"किसने निमन्त्रण दिया है?"

"टेलीफोन पर सोहनलाल बोल रहा था।"

"क्या कहता था?"

"मुझको तो यही कहा है कि मैं और सन्तोष छः बजे चले आयें। पीछे राधा बहन को बुलाया था। वह टेलीफोन पर आई तो मैं चला आया था।"

"अच्छा, राधा बहन को बुलाओ।"

रत्नलाल गया और तुरन्त ही लौट आया। राधा भापाजी की ओर ही आ रही थी। वह रेशमी साड़ी और जम्पर पहने थी। आज उसने एक–आध भूषण भी पहन रखा था। हल्का–सा होंठों को रंग भी लगाया था।

"कहाँ जा रही हो राधा रानी?"

"रुक्मिणी जी के घर निमंत्रण है।"

"ओह! पर ये खटाऊजी तुमको पूछ रहे हैं?"

"इसी कारण तो यह वस्त्राभूषण पहनकर आई हूँ। मुझको विदित है कि ये क्यों आये हैं।"

रामरक्खामल्ल ने प्रश्न–भरी दृष्टि से खटाऊजी की ओर देखा तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया, "बात यह है कि मैंने और राधाजी ने यह निश्चय किया है कि आज से पन्द्रह दिन के बाद हमारा विवाह होगा। हमने कचहरी में प्रार्थना कर दी है और नोटिस जारी हो गया है।"

"मैं और ये आप से आशीर्वाद लेने आये हैं।" राधा ने कह दिया।

"ओह! तो यह कारण है इस शृंगार का। राधा बेटी! अच्छा ठहरो!" रामरक्खामल्ल उठा और लेखवती के कमरे में गया तो वह भी कपड़े पहन तैयार हो रही थी। रामरक्खामल्ल ने विस्मय में पूछा, "तो तुम भी जा रही हो।"

"जी।"

"कहाँ?"

"राधा के साथ रुक्मिणी बहन के घर।"

"वहाँ क्या है?"

"यह तो उसने बताया नहीं। उसने कहा है कि रुक्मिणी बहन ने मुझ को बुलाया है। ठीक छः बजे यहाँ से चलना है।"

"अच्छा सुनो। राधा और खटाऊजी ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है। वे आशीर्वाद माँगने आये हैं। उनको कुछ शकुन देना चाहिए।"

"हाँ मेरे पास छुहारे हैं। नारियल भी हैं। कहिए तो एक रूमाल में बाँध कर दे दूँ।"

"हाँ! बाँधकर मेरे कमरे में आ जाओ।"

रामरक्खामल्ल कमरे में आया तो खटाऊजी विचार कर रहा था कि वे क्या करने गए हैं। रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "ऐसे खुशी के अवसर पर मैंने समझा कि मैं अपनी पत्नी सहित तुम दोनों को आशीर्वाद दूँ। अतः अपनी पत्नी को बुलाने गया था।"

लेखवती एक लाल रेशमी रूमाल में 14 छुहारे और नारियल बाँधकर ले आई। उसने आकर बैठते हुए कहा, "तुम दोनों आँचल फैलाओ।"

राधा ने साड़ी का आँचल फैला दिया तो लेखवती ने रूमाल की पोटली देते हुए कहा, "राधा बेटी, सौभाग्यवती रहो। तुम दोनों दीर्घायु होवो और सुखी, स्वस्थ तथा आनन्द का जीवन व्यतीत करो।"

रामरक्खामल्ल ने 'एवमस्तु' कह कर लेखवती का समर्थन कर दिया। राधा ने वह पोटली खटाऊजी के हाथ में देकर कहा, "चलिये।"

"कहाँ?"

"मेरी एक और माता हैं। उन्होंने आपको भी बुलाया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह!" रामरक्खामल्ल समझ गया। उसने कहा, "तो वहाँ भी आशीर्वाद लेने जा रही हो?"

"यह तो मैं जानती नहीं। मैंने कचहरी से लौट कर रुक्मिणीजी को यह समाचार दिया था। उस समय तो उन्होंने यह ही कहा था कि वे बहुत प्रसन्न हैं। पीछे चार बजे के लगभग उनका टेलीफोन आया था कि मैं इनके साथ उनके घर पर छः बजे पहुँच जाऊँ। अपने साथ ताईजी को और सरस्वती बहन को लाने के लिए कहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि रत्नलाल और सन्तोष को भी निमन्त्रण है।"

"तो तुम्हारा विचार है कि यह बुलौआ इस सगाई के उपलक्ष में ही है।"

"यह नहीं बताया। इसी कारण मैंने ताईजी तथा सरस्वती को भी नहीं बताया।"

"ठीक है। अब समय हो रहा है, जाओ।"

"तो आप नहीं चल रहे?"

"मैंने आशीर्वाद दे दिया है। साथ ही मुझको तो तुम्हारी माँ का निमंत्रण है नहीं।"

"है क्यों नहीं।" रुक्मिणी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

"भापाजी। सबको तो टेलीफोन पर निमन्त्रण दे सकती थी परन्तु आपके लिए तो यह धृष्टता नहीं कर सकती। इस कारण आपको स्वयं लेने आई हूँ।"

: 7 :

वास्तव में ही राधा और खटाऊजी की सगाई के उपलक्ष्य में चाय-पार्टी थी। संगीत-भवन से आये अभ्यागतों के अतिरिक्त सरला, मिस्टर वर्मा, सोहनी और सोहनलाल भी आमन्त्रित थे। इनके अतिरिक्त एक अन्य महाशय थे, उनका नाम था निर्मलचन्द्र राय।

रामरक्खामल्ल निर्मलचन्द्र राय को पहचान गया। यह वही व्यक्ति था जो उससे कलकत्ता में रिवाल्वर खरीदने के लिए पाँच सौ रुपया माँगने आया था। वह उसे वहाँ देख चकित रह गया। रुक्मिणी ने उसका परिचय नहीं कराया। इससे किसी ने पूछना उचित भी नहीं समझा।

रुक्मिणी ने चाय-पान करते हुए कहा, "राधा मेरी बहुत-सी बेटियों में एक है। इस कारण जब इसने बताया कि इसकी सगाई खटाऊजी से हो गई है तो मैंने इस सामाजिक कृत्य को सामाजिक रूप देने के लिए इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय–पार्टी का आयोजन किया है।

"इस आयोजन में उन सब को भी आमंत्रित कर लिया है, जो राधा से स्नेह रखते हैं। मैं जानती हूँ कि आप सब को राधा और खटाऊजी की सगाई पर प्रसन्नता है। इस समय मैं एक बात और बताना चाहती हूँ। मैंने कहा है कि राधा मेरी एक बेटी है। इसका अर्थ तो यह ही है कि मेरी और भी बेटियाँ हैं। एक बेटी सोहनी है। आप सब इसको जानते हैं। मैं इस बात की प्रतीक्षा कर रही हूँ कि एक दिन वह भी मेरे पास आयेगी और मैं आपको एक और दावत देने का सौभाग्य प्राप्त करूँगी।"

सब सोहनी का मुख देखने लगे थे। वह अपने चम्मच से सॉसर को कुरेद रही थी और लाल मुख हुए प्लेट पर देख रही थी।

रुक्मिणी ने कहा, "इस समय मैं एक और सूचना दे दूँ तो अनुपयुक्त नहीं होगी। मेरे कई बेटे भी हैं। एक सोहनलाल है। एक सन्तोषकुमार है। मैंने एक भाई भी बना लिया है। वे हैं निर्मलचन्द्र राय। ये संस्कृत साहित्य के विद्वान, कई हिन्दुस्तानी और यूरोपीय भाषाओं के ज्ञाता और देशभक्त, भद्र पुरुष हैं।

"ये सब भी अभी अविवाहित हैं। इससे इन सब के लिए भी ऐसे अवसर आने चाहिए। यह मेरी हार्दिक आकांक्षा है।"

सब ने खटाऊजी और राधा को बधाई दी और रुक्मिणी ने खटाऊजी को इस अवसर पर एक बहुत सुन्दर माणिक्य जड़ित अँगूठी दी। इस प्रकार दावत समाप्त हुई।

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "रुक्मिणी बहन! यह परिवार देसाईजी की अनुपस्थिति में ही बटोरा है क्या?"

"इसका श्रीगणेश तो उनके सामने ही आरम्भ कर दिया था। सोहनी और सोहन को मैंने तब ही परिवार में सम्मिलित कर लिया था। अन्य लोग पीछे आये हैं और वे अभी उतने समीप पहुँचे भी नहीं जितना ये पहुँच चुके हैं। इस प्रकार से परिवार–वृद्धि का सुझाव तो राधा ने ही दिया था। यह जबरदस्ती लड़की बनी तो मुझको कुछ सुख अनुभव हुआ। मैंने इस सुख को विस्तार देने का यत्न किया है।

"एक बात मैं जान गई हूँ कि सन्तान ईश्वरेच्छा से होती है और उसी की इच्छा से चली जाती है। इस कारण जब कोई पुत्र–पुत्री अथवा बहन–भाई बनने आता है तो मैं इन्कार नहीं करती। जब कोई उस परमात्मा की इच्छा से जाना चाहेगा तो भी इन्कार नहीं करूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहन को रामरक्खामल्ल ने देसाई की एक मिल के वर्कशाप में फिटर का काम सीखने के लिए रखा था। काम सीखने तक उसको चालीस रुपये महीना मिलता रहा। तब वह संगीत–भवन में ही रहता था। भोजन वहीं लेता था। उसने दस रुपये अपने पास रख कर, प्रथम मास से ही, तीस रुपये महीना अपने पिता को भेजना आरम्भ कर दिया था।

तीन मास तक ऐसा काम करने पर वर्कशाप के इन्जीनियर की सिफारिश पर सोहन को एक मिस्त्री के रूप में नौकर रख लिया गया। तब उसका वेतन अस्सी रुपया हो गया था। सोहन को रुक्मिणी ने बुलाकर कहा, "अब तुमको संगीत–भवन में नहीं रहना चाहिए।"

"माताजी! मैं कोई साफ–सुथरा स्थान देख लूँ तो वहाँ रहना छोड़ दूँगा।"

"इस अस्सी रुपये में कितना भाड़ा दे सकते हो?"

"दस से बीस रुपये तक।"

"भोजन पर कितना व्यय करोगे?"

"बीस रुपया।"

"शेष का क्या करोगे?"

"इसमें से तीस रुपये पिताजी को भेजता हूँ। दस रुपये कपड़े इत्यादि के लिए रख लेता हूँ।"

"और मनोरंजन इत्यादि?"

"अभी तो संगीत–भवन में पर्याप्त मनोरंजन हो जाता है। इसके अतिरिक्त जब पिताजी लिखते हैं कि मेरे तीस रुपये से उनको सुख मिला है तो साधारण मनोरंजन से कहीं अधिक मेरे चित्त को शान्ति और सुख मिलता है।"

रुक्मिणी समझी कि अच्छे सस्कारों वाला लड़का है। इस कारण उसको अपने मकान की प्रथम मंजिल पर एक छोटा–सा कमरा निःशुल्क रहने को दे दिया।

सोहन ने अपने वेतन से चालीस रुपये अपने पिताजी को भेजने आरम्भ कर दिये। साथ ही सोहन ने यह देखा कि बम्बई के उस भाग में वहाँ देसाई का मकान है, वैसे कमरे का भाड़ा तो चालीस–पचास से कम नहीं होगा। अतः उसने देसाईजी के घर के कामों में हाथ बँटाना आरम्भ कर दिया। नल, बिजली, टट्टी, गुसलखाने इत्यादि की देखभाल और मरम्मत उसने अपने अधिकार में ले ली। पहले इस प्रकार के कामों के लिए तीस–चालीस का बिल प्रतिमास आता था। जब से सोहन वहाँ रहने लगा था, यह बिल आना बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। कभी कोई नई वस्तु खरीदनी पड़ती तो उसकी रसीद घर का दारोगा अपने हिसाब में रख देता था।

एक दिन रुक्मिणी के हाथ में सोहन की डाक आ गई। उसमें मोहनी का एक पोस्ट कार्ड था। उसने पढ़ लिया। उसमें लिखा था–

"सोहन भैया! चिरंजीव रहो। परमात्मा तुम्हारा भला करे। तुम्हारे रुपये पिताजी को नियम से मिल रहे हैं। इससे उनके जीवन में सुख और सन्तोष की वृद्धि हो रही है। मैंने तुमको पहले भी लिखा था। नित्य आधा घण्टा तक रामचरित मानस का पाठ किया करो। अन्य किसी पुस्तक के पढ़ने से तो परलोक सुधरता होगा पर मैं जानती हूँ कि इससे यह लोक और परलोक दोनों सुधरते हैं।

"बड़े भापाजी को मेरी चरण–वन्दना कहना। माता–पिता उनके गुणानुवाद करते नहीं थकते। अपना कुशल–समाचार लिखते रहना।"

रुक्मिणी को सोहन के परिवार के विषय में और अधिक जानने की अभिलाषा उत्पन्न हो गई। उस डाक में दो पत्र और थे, परन्तु वे लिफाफों में बन्द थे। इस कारण वह पढ़ नहीं सकी। एक मनीआर्डर की रसीद थी। मनीआर्डर चालीस रुपये का था।

सायंकाल वह कार्यालय से उठ अपने कमरे में आई तो अपनी मेज पर सोहन की डाक देख उसको कमरे में देखने चली गई। सोहन का कमरा खुला था, परन्तु वह वहाँ नहीं था। रुक्मिणी कमरे की सफाई और मेज, कुर्सी तथा चटाई, जिस पर उसका बिस्तर लगा था सब व्यवस्था से रखे देखने लगी। मेज पर तुलसी रामायण रखी थी। दो–तीन पुस्तकें मैकेनिकल इन्जीनियरिंग के विषय की रखी थीं। एक कापी थी और कलम–दवात रखी थी। रुक्मिणी ने कापी खोल कर देखी। उस पर इन्जीनियरिंग के विषय पर 'नोट्स' लिखे हुए थे।

वह कापी में से पढ़ने का यत्न कर ही रही थी कि सोहन हाथ में रिंच लिए और काम करने के कपड़े, वह भी भीगे हुए, पहने हुए आ गया।

"नमस्ते माताजी!"

"ओह! यह क्या कर रहे हो?"

"ऊपर की मंजिल की लैट्रीन का 'लेट आउट' लीक कर रहा था।"

"तो ठीक हो गया?"

"जी।"

"यह तुम क्यों करते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो और कौन करता?"

"दारोगा को कह देते और वह प्लम्बर को बुलाकर ठीक करा देता।"

सोहन ने मुस्कराते हुए कहा, "उसने तो मुझको बताया था कि यह ठीक होना चाहिए। और फिर मैं कुछ कर भी तो नहीं रहा था।"

"यह तुम्हारा काम नहीं?"

"माताजी! काम उसका होता है जो उसको करने की योग्यता रखता है।"

"पर बेटा! मैं जिस काम के लिए जिसको नियुक्त करती हूँ, वह काम उसी को करना चाहिए।"

"तो माताजी! आज से ऐसे कामों के लिए मुझको नियुक्त कर दीजिए। आप देख लीजिए कि मैं इसके सर्वथा योग्य हूँ। मैं नल, टट्टियाँ, गुसलखाना और बिजली इत्यादि की फिटिंग और मरम्मत के सर्वथा योग्य हो गया हूँ।"

रुक्मिणी हँस पड़ी। फिर पूछने लगी, "तो क्या वेतन लोगे?"

"वेतन तो मैं ले रहा हूँ।"

इस पर रुक्मिणी को डाक की याद आ गई। उसने कहा, "यह तुम्हारी डाक रखी है।"

"आप मेज पर रख दीजिये, मैं तनिक कपड़े बदल लूँ।"

"अच्छा! कपड़े बदल कर मेरे कमरे में आना।"

सोहन ने स्नान किया, कपड़े पहने और डाक पढ़ रुक्मिणी देवी के कमरे में जा पहुँचा। रुक्मिणी तीसरी और चौथी मंजिल पर रहती थी। तीसरी मंजिल पर कार्यालय था, रिसैप्शन–रूम था। बड़ा डाइनिंग हॉल था और गैस्ट–रूम था। चौथी मंजिल पर रुक्मिणी के रहने के निजी कमरे थे।

सोहन को वहीं बुलाया था। रुक्मिणी अपने 'सिटिंग' रूम में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसके आने से पहले उसने दारोगा को बुलाया था। वह आया तो रुक्मिणी ने पूछ लिया, "दारोगा जी! यह 'प्लम्बर' का काम सोहन करता है?"

"जी।"

"कब से?"

"जब से वह यहाँ आकर रहने लगा है। उन दिनों बिजली का बार–बार 'फ्यूज' उड़ जाता था। मिस्त्री कई बार आकर ठीक कर चुका था। सोहन को पता लगा तो उसने मिस्त्री से पूछा कि यह ठीक क्यों नहीं होता?

"मिस्त्री ने कहा कि शौर्ट कट का पता नहीं चलता कि कहाँ है? सोहन ने उसे कुछ तीखे शब्दों में कह दिया कि इतने दिन से क्या कर रहे थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्त्री को भी क्रोध–सा आ गया और कहने लगा तो बाबू साहब, आप ही ठीक कर लो।

''सोहन ने कहा, ठीक है। तुम जाओ। वह कर लेगा।

''मिस्त्री अपने औजार उठाकर चल दिया। सोहन बाजार गया और एक बिजली वाले से एक मैगर किराये पर ले आया। उससे उसने सारी बिल्डिंग को देख डाला। आखिर उसने दोष का स्थान ढूँढ़ निकाला और बिजली ठीक कर दी। मैगर का किराया पाँच रुपये लगे थे। तब से आज तक बिजली का कष्ट नहीं हुआ। उसी दिन इसने मुझसे कहा कि नलों, टट्टियों, गुसलखानों और बिजली के विषय में उसको कहा करूँ। मिस्त्री से अच्छा काम कर दिया करेगा। तब से वह काम कर रहा है। मैंने उससे काम की उजरत के बारे में पूछा था। तो वह कहने लगा कि वह तो माता जी के परिवार का आदमी है। वह उजरत लेना अपमान समझता है।''

''तब से मैंने सब काम इसी से कराया है।''

''सोहन ठीक कहता है। इस पर भी मैं समझती हूँ कि उससे काम तो तब लेना चाहिये जब बाजार के मिस्त्री फेल कर जायें।''

दारोगा गया तो सोहन आ गया।

''सोहन! तुम्हें अपने काम में उन्नति करनी है। अपना समय इस प्रकार व्यर्थ गँवाने लगे तो पीछे रह जाओगे।''

''माताजी! एक समय दिन में दस–दस बार बिजली का फ्यूज उड़ने लगा और प्रत्येक बार आधा घण्टा मिस्त्री के आने और ठीक करने में लग गया तो मेरा और सब घर वालों का समय व्यर्थ जाने लगा। मैंने एक घण्टा लगाया और इस बात को अब छः मास हो चुके हैं। तब से एक बार भी फ्यूज नहीं उड़ा। बहुत समय बच गया है जिसे मैं पढ़ाई में लगा सकता हूँ।''

''सुना है तुम मैकेनिकल इन्जीनियरिंग की परीक्षा देने वाले हो?''

''जी!''

''तो उसकी पढ़ाई में तो नीचे नौकरों में रहते हुए बहुत विघ्न पड़ता होगा?''

''कुछ विशेष नहीं। वे अपना लड़ते–झगड़ते, गाते–बजाते रहते हैं और मैं अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर अपने काम में लीन रहता हूँ।''

''मैं समझती हूँ कि तुम ऊपर इस मंजिल पर 'शिफ्ट' कर लो। यहाँ अधिक एकान्त और शान्ति मिलेगी।''

''परन्तु आपको असुविधा और कष्ट होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मुझको कष्ट क्यों होगा? हाँ तुमको पढ़ाई में सुविधा रहेगी।"

राधा के विवाह से पहले उसने मैकेनिकल इन्जीनियरिंग की प्रथम परीक्षा दी थी और बहुत अच्छे अंक लेकर पास कर ली थी। इस परीक्षा पास करने पर सोहन का वेतन एक सौ बीस रुपया कर दिया गया था। अब वह चौथी मंजिल पर सीढ़ियों के समीप एक कमरे में रहता। यहाँ वह अपने पढ़ने–लिखने का काम शान्ति से कर सकता था।

"राधा की सगाई की दावत के समय तो रुक्मिणी ने घोषणा कर दी कि सोहन भी उसके पुत्रों में से एक है।

खटाऊजी को वर्मा ने बधाई दी तो खटाऊजी ने कह दिया, "मैं अपने इस सौभाग्य में तो लाला रामरक्खामल्लजी को ही कारण मानता हूँ। उन्होंने राधा के विचार ऐसे साँचे में ढाले हैं कि वह दिन–प्रतिदिन मेरी दृष्टि में अधिक और अधिक मान पाती जा रही है।"

इस दावत से लौटते समय सरस्वती ने राधा से कह दिया, "राधा बहन! तुमने तो सत्य ही एक आश्चर्य प्रस्तुत कर दिया है। हम सब तो यह आशा लगाये हुए थे कि राधा रानी नासिर बेगम बनने जा रही हैं।"

"इसीलिए तो कहा करती हूँ कि दूसरों के विषय में सम्मति बनाने से पहले बहुत कुछ जानने की आवश्यकता होती है। जो कहते हैं कि मैं सब कुछ जान गया हूँ वे प्रायः सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं।"

"अब विवाह की दावत कहाँ होगी?"

"वे श्री खटाऊजी देंगे। जिस दिन कोर्ट में हमारा विवाह होगा उसी दिन सायंकाल वे अपनी कोठी की लॉन में लगभग एक हजार आदमियों को भोजन पर आमन्त्रित करेंगे। ताज होटल वालों को प्रबन्ध देने की बातचीत हो रही है।"

"यह तो मजा रहेगा।"

"पर तुम बताओ, तुम्हारी क्या बात है?"

"मेरी क्या बात है?"

"जो दूसरों के विवाह में रुचि लेता है, वह वास्तव में अपने विवाह की योजनाएँ बना रहा होता है।"

"इस बात का अनुभव तो आपको अधिक हो सकता है।"

"तो मैं ठीक नहीं कह रही क्या?"

"सोलह आने तो ठीक नहीं।"

"कितने आने ठीक है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह अनुमान लगाना बहुत कठिन है। इस पर भी यह बताना तो सहज ही है कि प्रत्येक सोलह वर्ष से बड़ी लड़की अपने पति के घर के स्वप्न देखने लगती है।"

"तो स्वप्न तुम भी देखने लगी हो। भला स्वप्नों में कौन दिखाई देता है?"

"यह मेरा रहस्य है। जो मैं अभी बता नहीं सकती।"

: 8 :

जवाहरलाल का पत्र आने पर रामरक्खामल्ल ने एक पत्र अपने भाई विष्णुनारायण को लिख दिया। उसमें उसने लिखा, "ऐसा प्रतीत होता है कि जवाहरलाल ने विलायत में एक और विवाह कर लिया है। इसलिये साधना की समस्या विचारणीय हो गयी है। जवाहरलाल ने साधना को भी एक पत्र लिखा है। मैं नहीं जानता कि उसमें उसने क्या लिखा है। जो कुछ भी हो आप साधना को यहाँ भेजने के लिए तैयार रखें। जवाहरलाल के यहाँ आने की तिथि का पता चलते ही मैं तार दूँगा और उसको तुरन्त यहाँ आ जाना चाहिए।

जवाहरलाल ने साधना को कोई पत्र नहीं लिखा था। इस कारण रामरक्खामल्ल के पत्र से ही यह समाचार लाहौर पहुँचा। विष्णुनारायण ने पत्र सदानारायण से पढ़ाया और फिर मोहिनी द्वारा यह समाचार साधना को सुना दिया गया।

साधना पीत मुख बैठी सुनती रही। मोहिनी ने समाचार दे कह दिया, "यह बात तो भापाजी को पहले ही सूझ रही थी कि जवाहरलाल चरित्र का शिथिल होता जाता है।"

"इस पर भी उन्होंने मेरा उनसे विवाह के लिए आग्रह किया था।" साधना ने कुछ रोष में कह दिया।

"परन्तु बहन! जवाहरलाल से तुम्हारा वास्तविक विवाह तो पहले ही हो चुका था। उनका आग्रह तो पति–पत्नी में सम्बन्ध बनाये रखने के लिए ही था। तुम्हारे माता–पिता के हठ के कारण सम्बन्ध टूट गया था। बड़े भापाजी ने तो उस टूटे सम्बन्ध को पुनः बनाने का यत्न ही किया था।"

साधना ने अपने श्वसुर को पत्र लिखा, "मुझ–जैसी भाग्यहीन लड़की का भविष्य उज्ज्वल करने का आपने तो यत्न किया था, परन्तु 'विधि गति टारे न टरे' की कहावत विख्यात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब मुझको बताइये कि मैं क्या करूँ? मैं सर्वथा आपके अधीन हूँ। जैसी भी आज्ञा आप देंगे मैं वैसा ही करूँगी। मुझे विलायत से उनका कोई पत्र नहीं मिला।"

इस पत्र का उत्तर केवल यह आया, "बेटी साधना! बम्बई आने के लिए तैयार रहो। मैं या तो लेखवती को भेजूँगा जो तुमको ले जायेगी अन्यथा तुम तार पाते ही चली आना।"

जवाहरलाल का दुबारा पत्र नहीं आया और उसके बम्बई पहुँचने के दिन का पता नहीं चला।

एक दिन प्रार्थना के उपरान्त भवन के चपरासी ने आकर कहा, "भापाजी! आपके लिए टेलीफोन है।"

रामरक्खामल्ल ने टेलीफोन पर आकर पूछा, "कौन साहब हैं?"

"मैं जवाहरलाल हूँ।"

"ओह! कहाँ से बोल रहे हो?"

"ताज होटल से।"

"कब आये हो?"

"आज तीन दिन हो गये हैं। कल रात मेरा एमिली जोन्स से विवाह हो गया है। आज मैं आपको, माताजी को और अन्य सबको, जिनको भी आप चाहें दावत का निमंत्रण देता हूँ।"

"पर मैं पूछता हूँ कि इस अवसर पर हमारी आवश्यकता है क्या?"

"आपको तथा माताजी को हमें आशीर्वाद देना चाहिए।"

"जैसे विवाह की सूचना टेलीफोन से आयी है, वैसे ही आशीर्वाद भी टेलीफोन से भेज दूँ तो हानि है क्या?"

"नहीं हानि तो नहीं। मैंने समझा था कि कदाचित् आप अपनी नई बहू को देखना चाहते हों।"

"मैं क्या देखना चाहता हूँ और क्या नहीं देखना चाहता, तुम जानने का अधिकार रखते हो क्या? तुम बताओ कि हमारे प्रति, अपनी पहली पत्नी और बच्चों के प्रति और अपने परिवार के प्रति तुम अपने कर्तव्य से मुक्त हो चुके हो?"

"परिवार को तो मैं शीघ्र ही वह सब रुपया जो उसने मुझ पर व्यय किया है, लौटा देने का विचार रखता हूँ। साधना को मैं वहाँ बुला लूँगा जहाँ मेरी नियुक्ति होगी।

"भापाजी! साधना का प्रश्न मेरा निज का प्रश्न है। मैं उससे मिल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं निश्चय कर लूँगा। मैं आज उसको तार भेज रहा हूँ कि वह आ जाये। उसके आने पर सब निर्णय हो जायेगा। यदि वह चाहेगी तो मेरे साथ रह सकेगी।''

रामरक्खामल्ल ने कह दिया, ''ठीक है, तार दे दो। यदि पति–पत्नी में किसी प्रकार का समझौता हो जाये तो हमको प्रसन्नता ही होगी। तब हमको सूचना दे देना। हम, मेरा मतलब है, मैं, तुम्हारी! माताजी और तुम्हारे भाई रत्नलाल तुम्हारी बहू को देखने आ जायेंगे।''

एक तार रामरक्खामल्ल ने भी साधना को दे दिया। उसने लिखा, ''जवाहरलाल तुमको बुला रहा है। तुम चली आओ और उससे मिलकर अपने विषय में विचार कर लो।''

साधना लेखवती के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। अतः तारों के पहुँचते ही वह बम्बई जाने के लिए तैयार हो गयी।

जवाहरलाल का तार था, ''मैं बम्बई पहुँच गया हूँ। यहाँ से ही नौकरी पर चला जाऊँगा। तुम तार मिलते ही चली आओ। पहुँचने का दिन और गाड़ी की सूचना दो।''

तार दुकान के पते पर आये थे। विष्णुनारायण ने तार पढ़ाये और स्वयं घर पर आ गया। साधना ने कहा, ''मैं जा रही हूँ।''

''ठीक है। मैं भी चल रही हूँ।'' सुमित्रा का कहना था।

''चल तो मैं भी रहा हूँ।'' विष्णुनारायण ने कहा, ''परन्तु मेरा विचार है कि हमको बड़े भापा के पास चलना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि जवाहरलाल और बड़े भापा में झगड़ा हुआ है। इससे हमको उनसे मिलकर ही जवाहरलाल को अपने पहुँचने की सूचना देनी चाहिए।''

''मेरा मन कहता है कि बिना सूचना के यहाँ पहुँच जाऊँ। सीधी संगीत भवन में जाऊँ।''

''यही ठीक होगा।''

साधना, उसके दोनों बच्चे, विष्णुनारायण और सुमित्रा उसी दिन सायंकाल आठ बजे की गाड़ी से बम्बई को चल पड़े।

उनके पहुँचने के दिन प्रातःकाल रामरक्खामल्ल को जवाहरलाल का टेलीफोन मिला। उसने कहा, ''भापा! साधना का कोई समाचार नहीं आया। मेरी नौकरी जबलपुर छावनी में लग गई है और मुझको शीघ्र ही वहाँ पर जाना है।''

''मुझको भी वहाँ से किसी प्रकार का समाचार नहीं आया। तुम जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब जा रहे हो?''

"मैं तो कल जाना चाहूँगा। हाँ, अगर उसे आना हो तो एक दिन और प्रतीक्षा कर सकता हूँ।''

जवाहरलाल ने होटल का टेलीफोन नम्बर और अपने कमरे का नम्बर बता दिया। और कह दिया कि लाहौर से कोई सूचना आये तो उसको बता दी जाये।

रामरक्खामल्ल का अनुमान था कि साधना को उस दिन बम्बई पहुँच जाना चाहिए। सूचना न आने के कारण उसको भी चिन्ता थी। अनुमान से वह रेल के स्टेशन पर जा पहुँचा और वहाँ साधना के साथ विष्णु और सुमित्रा को देख विस्मय करता रह गया। सबको लेकर वह संगीत भवन में आ गया। मार्ग में ही साधना ने बता दिया, "मैं अपने यहाँ आने की सूचना उनको देना नहीं चाहती थी। अतः आपको भी नहीं दी। इस पर भी आपसे मिले बिना उनसे मिलना भी नहीं चाहती थी। हमने पहले आपसे मिलने का ही विचार किया हुआ था।''

"जवाहरलाल का प्रातःकाल टेलीफोन आया था। वह तुम्हारे आने के विषय में पूछ रहा था। यदि तुम मुझको सूचना भेज देतीं तो मैं उसको बताता ही। तब वह स्टेशन पर आ जाता और तुमको पूर्ण परिस्थिति को समझने से पूर्व ही वहाँ ले जाने पर हठ करता। वह एक होटल में ठहरा हुआ है।''

"उसने यहाँ आने की तिथि नहीं लिखी। इससे मैं लेख को लाहौर भेज नहीं सका। यहाँ पहुँच नया विवाह करके ही उसने मुझको बताया कि वह आ गया है और तुमको तार भेज दिया है।''

भवन में पहुँच स्नानादि तथा अल्पाहार कर साधना ने जवाहरलाल को टेलीफोन किया। जब जवाहरलाल टेलीफोन पर आया तो साधना ने बताया, "जी! नमस्ते। मैं साधना बोल रही हूँ। बम्बई संगीत भवन से।''

"ओह! बिना सूचना दिये आ पहुँची हो?''

"मैं भापा जी अथवा माताजी के लाहौर मुझको लेने के लिए आने की प्रतीक्षा कर रही थी। जब आपका तार आया तो मुझको संदेह हो गया कि भापाजी आप से रुष्ट हैं। इस सन्देह पर विचार आया कि पहले उनसे मिलकर ही आप से मिलना चाहिए। अतः किसी को भी सूचना भेजे बिना यहाँ आ पहुँची हूँ। छोटे भापाजी और छोटी माताजी भी साथ आई हैं।''

"वे भला क्यों?''

"उनका भी आपसे मिलने को चित्त करता होगा। तभी तो आये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताइये आप मुझको लेने किस समय आयेंगे?''

''जब तुम लाहौर से चलकर बम्बई पहुँच गई हो तो यह आधा मील और नहीं चल सकतीं क्या?''

''चलने की बात नहीं जी! आप बताइये आप वहाँ अकेले हैं क्या?''

''बड़े भापा ने बताया नहीं, मैंने एक और विवाह कर लिया है?''

''बताया है। इसी कारण तो कह रही हूँ कि आपके पास तो बिना बुलाये भी आ सकती हूँ। अब तो बीच में एक अन्य प्राणी आ गया है न। साथ ही वह प्राणी मुझ पर वरीयता प्राप्त कर चुका है। ऐसी अवस्था में मुझको वहाँ आने में भय लगता है। यदि आपके कहने पर भय न भी करूँ तो भी संकोच तो है ही। इसलिए कह रही हूँ कि आप लेने आ जाइये।''

''यदि तुम यही चाहती हो तो मैं आता हूँ।''

''लीजिये छोटे भापा आप से बात करेंगे।''

विष्णुनारायण ने कह दिया, ''डॉ. जवाहरलाल! आप लाहौर नहीं आये तो हमको यहाँ आना पड़ा है। क्या अब वहाँ होटल में मिलने के लिए आना पड़ेगा?''

''भापा जी! मैं यह नहीं जानता कि आप मेरे विवाह को कैसा समझते हैं। इससे मैं लाहौर नहीं आया। अब आप आ ही गये हैं और मैं साधना को लेने आ ही रहा हूँ, इस कारण आपको यहाँ आने की आवश्यकता नहीं।''

''उसको भी लेते आना।''

''किस को?''

''अपनी नई पत्नी को।''

''क्या होगा उसको साथ लाने से?''

''मैं उसके लिए शकुन लाया हूँ।''

''वह क्या होता है?''

''वह इस बात को प्रकट करता है कि हम सब–मैं, तुम्हारी चाची, तुम्हारी बूआ सतवन्ती, बहन लाज, भाभी मोहिनी और भाई सदानारायण सब उसके दीर्घ और आनन्दमय जीवन के लिए शुभकामना करते हैं।''

''मैं उससे पूछता हूँ। यदि उसकी इच्छा हुई तो लेता आऊँगा।''

''उसको कह देना कि तुम्हारा अनपढ़ चाचा उसको आशीर्वाद देना चाहता है। और देखो, आओ तो खाना यहीं खाना होगा।''

''भापा! वह हिन्दुस्तानी खाना नहीं खा सकेगी।''

''तो फिर यहाँ किसी अच्छे होटल में चले चलेंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है। यह वहाँ आकर निश्चय कर लेंगे।"

जवाहरलाल अपनी पत्नी के साथ संगीत भवन में आ पहुँचा। रामरक्खामल्ल को प्रसन्नतामय विस्मय हुआ। वह उन दोनों को बैठक में ले आया। वहाँ से वह दोनों को लेखवती के कमरे में ले गया। वहाँ सब परिवार के लोग एकत्रित हो रहे थे।

जवाहरलाल और ऐमिली के आते ही साधना उठी और उसने जवाहरलाल के चरण स्पर्श किये। फिर सीधी हो उसने ऐमिली को हाथ जोड़ नमस्कार किया।

जवाहरलाल ने भी लेखवती और रामरक्खामल्ल तथा छोटे भापा और भाभी के चरण छूए। ऐमिली यह सब कुछ विस्मय से देख रही थी। उसको यह सब विचित्र और व्यर्थ प्रतीत हो रहा था।

जवाहरलाल ने पहले ऐमिली का परिचय कराया और फिर ऐमिली को परिवार के सब सदस्यों का परिचय दिया।

राधा का विवाह हो चुका था और वह खटाऊजी की कोठी में रहने लगी थी। इस समय वह संगीत सिखाने आयी हुई थी। वह भी परिवार में बैठी जवाहरलाल की नई बहू देखने आयी थी। जवाहरलाल ने उसका परिचय ऐमिली से कराया, "यह मेरी पहली पत्नी की सहेली श्रीमती नासिर है।"

"ऊँ हूँ।" राधा ने अंग्रेजी में ही उत्तर दे दिया, "मैं हूँ राधा खटाऊजी और इनके पिता की बनाई हुई लड़की।"

"ओह! यह दूसरा विवाह कब से किया है?"

"दूसरा नहीं, भाई साहब! यह पहला ही विवाह है। इसको हुए अभी दस दिन भी नहीं हुए। आपके मित्र शमशाद मियाँ भी बम्बई में ही हैं और प्रत्यक्ष रूप में उन्होंने संतोष कर लिया प्रतीत होता है।"

"कहाँ है?"

"इस मकान के नीचे कपड़े की दुकान करते हैं।"

ऐमिली ने बताया कि उसको अपने हसबैंड के सम्बन्धियों से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है।

अब सब स्त्रियाँ उसी कमरे में बैठ गयीं और रामरक्खामल्ल तथा विष्णुनारायण ने ऐमिली को शकुन दिया और जवाहरलाल को लेकर बाहर बैठक में चले आये।

जवाहरलाल के कहने पर शमशाद को बैठक में बुला लिया गया। शमशाद आया तो जवाहरलाल से गले मिला। जवाहरलाल ने ऐमिली को भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुला लिया और परिचय कराने पर शमशाद ऐमिली से हाथ मिला उसके समीप बैठ गया।

जवाहरलाल ऐमिली को शमशाद से बातें करते छोड़ साधना से बात करने भापाजी के कमरे में चला गया। उसने कहा, ''देखो साधना! मैंने ऐमिली को तुम्हारा परिचय दे दिया है। मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे साथ चलो। इतना बता देना चाहता हूँ कि सरकारी रूप में और सार्वजनिक रूप में ऐमिली ही मेरी पत्नी होगी।''

''तो मैं किस रूप में आप के साथ रह सकूँगी?''

''एक 'हाउस कीपर' (गृह प्रबन्धक) के रूप में।''

''अर्थात् आपकी एक सेविका के रूप में?''

''हाँ। इस पर भी एक प्रतिष्ठित सेविका के रूप में।''

''मुझको आपत्ति नहीं। केवल ये माणिक और शान्ति नहीं जा सकेंगे।''

''क्यों?''

''एक नौकरानी के बच्चे, अपनी माँ के मालिक के घर का बोझा नहीं बनेंगे।''

जवाहरलाल इसका अर्थ समझ नहीं सका। इससे पूछने लगा, ''तो ये कहाँ रहेंगे?''

''बड़े भापाजी से राय करके बताऊँगी।''

''कब तक बता सकोगी?''

''अभी तो ये लाहौर जायेंगे। वहाँ स्कूल में पढ़ते हैं। बाद में मैं अपना वेतन जानकर निश्चय करूँगी कि ये कहाँ पढ़ेंगे।''

''वेतन! क्या मतलब?''

''यही कि आप अपने 'गृह प्रबन्धक' को क्या देंगे?''

जवाहरलाल ने कुछ देर तक विचार कर बताया, ''इतना तो मिलेगा ही कि जिससे ये अच्छी–से–अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकें।''

''मुझको कुछ अपने लिए भी जमा करना चाहिए।''

''इसकी क्या आवश्यकता है? सब–कुछ तुम्हारा और ऐमिली का ही तो है।''

''यह मैं जानती हूँ। मैं तो उस समय की बात विचार कर रही हूँ जब मालिक की बीवी अपनी 'हाउस कीपर' के काम से असंतुष्ट हो उसको सेवा से छुट्टी दे देगी।

''मैं किसी अन्य की नौकरी तो कर नहीं सकूँगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके लिए प्रबन्ध हो जायेगा।"

"ठीक है। मैंने तो सेवा करने के लिए ही आपसे विवाह स्वीकार किया था। मेरी यही इच्छा है कि उसके लिए अवसर मिलता रहे।"

बात निश्चय हो गई। भोजन हुआ। जवाहरलाल अपने बच्चों को संगीत–भवन में ही छोड़ अपनी दोनों पत्नियों को ले विदा हो गया।

: 9 :

अगले दिन साधना संगीत–भवन में आयी तो सब के साथ प्रार्थना में बैठ गयी। प्रार्थना के बाद वह अपनी सास और श्वसुर से जाने की स्वीकृति माँगने लगी। रामरक्खामल्ल ने आशीर्वाद दे दिया। लेखवती और सुमित्रा उसको पृथक् में ले गयीं और पूछने लगीं, "साधना, रात कैसी बीती?"

"ऐमिली और माणिक के पिता एक पलंग पर सोये रहे और मैं दूसरे पलंग पर।"

"तीसरा पलंग नहीं था वहाँ?"

"था, परन्तु उसका उपयोग नहीं हुआ।"

"उस लड़की का व्यवहार कैसा रहा है?"

"अभी तक तो व्यवहार के लिए कोई अवसर ही नहीं था।"

"साधना! कर सकोगी यह सेवा–कार्य?"

"माँजी! अपनी ओर से पूरा यत्न करूँगी।"

राधा उससे मिलने के लिए आयी तो उसे अपने कमरे में ले गयी। दोनों एकान्त में जाकर खूब हँसीं। दोनों अनुभव कर रही थीं कि उन दोनों के जीवन समानान्तर रेखाओं में चल रहे हैं।

"इस पर भी अन्तर है।" राधा ने कहा।

"क्या?"

"यह लड़की इतनी सुन्दर नहीं जितनी सरवर थी।"

"मालूम होता है कि यह धनी है। उसके आभूषण देख मैंने अनुमान लगाया है।"

"धन सौन्दर्य के सामने फीका पड़ जायेगा। तुम ऐमिली से अधिक सुन्दर हो।"

"देखो, क्या होता है?"

"मैं पेशीनगोई करती हूँ कि यह औरत भाग जायेगी। यह भी सरवर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान ही होगी। परन्तु तुम मेरे समान किसी खटाऊजी की पत्नी नहीं बन सकोगी?''

''क्यों? तुम अपने को बहुत सुन्दर समझती हो?''

''नहीं साधना बहन! इसलिए कि तुम हिन्दू की बेटी हो और मैं मुसलमान की। मेरी रगों में बगावत का खून है।''

साधना इसका अर्थ नहीं समझ सकी। फिर एकाएक साधना समझ गयी और बोली, ''हाँ राधा! मैं विवाह को सेवा करने का एक बहाना समझती हूँ।''

''और मैं सेवा कराने का।''

दोनों फिर हँस पड़ीं।

साधना उसी सायंकाल जवाहरलाल के साथ जबलपुर को चली गयी।

शमशाद उन्हें स्टेशन पर छोड़ने गया। वहाँ पर भी ऐमिली शमशाद से हँस–हँस कर बातें करती रही। साधना को शमशाद और ऐमिली का व्यवहार पसन्द नहीं आया। परन्तु वह इसमें कुछ कह नहीं सकी। एक तो वह अँग्रेजी भली भाँति समझ नहीं सकती थी। उसने सदानारायण से कुछ सीखी तो थी। इस पर भी वह अभी किसी अँग्रेज औरत का उच्चारण समझ नहीं सकती थी। साथ ही वह अपनी स्थिति 'हाउस कीपर' से अधिक न समझ सकी थी।

जवाहरलाल ने सरवर के विषय में पूछा तो उसने बता दिया कि वह एक बैरिस्टर, जो इंग्लैंड में प्रैक्टिस करता है, के साथ चली गई है। अपने बच्चों को भी साथ ले गई है।

शमशाद जवाहरलाल के भाग्य पर ईर्ष्या करता था। ऐमिली साधना से कम सुन्दर थी परन्तु साधना शान्त स्वभाव की थी और शमशाद का विचार था कि ये दोनों निर्वाह कर लेंगी। यह शमशाद ने भी अनुभव किया था कि ऐमिली फ्लर्ट है, परन्तु इसको एक अंग्रेज लड़की का स्वभाव मान चुप था।

वह घर लौटा तो अपने भाग्य पर शोक अनुभव कर रहा था। इस एकाकी जीवन में यदि कुछ संतोष की बात थी तो यह कि दुकान खूब चलती थी और वे दो–तीन सौ रुपया नित्य लाभ निकाल रहे थे। इतने पर भी, रोटी ढाबे में अथवा किसी रैस्तराँ में खाते थे। कोई रसमय जीवन नहीं था।

भाग्य की बात थी। उसी दिन रात को दुकान बन्द कर दोनों भाई एक सस्ते से होटल में खाना खा रहे थे तो मजीद ने पूछ लिया, ''भाईजान! शादी करोगे?''

''किसके साथ?''

''एक शरीफ आदमी की लड़की है। वह हमारे अहाते में ही रहता था, जहाँ

.CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं शुरू में आकर रहा था। वह कपड़ा मील में काम करता है। उसकी दो लड़कियाँ हैं। मैं एक को पसन्द कर आया हूँ। कहो तो दूसरी तुम्हारे लिए फैसला करूँ।''

''बिना देखे ही?''

''मैंने दोनों को देखा है। दोनों जुड़वाँ हैं। एक–जैसी हैं। रंग गहरा गँदमी है मगर नक्श अच्छे हैं।''

''भाई! अपनी साली को दिखा दो। सरवर से शादी के बाद कोई बहुत बदसूरत मिल गई तो जिन्दगी आजाब हो जायेगी।''

''बदसूरत नहीं है। पर सरवर जैसी तो अब मिलने से रही। भाईजान! तब हम रईस लोग थे अब हम दुकानदार हैं।''

अगले दिन मजीद शमशाद को मियाँ करीमबख्श के पास ले गया। वह पूना के समीप एक गाँव का रहने वाला था। आजकल उसकी पत्नी और दोनों जुड़वाँ लड़कियाँ उसके पास बम्बई में आई हुई थीं।

मजीद ने बताया, ''अम्मी के चले जाने से रोटी की बहुत दिक्कत हो रही थी। एक दिन मियाँ करीमबख्श चौपाटी पर मिल गया और उसने पहचाना, खैर–खैरियत पूछ ली। जब उसको पता चला कि हम 'कम्पीला हिल' पर एक मकान में रहते हैं तो वह मेरी शादी के मुताल्लिक पूछने लगा। जब मैंने उसे बताया कि मैं कुँवारा हूँ तो अपनी लड़कियों से रिश्ते की बात करने लगा। भाईजान! वह समझता था कि अम्मी तुम्हारी बीवी है तो उसने दोनों लड़कियों को मेरे साथ शादी करने की बात कर दी। मैंने उसके घर जा दोनों लड़कियों को देखा है। मैं एक को पसन्द कर आया हूँ। एकाएक मुझको ख्याल आया कि दोनों बहनें एक ही घर में आ जायँ तो मजा रहेगा।''

''और छटकन मैं ले लूँ? बहुत होश्यार हो।''

''नहीं भाईजान! अगर मेरे वाली पसन्द हो तो मैं दूसरी को ले लूँगा।''

दोनों लड़कियों को देख बात तय हो गयी। लड़कियों के बाप के साथ भी और दोनों भाइयों की आपस में भी। शमशाद की पत्नी का नाम मुमताज था और मजीद की बीवी का रमजान।

उसी दिन मसजिद में जा निकाह पढ़ाया गया और दोनों भाई बीवियाँ लेकर घर आ गये। शमशाद अपनी बीवी से कुछ अधिक प्रसन्न नहीं था। मगर मजीद को रमजान बहुत पसन्द थी। शमशाद को गंदमी चेहरे से कुछ नफरत थी। इस पर भी रोटी–कपड़े, चाय–पानी का सुख हो गया था। यह बहुत बड़ी बात थी। अम्माँ के जाने के सोलह दिन के भीतर इस मकान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक की बजाय दो औरतों का बास हो गया।

विवाह के दो दिन पश्चात् शमशाद को मकान खाली करने का नोटिस मिल गया। नोटिस हाथ में लिये हुए वह रामरक्खामल्ल को मिलने चला आया। उसने साहब–सलामत के बाद नोटिस की बात कह दी।

रामरक्खामल्ल ने बताया, ''मकान तो राधा का है। उसने खटाऊजी से शादी कर ली है। इस कारण तुमको वहाँ जाना चाहिए।''

''आप मेरी सिफारिश लगायेंगे तो वह मान जायेगी।''

''मैं तुम्हारी सिफारिश क्यों लगाऊँ?''

''इसलिए कि मैं आपके लड़के का दोस्त हूँ।''

''तुम अपनी अम्मी के भी कुछ हो अथवा नहीं? जिसने तुमको जेल से छुड़वाया, उसको तुमने बम्बई–जैसे नगर में बे–सरो–सामान घर से निकाल दिया। भला तुम जवाहरलाल के क्या बन सकोगे? नहीं, शमशाद! मैं तुम्हारे मुआमले में दखल नहीं दूँगा।''

शमशाद खटाऊजी के घर जा पहुँचा। राधा और खटाऊजी कोठी के बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। खटाऊजी ने शमशाद को बैठने को भी नहीं कहा। उससे खड़े–खड़े ही पूछ लिया, ''बताइये! कैसे आना हुआ है?''

''राधाजी के वकील ने मकान खाली करने का नोटिस दे दिया है।''

''तो खाली कर दो। तुम तो किरायेदार नहीं हो। तुम तो 'ट्रेसपासर' (घुस बैठने वाले) हो।''

मैंने अभी–अभी शादी की है। मेरे भाई मजीद ने भी शादी कर ली है। इस हालत में दो–दो औरतों को लेकर मकान ढूँढ़ना निहायत मुश्किल हो जायेगा।''

''मिल जायेगा मकान। यह तो सुल्ताना बेगम को किराये पर दिया गया था। अगर वे कह देंगी कि मकान में वे रहती हैं तो नोटिस वापस हो सकता है। नहीं तो फौजदारी मुकदमा चलेगा।''

शमशाद ने मुकदमा लड़ने का निश्चय कर लिया।

साधना का एक मास के बाद पत्र आया। पत्र लेखवती के नाम था। उसने लिखा था, ''माताजी! मैं यहाँ दुखी नहीं हूँ। यद्यपि यह चित्र वह नहीं जो मैं अपने विवाहित जीवन का पिछले छः वर्ष से मन में बनाये हुए थी, इस पर भी भगवान का नाम लेकर मैं इस अग्नि–परीक्षा में तप रही हूँ। शेष सब ठीक है।''

महीने के पीछे एक बार पत्र आता था और सदा इसी प्रकार के व्यवहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उल्लेख होता था। तीन–चार मास के ऐसे ही पत्रों के बाद लेखवती ने पूछ लिया, "साधना! तुमको पत्नी का अधिकार प्राप्त होता है अथवा नहीं?"

इसके उत्तर में उसने विस्तार से लिख दिया, "माताजी! पत्नी के कई रूप हैं। गृह–पत्नी, पति से समान अधिकार प्राप्त पत्नी, पति की दासी, पति की संरक्षिता और समाज में गृहस्थाश्रम का दायित्व निभाने वाली। इन सब रूपों में मुझको केवल एक रूप प्राप्त है। वह है पति की दासी का। मैं इतने मात्र से भी संतुष्ट हूँ।

"मैं गृहयज्ञों में, मेरा मतलब है, घर पर दावतों इत्यादि में कोई स्थान नहीं रखती। मैं उनके साथ उसके मित्रों से मिलने नहीं जाती। मुझको एक पृथक् कमरा मिला हुआ है। मैं उसमें रहती हूँ और सोती हूँ। मैं केवल एक कार्य करती हूँ। घर के नौकरों से कार्य लेने का।

"कुछ दिन से उसमें भी मीन–मेख निकलने लगी है और कोठी के नौकर समझने लगे हैं कि मेरी नौकरी छूटने वाली है। आपके पुत्र का व्यवहार अभी तक अत्यन्त सहानुभूति का है। परन्तु सहानुभूति और दया तो प्रेम के स्थानापन्न नहीं हो सकते।

"इस पर भी मैं यहाँ से चले आने का अभी विचार नहीं रखती। माना कि यह भाग्य का खेल है, मैं सहन करने का यत्न कर रही हूँ।"

इस पत्र का उत्तर रामरक्खामल्ल ने लिखा, "साधना! स्वाभिमान मानव–जीवन का सार है। इसको सुरक्षित रखने के लिए प्रत्येक प्रयत्न क्षम्य है। यह तुम स्वयं ही निर्णय कर सकोगी कि कब इसका सीमा से अधिक हनन हो रहा है। इतना तुम विश्वास रखो कि जब तुम आना चाहो, यहाँ तुम लड़की समान आदर और मान पा सकोगी।"

: 10 :

शमशाद ने बहुत यत्न किया कि कोई और इतने किराये पर मकान मिल जाये। दूसरी ओर वह मुकदमे में ढील कराने का यत्न करता रहा। एक दिन तो मजिस्ट्रेट की आज्ञा आ गयी कि दोनों भाइयों को पकड़ कर हवालात में दे दिया जाये और वे बतायें कि क्यों न उनको दूसरे की जायदाद में घुस बैठने के लिए पीनल कोड की धारा... के अनुसार दण्ड दिया जाय?

दोनों भाइयों को दुकान पर पकड़ा गया और उनको कोई जामिन नहीं मिला। इस पर दोनों भाइयों की पत्नियाँ राधा के पास आयीं और रो–रो कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पतियों को छोड़ देने के लिए मिन्नत–समाजत करने लगीं।

वह उनको खटाऊजी के पास ले गयी। वह भी दो औरतों को इस तरह परेशान देख दुःख अनुभव करने लगा। उसने अपनी कम्पनी के मैनेजर को कहकर शमशाद और मजीद की जमानत करा दी और मुमताज और रमजान को कह दिया कि यह जमानत मुकदमे की तारीख तक के लिये होगी। उनको चाहिये कि हवालात से छूटते ही खाविंदों को सुलह के लिए भेज दें। नहीं तो मुकदमे में तो उनको दो–दो साल की कैद हो जायेगी।

शमशाद विवश हो खटाऊजी के पास चला आया। खटाऊजी ने कह दिया, "शमशाद! दोनों लड़कियों की दयनीय अवस्था देख मैं तुमको कहता हूँ कि मुकदमा अब भी वापस हो सकता है। अगर तुम अपनी अम्मी की मिन्नत–समाजत कर उसको यहाँ ले आओ और वह कोर्ट में जाकर बयान दे दे कि वह अभी किरायेदार है और उसके लड़के उसकी रजामन्दी से उस मकान में रहते हैं।"

शमशाद समझ गया कि बिना सुल्ताना को राजी किये वह बम्बई में नहीं रह सकेगा। अतः वह सीधा रावलपिण्डी जा पहुँचा, जहाँ सुल्ताना अपने वालिद साहब के पास रहती थी।

सुल्ताना ने अपने पिता के पाँव पर अपना सिर रख क्षमा प्राप्त कर ली थी और वहाँ रह रही थी। जब सुल्ताना के खाविंद, सरवर के पिता को पता चला कि वह रावलपिण्डी में चली आई है और शमशाद तथा मजीद से लड़ आयी है तो वह उसको लाहौर ले जाने के लिए रावलपिण्डी पहुँच गया।

अब्दुल मजीद खाँ की फ्रांसीसी बीवी गर्भवती हो गयी थी। उसकी पहली बीवी ने उसके घर जाकर रहने से बिलकुल इन्कार कर दिया था। वह घर पर किसी औरत की आवश्यकता अनुभव करने लगा था। सुल्ताना से अच्छी औरत मिलनी मुश्किल थी।

सुल्ताना वहाँ जाना नहीं चाहती थी। उसका पिता इल्मुद्दीन भी उसको यही राय दे रहा था कि वह अब्दुलमजीद खाँ के घर न जाये। उस जैसी सीधी–सादी औरत को एक यूरोपियन औरत के साथ रहने में अपमान और कष्ट सहन करना पड़ेगा।

अब्दुल मजीद खाँ अभी रावलपिण्डी में ही टिका था कि शमशाद वहाँ आ पहुँचा। उसने सुल्ताना के पाँव पकड़ लिए और अपनी गुस्ताखी के लिए मुआफी माँगने लगा। शमशाद ने मकान की सब बात बताकर कह दिया कि जब तक वह बम्बई में चलकर अदालत में यह बयान नहीं दे देती कि उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के उसकी रजामन्दी से वहाँ रहते हैं तब तक उनके लिए दो–दो वर्ष की कैद लाजमी है।

सुल्ताना ने पूछा, "ठीक है शमशाद! मगर तुम इतने बेईमान हो कि तुम्हारा मुख देखने को दिल नहीं करता।"

"अम्मी! अब मुआफ कर दो।"

"अच्छा बताओ मेरे दुकान में हिस्से का क्या होगा?"

"तीसरे हिस्से की मालिक हो।"

"लिखकर दे दो। और यह भी कि तुमको मेरे एतकादों (विश्वासों) में दखल नहीं होगा।"

"नहीं होगा।"

"लिखकर दे दो और तुम राधा पर किसी प्रकार की जबरदस्ती नहीं करोगे?"

"नहीं करूँगा।"

"लिखकर दे दो।"

इन तीन शर्तों को शमशाद को लिखकर देना पड़ा। दुकान में हिस्से के लिए तो 'प्रार्टनरशिप डीड' लिखना पड़ा और दूसरी बातों के लिए एक चिट्ठी लिखनी पड़ी।

इन सब बातों के निर्णय हो जाने पर सुल्ताना शमशाद के साथ बम्बई चली गई। इल्मुद्दीन की राय में भी एक बेवफा खाविंद से बेवकूफ लड़का ज्यादा विश्वस्त था।

सुल्ताना रामरक्खामल्ल के कहने पर अपने पिता के घर गई थी। रामरक्खामल्ल ने कहा था कि औरत की मान–प्रतिष्ठा खाविंद के अथवा अपने पिता के घर में रहते हुए बनती है। परन्तु यहाँ आकर उसको कुछ दूसरी ही बात प्रतीत हुई।

अब्दुलमजीद खाँ उसको विलायती पत्नी की सेवा के लिए लाहौर ले जाने के लिए आया था। उसका अपना वालिद भी अपनी पत्नी अर्थात् सुल्ताना की माँ से लड़ा हुआ था। मजीद के भाई रफीक को इल्मुद्दीन ने मुतबन्ना बनाया हुआ था। उसकी शादी हुई तो सुल्ताना की माँ रफीक की बीवी के साथ मिलकर अपने ही खाविन्द के खिलाफ हो गयी थी। रफीक कारोबार के श्रीनगर वाले दफ्तर का काम देखता था और वह अपनी बीवी और नानी को श्रीनगर में ले गया था। इस कारण इल्मुद्दीन सुल्ताना से सुलह कर उसको रावलपिंडी में रख घर का प्रबन्ध उससे कराने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब शमशाद आया और उसने भी बताया कि उसने और मजीद ने शादी कर ली है और दोनों की बीवियाँ माँ भी बनने वाली हैं, इस कारण भी सुल्ताना को बम्बई चलना चाहिए।

सुल्ताना की समझ में आया कि पिता, पति, पुत्र तीनों ही अपने–अपने कार्य के लिए उसको अपने घर ले जाना चाहते हैं। वास्तव में कोई उसको इसलिए नहीं ले जाना चाहता कि उसके सुख–आराम का उसको ख्याल है। इस प्रकार स्वार्थी सम्बन्धियों में फँसी हुई उसको अपने स्वार्थ का ख्याल आने लगा। इस कारण वह रावलपिंडी से हिली नहीं जब तक शमशाद और मजीद के 'पार्टनरशिप डीड' पर हस्ताक्षर नहीं हो गये। इस प्रकार दुकान में तीसरे भाग की पत्ती के लिए लिखित हो जाने के बाद उसको अपना हित शमशाद के साथ प्रतीत होने लगा और वह बम्बई जा पहुँची।

बम्बई में सुल्ताना ने अपनी पतोहुओं को देखा, पसंद किया और सिर पर हाथ फेर प्यार दिया। इसके बाद वह अपने आने की सूचना देने राधा के पास जा पहुँची। उसको यह जान कर विस्मय हुआ कि राधा ने खटाऊ जी से शादी कर ली है और संतोष को रुक्मिणी ने अपना लड़का बना अपने घर रख लिया है।

भोजनोपरान्त राधा विश्राम कर रही थी और सुल्ताना उसके समीप बैठ उसके विवाह का समाचार सुन रही थी। उसने विस्मय में पूछ लिया, "राधा! यह सब तुमने भापा जी की स्वीकृति से किया है?"

"अम्मी! किया तो अपनी मर्ज़ी से है। शादी अपना हानि–लाभ देखकर की है। संतोष की समस्या मैं उसको खटाऊ जी के घर ले जाकर सुलझाना चाहती थी, परन्तु रुक्मिणी ने उसको अपने पास रख लिया है और वह वहाँ प्रसन्न है। इस पर भी यह सब भापाजी की राय से हुआ है। वे सबके साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं। जब तक कोई भारी भूल नहीं करता तब तक वे उसको मना नहीं करते।"

सुल्ताना ने राधा के व्यवहार की समीक्षा रामरक्खामल्ल से भी सुन ली। रामरक्खामल्ल ने उसको समझाते हुए कहा, "मनुष्य का व्यवहार उसके पूर्व–जन्म के संस्कारों और इस जन्म के वातावरण से बनता है। राधा के विषय में मुझको कुछ ऐसा लगता था कि यह यौन–सम्बन्ध बिना रह नहीं सकती।

"मैंने इस सम्बन्ध को केवल शरीर का सम्बन्ध न बना रहने देकर इसको मन और आत्मा का सम्बन्ध बनाने का यत्न किया है। मैंने कहा था कि विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो केवल रस्म है। इस रस्म द्वारा स्त्री–पुरुष वचनबद्ध हो जाते हैं। वे एक–दूसरे को छोड़ नहीं सकते। इस वचन के आदान–प्रदान में विवाह की रस्म पर साक्षी भी बन जाते हैं।

"यदि बिना विवाह–रस्म के भी स्त्री–पुरुष वचन पर दृढ़ रह सकें तो यौन–सम्बन्ध बिना विवाह के भी पाप नहीं है।

"मेरे इस कथन पर इसने मनन किया और खटाऊजी से इसने बिना विवाह के भी सम्बन्ध स्थिर रक्खा। परन्तु शमशाद के पुनः इसके पीछे लग जाने पर इसको खटाऊजी के साथ अपने सम्बन्ध की घोषणा कर देना हितकर प्रतीत हुआ। मैंने भी उसे गलत नहीं समझा।

"विवाह से पूर्व और पश्चात् दोनों अवस्थाओं में इसके खटाऊजी से पवित्र सम्बन्ध थे। अतः वे मन और आत्मा के सम्बन्ध थे।"

इस पर सुल्ताना ने पूछ लिया, "तो आप पुरुष–स्त्री का सम्बन्ध बिना शादी के भी पाप नहीं समझते?"

"नहीं, धर्म विवाह करना नहीं। धर्म तो इन्द्रिय–निग्रह है। यह विवाहित और अविवाहित दोनों अवस्थाओं में हो भी सकता है और नहीं भी। अतः विवाह करना अथवा न करना न पाप है न पुण्य।

"विवाह के बिना सन्तान उत्पन्न करना अथवा अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं में दुर्व्यवस्था उत्पन्न करना अपराध है। समाज इसका दंड भी देता है।"

"किन सामाजिक दुर्व्यवस्थाओं की ओर आपका संकेत है?"

"उदाहरण के रूप में एक पक्ष विवाहित हो दूसरा अविवाहित। अथवा एक पक्ष या दोनों पक्ष अल्पवयस्क हों। अथवा किसी एक पक्ष की इच्छा सम्बन्ध की हो और दूसरे की न हो। अथवा किसी की इस सम्बन्ध के लिए इच्छा, छलना, धन अथवा बल से प्राप्त की जाये। इन और इसी प्रकार की अन्य बातों को समाज में दुर्व्यवस्था उत्पन्न करना कहा जाता है।"

"तो आपका विचार है कि राधा ने इतने वर्ष तक खटाऊजी से सम्बन्ध रख कर कोई बुरा काम नहीं किया?"

"बताया है न कि सामाजिक दृष्टिकोण से बुरा था। वे स्वयं तो ऐसे ही थे जैसे कि विवाहित युगल होते हैं। समाज में बहुत से दुर्बलात्मा भी हैं और उन पर उनके इस कृत्य का बुरा प्रभाव हो सकता था। एक बुरा प्रभाव तो शमशाद पर पड़ा। उसने राधा को शामलात की भूमि मान उस पर अधिकार करने का यत्न किया। दूसरे संतोष पर उसका प्रभाव होने लगा था। वह सज्ञान हो रहा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 11 :

श्री बाल गंगाधर तिलक के पकड़े जाने के बाद भारत में राजनीतिक आन्दोलन कुछ काल के लिए दब गया। सरकार का दमन–चक्र अति प्रबल था और इस दमन–चक्र के लिए भारत के नरम दल के नेताओं का समर्थन था।

लन्दन में सर कर्जन वाइली नाम के व्यक्ति की एक हिन्दुस्तानी युवक मदनलाल ढींगरा ने हत्या कर दी। लन्दन में उस समय जितने भी हिन्दुस्तानी नरम दल के नेता थे वे मदनलाल की निन्दा का प्रस्ताव करने के लिए कैक्सटन हॉल में एकत्रित हो गये। उनमें कुछ अंग्रेज युवक भी थे। श्री सावरकर भी वहाँ जा पहुँचे। प्रस्ताव उपस्थित हुआ। प्रस्ताव के दो अंश थे। एक था मिसेज वाइली के साथ सहानुभूति का और दूसरा मदनलाल की निन्दा के सम्बन्ध में।

प्रस्ताव पास होने लगा तो सावरकरजी ने उठकर उसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि यह विषय 'सब ज्यूडिस' होने से सार्वजनिक सभा में इस प्रकार इसकी निन्दा अथवा प्रशंसा नहीं हो सकती।

सभा के अध्यक्ष सर आगाखाँ थे। उन्होंने पूछा, आप कौन हैं? उन्होंने कहा, मैं सावरकर हूँ और..। इससे अधिक वे कह नहीं सके। कुछ लोगों ने सावरकर पर आक्रमण कर दिया। सावरकरजी के साथियों ने प्रत्याक्रमण किया। भीरु लोग सभा छोड़ भाग खड़े हुए। कई घायल हो गये।

यह समाचार हिन्दुस्तान में पहुँचा तो भारत सरकार ने अंधाधुन्ध लोग पकड़ने आरम्भ कर दिये।

देसाई के मकान पर पुलिस की कड़ी दृष्टि हो गयी। तीन बार कार्यालय और मकान पर छापा मारा गया। एक बार संगीत भवन की भी तलाशी ली गयी। जब इन स्थानों पर कोई संदेहात्मक व्यक्ति अथवा वस्तु नहीं मिली तो देखरेख ढीली पड़ गई।

क्रान्तिकारियों का सुदृढ़ दुर्ग बंगाल और उसके मिदनापुर नामक नगर में था। सरकार ने भी अपना भीषणतम दमन–चक्र वहीं चलाया। सरकार ने इन स्थानों पर पुलिस का जाल बिछा दिया और किंचित् मात्र के सन्देह पर भी युवकों को पकड़, उनकी तथा उनके माता–पिता की सम्पत्ति जप्त करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रयास में ऐंग्लो–इण्डियन समाचार–पत्र सरकार का पृष्ठ–पोषण करते थे।

1857 के विद्रोह के बाद भी दमन–चक्र चला था और उसका आतंक 1876 तक रहा था। उस समय स्वामी दयानन्दजी ने सार्वजनिक रूप में और भारत के वाइसराय के सम्मुख यह घोषणा की थी कि हम स्वराज्य चाहते हैं। इससे स्वामीजी को सरकारी रिपोर्टों में 'रेबल फकीर' (विद्रोही साधु) की उपाधि मिली और देश के उन पढ़े–लिखे लोगों ने भी, जो पीछे इण्डियन नेशनल कांग्रेस में सम्मिलित हुए, उनको पागल साध की उपाधि दी थी।

इस बार क्रान्तिकारियों के दो–चार कार्यों से क्रुद्ध होकर भारत की नौकरशाही ने भारत में स्वतन्त्र होने की भावना को कुचल डालने का प्रयास किया। सन् 1858 में जनता को सुला देने के लिए क्वीन विक्टोरिया से उद्घोषणा करवाई थी। इस बार भी 1907 से लेकर 1910 तक चलने वाले दमन चक्र की पीड़ा को शांत करने के लिए दिल्ली में दरबार कराया गया और किंग जॉर्ज पंचम से भी एक घोषणा कराई गई।

इस सबका कुछ प्रभाव नहीं हुआ। भारत की जनता अपने स्वाभिमान–युक्त स्वतन्त्रता की यात्रा पर चलती गयी।

राधा की सगाई के अवसर पर रुक्मिणी की दी गयी चाय पार्टी में निर्मलचन्द्र भी उपस्थित था। रामरक्खामल्ल उसको देख चकित रह गया था। चाय पार्टी के बाद रामरक्खामल्ल निर्मलचन्द्र के पास गया और हाथ मिलाकर कहने लगा, "निर्मलचन्द्रजी, कैसे आना हुआ है?"

"तो आप मुझको पहचानते हैं?"

"कैसे भूल सकता हूँ? बताइये कुछ वैसा ही काम है क्या?"

"हाँ, इसी कारण रुक्मिणी देवी ने मुझको अपना भाई घोषित किया है।"

"ईश्वर आपका भला करे।"

"पर मैं तो आपके पास ही भेजा जाने वाला था।"

"कौन भेजने वाला था?"

"रुक्मिणी जी।"

"तो भेज लें। फिर आपसे बात करेंगे।"

"अभी क्यों नहीं?"

"बिना रुक्मिणी देवी जी के भेजे ही?"

निर्मलचन्द्र हँस पड़ा। इस समय तक अभ्यागत विदा हो रहे थे। रुक्मिणी रामरक्खामल्ल के समीप आ गई। वह निर्मलचन्द्र और लालाजी को लेकर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में चली गयी। वहाँ बैठाकर बोली, "भापा! आप तो जानते ही हैं कि मेरे मकान के नीचे खुफिया पुलिस बैठी रहती है। ये सज्जन यहाँ आये हैं। किसी कार्य के लिए सहायता चाहते हैं। मैं इन कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करती और देसाईजी ने अपनी सम्पत्ति का संरक्षक आपको बनाया हुआ है। इस कारण मैं इनको आपके पास भेजने वाली थी।

"उसी समय राधा का टेलीफोन आ गया। इस कारण मैंने इनको, उसकी सगाई की दावत के समय आपके साथ परिचय कराने के लिये, रोक रखा था। ये हैं निर्मलचन्द्र राय। देसाई साहब के मित्रों में से हैं। कुछ काल से बम्बई में प्राइवेट ट्यूशन कार्य कर रहे हैं।"

"मैं इनको भलीभाँति जानता हूँ।" रामरक्खामल्ल ने कहा, "ये मुझको मिस्टर सूद के नाम से जानते हैं।"

"तो आप इनको अपने साथ गाड़ी में ले जाइये। एक तो ये दावत में आये अभ्यागतों में समझ लिये जाएँगे और पुलिस की दृष्टि से बच जाएँगे। दूसरे ये आपको अपना काम बतायेंगे, तदनन्तर आप उचित कार्य करियेगा।"

निर्मलचन्द्र, रामरक्खामल्ल और लेखवती को एक गाड़ी में संगीत भवन पर भेज दिया गया।

वहाँ भवन के ड्राइंगरूम में बैठ निर्मलचन्द्र ने बताया, "बम्बई में मेरे पीछे पुलिस नहीं है। मैं मास्टरजी के नाम से विख्यात हूँ। रुक्मिणी देवी चाहती हैं कि मैं पुलिस के सन्देह से ऊपर रहूँ! इस कारण उन्होंने मुझको आपके साथ गाड़ी में भेज दिया है।

"हमारे पंजाब के कुछ साथियों ने मुझको यह काम सौंपा है कि मैं अपने प्रभाव से पंजाब के एक देशभक्त लाला हरदयाल को हिन्दुस्तान से बाहर भेजने का प्रबन्ध कर दूँ। मेरे पास और सब साधन हैं परन्तु एक साधन नहीं है, धन। उसके लिए ऐबटाबाद से रुक्मिणी देवी का पता मिला था। इस कारण मैं यहाँ पहुँचा हूँ। वहाँ से इधर भेज दिया गया हूँ।"

"कितना रुपया चाहिये?"

"तीन हजार रुपया।"

रामरक्खामल्ल ने गम्भीर होकर कहा, "मुझको केवल यह काम सौंपा गया है कि मैं देखूँ कि कार्य सत्य और भद्र है अथवा नहीं। मैं लालाजी को जानता हूँ। एक–दो बार उनके दर्शन भी किये हैं। मुझको यह भी पता चला था कि उनके वारंट हैं। परन्तु मेरा विचार था कि वे भारत से बाहर जा चुके हैं।"

"नहीं, धनाभाव के कारण छिपे बैठे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रुपए का प्रबन्ध तो हो जाएगा। बताइए, कहाँ भेजना होगा?"

"चौपाटी के किनारे सड़क पर डाक के डब्बे से उत्तर को जाते हुए चौथे बिजली के खम्भे के नीचे एक आदमी होगा। संकेत है 'कैंची'। कल मध्याह्न दो बजे।"

"ठीक है। मगर क्या किसी और को भी देश के बाहर भेजने का प्रबन्ध हो सकता है?"

"कौन है वह?"

"सेठ देसाई।"

"यह तो डबल काम है। जेल से निकालना और फिर देश से बाहर करना?"

"हाँ, कठिन तो है ही।"

"मुझको अपने साथियों से राय कर लेने दीजिए। साथ ही सेठजी भागने और जीवन का भय मोल लेने के लिए तैयार भी हैं क्या?"

"सेठजी वहाँ से निकलने के लिए गोली का निशाना बनने को भी तैयार हैं। आजकल उनको घोर यन्त्रणा दी जा रही है।"

"अच्छी बात है। मुझको एक मास का अवसर दें।"

निर्मलचन्द्र गया तो रामरक्खामल्ल इस नए भय के काम में हाथ डालने से पूर्व चिन्तन करने लगा। उसको अपनी दूर दृष्टि से यह सब कुछ सफल होता प्रतीत हुआ। वह निश्चिन्त–सा हो गया।

अगले दिन रामरक्खामल्ल ने रत्नलाल को भेज दिया। उसको समझा कर कहा, "उस स्थान पर बिजली के खम्भे के नीचे कोई खड़ा होगा। तुम जाकर समय पूछना। वह यदि 'कैंची' कहे तो उसको कहना, 'आओ मेरे साथ।'

"उसको लेकर पैदल ही म्यूजियम की ओर चल पड़ना। यदि वह कुछ पूछे तो कहना कपड़ा रखा है। कटाई वहीं होगी।"

रत्नलाल इस सब का अर्थ समझा नहीं। रामरक्खामल्ल ने उसको खूब समझाया। एक ग्यारह–बारह वर्ष का लड़का बिना कुछ समझे चल पड़ा। रामरक्खामल्ल रत्नलाल को गाड़ी में ले गया और नियत स्थान से आधा मील इधर ही उतार कर उसने उसको भेज दिया।

रामरक्खामल्ल ने गाड़ी एक ओर खड़ी कर दी। यह भाड़े की घोड़ा गाड़ी थी। गाड़ी में बैठा हुआ वह उस वीरान सड़क पर रत्नलाल को जाता देखता रहा। उसके पास एक दूरबीन थी। जब रत्नलाल कुछ दूर चला गया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने दूरबीन निकाल ली और उससे रत्नलाल को जाते देखता रहा। वह यह देखना चाहता था कि रत्नलाल का कोई पीछा तो नहीं कर रहा। नियत बिजली के खम्भे के नीचे उसको एक युवक खड़ा दिखाई दिया। रत्नलाल ने जेब से घड़ी निकाल उस युवक से समय पूछ लिया। मानो वह अपनी घड़ी ठीक कर रहा हो।

इस पर वह युवक एक क्षण तक रत्नलाल का मुख देखता रहा। फिर घड़ी निकाल समय देख बोला, "कैंची"। उस समय ठीक दो बजे थे।

रत्नलाल ने घड़ी जेब में रखते हुए कहा, "तो आइये?"

"कहाँ?"

"कपड़ा रखा है, कटाई वहीं होगी।"

युवक रत्नलाल का मुख देखता रह गया। रत्नलाल ने कहा, "आइये न?"

विवश वह युवक रत्नलाल के साथ चल पड़ा। रामरक्खामल्ल घोड़ागाड़ी में बैठा यह सब कुछ देख रहा था। वह देख रहा था कि युवक विस्मित-सा रत्नलाल को देखता हुआ उसके साथ चला आ रहा है। उन दोनों के आगे-पीछे कोई नहीं था। इससे निश्चिन्त हो उसने रत्नलाल को जब वे उसकी घोड़ागाड़ी के पास से निकलने लगे तो बुला लिया, "रत्नलाल! इधर।"

वह युवक घोड़ा गाड़ी में एक वृद्ध ओजस्वी व्यक्ति को बैठे देख चकित रह गया। रामरक्खामल्ल ने उस युवक को कहा, "आ जाओ।" वह युवक और रत्नलाल गाड़ी में बैठे तो उस युवक ने झुककर रामरक्खामल्ल के चरण स्पर्श किये।

"क्यों, क्या बात है?"

"आपको गुरु मानता हूँ।"

रामरक्खामल्ल चुप रहा। कुछ दूर तक उस गाड़ी में जा रामरक्खामल्ल ने गाड़ी से उतरते हुए भाड़ा दे उसे विदा कर दिया। वहाँ से वे पैदल एक-दूसरे बाजार में चले गये। वहाँ से एक नई विक्टोरिया भाड़े पर कर वे संगीत भवन में जा पहुँचे। वहाँ उस युवक और रत्नलाल को ऊपर ले जाकर रामरक्खामल्ल ने रत्नलाल को कहा, "रसोइये को कहो तीन प्याले चाय ले आये।"

रत्नलाल गया तो रामरक्खामल्ल ने अपनी जेब से नोटों का एक बंडल निकालकर उस युवक को देकर कहा, "इसे रखो, उस लड़के को पता नहीं लगना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक ने रुपये जेब में रखे और प्रशंसात्मक दृष्टि से रामरक्खामल्ल को देखता रह गया। चाय आयी। रत्नलाल सहित तीनों ने चाय पी। रामरक्खामल्ल ने कहा, "कपड़ा तो अभी आया नहीं। फिर किसी दिन आना, मैं तैयार रखूँगा।"

उस युवक ने पुनः चरण स्पर्श किये और चला गया।

उसके चले जाने पर रत्नलाल ने पूछा, "भापा! यह दर्जी था क्या?"

"हाँ! यह नाटक कम्पनी के कपड़े सीता है। राधा हमारे अधिवेशन समारोह के लिए कुछ लड़कियों की एक-समान पोशाक बनाने वाली थी। कपड़ा आया नहीं। इस कारण वह फिर आयेगा।"

रत्नलाल तो अभी भी इस गोरखधन्धे को समझ नहीं पाया, परन्तु भापाजी की बातों में मीनमेख निकालने का स्वभाव न होने के कारण चुप रहा।

: 12 :

उक्त घटना के बीस-पच्चीस दिन बाद निर्मलचन्द्र रामरक्खामल्ल से मिलने आया और एकान्त में बैठ बताने लगा-"प्रारम्भिक जाँच हो गई है। इसमें पाँच सौ व्यय हो गया है। योजना बन गई है। पूर्ण योजना में दस सहस्र लग जायेंगे। इस दस सहस्र में सेठ साहब जनेवा पहुँच जायेंगे।"

रामरक्खामल्ल नीचे भवन के कार्यालय से पाँच सौ रुपया ले आया। वह निर्मलचन्द्र को देकर पूछने लगा, "शेष के लिए?"

निर्मलचन्द्र ने कहा, "एक बात समझ लेनी चाहिए। देसाई के विरुद्ध कुछ नहीं है। वे केवल संदेह में पकड़े गए हैं। सम्भव है वे शीघ्र ही छूट जावें। उससे पहले जेल से भागना अपराध हो जायेगा और सेठजी का क्रान्तिकारी होना प्रमाणित हो जायेगा। विदेश जाने का मार्ग अफगानिस्तान से उजबेकिस्तान, रूस, पोलैंड, जर्मनी और स्विट्जरलैंड है। मार्ग भी भय रहित नहीं। यह सब विचार कर लीजिए। सेठ साहब से मिलकर उनकी इच्छा जान लीजिए। रुक्मिणीजी से भी राय कर लीजिये। तदनन्तर जो आप सबका निश्चय हो बता दीजिएगा। हमारे साथी तो जी जान की बाजी लगा देगे।"

"ठीक है, आप पन्द्रह दिन तक मिलियेगा।"

पन्द्रह दिन के बाद निर्मलचन्द्र आया तो रामरक्खामल्ल ने बताया, "सेठ साहब का कहना है छूटने से पहले ही उनके प्राणान्त हो जायेंगे। आजकल उनको बहुत अधिक कष्ट है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ठीक है रुपया तुरन्त मिलना चाहिए। हम अपना काम आरम्भ करने वाले हैं।"

"कल यहीं पर।"

"पिछली बार आपकी चतुराई को जिस–जिस ने सुना है वह आप का भक्त हो गया है।"

"यह तो कुछ भी नहीं।"

"वह लड़का कौन है? बहुत मजा हुआ था।"

"अपना ही लड़का है।"

"वह तो ग्यारह–बारह वर्ष की आयु का ही प्रतीत होता था?"

"हाँ।" रामरक्खामल्ल मुस्कराता रहा।

"मैं उस लड़के से मेल–जोल रखना चाहता हूँ।"

"हाँ, यह भी समय पर हो जायेगा। अभी वह अपनी शिक्षा में लीन है।"

रुपया दे दिया गया और एक दिन निर्मलचन्द्र आया और बोला, "देसाई जेल से बाहर हैं। उनको देश से बाहर भेजने का प्रबन्ध किया जा रहा है। अभी वे लाहौर में एक सुरक्षित स्थान पर हैं। वहाँ वे अपनी दाढ़ी मूँछ बढ़ा रहे हैं। सर के बाल भी पठानों के पटों की तरह तैयार किये जा रहे हैं।

"पेशावर के एक सौदागर के रूप में वे काबुल जायेंगे। वहाँ से उजबेकिस्तान और रूस। वहाँ से रूसी तुर्किस्तान में से होते हुए यूनान, हंगरी, आस्ट्रेलिया और स्विट्जरलैंड।

"यदि रुक्मिणीजी सेठजी से भेंट करना चाहें तो प्रबन्ध हो सकता है।"

रुक्मिणी से पूछा गया और वह तैयार हो गई। एक योजना बन गई। रुक्मिणी बम्बई से मद्रास को चल पड़ी। मार्ग में रायचूर से एक स्टेशन इधर 'वादी' पर रात के तीन बजे वे गाड़ी से उतरीं और पानी पीने के बहाने वेटिंग रूम में चली गयी। गाड़ी छूट गई। उसका बिस्तर और सूटकेस इत्यादि गाड़ी में ही रह गया। हैदराबाद की गाड़ी तैयार खड़ी थी। उसमें मिसेज सेठी के नाम का एक बर्थ रिजर्व्ड था। उस पर एक बिस्तर लगा था और सीट के नीचे सूटकेश रखा था। वे वहाँ पहुँचीं तो एक युवक ने वहाँ से हैदराबाद का टिकट उनको दे दिया और वे आराम से बिस्तर में घुस कर सो गईं।

हैदरावाद से भी उनके लिए मिसेज सेठी के नाम से एक बर्थ दिल्ली के लिए रिजर्व्ड था। दिल्ली से लाहौर के लिए। यह सब योजना रामरक्खामल्ल की थी।

लाहौर स्टेशन पर निर्मलचन्द्र के साथी मिसेज सेठी को लेने आए हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुक्मिणी जब बम्बई से चली तो खुफिया पुलिस उसके पीछे लग गयी। यद्यपि देसाई के जेल से भाग जाने की बात गुप्त रखी गयी थी इस पर भी रुक्मिणी के घर की देखभाल बहुत कड़ी कर दी गई थी। दो खुफिया पुलिस के आदमी उसी ट्रेन से मद्रास चल पडे, जिसमें रुक्मिणी जा रही थी। वे बेचारे नहीं जानते थे कि रुक्मिणी रात के तीन बजे अपना सामान और बिस्तर छोड़ कर उतर जायेगी। रायचूर के स्टेशन पर वे फर्स्टक्लास का डब्बा देखने आये। रुक्मिणी देवी का बिस्तर लगा देख वे समझे कि देवीजी टट्टी–पेशाब करने गयी हैं। वे निश्चिन्त हो अपने–अपने स्थान पर जा बैठे। इसी प्रकार से गुँटकूल स्टेशन पर आठ बज गये, परन्तु बिस्तर अभी लगा था। इस पर उनको संदेह हुआ तो स्टेशन पुलिस को इत्तला की गयी। डब्बे में सोये अन्य यात्रियों से पता किया गया। परन्तु कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ उतर गयी है। उसका सामान वहीं रक्खा देख, पुलिस ने यह समझा कि वह किसी छोटे स्टेशन पर किसी कारण से उतरी है और गाड़ी छूट गयी है।

इस पर पूर्ण लाइन पर खोज होने लगी। परन्तु उसका कहीं पता नहीं चला। रुक्मिणी लाहौर में तीन दिन रही और छः बार अपने पति से मिली। यह निश्चय हो गया कि वे स्विट्जरलैंड पहुँच कर लिखेंगे तो रुक्मिणी उनसे मिलने आयेगी।

पुलिस को यह विश्वास था कि रुक्मिणी देवी देसाई से मिलने गयी है। अतः जब एकाएक रुक्मिणी बम्बई स्टेशन पर उतरी तो एक खुफिया पुलिस का अफसर उसके साथ स्टेशन के दरवाजे तक आया। टिकट कलक्टर से उसका टिकट लेकर देखा गया। टिकट मद्रास से बम्बई तक का था। उस पर रिजर्वेशन का निशान बना था। तुरन्त गाड़ी पर जाकर देखा गया। रुक्मिणी देवी के नाम पर एक सीट रिजर्व्ड थी। वे चकित रह गये। मद्रास स्टेशन पर जाँच की गयी। वहाँ के खुफिया–पुलिस बालों ने बताया कि एक बर्थ अमुक गाड़ी में रुक्मिणी देवी के नाम का रिजर्व्ड था। पुलिस वालों को संदेह हुआ और वे उसको पकड़ने के लिए तैयार थे। परन्तु सवारी कोई और रुक्मिणी निकली। वह रुक्मिणी देसाई नहीं थी।

इस जाँच पड़ताल के बाद पुलिस रुक्मिणी से पूछ ताछ करने आई। पुलिस अधिकारी ने पूछ लिया, "आपको हम यहाँ देख रहे थे। आप कहाँ गयी थीं?"

"मैं अपने पति से मिलने गयी थी।"

"आपको विदित था कि वे जेल से भागे हुए थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। वे पकड़े जाने से पहले घर से भागे हुए थे। मुझको बताया गया था कि सरकार ने उनको देश से निर्वासित करने के लिए मद्रास भेजा है और मैं उनसे भेंट कर सकूँगी। मैं इसी निमित्त गयी थी। वहाँ जाकर मुझको पता चला कि वे 'एबस्कौंडर' हैं। इस पर भी मैं उस समय उनसे मिल रही थी। वे सागर तट पर जहाज पर सवार होने के लिये तैयार खड़े थे। कुछ मिनट ही भेंट हुई और हम बिछुड़ गये।"

"यह किस दिन की बात है?"

"पिछले रविवार की। वे किश्ती में बैठ रवाना हुए तो मैं लौट आयी।"

"आपको किसने कहा था कि वे देश से निर्वासित किये जा रहे हैं?

"मुझको ऐबटाबाद जेल सुपरिन्टेंडेंट का एक पत्र आया था।"

"वह पत्र कहाँ है?"

"मैं जब मद्रास स्टेशन पर पहुँची तो पंजाबी पोशाक में एक भद्र पुरुष मुझको नमस्कार कर बोले, 'आप आ गयीं? बहुत देरी कर दी। जल्दी करिये।'

"मैंने समझा कोई पुलिस का आदमी है। मैं रास्ते में गाड़ी 'मिस' कर गयी थी। पानी पीने उतरी तो गाड़ी छूट गयी। इससे दूसरी गाड़ी से वहाँ छः घंटा लेट पहुँची थी। इस कारण देरी की बात मैं समझ रही थी। मैंने अपने बिस्तर इत्यादि की जाँच भी नहीं की। सीधी बाहर निकल मोटर से, जो वहाँ खड़ी थी, पायर पर जा पहुँची। देसाईजी को मुझको देख बहुत अचम्भा हुआ। मैंने उनको जेल के दारोगा की चिट्ठी दिखाई तो हँस पड़े। चिट्ठी उनके पास ही रह गयी है।"

"आप कितने दिन मद्रास में रहीं?"

"एक सप्ताह तक।"

"कहाँ ठहरी थीं?"

"साउथ इण्डियन होस्टल में।"

"मिस्टर देसाई कहाँ गये हैं?"

"उन्होंने मुझको बताया नहीं। उनके साथ एक और साहब थे। वे दोनों किश्ती में सवार हुए तो मैं लौट आई।"

"जहाज का क्या नाम था?"

"जहाज किनारे से काफी दूर था। इस कारण नाम पढ़ नहीं सकी।"

"उनको आपने कुछ रुपया दिया है?"

"न उन्होंने माँगा न मैंने दिया।"

"उनका गुजर कहाँ से होता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं नहीं बता सकती।"

"हमारी सूचना है कि वे जापान गये हैं।"

"गये होंगे। मैं नहीं जानती।"

इस वार्तालाप का परिणाम यह हुआ कि पुलिस गलत सुराग पर लग गयी और देसाई काबुल के मार्ग से निकल गया।

उक्त घटना के छः मास बाद निर्मलचन्द्र एक बड़ा–सा लिफाफा लेकर रामरक्खामल्ल से मिला। निर्मलचन्द्र ने बताया, "यह देसाईजी का रुक्मिणीजी के नाम पत्र है। हमारे पत्र इसी प्रकार आते–जाते हैं।"

167946 Gurukula ... (Deemed to be University) Haridwar

"कहाँ से आया है यह पत्र?"

"जनेवा से।"

"कैसे हैं?"

"मजे में हैं। अब नियम से उनको रुपया भेजना चाहिये।"

"कर दूँगा प्रबन्ध।"

"राधा के हाथ रुक्मिणी देवी को पत्र भेज दिया गया। सायंकाल रामरक्खामल्ल स्वयं मिलने गया। रुक्मिणी ने बताया, "वह सेठ साहब के अपने हाथ का लिखा पत्र था। वे जनेवा पहुँच गये हैं। मार्ग में बहुत कष्ट हुए हैं, परन्तु अब आराम से हैं। धन का अभाव है। अभिनव भारत नाम की संस्था से धन उधार लेकर निर्वाह हो रहा है। खर्चा पचास पौंड मासिक है। अपने लिये और वहाँ के कुछ साथियों के लिये।

"धन का प्रबन्ध निर्मलचन्द्र के द्वारा ही करना चाहिये।"

अगले दिन निर्मलचन्द्र आया और एक वर्ष के लिए 600 पौंड के रुपये उसको मिल गये। पचास पौंड भेजने का खर्चा पृथक् दे दिया गया। इस प्रकार वर्ष–वर्ष का खर्चा देसाई को भेजा जाने लगा और उसकी पहुँच की सूचना आने लगी।

इस रुपये के कारण और रत्नलाल के इंग्लिश के अध्यापक के कारण निर्मलचन्द्र से सम्पर्क बढ़ता चला गया। वह कभी–कभी भवन की प्रार्थनाओं में भी सम्मिलित होने लगा। इससे उसका सम्बन्ध रत्नलाल और संतोष से भी बढ़ने लगा।

दोनों लड़के अष्टाध्यायी लगभग समाप्त कर चुके थे और उनको संस्कृत पढ़ने, बोलने तथा लिखने का अभ्यास कराने के साथ–साथ अंग्रेजी की शिक्षा दी जाने लगी। यह निर्मलचन्द्र देने लगा। दोनों लड़कों के लिए देसाई भवन में एक छोटी–सी लैबोरेटरी निर्माण कर दी गयी और एक सायंस के प्रोफेसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको विज्ञान, भौतिकी, रसायन तथा प्राणी–शास्त्र पढ़ाने लगे।

एक दिन निर्मलचन्द्र, रत्नलाल और संतोष को पढ़ा रहा था कि एक औरत काले बुर्के में भवन की तीसरी मंजिल पर जा पहुँची। वह सीधी रामरक्खामल्ल के कमरे में गयी और वहाँ आवाज देने लगी, "भापाजी, मैं दुर्गा हूँ।"

बगल के कमरे में निर्मल अंग्रेजी पढ़ा रहा था। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने सुना कि बुर्के में एक लड़की कह रही है, "मैं दुर्गा हूँ।"

उसने रत्नलाल से पूछ लिया, "यह कौन है?"

रत्नलाल ने कह दिया, "मैं नहीं जानता। शक्ल देखूँ तो पहचान सकता हूँ।"

औरत के लिये रामरक्खामल्ल का दरवाजा खुल गया। निर्मलचन्द्र के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब रामरक्खामल्ल स्वयं उसको बुलाकर वहाँ ही ले गया, जहाँ वह औरत बैठी थी। वह दुर्गा का सौंदर्य देख चकित रह गया और प्रश्न–भरी दृष्टि में रामरक्खामल्ल की ओर देखने लगा।

रामरक्खामल्ल ने परिचय कर दिया, "यह एक आगाखानी की लड़की है और आगाखाँ के दरगाह के मीर साहब की पतोहू है। यह हमारे भवन में संगीत सीखती थी। इसके माता–पिता अपने को हिन्दू कहते थे, यद्यपि इन सब के नाम फारसी और अरबी में थे। विवाह के पहले इसके घर वाले ने वायदा किया था कि यह हिन्दू रह सकती है। वह स्वतन्त्रता तो इसको अभी भी हासिल है। यह अपने को दुर्गा कहती है। इसके श्वसुराल वाले इसको रहमत कहते हैं। यह ईशावास्योपनिषद का पाठ करती है। मगर पारिवारिक समारोहों में इसको उनके साथ कुरान की तलावत सुननी पड़ती है। इसके माता–पिता ने अपने नाम हिन्दुआना रख लिए हैं। यद्यपि दरगाह में जाने पर इनको फारसी के नामों से बुलाया जाता है।

"समस्या यह उत्पन्न हुई है कि इसके बड़े बच्चे को इससे पृथक् कर दिया गया है। वह ढाई वर्ष का है। बच्चे के बाप को सन्देह है कि यह उसको कहीं हिन्दू न बना दे। इसने उसका नाम कृष्ण रखा है परन्तु इसके श्वसुराल वालों ने उसका नाम कुदरतुल्ला खाँ रखा है।

"एक छोटा बच्चा भी है। वह सवा साल का है। उसका नाम इसने बलराम रखा है और इसके श्वसुराल वालों ने वख्तावरअली रखा है। यह संघर्ष हो रहा है, मगर यह अनुभव करने लगी है कि इसके घरवाले ने इसको किसी प्रकार का विष दे दिया है। वह मानता नहीं, परन्तु यह दिन–प्रतिदिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्बल होती जाती है।

"परिवार का डाक्टर आता है और इसको औषधि दे जाता है। वह कहता है कि यह ठीक हो जायगी, मगर यह अनुभव करती है कि यह उसकी औषधि से दिन–प्रतिदिन दुर्बल होती जाती है।

"दो वर्ष से इसको यहाँ आना मना था। आज यह उनको धोखा देकर आयी है। अब यह लौटना नहीं चाहती। बताइये आप इसकी कुछ सहायता कर सकते हैं?"

"हाँ! कर सकता हूँ। मगर इसको किसी दूसरे की पत्नी बनने का नाटक करना पड़ेगा। मैं इसको फ्रांस भेज सकता हूँ।"

"मगर क्या वास्तव में दूसरे की पत्नी भी बनना पड़ेगा?" दुर्गा का प्रश्न था।

"यह तुम दोनों की स्वेच्छा से होगा। बलात्कार नहीं होगा।"

"कब तक हो जायेगा यह प्रबन्ध?"

"जहाज कल छूटेगा।"

"मैं तो यदि अब घर गयी तो फिर निकल नहीं सकूँगी।"

"घर जाने की जरूरत नहीं। तुम अभी चलो।"

"कैसे?"

"पाँच बजे संगीत भवन बन्द होगा। मैं गाड़ी ले नीचे आ जाऊँगा तुम लड़कियों के साथ उतर आना और मेरी गाड़ी में मेरे साथ चली चलना।"

दुर्गा ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "अभी दो बजे हैं। मैं तीन घंटे यहाँ नहीं बैठ सकती। मुझ को ढूँढ़ने वाले एक घंटे तक यहाँ आ सकते हैं।"

"तो तुम अभी चलो। देखो दुर्गा! यह सम्भव है कि तुमको किसी ने इस भवन में आते देख लिया हो। इस कारण तुम को जाते भी दिखाई देना चाहिये। मैं अभी जाता हूँ और ऐपोलो पायर, गेट वे आफ इडिया के बाहर गाड़ी में तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ। तुम यहाँ से निकल वहाँ चली आओ। मेरे जाने के पाँच मिनट पीछे निकलना। मैं अपनी गाड़ी के समीप खड़ा रहूँगा। तुम चुपचाप उस गाड़ी में ऐसे बैठ जाना, जैसे वह तुम्हारे लिये खड़ी हो। बस फिर तुम मेरे चार्ज में हो जाओगी। मैं प्रबन्ध कर दूँगा।

"तुम बुर्के में ही यहाँ से निकलना और वहाँ मेरी गाड़ी तक बुर्के में ही आना। मैं बुर्के में तुमको पहचान नहीं सकूँगा। तुम्हें ही मुझको पहचान कर गाड़ी में बैठना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 13 :

सन् 1906 में सर आगा खाँ हिन्दुस्तान के वाइसराय से मिला था और वहाँ की गोष्ठी के दो परिणाम हुए थे। एक तो मुसलमानों का एक 'डेलिगेशन,' वाइसराय से मिलने गया। बाद में विलायत में यह डेलिगेशन इंग्लैंड के प्राइम मिनिस्टर और टोडी पार्टी के पार्लियामेंट के अन्य मेम्बरों से मिला। दूसरे मुसलमान जनता में इस्लामी हुकूमत बनाने के उपायों का ज्ञान कराया जाने लगा।

देश–भर की मस्जिदों में वाज तो होते ही थे। उन वाजों द्वारा हिन्दुओं के प्रति घृणा का वातावरण बनने लगा।

1857 के गदर के बाद तो मुसलमान दब गये थे। दमन चक्र तो हिन्दू–मुसलमान दोनों पर चला था। यू.पी. में, जहाँ विद्रोह अधिक प्रबल रहा था, वहाँ के किसानों और साधारण हिन्दुओं को तो सरकार ने घसियारे बनाकर रख दिया। किसानों की जायदादें लूट लीं। जिस पर कुछ भी सन्देह हुआ कि उसने विद्रोह में भाग लिया है, उस घर के सब पुरुषों को गोली का निशाना बना दिया और उनकी औरतों को वहाँ के जमींदारों की दासियाँ बनने पर विवश कर दिया।

दिल्ली, मेरठ, मुरादाबाद इत्यादि शहरों में वही कुछ मुसलमानों से हुआ, जो पूर्वी यू.पी. के देहातों में हिन्दुओ से किया गया था। वहाँ गाँव–के–गाँव जमींदारों को बाँट, भूमिपतियों को काश्तकार मात्र बना दिया। यह अनुमान है कि दिल्ली में तीस हजार मुसलमानों को फाँसी चढ़ाई गयी। दमन चक्र तो दोनों पर चला, परन्तु मुसलमान सिर नहीं उठा सके और हिन्दुओं में गुरु रामसिंह नामधारी, स्वामी दयानन्द, महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक और चिपलूणकर, गुजरात–काठियावाड़ में श्यामजी कृष्ण वर्मा इत्यादि क्रान्तिकारी और बंगाल में विपिनचंद्र पाल जैसे नेता उत्पन्न हो गये और 1876 से ही हिन्दुओं ने पुनः अपने पाँव पर खड़ा होना आरम्भ कर दिया।

हिन्दुओं में अंग्रेज के प्रति विद्रोह की भावना मरी नहीं। मुसलमानों में इस प्रकार प्रतिक्रिया नहीं हुई। मुसलमानों में क्रान्तिकार्य अर्थात् स्वराज्य प्राप्ति के लिये तो कोई निकला नहीं। हाँ कुछ–एक मुसलमान कांग्रेस में आये। उदाहरण के रूप में बदरुद्दीन तैयबजी, मौलवी मजरुलहकं, मुहम्मद अली जिन्ना इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन उँगलियों पर गिने जाने योग्य मुसलमानों के मुकाबले में एक बड़ी संख्या में मुसलमान नेता पृथक् एकत्रित हो गये जिन्होंने मुस्लिम लीग की स्थापना की। इस लीग के नेता सर आगा खाँ बने और प्रायः पढ़े–लिखे मुसलमान इसमें सम्मिलित हो गये। ये सरकार के प्रोत्साहन से अस्तित्व में आये और हिन्दुओं को मिलने वाले अधिकारों का विरोध करना इनका कार्य हो गया। स्वराज्य की प्राप्ति भी हिन्दुओं को मिलने वाला अधिकार माना गया और इसका विरोध भी आरम्भ कर दिया गया।

1907 से 1915 तक गरम दल प्रायः दबा रहा। इसमें केवल मात्र हिंदू थे और वे भारत को मातृभूमि मान इसके वैसे ही उपासक बने जैसे दुर्गा, काली, चण्डी की उपासना करते थे।

'तुमि दुर्गे दश प्रहरण धारिणीम्' कह भारत माता को सम्बोधन किया जाता था। मुसलमान इसके विरोधी हो गये। कांग्रेसी नरम दलीय हिन्दू भी इसका विरोध करने लगे। मुस्लिम लीग कांग्रेस की विरोधी संस्था थी। यह संस्था चाहती थी कि उक्त पदवियाँ मुसलमानों को मिलें और जो कुछ भारतवासियों को मिले उसमें मुसलमानों का भाग पृथक् कर केवल मुसलमानों को ही दिया जाये।

सन् 1909 में भारत शासन सुधार का कानून ब्रिटिश पार्लियामेंट में पास हुआ तो उसमें यह मान लिया गया कि मुसलमानों के लिए मैम्बरियाँ ओहदे, पदवियाँ इत्यादि पृथक् रखी जायें। 1910 में कांग्रेस ने इसका विरोध किया और मिस्टर जिन्ना और मजरुलहक इस विरोध में सम्मिलित हुए। किन्तु वे नरमदलीय हिन्दू, जो कांग्रेस में ओहदे और पदवियाँ लेने के लिए ही जाते थे, इस साम्प्रदायिक प्रातिनिध्य के हक में हो गये।

धीरे–धीरे इन लोगों का प्रभाव बढ़ता गया और अन्त में 1915 में इन्होंने एक कमेटी बनाई जिसको यह विचार करने का काम दिया गया कि वह उस स्वराज्य की रूपरेखा बनाये जो चाहिए और फिर वैसे शासन की माँग की जाये। इस कमेटी को यह भी काम सौंप दिया गया कि वह साम्प्रदायिक प्रातिनिध्य के विषय में अपनी सम्मति दे।

इस मुस्लिम पृथकत्व की भावना का प्रभाव जनता पर दो प्रकार से होने लगा। हिन्दुओं में दो दल हो गये। एक वे जो राज्य में मुसलमानों के विशेष तथा पृथक् अधिकारों को नहीं मानते थे और दूसरे वे जो कहते थे कि स्वराज्य प्राप्ति के लिए इसे मान लेना चाहिये।

यह विचार भेद पंजाब में अति उग्र रूप धारण करने लगा। जन–जन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह उग्रता व्याप्त होने लगी। आर्य समाज की शुद्धि की धार्मिक प्रथा एक प्रकार से राष्ट्रीय आन्दोलन का अंग बन गई। मुसलमान और देशोन्नति का विरोधी पर्यायवाचक शब्द हो गये। परिणामस्वरूप हिन्दुओं को देशभक्तों की संख्या कमी न आने देने के लिए शुद्धि आन्दोलन और अछूतोद्धार आन्दोलन आरम्भ करने पड़े। हिन्दुओं की पिछड़ी जातियों पर ही मुसलमानों का धर्म परिवर्तन आक्रमण होता था। अतः हिन्दुओं में पिछड़े हुए न रहने देने के लिए उनको यज्ञोपवीत देना, उनके मन्त्रोच्चारण के साथ संस्कार करना उनके साथ खान–पान करना आरम्भ हो गया। दूसरी ओर उन हिन्दू जाति के अंगों को जो मुसलमानों के काल में कई कारणों से हिन्दुओं से बिछुड़ गये थे और बिछुड़ कर भी अपने हिन्दू अस्तित्व को रखे हुए थे, पुनः हिन्दू समाज में सम्मिलित करना दूसरा कार्य हो गया।

सबसे पहले इस कार्य की राजनीतिक महत्ता का भान पंजाब के आर्य समाज को हुआ। जनसंख्या का राजनीति में प्रभाव हिन्दू समाज में अन्य किसी को नहीं हुआ। राजनीति में लगे हिन्दुओं को भी यह विचार पसन्द नहीं आया और आर्य समाज, जो पंजाब में देशभक्तों की संस्था समझी जाती थी, इन राजनीतिक नेताओं द्वारा देशद्रोहियों की संस्था घोषित कर दी गयी।

सदानारायण ने बी.ए. की परीक्षा दी थी और राजनीति में अपने ताया रामरक्खामल्ल का शिष्य होने के कारण आर्य समाज के इस आन्दोलन के तत्त्व को समझ इसमें सम्मिलित हो गया।

आर्य समाज ने उन जिलों में, जहाँ–जहाँ ऐसे हिन्दू रहते थे, जो किसी न किसी कारण से हिन्दू समाज के प्रधान अंग से पृथक हो गये थे, वहाँ स्वयंसेवकों की मंडलियाँ भेज दीं। सदानारायण मथुरा, आगरा इत्यादि जिलों के मलकाने राजपूतों में एक मंडली के साथ जा पहुँचा। दो प्रकार का काम था। एक तो यह कि साधारण हिन्दू को, विशेष रूप में उनको जिनकी बिरादरी के ये मलकाने किसी काल में रहे थे, इसको अपने में सम्मिलित करने के लिए तैयार करना था। दूसरे मलकानों को पुनः हिन्दू समाज में आने के लिये तैयार करना।

आगरा में एक मलकाना सम्मेलन किया गया। उसमें लगभग पाँच सौ गाँवों के राजपूतों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आर्य समाज के नेता महात्मा हँसराज और महात्मा मुन्शीराम दोनों महानुभाव वहाँ उपस्थित थे। हिन्दू धर्म और संस्कृति की महिमा गान की गई और राजपूतों के शौर्य के कारनामों की गाथाएँ सुनाई गईं। इस प्रकार मलकानों में अपनी जाति तथा धर्म के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभिमान जागृत किया गया। दस हजार से अधिक मलकानों के इस सम्मेलन ने प्रस्ताव पास किया कि भविष्य में मलकाने अपने संस्कार हिन्दू रीति–रिवाज के अनुसार करायेंगे। वे यज्ञोपवीत पहनेंगे और चोटियाँ रखेंगे।

इस सम्मेलन के बाद स्वयंसेवकों का कार्य आरम्भ हुआ। ये लोग उनके गाँवों में जाते और मलकानों को स्नान करा यज्ञोपवीत देते। हजामत करा चोटियाँ रखवाते। उनके साथ बैठते, खाते और उनको यह अनुभव कराते कि वे हिन्दू समाज का अंग बन गये हैं।

हिन्दुओं के अन्दर कही जाने वाली सनातन धर्म सभा वालों में, मुसलमानों में और सरकार में भी इस आन्दोलन और कार्य की प्रतिक्रिया हुई। सनातन धर्म सभा ने तो इसको हिन्दू धर्म की पवित्रता पर कुठाराघात समझा। मुसलमानों ने इसको इस्लामी राज्य की जड़ों में कुठाराघात माना। प्रत्येक मुसलमान, इस समय पुनः हिन्दुस्तान में, इस्लामी राज्य के स्वप्न देखने लगा था और सरकार हिन्दू समाज के सुदृढ़ होने को अपनी जड़ों में तेल डालना समझती थी।

अपने पाँच साथियों के साथ सदानारायण एक गाँव में गया हुआ था। गाँव का चौधरी सुरेन्द्रसिंह उस दिन यज्ञोपवीत लेने वाला था। उसका सब परिवार और गाँव के राजपूतों के बत्तीस अन्य परिवार भी इसमें सम्मिलित हो रहे थे।

स्वयंसेवकों की मंडली वहाँ पहुँची तो गाँव दो दलों में विभक्त हो उनके स्वागत के लिए खड़ा था। एक में बनिये और कुछ अन्य राजपूत थे जो मलकाने नहीं थे। दूसरे में मलकाने थे।

सवर्ण हिन्दुओं के नेता गिरिधर शर्मा धर्मशास्त्री थे। संस्कृत धाराप्रवाह बोलते थे और उस इलाके में शास्त्र के महान् ज्ञाता माने जाते थे। मलकानों के दल वाले इन स्वयंसेवकों पर निर्भर कर रहे थे कि वे इनके पक्ष का समर्थन करेंगे। इन स्वयंसेवकों में सबसे अधिक पढ़ा हुआ सदानारायण ही था। मलकानों ने स्वयंसेवकों को आते देखा तो वैदिक धर्म की जय का नारा लगा दिया। पं. गिरिधर शर्मा के साथियों की संख्या अधिक थी। मलकानों की संख्या कम थी। इससे ये कुछ त्रसित थे। चौधरी सुरेन्द्रसिंह ने सदानारायण से कहा, ''यह पंडित का बच्चा कह रहा है कि यदि हमने यज्ञोपवीत पहने तो फौजदारी हो जायेगी।''

''क्यों?''

''यह आप उससे स्वयं पूछ लीजिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण अकेला ही उस मंडली में जा पहुँचा और पूछने लगा, "आप इनको यज्ञोपवीत पहनने से मना क्यों करते हैं?"

पंडितजी महाराज ने कहना आरम्भ कर दिया–

धर्मदान कृतं सौख्यमधर्माद् दुःख सम्भवम्।
तस्माद्धर्म सुखार्थाय कुर्यात् पापं विवर्जयेत्।।
लोकद्वयेऽपि यत्सौख्यं तद्धर्मात्प्रोच्यते यतः।
धर्म एव मतिं कुर्यात् सर्व कार्यार्थसिद्धये।।
मुहूर्त्तमपि...

पंडित न जाने कब तक चलता रहता कि सदानारायण ने कह दिया, "क्या बक–बक लगाई है...।"

"बक–बक? अरे मूर्ख! यह वेदवाणी है। संस्कृत में बात करो तो जानूं।"

सदानारायण जानता था कि यदि संस्कृत में बात की तो ये देहाती समझेंगे नहीं और यदि वह इस भाषा में कुछ नहीं बोलता तो सब उसको मूर्ख समझेंगे। इस कारण सदानारायण ने हाथ खड़ा कर कह दिया–

"यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं। विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव। अत्यन्त इध्म आत्मा जातवेदेस्ते ने ध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय। चास्मान प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसे नान्नाद्येन समेधय।"

इस समय तक मलकाने और स्वयंसेवक भी सदानारायण के पीछे आ खड़े हुए थे। वे सदानारायण का साहस देख उत्साहित हो आगे बढ़ आए थे।

गिरिधर शर्मा समझ गया कि वे दोनों एक जैसे ही विद्वान हैं। इस पर सदानारायण ने पंडित को बोलने का अवसर न दे एकत्रित गाँव वालों ने कहा, "देखो भाइयो! जैसे गंगाजल पवित्र है और जिसको छू जाता है, वह पवित्र हो जाता है, वैसे ही यज्ञोपवीत भी एक पवित्र वस्तु है। यह हरिद्वार में गंगा के किनारे बैठकर गंगा का नाम लेकर बनाया गया है। अतः जिसके गले में यह पड़ जायेगा वह पवित्र हो जायेगा।

"कहो पंडित! गंगा में स्नान करने से पाप छटते हैं अथवा नहीं।"

पंडित ने समझ लिया कि बातों से काम नहीं चलेगा। उसने सदानारायण को चुप कराने के लिये एक और श्लोक बोल दिया –

उत्तिष्ठ देव देवेश तजाराशे जगत्पते
वीक्षस्व सकलं देव प्रसुप्तं तब मामया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण ने उसकी बात बीच में ही काटकर एक मंत्र और बोल दिया–

उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जाग्रहित्वामिष्ठा पूर्वे सथ्ः सृजे था मयंच।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वे देवा यजमानश्चसीदत। अयन्त...

"परन्तु भाइयो! देखो भगवान वेद ने कहा है कि अग्नि जलाकर उसमें हवन कर उसकी तृप्ति करो तो वह नीच से नीच को भी पवित्र कर देती है। इसलिए इन भाइयों की, यज्ञोपवीत पहनने से, शुद्धि हो जायेगी।"

पंडित ने देखा कि काम बना नहीं, यह लड़का तो बहुत वाचाल है। इस कारण उसने एक और चाल चली। उसने पूछ लिया, "बालक! तुम किस जाति के हो?"

"मैं मनुष्य हूँ। तुमसे अधिक विद्वान हूँ। अब तुम चुप रहो।"

पंडित ने सदानारायण को अपनी जाति बताने से आनाकानी करते देखा तो समझ गया कि अवश्य दाल में कुछ काला है। उसने कहा, "तुम म्लेच्छ हो। तुम देवताओं के काम में हम सबको कलंकित करने आये हो, बताओ यह गलत है क्या?" पंडितजी ने सदानारायण को उत्तर देने का अवसर ही नहीं दिया और अपने दल वालों को कह दिया, "मारो इस म्लेच्छ को। यह हिन्दू जाति को भ्रष्ट करने के लिए ब्राह्मण के भेष में ईसाई है।"

बस फिर क्या था! लाठियाँ निकल आयीं। सुरेन्द्रसिंह ने भी अपने परिवार वालों को आज्ञा दे दी– मारो इस पंडित के बच्चे को। दो मिनट से अधिक लाठी नहीं चली। पुलिस पहुँच गयी। वहाँ का थानेदार मुसलमान था। वह जात का नाई और हिन्दुओं का कट्टर दुश्मन था। एक दिन पहले सुरेन्द्रसिंह उसके पास गया था। उसने उसको आश्वासन दिया था कि वह फौजदारी नहीं होने देगा। पंडित गिरिधर शर्मा भी थानेदार के पास गया था और उसने उसको भी आश्वासन दे दिया था। उसने कहा था कि वह हिन्दुओं के जायज हक–हकूक की रक्षा करेगा। वह दस लठैत सिपाहियों के साथ छिप कर बैठा था और चाहता था कि दोनों लड़ पड़ें तो दोनों को पकड़ कर हवालात में डाल दे।

ऐसा ही हुआ। वह घटनास्थल पर ठीक उस समय आया जब दोनों ओर के सिर फूट रहे थे। उसको आया देख लाठियाँ रुक गयीं। बनिये और पंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो भाग गये और राजपूतों के दोनों पक्ष के दस–दस आदमी गिरफ्तार कर लिए गये। बीस के लगभग घायल हो गये। इन घायलों में पाँच स्वयंसेवक भी थे। सदानारायण को सबसे अधिक चोटें आयी थीं। सदानारायण और एक अन्य स्वयंसेवक को, जो बहुत अधिक घायल हुआ था, आगरा अस्पताल में ले जाया गया। उनको अस्पताल में भर्ती कर लिया गया।

इस दंगे की खबर लाहौर पहुँची तो वहाँ से शुद्धि सभा के मन्त्री आये और समाचार पत्रों में घटना का वृत्तान्त छा गया। मुकदमे की पैरवी होने लगी।

सदानारायण के खिलाफ मुकदमा नहीं था। किसी भी स्वयंसेवक को पकड़ा नहीं गया था। थानेदार की इच्छा थी कि इसको शुद्धि का मसला न बना कर गाँव में दो धड़ों की लड़ाई मात्र प्रकट किया जाये। इसी कारण उसने गाँव से बाहर वालों को नहीं पकड़ा।

किन्तु ऐसा नहीं हो सका। शुद्धि सभा के मन्त्री ने इस विषय में विस्तारपूर्वक अपना वक्तव्य छपवा दिया। सदानारायण की गवाही हुई और मुकदमे का एक रूप बदल गया। इस पर भी सदानारायण और अन्य स्वयंसेवक मुकदमे से बाहर ही रह गये।

जब सदानारायण अस्पताल से छूटा तो लाहौर जाने के स्थान बम्बई जा पहुँचा।

: 14 :

दुर्गा उर्फ रहमत के घर न पहुँचने पर आगाखाँ पैलेस में भारी हलचल मची। लियाकत अली ने अपने वालिद शरीफ को बताया कि थाने में रिपोर्ट तो लिखा ही देनी चाहिये और दुर्गा के वालिद, संगीत भवन तथा रुक्मिणी देवी के घरों की तलाशी करा देनी चाहिए।

मीर साहब का प्रश्न था, ''क्या लाभ होगा इससे?''

''मेरी बीवी मिल जायेगी।''

''लियाकत! ज्यों ही रिपोर्ट लिखवाई, दुनिया–भर के अखबारों में खबर छप जायेगी कि कोई सर आगा खाँ की बहू को भगाकर ले गया है। हमारी और हमारे फिर्के की भारी बदनामी होगी। औरतें तो आती–जाती हैं। तुम दूसरी शादी कर लो।''

''अब्बाजान! वह बहुत खूबसूरत थी।''

''बेवकूफ न बनो। दुनिया में अरबों औरतें हैं। उससे भी अच्छी हैं। जाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक ढूँढ़ लो। मुसलमान औरतों के पीछे नहीं भागते, औरतें मुसलमानों के पीछे भागा करती हैं।''

बात खत्म हो गई। रहमत के बच्चों के लिए एक 'गवर्नेस'(दायी) रख दी गई और लियाकत अपने लिए नई बीवी की तलाश करने लगा।

अगले दिन निर्मलचन्द्र दिखाई नहीं दिया। जब वह कई दिन तक नहीं आया तो रामरक्खामल्ल ने समझ लिया कि दुर्गा को वही अपने साथ ले गया है।

वह उम्मीद करता था कि पुलिस वाले रहमत के विषय में पूछ–ताछ करने आयेंगे। दिन व्यतीत होते गये और कोई पूछने नहीं आया।

अभी दुर्गा के विषय में कोई सूचना नहीं आयी थी कि सदानारायण माथे पर पट्टी बाँधे संगीत भवन में आ पहुँचा। उसके आने की कोई सूचना नहीं थी।

''सदा! यह क्या बात है? कहाँ से आ रहे हो?''

''भापा! जरा बैठकर आराम करने दो। सब बताता हूँ। दो दिन की गाड़ी की यात्रा करने से चित्त स्वस्थ नहीं है।''

''ठीक है। स्नानादि से निवृत्त हो लो। पहले अपनी ताई को पाँव लागू कर आओ।''

सदा वहाँ गया तो सरस्वती वहाँ बैठी अपने विषय में परामर्श कर रही थी। वह सदा को इस अस्त–व्यस्त अवस्था में आते देख गम्भीर हो गयी। सदानारायण ने चरण स्पर्श किये तो लेखवती ने पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद दे दिया। उसने पूछा, ''यह पट्टी क्यों बाँधी है?''

''ताई! मार्ग में लड़ पड़ा था और उसने लाठी से सिर फोड़ दिया है। अब ठीक हूँ।''

''अच्छा जाओ स्नान करो, कपड़े बदलो। मैं नाश्ता तैयार करवाती हूँ।''

सरस्वती उठ खड़ी हुई। लेख ने पूछा, ''पर तुम्हारी बात तो समाप्त नहीं हुई। तुम कहाँ जा रही हो?''

''मेरी विचार की बात में एक नया मार्ग उपस्थित हो गया है। अब एक–दो दिन में बात करूँगी।''

लेखवती इसका अर्थ समझने का यत्न करने लगी तो सरस्वती सदा के पीछे–पीछे कमरे से निकल गयी। वह सदा के साथ ही उसके कमरे में जा पहुँची।

''सदा जी! आपके आने का तो कोई समाचार नहीं था?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या तुम को समाचार भेजता?"

"समाचार किसी को भी भेजते, पता तो चल ही जाता है। आपके परीक्षा देने तक का समाचार नहीं मिला था। भापाजी आशा कर रहे थे कि आप आवेंगे।"

"ओह! तो तुम मेरे विषय में बहुत टोह लेती रहती हो?"

"जी!"

"किसलिये?"

"यह मेरा रहस्य है। आपको बता सकती हूँ परन्तु केवल आपको।"

सदानारायण को संदेह होने लगा था कि यह साधारण युवक–युवती की बात है, जिसको यह रहस्य कह रही है। इस कारण उसने कह दिया, "अच्छी बात है। मैं तुम्हारा रहस्य किसी दिन सुनूँगा। आज तो बहुत थका हुआ हूँ। स्नानादि से निपटकर अल्पाहार कर मैं छः घंटे सोना चाहता हँ।"

"मेरी बात मानिए। डाक्टर से पट्टी भी बदलवा लीजिये। बहुत गँदी हो गई है।"

"वह ताई जी से ही करवा लूँगा।"

"बिना दवाई के?"

"दवाई है।"

सरस्वती गई तो सदानारायण कपड़े उतार स्नानागार में चला गया। स्नान कर नये कपड़े पहन वह लेखवती के पास आया और कहने लगा, "ताई! घी में हल्दी जलाकर उसकी पट्टी बाँध दो।"

वह रुई और नई पट्टी लेकर आया था। लेखवती ने देखा, तीन इंच लम्बा घाव था। बहुत गहरा भी था। सदानारायण ने बताया, "भगवान का धन्यवाद है कि खोपड़ी फटी नहीं। डाक्टर विस्मय करते थे कि मैं बच कैसे गया है।"

"क्या हुआ था?"

"कुछ मूर्ख एक धूर्त के कहने पर लाठियाँ चलाने लग पड़े थे और भाग्य से मैं वहाँ खड़ा था।"

लेखवती ने एक कटोरी में घी और हल्दी जलाई, फिर रुई का फाहा उसमें भिगोकर घाव पर बाँध दिया। सदानारायण ने बताया, "आगरा में एक वैद्य ने यह बताया और इसकी पट्टी कर दी। इससे मेरे मुख की सूजन उतर गयी है और पीड़ा कम हो गयी है।"

"तो चोट आगरे में लगी थी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी! दस दिन अस्पताल में रहा हूँ। अस्पताल वालों ने छुट्टी दे दी तो उन वैद्यजी से पट्टी करा लाहौर जाने के स्थान इधर आ गया हूँ।"

"लाहौर क्यों नहीं गये?"

"छोटे भापा को अपने घायल होने का समाचार भी नहीं भेजा। वे व्यर्थ में चिन्ता करते और फिर यहाँ भी न आने देते।"

लेखवती मुस्कराई। उसने बात बदल दी, "जवाहर से मिले हो?"

"नहीं ताई! जरा ठीक हो जाऊँ तो जबलपुर जाऊँगा।"

"हाँ जाना। तुम्हारे बड़े भापा तो मुझे जाने से मना करते हैं। साधना बेचारी बहुत दुःखी है।"

सदानारायण ताई का मुख देखता रह गया। पट्टी बँध गई तो दोनों रसोईघर में चले गये। लेखवती अल्पाहार कर चुकी थी वह सदानारायण को खिलाना चाहती थी। रामरक्खामल्ल वहाँ आ गया। सदानारायण ने पूर्ण वृत्तान्त सुना दिया। अपने मजिस्ट्रेट के सामने बयानों को भी सुना दिया। अन्त में उसने कहा, "छोटे भापा मेरे स्वयंसेवक के रूप में काम करने को पसन्द नहीं करते थे। इस पर भी वे मना नहीं कर सके। यही कारण है कि मैंने अपने घायल होने का समाचार लाहौर नहीं भेजा और अब लाहौर जाने के स्थान बम्बई आ गया हूँ।"

"तो तुमको विश्वास था कि मैं तुम्हारे इस जोखिम के काम को पसन्द करूँगा?"

"मुझ को कुछ ऐसा ही प्रतीत हुआ था।"

"तुमने ठीक समझा था। भगवान का अत्यन्त धन्यवाद है कि तुम बच गये हो। विष्णु क्या समझेगा, कह नहीं सकता। इस पर भी मैं उसको आज तुम्हारे विषय में लिखूँगा। उसको इस घटना की गम्भीरता के विषय में नहीं लिखूँगा। कुछ तो लिखना पड़ेगा।"

सदानारायण ने भोजन समाप्त किया और कहा, "भापा! मैं बहुत थका हुआ हूँ, इससे अब सोना चाहूँगा। मुझको भोजन के लिए उठाया न जाये।"

वह साढ़े दस बजे सोया और साढ़े सात बजे उसकी नींद खुली। कमरे में अँधेरा हो गया था। किसी ने बिजली का स्विच ऑन किया तो सदा की आँख खुल गयी। सामने सरस्वती खड़ी थी। वह बिना देखे चली जाना चाहती थी, परन्तु सदानारायण ने देख लिया तो खड़ी हो बोली, "बहुत सोये हैं आप?"

"हाँ, मेरे शरीर में बेचैनी अनुभव हो रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप को ज्वर हो रहा है।"

"कैसे कहती हो?"

"आपकी आँखें देखकर।"

"वे तो थकावट के कारण भी हो सकती हैं।"

"तो थर्मामीटर लगाकर देखूँ?"

"कहाँ है थर्मामीटर?"

"भापाजी के पास है।"

"तो ले आओ। उठने को तबीयत नहीं कर रही।"

सरस्वती बड़े भापा के कमरे में गयी और पूछने लगी, "भापाजी! थर्मामीटर कहाँ है?"

"क्यों? किसको चाहिये?"

"सदाजी को। वे साढ़े आठ घंटे सो कर उठे हैं और उनकी आँखें चढ़ी हुई हैं।"

"और तुम उसकी डाक्टरी कर रही हो?"

"जी नहीं! मैं 'नर्सिंग' कर रही हूँ।"

"ओह! अच्छा चलो, मैं डाक्टरी करता हूँ।" रामरक्खामल्ल उठा। अलमारी में से उसने थर्मामीटर निकाला और सरस्वती के साथ सदा के कमरे में जा पहुँचा। रामरक्खामल्ल ने थर्मामीटर मुख में लगाया और हाथ से नाड़ी देख ली।

सदानारायण को वातज ज्वर था। रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "घाव पर क्या औषधि लगा रहे हो?"

"घी और हल्दी।"

"यह पर्याप्त नहीं। अच्छा देखो। डाक्टर को बुला पट्टी करवाता हूँ। घाव की सफाई होनी आवश्यक है।"

रामरक्खामल्ल टेलीफोन करने चला गया। सदा ने कहा, "भापा को व्यर्थ में कष्ट हुआ है।"

"व्यर्थ नहीं है सदाजी! भापाजी कह रहे हैं कि घाव गँदा रह गया है, इसी कारण ज्वर हो रहा है।"

सरस्वती की सेवा में रुचि देख सदा पुनः दिल की बात स्मरण कर उसका मुख देखता रह गया। सरस्वती को इससे लज्जा आ गयी और वह बहाना बना कमरे से निकल गयी।

रामरक्खामल्ल कमरे में लौटा तो सरस्वती वहाँ नहीं थी। उसने पूछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया, "कहाँ गयी है?"

"कौन?"

"वही जो तुम्हारी 'नर्सिंग' कर रही है।"

"तो आपने उसको यह काम सौंपा है?"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। इस पर सदानारायण ने पूछ लिया, "इसका विवाह कब होगा भापा!"

"इस दिशा में अभी विचार नहीं किया।"

सदा चुप रहा। वह अपने अनुमान से किसी दूसरे के मन की बात कहना अनुचित समझता था। रामरक्खामल्ल ने भी इस विषय पर कुछ कहना उचित नहीं समझा। उसने लेखवती को बुलाकर सदा की अवस्था बता कह दिया, "डाक्टर आ रहा है। तुम यहाँ बैठो। जब वह आये तो मुझको सूचित करना।"

डाक्टर घाव को धोकर पट्टी कर गया और पीने को एक मिक्स्चर दे गया। रात–भर सदानारायण बेचैन रहा। सरस्वती और लेखवती दोनों बारी–बारी से उसकी देखभाल करती रहीं।

प्रातः ज्वर कम होने लगा था। डाक्टर फिर आया और पट्टी खोल नयी पट्टी कर गया। साथ ही पीने की औषधि दे गया। सायंकाल तक ज्वर उतर गया। इस पर भी दुर्बलता बहुत हो गयी और सदानारायण को चार दिन तक कमरे में बन्द रहना पड़ा।

पाँचवें दिन वह प्रातः प्रार्थना में सम्मिलित हो गया। रामरक्खामल्ल ने प्रार्थना के बाद अल्पाहार लेते समय सदानारायण को सूचना दी कि वह बी. ए. की परीक्षा में प्रान्त में प्रथम रहा है। साथ ही बताया, "विष्णु का पत्र आया है। उन्होंने कहा है कि वे तुमको यहाँ देख निश्चिन्त हैं। तुम्हारी माता ने तुमको आशीर्वाद दिया है। उसने लिखा है कि वह यह नहीं जानती कि कार्य, जो तुम आगरा में कर रहे थे ठीक था अथवा गलत। वह तो प्रसन्न इसलिए है कि तुम ठीक हो। शेष के लिए वह मुझ पर विश्वास रखती है।"

"पर भापा। ये हिन्दू कैसे हैं जो दूसरों को हिन्दू बनने से भी मना करते हैं?"

"सदा! यही तो कारण है कि हिन्दू, उस सब त्याग और तपस्या के होने पर भी, जो हम सात सौ वर्ष के इस्लामी राज्य में करते रहे हैं, स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं कर सके।

"हिन्दू एक राष्ट्र है और उस राष्ट्र के नागरिक वे हैं जो वैदिक धर्म और संस्कृति को मान्यता देते हैं। परन्तु हिन्दुओं में बहुधा ऐसे मूर्ख उत्पन्न होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे हैं जो राष्ट्र की नागरिकता के लिये हिन्दू माता–पिता से उत्पन्न होने को, धर्म और संस्कृति में निष्ठा से भी अधिक महत्त्व देते हैं।

"हिन्दू माँ के पेट से पैदा होना तो इस निष्ठा में कारण होने से ही श्रेष्ठ माना गया था। परन्तु ये लोग हिन्दू माँ के पेट से पैदा होने को तो पकड़ बैठे और धर्म में निष्ठा को गौण मान बैठे हैं।

"यदि हिन्दुओं को स्वतन्त्रता का सुख भोग करना है तो इनको धर्म में निष्ठा को सर्वोपरि मानना होगा और अन्य सब बातें उसके साधन माननी होंगी।"

"मैं उस ब्राह्मण देवता को, जो अपने सजातियों को धोखा देकर अपनी विद्वत्ता की धाक जमाना चाहता था, सुरेन्द्रसिंह से कम हिन्दू मानता हूँ। वह तो कोई राहु था जो देवताओं की पंक्ति में बैठ अमृत पान की अभिलाषा करता था।"

"भापा। मैं सरस्वती के विषय में एक बात बताना चाहता हूँ।"

"अपनी 'नर्स' के विषय में?" रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"जी! कल सायंकाल उसने मुझको बताया है कि वह मुझसे प्रेम करती है और मुझसे विवाह करना चाहती है।"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और तुमने उसको क्या बताया है?"

"मैंने कहा है कि वह बहुत अच्छी लड़की है। उससे विवाह करने वाला कोई सौभाग्यशाली ही होगा। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने उसको बताया है कि मैं कम से कम दो वर्ष तक विवाह नहीं करूँगा। मैं एम.ए. की परीक्षा पास कर ही इस विषय में विचार कर सकूँगा।

"यदि उस समय तक वह मेरे प्रति यही विचार रख सकेगी, तो मैं उससे सम्बन्ध के विषय में विचार करूँगा। इस विचार में बड़े भापा और ताई की सम्मति सबसे अधिक प्रभाव रखेगी।

"तो इस पर उसने क्या कहा?"

"उसका कहना था कि यदि इस समय वचनबद्ध हो सकें तो वह सौ वर्ष तक भी मेरी प्रतीक्षा कर सकती है।

"इस पर मैंने उसको बताया कि इसी कारण तो मैं उसको वचनबद्ध करना नहीं चाहता। इस काल में, यदि उसकी दृष्टि में कोई मुझसे भी अच्छा वर आ जाये तो मैं उसको राय दूँगा कि वह उससे विवाह कर ले। मैं दो वर्ष पूर्व न तो इस विषय पर विचार कर सकता हूँ न ही वचनबद्ध हो सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल समझ गया कि सदानारायण जवाहरलाल से अधिक दृढ़ संकल्पी व्यक्ति है।

उसी दिन सरस्वती ने लेखवती से दिन की बात का क्रम चला दिया जो सदानारायण के आने पर रुक गया था।

मध्याह्न के समय सरस्वती ने लेखवती से कहा, "माताजी! यदि आपके पास अवकाश हो तो मैं उस दिन की बात आगे चलाऊँ, जो सदाजी के आने से रुक गई थी?"

"हाँ! मुझको अवकाश है। तुम कह रही थीं कि संगीत में और उन्नति नहीं हो रही। तुमने नृत्य सीखना आरम्भ किया है। उसमें भी एक सीमा पर जाकर गाड़ी अटक गई है। हाँ—तो आगे क्या कहना चाहती हो?"

"मैं यह कह रही थी कि संगीत भवन पर मेरा बोझा पड़ रहा है और इसकी मुझको लज्जा लग रही है।

"मैं कई मास से यह विचार कर रही थी कि अब आपके यहाँ से विदा लूँ। परन्तु प्रश्न यह था कि किधर जाऊँ। मुझको एक दिशा दिखाई दी है और वह है थियेटर की। मैंने राधा बहन से कहा है। उसका कहना है कि थियेटर में स्थान तो मिल जायेगा। हाँ, वहाँ का वातावरण, मुझको पसन्द होगा अथवा नहीं? यह मैं स्वयं विचार कर लूँ। उसने यह भी कहा है कि मैं भापा जी अथवा आप से परामर्श कर सकती हूँ।

"अब आप बताइये। मैं क्या करूँ?"

"और इस विचार अथवा परामर्श में पाँच दिन की ढील क्यों पड़ गई थी?"

"मैं सदाजी से पिछले चार वर्ष से प्रेम करती हूँ। वे आये तो मैंने विचार किया कि थियेटर की बात करने से पहले यह देख लूँ कि मेरे लिए यह मार्ग अभी खुला हुआ है अथवा नहीं। मैंने उनसे बात की है। वे अभी इस मार्ग के खुलने की आशा नहीं दिलाते।"

लेखवती मुस्कराई और बोली, "तुम विवाह और नौकरी, दोनों को एक ही स्तर की बात समझती हो?"

"माता जी! ये दोनों बातें कई अंशों में भिन्न होते हुए भी पेट भरने में तो समान ही हैं। यही कारण है कि विवाह की सुविधा होने पर नौकरी से बहुत कुछ अधिक पाने की आशा में, नौकरी का विचार छोड़ बैठी थी। अब जीवन का वह व्यापक कार्य न मिल सकने पर ही नौकरी का यह सीमित कार्य करने की ओर ध्यान चला गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती हूँ कि इस विषय में राधा से अधिक सरला तथा रुक्मिणी से बातचीत करने से लाभ होगा। राधा ने तो उस जीवन में उपलब्ध वातावरण की बात कही है। सरला और वर्मा उसमें अन्य उपाय भी बता सकेंगे।"

इस पर बात रामरक्खामल्ल के कर्णगोचर हुई तो वह इस विषय में विचार करने लगा।

: 15 :

सदा का घाव ठीक हुआ तो वह जबलपुर जाने की तैयारी करने लगा। यद्यपि रामरक्खामल्ल इसमें कोई लाभ नहीं समझता था, परन्तु लेखवती के कहने पर कि साधना का ठीक–ठीक वृत्तान्त और आँखोंदेखा हाल सदा लेकर आयेगा तो हमें विचार करने का अवसर मिलेगा। पत्रों में साधना बहुत ही संयत भाषा में बात लिखती है। सम्भव है वह कुछ बातें छिपाकर भी रखती हो। यह भी सम्भव है कि साधना की चिट्ठी–पत्री पर निरीक्षण और नियंत्रण हो।

इन सब युक्तियों को सुन सदानारायण को जाने की स्वीकृति मिल गयी। जवाहरलाल अपनी एम.डी. की उपाधि प्राप्त कर भारत में सन् 1910 में लौटा था और इस समय सन् 1912 था। इन दो वर्षों में साधना डॉ. जवाहरलाल की 'हाउस कीपर' के रूप में काम करती रही थी।

घर से बाहर के लोग साधना का सौन्दर्य तथा शील स्वभाव देख यह समझते थे कि डाक्टर साहब ने एक मिस्ट्रेस रखी हुई है। वह किसी निर्धन की लड़की को भगा लाया है। कुछ लोग यह भी विचार करते थे कि वह कोई निर्धन विधवा है और अपने मुसीबत के दिन काट रही है। साधना का शृंगार रहित रहना और साधारण वस्त्राभूषण पहनना इस बात की पुष्टि करते थे।

जवाहरलाल जैसे रंगीले व्यक्ति के घर में इस प्रकार की निर्धन, सुन्दर और सुशील स्त्री अपने सत पर टिकी रहेगी, कोई विश्वास नहीं करता था। साधना को मिस्ट्रेस मान जवाहरलाल से काम निकालने के लिए साधना की सिफारिश को अधिक महत्ता दी जाने लगी तो साधना के लिए बहुत कठिनाई उत्पन्न हो गई। साधना उनको ऐमिली की ओर भेजती तो वे मानते नहीं थे और कई बार तो उसे उनको डाँटना पड़ता था। इस पर भी घर के नौकरों से यह बात छिपी नहीं थी कि साधना की स्थिति घर के एक साधारण नौकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कुछ भी अधिक नहीं है। जवाहरलाल और ऐमिली भी अपने नव विवाहित जीवन की मस्ती में घर का पूर्ण प्रबन्ध साधना पर छोड़े हुए थे और साधना यथाशक्ति प्रबन्ध को बहुत ही सुघड़ाई से निभा रही थी। इस काल में नौकर भी अपने अफसर के रूप में साधना का मान करते थे। यह अवस्था चलती रही, जब तक ऐमिली के गर्भ नहीं ठहर गया। गर्भ ठहरते ही वह मॉर्निंग सिकनैस से ग्रस्त हो गई। इससे साधना के काम में वृद्धि हो गयी। प्रबन्ध–कार्य के साथ–साथ ऐमिली की परिचारिका का काम भी करना पड़ गया। साधना इससे इन्कार नहीं कर रही थी, परन्तु ऐमिली उसकी त्रुटियों पर उसे डाँटने लगी। एक दिन साधना ने कह दिया, "ऐमिली बहन! मैंने नर्सिंग का काम सीखा नहीं। आप इस काम के लिए किसी अन्य को क्यों नहीं रख लेतीं?"

"तुमको ही ट्रेनिंग के लिए क्यों न भेज दिया जाये?"

"मुझको सीखने में समय लगेगा। तुरन्त काम चलाने के लिए किसी को बुला लो।"

इतना कह उसने काम करना छोड़ दिया। सायंकाल ऐमिली ने पति से शिकायत की तो उसने पूछ लिया, "तुमने उसको कुछ कहा होगा?"

"उसने मेरा तकिया बहुत ऊँचे रख दिया था। मेरे मुख से निकल गया– ईडियट! मेरा विचार था कि वह अँग्रेजी नहीं जानती। जब वह नाराज हुई तो मेरी समझ में आया कि वह समझ गई है। मुझको उसकी नाराजगी की चिन्ता नहीं। आप उसको तीन सौ रुपया महीना देते हैं। इतने में तो आधी दर्जन नर्सें रखी जा सकती हैं।

"दो घण्टे बाद वह मेरे लिए फलों का रस लेकर आयी। गिलास हाथ में पकड़ा हुआ था। गिलास के नीचे प्लेट नहीं थी। मैंने उसको कह दिया, 'गैट आउट।' इस पर उसने कह दिया कि वह नर्सिंग का काम नहीं जानती।"

"अच्छा मैं उसको समझता हूँ। मेरे पास नर्स के लिए पैसे नहीं हैं।"

"एक सौ रुपया उसका कम कर दीजिए। मुझको भी तो दो सौ मिलते हैं। एक सौ रुपये में पार्ट टाइम के लिए एक अच्छी नर्स रखी जा सकती है।"

"वह मानेगी नहीं। वह रोटी अपनी बनाती है, अपने बच्चों का खर्चा अपने पास से देती है। तुम तो सब खर्चा मुझसे ही लेती हो।"

"तो वह भी लेने लगे। उसको कौन मना करता है?"

"तब तो और भी अधिक देना पड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमली चुप रही। जवाहरलाल ने साधना को ड्राइंगरूम में बुलाकर पूछा, "तुम ऐमिली से लड़ पड़ी हो?"

"नहीं। मैं लड़ी नहीं। मैंने तो उस काम को करने से इन्कार कर दिया है, जिसके लिए मैं न तो हूँ और न ही जिसके योग्य हूँ।"

"योग्यता तो उत्पन्न की जा सकती है। यदि सब कार्यों के लिए नौकर ढूँढ़े जाये तो निर्वाह नहीं हो सकता।"

"आपकी बात घर वालों के लिए तो ठीक है, परन्तु घर के नौकरों के लिए यह सिद्धान्त काम नहीं करता।"

"तो तुम तीन सौ रुपया महीना पाने वाली नौकर हो? भला क्या काम करती हो इतने वेतन के योग्य? मैंने तो तुमको घर का एक सदस्य समझ ही रखा हुआ है।"

"तो बता दीजिए घर में मैं क्या हूँ? बहन हूँ, माँ हूँ, लड़की हूँ, क्या हूँ? फिर मैं देखूँगी कि घर में वह होते हुए मुझको क्या काम करना चाहिए और कितना खर्चा लेना चाहिए।"

जवाहरलाल निरुत्तर हो गया। इस पर भी उसने कहा, "मेरे–तुम्हारे कुछ पूर्व के सम्बन्ध थे। उन सम्बन्धों के लिए मैं तुमको अपने वेतन का मुख्य भाग दे देता हूँ। उन्हीं सम्बन्धों के नाते मैं तुमसे यह आशा करता हूँ कि तुम ऐमिली की सेवा कर दो। सेवा ठीक हो, बुरी हो, जैसा बन पड़े कर दो।"

"यदि आप उन सम्बन्धों की बात करते हैं तो बताइये कि क्या उनके नाते मैं आपकी पत्नी का मल–मूत्र भी उठाया करूँगी। हाँ मानवता के नाते तो एक रोगी की सेवा कर सकती हूँ। वेतन के लिये नहीं। ऐसी अवस्था में आपकी रानी को यह समझ लेना चाहिए कि मानवता के नाम पर की गई सेवा में त्रुटि जान–बूझकर नहीं की जाती। इसमें कारण सामर्थ्य की कमी ही समझनी चाहिए और वह क्षम्य होती है।"

"मैं उसको समझा दूँगा। तुम यह मेरी खातिर कर दिया करो।"

यह पहला झगड़ा था और वह मानवता के नाम पर मिट गया। ऐमिली भी समझ गयी कि जितनी सेवा वह स्वेच्छा से करेगी, उससे अधिक की आशा नहीं की जा सकती। ऐमिली ने मन में यह निश्चय कर लिया कि स्वस्थ होने पर वह इस औरत को घर से निकलवा कर ही रहेगी।

जवाहरलाल की एक सौ रुपया तरक्की हो गई और घर का काम चलने लगा। घर में बच्चा हुआ। उसका नाम विन्सैन्ट रख दिया गया। इस समय तक उसे नौकर हुए डेढ़ वर्ष हो चुका था। वह अपने अधिकारों को जान गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और उन अधिकारों से वेतन के अतिरिक्त आय के उपाय भी जान गया था। परिणाम यह हुआ कि रुपये के स्रोत अनेक हो गये और निर्वाह सुचारु रूप से होने लगा।

लड़का होते ही और प्रसव के बाद स्वास्थ्य लाभ करने पर ऐमिली ने साधना को तंग करना आरम्भ कर दिया। उसकी योजना यह थी कि साधना तंग आकर भाग जाये तो वह उसका खर्चा बन्द करा देगी। परिणामस्वरूप तीन सौ रुपये महीने की बचत होने लगेगी।

ऐमिली के दुर्व्यवहार के प्रतिकार में साधना ने अपनी सेवाएँ संकुचित कर दीं। इस पर ऐमिली ने नौकरों के सम्मुख उसको डाँटना आरम्भ कर दिया और नौकरों ने साधना की आज्ञा माननी बन्द कर दी।

इस समय ऐमिली पुनः गर्भवती हो गयी। फिर मानवता के नाते सेवाओं को विस्तार देना पड़ा।

इस समय बिना सूचना के सदानारायण वहाँ आ पहुँचा। जवाहरलाल क्लब में गया हुआ था। साधना अपने कमरे में बैठी भगवत भजन कर रही थी और ऐमिली कोठी की लॉन में बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। विन्सैन्ट समीप एक खटोले में पड़ा खेल रहा था। वह एक वर्ष का हो चुका था।

सदानारायण ताँगे से उतरा और धड़ाधड़ अपना सूटकेस उठाये कोठी में चला आया। विन्सैन्ट के खटोले के पास आया बैठी थी। ऐमिली ने एक युवक को इस प्रकार कोठी में आते देखा तो आया को कहा, ''इस आदमी से जाकर पूछो, किसके यहाँ आया है?''

आया सदानारायरग का मार्ग रोक खड़ी हो गयी, ''आप किसके पास आये हैं?''

''डॉ. जवाहरलाल के पास।''

''क्या काम है?''

''बिना काम के आया हूँ। कहाँ हैं डाक्टर साहब?''

''क्लब गये हैं।''

''और मिसेज जवाहरलाल?'' सदानारायण लेखवती से सुन आया था कि साधना 'हाउस कीपर' के रूप में रहती है। पत्नी तो ऐमिली है।

''वे बैठी हैं।''

''तुम यह मेरा सूटकेस कोठी में रख दो। मैं जरा भाभी को परिचय देता हूँ।''

आया, भाभी का शब्द सुन समझ गयी कि डाक्टर साहब का रिश्ते में भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा, उसने सूटकेस उसके हाथ से ले लिया और माली को बुला सूटकेस कोठी के ड्राइंग–रूम में रखने के लिए कह दिया।

सदानारायण लॉन में ऐमिली के सामने जा खड़ा हुआ और बोला, "गुड ईवनिंग सिस्टर! मैं डाक्टर साहब का छोटा भाई सदानारायण हूँ।"

ऐमिली भाई का शब्द सुन उठ खड़ी हुई। उसने कहा, "मैंने आपको कभी पहले देखा नहीं?"

"वह इसलिए कि आपने अपना विवाह चोरी–चोरी किया था।"

इस समय माली एक बैंत की कुर्सी ले आया। सदा ने देखा कि ऐमिली गर्भवती है। इस कारण उसने कहा, "भाभी! बैठो।" वह माली द्वारा लायी कुर्सी पर बैठ अपना परिचय देने लगा, "जब बम्बई में आपका विवाह हुआ था, तो डाक्टर साहब के एक चाचा और चाची पहुँचे थे। मैं उनका लड़का हूँ।

"तब मैं कॉलिज में पढ़ता था। इस कारण भाभी के दर्शन करने पहले उपस्थित नहीं हो सका। अब कॉलिज में छुट्टियाँ हैं और मैं परीक्षा देकर बी. ए. पास कर चुका हूँ। इससे अवकाश होने पर भाभी के चरणों में अपनी श्रद्धा चढ़ाने चला आया हूँ।"

"क्या नाम है आपका?"

"सदानारायण।"

"कहाँ रहते हैं?"

"लाहौर में।"

"एक बात तो है। आप बातें करने में अपने भाई से अधिक कुशल हैं।"

"हाँ, पर वे मुझसे अधिक पढ़े हैं। कब तक आयेंगे क्लब से?"

"वह तो रात को नौ बजे से पहले नहीं आते।"

"तो भाभी! एक प्याला चाय मँगवा दो। और वे कहाँ हैं?"

"कौन?"

"मेरी दूसरी भाभी और आपकी 'हाउस कीपर'।"

"तो आपको उसकी पदवी का ज्ञान है?"

"हाँ, मैं बम्बई में बड़े भापाजी से मिलकर और सब बात जानकर आया हूँ।"

"वह इस समय अपने पूजा–पाठ में लगी होगी।"

"तो चाय मँगवा दो न। पेट में चूहे कूद रहे हैं। और देखिये, जब आपकी हाउस कीपर फुरसत पा जाये तो उसको भी बुला दें।"

ऐमिली को अनुभव होने लगा था कि यह कोई नई मुसीबत आयी है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी सदानारायण एक सभ्य और चतुर युवक होने से एकदम तिरस्कार के योग्य नहीं था। इससे उसने आया को कहा, "बैरे को चाय और साथ ही कुछ खाने के लिए लाने को कह दो। देखो! हाउस कीपर को कहना कि लाहौर से कोई आये हैं।"

चाय तो नहीं आयी पर साधना आ गयी। वह सदानारायण को लॉन में बैठे देख प्रसन्नता से उछलती हुई सामने आ खड़ी हुई। सदा ने साधना को देखा तो उठकर चरण स्पर्श किये और बोला, "भाभी! कैसी हो? कभी पत्र भी नहीं लिखा।"

साधना ने मुस्कराते हुए कहा, "भैया! भापाजी को लिखती तो हूँ। हाँ तुमको पृथक् नहीं लिखा। सुनाओ माणिक और शान्ति कैसे हैं?"

"बहुत मजे में हैं। माणिक तो पाँचवीं श्रेणी में चला गया है। शान्ति इस वर्ष पास नहीं हो सकी। परीक्षा के दिनों में उसको 'टाइफायड' ज्वर हो गया था।

"भाभी! तुम बैठो न।"

साधना ने ऐमिली की ओर देख कहा, "नहीं सदा! तुम बैठो।"

इस समय बैरा चाय लगाने के लिए तिपाई ले आया। सदा ने कह दिया, "बैरा! एक कुर्सी और ले आओ।"

ऐमिली न नहीं कह सकी। बैरा पहले कुर्सी लाया और फिर चाय लेने चला गया। सदानारायण ने आज्ञा देने के भाव में कहा, "भाभी! बैठो।"

आया इस युवक को हाउस कीपर को भी भाभी कहते सुन विस्मय में खड़ी रह गयी। वह समझ रही थी कि जिसको वे नौकरानी समझे हुए थे, वह परिवार में विशेष स्थिति रखती है। साधना बैठ गयी तो सदा भी बैठ गया। जब बैरा चाय लाया तो उसमें दो प्याले थे। सदा ने देखा, समझा और उससे कहा, "एक प्याला और ले आओ।"

साधना ने कहा, "भैया! तुम पियो। मैं पी चुकी हूँ।"

"भाभी! आज मेरे आने की खुशी में एक बार फिर पी लो। ऐमिली भाभी भी तो पियेंगी।"

बैरा भी देख और सुन आश्चर्यवत विचार करता हुआ प्याला लेने चला गया।

सदानारायण ने तिपाई ऐमिली के सामने रख दी और अपनी कुर्सी खिसकाकर समीप कर ली। साधना को भी कुर्सी समीप ले आने के लिए कह, उसने ट्रे पर से कवर उठा दिया। टोस्ट, मक्खन, बिस्कुट थे। सदा ने टोस्टों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मक्खन लगाना शुरू कर दिया। उसने ऐमिली की ओर देखकर कहा, "छोटी भाभी! मुझको तो भूख लगी है। इस कारण क्षमा करना। मैं यह खाने लगा हूँ।"

ऐमिली ने उचित समझा कि सदानारायण को अँग्रेजी में समझा दे। उसने कहा, "यहाँ सब नौकर साधना को 'हाउस कीपर मात्र' ही मानते हैं। इससे इसकी वास्तविक स्थिति अपने भाई साहब से पूछकर ही घोषित करनी चाहिए।"

"भाभी!" उसने भी अँग्रेजी में ही उत्तर दिया–"साधना। डाक्टर की पत्नी होने से मेरी 'सिस्टर इन–लॉ' (भाभी) है। हमारे यहाँ बड़ी भाभी माँ के समान होती है। इसलिए मैं अपनी माँ का अपमान नहीं सहन कर सकता। तुम भी माँ हो। छोटी माँ और बड़ी माँ परस्पर लड़ें, झगडें अथवा सुलह से रहें। इसमें एक पुत्र कुछ कह नहीं सकता, किन्तु पुत्र के लिए तुम दोनों बराबर माँ का आदर पाओगी।

"देखो भाभी! यदि भैया ने इस स्थिति को गलत कहा तो मैं रात की गाड़ी से ही लौट जाऊँगा।"

अब साधना, जो दोनों की बाते समझ रही थी, परन्तु अँग्रेजी में उत्तर नहीं दे सकती थी, हिन्दुस्तानी में कहने लगी, "सदा! इस घर की शान्ति को भंग न करो।"

"भाभी!" सदा ने कहा, "जिस प्राणी में स्वाभिमान नहीं रहा वह मनुष्य के अधिकारों से वंचित हो जाता है। तनिक साहस पकड़ो। देखो भाभी! मत समझो कि तुम संसार में निस्सहाय हो। छोटे भापा और बड़े भापा के रहते तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी।"

साधना कुर्सी से उठ जाना चाहती थी, परन्तु सदानारायण की डांट से वह विचार–मग्न हो बैठी रह गयी। सदानारायण ने अब दोनों को सम्बोधन कर अँग्रेजी में कहा, "यह डॉ. जवाहरलाल की आत्मिक दुर्बलता है कि वह अपनी पत्नी को नौकरानी बनाकर विख्यात कर रहा है। तुम दोनों औरत हो और तुममें परस्पर सहानुभूति होनी चाहिए।"

"उनकी नौकरी का प्रश्न है।" ऐमिली ने दबी जबान से कहा।

"इस दुनिया में कितने लोग हैं, जो नौकरी से जीवन चलाते हैं। 'मिलियनज और बिलियनज' (कोटि–कोटि) हैं, जो स्वतंत्र रूप में जीविकोपार्जन करते हैं। नौकरी नहीं रहेगी तो भाभी! भैया की योग्यता इतनी है कि वे इससे कहीं अधिक पैदा कर सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने बात समाप्त कर दी। साधना डर रही थी कि जवाहरलाल के आने पर घर में भारी झगड़ा होगा। चाय पी गयी और सदानारायण ने पूछा, "मैं तनिक आराम करना चाहता हूँ, बताइये कहाँ करूँ?"

ऐमिली ने साधना से कह दिया, "इनके लिए अपने बगल वाला कमरा खुलवा दो।"

यह कह कि "ठीक नौ बजे रात का खाना होगा।" वह अपने कमरे में चली गयी। साधना सदानारायण के आराम और ठहरने का प्रबन्ध करने चली गयी। ऐमिली ने अपने कमरे में पहुँच एक कागज पर अँग्रेजी में यह लिखा, "आपका भाई सदानारायण आया है और मूर्खतावश वह हमारे 'हाउस कीपर' से सम्बन्ध में गड़बड़े कर रहा है। आइये और उसको समझाइये।"

यह लिख बैरे के हाथ क्लब में भेज दिया। उसको कह दिया, "यह कागज किसी अन्य को नहीं देना।"

: 16 :

जवाहरलाल को उसकी पत्नी की 'चिट' मिली तो वह परेशानी अनुभव करता हुआ उठा और घर चलने को तैयार हो गया। एक मित्र अफसर ने पूछा भी, "डाक्टर, क्या बात है?"

"पत्नी बीमार है। डाक्टर ने बहाना लगा दिया।

"तो जाओ। ईश्वर उसका भला करे।"

डाक्टर घर पहुँच कर पहले ऐमिली से मिला। उसने आते ही सब बातचीत बता दी। इससे जवाहरलाल को चिन्ता लग गयी। वह समझ नहीं सका कि किस प्रकार इस समस्या को सुलझावे। ऐमिली ने कह दिया, "इस भाई को रात की गाड़ी से ही विदा करो और अगर साधना पूर्ववत रहना चाहे तो रहने दीजिये। नहीं तो उसको भी इसके साथ ही विदा कर दो।"

"बहुत कठिन है। ऐमिली! जाते ही यह खर्चे का दावा कर देगी। और तब बदनामी होगी। सब परिचित मेरी पहली पत्नी से सम्बन्ध के लिए मुझसे घृणा करेंगे। अब भी वे समझते हैं कि वह मेरी मिस्ट्रेस है। मैं इन्कार करता हूँ तो सब मेरे इन्कार पर भी मेरी हँसी उड़ाते हैं।"

"परन्तु अफसर क्या कहेंगे?"

"उनको समझा दूँगा। हिन्दुस्तान में दो पत्नियाँ रखना जुर्म नहीं।"

"जी नहीं यह नहीं होगा। आप उसको पत्नी बनाकर रखेंगे तो मैं यहाँ

 CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से चली जाऊँगी।''

इससे तो जवाहरलाल काँप उठा। उसने कह दिया, "अच्छा देखो, क्या कर सकता हूँ। कुछ काल के लिए वह बम्बई चली जाये तो कैसा रहे?''

''इस बार मुझको पहले से कुछ अधिक कष्ट है। तब मेरे लिए नर्स का प्रबन्ध करना पड़ेगा।''

''हाँ, यदि वह मान गयी तो, कर दूँगा।''

ऐमिली को यह प्रबन्ध ठीक प्रतीत हुआ। उसने विचार किया कि इस औरत से छुटकारा पाने का यह आरम्भ हो सकेगा। जवाहरलाल को साधना पहले से अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी थी। वह पाँच वर्ष से संयम का जीवन व्यतीत कर रही थी। साथ ही उसके इस अपमानयुक्त जीवन में भी संतोष ने और ऐमिली की सेवा ने उसके मन पर भारी प्रभाव उत्पन्न किया था।

वह अनिश्चित मन सदानारायण को मिलने चल पड़ा। ऐमिली चाहती थी कि दोनों भाइयों में वह न बोले। उसने समझा—बुझा दिया था और वह अपने अनुकूल परिणामों की आशा कर रही थी।

सदानारायण सो रहा था। जवाहरलाल ने उसे कमरे के बाहर से खर्राटे भरते देखा तो साधना के कमरे के बाहर जा खड़ा हुआ। साधना अपने पति से कभी भी अपने कमरे में एकान्त में नहीं मिली थी। वह सम्बन्ध बनने से नहीं डरती थी। वह डरती थी कि नौकरों की दृष्टि में एक रखैल समझी जाने से। इस कारण वह, जवाहरलाल के कमरे के बाहर आते ही, उठकर बाहर निकल आयी।

जवाहरलाल ने पूछा, "यह कब आया है?

''आपके क्लब जाने के पश्चात् आया था।''

''अच्छा! इधर आओ।'' वह उसको लेकर ड्राइंग—रूम में चला गया। ऐमिली भी वहाँ आ गयी। जवाहरलाल ने कहा, "साधना ! इसने तो आते ही तुम्हारी वास्तविक स्थिति प्रकट करनी आरम्भ कर दी है।''

"जी! मैंने मना किया था। ऐमिली बहन ने भी उसको समझाया था, परन्तु वह अपनी ही बात कहता गया।''

''क्या कह रहा था?''

''उसने कहा था कि पत्नी को नौकर मानना तो महापाप होता है।''

''पाप क्या होता है?''

''यह आप उससे पूछ लीजिए। कहिये तो उसको बुला लाऊँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"वह सो रहा है न?"

"रात को सो लेगा। तनिक आप समझा दीजिये, तो ठीक रहेगा।"

"तुम क्या चाहती हो?"

"मैं तो मन से आपकी पत्नी ही हूँ। यदि आप पत्नी मान रखेंगे तो मुझको प्रसन्नता ही होगी। नहीं मानेंगे तो क्या करूँगी? जिस प्रकार रखेंगे, रहूँगी।"

"अच्छा उसको बुलाओ।"

साधना गयी और सदानारायण को ले आई। सदानारायण ने चरण स्पर्श किये तो जवाहर ने उठकर उसको गले लगा लिया।

"भैया! तुम आये, ऐसी सुन्दर नयी भाभी लाये और हमको बुलाया भी नहीं?"

"क्या करते बुलाने पर?"

"भाभी से हँसी–ठट्ठा करते और आनन्द लूटते।"

"हँसी–ठट्ठे के लिए एक दे जो रक्खी थी?"

"पर जवाहर भैया! तुमने उसको नौकरानी विख्यात कर रखा है? यह तो ठीक नहीं हुआ। अब तुम्हारी नौकरानी से हँसी–मजाक करूँ तो बदमाश कहाऊँगा। नहीं भैया! यह नहीं होगा और देखो मैंने सब नौकरों के सामने बड़ी भाभी के चरण स्पर्श किये हैं। इनको आदर से कुर्सी पर बैठाया है और इनको भाभी घोषित किया है। दोनों भाभियों के साथ बैठ कर चाय पी है।

"इस पर भी वह मजा नहीं आया जो दो भाभियों के बीच बैठे हुए देवर को आना चाहिए। बड़ी भाभी तो तुम्हारे कोप से भयभीत रहीं और छोटी भाभी को अपनी पदवी की जड़ें हिलती दिखाई दीं। दोनों में, पूर्ण यत्न करने पर भी, मैं वह प्रसन्नता और स्नेह उत्पन्न नहीं कर सका जिसकी आशा लगाए हुए था।"

"तो फिर?"

"फिर क्या? आज रात ही बड़ी भाभी और छोटी भाभी का कमरा एक हो जाये और दो भाभियों के बीच पलंग लगाकर भैया विराजमान हों तो दोनों के हृदय में मानवता स्पन्दन करने लगेगी। फिर देवर की भी सुनवाई होगी।"

"और अगर ऐसा न करूँ तो?"

"तो क्या, मैं जब तक यहाँ रहूँगा, मैं तो दोनों को बराबर मानूँगा। दोनों का समान आदर करूँगा और जो कोई पूछेगा सत्य–सत्य बात बता दूँगा। भैया! यह हमारे कुल की रीति नहीं कि पत्नी को नौकरानी कहकर प्रकट किया जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, तुम मेरे मेहमान बन कर आये हो।"

"नहीं भैया! मैं तुम्हारा छोटा भाई बनकर आया हूँ। मैं तुम्हारे घर में मेहमान नहीं। हम दोनों किसी अन्य के घर में मेहमान हैं। जिनके आप पुत्र हैं वही भापा मेरे भी पिता है।"

"यह तुमको किसने सिखाकर भेजा है?"

"तो क्या तुम मुझको अब भी बालक मात्र मानते हो। भैया! मैंने बी.ए. की परीक्षा पास कर ली है। मैं प्रान्त में सर्वप्रथम रहा हूँ।"

"ओह! तो तुम झगड़ा करने आये हो?"

"इसमें झगडा क्या है? आपने साधना भाभी से विवाह किया है। इसको छिपा नहीं सकोगे।"

"इससे तो मेरी नौकरी चली जायेगी।"

"यह तो भारी प्रसन्नता का विषय होगा। भैया! तुम प्राइवेट प्रैक्टिस करोगे तो इस वेतन से कहीं अधिक कमा लोगे।"

"पर मान–प्रतिष्ठा तो ऐसी नहीं होगी?"

"क्या मान प्रतिष्ठा है यहाँ? मैं सायं ताँगे में आया तो ताँगे वाला आपको नहीं जानता था। आपके साथ की कोठी वाले से पूछा कि डाक्टर जवाहरलाल की कोठी कहाँ है? वह बेचारा भी नहीं जानता था। भैया! तुमको ढूँढ़ने में इतना कष्ट करना पड़ा है जितना भूसे के ढेर में सूई ढूँढ़ने के लिये करना पड़ता है।

"और भैया! तुम लाहौर में चले जाओ और किसी से भी पूछो डाक्टर बेलीराम का घर किधर है, तो लोग साथ चलकर मकान दिखाने के लिये तैयार हो जाते हैं। प्रतिष्ठा वह है या यह है? डॉ. बेलीराम एल.एम.एस. और डाक्टर जवाहरलाल एम.बी.बी.एस. एम.डी. लन्दन, और इस उजाड़ नगरी में भी कोई जानता नहीं कि कहाँ रहता है?"

"नौकरी से डिसमिस होने पर बदनामी जो होगी?"

"जितनी नेकनामी है उतनी ही तो बदनामी होगी न? नेकनामी है नहीं और बदनामी भी नहीं होगी।

"देखो भैया! तुम निर्भय होकर दोनों पत्नियों को लेकर रहो। कोई कुछ कहे तो कह दो दोनों अपनी हैं। किसी की चुरा कर नहीं लाये। इस पर भी डिसमिस करें तो चुपचाप बम्बई आ जाओ। देखो भैया! एक साधारण सा डाक्टर मुझको पट्टी करने आया तो दस रुपये फीस और पाँच रुपये की दवाई दे गया। दूसरे दिन आया तो पट्टी करने के लिए एक कम्पाउण्डर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी साथ ले आया। तुरन्त फीस पन्द्रह रुपये हो गई। पाँच दिन में सौ रुपये का बिल बन गया।

"मैं सत्य कहता हूँ कि पाँच–दस साल में लाखोंपति बन जाओगे।"

"मैं तो यह सब कुछ करने को तैयार हूँ। परन्तु दोनों औरतें मानें तब न?"

"क्यों बड़ी भाभी!" सदा से पूछ लिया, "तुम सह–पत्नी बनकर रहना चाहती हो अथवा नौकरानी?"

साधना मुस्कराती हुई चुप रही। इसको स्वीकृति मान सदा ने ऐमिली से पूछा, "क्यों छोटी भाभी! तुम क्या चाहती हो?"

ऐमिली ने दृढ़ मुद्रा बनाकर कहा, "हमारे देश और समाज में यह रिवाज नहीं है।"

"पर तुम अपने देश और समाज में रहती हो क्या?"

"हमारे रक्त में नहीं कि हम सह–पत्नी बन कर रहें।"

"यदि तुम बड़ी भाभी की जगह पर होतीं तो क्या करतीं?"

"जिसमें तुम्हारी बड़ी भाभी रह रही है मैं तो ऐसी जलालत की स्थिति में न रहती। मैं तुरन्त इनको छोड़कर चली जाती।"

सदानारायण अवाक् बैठा रह गया। उसे चुप देख जवाहरलाल ने पूछा, "तो तुम क्या चाहती हो?"

"या मैं रहूँगी या यह रहेगी। हाँ, यह हाउस कीपर के रूप में रह सकती है।"

"बहुत निर्दयी हो भाभी!"

"शटअप। मैं ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं रखती।"

"तो ठीक है भैया! मैं भाभी को माँ मानता हूँ। यदि बड़ी भाभी का यहाँ उचित मान नहीं होता तो मैं यहाँ नहीं रह सकता। मैं चला जाऊँगा।"

"और साधना! तुम?"

"मैं समझती हूँ कि इस शट–अप के बाद तो मेरा यहाँ रहना उचित नहीं। मैं तो इस कारण आयी थी कि आप को अपनी पत्नी को नौकरानी विख्यात करते लज्जा लगेगी। दो वर्ष में एक दिन भी तो आप को लज्जा अनुभव नहीं हुई। इससे मैं सदा भैया का अनुकरण करूँगी।"

"तो जाओ।" ऐमिली ने कह दिया।

"मैं तुमसे बात नहीं कर रही। मैं अपने पति को बता रही हूँ। मेरा पत्नी के रूप में मान नहीं हो सकता तो मैं यहाँ नहीं रह सकती।"

जवाहरलाल चुप था। वह सदानारायण की दो बातों से अति प्रभावित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। एक तो यह कि नौकरी में जो कुछ मिलता है उतना तो मान–प्रतिष्ठा बनाने में व्यय हो जाता है। वह यह देख रहा था कि उसका तब से ही कुछ बचने लगा है जब से वह ऊपर की आय करने लगा है और उस आय करने से वह सदा चिन्ता में ग्रस्त रहता है। पकड़े जाने का भय बना रहता है। इस भय की निवृत्ति के लिए उसको अपने अधिकारियों की खुशामद करनी पड़ती है। ऐसी नौकरी से क्या लाभ? सदानारायण की दूसरी बात यह थी कि यश और प्रतिष्ठा में अन्तर था। प्रतिष्ठा थी सरकारी महकमे में। महकमे से बाहर उसको कोई जानता नहीं। यश मिलता है सर्व–साधारण से सम्पर्क रखने में। यह नौकरी में नहीं हो सकता।

वह मन में विचार करता था कि इसके लिए वह अपनी पत्नी को नौकरानी बनाकर रखे हुए था। कितनी मूर्खता कर रहा था। इसी कारण वह अब नौकरी और मान–प्रतिष्ठा का विचार छोड़ कर साधना की समस्या पर विचार कर रहा था। इस प्रकार विचार करने पर ऐमिली एक बाधा बन रही थी।

जब सदा और साधना दोनों ने जाने की बात कही तो वह भी अनुभव करने लगा था कि ऐमिली का व्यवहार अनुचित है। उसने अब बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "ऐमिली! मैं एक बात तुमसे पूछना चाहता हूँ। क्या मैंने तुमसे यह झूठ बोला था कि मैं कुँआरा हूँ? क्या विलायत से चलने के पहले तुम यह नहीं जानती थीं कि मेरी एक पत्नी हिन्दुस्तान में है? क्या हमारा विवाह वहाँ इसलिए नहीं हो सका था कि मैं झूठ बोलना नहीं चाहता था कि मेरी पहले कोई पत्नी नहीं? क्या तुमने हिन्दुस्तान में आकर हिन्दू रीति से विवाह इस कारण स्वीकार नहीं किया था कि हिन्दू रीति से एक से अधिक पत्नियाँ रखी जा सकती हैं? यदि ये सब बातें ठीक हैं तो फिर अब सह–पत्नी बन कर रहने से इन्कार कैसे कर सकती हो?"

"परन्तु आपने यह कहा था या नहीं कि आप मुझसे अपनी पहली पत्नी से अधिक प्यार करते हैं? आप को मैं इससे अधिक सुन्दर लगती हूँ और पसन्द हूँ?"

"हाँ कहा था, और ऐसा अब भी कहता हूँ और स्वीकार करता हूँ। परन्तु इसका यह अर्थ कहाँ से निकल आया कि तुम दोनों मेरी पत्नी नहीं हो?"

"यदि यह अर्थ नहीं था तो इसको 'हाउस कीपर' क्यों बनाया था?"

"इस कारण बनाया था कि मुझको भय था कि सरकारी नौकरी में दो पत्नियों वाले अफसर पसन्द नहीं किये जाते।"

"तो अब वे पसन्द होने लगे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह मेरे मन का भ्रम था। अब मुझको पता चला है कि यह भ्रम व्यर्थ बना। मैंने अपने प्रार्थना पत्र में यह लिखकर नहीं दिया था कि मेरी एक ही पत्नी है। दोनों विवाह मेरी नियुक्ति से पहले हो चुके थे।

"इस पर भी यहाँ हिन्दुस्तान में आकर मुझको यह पता चला है कि मैं नौकरी से अधिक प्राइवेट प्रैक्टिस से पैदा कर सकता हूँ। इससे नौकरी से निकाले जाने का भी भय नहीं रहा।

"परन्तु मैं पूछता हूँ इसमें तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? क्या तुम मेरी पत्नी तब तक ही रहोगी जब तक मैं सरकारी नौकर हूँ?"

ऐमिली निरुत्तर हो गई। इस पर जवाहर ने सदानारायण को कहा, "सदा! जल्दी न करो। मुझको पूर्ण परिस्थिति पर विचार करने दो। मैं दो-तीन दिन में तुमको अपने विचार बताऊँगा।"

"देखो भैया! तुम विचार करो। विचार करने की बात यह नहीं कि बड़ी भाभी पत्नी है अथवा 'हाउस कीपर' है। यह तो निश्चित बात है कि वह पत्नी है। इसको तो विधाता भी मिटा नहीं सकता। इस कारण विचारणीय बात यह है कि जो कुछ झूठ का वातावरण यहाँ बना रखा है उसको अब किस प्रकार बदलोगे?

"मैं छोटी भाभी से एक बात और कहना चाहता हूँ कि पत्नी को पति से कितना प्रणय सुख मिलता है, यह इस पर निर्भर नहीं कि कोई सहपत्नी है अथवा नहीं। प्रश्न तो यह है कि वह अपने पति से कितना प्रेममय व्यवहार रखती है? दोनों पत्नियों में पति का सुख प्राप्ति में होड़ लग जायेगी और जो जवाहर भैया को अधिक प्रसन्न रखेगी वह अधिक प्रिय होगी।"

ऐमिली उठकर अपने शयनागार में चली गयी। वास्तव में वह अपने व्यवहार को युक्ति से सिद्ध नहीं कर सकी थी।

रात के भोजन के समय साधना ऐमिली को बुलाने गयी। उसने द्वार के समीप खड़े होकर कहा, "मैडम! डिनर तैयार है।" ऐमिली को सम्बोधन करने का यह उसका नित्य का ढंग था।

ऐमिली समझी कि पुनः विचार करने पर डाक्टर से कोई नयी बात निश्चय कर ली है। इससे वह उठी और प्रश्न भरी दृष्टि से साधना की ओर देखने लगी। साधना ने कहा, "मैं आपके डाक्टरजी पर प्राप्त अधिकारों पर डाका नहीं डालूँगी। यह तो केवल बाहर वालों की दृष्टि में ही मेरी स्थिति बदलेगी?"

"सत्य?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी।"

"मैं मुख्य पत्नी रहूँगी?"

"बिल्कुल और मैं आपकी वैसी ही सेविका रहूँगी जैसी पहले थी। हमारे निजी सम्बन्धों में अन्तर नहीं पड़ेगा।"

अभी उसका पूर्ण समाधान नहीं हुआ था। इस पर भी उसने कहा, "देखूँगी कि तुम कैसे अपने वचन को निभाती हो।"

"आइये! भोजन करिए और शेष बातें पीछे निश्चय करेंगे।"

रात पहली बार साधना को जवाहरलाल के शयनागार में स्थान मिला। इस पर भी पति और पत्नियाँ नवीन परिस्थिति में अपने व्यवहार का निश्चय करने के लिए आयी रात तक जागते रहे।

सदानारायरण को बैरा सोने से पहले दूध देने आया तो हाथ जोड़ पूछने लगा, "बाबू साहब! ये डाक्टर साहब की पत्नी हैं क्या?"

"हाँ। क्यों पूछते हो!"

"दो वर्ष से अधिक काल तक यह गोरी औरत उस बेचारी पर राज्य करती रही है।"

"देखो बैरा! तुमको अपने मालिकों की बातों पर टीका–टिप्पणी नहीं करनी चाहिये। इन्सान भूल करता है। परन्तु वह अपनी भूल को समझते ही सुधार भी लेता है। वह पशु ही है जिसको अपनी मूल का ज्ञान नहीं होता।

"देखो, सब नौकरों से कह दो कि साधनादेवी का मान वैसा ही होना चाहिए जैसे मेम साहब का होता है।"

: 17 :

ऐमिली रात के जागरण के कारण और मानसिक द्विविधा के कारण नित्य से अधिक कष्ट में थी और साधना उसकी देखभाल कर रही थी। डाक्टर उठते ही स्नानादि कर अस्पताल चला गया था। ऐमिली पुनः 'मॉर्निंग सिकनैस' में फँस गई थी। साधना उसकी औषधि और उपचार करने लगी।

नौकर परस्पर काना–फूसी कर रहे थे और सब सदानारायण की ओर आदर की दृष्टि से देखते थे। मध्याह्न के भोजन के लिए जवाहरलाल आया तो ऐमिली अभी भी शैया पर लेटी थी। इस कारण भोजन उसके शयनागार में ही मँगवा लिया गया। अब साधना का खाना भी वहाँ आया। इससे यह बात नौकरों में स्पष्ट हो गई कि साधना को मालकिन की पदवी पर आसीन कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है।

जवाहरलाल ने बताया, "सदानारायण! एक बहुत भारी कठिनाई में पड़ गया हूँ। मैं नहीं जानता कि किस प्रकार साधना के 'स्टेटस' (पदवी) को मित्रों में घोषित किया जाय?"

"तो मैं बताऊँ?"

"हाँ बताओ।"

"आज सायंकाल आप अपने घनिष्ट मित्रों को चाय–पार्टी पर बुलाइए। और उसमें घोषित कर दीजिये कि साधना से आपका विवाह आपके विलायत जाने से पहले हो चुका था। इससे आपके दो बच्चे भी हैं। किसी कारण से आप इससे रुष्ट थे। इसी कारण दो वर्ष तक आपने इसको उचित सम्मान नहीं दिया। अब इनके प्रायश्चित की अवधि समाप्त हो गई है और आप अब इनको उचित पदवी पर स्थापित कर रहे हैं। इसी उपलक्ष्य में आज वह चाय–पार्टी दी जा रही है।"

"और यदि वे पूछें कि इसने कौन–सा अपराध किया था, जिसका यह दो वर्ष से प्रायश्चित कर रही थी, तो क्या कहूँ?"

"यह बात इनके माता–पिता तथा आपके माता–पिता से सम्बन्ध रखती है। अतः आप इस विषय में कहने का अधिकार नहीं रखते। आपका छोटा भाई आया है और उसने आपको बताया है कि दोनों परिवारों का परस्पर मनमुटाव मिट गया है। इससे आपको अपनी पहली पत्नी को पुनः अपने आदर का पात्र बनाते हुए बहुत प्रसन्नता होती है।

"मैं समझता हूँ कि इसके बाद किसी को कुछ कहने का स्थान नहीं होगा। हाँ, आपके मित्र छोटी भाभी से पूछेंगे कि वह इस परिवर्तन को कैसा अनुभव करती है। मेरे विचार में उसको कह देना चाहिए कि हमको इससे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

"बहुत झूठी कहानी बनाना जानते हो, सदा!"

"इसमें कुछ भी झूठ नहीं। केवल समझ का फेर है।"

"किसकी समझ का फेर है?"

"बाहरी लोगों की, जो हमारे अन्तरंग विषयों में झाँकने का यत्न करने वाले हैं।"

जवाहरलाल गम्भीर हो गया। उसने बहुत विचार किया और अन्त में उसको भी यही उपाय ठीक प्रतीत हुआ। उसने ऐमिली की ओर देख कर पूछा, "तुम क्या कहती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि जन–साधारण में इसे पत्नी पद पर आसीन होना है तो घोषणा करनी ही पड़ेगी और मैं समझती हूँ कि सदा की योजना ही ठीक है। यह घोषणा आज ही होनी चाहिये।"

जवाहरलाल ने मिलिटरी कैन्टीन को टेलीफोन कर बीस व्यक्तियों के चाय का प्रबन्ध करने के लिए कह दिया। फिर उसने बीस अफसरों और मित्रों को चाय पर आमन्त्रित कर लिया। निमन्त्रण मिलने पर सब पूछते थे, "आज क्या है डाक्टर!"

जवाहरलाल कह देता, "मेरा छोटा भाई लाहौर से आया है। उसको सबसे परिचित करने के लिए यह आयोजन किया गया है।"

जब सब प्रबन्ध हो गया तो जवाहरलाल और सदा में बातचीत होने लगी। जवाहरलाल ने कहा, "मालूम होता है यह सब योजना बड़े भापा की है?"

सदा हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "वह तो मेरे यहाँ आने के भी पक्ष में नहीं थे। ताईजी ने मुझको बड़ी भाभी की अवस्था जानने के लिए भेजा है। परन्तु वे बेचारी योजनाएँ बनाना नहीं जानतीं। उन्होंने तो अपना पूर्ण जीवन ईश्वरार्पण कर रखा है।

"उनको सदा यह दुःख रहता था कि उनका बेटा जवाहरलाल पतित हो गया है। बड़े भापा भी उनको कहते रहते थे कि जवाहर उनका बेटा है, वह जाने और उसकी माँ जाने। भैया! जब ताई को यह सब समाचार मिलेगा तो उनके हृदय से कोटि–कोटि आशीर्वाद निकलेंगे।"

"तो तुम आशीर्वाद में विश्वास रखते हो?"

"इसमें अविश्वास का स्थान ही कहाँ है। जब बड़े आशीर्वाद देते हैं तो जीवन सफल होता ही है।"

"बहुत बातें सीख गए हो सदा! क्या विषय लिये हुए थे तुमने बी.ए. की परीक्षा में?"

"इतिहास और संस्कृत।"

"क्या लाभ होगा इनके पढ़ने से?"

"संस्कृत साहित्य पढ़ने से तो मानव–मन का ज्ञान प्राप्त होता है। उसी ज्ञान के आधार पर ही मैं भैया और भाभी में सुलह करवा सका हूँ।"

"ओह! तब तो सत्य ही तुम बहुत योग्य हो गए हो, परन्तु इस ज्ञान से आर्थिक लाभ क्या होगा?"

"कभी कोई अवसर आने दो तो बताऊँगा। और इतिहास पढ़ने से तो भूत के आधार पर भविष्य का ज्ञान प्राप्त होने लगा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु दुनिया तो बदल रही है। कभी 'विकासवाद' के विषय में सुना है?"

"हाँ, सुना तो है।"

"जो मानव–मन आज से दस हजार वर्ष पहले था, वह आज नहीं है। इसमें उस काल का इतिहास आज कैसे सहायता कर सकता है?"

"देखो भैया! विकासवाद तो एक महान् गल्प है। हम इसको न तो वैज्ञानिक मानते हैं और न ही इसमें कोई प्रमाण है। डारविन ने इस संसार के लोगों पर एक बहुत बड़ी छलना खेली है। उसका परिणाम ही है कि मानव–समाज की दृष्टि से सत्य लोप होकर असत्य ही सत्य प्रतीत होने लगा है।

"यह तो तुम वैज्ञानिक जब किसी दिन किसी बन्दर को मनुष्य बना कर दिखाओ, तब उस दिन इसके सिद्धान्त के वैज्ञानिक होने पर विचार किया जा सकेगा। हाँ मानव–मन के विषय में तो कह सकता हूँ कि सृष्टि के आदि काल से लेकर आज तक इसमें रंच–मात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ। इतिहास यही बताता है।"

"तो ये मशीनें और रेलगाड़ियाँ, बड़े–बड़े जहाज और उड़न–खटोले, मन के विकास को प्रकट नहीं करते?"

"नहीं, ये मन के विकास के साथ सम्बन्ध नहीं रखते। इन आविष्कारों का बुद्धि से सम्बन्ध है। बुद्धि वह यंत्र है जिसको अंग्रेजी में 'ब्रेन' कहते हैं। यह शरीर के हाथ, पाँव इत्यादि अंगों की भाँति ही एक अंग है। जैसे हाथ–पाँव को कोई भी मनुष्य व्यायाम से अधिकाधिक सबल कर सकता है, इसी प्रकार बुद्धि को भी व्यायाम कराने से सुदृढ़ और दुर्बल किया जा सकता है।

"बुद्धि का विकासवाद के साथ सम्बन्ध नहीं, इसका प्रयोग और अभ्यास के साथ सम्बन्ध है। एक ही जन्म में शिक्षा और अभ्यास से बुद्धि विकसित हो सकती है अथवा उसका ह्रास हो सकता है।

"विकास अर्थात् वे परिवर्तन जो मानव–जाति में पीढ़ी के अनन्तर पीढ़ी तक चलते हैं, वे कहीं दिखाई नहीं देते। मानव–मन के विकार– काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार–जैसे मनुष्य में सृष्टि के आदि काल में थे, वैसे आज भी हैं।

"प्राणियों में किसी प्रकार का भी अन्तर होता हुआ दिखाई नहीं देता।"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि इन्सान वैसे–का–वैसा ही बुद्धू है जैसा आज से पाँच सहस्र वर्ष पूर्व था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसमें कुछ घटियापन ही आया है। उन्नति तो हुई नहीं। देखिये चोर, बलात्कार करने वाले, क्रोध से सर्वनाश करने वाले अथवा लोभ में संसार को बेच देने वाले तो वैसे–के–वैसे ही हैं। तब ये बैलगाड़ियों पर यात्रा करते थे, अब रेलगाड़ी में जाते हैं। परन्तु चोर, डाकू, कामी तो वैसे–के–वैसे ही हैं।"

"भैया! नैपोलियन और चार्ल्ज तो आदि काल में भी थे। उस समय उनके नाम हरिण्याक्ष और रावण थे, कंस और दुःशासन थे।

"इतिहास तो मनुष्य के इन मानव–विकारों और उनको परास्त करने की कहानी है। यह बार–बार उसी रूप में चलती है, जिसमें सदा चलती आई है। इस कारण इतिहास महान् विद्या है। इसको भली प्रकार समझ कर मनुष्य सुख और शान्ति प्राप्त कर सकता है।"

जवाहरलाल समझ रहा था कि युक्ति करने में सदानारायण उसके आगे निकल गया है। वह समझ रहा था कि जिस बात को वह दो वर्ष में सुलझा नहीं सका था उसको उसने कुछ क्षणों में ही सुलझा दिया था।

उस सायंकाल चाय–पार्टी हुई और जवाहरलाल के मित्रों ने जब उसकी 'हाउस कीपर' को उसकी पत्नी ऐमिली के साथ बैठे देखा तो वे परस्पर काना–फूँसी करने लगे। सदानारायण जवाहरलाल के साथ खड़ा था और जवाहरलाल उसका परिचय करा रहा था, "यह मेरा छोटा भाई सदानारायण है। इसने इस वर्ष बी.ए. की परीक्षा दी है और पंजाब में सबसे अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ है।"

इस प्रकार लॉन में आने वाले मित्रों का स्वागत और सदानारायण का परिचय हो रहा था। ऐमिली रुग्ण होने के कारण एक कुर्सी पर बैठी थी। कुछ अफसरों की पत्नियाँ भी आ रही थीं। वे ऐमिली के समीप आकर बैठ जाती थीं। साधना को उसके पास बैठी देख, उनके मन में प्रथम विचार यही आता था कि ऐमिली रुग्ण है और इसी कारण उसकी 'हाउस कीपर' उसके समीप बैठी है। इस पर भी एक बात विशेष थी कि वह नित्य से अधिक अच्छे वस्त्र और आभूषण पहने हुए थी। यह कुछ विस्मय का कारण अवश्य था।

जब चाय पर बैठने का समय आया तो जवाहरलाल ऐमिली और साधना के बीच में मुख्य टेबल पर जा बैठा। इससे मित्र लोग और आई हुई स्त्रियाँ यही समझी थीं कि जवाहरलाल ने साधना को अपनी मिस्ट्रैस स्वीकार कर लिया है।

सदानारायण से बातचीत करते–करते एक पंजाबी अफसर जो लैफ्टिनैन्ट था, उसे एक मेज पर ले गया। वह जिला होशियारपुर का रहने वाला राजपूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और सामयिक इतिहास में बहुत रुचि लेता था। उसने उससे पूछ लिया, "भारत सम्राट जार्ज पंचम के भारत में आने से साधारण जनता तो बहुत प्रसन्न प्रतीत होती है?"

"हाँ, दिल्ली में एक बड़ा मेला लगा था। उस मेले में देश–भर के राजा–महाराजा, अफसर, रईस एकत्रित हुए थे। वे भाँति–भाँति के वस्त्राभूषण पहन रंग–बिरंगे पहरावों में दिल्ली के बाजारों में घूमते थे और लाखों की संख्या में लोग इनको देख–देख प्रसन्न हो रहे थे।"

"बंगाल विभाजन को रद्द करने से तो जनता बहुत सन्तोष अनुभव करती है?"

"हाँ, वह इसलिए नहीं कि इससे सरकार की नीति में परिवर्तन दिखाई दिया है। प्रत्युत इस कारण कि लोग समझ गए हैं कि हठ करने से विदेशी सरकार भी दब सकती है। बंगाल के विभाजन को बनाए रखना यहाँ के अंग्रेजी अफसर अपने मान–अपमान की बात मान बैठे थे और लोग समझते हैं कि सम्राट ने उनका मान–मर्दन किया है।"

"परन्तु वह क्या नीति थी, जिसके लिए यह विभाजन किया गया था?"

"नीति थी हिन्दू–मुसलमान में विग्रह उत्पन्न करना। लार्ड कर्जन का विचार था कि इससे बंगाल के मुसलमान हिन्दुओं के विरोधी हो जायेंगे। वे हुए भी हैं, परन्तु सरकार की समझ में यह आया कि मुसलमानों को प्रसन्न करते–करते वे हिन्दुओं में संगठन सुदृढ़ करने में सहायक हो गए हैं। वे ऐसा नहीं चाहते थे।

"वे चाहते हैं कि हिन्दू जो इस देश में बहुसंख्या में हैं, वे दो अथवा कई टुकड़ों में बँटे रहें और उन सबका विरोध करने वाले मुसलमान संगठित हो जायें। इससे हिन्दू दुर्बल रहेंगे और जो देश में अपना राज्य स्थापित करने में समर्थ हैं, वे राज्य स्थापित नहीं कर सकेंगे।"

"परन्तु कांग्रेस ने तो सम्राट के धन्यवाद का प्रस्ताव पास किया है?"

"हाँ; केवल प्रस्ताव ही पास नहीं किया, प्रत्युत एक महान् बंगाली कवि ने सम्राट की प्रशंसा में एक सुन्दर गीत बना कांग्रेस में बैठकर गाया भी है।"

"क्या गीत था?"

"जन गण मन अधिनायक जय है भारत भाग्य विधाता!"

"ओह!"

इस समय चाय आ गई थी। ये दोनों भी मिठाई इत्यादि खाने लगे थे। खाते–खाते लैफ्टिनैन्ट सूरजसिंह की दृष्टि मुख्य टेबल पर गई तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायरण से पूछ लिया, ''आज डाक्टर ने अपनी हाउस–कीपर को अपने साथ स्थान क्यों दिया है?''

''इसलिए कि यह उसका उचित स्थान ही था। वह कई वर्षों से इस स्थान से वंचित थी। आज उसका अपना स्थान मिल गया है। वह डाक्टर जी की विवाहिता पत्नी है।''

''कब हुआ था विवाह?''

''जब डाक्टरजी बी.ए. में पढ़ते थे।''

''ओह! तो आपस में कोई झगड़ा था?''

''दोनों परिवारों में, परन्तु भाभी ने अपने पति के पास रहने का हठ किया। डाक्टर ने कहा, 'नौकर बन रह सकती है।' भाभी ने स्वीकार कर लिया। अन्त में भाभी की तपस्या फल लाई। एक ओर तो छोटी भाभी उससे प्रसन्न हो गई है और दूसरी ओर उसके परिवार के लोग झगड़ा छोड़ बैठे हैं।''

इस समय जवाहरलाल अपने स्थान पर खड़ा होकर कहने लगा, ''लेडीज ऐण्ड जैन्टलमैन! मुझको यह कहते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि आप सबने मेरे इस निमन्त्रण को स्वीकार किया है। आज की इस पार्टी का उद्देश्य तो यह है कि मेरा भाई सदानारायण मुझसे पूरे पाँच वर्ष के बाद मिलने आया है। मगर इसके अतिरिक्त भी एक अन्य प्रबल कारण है आज की इस पार्टी का।

''आज से दस वर्ष पूर्व, जब मैं बी.ए. में ही पढ़ता था, मेरा विवाह मेरे दाहिनी ओर बैठी हुई लेडी श्रीमती साधना देवी के साथ हुआ था। पाँच वर्ष तक हमारा विवाहित जीवन बहुत सुख और आनन्द से व्यतीत हुआ। मेरे इस पत्नी से दो बच्चे भी हैं। परन्तु किसी 'मिस अंडरस्टैडिंग' के कारण हमारे दोनों परिवारों में परस्पर वैमनस्य हो गया था।

''जब मैं विलायत से लौटा और मिस ऐमिली यहाँ आकर मिसेज सूद बनी, तब पहली पत्नी से मेरी अनबन थी। इस पर भी इस भली औरत ने मेरे द्वार पर आकर पड़े रहने का आग्रह किया। मैंने इससे कह दिया कि यह नौकरानी के रूप में ही रह सकती है। इसने इसी प्रकार रहना स्वीकार कर लिया और मैंने इससे अपनी 'हाउस कीपर' का काम लेना आरम्भ कर दिया।

''समय व्यतीत होता गया। दिलों के घाव भरते गए और साधना देवी की तपस्या ने अपना रंग दिखाया। कल मेरा भाई आया है और उसने मुझको बताया है कि दोनों परिवारों में अब 'पर्फेक्ट हारमोनी' (पूर्ण–सुहृदयता) है। अतः मुझको भी इसे अपने प्रतिष्ठित स्थान पर आसीन कर देना चाहिए। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रसन्नता के अवसर पर आप सबको अपनी प्रसन्नता में सम्मिलित करने के लिए यह पार्टी की है।

"मैं आशा करता हूँ कि आप सब मुझको जीवन के इस दुःखद् परिच्छेद के समाप्त होने पर बधाई देंगे।"

सब मित्रों ने तालियाँ बजाईं और औरतों ने, जो समीप बैठी थी, साधना को उठ–उठ कर गले लगाया। प्रायः सब उसको जानती थीं। उन्हें भी इससे प्रसन्नता ही हुई थी।

इस प्रकार चर्चा और समालोचना के मध्य चाय पी जाने लगी। कुछ अभ्यागतों ने यह समझा कि ऐमिली से सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए। वे उठ–उठ कर ऐमिली के पास जाने लगे और कहने लगे, "ऑल दी सेम मिसेज सूद! वी सिम्पैथाइज विद यू (इस पर भी श्रीमती सूद, हमारी आपसे सहानुभूति है)।"

ऐमिली मुस्कराते हुए कहती, "सहानुभूति के लिए यह अवसर नहीं। मुझको इससे बहुत प्रसन्नता हुई है और मैं समझती हूँ कि मेरा जीवन पहले से अधिक सरस हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

भारत सम्राट् के दिल्ली में राज्याभिषेक के अवसर पर हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली बनाने और बंगाल का विभाजन रद्द कर देने की सरकार की घोषणा, एक बार तो जन–साधारण तक में भी उल्लास उत्पन्न करने वाली सिद्ध हुई। पूर्ण देश में प्रसन्नता की तरंग दौड़ गई और समाचार–पत्रों में सम्राट् की घोषणा की जय–जयकार होने लगी।

इस जय–जयकार में भारत के नरम दल वालों का भारी हाथ था। गरम दल के प्रायः सब समाचार–पत्र या तो बन्द हो चुके थे अथवा भारी जमानतों से बँधे हुए थे। वे इन घोषणाओं से प्रसन्न थे अथवा नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। उनमें जो कुछ छपता था, वह एक प्रकार की अस्वाभाविक परिस्थिति में ही था।

हाँ, ऐंग्लो–इंडियन समाचार–पत्र और नरम दल वालों के पत्र सम्राट् की घोषणाओं पर बगलें बजा रहे थे। मानो ये घोषणाएँ उनके प्रयासों का ही फल थीं।

गरम दल वाले न तो सरकारी दमन–चक्र से निराश थे और न ही इन निरर्थक घोषणाओं से प्रसन्न हुए थे।

सन् 1912 का अक्तूबर मास था। रामरक्खामल्ल संगीत–भवन की लड़कियों के चले जाने के बाद रत्नलाल और सन्तोष से बातें कर रहा था कि चपरासी ने एक सुनहरी किनारे वाला विजिटिंग कार्ड लाकर दिया और कहा, "साहब आपसे मिलना चाहते हैं।"

रामरक्खामल्ल ने कार्ड पढ़ा। कार्ड पर नाम था, 'डा. एन.सी.राय, एल.एच. एम., एम.डी., मैडिकल प्रैक्टिशनर।'

रामरक्खामल्ल ने यह तो देखा कि 'एन.सी.' से निर्मलचन्द्र हो सकता है, परन्तु वह न तो डाक्टर था न ही एम.डी. था। इससे वह समझ नहीं सका कि यह कौन हो सकता है। उसने चपरासी को कह दिया, "ले आओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फर्स्ट–क्लास सूट–बूट पहने निर्मलचन्द्र को अपने सामने खड़ा देख रामरक्खामल्ल की हँसी निकल गई, ''यह क्या सूरत बनाई है, बाबू साहब!''

निर्मलचन्द्र ने अपने होंठों पर उँगली रखते हुए कहा, ''बाबू साहब नहीं, डाक्टर साहब।''

''आओ बैठो।''

निर्मलचन्द्र ने रत्नलाल को देखा तो नमस्कार कर दी और पूछ लिया, ''कितना पढ़ गये हो?''

''अब मैंने अँग्रेजी पढ़ ली है। यह भाषा मैं पढ़ और लिख सकता हूँ। अब सायंस और फ्रेंच भाषा पढ़ रहा हूँ।''

''सायंस की कौन–सी पुस्तक पढ़ते हो?''

''वाटसन की फिजिक्स और जे.डब्ल्यू. मैलर की कैमिस्ट्री।''

''ओह! बहुत तेजी से भाग रहे हो?''

''भापाजी कहते हैं कि इस व्यर्थ की विद्या पर बहुत समय लग रहा है।''

''परन्तु भापाजी! यह पुस्तकें तो बी.एस–सी. में पढ़ाई जाती हैं?''

''मैं जानता हूँ। हीरालाल कस्तूरचन्द कॉलिज में बी.ए. के लड़कों के साथ यह प्रायोगिक करने जाता है।''

''और सन्तोष क्या कर रहा है?''

''यह कॉमर्स पढ़ रहा है। साथ ही माँ के साथ कार्यालय में काम करता है।''

''रुक्मिणीजी के साथ?''

''हाँ।''

''यह ठीक है। इसके बाद रत्नलाल क्या काम करेगा?''

''अगले वर्ष मैं इसको एम.एस–सी. की क्लासिस में पढ़ने के लिए भेजूँगा।''

''इसकी आयु क्या है?''

''आगामी मास चौदह वर्ष का होगा।''

''बहुत खूब! और फिर क्या करोगे रत्न?''

''बाबू साहब! बम बनाऊँगा।''

दोनों बड़े हँस पड़े।

''यदि तुम इस वर्ष बना सकते तो तुम्हारा नाम भी इतिहास में अमर हो जाता।''

''क्या मतलब?'' रत्नलाल ने उत्सुकता से पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तुम बना ही नहीं सकते तो मतलब बताने की आवश्यकता नहीं है।"

रामरक्खामल्ल ने बात बदल दी। उसने पूछा, "कहाँ से आये हैं डाक्टर साहब!"

"मैं यूरोप चला गया था। जर्मनी में होम्योपैथी पढ़ डाक्टर बन गया हूँ। अब सीधा देसाई साहब के पास से आ रहा हूँ।"

"कैसे हैं वे?"

"बहुत मजे में हैं। वहाँ भी उनके चारों ओर रूस, जर्मनी, फ्रांस और इटली के क्रान्तिकारी एकत्रित होते रहते हैं। भारत से गये हुए अन्य क्रान्तिकारी तो बेचारे भयभीत रहते हैं, परन्तु देसाई मजे में भारत के स्वराज्य की बातें करते रहते हैं।

"आजकल रूस के कुछ क्रान्तिकारी जो अपने देश से भागकर वहाँ पहुँचे हुए हैं, उनको घेरे हुए हैं। देसाई समय–कुसमय एक–आध पौंड उनको देते रहते हैं, जिससे वे उनको अपने दल में सम्मिलित करने का यत्न कर रहे हैं।"

"देसाई भला उनके दल में कैसे सम्मिलित हो सकते हैं? वे रूस के और ये भारत के। एक देश स्वतन्त्र है, दूसरा विदेशियों का दास। वे अपने देश–वासियों से विद्रोह कर भागे हुए हैं और यह अपने देश–वासियों की विदेशियों के विरुद्ध सहायता करते हुए भागे हैं। दोनों में समता कहाँ है?"

"लालाजी! उनका दृष्टिकोण कुछ अधिक व्यापक है। वे मानव समाज का देशों में बँटवारा नहीं करते। वे समझते हैं कि पृथ्वी पर सर्वत्र दो प्रकार के प्राणी हैं। एक शोषक और दूसरे शोषित। एक धनी, दूसरे निर्धन।"

"यह तो मिथ्या आभास है।"

"कैसे?"

"शोषक और धनी पर्यायवाचक नहीं हैं?"

"वे मानते हैं और निर्धनों को शोषित मानते हैं। उनका विचार है कि सब देशों के शोषित संगठित हो जाएँ तो वे सब देशों के शोषकों को अपने अधीन कर लेंगे।"

"बहुत बड़े मूर्ख हैं वे!"

"इसमें मूर्खता क्या है?"

"मूर्खता यह है कि शोषक वह होता है, जो आसुरी प्रवृत्ति का है। आसुरी प्रवृत्ति वाला धनी भी हो सकता है और निर्धन भी।

"निर्धन कैसे हो सकता है? उसके पास तो सत्ता होती नहीं।"

"देखो मिस्टर राय! डाके डालने वालों के समाचार कभी पढ़े हैं अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं? दस–बीस निर्धन एकत्रित हो कुछ तलवारें एकत्रित कर एक गाँव पर जा धमकते हैं। उनको लूट लेते है। कभी–कभी उनके स्त्री–वर्ग का भी हरण करते हैं। ये निर्धन होते हुए भी शोषक है। पठान, मुगल, तुर्क जो भारत को धनवान देख इस पर आक्रमण कर इसको लूट कर ले गये, वे भारतीयों से निर्धन होते हुए भी शोषक थे। मुसलमान अरबों ने धन और जन के लाभ में यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, स्पेन तक मारधाड़ की। ये निर्धन होते हुए भी शोषक थे।

"इसके विपरीत अनेक वैश्य वर्ण के लोग जो धर्मानुकूल धन कमा कर धर्मशालाएँ, मंदिर, रुग्णालय, चिकित्सालय इत्यादि बनवाते हैं, वे धनवान होते हुए भी शोषक नहीं हैं।"

"परन्तु हम इस संसार में धनवानों को निर्धनों की मेहनत पर पनपते देखते हैं।"

"यह विषय सुराज्य के विचार का है। धर्म की स्थापना राज्य का कार्य है। यदि ऐसा कहीं है कि कोई धनी–मानी अपने कर्मचारियों को उचित वेतन नहीं देता तो यह देखना कि कौन ऐसा करता है और उस पातकी को कितना दण्ड देना चाहिए, सरकार का काम है।"

"परन्तु सरकार तो धनवानों के हाथ की कठपुतली होती है?"

"यदि सरकार धनवानों के हाथ की कठपुतली है तो उसको हटाकर धर्मात्मा सरकार बनाना मनुष्य का काम है न कि धनवानों को लूट लेना।"

"यह नहीं हो सकेगा।"

"क्या नहीं हो सकेगा?"

"सरकार धर्मात्मा हो ही नहीं सकती।"

"मैं ऐसा नहीं मानता। जब–जब सरकार अधर्मियों के हाथ में जाती है, रुद्ररूप परमात्मा जनता के हृदयों में आकर बैठ जाता है और वह प्रजा, सरकार अथवा राजा को हटा देता है। ऐसा भारत के इतिहास में अनेक बार हुआ है। अन्य देशों में भी ऐसा हुआ हैं।

"डाक्टर साहब! आप तो रोग को दूर करते–करते रोगी की ही हत्या करने पर उतारू हो रहे हैं। रोग है धर्म–विहीन राज्य। इस राज्य को हटाते–हटाते आप प्रजा की ही हत्या करने लगे है।

"आप उनका मतलब समझे नहीं। वे लोग चाहते हैं कि भूमि और समाज के सब घटकों का परिश्रम समाज की सम्पत्ति है, घटकों की व्यक्तिगत नहीं। सबकी साँझी है। इस कारण इन दोनों बातों पर समाज का अधिकार हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार भूमि की उपज और परिश्रम का फल मिले और शेष बचा हुआ समाज की सम्पत्ति हो। समाज उसको सबके साँझे उपयोग के लिए प्रयोग में लाये।''

''यह तो बहुत सुन्दर योजना है। परन्तु यह आसुरी है। देखो, मैं पूछता हूँ, समाज कौन है, जो शेष सम्पत्ति का वितरण करेगा?''

''सब के द्वारा निर्वाचित राज्याधिकारी।''

''मान लो, एक देश के सब मनुष्यों को रोटी, कपड़ा, मकान देकर अरबों रुपये बच जाते हैं। इन अरबों रुपयों में एक मजदूर का कितना भाग है, एक राजगीर का कितना भाग होगा और फिर एक ओवरसीयर और एक इंजीनियर का कितना भाग होगा? मजदूर का तो कुछ नहीं होगा? राजगीर का कुछ पचास–सौ रुपया वार्षिक हो सकता है। ओवरसीयर का दो–तीन सौ वार्षिक होगा और इंजीनियर की मेहनत का शेष तो सहस्रों वार्षिक होगा। राजा अपनी इच्छा से यह अरबों बाँटेगा। उसके बँटवारे में निर्णय देने का अधिकार मजदूर और इंजीनियर को बराबर होगा। यह अन्याय नहीं हो जायेगा क्या? और फिर एक इंजीनियर एक मजदूर से अधिक पैदा ही क्यों करेगा?

''सब गड़बड़ घोटाला हो जायेगा। योग्य आदमी हाथ–पर–हाथ घर कर बैठ जायेंगे। अयोग्य कुछ अधिक पैदा कर नहीं सकेंगे। जाति निर्धन होती चली जायेगी। लोग भूखे मरने लगेंगे। वस्त्रों के अभाव में नंगे रहने लगेंगे।

''योग्यों को डण्डे के बल से काम पर लगाया जायेगा?''

''और यदि वे वास्तविक अर्थों में योग्य हुए तो डण्डा मारने वालों को ही मार देंगे। यह तो विधि ही अनुचित है।''

''तो कौन–सी विधि उचित है?''

''विधि यह है कि योग्य व्यक्तियों को धर्म का विचार रखकर अर्थात् कानून भंग किये बिना, धन कमाने दें। उनमें साधारण सरल जीवन व्यतीत करने का स्वभाव डाला जाये और तदनन्तर जो कुछ उनके पास बचे, उसे प्रेरणा देकर, उनकी रुचि के अनुसार, लोक–कल्याण के कार्य में लगाया जाये।''

''यदि वह प्रेरणा नहीं माने तो?''

''वह आपकी प्रेरणा क्यों मानेगा? वह उनकी प्रेरणा मानेगा, जो उसकी भाँति योग्य होंगे अथवा जिनके लिए उसके मन में श्रद्धा और भक्ति होगी।

''देखो, एक धनी दूसरे धनी के कहने पर दान दे देता है। इसका अर्थ यह है कि वह योग्यों से प्रेरणा पाता है। एक धनी साधु, सन्त, महात्मा के कहने पर लाखों दे देता है। यदि तुम एक योग्य का बचा धन छीन कर राजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हाथ में दे दो, जिस पर उसको विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, तो यह तो डाका डालने के समान होगा।

"यह वैसे ही होगा, जैसे कोई डाकू एक गाँव लूट कर किसी दूसरे गाँव के निर्धनों में ब्रह्मभोज कराने लगे।"

"देखिये, एक साहब हैं लैनिन। वे रूस से भागे हुए हैं। वे देसाई जी को कहते थे कि भारत में उनके विचारों का प्रचार करने के लिए कुछ धन की व्यवस्था की जाये। सेठजी ने मुझको उसकी बात समझने के लिए कहा। मुझको उन्होंने अपना साहित्य दिया और फिर मुझको भारत में काम करने के लिए भेजा है।

"सेठजी का कहना था, यदि आप मेरी बात को समझ जायेंगे तो धन की व्यवस्था हो जायेगी। मैं कल रुक्मिणीजी से मिला था। उन्होंने कहा कि यदि आप सिफारिश करेंगे तो इस कार्य के लिए धन मिल जायेगा।"

"मिस्टर राय! आपने रुक्मिणी देवी को यह सिद्धान्त बताया है?"

"जी। उनको तो समझाने में अधिक देरी नहीं लगी थी।"

"तो फिर उन्होंने क्या कहा है?"

"वे कहने लगीं कि राजा अथवा राज्य–कर्मचारी, जो भी कहो, वे देवता होंगे और एक बुद्धि और परिश्रम से धनोपार्जन करने वाला असुर ही होगा, यह युक्ति समझ में नहीं आई। राजा भी अच्छा काम तब करेगा, जब उसकी प्रवृत्ति दैवी होगी और मिल मालिक भी दैवी प्रवृत्ति होने पर ही अपने कर्मचारियों का शोषण नहीं कर सकेगा। इस कारण दैवी प्रवृत्ति वाले लोग उत्पन्न करने चाहिये। समस्या यह है, न कि राजा को अधिकार देना, जिसके वह योग्य नहीं।

"मैंने पूछा, यह दैवी प्रवृत्ति कैसे पैदा की जाती है तो वे कहने लगीं कि भापाजी की प्रार्थनाओं में सम्मिलित हुआ करो।

"मैं हैरान हूँ कि आपने क्या जादू कर रखा है, रुक्मिणी देवी पर। वे कहती थीं कि यदि आप मान गये तो एक लाख रुपया वार्षिक इस कार्य के लिए मिल जायेगा।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। उसने कहा–"बात वही है, जो मैंने कही है। राजा हो अथवा धनी, उसकी प्रवृत्ति ठीक हो तो धन लोक–कल्याण में व्यय होगा। नहीं तो यह धनी की रखैलों के पास जायेगा अथवा राज–कर्मचारियों की रखैलों के पास व्यय होगा। इससे लोक–कल्याण नहीं होगा।"

"परन्तु, क्या आप यहाँ दैवी प्रवृत्ति की फैक्टरी खोले हुए हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप आइये। आपको फैक्टरी दिखा दूँगा।"

"मैं कथा–कीर्तन की बात जानना नहीं चाहता। मैं तो उसकी उपज के विषय में पूछना चाहता हूँ।"

"हाँ, एक बात याद आ गई। दुर्गा को आप यहाँ से ले गये थे। उसका क्या हुआ?

"मेरे पास एक पासपोर्ट था। बदरुद्दीन और उसकी पत्नी नसीम के नाम से। मैंने असली फोटोग्राफ निकलवाकर उसमें अपना और दुर्गा का फोटो लगवा लिया। कलकत्ता के प्रैजीडैन्सी मजिस्ट्रेट की नकली मुहरें हमारे पास रहती हैं। वे हम प्रयोग कर लेते हैं। सो अगले दिन बदरुद्दीन और नसीम उन जाली पासपोर्टों पर यहाँ से निकल गए। मैंने मारसेल्ज का टिकट लिया और उतर गया था काहिरा में। वहाँ से एक इटेलियन जहाज में मैं ब्रिंडसी जा पहुँचा।

"दुर्गा बर्न के एक होटल में बेटरैस की नौकरी करने लगी थी। मैं अपने काम पर चला गया था। अब वह सेठजी की सेवा करती है। अभी तक उसने शादी नहीं की। मैं समझता हूँ कि उसकी शादी एक पंजाबी नवयुवक से हो जायेगी। वह उसके पीछे लगा है। उसने उसके पासपोर्ट का प्रबन्ध करा दिया था और मैं चला आया हूँ।"

"हमारी दैवी प्रवृत्ति की फैक्टरी का एक उदाहरण तो आपको मिला है। क्या दोष देखा है आपने उसमें?"

निर्मल गम्भीर विचार में मग्न बैठा रहा। रामरक्खामल्ल ने समझा कि वह उसके स्वभाव और व्यवहार में दोष ढूँढ़ रहा हु। इससे वह उसके कहने की प्रतीक्षा करता रहा। कुछ विचार कर उसने कहा, "अंग्रेजी में कहावत है, 'वन स्वैलो डज नौट मेक दि स्प्रिंग'. (एक कोयल के कूकने से वसन्त ऋतु का प्रमाण नहीं मिलता।)

"देखिये, हमारे विद्यालय के आँकड़े इस प्रकार हैं–संगीत–भवन को खुले हुए पाँच वर्ष हो चुके हैं। अभी तक यहाँ दो सौ छात्राएँ पढ़ने आकर जा चुकी हैं। इन दो सौ में केवल तीन भ्रष्टाचार में फँसी हैं। दो नाटक कम्पनी में नौकर हो गई हैं, एक वर्मा साहब की फिल्म कम्पनी में काम कर रही है। शेष एक सौ चौरानवे घर–गृहस्थी करती हैं और बच्चों की माँ बन रही हैं। किसी भी संगीत–विद्यालय का इतना अच्छा परिणाम नहीं होगा।

"इस भवन में निर्धन, मध्यम वर्ग और धनी वर्ग अर्थात् समाज के सब भागों से छात्राएँ आई हैं और सब अपने–अपने वर्ग में अथवा अपने वर्ग से ऊँचे वर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही गई हैं।''

''परन्तु क्या वे दैवी प्रवृत्ति की हैं?''

''उन एक सौ चौरानवे में से पचास के विवाह हमारे द्वारा निश्चय हुए हैं और जहाँ तक हमको विदित है उनके घर वाले सुखी और प्रसन्न हैं।''

निर्मलचन्द्र गम्भीर विचार में निमग्न उठकर जाने को तैयार हो गया। जाने से पूर्व उसने पूछा, ''आपके यहाँ प्रार्थना का कार्यक्रम किस समय आरम्भ होता है?''

''ठीक साढ़े सात बजे आरम्भ हो जाता है।''

''तो मैं आया करूँगा।''

: 2 :

दिल्ली में लॉर्ड हार्डिंग पर बम चला। लाट साहब की सवारी, चाँदनी चौक में से जा रही थी। किसी ने बम फेंका तो लाट साहब का महावत मारा गया, परन्तु लाट साहब बाल–बाल बच गये। बम फेंकने वाला पकड़ा नहीं गया। अंग्रेजों का स्वप्न भंग हुआ। सम्राट् की घोषणा का प्रभाव एक ही वर्ष में विलीन होता दिखाई देने लगा। इसी समय अमरीका से गदर–पार्टी के सदस्य भारत में आने आरम्भ हो गये। ये डाके डाल–डाल कर धन एकत्रित कर सरकारी अधिकारियों में आतंक फैलाने का यत्न करने लगे।

निर्मलचन्द्र प्रार्थना में आया हुआ था। आज रामरक्खामल्ल ने ईशावास्योपनिषद् के अठारहवें मन्त्र की व्याख्या की थी।

रामरक्खामल्ल ने कहा–

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूमिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

''हे परमात्मन्! हमको धन–सम्पदा प्राप्ति के लिए सुपथ से ले चल। है विश्व के देवताओं से भी महान्! आप पूर्ण विज्ञान के जानने वाले हैं। इस कारण कुटिलतापूर्ण पापाचरण से हमको पृथक् करिये, जिससे हम प्रशंसा और सत्कार के पात्र बनें।''

इस अर्थ के कहने के बाद कुटिलतापूर्ण पापाचरण की व्याख्या कर दी गई। तदनन्तर सुपथ (उचित मार्ग) की व्याख्या की गई। इन दो शब्दों की व्याख्या में रामरक्खामल्ल ने स्वामी–सेवक, धनी–निर्धन, दुकानदार–ग्राहक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चतुर–सरलचित, ज्ञानवान–अज्ञानी, राजा–प्रजा सबके व्यवहार में शास्त्र का मत बता दिया।

मित्र–शत्रु की भी व्याख्या कर दी। अन्त में उसने बताया, "वेद–भगवान कहता है–संसार हमारे उपयोग की वस्तु है। जब तक यह पंच–भौतिक शरीर हमारे साथ है, तब तक यह पंच–भौतिक संसार हमारे नित्य काम में आने की वस्तु है। इसका त्याग न हो सकता है और न होना ही चाहिए।

"आवश्यक यह है कि इसकी प्राप्ति के लिए कुटिलता तथा पापाचरण छोड़ कर उचित अर्थात् न्याय और धर्म का मार्ग स्वीकार किया जाये।"

निर्मलचन्द्र के मन में प्रकाश हो रहा था। वह समझ रहा था कि जो कुछ लैनिन महोदय ने उसको बताया तथा समझाया था, वह तो सुपथ नहीं था। न ही वह कुटिलता से रहित मार्ग था।

जब–जब वह आता था, प्रार्थना के बाद रामरक्खामल्ल के साथ ही अल्पाहार करता था। आज भी वह प्रार्थना से उठ भापाजी के साथ ऊपर की मंजिल पर चला गया। आजकल रामरक्खामल्ल, रत्नलाल, सन्तोष तथा बाहर से आये अतिथियों के साथ अल्पाहार लिया करता था। आज निर्मलचन्द्र के अतिरिक्त अन्य कोई बाहरी व्यक्ति नहीं था। निर्मलचन्द्र को अपने समीप बैठाकर रामरक्खामल्ल पूछने लगा, "कहाँ थे आप?"

"दिल्ली का समाचार पढ़ा है?"

"तो आप उसके लिए गये हुए थे?"

"नहीं। वह कार्य तो कुछ अन्य सूरमाओं का है। मैं तो केवल पटाखा उपलब्ध कराने वाला हूँ। मुझको विदित है कि ये कहाँ से उपलबध होते हैं। मैं कलकत्ता से पटाखा लेकर दिल्ली गया था। पटाखा चलने के बाद मैं यहाँ आ गया हूँ। वैसे तो तीन पटाखे लेकर गया था। दो लाहौर गए हैं। उनके चलने की सूचना भी आएगी।"

रामरक्खामल्ल मुस्कराता रहा। निर्मलचन्द्र ने कहा, "मैं तो रत्नलाल के शिक्षा समाप्त करने की प्रतीक्षा में हूँ। तब मैं बम बनाने की फैक्टरी खोल दूँगा और इतने पटाखे इस हिन्दुस्तान में चलवाऊँगा कि अंग्रेज यहाँ से भाग खड़े होंगे।

"मुझको प्रसन्नता यह है कि आप राज्याधिकारी निर्माण करने का यत्न कर रहे हैं। मैं सत्य कहता हूँ कि यदि मेरी चल गयी तो आपको भारत का प्रधानमन्त्री बनवा दूँगा।"

"मैं बनूँगा तो सबसे पहले आप पर मुकदमा चलवाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और मैं उस मुकदमे में बरी हो जाऊँगा।"

"सत्य?"

"हाँ! तभी तो आप जैसे सन्तुलित मन वाले को प्रधानमन्त्री बनाने की बात कर रहा हूँ। यदि कहीं श्री गोखले अथवा सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी जैसा प्रधानमन्त्री बना तो मुझको फाँसी मिलनी निश्चित है। मुकदमे में विजयी होने की आशा तो आपके राज्य में ही हो सकती है।"

"अच्छी बात, देखें क्या होता है? मैं एक बात देख रहा हूँ कि यूरोप में एक भयंकर युद्ध छिड़ने वाला है। उसमें दैवी शक्तियों की विजय होगी और आसुरी शक्तियों की पराजय।"

"यह कैसे पता चले कि कौन दैवी शक्ति वाले हैं और कौन आसुरी?"

"वह शक्ति आसुरी है जो नित्य नए–नए शस्त्रास्त्र इस कारण निर्माण कर रही है कि वह दूसरों का राज्य छीन कर स्वयं राजा बने। असुर वह है जो अभिमान से चूर–चूर हो रहा है?"

"कौन नए–नए शस्त्रास्त्र बना रहा है?"

"जर्मन का कैसर।"

"आप उसको जानते नहीं। वह अति सुयोग्य शासक है। उसके काल में जर्मनी ने विज्ञान में अद्भुत उन्नति की है। इधर अंग्रेज हैं, जो पहले ही आधी दुनिया पर अधिकार किये हुए हैं। ये बड़े सिद्धहस्त असुर हैं और वह तो अभी असुर बनने की तैयारी कर रहा है।"

"यह ठीक है। अंग्रेजों के पूर्वजों ने यह साम्राज्य स्थापित किया था। यह भी ठीक है कि यह साम्राज्य छल तथा बल से स्थापित हुआ है। परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि जहाँ अंग्रेज के शासन में हम उससे झगड़ा कर स्वराज्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं, वहाँ जर्मन की तैयारी हमारी मुक्ति के लिए नहीं, प्रत्युत वह अंग्रेजों के हम पर शासन को स्वीकार कर अन्य स्थानों पर अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए है।"

"मैं तो यह कहता हूँ कि ये असुर–असुर परस्पर लड़ें और उस भीड़ के समय हम स्वतन्त्र होने का यत्न करें। इसी के लिए अमरीका में एक गदर–पार्टी स्थापित हुई है। उसके कुछ लोग भारत में आ गए हैं। वे अपने अड्डे यहाँ स्थापित कर रहे हैं।"

"इसी समाचार पर तो मैंने यह कहा था कि यदि मैं प्राइम–मिनिस्टर हुआ तो आप पर देशद्रोह का मुकदमा चलाऊँगा। ये गदर–पार्टी वाले डाके डाल कर धन एकत्रित कर रहे हैं और उस धन से कितना देश–कल्याण का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वे करेंगे, यह तो मुकदमे में जाँच का विषय होगा। अभी प्रारम्भिक आरोप तो स्थापित हो गया है कि बेकसूर शान्ति–प्रिय लोगों पर डाके डाले जा रहे हैं।"

"मैं सिद्ध कर दूँगा कि इन डाकों से प्राप्त धन की पाई–पाई देश को स्वतन्त्र करने पर व्यय हुई है।"

"जब यह सिद्ध करेंगे तो आप, मेरा मतलब है कि ये गदर–पार्टी वाले मुक्त हो जायेंगे। परन्तु मुझको सन्देह है कि पाई–पाई की बात छोड़ सहस्रों का भी आप हिसाब नहीं दे सकेंगे।"

निर्मलचन्द्र इस युक्ति की सत्यता का अनुभव कर रहा था। कोई भी क्रान्तिकारी रुपये का हिसाब न रख सकता है, न दे सकता है। वह अपने विषय में विचार करता था कि उसने कितना ही रुपया श्रीमती देसाई से मिस्टर सूद की सिफारिश पर लिया है और वह उस रुपये का हिसाब नहीं दे सकता। और तो और, वह देसाई को रुपया पहुँचाने के लिए लगभग पचास पौंड खर्चा प्रतिवर्ष लेता है। वह उसका भी हिसाब दे नहीं सकता। इससे वह कुछ बेचैनी अनुभव करने लगा था।

उसे चुप और चंचल देख रामरक्खामल्ल ने हँसते हुए कहा, "आपको कदाचित् श्रीमती देसाई से प्राप्त रुपये के हिसाब की चिन्ता लग गई है?"

निर्मलचन्द्र ने सतर्क हो तुरन्त कहा, "नहीं–नहीं, यह बात नहीं।"

"देखो राय! तुम युक्ति करने में बहुत ढीले हो। इसमें कारण यह है कि तुमने संस्कृत–साहित्य में कुछ कविताएँ और नाटक ही पढ़े हैं। तुमने न्याय और सांख्य का अध्ययन नहीं किया। साथ ही बुद्धि को परिष्कृत करने का उपाय भी नहीं जानते। यदि तुमने ऐसा किया होता तो तुम तुरन्त समझ जाते कि तुममें और गदर–पार्टी में आकाश–पाताल का अन्तर है।

"देखो मैं समझता हूँ, तुम उस रूसी भगोड़े की बात सीख आये हो। इसी कारण तुम श्रीमती देसाई के स्वेच्छा से दिये धन मैं और एक देहात के दुकानदार से छीने हुए धन में अन्तर नहीं समझ सके। श्रीमती देसाई आपको सैकड़ों 'पौंड' धन दे रही हैं, यह जानते हुए कि आप अपने दृष्टिकोण से देश–उद्धार का कार्य कर रहे हैं और आपको तथा आपके साथियों को अपना कार्य करने के लिए भी धन चाहिरा। वे इस कार्य के लिए स्वेच्छा से देती हैं और उस देहाती दुकानदार के दस हजार लूटकर ले जाने वाले गदर–पार्टी के सदस्य तो बलपूर्वक, बिना उसकी इच्छा और रुचि के ले गए हैं। अपराध यह नहीं कि देश में विद्रोह खड़ा किया जा रहा है। अपराध है किसी की इच्छा के बिना धर्म और न्याय से पैदा किया उसका रुपया छीनना। यह केवल–मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
डाका है। फिर उस डाके में दुकानदार मारा गया है।''

''तो फिर यह काम कैसे किया जा सकेगा?''

''इस पर मेरा तो यह कहना है कि आपने घोड़े के आगे गाड़ी लगा कर कार्य आरम्भ किया। देश में इस प्रकार के कार्य के अनुकूल वातावरण बनाए बिना कार्य आरम्भ कर दिया है।''

''यह तो आप बहुत कठिन सुझाव बता रहे हैं। ऐसा हो सकना तो अनन्त काल तक भी सम्भव नहीं है।''

''यही तुम लोगों की भूल है। हिन्दुस्तान में यह कुछ भी कठिन नहीं। 1907 में लाहौर में प्लेग से हुई अशुद्धि को दूर करने के लिए एक महान् यज्ञ का आयोजन किया गया था। आपको यह जानकर विस्मय होगा कि इस कार्य के लिए दस हजार रुपया चाहिए था और दो घन्टे में एक ही बाजार से दस हजार रुपया एकत्रित हो गया था।

''कार्य के लिए जनता के मन में श्रद्धा उत्पन्न करने की आवश्यकता है। आपने अपने कार्य के लिए श्रद्धा तो उत्पन्न नहीं की। दस–बीस लोगों ने मिलकर योजना बना डाली। उस योजना का जनता को न तो ज्ञान होता है न ही श्रद्धा। और आप लोग अपने कार्य की सफलता के लिए डाके डालकर काम चलाना चाहते हैं।

''यही तो श्री तिलक का अभिप्राय था कि जनता में जागृति प्रथम कार्य है। तभी क्रान्तिकारी कार्य अथवा आतंक उत्पन्न करने का प्रयास चल सकता है और सफल होता है।''

निर्मलचन्द्र उत्तर तो नहीं दे सका, परन्तु उसका समाधान भी नहीं हुआ। उस दिन वह वहाँ से उदास मन गया था।

उक्त घटना के दो मास बाद लाहौर में माल रोड पर पड़ा एक बम फट गया। फिर कुछ दिन बाद लारेंस गार्डन में लारेंस हॉल के बाहर एक बम फटा। दोनों में चपरासी मारे गए। इस पर भी इन बमों की गूँज तो विलायत की पार्लियामेंट तक गई। लोग यह अनुभव करने लगे थे कि भारतवासियों को शासन में विशेषाधिकार देने से ही यह बम–बाजी शान्त की जा सकती है। इसके लिए अंग्रेज सरकार विचार करने लगी थी कि आगामी सुधार किस दिशा में हों। यह तो सरकार की ओर से निश्चय ही था कि ये क्रान्तिकारी देश के लिए सर्वस्व त्याग करने वाले हिन्दू हैं। इस कारण इनके विरुद्ध मुसलमान खड़े किए जा सकते हैं। उनको आगामी सुधारों में पृथक् प्रातिनिध्य देने से ही ऐसा हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लारेन्स गार्डन में बम फटने के कुछ दिन बाद निर्मलचन्द्र आया। उसको देसाई को भेजने के लिए रुपया चाहिए था। वह आया तो रामरक्खामल्ल के मुख से निकल गया, "तो पटाखे चलवा आये हो न?"

"काम बना नहीं। निशाना चूकने से गरीब चपरासी मारे गए हैं।"

"उनके बाल–बच्चों के लिए कुछ धन भेज देना चाहिए था।"

निर्मलचन्द्र मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने कहा, "सरकार उनकी सहायता का प्रबन्ध कर रही है।"

"तो नेकनामी सरकार की होगी। गरीबों की सहानुभूति सरकार के लिए होगी। देश से प्रेम का दावा करने वालों को तो बदनामी के अतिरिक्त कुछ मिला नहीं?"

"हमारा अंग्रेजों में आतंक फैलाने का कार्य ठीक चल रहा है।"

"और उसके साथ–ही–साथ जनता की आपके प्रति अर्थात् आपके उपायों के प्रति सहानुभूति विलीन होती जा रही है। जनता को कांग्रेस के उपायों में श्रद्धा बढ़ती जाती है। यह अच्छे लक्षण नहीं हैं।"

"यह सम्भव नहीं।"

"अच्छी बात है। मिस्टर देसाई के लिए धन कब चाहिए?"

"कल मिल जाए तो ठीक है।"

"कल मिल जाएगा।"

निर्मलचन्द्र जाने ही वाला था कि सदानारायण सूटकेस उठाए हुए वहाँ आ पहुँचा। सदानारायण निर्मलचन्द्र को बैठा देख स्तब्ध रह गया। निर्मलचन्द्र ने भी उसको देखा तो उसे देखता ही रह गया।

"सदानारायण, तुम कहाँ?"

"बताता हूँ। ताईजी कहाँ हैं?"

"भीतर चले जाओ।"

सदानारायण के भीतर जाने पर निर्मलचन्द्र ने पूछ लिया, "यह लड़का आपका क्या लगता है?"

"मेरे भाई का लड़का है।"

"इसको विलायत भेजने का प्रबन्ध कर दीजिए।"

"क्यों?"

"यह आपकी नीति पर कार्य कर रहा है। इसने एक सार्वजनिक सभा में बमबाजी के पक्ष में डेढ़ घण्टे तक व्याख्यान दिया था। व्याख्यान के बाद मैंने इससे पूछा, 'यह क्या मूर्खता कर रहे हो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह कहने लगा कि वह इन क्रान्तिकारियों के पक्ष में जनमत तैयार कर रहा है।

"मैंने पूछा, इससे क्या होगा?"

"तो यह बोला कि कभी इनको भाग कर जान बचाने की आवश्यकता हुई तो हजारों लोग इनकी रक्षा के लिए तैयार हो जायेंगे।"

"तो क्या आपको यह नीति गलत प्रतीत हुई है?"

"आपसे बात करने पर तो गलत प्रतीत नहीं हुई, परन्तु मैं कहता हूँ कि पुलिस इसको तंग कर रही प्रतीत होती है और यह उससे तंग आकर लाहौर से भाग आया प्रतीत होता है।"

निर्मलचन्द्र और रामरक्खामल्ल दोनों कुछ काल तक गम्भीर विचार में निमग्न रहे। निर्मलचन्द्र ने कहा, "मुझको भय है कि कहीं यह मुझको ही खुफिया पुलिस का अधिकारी न समझ ले।"

"नहीं, मैं समझा दूँगा।"

"इसका पासपोर्ट बनवाकर इसे किसी विदेश में पढ़ने के लिए भेज दीजिए। यहाँ पुलिस इसको पकड़ लेगी। भारत सरकार के अधिकारी बमबाजों से इतना नहीं डरते, जितना बम के पक्ष में खुले रूप में प्रचार करने वालों से।

"अच्छा, मैं फिर मिलूँगा।"

: 3 :

"भापा! मैं खुफिया पुलिस वालों से तंग आकर लाहौर से छिपकर भागा था और यहाँ आते ही इस शैतान को बैठे देखा तो मैं घबरा उठा था।"

"किस शैतान को?"

"यह बंगाली बाबू बैठा था न?"

"ओह। निर्मलचन्द्र की बात कर रहे हो?"

"मैं इसका नाम नहीं जानता। शक्ल पहचानता हूँ। हमने लाहौर में एक क्लब बनाया था। उसमें हम राजनीतिक जागृति के लिए व्याख्यान रखा करते थे। बहुत छोटे–बड़ों के व्याख्यान करा चुके थे। एक दिन मेरा व्याख्यान रखा गया। मैंने 'कल्ट ऑफ दि बाम्ब' पर व्याख्यान दिया। क्लब वालों का विचार था कि मैं इस विचारधारा का विरोध करूँगा, परन्तु जब मैं बोलने लगा तो फिर ऐतिहासिक प्रमाणों से यह सिद्ध कर बैठा कि देश के उद्धार में यह कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अपना स्थान रखता है।

''हमारा क्लब इन्टर–कौलजिएट है। लगभग पाँच सौ विद्यार्थी उपस्थित थे। व्याख्यान के बाद ये बंगाली महाशय मुझसे मेरा नाम–धाम पूछने लगे। मैंने टालने की कोशिश की तो ये बोले कि मैंने यह अच्छा नहीं किया।''

''देखो सदा! ये महाशय खुफिया पुलिस में नहीं हैं। ये बम चलाने वालों में हैं। इस पर भी इस प्रचार–कार्य में इसका विश्वास नहीं है।''

''मैंने तो अपने विचार से ठीक ही किया था। जब मैंने इसको बताया कि मैं बमबाजों के पक्ष में जनमत तैयार कर रहा हूँ, जिससे यदि उनको कभी जान बचाने के लिए भागना पड़े तो सहस्रों उनकी सहायता के लिए तैयार हो जायें। मेरा उत्तर सुन यह चुपचाप चला आया। अगले दिन से ही मेरे पीछे पुलिस लग गई।

''दूसरी ओर क्लब बन्द हो गया। सैक्रेटरी को डिप्टी–कमिश्नर का हुक्म हो गया कि इस क्लब की मीटिंग नहीं हो सकती और कॉलेज के प्रिंसिपल ने, जो एक सिन्धी महाशय हैं, सैक्रेटरी को बुला कर डाँटा।

''अब तो नौबत यह आ गई थी कि दो आदमी मेरे 'बाडी गार्ड' की तरह सदा मेरे साथ रहते थे। मैंने वहाँ से भाग आना ही उचित समझा है।

''मैंने श्याम भापा के घर यह अटैचीकेस नरेन्द्र के हाथ भिजवा दिया और स्वयं पुलिस को चकमा देकर यहाँ चला आया हूँ।''

''यह तो तुमने ठीक नहीं किया। यदि तुम्हारा बमबाजों के साथ सम्पर्क था तब तो भागना आवश्यक था, अन्यथा व्यर्थ में सन्देह को सुदृढ़ ही किया है।''

''भापा। अपनी जानकारी में तो सम्पर्क नहीं है। परन्तु ऐसी किंवदंती है कि लाहौर वाले बमों में तो किसी विद्यार्थी का काम है। मेरा सम्पर्क तो सभी कॉलिजों के अनेक विद्यार्थियों से है। उनमें कौन बमबाज है और कौन नहीं, मैं जानता नहीं। कहीं कोई पकड़ा गया तो मैं अवश्य पकड़ा जाऊँगा।''

''निर्मलचन्द्र की सम्मति है कि तुमको विलायत भेज देना चाहिये। तुम वहाँ पढ़ाई करो।''

''इसमें मैं क्या कह सकता हूँ। यह तो रुपये का प्रश्न है। मेरे पास तो कुछ है नहीं।''

''तो यह बम्बई आने का खर्चा तुम्हारे पास था?''

''जी! मैं जब से एम.ए. में भरती हुआ हूँ, एक ट्यूशन कर रहा हूँ। छः मास में तीन सौ रुपया एकत्रित कर चुका था। उससे ही आया हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो छोटे भापा को बता कर नहीं आये?"

"बताकर आया हूँ। उन्होंने पूछा था। मैंने बता दिया कि मेरे पास रुपये हैं।"

"अच्छी बात! विचार करूँगा। यों तो मैं तुमको निर्मलचन्द्र की सहायता से, बिना पासपोर्ट के भी विदेश भेज सकता हूँ, परन्तु मैं यह पसन्द नहीं करता। मैं तुम्हारे लिए पासपोर्ट का प्रबन्ध करूँगा।"

अगले दिन सदानारायण और निर्मलचन्द्र का साक्षात्कार हुआ। दोनों मिले तो खिलखिलाकर हँसने लगे। निर्मलचन्द्र ने हँसते हुए कहा, "यदि मुझको मालूम होता कि तुम भापाजी के बेटे हो तो मैं तुमको अपने साथ ही यहाँ ले आता। उस अवस्था में वह परेशानी न होती, जो अब होगी?"

"क्या परेशानी होगी?"

"पुलिस वाले कॉलेज–अधिकारियों से तुम्हारा पता करेंगे और वे सात दिन की अनुपस्थिति पर तुम्हारा नाम रजिस्टर से काट देंगे। तब पढ़ाई नहीं हो सकेगी।

"मुझको अपने किये पर पश्चात्ताप नहीं है। मैं उसी को ठीक कार्य समझता हूँ। देश में अंग्रेजों को मार–मार कर निकाल देने के अनुकूल वातावरण बनाना आवश्यक है।"

"यही वातावरण बनाने के लिए तो तिलकजी मांडले में छः वर्ष का कारावास भोग रहे हैं।"

"यह तो कुछ नहीं।"

निर्मलचंद्र हँस पड़ा। इस पर सदानारायण ने कहा, "विद्रोह की भावना देश में प्रज्वलित रखने के लिए कुछ त्याग और तपस्या करनी ही पड़ेगी।"

सदानारायण को चुपचाप जबलपुर भेज दिया गया। उसको बता दिया गया कि उसे वहाँ, लाहौर की बात नहीं बतानी। न ही उसने किसी प्रकार की चिट्ठी–पत्री लाहौर भेजनी है।

जबलपुर में जवाहरलाल के अधिकारियों ने तो किसी प्रकार की बाधा खड़ी नहीं की थी, परन्तु जवाहरलाल के मित्रों ने ऐमिली को भड़काने का यत्न किया। जवाहरलाल के मित्रों में एक पंजाबी लेफ्टिनेन्ट सूरजसिंह था। उसने धीरे–धीरे जवाहरलाल से परिचय बढ़ाया और पहले उसकी उपस्थिति में, फिर उसकी अनुपस्थिति में ऐमिली से मेल–मुलाकात आरम्भ कर दी।

इस बार जब सदानारायण जबलपुर पहुँचा तो सूरजसिंह की ऐमिली से मेल–मुलाकात बहुत बढ़ चुकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण कोठी में जवाहरलाल के सामने जा खड़ा हुआ तो वह आश्चर्य से पूछने लगा, "कहाँ से आ रहे हो?"

"बम्बई से?"

"क्यों? कॉलेज में छुट्टियाँ हैं क्या?"

"कॉलेज में तो भरती ही नहीं हुआ। यह विचार हुआ है कि विलायत में पढ़ाई की जाए और वहाँ मैं किसी कॉलेज में स्थान पाने का यत्न कर रहा हूँ।"

"तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया? अब तक तो स्थान मिल चुका होता।"

"इसीलिए तो आया हूँ।"

"कल पत्र लिख दूँगा। आशा है एक महीने में उत्तर आ जायेगा।"

"भाभियाँ कहाँ हैं?"

"तुम्हारी नीति ने नई कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दी हैं। सरकारी अधिकारियों ने तो पूछताछ कर बात फाइल कर दी प्रतीत होती है। मगर ऐमिली ने तंग करना आरम्भ कर दिया है। इस बार उसके लड़की हुई है। यो तो वह मुझसे उसी दिन से रूठी है, जब से साधना से मेरा सम्बन्ध पुनः बना। परन्तु लड़की होने के बाद तो वह न मुझसे बोलती है, न ही साधना से। वह इस कोठी में रहती है। भोजन करती है। सोती भी है। परन्तु हम दोनों से बात नहीं करती।

"एक बात और है सदा! यहाँ एक लैफ्टिनेन्ट सूरजसिंह है। वह दिन–रात उसको लेकर घूमा करता है। कुछ साथियों का विचार है कि उनका परस्पर अनुचित सम्बन्ध है। मैंने देखा कुछ नहीं। न ही मैंने इस विषय में जानने का यत्न किया है।"

"भैया! मैं इस विषय में कुछ अधिक सहायता नहीं कर सकता। भापा जी के यहाँ चले जाते तो बात बन जाती।"

"मैं बम्बई जाने से डरता हूँ। ऐमिली का शमशाद से पत्र–व्यवहार है और मुझको उस पर किंचित् भी विश्वास नहीं रहा।"

"देखो भैया! भाभी को समझाने का यत्न करना चाहिए। यदि न समझे तो उससे सम्बन्ध–विच्छेद कर लेना चाहिये। अन्यथा यहाँ से बदली करवा लो।"

"मैं बदली के लिए यत्न कर रहा हूँ।"

साधना को पता चला कि सदानारायण आया है तो कोठी से निकल आई। सदा ने चरण–स्पर्श किया तो उसने पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया। जवाहरलाल अस्पताल को जाने का समय हुआ देख, कपड़े पहनने चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधना ने सदा के पास बैठ घर का और अपने बच्चों का समाचार पूछना आरम्भ कर दिया।

सदानारायण अभी घर की बातें बता ही रहा था कि ऐमिली सूरजसिंह के साथ कोठी में आ गई। ये दोनों डाक्टर को आते मिले। डाक्टर तैयार हो अस्पताल जा रहा था। सदानारायण ने देखा दोनों ने डाक्टर की ओर देखा तक नहीं। यह या तो डाक्टर से अति घनिष्टता का सूचक हो सकता था अथवा डाक्टर के प्रति अत्यन्त घृणा का।

वे दोनों इधर, जिधर साधना और सदानारायण बैठे थे, नहीं आये। वे सीधे कोठी के अन्दर ऐमिली के कमरे में चले गये। उनके चले जाने पर साधना ने कह दिया, "ऐमिली की निष्ठा भंग हो चुकी है। यह लैफ्टिनेन्ट इसका अविवाहित पति है।"

"तुमने इस विषय में कुछ देखा है?"

"कोठी के सब नौकर जानते हैं और सब ने इनको मुख काला करते देखा है।"

"भैया को विदित है यह?"

"मैंने नहीं कहा। मैंने नौकरों को भी मना किया हुआ है। जहाँ तक मुझको विदित है उनको सन्देह तो है परन्तु पक्की बात पता नहीं।"

"इसका कोई उपाय करना चाहिये।"

"उपाय सूझ नहीं रहा। अभी तो बाहर का पर्दा बना है। कहीं वह भी टूट गया तो फिर या तो दोनों लड़ मरेंगे अथवा यहाँ से नौकरी छोड़ चला जाना पड़ेगा।

सदानारायण इस समस्या को सुलझाने के विषय में विचार कर रहा था, परन्तु उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था।

इतने में सूरजसिंह कोठी से निकला तो सदानारायण ने उसकी ओर जाते हुए आवाज दे दी, "लैफ्टिनेन्ट साहब!

विवश सूरजसिंह को रुक कर सदानारायण की ओर देखना पड़ा।

"हैलो? कब आये हो?" सूरजसिंह ने आगे बढ़ कर हाथ मिलाया।

"अभी कहाँ भागे चले जा रहे हैं?"

"ब्रिगेडियर साहब से कुछ काम है।"

"तो फिर सायंकाल चाय के समय दर्शन दीजिये।"

"जरूर! जरूर!!"

"ठीक पाँच बजे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरजसिंह उत्तर दिए बिना चला गया। सदानारायण साधना के साथ कोठी की तरफ आ गया, ऐमिली के कमरे के बाहर पहुँच उसने आवाज दे दी, "छोटी भाभी! छोटी भाभी!!"

"कौन?" भीतर से आवाज आई।

"सदानारायण। लाहौर से आया हूँ।"

"ओह! ठहरो मैं आ रही हूँ।"

वह कमरे के बाहर बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठ गया। पाँच मिनट में ऐमिली आयी।

"ओह! तुम यहीं बैठे हो?"

"भाभी! मैं चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लेने के लिए बैठा था।" उसने पाँव छूकर हाथ माथे को लगाया और सीधा हो हाथ जोड़ नमस्कार कर कहने लगा, "भाभी! आओ ड्राइंगरूम में। अभी तुम्हारा कुशल समाचार तो पूछा ही नहीं।"

"तो भीतर आ जाओ। मैं अब वहाँ नहीं जाती।"

दोनों शयनागार में चले गए। सदा ने भीतर जाते हुए पूछ लिया, "क्यों?"

"तुम्हारे भैया अपने वचन पर कायम नहीं रहे। इससे उनसे बातचीत करने को चित्त नहीं करता। ड्राइंगरूम में वे और उनके मित्र आते रहते हैं। इससे मुझको उनसे बातें करने का नाटक करना पड़ता है।"

शयनागार में ही उसने एक सोफा–सैट रखवा लिया था। वहाँ बैठे तो ऐमिली ने पूछ लिया, "यहाँ किसी काम से आये हो?"

"हाँ, भापा ने आगे की पढ़ाई विलायत जाकर करने के लिए कहा है। इस कारण मैं ऑक्सफोर्ड में किसी कॉलेज में प्रवेश पाने का यत्न कर रहा हूँ। उसी के सम्बन्ध में भैया से बातचीत करने आया हूँ।"

"यह तो कुछ भी कठिन नहीं है। कहो तो अभी अपने पिताजी को लिखूँ?"

"वे प्रबन्ध कर देंगे?"

"हाँ! उनका वहाँ बहुत रसूख है।"

"तो भाभी, लिख दो। मैं अपना बी.ए. पास का प्रमाण–पत्र साथ लाया हूँ।"

"मैं आज ही पत्र लिख देती हूँ। प्रमाण–पत्र और दूसरा वृत्तान्त ले आना।"

"पर भाभी! यह भैया से वैमनस्य की बात तो कुछ भली नहीं लगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दुनिया में बहुत–सी बातें हैं जो अपनी रुचि के विपरीत हो रही हैं। कौन मगज–पच्ची करे उनसे।"

"पर भाभी! पिछली बार एक बात पर मैंने मगज–पच्ची की थी और उसका इच्छित फल निकला था।"

"उसी का तो यह दुखद फल है।"

"तो इसके लिए यत्न क्यों नहीं हो सकता?"

"कौन करेगा यत्न?"

"मैं तो तुम सबसे छोटा हूँ। इस कारण कह नहीं सकता कि आप मेरा कहा मानेंगी अथवा नहीं। एक बार आपने कहा माना था। यदि अब आपने नहीं माना तो मैं बड़े भापा जी को यहाँ बुला लेता हूँ। हमारे घर के सब झगड़े वे ही फैसला करते हैं।"

"बात तो समझने की है न। यदि आप समझा सके तो आपकी बात क्यों नहीं मानी जा सकती।"

"पहले यह बताओ कि क्या वचन था जो भैया ने भंग किया है?"

"केवल तुम्हारे भैया ने ही नहीं, प्रत्युत साधना ने भी वचन भंग किया है। यह निश्चय हुआ था कि सर्वसाधारण में साधना पत्नी के रूप में रह सकती है परन्तु हमारा परस्पर का सम्बन्ध वही रहेगा जो उस दिन से पहले था। उन्होंने इस वचन का पालन नहीं किया।"

"देखो भाभी! मैं तुमको इस देश के पुराने इतिहास की बात बताता हूँ। एक थे राजा धृतराष्ट्र। वे अंधे थे। उनके भाई पांडु उनके स्थान पर राज्य करते थे, पांडु के पाँच पुत्र हुए–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। पाँचों भाइयों में परस्पर बहुत प्रेम था। बाल्यकाल में ही पांडु का देहान्त हो गया। पांडु के पुत्र वनों में जाकर रहने लगे। धृतराष्ट्र के पुत्र इन पाँचों से डरते थे और इनको मार डालने का यत्न करते रहते थे।

"पाँचों भाई वन में रहते थे। भिक्षा माँग कर पेट भरते थे। इस पर भी वे बहुत विद्वान् और शूरवीर थे। भिक्षा में जो कुछ मिलता वे अपनी माँ के सामने रख देते और माँ उनमें बराबर–बराबर बाँट देती। एक दिन वे पांचाल राज्य की राजधानी में पहुँचे। यहाँ के राजा की लड़की का स्वयंवर हो रहा था। उससे विवाह करने की अति कठिन शर्त थी। एक ऊँचे खम्भे के साथ एक मछली लटक रही थी। उसके नीचे एक चक्र घूम रहा था और चक्र के नीचे एक कुण्ड में स्वच्छ जल भरा था। उस जल में देखते हुए घूमते हुए चक्र के सुराखों में से एक बाण मार कर मछली की आँख बींधनी थी। यह बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँचों भाइयों में अर्जुन कर सका। राजा की लड़की ने अर्जुन के गले में जयमाल डाल दी। परन्तु यहाँ पर एकत्रित राजा–महाराजों को एक भिखारी को राजकुमारी को जीत कर ले जाना रुचिकर नहीं हुआ। उन्होंने राजकुमारी को उससे छीनना चाहा।

"पाँचों भाइयों ने राजकुमारी के हरण का विरोध कर राजा–महाराजों को युद्ध में परास्त किया और अपने घर को चले। सबसे छोटे भाई ने आगे जाकर माँ को कहा कि आज वे एक बहुत बढ़िया वस्तु लाये हैं।

"माँ ने समझा कि भीख में कोई बहुत बढ़िया वस्तु मिली है। इसलिए उसने कह दिया कि वह उसे पाँचों में बाँट देगी।

"सहदेव ने हँसते हुए कहा कि माँ ऐसा कर नहीं सकेगी।

"इस पर माँ को क्रोध चढ़ आया और उसने कह दिया कि वह सत्य ही उन सब में बराबर–बराबर बाँट देगी।

"इस समय शेष भाई द्रौपदी को लेकर आ गए। इस पर सहदेव ने हँसते हुए कहा, लो माँ! अब बाँटो?

"माँ ने अपना वचन पूरा कर दिया। उसने उस लड़की का पाँचों से विवाह कर दिया। इसके बाद उनको एक शक्तिशाली राजा का दामाद बनते देख धृतराष्ट्र ने उनको राज्य दे दिया।

"पाँचों–के–पाँचों पांडव द्रौपदी पर मुग्ध थे और वह बेचारी सब की कामना एकदम पूर्ण नहीं कर सकती थी। इससे उनमें परस्पर झगड़ा होने की सम्भावना देख एक अति विद्वान् और प्रतिष्ठित मुनि नारद आये और उनका झगड़ा इस प्रकार मिटा गए। एक–एक वर्ष द्रौपदी एक–एक भाई के भवन में रहे। जिस भवन में वह हो उस भवन में अन्य चारों भाई रात के समय न आयें। यदि कोई आये तो वह बारह वर्ष तक वन में रहे।

"इस प्रकार भाइयों में होने वाला वैमनस्य रुक गया।

"क्या कुछ ऐसा समझौता नहीं हो सकता?"

"उन भाइयों की बात मैं जानती नहीं। मैं इतना जानती हूँ कि इस प्रकार का समझौता आपके भाई तथा साधना नहीं मानेंगे।"

"यत्न तो किया जा सकता है?"

"क्या समझौता होगा?"

"यही कि एक–एक महीना डाक्टर अपनी एक–एक पत्नी के शयनागार में सोये।"

ऐमिली हँस पड़ी। उसने कहा, "हिन्दुस्तानी दिमाग अजीब है। यदि मास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में दूसरी को पति की इच्छा हो तो क्या करे?''

''वही, जो पति कहीं बाहर गया हो तो वह करती है। अर्थात् संयम से रहना।''

ऐमिली ने कह दिया, ''मैं साधना से युवा हूँ। इस कारण मेरे भाग में दो मास और उसके भाग में एक मास आना चाहिये।''

''यह भी हो सकता है। परन्तु तब यदि तुम पहले ढाई वर्ष तक पति की 'मोनोपोली' (एकाधिकार) साधना को दे दो। इतने काल तक मोनोपोली तुम्हारे पास रही है।''

ऐमिली चुप रह गयी। इसका अर्थ सदा ने यह समझा कि ऐमिली और जवाहरलाल की सुलह के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। उसे चुप देख सदा ने कहा, ''भाभी! मैं अपना सर्टिफिकेट और अंकों का कार्ड लेकर आता हूँ। तुम चिट्ठी लिख दो और मैं भैया को दिखाकर आज ही डाक में छोड़ आऊँगा।''

वह उठ कर गया और अपने सूटकेस में से अपनी डिग्री और यूनिवर्सिटी का अंकों का कार्ड इत्यादि ले आया।

मध्याह्न के भोजन के समय वह ऐमिली को कहने आया कि वह भोजन करने डाइनिंग हॉल में आवे। वह आने में संकोच करती थी। इस पर सदानारायण ने कहा, ''भाभी! सुलह हो सकती है। आओ।''

''नहीं, मैं नहीं आऊँगी?''

''क्यों?''

''मेरा चित्त नहीं करता।''

''चित्त क्या करने को कहता है?''

''फिर किसी समय बताऊँगी। अभी मुझको विचार करने दो।''

सदानारायण मुख देखता रह गया। इस पर उसने अपनी मेज की दराज में से पत्र और सर्टिफिकेट निकाल कर उसे देते हुए कहा–''यह तुम अपने भैया को दिखा दो और आज ही डाक में डाल देना। यदि पासपोर्ट बनने में कुछ कठिनाई हो तो वह भी बताना। मैं उसमें भी सहायता कर सकती हूँ।''

सदानारायण लौट आया। बैरा ऐमिली का खाना उसके कमरे में ले आया। भोजन करते हुए सदानारायण ने वह सब बात जवाहरलाल को बता दी, जो उसकी ऐमिली के साथ हुई थी।

''सदा! समझौता वहाँ होता है जहाँ नीयत ठीक हो। यहाँ नीयत में अन्तर आ गया है। एक बात जरूर है। मालूम नहीं कि यह बात उसको विदित है अथवा नहीं? सूरजसिंह की रैजीमैण्ट यहाँ से बदल कर क्वेटा जा रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया! जैसी भी वह है, तुम उसको पिछली बातों के लिए क्षमा कर स्वीकार करने के लिए तैयार हो अथवा नहीं?"

"मैं पिछली बात तो छोड़ सकता हूँ, परन्तु आगे के लिए गारन्टी चाहता हूँ।"

"यह तो है ही। देखें वह क्या कहती है। यह सम्भव है कि सूरजसिंह से उसकी कोई बात हुई हो और वह उससे किसी प्रकार के उत्तर की प्रतीक्षा में हो।"

"यदि वह सूरजसिंह के साथ भी चली जाये तो मैं सुख अनुभव करूँगा।"

"यदि उसे यह घर छोड़ना होता तो मुझको यह पत्र लिखकर न देती।"

"हाँ, यह भी विचारणीय बात है। यह पत्र तो बहुत ही प्रभावपूर्ण शब्दों में लिखा है। उसका पिता ऑक्सफोर्ड में प्रभावी व्यक्ति है।"

भोजन समाप्त हुआ तो सदानारायण ने ऐमिली का पत्र बन्द किया और एक पत्र बम्बई लिख दिया। उसमें उसने ऐमिली के व्यवहार की बात नहीं लिखी। केवल सुख–समाचार और सीट के लिए ऑक्सफोर्ड में पत्र की बात ही लिखी।

वह डाकघर गया और दोनों पत्र डाल आया। सायंकाल उसने सूरजसिंह को चाय के समय बुलाया हुआ था। उसने जवाहरलाल को बताया तो उसने उस समय वहाँ रहना पसन्द नहीं किया। वह साधना को लेकर क्लब चला गया। सूरजसिंह आया तो आगे बढ़कर उसने बताया, "मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"ऐमिली आ रही है या नहीं?"

"यदि आप चाहें तो मैं बुला सकता हूँ।"

"मैं स्वयं ही बुला लाता हूँ। आप चाय लगवाइये।"

यह कह वह ऐमिली के शयनागार में चला गया। यह बात सदानारायण को भली नहीं लगी।

: 4 :

इस पर भी सदानारायण ने बैरे को बुला कर तीन के लिए चाय लगाने के लिए कह दिया। बैरे ने हाथ जोड़ कर कहा, "सरकार! खफा न हों तो अर्ज करूँ?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप इन दोनों की बात में दखल न दें। यह औरत अच्छी नहीं है।"

"देखो हमीद! मैं सब जानता हूँ। इस पर भी कोई आदमी खुदकशी करने के लिए नदी में कूद पड़े तो एक तैराक का यह फर्ज होता है कि उसको डूबने से बचाए। नहीं बचेगा तो न सही। कोशिश करना अपना काम है।"

हमीद इसका उत्तर नहीं दे सका, परन्तु उसके मुख से यह स्पष्ट दिखाई देता था कि उसको इससे संतोष नहीं हुआ। वह चाय लगाने के लिए सामान लेने चला गया। सदानारायण को आधा घण्टा–भर प्रतीक्षा करनी पड़ी। दोनों आये तो जहाँ सूरजसिंह के माथे पर त्योरी थी, वहाँ ऐमिली का मुख पीला पड़ रहा था।

दोनों आकर बैठे तो बैरा चाय का पानी मेज पर रखने के लिए ले आया। खाने के लिए मिठाई इत्यादि रखी हुई थी। सदानारायण ने 'कवर' उठाया और उन दोनों को खाने के लिए कहा तो दोनों चुपचाप बैठे रहे। इस पर सदानारायण प्रश्न–भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा।

जब बैरा चला गया तो सूरजसिंह ने कहा, "सदानारायण! मैं चाय पीने नहीं आया था। यह ठीक है कि तुमने निमंत्रण दिया था मगर मैं एक और मतलब के लिए आया था।

"मैं तुमको समझाता हूँ। ऐमिली पिछले दो महीने से मेरी 'मिस्ट्रेस' है। हम दोनों बहुत प्यार करते थे।

"दो दिन हुए हमारी रैजिमेंट को क्वेटा, फ्रन्टीयर पर जाने का हुक्म आ गया है। मैं आज अपने कुछ अफसरों के साथ रात की गाड़ी से जाने वाला हूँ। आज प्रातःकाल ऐमिली मेरे साथ जाने के लिए तैयार हो गयी थी। अब मैं इसको लेने आया हूँ। इस विचार से कि कहीं डाक्टर इसके जाने में बाधा न डाले मैं अपने साथ भरा पिस्तौल लेकर आया हूँ।"

इतना कह उसने पिस्तौल जेब से निकालकर उसका लौक खोल दिया। सदानारायण की समझ में आ गया कि वह पिस्तौल को चलाने के लिए तैयार हो गया है। वह विचार कर रहा था कि किस पर इसका प्रयोग होगा। ऐमिली पर अथवा उस पर? उसने अपने कर्तव्य का निश्चय कर लिया। वह मुस्कराते हुए ध्यान से सूरजसिह की ओर देखता रहा।

सूरजसिंह ने आगे कहा, "मैं इसको अपने कमरे में अपना सामान बाँधे तैयार देखने की आशा करता था। परन्तु यह तैयार नहीं थी। मैंने इससे पूछा कि यह तैयार क्यों नहीं? तो यह बोली कि यह नहीं जा रही।

"मैंने पूछा कि क्यों?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह कहने लगी कि इसने बहुत विचार किया है और इस परिणाम पर पहुँची है कि इसका मुझसे वासनामय सम्बन्ध तो था। किन्तु वास्तविक प्रेम नहीं था, इस कारण इसने जाने का विचार छोड़ दिया है। मैंने पूछा कि क्या उसको वासना–तृप्ति का कोई और साधन मिल गया है?

"यह न तो हाँ करती है, न ही ना करती है। मुझको कुछ सन्देह है कि बीच में तुम आ खड़े हुए हो। तुमसे मेरा कोई गिला नहीं, मगर इस औरत ने मेरा दिल तोड़ दिया है और मैं इससे यह पूछता हूँ कि क्या मेरा अनुमान ठीक है?"

इतना कह उसने ऐमिली की ओर पिस्तौल तान दिया। सदा ने जोर से पिस्तौल वाले हाथ पर अपना हाथ मार दिया। वह सूरजसिंह के लिए अप्रत्याशित था। पिस्तौल हाथ से छुटकर दूर जा गिरी। सूरजसिंह उठ कर उसको पकड़ने दौड़ा परन्तु सदानारायण तो पहले ही इस सम्भावना पर विचार किये हुए था। उसने सूरजसिंह को कुर्सी पर से उठने के पहले ही धक्का दे उसकी कुर्सी उलट दी और उसके भूमि पर गिरते ही लपक कर पिस्तौल उठाकर दूर खड़ा हो गया।

ऐमिली ने तो जब पिस्तौल उसकी तरफ किया गया था जोर से चीख मार दी थी और सूरजसिंह की कुर्सी उलटती देख अपने कमरे की ओर चीखें मारती हुई भाग गई थी। सदानारायण ने पिस्तौल सूरजसिह की ओर तानी तो वह कोठी के द्वार की ओर भागा। सदानारायण ने उसको डराने के लिए एक गोली बिना निशाना बाँधे चला दी।

सदानारायण ने कभी पिस्तौल चलाई नहीं थी। यह गोली अनायास ही चल गयी थी। गोली सूरजसिंह के बाँये बाजू पर से मांस को छीलती हुई निकल गयी।

सूरजसिंह ने ऐमिली का सामान ले जाने के लिए कोठी के बाहर ताँगा खड़ा किया हुआ था। वह उस ताँगे में बैठ भाग गया।

इस घटना के होने पर सदानारायण ने समझा कि उसे भी यहाँ से भाग जाना चाहित। परन्तु उसे भापाजी की बात स्मरण आ गयी कि उसने लाहौर से भागकर ठीक नहीं किया। इससे उसने जवाहरलाल से राय करनी उचित समझ बैरे को डाक्टर साहब को बुला लाने के लिए भेज दिया।

हमीद भागता हुआ क्लब गया और जवाहरलाल को कोठी में हुई घटना बताकर ले आया। जवाहरलाल ने जब बात सुनी तो उसे साथ लेकर ब्रिगेडियर जैनरल के पास जा पहुँचा। मार्ग में उसने सदा से कहा, "जैनरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब से सब बात सत्य–सत्य बता देना और फिर कोई मुकदमा हुआ तो लड़ लेंगे। छिपकर बैठ रहना तो ठीक नहीं।''

ब्रिगेडियर जैनरल भी क्लब में था। जवाहरलाल ने ब्रिगेडियर को बाहर लॉन में सबसे दूर ले जाकर सदानारायण का परिचय करा दिया और कहा, "यह मेरा छोटा भाई है। यह आपके सामने पेश होकर एक घटना के विषय में बताना चाहता है, जो अभी हमारे घर पर हुई है।''

जैनरल ने सदानारायण की ओर प्रश्न–भरी दृष्टि से देखा तो सदानारायण ने अपने उसी दिन विलायत में दाखिले के लिए चिट्ठी लेने के लिए आने के विषय में बताया। फिर उसने कहा, "मैं अपनी भाभी ऐमिली सूद के साथ लॉन में बैठा चाय पी रहा था कि लैफ्टिनैन्ट सूरजसिंह आया और मुझसे चाय पीने का निमन्त्रण माँगने लगा। मैंने उसके लिए भी कुर्सी लगवा दी और प्याला मँगवा लिया। इस समय लैफ्टिनैन्ट ने ऐमिली से मजाक करना आरम्भ कर दिया। मैंने इसमें अपना और भाभी का अपमान समझा। मैंने उसको कहा कि वह कोठी से निकल जाये नहीं तो धक्के दिलवाकर निकलवा दूँगा। इस पर उसने जेब से पिस्तौल निकाल लिया। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों गुत्थम–गुत्था हो गये। पिस्तौल उसके हाथ से गिर गया। मैंने पिस्तौल उठाकर डराने के लिए एक गोली चला दी। वह, जहाँ तक मेरा ख्याल है, उसको लगी नहीं, परन्तु वह भाग गया है।

"यह पिस्तौल है।'' सदानारायण ने पिस्तौल निकालकर दिखा दिया। ब्रिगेडियर जैनरल ने पिस्तौल खोल उसमें गोलियाँ गिन डाली। छः गोली का पिस्तौल था। पाँच गोली उसमें थीं। उसने कहा, "वह अभी तक रिपोर्ट करने नहीं आया। ऐसा मालूम होता है कि उसको चोट नहीं लगी।

"देखो नौजवान! तुमने बहुत ठीक किया है जो यहाँ आ गये हो। मुझको यह बताया गया है कि सूरजसिंह मिसेज सूद के पीछे लगा हुआ है। मेरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है। अगर तो वह रिपोर्ट करने आया और उसको कोई 'सीरियस इंजरी' (घातक चोट) हुई तो मुआमला कोर्ट मार्शल के हवाले हो जायेगा। नहीं तो कुछ नहीं होगा। तुम यहीं बैठो। देखें वह आता है या नहीं।''

सदानारायण, जवाहरलाल के समीप ही कुर्सी पर बैठ गया। डाक्टर ने चाय मँगवा उसको पिलायी और सूरजसिंह के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

सूरजसिंह नहीं आया। इस पर जैनरल ने एक अन्य लैफ्टिनैन्ट को बुलाकर कहा, "जाकर देखो सूरजसिंह कहाँ है।''

लैफ्टिनैन्ट जे.एस. हैमिल्टन बैरैक्स को चला गया। सूरजसिंह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगले में नहीं था। बंगला खाली पड़ा था। हैमिल्टन ने आकर बताया तो यह अनुमान लगाया गया कि वह अपनी गाड़ी पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन पर चला गया होगा।

यह विचार कर ब्रिगेडियर जैनरल ने हैमिल्टन को वह पिस्तौल जो सदानारायण ने उसको दिया था, देते हुए कहा, "वह मूर्ख लैफ्टिनैन्ट अपना पिस्तौल सड़क पर फेंक गया है। वह चोरी हो गया है ऐसी रिपोर्ट करने वाला प्रतीत होता है। यह उसको दे आओ और कहो कि मैंने भेजा है।"

लैफ्टिनैन्ट हैमिल्टन ने घड़ी में समय देखा और क्लब में से एक बाईसिकल लेकर रेल के स्टेशन को चल पड़ा। जब वह चला गया तो ब्रिगेडियर जैनरल ने सदानारायण को कहा, "तुम जा सकते हो। मगर यहाँ से जाने से पहले मुझको मिलकर जाना। अगर किसी प्रकार का झगड़ा हुआ तो तुमको कोर्ट मार्शल में अपनी पैरवी करनी होगी। इस पर भी मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

अभी जवाहरलाल सदानारायण को लेकर अपने बंगले को जाने ही वाला था कि ब्रिगेडियर जैनरल एक अन्य अंग्रेज सैनिक अधिकारी से कहता सुना गया, "इस हिन्दुस्तानी कुत्ते लैफ्टिनैन्ट ने भागकर सेना का नाम बदनाम किया है।"

सदानारायण को इस गाली से बहुत लज्जा लगी, परन्तु, वह विचार करता था कि सूरजसिंह का व्यवहार सर्वथा भीरुओं का–सा था। यह स्मरण कर कि वह 'ड्यूल' (द्वन्द्व युद्ध) नहीं लड़ रहा था, प्रत्युत वह एक औरत को पिस्तौल दिखाकर धमका रहा था, वह चुप कर गया।

दोनों भाई कोठी को लौट आये। वहाँ नौकरों से पता चला कि ऐमिली अपने सोने के कमरे में अचेत पड़ी है और बड़ी सरकार उसके पास बैठी हैं। वे दोनों उधर ही चले गये। यह ठीक था कि ऐमिली इतनी डर गयी थी कि वह रह–रहकर अचेत हो जाती थी और साधना उसके पास बैठी 'स्मैलिंग साल्ट' सुँघा रही थी।

जवाहरलाल ने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा, "ऐमिली डीयर! कैसी हो?"

ऐमिली ने आँख उठाकर सदा को डाक्टर के पास खड़े देखा तो एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा और पूछ लिया, "क्या हुआ है?"

"कुछ नहीं। हम ब्रिगेडियर जैनरल के पास गये थे। वह इस घटना की रिपोर्ट करने नहीं गया। अपने पिस्तौल की भी यहाँ रह जाने की बात बताने नहीं गया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब कुछ नहीं होगा?"

"उम्मीद तो यही है। हमने पिस्तौल ब्रिगेडियर साहब को दे दिया है।"

ऐमिली ने कृतज्ञता–भरी दृष्टि से सदानारायण की ओर देखा और एक प्याला कॉफी मँगवाई। बैरा को कॉफी लाने के लिए कह ये दोनों भी वहीं बैठ गये। इधर–उधर की दिल बहलाने की बातें होती रहीं। किसी ने सूरजसिंह की बात नहीं की।

बैरा कॉफी बनाकर लाया तो ऐमिली ने उठकर पलंग पर बैठे–बैठे पी। तदनन्तर वह साधना का आश्रय ले अपने शयनागार से बाहर निकली। बाथरूम में गयी और फिर ड्राइंग–रूम में गयी। अभी ये लोग भोजन के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे कि लैफ्टिनैन्ट हैमिल्टन आया और डाक्टर को सम्बोधन कर बोला, "डाक्टर! सूरज ने मुझको आपके लिए यह संदेश भेजा है कि उसको बहुत खेद है कि उसने मिसेज सूद का अपमान कर दिया था। वह आप दोनों से क्षमा चाहता है।"

डाक्टर ने लैफ्टिनैन्ट को बैठाया और पूछा, "वह बिल्कुल ठीक था क्या?"

"वह कहता है कि उसके कंधे पर मामूली–सी खुरच लगी है। उसकी बाँह 'स्लिग' में थी।"

लैफ्टिनैन्ट को कॉफी लेने के लिए कहा गया परन्तु उसने कहा, "मुझको ब्रिगेडियर के पास रिपोर्ट करनी है। इस कारण मैं रुक नहीं सकता।"

वह गया तो ये सब भोजन के लिए चले गये। आज कई महीने बाद ऐमिली ने अपने पति और साधना के साथ बैठकर खाना खाया। जवाहरलाल देख रहा था कि सदानारायण मानव–प्रवृत्ति को उससे अधिक समझता है। आने के बाद कुछ ही घंटों में उसने उसके घर की यह दूसरी समस्या सुलझायी थी। पहली बार भी उसको बात सुलझाने में कुछ घंटे ही लगे थे।

रात को खाने के समय, जवाहरलाल ने पूछा, "सदा! कब तक यहाँ रहने का विचार है?"

"यों तो एक महीना–भर रहने के लिए आया था। परन्तु अब कदाचित् शीघ्र ही जाऊँगा।"

"क्यों?"

"ऐसे ही।"

साधना उस रात ऐमिली के साथ सोयी और उसको समझाती रही। उसने फिर कहा कि पति–सुख की प्राप्ति में अथवा पति के साथ घूमने–फिरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वह सदा उसके पीछे रहेगी, वह स्वयं तो घर के काम–काज से ही सन्तुष्ट है।

परन्तु ऐमिली के मन में कुछ और ही था। वह उसने सदानारायण को मध्याह्न के समय बताया। भोजनोपरान्त सदानारायण अपने कमरे में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था कि वह आ गयी और उसके समीप कुर्सी पर बैठकर कहने लगी, "मैं तुम्हारा धन्यवाद करने आयी हूँ?"

"किस बात के लिए?"

"तुमने कल मेरी जान बचा दी है। वह क्रूर तो मेरे हृदय पर गोली चलाने वाला था।"

"परन्तु भाभी! मुझे जो कुछ करना चाहिए था, और जो कुछ कर सका, किया। अपने परिवार की मान–प्रतिष्ठा के लिये चाहिए तो यह था कि मैं उसको मार डालता। भले ही पीछे फाँसी चढ़ जाता। परन्तु इसके बाद किसी को आपकी ओर बुरी दृष्टि से देखने का साहस न होता।"

"तो तुम, जो कुछ उसने मेरे विषय में कहा है, उस पर विश्वास नहीं करते न?"

"एक 'स्वाईन' (सूअर) के कथन का कौन विश्वास करेगा?"

"मैं तुम्हारी बहुत आभारी हूँ। अगर मैं अपने हृदय की बात कहूँ तो वह यह है कि कल से मैं तुमसे प्रेम करने लगी हूँ।"

"प्रेम? भाभी! मैं तो तुम्हारा छोटा भाई हूँ और बहन–भाई में 'अफैक्शन' (स्नेह) होता है, प्रेम नहीं।"

"मैं दोनों शब्दों के अर्थों में अन्तर समझती हूँ और वह समझ कर ही कह रही हूँ कि मेरे हृदय में तुम्हारे लिए 'लव' का अंकुर जम गया है। इसके नाते मैं तुमसे बहुत कुछ पाने का अधिकार रखती हूँ।"

"यही तो तुम्हारे और हमारे हिन्दुस्तानी ढंग से सोचने में अन्तर है। हम बहन–भाई के परस्पर स्नेह का अधिकार बहुत बड़ा मानते हैं। यह पति–पत्नी में प्रेम के अधिकार से भी बड़ा है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब स्पष्ट है। बहन भाई से बहुत–कुछ माँग सकती है। प्रेम तो इस स्नेह से बहुत घटिया शब्द है। जहाँ स्नेह निरस्वार्थ भाव का प्रतीक है वहाँ प्रेम में स्वार्थ–ही–स्वार्थ दिखाई पड़ता है।"

"मैं यह समझती हूँ कि प्रेम एक व्यापक शब्द है। स्नेह उसके अन्तर्गत आ जाता है। प्रेम का अधिकार भी बहुत बड़ा है। स्नेह का अधिकार छोटा होने से उसके भीतर ही आ जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलो ऐसा ही सही, परन्तु भाभी! एक बात तुमको समझ लेनी चाहिए कि मैं अपने भाई का बहुत आदर करता हूँ। उसकी मान–प्रतिष्ठा के लिए मैं अपना सर्वस्व दे सकता हूँ। उसके प्रति तुम्हारी निष्ठा भी उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न है। इसकी रक्षा कहना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।"

"यदि आप मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं करते तो मेरे लिए यहाँ रहना कठिन हो जायेगा।" ऐमिली सदानारायण से ड्राइंग–रूम में बैठी कह रही थी।

: 5 :

सदानारायाण को जबलपुर में आये हुए पन्द्रह दिन से अधिक हो चुके थे। जवाहरलाल अस्पताल गया हुआ था। साधना अपने कमरे में बैठी रामचरित मानस का पाठ कर रही थी। सदानारायण ड्राइंग–रूम में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था कि ऐमिली उसके पास आ बैठी।

लैफ्टिनैंट सूरजसिंह के साथ झगड़े के बाद में ही ऐमिली सदानारायण से अपने सम्बन्ध बनाने के लिए यत्न कर रही थी। दिन–प्रतिदिन उसका आग्रह बढ़ रहा था। सदानारायण उसको अभी तक टालता आ रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि ऐमिली आज अंतिम निर्णय करने के लिए तुली हुई है।

एकाएक सदानारायण के मन में विचार आया कि सम्भव है ऐमिली के पीछे कोई अन्य सैनिक अफसर लग गया हो और वह उस सैनिक अधिकारी पर उसको प्राथमिकता देती हो। इस बात का विचार आते ही उसे विचार आया कि इस औरत को निराश करना उचित नहीं होगा। वह पतित होकर कोई भयंकर बात भी कर सकती है। अतः उसने ऐमिली की आँखों में देखकर कहा, "भाभी! तुम एक बात नहीं समझती।"

"क्या?"

"यहाँ सब नौकर तुम पर दृष्टि रखते हैं। वे सब–के–सब तुम्हारे सूरजसिंह के सम्बन्ध के विषय में जानते हैं। इस समय भी वे तुम्हारे, मेरे साथ चलने–फिरने को देखकर पुनः सन्देह करने लगे हैं। इस बार वे मुझको तुम्हारे साथ फँसा देख मुझको भी बदनाम करेंगे। परिणाम यह होगा कि भैया से मेरी लड़ाई हो जायेगी और मैं विवश हो यहाँ से चला जाऊँगा।

"यदि तुम यह चाहती हो कि मैं यहाँ से चला जाऊँ तो फिर लड़कर जाने से क्या यह अधिक ठीक नहीं होगा कि बिना लड़े ही चला जाऊँ? बताओ क्या चाहती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जो चाहती हूँ, वह बता चुकी हूँ।"

"तो ऐसा करो कि धीरज रखो। भाभी! तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। परन्तु उसके लिए समय, स्थान और अवसर की प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारी करुणाजनक अवस्था का अनुमान लगाकर बहुत दुःख अनुभव करता हूँ। परन्तु इस प्रकार धीरज छोड़कर बेतहाशा भागने से तो तुम स्वयं भी गड्ढे में गिरोगी और मुझको भी साथ ही ले डूबोगी।

"इसके साथ ही एक बात और विचार कर लो। यदि तो मेरा और तुम्हारा किमी प्रकार का घनिष्ठ सम्बन्ध बनने वाला है, तो इस सम्बन्ध को स्थायी और सुलभ करने के लिए आपको भैया में बहुत अच्छे सम्बन्ध बना लेने चाहिये। जितना अधिक तुम भैया का विश्वास प्राप्त कर सकोगी, मेरी तुम्हारे चरणों में बैठ तुम्हारे सौन्दर्य की छत्रछाया में सुख साधना उतनी ही सुगम हो जायेगी।"

"तो तुम वचन दो कि मुझको अपने संरक्षण में ले लोगे।"

"वह तो है ही। संरक्षण में तो तुम पहले ही हो। मैंने सूजसिंह से तुम्हारी रक्षा करने में भारी भय मोल लिया था। यह अकारण नहीं था।"

"तो कब तक प्रतीक्षा करनी होगी?"

"यह कहना कठिन है। तुम अपना व्यवहार ऐसा बनाओ कि भैया, बड़ी भाभी और यहाँ के नौकर–चाकर सब तुम पर विश्वास करने लगें और समझें कि तुम वह नहीं रहीं जो पहले थीं। इससे हमारा मार्ग सुगम हो जायेगा।"

"तो जीवन–भर मुझको प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?"

"मैंने यह नहीं कहा। इस पर भी हम हिन्दू तो इतनी लम्बी प्रतीक्षा करने के लिए भी तैयार हैं। हमारे लिए जन्म–मरण तो वस्त्र बदलने से कुछ अधिक महत्त्व की बात नहीं होती। भाभी! साहस पकड़ो। मैं यत्न कर रहा हूँ कि भैया नौकरी छोड़ बम्बई काम करने चले जाएँ। तब तो मुझको तुम्हारी संगति का अधिक अवसर मिल सकेगा।"

ऐमिली इन उद्‌गारों को सुन कितनी ही देर तक इनका अर्थ समझने में लगी रही। प्रत्यक्ष रूप में सदानारायण ने असंदिग्ध शब्दों में स्वीकार किया था कि वह उसकी इच्छा–पूर्ति के लिए तैयार है। जो बात अस्पष्ट थी, वह थी उसकी इच्छा–पूर्ति का समय, स्थान निश्चित नहीं था। कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि जबलपुर इस बात के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।

इस पर भी वह नित्य से अधिक प्रसन्न दिखाई देने लगी। जवाहरलाल भी इस परिवर्तित परिस्थिति को अनुभव कर रहा था। ऐमिली की इस बदली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था का कारण सदानारायण ने जवाहरलाल को बता देना चाहा था। वह नहीं चाहता था कि प्रसन्नता के कारण उसमें और भैया में भ्रम और संदेह की सृष्टि होने लगे।

उसने भैया के साथ–साथ साधना को भी पूर्ण परिस्थिति बता देनी उचित समझी।

उसी दिन मध्याह्नोत्तर ऐमिली अपने शयनागार में आराम कर रही थी, कि वह डाक्टर के शयनागार के बाहर जा आवाज देने लगा, "भैया!"

"कौन? सदा!"

"हाँ भैया!"

"आ जाओ।"

सदा भीतर चला गया।

"सुनाओ, किस मतलब से आये हो?"

"भैया! मैं बम्बई जाना चाहता हूँ?"

"क्यों?"

"यहाँ तुम्हारे घर में न्याय का राज्य प्रतीत नहीं होता। जहाँ न्याय नहीं, वहाँ सुख और शान्ति नहीं रह सकती।"

"सदा! बात स्पष्ट कहो। मैंने तुम्हारे जितना साहित्य और इतिहास नहीं पढ़ा हुआ कि रहस्यवादी एक वाक्य में पुस्तक भर लिखने का वृत्तान्त पा जाऊँ। एक–एक बात समझाकर बताओ।"

"मैंने कहा है कि इस घर में न्याय का राज्य नहीं। भैया! इसमें कौन–सी रहस्यमयी बात है जिसको तुम समझ नहीं सके?"

"देखो सदा। यह मेरा घर कोई राज्य नहीं। यहाँ कोई राजा नहीं– न्याय–अन्याय की बात तो बाद में देखेंगे।"

"घर अथवा परिवार एक देश के समान ही होते हैं। इसमें घर का मालिक ही राजा है। इसमें रहने वाले प्रजागण हैं। राजा अर्थात् घर के मालिक को ऐसा बर्ताव करना चाहिए कि इसमें रहने वाली प्रजा संतुष्ट, प्रसन्न और सुखी रहे।"

"कौन दुखी है यहाँ?"

"ऐमिली।"

"क्या दुःख है उसको?"

"जब से आपने साधना भाभी को अपनी स्वाभाविक स्थिति पर आसीन किया है तब से ही ऐमिली की आपने अवहेलना की है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या उसने शिकायत की है?"

"इन शब्दों में तो नहीं, परन्तु उसके कहने और व्यवहार का यही अर्थ निकलता है। भैया! यह निश्चित मत है कि स्त्री को संतुष्ट रखा जाये तो वह फिर घर छोड़कर नहीं जाती। ऐसा बताया जाता है कि स्त्री एक 'होमली डोमैस्टिकेटिड ऐनिमल' (घरेलू, पालतू प्राणी) है। जब उसको घर से असन्तोष होता है तब ही वह घर से निकलती है।"

"सदा। तुम अभी अविवाहित युवक हो। तुम समझ नहीं सकते कि एक औरत में घर में रहने अथवा पालतू प्राणी की भाँति रहने के अतिरिक्त भी कुछ बातें उसके स्वभाव में हैं। उनमें ईर्ष्या और द्वेष मुख्य हैं। ईर्ष्या और द्वेष की तृप्ति तो हो ही नहीं सकती, जितना इनको तृप्त किया जाये, उतना ही ये अधिक भड़कते हैं।"

"भैया! तुम ठीक कहते हो। परन्तु मैं इस ईर्ष्या और द्वेष के कारण की बात कह रहा हूँ। देखो भैया! दशरथ की तीन रानियाँ थीं और उनमें ईर्ष्या–द्वेष उत्पन्न हुआ तो विनाश की नींव पड़ गयी। परन्तु पाँच पांडवों की एक पत्नी थी। उनमें ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न नहीं हो सका। कारण समझते हैं आप?"

"नहीं; तुम बताओ।"

सदानारायण ने नारद द्वारा पाचों पतियों में समझौते का उपाख्यान सुना दिया। साधना खिलखिला कर हँस पड़ी। हँसते हुए उसने कहा, "सदा! तुमने उपाख्यान अधूरा सुनाया है। इसका एक अंग यह भी है कि पाँचों पाण्डवों ने द्रौपदी के अतिरिक्त भी पत्नियाँ रखी हुई थीं। अतः उनमें झगड़ा नहीं हो सका। यहाँ भी हमने ऐमिली को एक और पति रखने की स्वीकृति दे रखी थी जब तक वह पति रहा–शान्ति रही, अब पुनः वह एक नवीन पति की खोज में प्रतीत होती है। जब पा जावेगी तब पुनः शान्ति हो जायगी।"

"परन्तु भाभी! तुम दो वर्ष से ऊपर अपने पति से त्यक्ता रही हो, तुमने तो दूसरा पति ढूँढ़ने का यत्न नहीं किया था?"

"इस कारण कि मेरे ईर्ष्या और द्वेष के ऊपर एक अंकुश है। वह है धर्म का। उस पर वह अंकुश नहीं है।"

"तो भाभी! यह निर्माण होना चाहिए था। अब भी हो सकता है। यदि इस विचार से भी देखें तो उस पर अन्याय हो रहा है।

"भाभी! तुम पर यह अंकुश बड़े भापा ने निर्माण किया था। वह तुमने उस पर इतने वर्ष में निर्माण क्यों नहीं किया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह हो नहीं सका, इसलिए कि उसके संस्कार, उसकी भावना और उसका साहित्य दूसरे देश के थे। मुझको तो बहन मोहिनी रामचरित मानस सुनाने लगी। तायीजी उसके अर्थ और व्याख्या बताने लगीं। ऐमिली के लिए यह कौन करता? मैं अपने मन की बात उसको समझा नहीं सकती। समझाती हूँ तो वह समझ नहीं पाती। यदि कुछ समझती भी है तो उसके संस्कार, जिनके कारण वह तुम्हारे भैया से विवाह करने में सफल हुई थी, अब भी विद्यमान हैं।

"वह क्लब में जाती है। वहाँ सैनिक अधिकारियों के साथ नाचती है। उनमें से प्रायः बिना पत्नियों के यहाँ ठहरे हुए हैं। वे ऐमिली के मन में विकार उत्पन्न करने में सहायक होते रहते हैं।"

"यह सब ठीक है। इन बातों के विषय में विचार करने का अवसर विवाह से पूर्व था। जब एक बार विवाह हो गया तो फिर नारद द्वारा पांडवों में किये समझौते के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं?"

"उस समझौते पर कार्य करने के अनन्तर ही उससे निष्ठा की आशा की जा सकती है।"

"सदा! जब से उसका सूरजसिंह से सम्बन्ध बना था, तब से मेरा चित्त उसके साथ सम्बन्ध रखने को नहीं करता।"

"तो फिर उसको 'रिलीज' (पत्नी पद से मुक्त) कर दो। इसमें तो और भी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं?"

जवाहरलाल की समझ में आ रहा था कि एक अंग्रेज लड़की से हिन्दू ढंग से विवाह करने पर कैसी–कैसी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। उनके आचार–विचार में अन्तर होने से हिन्दू विवाह का विधान चल नहीं सका। यदि विवाह कोर्ट में होता होना तो हो ही न सकता। इस कारण वह होती तो उसकी मिस्ट्रेस ही। तब उसको छोड़ना सुगम हो जाता।

बच्चों की बात विचार कर तो वह काँप उठा। सदा ने कहा, "एक सुझाव है।"

"क्या?"

"सैनिक नौकरी छोड़ दो। बम्बई में चलकर चिकित्सा–कार्य करो। ऐमिली को भापाजी तथा तायीजी के सम्पर्क में आने दो। उसके संस्कार बदलने का यत्न किया जायेगा।"

"देखो सदानारायण! मैंने इस समस्या पर बहुत विचार किया है। इस विचार का एक ही परिणाम निकला है कि प्राइवेट प्रैक्टिस से सर्विस बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ है। मैं इसको छोड़ूँगा नहीं।''

''तो साधना और ऐमिली को कुछ काल के लिए बम्बई भेज दो?''

''तुम कुछ बच्चों की–सी बातें करते हो।''

सदानारायण विस्मय में मुख देखता रह गया। इस पूर्ण बात में दो बातें स्पष्ट उभर आयी थीं। एक तो यह कि जवाहरलाल स्वतन्त्र रूप में कार्य करने से नौकरी अधिक पसन्द करता है। दूसरे, वह न तो अपने को हिन्दुस्तानी जीवन के अनुसार बना सका है और न ही अंग्रेजी जीवन के अनुसार। कदाचित् उसका, अपने पिता की योग्यता पर भी और उनकी जीवन मीमांसा पर भी विश्वास नहीं रहा।

इस प्रकार बात समाप्त हो गयी। परन्तु ऐमिली अब सदानारायण की योजना पर काम करने लगी थी। वह अपने पति और कोठी के नौकरों के मन में अपने सुधरे चरित्र का विश्वास बैठाने में यत्नशील हो गयी थी।

सदानारायण तो अब ऐमिली के स्थान साधना की संगति को उपमा देने लगा था। साधना ने पूछा भी, ''सदा! ऐमिली तुम्हारी संगति के बिना तो और भी उदास हो रही होगी?''

''मैंने उसको सुधारने का विचार छोड़ दिया है?''

''क्यों?''

''जब भैया इसमें स्वयं कुछ भी करना नहीं चाहते, तो मेरा पूर्ण प्रयास निरर्थक सिद्ध होने वाला है।''

''एक बात तो थी। तुमसे फ्लर्ट कर वह अपना दिल प्रसन्न कर लेती थी।''

फ्लर्ट शब्द सुन सदानारायण के पाँव–तले से मिट्टी निकल गयी। उसकी समझ में आया कि साधना उसके चरित्र के विषय में संदेह करने लगी है। उसने केवल इतना कहा, ''उसको फ्लर्टेशन के लिए तो अन्य माध्यम भी मिल जायेंगे, परन्तु मुझको अपने उद्देश्य में सिद्धि नहीं मिली। इससे मैंने उसका विचार छोड़ दिया है।''

साधना इससे आगे बात चला नहीं सकी। साधना और जवाहरलाल को जिस बात पर आश्चर्य हुआ था, वह ऐमिली का व्यवहार था। वह अब अपना अधिक और अधिक समय जवाहरलाल और साधना की संगति में व्यतीत करने लगी थी।

सदानारायण को जबलपुर आये एक महीना से ऊपर हो चुका था। इंग्लैंड से ऐमिली के पिता का पत्र आ गया कि सदानारायण को आगामी सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पहले आ जाना चाहिए। उसके प्रवेश का प्रमाण–पत्र आगामी डाक से भेज दिया जायेगा। सदानारायण ने बताया कि इस स्थिति में उसको पासपोर्ट बनवाने के लिए बम्बई जाना चाहिये। निर्मलचन्द्र राय ने आश्वासन दिया था कि वह बम्बई में बनवा देगा।

सदानारायण को भय था कि उसके बम्बई चलने पर ऐमिली वहाँ चलने की इच्छा प्रकट न कर दे। उसको भी विस्मय हुआ, जब ऐमिली ने सदा को बम्बई जाने के लिए प्रोत्साहन दिया। इस पर सदानारायण ने कहा, "भाभी। बम्बई चलोगी?"

"कैसे जा सकती हूँ?"

"क्यों? क्या कठिनाई है?"

"कठिनाई तुमको नौ मास बाद पता चल जायेगी। औरतें किसी बँधी हुई गाय के तुल्य ही हैं।"

"भाभी! क्या मैं तुमको भैया से सुलह हो जाने के विषय में बधाई दूँ?"

"यह बधाई तुम अपने भैया को देना जो एक लम्बे–चौड़े परिवार के पिता होते जाते हैं।"

जवाहरलाल सदानारायण को स्टेशन तक छोड़ने के लिए गया। बात जवाहरलाल ने कही, "सदा! तुम एक बार यहाँ आये थे तो साधना को पुनः प्रतिष्ठित स्थान पर बैठा गये। तुम दूसरी बार आये हो तो सूरजसिंह का पत्ता काट चले हो। ऐमिली इसके लिए तुम्हारी जीवन–भर आभारी रहेगी। परन्तु दोनों बार तुम मेरे लिये एक नयी समस्या उत्पन्न करते रहे हो।"

"क्यों? क्या किया है मैंने?"

"पहली बार सूरजसिंह तुम्हारे प्रयास का ही परिणाम था। उस चाय–पार्टी के दिन में ही उसने ऐमिली से सम्पर्क बनाना आरम्भ कर दिया था। मैं उससे झगड़ा करना नहीं चाहता था। कारण यह कि ऐमिली की दुर्बलता के कारण मेरे झगड़ा करने पर सब मेरी ही हँसी उड़ाते।

"दूसरी बार आये तो तुम सूरजसिंह को ऐमिली के अपहरण करने में बाधा बन गये। परन्तु ऐमिली एक और बच्चे से हो गयी है। मैं नहीं जानता कि वह किसका है। संदेह है लैफ्टिनैन्ट हैमिल्टन पर। ऐमिली पिछले दिनों उससे बहुत नाचती रही है। संदेह होता है तुम पर। वह हेमिल्टन से भी अधिक तुम्हारे सम्पर्क में रही है। और मैं तो बुद्धू ही बना रहा हूँ।

"आज मुझको सन्देह हो रहा है कि पहले बच्चे भी किसी अन्य के, मेरे गले मे डाले गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया!" सदानन्द ने कुछ डाँट के भाव में कहा, "मेरा विचार है कि तुम्हारी मानसिक अवस्था का इलाज ऐमिली से अधिक आवश्यक प्रतीत होता है। तुम नौकरी से अवकाश लेकर भापाजी के पास आकर रहा करो। दोष तुम में है। ऐमिली के विषय में मैं कुछ नहीं जानता।"

"तो तुम मुझको पागल समझते हो?"

"नहीं, पागल नहीं। परन्तु भ्रम में फँसा हुआ तो मानता ही हूँ। तुमको भ्रम रोग है। इसकी चिकित्सा तो सदुपदेश ही है। मैं भापाजी से अच्छा आदमी नहीं जानता, जो आपको सदुपदेश दे सके।"

"मुझको तो अवकाश मिल नहीं सकता। मैं समझता हूँ तुम तो भापा जी के सदुपदेशों से लाभ उठाते ही होगे। वे तुमको मुबारिक रहें।"

इस प्रकार जाते समय सदानारायण भाई से लड़कर ही गया।

: 6 :

लाहौर और दिल्ली में चलने वाले बमों की पार्टी का सुराग मिल गया। किसी दीनानाथ के नाम का एक पत्र लाहौर डाकखाने में पकड़ा गया। उसमें कुछ सन्देहात्मक वाक्यों के कारण दीनानाथ नाम के व्यक्ति की खोज होने लगी। लाहौर में कई दीनानाथ पकड़े गये और उनसे पूछताछ की गई। अन्त में एक दीनानाथ पर सन्देह पक्का हो गया और उसको मारा–पीटा और तंग किया गया। वह दीनानाथ बक गया। छः व्यक्ति दिल्ली और लाहौर में पकड़ गये। इनका नेता रासबिहारी बोस पकड़ा नहीं गया और वह देश से भाग कर जापान जाने में सफल हो गया। इस दल के दो युवकों को फाँसी का दण्ड हुआ और शेष चार को पहले आजन्म कैद का और फिर छः वर्ष कठोर कैद का दण्ड हुआ।

गदर पार्टी का बल भी पंजाब में ही अधिक था। अमेरिका से प्रायः सिक्ख ही इस दल में सम्मिलित होकर आये थे। ये लोग पंजाब के रहने वाले थे और यहीं इन्होंने अपना कार्य–क्षेत्र बनाया था।

सन् 1914 आ गया था। इस समय एक घटना हो गई। आस्ट्रिया हंगरी का राजकुमार सर्विया में भ्रमण करते हुए, एक सर्वियन युवक के हाथ से मारा गया। हत्यारा पकड़ा गया। सर्विया ने उस युवक पर स्वयं मुकदमा करने का निश्चय किया। आस्ट्रिया की सरकार ने इस युवक को माँगा, जिससे वे इस पर मुकदमा कर सकें। सर्विया नहीं माना। आस्ट्रिया ने सर्विया पर आक्रमण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर दिया। आस्ट्रिया–हंगरी के पक्ष में जर्मनी सम्मिलित हो गया। इंग्लैंड तथा फ्रांस सर्विया के पक्ष में हो गये। इटली अंग्रेजों का सहायक हो गया। रूस सर्विया का पक्ष लेकर इंग्लैंड और फ्रांस का सहायक हो गया। रूमानिया और टर्की जर्मनी के साथ हो गये और यूनान अंग्रेजों के साथ। इस प्रकार यूरोप में व्यापक युद्ध आरम्भ हो गया।

नार्वे, बैल्जियम तथा हॉलैंड को तो बलपूर्वक युद्ध में सम्मिलित कर लिया गया। जर्मन सेनाएँ इन देशों को अपने अधिकार में लेकर, इनमें से होती हुई फ्रांस में घुस गईं। नार्वे के कुछ बन्दरगाहों में, इंग्लैंड के जहाजों को हानि पहुँचाने के लिए सबमैरीन (पनडुब्बियों) के अड्डे बना लिए गये।

इन दिनों निर्मलचन्द्र प्रायः नित्य, जब वह बम्बई में होता था, रामरक्खामल्ल की प्रातः की प्रार्थना सुनने आया करता था। वह अपनी योजनाओं में रामरक्खामल्ल से राय लिया करता था। एक दिन वह आया तो प्रातः का अल्पाहार लेने के लिए ऊपर की मंजिल पर उनके साथ जा पहुँचा।

वहाँ बैठ रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "निर्मलचन्द्रजी! युद्ध का क्या समाचार है?"

"युद्ध में अंग्रेजों की निश्चित रूप से हार होगी। अभी भी इंग्लैंड के सागर के इतने पोत डूब चुके हैं कि उसका व्यापार ठप्प हो गया है और वहाँ के रहने वालों को खाने–पहनने की कठिनाई होने लगी है।"

"यह तो सत्य ही चिन्ता का विषय है!"

"हाँ, अंग्रेजों के लिए। किन्तु जिस बात से शत्रु की चिन्ता बढ़े, उससे हमारी प्रसन्नता बढ़ती है।"

"हाँ! यह सिद्धान्त तो स्वाभाविक है, परन्तु शत्रु और मित्र की पहचान में तो भ्रम हो सकता है न? अंग्रेज भारत का शत्रु है, परन्तु यह तो कोई नहीं कह सकता कि जर्मनी भारत का मित्र है। आप इस विषय में कुछ जानते हों तो बताइये।"

"मैं तो एक नीति की बात जानता हूँ। वह यह कि शत्रु का शत्रु मित्र हो सकता है।"

"और नहीं भी हो सकता।"

"इसकी हम परीक्षा करने जा रहे हैं। भारत के कुछ लोग यहाँ से भाग कर जर्मनी पहुँचने में सफल हो गये हैं। वे जर्मनी के बादशाह कैसर से मिले हैं। उसने वचन दिया है कि जर्मन की जीत होने पर भारत को स्वतन्त्र कर दिया जायेगा और जर्मनी उसकी रक्षा करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो सत्य ही बहुत अच्छा वचन मिला है।"

"इस कारण अब सब हिन्दुस्तानियों का यह कर्तव्य हो गया है कि वे अंग्रेजों के युद्ध–प्रयास का विरोध करें।"

रामरक्खामल्ल गम्भीर हो बैठा रहा। इस पर निर्मलचन्द्र ने पूछ लिया, "आप इस विषय में क्या कहते हैं?"

"इसमें मेरे कहने का कुछ भी अर्थ नहीं। न तो मैं कैसर के वचन के विषय में कुछ जानता हूँ, न ही उनके विषय में जो वहाँ कैसर से मिले हैं। और इस वचन के लिए उन्होंने क्यों कुछ वचन भारत की ओर से दिया है।"

"यदि कुछ वचन दिये भी हों तो हम उसके पाबन्द हो नहीं सकते। वे हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं।"

"ठीक है। जब युद्ध समाप्त होगा, तब ही इस वचन–पत्र को भारत में छपवा कर, यहाँ की जनता की राय में परिवर्तन किया जा सकेगा। बिना यह जाने कि वचन हुआ भी है या नहीं और उस वचन में हमको क्या–क्या करना है, हम इसमें कोई हस्तक्षेप कैसे कर सकते हैं?"

"बात यह है," निर्मलचन्द्र ने अपनी पूर्ण बात का आशय बताते हुए कहा, "इस समझौते के बाद देसाईजी ने जर्मनी स्थित देश–भक्तों की सहायता बन्द कर दी है। रूसी देश–भक्त तो जर्मन राज्य से अतुल सहायता पा रहे हैं। भारतीय देश–भक्तों ने भी रूसियों की नीति का अनुकरण किया है। इससे देसाईजी और भी क्रुद्ध हो गये हैं।

"मैंने यह सब स्थिति इस कारण बताई है कि वहाँ पर तो देसाईजी से वहाँ के लोग निपट लेंगे, परन्तु यहाँ भारत में काम करने के लिए रुपया चाहिए और वह आपके आशीर्वाद के बिना नहीं मिल सकता।"

"भारत में क्या काम करना है?"

"मैंने बताया है न कि युद्ध–कार्य में विघ्न डालना है।"

"देखो निर्मलचन्द्र! मैं आप से एक–दो प्रश्न पूछना चाहता हूँ। तुम यूरोप और जर्मनी में रह आये हो। इस कारण तुम मेरे संशयों को निवारण कर सकते हो। मुझको बताओ कि क्या यूरोप में कोई ऐसा राज्य हुआ है जो यूरोप के बाहर की एक इंच–भर भूमि भी स्वेच्छा से छोड़ने के लिए तैयार हुआ हो?"

निर्मलचन्द्र इतिहास का विद्यार्थी था। वह विचार करने लगा। बहुत विचारोपरान्त कहने लगा, "मेरे विचार में ऐसा उदार राज्य कोई नहीं हुआ।"

"तो फिर जर्मनी विजयी होने पर कैसे भारतवर्ष–जैसा धन–धान्य सम्पन्न देश हम लोगों को यों ही दे देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह इस समय विवश है और इस विवशता की अवस्था में ही उसने वचन दिया है।"

"परन्तु, उसको हमने विवश किया है क्या? जब वह विवश करने वालों पर विजय प्राप्त कर लेगा, तब ही तो उसे अपना वचन पूरा करने का अवसर मिलेगा। तब न विवश करने वाला रहेगा और न विवशता रहेगी। उस समय वह वचन पालन क्यों करेगा?"

"मैं आपकी नीति नहीं समझा?"

"मैं यह कह रहा हूँ कि एक स्वामी छोड़ दूसरे की दासता में जाने को बुद्धिमत्ता नहीं कहते।

"मैं गदर–पार्टी के प्रयासों को तो समझ सकता हूँ। इस समय अंग्रेज के हाथ बँधे हुए हैं। उसको विवश कर उससे अधिकार प्राप्त करने की बात तो युक्तियुक्त प्रतीत होती है, परन्तु तुमने इन जर्मनी स्थित भारत के देश–भक्तों की बात बताकर मेरे मन में किसी प्रकार की सहानुभूति उत्पन्न नहीं की।"

"तो फिर क्या होगा?"

"मैं उनके काम को पसन्द नहीं करता।"

"तो क्या पसन्द करते हैं?"

"मैं तो भारत को सबल बनाने के पक्ष में हूँ। देखो, इस समय भारतीयों को सेना में एक बहुत बड़ी संख्या में भरती होना चाहिए। सेना में हिन्दुस्तानी अफसरों को कमीशन मिलना चाहिए, इसके लिए हमको आन्दोलन करना चाहिए।

"इसके अतिरिक्त जनता में एक ऐसा वर्ग संगठित होना चाहिए, जो देश के प्रति निष्ठावान हो और इसके हितों के लिए सर्वस्व बलिदान करने को उद्यत हो। जनता और सेना, दोनों के मिलने पर एक ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव होगा कि युद्ध में विजयी शक्ति हमारे साथ हुए वचन का आदर करेगी।"

"कौन विजयी होगा?"

"लक्षण तो ऐसे प्रतीत होते हैं कि अंग्रेजों का पक्ष विजयी होगा।"

"यह कैसे कहते हैं?"

"राज्यों के संयोग से। जर्मन पक्ष के सब राज्य एक स्थान पर केन्द्रित हैं और मित्रराष्ट्र इसको चारों ओर से घेरे हुए हैं।"

"परन्तु, अकेले जर्मनी की शक्ति सब मित्रराष्ट्रों से अधिक है।"

"इसी की परीक्षा के लिए तो युद्ध हो रहा है। परन्तु मैं समझता हूँ कि शक्ति में कुछ कमी होने पर भी जो संयोग मित्रराष्ट्रों का बना है, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौगोलिक विचार से उनके हित में है। वे जर्मनी को चारों ओर से घेरे हुए हैं। मित्रराष्ट्र हैं इटली, रूस, नार्वे, इंग्लैण्ड और फ्रांस।''

''ये सब कुचल डाले जायेंगे।''

''तो ठीक है। आप विजयी की सहायता करना चाहते हैं न? और आपके विचारानुसार जर्मनी विजयी होने वाला है। आप जर्मनी की सहायता करें। मेरे विचार में अंग्रेज विजयी होने वाला है। इस कारण मैं अंग्रेज की सहायता करूँगा। इस पर भी मैं दो बातें करने का विचार रखता हूँ। एक तो अंग्रेज को यह अनुभव कराना चाहता हूँ कि उसकी विजय में हमारा पर्याप्त सहयोग है। दूसरे यह कि जनता और सेना में सहमति और संगठन बनाया जाये। इसके लिए यहाँ भारत में काम करने की आवश्यकता है।''

''क्या काम करना चाहते हैं?''

''सेना में भारती का कार्य और इसके साथ–साथ कहीं जाने वाली सैनिक श्रेणियों के अतिरिक्त देश की पढ़ी–लिखी जनता में से सैनिक भरती कराने का कार्य।''

''तो अब इसके लिए देसाई साहब का धन प्रयोग किया जायेगा?''

''मैं कौन हूँ धन का प्रयोग करने वाला? यह तो देसाई साहब स्वयं ही कर रहे हैं। जब–जब वे कहते हैं, आपको रुपया मिलता है। आपके अतिरिक्त जहाँ वे कहते हैं, वहाँ व्यय किया जाता है।''

''तो उनकी कोई नवीन आज्ञा आई है?''

''हाँ, अब एक अन्य स्रोत से उनका एक पत्र मिला है। उसमें यह निर्देश है कि श्री बाल गंगाधर तिलक की नीति को कार्यान्वित करने में सहायता दी जाय।''

''क्या स्रोत है वह?''

''यह मैं अभी नहीं बता सकता। परन्तु आपको शीघ्र ही वह स्रोत ज्ञात हो जायेगा। आपके वहाँ से आने के बाद भारी परिवर्तन हुए हैं और मैं समझता हूँ कि उन परिवर्तनों के कारण ही वे अब यूरोप स्थित भारत के देश–भक्तों की सहायता करना छोड़ बैठे हैं।''

निर्मलचन्द्र इस नवीन परिस्थिति पर विस्मय करना था। यह तो उसको विदित था कि यूरोप में रहने वाले अधिकांश देश–भक्त जर्मनी के साथ मिल गये हैं और देसाई ने उनकी सहायता छोड़ दी है। मानसिक परिवर्तन के ऐसा होने की बात वह नहीं जानता।

वह मानसिक परिवर्तन क्यों हुआ और कैसे हुआ? यह जानने के लिए वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उत्सुक था। उसके आश्चर्य का एक बड़ा कारण यह भी था कि रामरक्खामल्ल और देसाई में सम्बन्ध का सूत्र बदल गया है।

"तो मैं कार्य छोड़ दूँ?"

"हाँ, जर्मनी से सहयोग की बात छोड़ दीजिये। रही अंग्रेजी सरकार के विरोध की बात, इसमें आप जो इच्छा है, करें। आप पढ़े–लिखे विद्वान आदमी हैं। इससे आप अपने लिए स्वयं निर्णय करें कि आपको सरकार का विरोध किस दिशा में और किस सीमा तक करना है।

"मैं समझता हूँ कि आप शिक्षा–कार्य में लग जायें तो आप अपना सर्वोत्कृष्ट उपयोग करेंगे।

"आप यहाँ एक इतिहास पढ़ाने का स्कूल खोल लें। उसमें मैं एक बहुत बड़ी सहायता दिलवा सकता हूँ।"

"क्या होगा उससे?"

"हम एक ऐसा वर्ग यहाँ उत्पन्न कर सकेंगे जो भारत और संसार के इतिहास को ठीक ढंग पर समझने लगेगा और फिर देश और राष्ट्र को ठीक दिशा की ओर संचालित करेगा।"

"कोई पढ़ने नहीं आयेगा।"

"यही बात हमारे संगीत–भवन के विषय में कही जाती थी। लोग कहते थे कि कौन शास्त्रीय–संगीत सीखेगा, जब उसका धन कमाने में कुछ भी उपयोग नहीं है? परन्तु इस समय हमारे विद्यालय में जितने भी स्थान हैं, सब भरे रहते हैं। इस समय छात्राओं की संख्या एक सौ है और एक भी स्थान रिक्त हो तो पाँच छात्राएँ उस स्थान की प्रार्थिनी होती हैं।

"यही बात आपकी इतिहास अनुसन्धान संस्था की भी होगी।"

"मुझको आपकी योजना समझ में नहीं आ रही। क्या करेगी वह संस्था? इतिहास लिखने के लिए कितने ही विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक संलग्न हैं। उनके पास पुस्तकालय हैं और अपार धन है। आप उसमें क्या कर सकेंगे?"

"हम भी कुछ करेंगे। जो कुछ विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक कर रहे हैं, उसका कुछ तो खण्डन कर ही सकेंगे।"

"तो क्या वे कुछ गलत कर रहे हैं?"

"निस्सन्देह। उनके मस्तिष्कों को सीमाबद्ध कर दिया गया है और वे उस सीमा से पार जाना भी नहीं चाहते। कदाचित् जा भी नहीं सकते।"

"क्या सीमा बाँधी गई है?"

"एक सीमा तो है बाइबल में लिखी वंशावली। उस वंशावली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस पृथ्वी पर सृष्टि बने पाँच हजार वर्ष से अधिक नहीं हुए। एक दूसरी है, भारत के साहित्य पर सीमा। वह यह कि उनमें गल्प के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं।''

''तो क्या पुराणों में तथा महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में मिथ्या वचन और अतिशयोक्ति नहीं है?''

''जिस उद्देश्य से वे लिखे गये हैं, उसमें न तो कुछ मिथ्या है, न ही अतिशयोक्ति। साहित्य में सदा लक्ष्य–सिद्धि परम सत्य माना जाता है।''

''देखिये, मैं बताता हूँ। साहित्य में एक लेखक अपनी नायिका का सौंदर्य वर्णन करता है। उस वर्णन में वह सौंदर्य में पीन–स्तनों का सौंदर्य वर्णन करते हुए कह देता है, 'स्तन–भार नमिता' अर्थात् स्तनों के भार से उसकी नायिका आगे को झुक गई थी। अथवा कटि–तट के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कह देता है कि वह इतनी सूक्ष्म थी कि उसे देखने के लिए सूक्ष्म अन्वीक्षण–यन्त्र की आवश्यकता पड़ जाती थी। यह भी कहा गया है कि नायिका के पीन–स्तन पहाड़ के समान ऊँचे थे। इन सब अतिशयोक्तियों में भाव तो सौंदर्य के लक्षण वर्णन करना है न? लक्षण मिथ्या नहीं हैं। इसी प्रकार साहित्यिक ग्रंथों में किसी अन्य भाव को प्रकट करने के लिए बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहा गया हो सकता है।

''अब ययाति की कथा ही सुन लें। ययाति ने अपने पुत्र पुरु से यौवन उधार लेकर भोग किया और एक सहस्र वर्ष के भोग के उपरान्त भी उसका मन तृप्त नहीं हुआ। यहाँ एक सहस्र वर्ष एक लम्बे काल को प्रकट करने के लिए लिखा गया है। भाव है कि भोग इन्द्रियों को तृप्त नहीं करते। जितना अधिक भोग किया जाये, उतनी ही अतृप्ति बढ़ती है।

''पुराण और महाभारत इत्यादि साहित्यिक ग्रन्थ हैं। जहाँ लिखने का जो–जो उद्देश्य बनाया गया है, वहाँ उस–उस उद्देश्य को दृष्टि में रख कर ही उनको समझना चाहिए। इस प्रकार पढ़ने से उनमें से अनेकानेक ऐतिहासिक तथ्य विदित होंगे और उनमें से इतिहास निर्माण किया जा सकता है।''

''क्या लाभ होगा? यह तो भूसे के ढेर में से एक सूचिका ढूँढ़ने के सदृश्य हो जाएगा।''

''लाभ यह होगा कि जो कुछ मिथ्या दृष्टि उक्त सीमाओं में रह कर लिखे इतिहास से बनी है, वह मिट जायेगी।''

''क्या मिथ्या दृष्टि बनी है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनेक हैं। उदाहरण के रूप में आदि सृष्टि के लोग जंगली थे। भारत में हिन्दू लोग कहीं बाहर से आये हैं। यहाँ की कला, विज्ञान इत्यादि बाहर वालों से सीखे हुए हैं। इस प्रकार की अनेक बातें हैं जो वर्तमान काल के इतिहास लेखक मानते हैं। उन मान्यताओं के कारण इतिहास का विकृत रूप सामने आता है। इसका सीधा परिणाम यह होता है कि हम अपनी भावी योजनाएँ भी विकृत ही बनाते हैं।

"यह काम मुझसे नहीं हो सकता। जब स्वराज्य होगा, तब यह स्वराज्य सरकार का कार्य होगा कि इतिहास का पुनरुद्धार कराये।"

"यदि इस विकृत इतिहास के आधार पर स्वराज्य का निर्माण हुआ तो वह सुराज्य नहीं होगा। दुर्राज्य ही उसकी संज्ञा हो सकेगी। ऐसे स्वराज्य मिलने पर भी देश और राष्ट्र का कल्याण नहीं होगा।"

निर्मलचन्द्र आया था धन की सहायता लेने और फँस गया इतिहास निर्माण की उलझन में। उसने यह समझा कि वह आज किसी ठीक मुहूर्त में यहाँ नहीं आया।

: 7 :

युद्ध–क्षेत्र में हिन्दुस्तानी सेना जाने लग गई थी। मोर्चा फ्रांस में लगा हुआ था। हिन्दुस्तानियों की सहायता से पैरिस के सर्वथा समीप पहुँची हुई जर्मन सेना धकेल कर पैरिस से सत्तर मील के अन्तर पर कर दी गई थी। पैरिस सैनिक–शिविर बन गया था। वहाँ कैनेडा, आयरलैण्ड, स्काटलैण्ड, हिन्दुस्तान के सिक्ख और गोरखा सेनाओं के हैड–क्वार्टर बन गये थे। गोरखों और सिक्खों ने फ्रांस के मैदान में पहुँच वह शौर्य दिखाया कि एक बार तो जर्मन के अभिमानी सैनिक भी उनका लोहा मान गये।

अंग्रेज भी हिन्दुस्तानियों को 'थर्ड रेट' के सिपाही मानते थे। पैरिस के मोर्चे पर इनका शौर्य देख कर तो उनके मन में भी इनका मान बढ़ा। इस पर भी कुछ अंग्रेज अफसर अभी तक ऐसे थे, जो अपने जन्मजात दर्प को पी नहीं सके। उनका कहना था कि हिन्दुस्तानी, अंग्रेज अफसरों के अधीन ही कार्य कर सकते हैं।

जब हिन्दुस्तानी सैनिक यूरोप के मोर्चे पर जाने लगे तो उनके साथ डाक्टरों का जाना भी आवश्यक हो गया। जवाहरलाल की बारी आई। उसको हुक्म हो गया कि वह तुरन्त पैरिस पहुँच वहाँ इण्डियन मिलिटरी अस्पताल में रिपोर्ट करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरलाल के सामने अपनी पत्नियों की समस्या आ उपस्थित हुई। वह उनको कहाँ छोड़ कर जाये? यह समस्या थी। साधना के बच्चे तो लाहौर में थे। इससे उसने तुरन्त कह दिया कि वह लाहौर जायेगी, ऐमिली भी उसके साथ चल सकती है, परन्तु वहाँ छोटे भापा के मकान में रहना पड़ेगा। जब ऐमिली को विष्णुनारायण के मकान का चित्र बताया गया तो उसने लाहौर जाने से इन्कार कर दिया। सौभाग्य से एक प्राइवेट बंगला जबलपुर छावनी में खाली हुआ तो जवाहरलाल ने वह भाड़े पर ले लिया। अभी तक वह सरकारी बँगले में रहता था।

ऐमिली ने कह दिया कि वह इस बँगले में रहेगी। उसके इस समय तीन बच्चे थे। एक लड़का और दो लड़कियाँ। लड़के का नाम था विन्सैन्ट सूद। वह इस समय पाँच वर्ष का था। बड़ी लड़की सिलविया तीन वर्ष की और छोटी लड़की पमिला डेढ़ वर्ष की थी।

जवाहरलाल की धारणा थी कि यह पमिला हैमिल्टन अथवा सदानारायण की लड़की है। यद्यपि इस बात की घोषणा होने से पहले कि ऐमिली गर्भवती है, उसका अपने पति से सम्बन्ध हो गया था, इस पर भी जवाहरलाल की धारणा बनी ही हुई थी। लड़की की आँखें काली थीं और केश तथा रूप–रेखा सदानारायण की बहन लाज से मिलते थे। इससे सदानारायण के विषय में सन्देह की पुष्टि होती थी।

सदानारायण विलायत नहीं गया। जब तक वह जबलपुर से लौटकर बम्बई आया, लाहौर से आश्वासन के पत्र आने लगे थे कि उसके विषय में पुलिस को सन्देह नहीं रहा। उस समय तक बम केस के सब अपराधी पकड़े जा चुके थे और सरकारी गवाह ने सदानारायण के विषय में किसी प्रकार की सूचना नहीं दी थी। अतः उसने लाहौर जाकर पुनः एम.ए. की श्रेणी में पढ़ाई आरम्भ कर दी।

लाहौर जाने पर भी उसने जवाहरलाल को कभी पत्र नहीं लिखा और न ही उसके विषय में कभी जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया। जवाहरलाल और उसके परिवार के प्रति उसकी रुचि निःशेष हो चुकी थी।

जवाहरलाल स्वयं भी नहीं चाहता था कि ऐमिली लाहौर जाये। उसके मन में सदानारायण के विषय में सन्देह बना ही था। अतः फ्रण्ट पर जाने से पहले वह ऐमिली को भाड़े की कोठी में ले गया। साधना अपना सामान बाँध अपने पति के साथ ही बम्बई चली आई। वह उसको विदा कर लाहौर जाने का विचार रखती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों तो जवाहरलाल का जहाज उसी दिन छूटने वाला था, जिस दिन वह जबलपुर से बम्बई पहुँचा था। परन्तु बम्बई पहुँच कर उसको पता चला कि जहाज तीन दिन देरी से जा रहा है। साधना तो संगीत–भवन में चली गई, परन्तु जवाहरलाल जहाज के न जाने के कारण होटल में ठहर गया।

सदानारायण ने रामरक्खामल्ल को जबलपुर की पूर्ण स्थिति बता रखी थी। अपने विषय में ऐमिली का विचार और फिर जवाहरलाल का सन्देह भी बता दिया था। रामरक्खामल्ल की भी यही धारणा थी कि परिवार की परिधि से बाहर निकल जाने के कारण जवाहरलाल घर की आचार–संहिता से अनभिज्ञ हो गया है। इसी कारण वह अपने में दोष न देखकर दूसरों के छिद्र देखने लगता है। रामरक्खामल्ल ने सदानारायण को कह दिया था कि उसको न तो जबलपुर वालों से पत्र–व्यवहार करना चाहिए, न कभी वहाँ जाने का विचार करना चाहिए।

आज जब साधना अकेली वहाँ पहुँची तो रामरक्खामल्ल को आशंका हो गई कि उसको घर से निकाल दिया है। परन्तु साधना ने भापा के मुख पर चिन्ता अंकित देखी तो वहाँ आने का कारण बताते हुए कहा, "वे युद्ध–कार्यार्थ फ्रांस जा रहे हैं। मैंने ऐमिली के साथ रहने के स्थान लाहौर, अपने बच्चों के साथ जाकर रहना उचित समझा है।"

"और जवाहर चला गया क्या?"

"हम स्टेशन से सीधा पायर पर गये थे, परन्तु जहाज तीन दिन देरी से जा रहा है। वे होटल में ठहरने चले गये हैं और मैं यहाँ आ गई हूँ।"

"वह यहाँ क्यों नहीं आया?" लेखवती ने पूछा।

"मैंने कहा था, परन्तु वे बोले कि उनको वहाँ अधिक सुविधा रहेगी?"

"वह हमको मिलने भी आ रहा है अथवा नहीं?"

"इस विषय में मैंने पूछना उचित नहीं समझा। उन्होंने स्वयं कुछ बताया नहीं।"

लेखवती ने होटल का नम्बर मालूम कर टेलीफोन कर दिया। जवाहरलाल टेलीफोन पर आया तो माँ ने पूछा, "जवाहर! माँ से रूठने का क्या कारण है?"

"नहीं माँ! मैं रूठा नहीं। मेरा विचार था कि आज किसी समय आऊँगा।"

"किसी समय भी आने की क्या आवश्यकता है? बहुत नालायक निकले हो। बीवी को कहाँ छोड़ आये हो?"

"माँ! मैं आता हूँ। वहीं मुझको डाँट लेना।" इतना कह जवाहरलाल ने टेलीफोन बन्द कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्याह्न के भोजन के समय वह आया और सीधा माँ के कमरे में पहुँच नमस्कार कर बोला, "माँ! नाराज तो मुझको होना चाहिए था और हो रही हो तुम?"

"क्यों? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

लेखवती के माथे पर त्योरी चढ़ी हुई थी। रामरक्खामल्ल ने कहा, "इस सूट को उतार रत्न से धोती–कुरता लेकर पहन लो। भोजन का समय हो रहा है।

"तो यहाँ अभी भी भूमि पर बैठ कर भोजन किया जाता है?"

"हाँ।"

"मुझको वैसे खाने की आदत नहीं रही।"

"अच्छी बात है। आज तुम्हारे लिए मेज–कुर्सी लगवा देता हूँ। हम भूमि पर बैठ कर ही खावेंगे।"

"आप खाइये। मैं होटल जाकर खा लूँगा।"

"हाँ ठीक है।" लेखवती ने कह दिया, "यहाँ तो निरामिष भोजन ही मिलेगा।"

इसने बात समाप्त कर दी। रामरक्खामल्ल ने जवाहरलाल को भोजनालय में कुर्सी पर बैठा लिया और स्वयं वे भूमि पर चौकियाँ लगा भोजन करने लगे।

रामरक्खामल्ल, लेखवती, रत्नलाल और साधना जब भोजन करने लगे तो जवाहरलाल अपने सीधे यहाँ ठहरने के लिए न आने की सफाई देने लगा। उसने कहा, "माँ! इसी कारण मैं यहाँ आकर नहीं ठहरा था। यहाँ रहने और खाने–पीने की सुविधा नहीं थी।"

लेखवती ने कह दिया, "ठीक है बेटा! अब इन छोटी–मोटी सुविधाओं के लिए माता–पिता से मिलना छोड़ देना ही तो तुम्हारे बगड़े मन की स्थिति का दर्शन कराता है। अच्छी बात है। अब एक बात और सुन लो और फिर चले जाना। भोजन के समय पर होटल में नहीं पहुँचोगे तो वहाँ भोजन नहीं मिलेगा।

"तुमने हमसे राय किये बिना ऐमिली से विवाह किया और उसके लिए तुमने दो वर्ष तक इस गौ समान पत्नी को सेविका–मात्र बना कर रखा। उसी के लिए तुमने अपने छोटे भाई से झगड़ा किया और अब उसके कहने पर तुम अपनी सन्तान को परिवार की परिधि से बाहर रख रहे हो।"

"परिवार से तो मैं पहले ही बाहर कर दिया गया हूँ?"

"कैसे? किसने किया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरलाल विचार कर रहा था कि परिवार के किस सदस्य में क्या दोष निकाले। परन्तु वह स्मरण नहीं कर सका। उसे चुप देख रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "ऐमिली को किसके पास छोड़ आये हो।"

"उसको एक कोठी भाड़े पर लेकर दे आया हूँ। वह वहाँ अपने बच्चों के साथ रहेगी।"

"अच्छी बात है।" लेखवती ने बात समाप्त करते हुए कहा, "अब तुम जा सकते हो। तुम्हारे भोजन का समय हो गया है। आने की इच्छा होगी तो मिल जाना, नहीं तो मेरा आशीर्वाद अभी से लेते जाओ। जहाँ रहो सुखी रहो और आनन्द में रहो।"

इस प्रकार के व्यवहार को जवाहरलाल ने अपना अपमान समझा। वह अपने दिमाग में एक प्रतिष्ठित अफसर की बू अनुभव करने लगा था और इस प्रकार अपने माता–पिता से दो–टूक बात सुन, वह उठ खड़ा हुआ।

साधना ने कहा, "लंच का समय तो डेढ़ बजे तक होता है और अभी साढ़े बारह बजे हैं। तनिक ठहरिये। मैं भोजन कर लूँ तो आपके साथ चलूँगी।"

"तुम आ जाना, मैं बारह नम्बर कमरे में ठहरा हूँ।"

साधना मुख देखती रह गई। जवाहरलाल उठा और बिना नमस्कार किये चला गया। रामरक्खामल्ल और लेखवती चुपचाप भोजन करते रहे। साधना की आँखों में आँसू उतर आये थे।

तीसरे प्रहर साधना होटल में गई और जवाहरलाल से मिली। उसने कहा, "यदि आज आप वहीं भोजन कर लेते तो क्या हानि थी?"

"कुछ खास बात थी क्या?"

"हाँ, माताजी ने आपके लिए खीर, पूरी, भल्ले इत्यादि कई वस्तुएँ विशेष–रूप से बनवाई थीं। वे यह स्मरण कर कि आपको बचपन में क्या–क्या वस्तुएँ अधिक रुचिकर थीं, वही आज बनवाई थीं। और आपने पतलून उतारने की असुविधा के लिए सब का तिरस्कार कर दिया।"

"मुझको क्या मालूम था कि माँ ने मेरे स्वागत की तैयारी की हुई है?"

"यही तो वे कह रही थीं कि आपके हृदय में माँ के लिए संवेदना नहीं रही। यदि थोड़ी–सी भी संवेदना होती तो आप तुरन्त ही समझ जाते कि वहाँ आपका स्वागत होने वाला है। प्रथम तो आपको सीधा माँ के स्थान पर ही जाना चाहिए था।

"माता–पिता निर्धन होने से त्याज्य नहीं हो जाते।"

"भापाजी को वहाँ संगीत–भवन से क्या मिलता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह मैं कैसे जान सकती हूँ? मैंने कभी पूछा नहीं। मैं तो आपके मन की बात का अनुमान लगा कर कह रही हूँ। आप वहाँ रहने इसीलिए नहीं गए न, कि उनके रहने का स्तर आपसे नीचा है?"

"तो माँ बहुत नाराज थीं?"

"भोजन के बाद अपने कमरे में जाकर वे रोती रही हैं।"

"मैं जाकर उनसे क्षमा माँग लूँगा।"

"देख लीजिये। जैसा उचित जान पड़े वैसा कर लीजिये। मैं आपको यह कहने नहीं आई। मैं तो यह बताने आई हूँ कि आपने ऐमिली बहन को वहाँ अकेली छोड़ कर अच्छा नहीं किया। भापाजी यह समझते हैं कि वह अब आपके पास नहीं आयेगी।"

"नहीं आयेगी तो कहाँ जायेगी?"

"यह मैं क्या जानूँ? भापाजी बहुत कुछ दूर भविष्य में देख लेते हैं। और यह उन्होंने कहा है।"

"मुझको भापाजी की इन बातों पर विश्वास नहीं। वे बुद्धिमान हैं। इससे अपने अनुभव और विचार से कभी भविष्य की कोई बात कह दें और वह ठीक हो जाए तो इसका अर्थ यह नहीं कि वे कोई योगेश्वर हैं।"

साधना चुप रही। वह अपने पति की इस धारणा को गलत समझती थी। उसे चुप और परेशान देख जवाहरलाल ने पूछ लिया, "मेरी बात पसन्द नहीं आई न?"

"पसन्द–नापसन्द का प्रश्न नहीं। यह तो अपने ज्ञान के विपरीत सुनकर विश्वास नहीं आया।"

"क्या विश्वास है तुम्हारा?"

"यही कि उनकी भविष्यवाणी सदा सत्य होती है।"

"यह सब ढोंग है।"

साधना ने 'ढोंग' शब्द सुन चुप रहने में ही कल्याण समझा। वह जाने की तैयारी करने लगी। उसने कहा, "मैं तो अब संगीत–भवन में जा रही हूँ। आप कल किस समय आवेंगे?"

"मैं आज तुमको यहाँ होटल में एक 'बैलट' देखने का निमन्त्रण देता हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"होटल में आज रात के भोजन के समय नाच होगा। सरस्वती नाम की कोई नर्तकी है। वह 'क्लासिकल डांसिज, में प्रवीण मानी जाती है।"

"सरस्वती? मैं समझती हूँ कि मैं उसको जानती हूँ। मिली भी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब और कहाँ?"

"संगीत–भवन में। वह भापाजी तथा राधा की शिष्या है। पिछली बार जब मैं उससे मिली थी, वह थिएटर में काम करने लगी थी। अब यह काम भी करने लगी होगी?"

"तब तो और भी आनन्द रहेगा।"

साधना ने संगीत–भवन में टेलीफोन कर कह दिया कि वह रात का खाना होटल में ही खा रही है और आने में देरी हो जाने के कारण वहीं सो रहेगी। कल प्रातःकाल ही आयेगी।

साधना का अनुमान ठीक था। यह वही सरस्वती थी। सरस्वती ने खटाऊजी की कम्पनी में नौकरी कर ली थी, परन्तु वह वहाँ सफल नहीं हुई। इस कारण वहाँ से उदास हो वह किसी अन्य स्थान पर जाने का विचार कर रही थी कि एक दिन मनोहरलाल वर्मा और सरलादेवी थिएटर देखने आये। वर्मा को सरस्वती में 'बैलट डांसर' की योग्यता के अंकुर दृष्टिगोचर हुए। उसने नाटक के बाद सरस्वती को बुलाकर अपना विचार बताया। वह कहने लगी, "मैं यहाँ से आतुर हो उठी हूँ। यहाँ का डायरेक्टर मुझको अस्वाभाविक हाव–भाव करने को कहता है और जब मैं मंच पर वैसा करती हूँ तो लोग मेरी अस्वाभाविक भाव–भंगी पर हँस देते हैं।"

वर्मा ने कहा, "यदि तुम यहाँ से काम छोड़ दो तो मैं तुमको स्वयं शिक्षा दूँगा और फिर विवाहोत्सव पर तथा होटलों में अपनी कला का प्रदर्शन करने के योग्य कर दूँगा। मैं तुमको सिखाने के काल में एक सौ रुपया मासिक और रहने का स्थान तथा भोजन दूँगा। यह अधिक–से–अधिक छः मास तक चलेगा। आशा करता हूँ कि इस अवधि में तुम तैयार हो जाओगी, तब तुम्हारी आय में से पचास प्रतिशत मेरा और पचास प्रतिशत तुम्हारा। कम–से–कम दो वर्ष के ठेके पर काम होगा, तदनन्तर नया वचन–पत्र लिखेंगे।"

सरस्वती तो थिएटर से परेशान हो रही थी। अगले दिन ही उसने राधा से राय कर वर्मा के घर में जाकर रहना आरम्भ कर दिया। वहाँ उसको नृत्य का नया तरीका सिखाया गया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय और यूरोपीय संगीत तथा नृत्य का अभ्यास कराया गया।

सरस्वती ने समझ लिया कि थिएटर कम्पनी के डायरेक्टर से मिस्टर वर्मा अधिक योग्य शिक्षक है। तीन मास के अभ्यास पर ही उसने प्रथम प्रदर्शन ताज होटल में किया। उसी दिन से उसकी सफलता आरम्भ हुई। एक घण्टा प्रदर्शन का एक सौ रुपया उसके अपने लिए और पचास रुपये उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथियों के लिए फीस निश्चय हुई। परन्तु धीरे–धीरे फीस बढ़ती गई और अब वह पाँच सौ से कम पर कहीं नहीं जाती थी।

सेठ–साहूकारों के घरों में विवाह अथवा अन्य उत्सवों के अवसर पर उसके कला–प्रदर्शन होने लगे थे। उसकी सहायता के लिए वर्मा ने एक मृदंग वाला, एक सारंगी वाला और दो लड़कियाँ साथ देने के लिए रखी हुई थीं। उन सब का एक सौ रुपया एक सिटिंग का वसूल किया जाता था।

आज सरस्वती का नृत्य था और वर्मा, सरला, राधा और खटाऊजी भी आने वाले थे। उसकी योग्यता देख उसे विदेश में ले जाने की योजना पर विचार करने लगे थे।

जवाहरलाल और साधना एक मेज पर बैठे हुए थे। रिसैप्शन हॉल भरा हुआ था। तीन सौ से अधिक मेहमान उपस्थित थे। जिस दिन भी सरस्वती का नृत्य होना होता था, उस दिन स्पैशल डिनर का प्रबन्ध होता था और उस डिनर का विशेष मूल्य निश्चित किया जाता था।

सबसे पहले जवाहरलाल ने राधा को पहचाना। वह खटाऊजी के साथ आकर नियत मेज पर बैठ गई। जवाहरलाल ने साधना से कहा, "वह देखो, तुम्हारी सहेली राधा है।"

"ओह! तो उनको यहाँ समीप ही बुला लीजिये।"

"मैं जाकर कहता हूँ।"

वह उठकर उनके पास चला गया। राधा ने देखा, पहचाना और खड़ी होकर कहा, "ओह, जवाहर भैया! इधर कैसे?"

जवाहरलाल ने उँगली से साधना की ओर संकेत कर दिया। राधा ने उसे देखा तो बैरे को बुलाकर कह दिया कि वह टेबल, इनकी टेबल के साथ ही लगा दी जाये। पहले ही उनकी मेज चार के लिए लगी हुई थी। राधा ने बताया, "ये दो कुर्सियाँ मिस्टर वर्मा और उनकी धर्मपत्नी सरलाजी के लिए हैं।"

बैरों ने जवाहरलाल की मेज इनके साथ लगा दी। वर्मा युगल आया तो राधा ने साधना और उसके पति का परिचय करा दिया।

राधा ने ही बताया कि सरस्वती संगीत भवन की शिष्या ही है। साधना समझ गई कि यह वही लड़की है जिससे वह संगीत भवन में मिली थी।

खाना हुआ, नृत्य और संगीत हुआ। लोगों ने नाचने वाली को विशेष उपहार भी दिये। नृत्य दो घंटे तक चलता रहा। और उस समय तक खाना–पीना भी होता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण कार्यक्रम के उपरान्त राधा इत्यादि सरस्वती से मिलने के लिए मंच के पीछे शृंगार–कक्ष में चले गये। सरस्वती साधना से मिली और फिर वह साधना से सदानारायण के विषय में पूछने लगी। साधना ने यह कहकर टाल दिया कि एक वर्ष से ऊपर हो गया है, उसने कोई पत्र नहीं लिखा। वह अपनी पढ़ाई में लीन प्रतीत होता है।

इस पर भी साधना को सन्देह हुआ कि सरस्वती के मन में सदा के प्रति विशेष अनुराग है।

उस रात तो वह होटल में ही रही। अगले दिन प्रातः का अल्पाहार कर वह संगीत–भवन में जा पहुँची। लेखवती को साधना के पति के साथ रहने से प्रसन्नता ही हुई थी।

साधना ने सरस्वती और सदा के विषय में अपना सन्देह बताया तो लेखवती ने कह दिया, ''मैं जानती हूँ। रत्नलाल के पिता भी जानते हैं। दोनों में किसी प्रकार के वचन नहीं हुए। परन्तु सरस्वती अपने मन से सदा को वर चुकी है। सदा को इस बात का ज्ञान है, परन्तु उसने किसी प्रकार का उसको वचन नहीं दिया है।

''मिस्टर वर्मा कह रहे थे कि उसकी मण्डली का दौरा वे यूरोप और अमेरिका में कराने का प्रबन्ध कर रहे हैं। दो लाख रुपये का खर्चा है और वे इससे पाँच–छः लाख की आय का अनुमान करते हैं। इसके साथ ही हिन्दुस्तानी संगीत एवं नृत्य–कला का विदेशों में प्रदर्शन भी होगा।

''तुम्हारे भापाजी ने उसके भाग्य को देखा है। साथ ही देखा है कि वह विदेश में ही किसी से विवाह कर लेगी। जब वह यहाँ आयेगी, तब तो उसकी अपने पति से लड़ाई हो जायेगी। तब वह सदा के साथ विवाह का यत्न करेगी। तब तक सदा का विवाह हो चुका होगा और इस झमेले का क्या परिणाम होगा कहा नहीं जा सकता।''

तीनों दिन, रात के समय साधना पति के साथ होटल में रही। चौथे दिन जब जवाहरलाल जहाज पर चढ़ने के लिए जाने लगा तो उसको उसके अधिकारियों का एक तार मिला। तार में लिखा था कि उसको फ्रांस की अपेक्षा मैसापोटोमिया फ्रण्ट पर जाना है और वह बसरे के जहाज पर सवार हो जाये।

: 8 :

सन् 1915 का मध्य आ गया था। सरस्वती के विदेश जाने का कार्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हो चुका था। परन्तु युद्ध के कारण पूर्ण मण्डली को विदेश जाने की स्वीकृति नहीं मिली। साथ ही यह विचार कर कि व्यवसाय की दृष्टि से युद्ध काल में भ्रमण सफल रहेगा अथवा नहीं, योजना चल नहीं सकी।

संगीत भवन का वार्षिक उत्सव होने वाला था। अब तो तीन वर्ष से पाँच वर्ष की शिक्षा पूर्ण करने वाली लड़कियों को संगीत–विशारदा के प्रमाण–पत्र दिये जाने वाले थे। इस कारण वार्षिक समारोह की महिमा बढ़ गई थी। संगीत–भवन का बड़ा कमरा इस उत्सव के लिए पर्याप्त न मान, वोमनजी पेटिट हॉल में इस समारोह का प्रबन्ध किया जाने वाला था।

पन्द्रह अगस्त को उक्त समारोह की तिथि निश्चय थी और उनके लिए लगभग एक सहस्र अभ्यागतों को आमन्त्रित किया गया था। सदानारायण की एम.ए. की परीक्षा हो चुकी थी। जब उसको इस उत्सव का पता चला तो वह बम्बई आने का निश्चय कर बैठा। साथ ही साधना, उसके बच्चे, जिनको स्कूल से छुट्टियाँ थीं और श्याम, कला तथा मधु भी भ्रमण के लिए बम्बई आने का विचार कर बैठे। इन सबने अपने आने की सूचना बड़े भापा को भेज दी थी और इन सब के ठहरने का प्रबन्ध वर्मा के घर में कर दिया गया था।

दस अगस्त को एकाएक सूचना आई कि विट्ठलभाई देसाई को बम्बई बन्दरगाह पर जहाज से उतरते समय पकड़कर बम्बई जेल में रखा गया है।

रामरक्खामल्ल और रुक्मिणी देवी ने उनसे मिलने के लिए प्रार्थना की, परन्तु वह स्वीकार नहीं हुई। सब लोग जिनको सेठजी के इस प्रकार पकड़े जाने की सूचना मिली, विस्मय कर रहे थे कि सेठजी भारत लौटे ही क्यों। युद्ध–काल में तो यह भारी भूल मानी गई।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात तो यह हुई कि पन्द्रह अगस्त को प्रातःकाल सेठ साहब मुक्त कर दिये गए और वे अपने मकान पर पहुँच गये। सूचना मिलते ही रामरक्खामल्ल सेठजी के मकान पर मिलने के लिए जा पहुँचा। सेठजी ने अपने छूटने की कहानी बता दी।

उन्होंने बताया, "यहाँ से निर्मलचन्द्र राय का वहाँ पहुँचना ही मेरे विचारों में परिवर्तन का कारण हुआ था। वह एक दुर्गा नाम की लड़की को वहाँ लेकर आया था। निर्मलचन्द्र उससे प्रेम करने लगा था, परन्तु दुर्गा ने उसको अस्वीकार कर दिया था। इस कारण एक दिन वह मेरे पास आई और कहने लगी कि वह अब निर्मलजी के साथ बिना उनकी पत्नी बने रह नहीं सकती और वह पत्नी बनना चाहती नहीं। इस कारण मैं उसको अपने घर में अपने सेक्रेटरी के रूप में रख लूँ। उसने जब स्वयं को मिस्टर सूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शिष्या बताया तो मैं मान गया।

"दुर्गा को मेरे घर में रहने के लिए आया देख, निर्मलचन्द्र और उसके कई साथी नित्य ही मेरे घर की यात्रा करने लगे। उनमें एक रूसी नेता लैनिन भी था। वह भी आता था। वह अंग्रेजी नहीं जानता था। इस कारण निर्मल उसके मेरे साथ वार्तालाप में दुभाषिये का काम करता था। मैं जानता था कि ये सब उस लड़की के पीछे–पीछे वहाँ आते हैं और मुझ से सम्पर्क बनाने के लिए अपनी राजनीति की मीमांसा किया करते हैं।

"उनके दुर्गा के पीछे लगने की तो मुझको इतनी चिन्ता हुई नहीं। दुर्गा स्वयं अपने को इतनी सबल समझती थी कि वह इनके प्रलोभनों का विरोध कर सकती थी। मेरी चिन्ता का विषय लैनिन की जीवन–मीमांसा और राजनीतिक कार्यक्रम था। कुछ माँग तक तो मैं उसको आर्थिक सहायता भी देता रहा। परन्तु वह मुझको इतना भयंकर जीव प्रतीत हुआ कि मुझको विवश होकर उसको वहाँ आने से मना करना पड़ा।

"वह कहता था कि जिसके पास धन एकत्रित होता है, वह बेईमान है। उसको वह निर्धनों का रक्त चूसने वाला कहता था। मैंने उससे पूछा कि वह रूस का राज्य अपने अधीन करना चाहता है क्या? इस पर वह कहने लगा कि हाँ, वह ऐसा करना चाहता है।

"जब मैंने पूछा कि वह पूर्ण जाति की धन–सम्पदा और परिश्रम अपने अधीन करना चाहता है तो इसके उत्तर में भी उसने हाँ ही कहा। मैंने कहा कि जब कुछ लाख एकत्रित करने वाला बेईमान है तो पूर्ण देश और जाति की सम्पत्ति तथा परिश्रम को अपने अधीन करने वाला तो महा–बेईमान होगा। इस पर वह कहने लगा कि वह तो जनता का प्रतिनिधि बनकर ही यह कार्य करेगा। सब धन–सम्पदा को वह मजदूर वर्ग के कल्याण के लिए व्यय करेगा।

"मैंने कहा जब वह सर्व शक्तिमान बन एकाधिकार प्राप्त कर लेगा तो उसके कल्याण के कार्य को दूसरे क्या मानेंगे, यह कैसे पता चलेगा? उसके उपायों को गलत समझने वाले को तो वह फाँसी के तख्ते पर लटका देगा!

"एक धनी आदमी, जब वह अपनी धन–सम्पदा से रघुनाथजी का मन्दिर बनवाता है तो वह तो उसके विचार में दुष्ट है और जब वह पूर्ण जाति की सम्पत्ति से स्थान–स्थान पर फाँसी की टिकटियाँ लगवा देगा तो क्या वह देवता हो जावेगा?

"लैनिन लम्बे–चौड़े वक्तव्यों से अपनी योजना की श्रेष्ठता समझाता रहा। परन्तु मैं उसकी बातों को वितण्डावाद समझता रहा। मुझको वह यह नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा सका कि जब दो व्यक्तियों को बराबर–बराबर वेतन मिलता है और एक अपनी आय को मद्य और मधुबाला में व्यय कर देता है और दूसरा सरल, सादा, कम खर्चीला, जीवन व्यतीत करता हुआ कुछ धन एकत्रित करता है तो वह उस धन को पूँजी के रूप में प्रयोग क्यों नहीं कर सकता?

''मैंने उसको बताया था कि मजदूर वर्ग का शोषण न हो। इसके लिए सरकार कानून बना सकती है। परन्तु यह कहाँ की युक्ति है कि सिवाय राज्य के और कोई मालिक रहे ही नहीं?

''राज्याधिकारी कहाँ के देवता होंगे कि वे ही मजदूरों के साथ न्याय कर सकते हैं? क्या उनके अतिरिक्त संसार में सब असुर हैं?

''मेरी इनसे अरुचि तो और भी बढ़ गयी जब ये रूसी नेता कैसर से धन लेकर रूस की सेवा में बगावत फैलाने वाले एजेण्ट बन गये। मुझको इनसे घृणा हो गई। तब तक निर्मलचन्द्र हिन्दुस्तान में आ चुका था। मुझको तो और भी दुःख हुआ जब मुझको यह पता चला कि इन रूसी नेताओं के कहने पर हिन्दुस्तानी नेता भी कैसर से साँठ–गाँठ करने के लिए यत्न करने लगे हैं।

''इसके बाद मैं इन लोगों से अपने सम्पर्क पर पश्चात्ताप करने लगा था। यह ठीक था कि मेरा देश से निकलना इन राजनीतिज्ञों की राजनीति से सहानुभूति के कारण नहीं था। परन्तु मैं इनको सहस्रों 'पौंड' की सहायता दे चुका था। वह सहायता मैंने बन्द कर दो।

''इस समय दुर्गा की मित्रता एक पंजाबी युवक राधाकृष्ण से हो गयी। वह लन्दन में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इण्डिया के कार्यालय में किसी उच्च पदवी पर था। जब वह बर्न में भ्रमण के लिए आया तो दोनों में सम्पर्क हुआ। फिर वह कई बार बर्न में आया। एक दिन वह मुझको मिला और युद्ध के विषय में मेरे विचार सुनकर बोला, 'क्या आप हिन्दुस्तान वापस जाना चाहेंगे?'

''मैंने कहा, जाना तो चाहूँगा! मगर स्वतन्त्र व्यक्ति की भाँति। जेल में कैद होकर नहीं।''

''इस पर वह विचार करता हुआ चला गया। दो मास के बाद वह उस पत्र की नकल लाया जो सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने हिन्दुस्तान की सरकार को लिखा था। उसमें यह था कि मुझसे वचन लेकर कि मैं हिंसात्मक क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग नहीं लूँगा, मुझको मुक्त कर दिया जाय।

''इस पर मुझसे यह कार्यक्रम बनाया गया कि मैं हिन्दुस्तान में अपने को बन्दरगाह की पुलिस के हवाले कर दूँ। वहाँ मुझसे शर्त लिखवाकर मुझको छोड़ दिया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सो अब मैं यहाँ हूँ।"

"दुर्गा का क्या हुआ?" रामरक्खामल्ल ने पूछा।

"वह राधाकृष्ण खन्ना के साथ लन्दन में उसकी पत्नी के रूप में है। वे यत्न कर रहे हैं कि उसका पहला विवाह टूट जाये। वह स्वतन्त्र हो जाये और उसका राधाकृष्ण के साथ विधिवत् विवाह हो सके।

"दुर्गा विचित्र लड़की है। वह धर्म–कर्म की अपनी एक विशेष कल्पना. रखती है। और उस कल्पना के अनुसार अपना जीवन चला रही है। उसकी कल्पना का आधार हमारे मिस्टर सूद की शिक्षा है।

"राधाकृष्ण बर्न में आया हुआ था। वह किसी सरकारी कार्य से इटली आया था और वहाँ से कुछ दिन का अवकाश पा स्विट्जरलैंड में भ्रमण के लिए आ गया। वहाँ किसी से मेरा पता पाकर मुझको मिलने आया। उस समय तक मेरा रूसी और हिन्दुस्तानी नेताओं से स्पष्ट मतभेद हो चुका था। वे निर्विवाद रूप में कैसर की झोली में पड़ चुके थे। उनमें से एक तो हिन्दुस्तान पर आक्रमण की रूप–रेखा बनाने अफगानिस्तान जा चुका था। मैंने उन लोगों से अपना सम्बन्ध–विच्छेद कर रखा था।

"मैंने उससे पूछा कि वह मुझसे जो मिलने आया है, भला मैं कौन हूँ? वह कहने लगा कि उनके कार्यालय में मेरी गतिविधियों का वृत्तान्त पहुँचता रहता है। मैं बम्बई की एक मिल का मालिक हूँ। विट्ठलभाई देसाई मेरा नाम है। बंगाल रैग्युलेशन 1818 के अधीन ऐबटाबाद जेल में बंदी था और वहाँ से भागने में सफल हो गया था। मेरे भागने में सफल होने पर ही उनका ध्यान आकृष्ट हुआ था। जब जेल में मेरी कोठरी खाली पायी गई, उस दिन से लेकर जब मुझको बर्न में पहचाना गया, उस दिन तक मेरी खोज में सरकार का दस लाख रुपया व्यय हुआ है। इससे मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि मैंने सरकार के मन को कितना हिलाया है।

"वहाँ पर आकर मुझ जैसे चतुर आदमी के दर्शन करना अत्यन्त रुचिकर कार्य मान ही वह मिलने आया था। होटल के डाइनिंग हॉल में वह एक सज्जन से मेरा नाम–धाम पूछ रहा था कि वहाँ एक हिन्दुस्तानी औरत उसका प्रश्न सुन उसका मुख देख पूछने लगी कि उसको मुझसे क्या काम है? राधाकृष्ण ने कहा कि वह मेरे दर्शन करना चाहता है।

"वह औरत बोली कि बुद्धिशील व्यक्तियों के लिए दर्शन तो कुछ भी अर्थ नहीं रखते। पढ़े–लिखे व्यक्तियों को तो इससे कुछ अधिक की अभिलाषा करनी चाहिए। इस पर राधाकृष्ण ने कहा कि दर्शन तो वह इसलिए करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता है कि जिससे वह देख सके कि जो आदमी ब्रिटिश ऐम्पायर के जाल और इस साम्राज्य की खुफिया पुलिस को चकमा देकर निकल सकता है, वह देखने में कैसा लगता है।

"उस स्त्री ने बताया, यह तो कुछ भी नहीं। धन और मित्रों की सहायता छल–कपट से स्थापित साम्राज्य से कहीं अधिक बलवान होती है। यह सुन राधाकृष्ण ने व्यंग्य के भाव में कह दिया कि ये मित्र वे ही क्रान्तिकारी हैं जो एक छींक भी मारते हैं तो लन्दन में उसका पता चल जाता है।

"वह औरत कहने लगी कि नहीं, आप नहीं समझे। वह जिन मित्रों की बात कह रही है वे क्रान्तिकारी नहीं हैं। वे धर्मपरायण, ईश्वरार्पण और निष्काम काम करने वाले श्रेष्ठ जन हैं। जिनको बलवान से बलवान राज्य भी भयभीत नहीं कर सकता।

इससे तो उसके मन में मुझसे मिलने की और भी उत्कट इच्छा हो गयी थी। उसने उस औरत से पूछा कि क्या वह जानती है कि मैं कहाँ रहता हूँ? औरत ने बताया 'क्रो हिल्ल पचीस नम्बर' में। यदि मुझे मिलने आना हो तो सायं चाय के समय आए। उस समय निश्चित हो मिल सकेंगे। राधाकृष्ण ने उससे पूछा, कि वे क्रान्तिकारी जो उन दिनों स्विट्‌जरलैंड में गिद्धों की भाँति मँडरा रहे थे, उस समय वहाँ नहीं होंगे? उसने कह दिया कि आजकल उनका देसाई जी से मतभेद हो जाने से सम्बन्ध–विच्छेद हो गया है।

"इस प्रकार राधाकृष्ण मेरे पास आया तो मैंने पूछा कि वह है कौन? मेरे प्रश्न पर उसने बताया– वह सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इण्डिया के गुप्तचर विभाग का चीफ है। उसका नाम राधाकृष्ण है और वह पंजाब का रहने वाला है।

"उसने मुझसे राजनीति, धर्म और समाज पर बहुत बातें कीं। इस समय दुर्गा चाय बनाकर ले आयी और राधाकृष्ण उसे देख बोला कि यही तो थी जिससे उसको मेरा पता मिला था।

"मैंने बताया कि यह मेरी सेक्रेटरी है। हम तीनों चाय पीने लगे तो उसके विषय में बातें होने लगीं और जब उसने अपना परिचय दिया तो राधाकृष्ण दुर्गा में अधिक रुचि लेने लगा।

"इसके बाद राधाकृष्ण तीन–चार बार आया और मुझको पता चला कि वह दुर्गा के लिए आता है। मैंने दुर्गा से उनके मन की बात जानने के लिए पूछा तो दुर्गा का कहना था कि वह दूसरों से भिन्न प्रतीत होता है। उसने उससे प्रेम प्रलाप प्रकट करने के स्थान उसकी और मेरी सहायता के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा है। उसने बताया है कि हमको धन का कष्ट नहीं। किन्तु हम पुनः हिन्दुस्तान में जाकर वहाँ के समाज निर्माण में अपना भाग देना चाहते हैं। राधाकृष्ण के अधिक पूछने पर दुर्गा ने बताया है कि हम राज्य में सुधार भी अपने धर्म का अंग मानते हैं। धर्म व्यवहार और राजनीति से हम किसी प्रकार की रेखाएँ खींचना नहीं चाहते।

"मैंने दुर्गा से कहा कि मैं तो यह समझा हूँ कि वह उससे प्रेम करने लगा है तो वह कहने लगी कि यदि करता है तो करे। किसी के उससे प्रेम में उसको क्या आपत्ति हो सकती है? मैंने पूछा कि निर्मलचन्द्र इत्यादि के प्रेम में क्यों आपत्ति की? इस पर उसने कहा कि वह प्रेम नहीं था। वह वासना तृप्ति थी। उनकी आँखें, हाव–भाव और वाक्यों में वासना की गंध आती थी। परन्तु राधाकृष्ण की वाणी अथवा कर्म में उसको कभी इस विषय का संकेत नहीं मिला। मैंने दुर्गा से कहा कि मैं समझता हूँ कि पहले वह अपनी सेवा और भलमनसाहत से उसको प्रसन्न कर फिर अपना मुख्य प्रस्ताव रखेगा।

"राधा बोली कि उसको इसमें आपत्ति नहीं होगी। मैंने पूछा कि क्या वह उससे विवाह कर लेगी? वह बोली कि उसने अपने व्यवहार से उसके मन को प्रभावित कर लिया तो विवाह तो हो ही जायेगा। और हो ही जाना चाहिए।

"मैं उसके इस प्रकार के कथन से चकित रह गया। मैं समझता हूँ कि यह विवेक मिस्टर सूद का पैदा किया हुआ है।

"राधाकृष्ण इंग्लैंड लौट गया और कई मास बाद आया और पूछने लगा कि क्या मैं हिन्दुस्तान लौटना चाहता हूँ। जब मैंने उसको अपनी अभिलाषा और विचार बताये तो वह लौट गया और दो मास के बाद ही भारत सचिव के उस पत्र की प्रतिलिपि लेकर आया जो भारत सरकार को मेरे विषय में लिखा गया था। इस पर मैं यहाँ आने के लिए तैयार हो गया। मैंने पूछा कि दुर्गा भी मेरे साथ जा सकेगी अथवा नहीं?

"इस पर उसने कहा कि वह तो देश से निर्वासित नहीं है। वह कभी भी जा सकती है। यदि वह कहे तो वह उसको गमन का आज्ञा–पत्र बनवाकर दे सकता है, परन्तु वह ऐसा समझता है कि उसके श्वसुराल वाले उसको बम्बई में देखते ही उसकी हत्या कर देंगे। यदि दुर्गा उसको अपने सम्बन्ध में लिखा–पढ़ी करने का अधिकार दे तो वह उसको उसके पूर्व विवाह–बन्धन से मुक्त कराने का यत्न करेगा।

"दुर्गा हमारे वार्तालाप को सुन रही थी। मैंने उससे पूछा तो दुर्गा ने पूछ लिया कि वह किस प्रकार का अधिकार चाहता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राधाकृष्ण ने कहा कि जिससे वह अपने अधिकारियों से कह सके कि वह उसकी होने वाली पत्नी है और उसके तलाक का प्रबन्ध होना चाहिए। उसका कहना था कि यद्यपि आगाखाँ परिवार का रसूक बहुत अधिक है परन्तु वह सब ब्रिटिश सरकार की कृपाओं का फल ही है। किंचित् मात्र के संकेत पर तो उस परिवार के अपने मतवादी ही उसकी हड्डी–बोटी पृथक्–पृथक् कर देंगे। आगाखाँ इस्लाम में कुफ्र फैलाने वाला बन जायेगा।

"यह सुन दुर्गा ने कहा कि कहने को वह कह दे, परन्तु वास्तविक पत्नी होने से पूर्व तो कुछ और भी जानने के योग्य है। राधाकृष्ण ने कह दिया कि वह भी हो जायेगा।

"इस प्रकार दुर्गा इंग्लैंड चली गयी और मैं यहाँ आ गया हूँ।"

"कुछ भी हो। अब मैं उतना ही स्वतन्त्र हूँ जितना कोई भी हिन्दुस्तानी है। मेरी इस स्वतन्त्रता में मेरा यह विचार मुख्य कारण है कि स्वतन्त्रता प्राप्त करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। परन्तु जाने–पहचाने मालिक को छोड़कर किसी नये मालिक की दासता के लिए यत्न तो मूर्खता है।

"अंग्रेजी सरकार चाहती है कि मैं अपने उन संगी–साथियों के साथ, जो मेरे सहायक बने हुए हैं, इस युद्ध में अंग्रेज की विजय के लिए यत्न करूँ?"

"क्या यत्न करें?" रामरक्खामल्ल का प्रश्न था।

"कम से कम ईश्वर से प्रार्थना ही करें।"

रामरक्खामल्ल, देसाई और रुक्मिणी तीनों हँसने लगे।

: 9 :

सायंकाल संगीत भवन का उत्सव था। समारोह में रामरक्खामल्ल का भाषण हुआ जिसमें उसने संगीत भवन के स्थापित करने के उद्देश्य और उसकी पूर्ति में विधिवत् प्रयास का उल्लेख किया। साथ ही उसने इस उद्देश्य की सफलता का उल्लेख किया। अन्त में उसने बताया कि हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक परिवारों के जीवन संगीत से रसमय होकर सुखमय हो सकें।

रामरक्खामल्ल ने संक्षेप में संगीत भवन के आय–व्यय का ब्यौरा भी बताया। खर्चा पन्द्रह हजार मासिक और आय पाँच हजार मासिक। शेष दस हजार देसाई जी के धर्म कोष में से प्राप्त।

दीक्षान्त समारोह के समाप्त होने से पूर्व सरस्वती के संगीत और नृत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुए। लड़कियों के भी संगीतादि हुए। समारोह सम्पन्न हुआ।

सदानारायण और लाहौर से आये हुए अन्य व्यक्ति संगीत समारोह के बाद संगीत भवन में आ गये। कला को तो सरस्वती हाथ पकड़ कर अपने साथ ले आयी। जब वह उसको ला रही थी तो मार्ग में ही पूछने लगी, "कला बहन! प्रसन्न हो?"

"किससे?"

"मधु के पिता से?"

"बहुत प्रसन्न हूँ?"

"और किसी से नाराज भी हो?"

"हाँ, तुमसे।"

"भला, मुझसे क्यों नाराज हो?"

"अब तुम कितने वर्ष की हो गयी हो?"

"तेईस वर्ष की हो चुकी हूँ।"

"विवाह कब करोगी?"

"तो इसलिए नाराज हो?"

"हाँ सरस्वती बहन! मुझको साधना ने बताया है कि तुम किसी से प्रेम करती हो, परन्तु विवाह की बात चलाती ही नहीं।"

"तो उसने यह नहीं बताया कि मैं किसको मन से वर चुकी हूँ?"

"बताया है। अब तो वह भी आया हुआ है। वैसे वह एम.ए. की परीक्षा भी पास कर चुका है।"

"तो कला बहन! मेरी सिफारिश लगा दो न?"

"भापाजी से क्यों नहीं कहती। उनके आशीर्वाद से कार्यसिद्धि में सन्देह नहीं रहेगा।"

"मैं पहले मुख्य व्यक्ति से बात करना चाहती हूँ।"

"हमारे परिवार की प्रथा अनुसार यह गाड़ी को घोड़े के आगे बाँधने के समान है।"

"एम.ए. तक पढ़े–लिखे व्यक्ति के लिए भी?"

"यही मेरा अनुमान है। बिना तुम्हारा नाम बीच में लाये, मार्ग में उससे विवाह की बात हुई थी। वह कहने लगा कि उसका विवाह करना छोटे भापा और बड़े भापा के कर्तव्यों में है। जब और जहाँ वे उचित समझेंगे कर देंगे।"

"तो मुझे भापाजी से कहना चाहिए?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी बात हो नहीं सकी। संगीत भवन में एक अमेरिकन के साथ बैठा मि. वर्मा बातचीत कर रहा था। राधा और सरला समीप बैठी दोनों की बातें सुन रही थीं। जब सरस्वती कला को लिए हुए वहाँ पहुँची तो राधा कला को लेखवती के पास बैठा, सरस्वती को ड्राइंग–रूम में ले आयी, जहाँ वर्मा उस अमेरिकन से वार्तालाप कर रहा था।

सरला ने राधा और सरस्वती को अपने समीप बैठाकर कहा, "सरस्वती! ये मिस्टर फ्रैंकलिन स्मिथ तुमसे मिलने आये हैं?"

सरस्वती ने हाथ जोड़ नमस्कार किया तो वर्मा ने अमेरिकन का परिचय करा दिया–

"मैं जब अमेरिका गया था तो मिस्टर स्मिथ न्यूयार्क में एक थिएटरों के चेन के मालिक थे। इनसे मेरा परिचय हुआ और मैं इनके घर में रहा हूँ। मिसेज स्मिथ सरला से भलीभाँति परिचित हैं। हमारा पत्र–व्यवहार भी चलता रहा है।

"कुछ दिन से ये भारत में आये हुए हैं और यहाँ के मुख्य–मुख्य नगरों में घूम चुके हैं। तीन दिन से आप बम्बई में हैं। मैं आज इनको अपने उत्सव पर ले गया था। वहाँ इन्होंने तुम्हारा नृत्य देखा है और इनका भी वही विचार है कि तुम यूरोप और अमेरिका में नाम कमाओगी।

"इस समय दो सौ से अधिक थियेटरों के मालिक हैं और ये चाहते हैं कि तुम इनसे ठेका कर उन थियेटरों को सुशोभित करो।"

"यह कैसे हो सकेगा?"

"यदि तुम्हारी परस्पर शर्तें निर्णय हो जायें तो तुम एक सप्ताह में इनके साथ जा सकती हो।"

"क्या शर्तें देंगे ये?"

"तुम्हारे आने से पहले ही हम इस विषय पर बातचीत कर रहे थे। इनका प्रस्ताव है कि दो वर्ष में एक लाख डालर और इस काल में रहने की व्यवस्था तथा भोजन की व्यवस्था इनके जिम्मे होगी।"

"और पिताजी! आप क्या कहते हैं?"

"मैं तो समझता हूँ कि यह प्रस्ताव स्वीकार करने योग्य है। इनका विचार है कि तुम्हारा काम जाते ही नवम्बर 1915 से आरम्भ हो जायेगा और 1917 नवम्बर में प्रतिज्ञा–पत्र की अवधि समाप्त होगी। तब तक युद्ध समाप्त हो जायेगा और तब यूरोप का कार्यक्रम भी बन सकता है।"

"मैं भापाजी से बात कर लूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, कर लो।"

सरस्वती विचार करती थी—एक लाख डालर। अर्थात् दो वर्ष में लगभग चार लाख रुपया। उसके मस्तिष्क में बवंडर उठने लगा था। वह सदानारायण की बात भूल गयी। उसको कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा था कि सदानारायण उससे कहीं दूर पीछे छूट गया है।

वह रामरक्खामल्ल के पास गयी। वहाँ उसका पूर्ण परिवार एकत्रित था। साथ ही सोहनी और सोहन भी, लाहौर से आये हुए लोगों से मिलने के लिए आये हुए थे।

लाहौर के विषय में बात हो रही थी। सबसे भयंकर बात श्याम ने सुनाई थी कि उनकी बहन लाजवंती एक साधु ब्रह्मानन्द की चेली बन गयी है। वह हरिद्वार जाया करती है। बच्चों के सामने श्याम ने अधिक बात नहीं बताई परन्तु इस बात का अर्थ रामरक्खामल्ल समझ गया था। श्याम ने कहा, "बड़े भापा! आपके वहाँ रहने पर घर का वातावरण ऐसा था कि कोई पथभ्रष्ट नहीं हो सकता था।"

"इसका अर्थ यह है कि मुझको फिर लाहौर आना पड़ेगा?"

"सदैव के लिए न सही, परन्तु दूसरे—तीसरे महीने एक चक्कर उधर को लग जाया करे तो बहुत—कुछ नियन्त्रण में रह सकेगा।"

"भापा! सोहनी यहाँ क्या करती है?" कला का प्रश्न था।

"तुमने पूछा नहीं?"

"पूछा है, पर वह कहती है कि स्त्रियों का काम करती है? मेरी समझ में नहीं आया। मैंने विवाह के विषय पर पूछा तो वह हँस पड़ी।"

रामरक्खामल्ल ने कहा, "कला! यह बड़ा नगर है। दूर—दूर के लोग जीविकोपार्जन के लिए यहाँ आ रहे हैं और स्त्री—पुरुषों में अविवाहित सम्बन्ध बहुत बन रहे हैं। परिणामस्वरूप अविवाहित सन्तान बहुत होती हैं। उनकी हत्या अथवा अकाल मृत्यु से उनको बचाने के लिए हमने उन बच्चों के लिए एक शिशु—गृह खोला है। सोहनी उस शिशु—गृह की संचालिका है। इस समय उस गृह में दो सौ से अधिक बच्चे हैं।

"शिशु—गृह को खुले अभी दो वर्ष ही हुए हैं। अब हम इस गृह के साथ ऐसी कुमारी माताओं के लिए प्रसवालय भी खोलने वाले हैं।"

"सोहनी बहन काम तो स्त्रियों का ही कर रही है और उसको इसके लिए विवाह करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

इस समय सरस्वती आ गयी। उसे आया देख साधना ने समझा कि वह

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण से विवाह के विषय में पूछने आयी है। इससे उसने वहाँ से सबको ले जाने का बहाना लगा दिया।

"भापा! राधा ने आज हम सब के लिए थियेटर के टिकट भेजे हैं और हम सब जा रहे हैं। इस कारण अब हम चलते हैं। स्नान, ध्यान और भोजन करना होगा। तब ही तो जा सकेंगे?"

रामरक्खामल्ल ने श्याम से पूछ लिया, "तुम कितने दिन की छुट्टी लेकर आये हो?"

"एक सप्ताह की। इसमें से तीन दिन व्यतीत हो चुके हैं। दो दिन जाने के लिए चाहिए और कल तथा परसों का आधा दिन ही हम यहाँ हैं?"

"और सदा! तुम?"

"मैं तो कुछ दिन यहाँ रह कर अपने भविष्य के विषय में विचार करने आया हूँ।"

"ठीक है। कल सब प्रार्थना के समय आ जाना। अल्पाहार यहीं होगा।"

सब विदा हुए तो सरस्वती ने अमेरिका जाने के विषय में मिस्टर स्मिथ का प्रस्ताव बता दिया।

"वर्मा जी साथ जा रहे हैं?"

"जहाँ तक मेरा विचार है वे नहीं जा रहे।"

"अकेली जा सकोगी?"

"कुछ कठिनाई अनुभव नहीं हो रही। मैंने बोलने योग्य अंग्रेजी सीख ली है।"

"वैसे तो तुम्हारा भाग्य तुम्हें खेंचता हुआ ले जा रहा है।"

"हाँ भापा! बहुत बड़ा प्रलोभन है। दो वर्ष में एक लाख डालर। बोर्डिंग और लौजिंग पृथक्।"

"तुम इस काम को कैसा समझती हो?"

"पैसे के विचार से बहुत अच्छा है।"

"तो जाओ। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

"तो मैं चलने की तैयारी कर लूँ?"

"हाँ।"

अगले दिन साधना और कला यह आशा कर रही थीं कि संगीत भवन में सरस्वती के विवाह की चर्चा होगी। परन्तु उनको वहाँ जाकर पता चला कि सरस्वती ने तो विवाह के विषय में भापा से कोई चर्चा ही नहीं की।

साधना ने भापा के सामने बात चला दी। उस समय सदा भी वहाँ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उपस्थित था। साधना ने पूछ लिया, ''भापा! अब सदा क्या करने वाला है?''

''बताओ सदा! क्या विचार है तुम्हारा?''

''भापा! मैं एम.ए. में फर्स्ट क्लास फर्स्ट आया हूँ। डी.ए.वी. कॉलेज से प्रोफेसर बनने के लिए निमंत्रण आया है। कॉलेज कमेटी के कुछ सदस्य मुझको डी.ए.वी. सोसायटी का आजीवन सदस्य बनने का निमंत्रण दे रहे हैं।''

''तो क्या निर्णय किया है तुमने?''

''आप से विचार करने के लिए ही यहाँ आया हूँ।''

''प्रोफेसरी तो करनी ही है। यहाँ नहीं करोगे तो कहीं अन्यत्र करोगे; तो फिर यहीं सही।''

''भापाजी! मैं विचार करता हूँ कि जब मिथ्या इतिहास ही पढ़ाना है तो फिर पचहत्तर रुपये महीना लेकर ही पढ़ाने से क्या लाभ? पाप भी किया और स्वाद भी नहीं आया।''

''किसी दूसरे कॉलेज में क्या मिल जायेगा?''

''सरकारी कॉलेज में ढाई सौ रुपया प्रारम्भिक वेतन होगा।''

''परन्तु क्या कॉलेजों में भी मिथ्या बात पढ़ाई जाती है?''

''बात यह है कि जो अंग्रेज इतिहास के विद्वान लिख दें, वह ब्रह्म–वाक्य के सदृश्य है। उनके मुकाबले में दूसरे युक्ति भी दें तो मान्य नहीं होती।''

''तुम अपनी पुस्तकें छपवाओ।''

''वे बिकेंगी ही नहीं। यदि कहीं बिक भी गयीं तो उनको अंग्रेज प्रोफेसर मान्यता नहीं देंगे और उनकी ही बात स्वीकार होगी।''

''मैं इस बात में विश्वास नहीं रखता। यदि कोई विचार मान्यता पाने के आश्वासन से कहने अथवा छपवाने के योग्य हो तो फिर कोई नवीन खोज करे ही नहीं। नवीन बात को मानने के लिए युक्ति, विवेक और प्रमाणों की आवश्यकता रहती है। इन प्रमाणों और युक्तियों को बार–बार दोहराने की आवश्यकता होती है।

''यदि महर्षि स्वामी दयानन्द का विचार भी यही होता, जो तुम कह रहे हो, तो फिर वे भी वेद विषयक अपने विचार अपने साथ ही ले जाते। उस समय उसकी बात को मानने वाला भारतवर्ष में एक भी विद्वान नहीं था।

''स्वामीजी ने हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर अकेले ही पाखंड–खंडिनी पताका गाड़ी थी।''

''यह तो भापाजी! ठीक है। मैं अपनी बात कहने से पीछे नहीं रहूँगा। परन्तु मुझसे यह नहीं हो सकेगा कि मैं लड़कों को कहूँ कि परीक्षा में अमुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात लिखो और अपने मन में दूसरी बात समझो।''

''तो फिर कैसे कहोगे?''

''मैं बहुत साधारण जीवन व्यतीत करता हुआ अन्वेषण कार्य करूँगा और उसको भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में छपवाऊँगा। नहीं छपेंगी तो फिर स्वयं एक पत्रिका प्रकाशन करूँगा।''

''अच्छी बात है। तुम मुझको बताना कि तुमको कम से कम कितना रुपया निर्वाह और अपने लेखन और प्रकाशन कार्य के लिए चाहिए।''

''मैं इसकी योजना बना रहा हूँ।''

''परन्तु सदा भैया!'' साधना ने पुनः बात का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कह दिया, ''अपने निर्वाह का अनुमान लगाते समय अपने विवाह और उससे होने वाले बाल-बच्चों के पालन-पोषण का विचार भी कर लेना।''

''पहले अपने निर्वाह के योग्य कमाने का प्रबन्ध तो कर लूँ। पीछे बीवी और बाल-बच्चों के निर्वाह का विचार भी कर लूँगा।''

''मैं समझता हूँ कि अनुमान में यह गणना तो करनी ही होगी। मैंने सुना है कि तुम कह रहे हो कि तुम्हारा विवाह हमें अर्थात् विष्णु और मुझे करना है। मैं तो विवाह के लिए तुम्हारी आयु उपयुक्त समझता हूँ।'' रामरक्खामल्ल ने कहा।

''परन्तु भापा! विवाह की आयु के अतिरिक्त आजीविका से भी तो सम्बन्ध है?''

''हमारे काल में ऐसा नहीं समझा जाता था। विवाह की आवश्यकता इस कारण होती है कि शरीर की आवश्यकताओं की विधिवत् पूर्ति का प्रबन्ध हो जाये। हमारी परिवार प्रथा में, इसके संयुक्त होने के कारण विवाह और बच्चे होने की चिन्ता कभी होती ही नहीं।

''देखो सदा! अभी तक हमारा परिवार संयुक्त है और ईश्वर की कृपा से इसकी आय ऐसी है कि तुमको धर्मार्थ काम करने से संकोच करने की आवश्यकता नहीं। जैसा और जिस प्रकार का निर्वाह प्रबन्ध महानारायण और उसके बच्चों का होगा, वैसा और उसी प्रकार का प्रबन्ध तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का भी हो जायेगा।''

''परन्तु भापा! आप तो यहाँ रहते हैं न। वहाँ अभी से तेरा-मेरा होने लगी है।''

''परन्तु अभी तो मैं जीवित हूँ, सदा! तुम निश्चिंत होकर अपनी योजना बनाओ और मैं तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा के लिए और कहने को कुछ भी न था।

सरस्वती के पासपोर्ट का प्रबन्ध तो वर्मा ने कर रखा था। अतः स्मिथ से अनुबन्ध पत्र लिख और रजिस्टर होने के साथ पच्चीस प्रतिशत अग्रिम मिल जाने पर सरस्वती जापान के मार्ग से अमेरिका चली गयी।

श्यामनारायण दो दिन बाद कला और मधु को लेकर लाहौर लौट गया। साधना ने जब सोहनी को उपकारी कार्य करते देखा तो वह भी किसी ऐसे ही कार्य के लिए भापा से कहने लगी। रामरक्खामल्ल ने भी विचार किया कि यदि अविवाहित माताओं का प्रसूतिगृह खोलना है तो साधना को उसमें लगाया जा सकता है। अतः स्कूलों के खुल जाने पर बच्चों को लाहौर में छोड़ वह पुनः बम्बई लौट आयी। बच्चे पहले भी माँ के बिना सुमित्रा के पास रहने के अभ्यस्त थे।

सदानारायण ने अपनी योजना बना ली थी। वह कलकत्ता रायल एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में बैठ अन्वेषण कार्य करना चाहता था। इसके लिए उसको कलकत्ता में मकान और डेढ़ सौ रुपया मासिक खर्च चाहिए था।

रामरक्खामल्ल ने सदा की योजना सेठ देसाई के सम्मुख रखी तो वह हँस पड़ा। उसने कहा, "मिस्टर सूद! अपने लड़के को मेरे पास भेज दो। मैं उससे बात करूँगा।"

"जहाँ तक कार्य की योजना है, उसे मैंने स्वीकार कर लिया है। मैं इसको बहुत ही उपकारी कार्य मानता हूँ।"

"मैं यह नहीं कह रहा। मेरा कहना तो यह है कि कलकत्ता में रहने से कुछ नहीं बनेगा। उसको लन्दन में लन्दन–म्यूजियम के पुस्तकालय में बैठकर कार्य करना चाहिए। यदि वह इस बात को स्वीकार करे तो मैं पाँच वर्ष के लिए उसके, उसकी पत्नी और होने वाले बच्चों के खर्च के लिए छः सौ पौंड वार्षिक की छात्रवृत्ति उसको दिया करूँगा।"

रामरक्खामल्ल इस बात को सुन मन–ही–मन अति प्रसन्न हो बोला, "मैं उसको आपके पास भेज दूँगा।"

सदानारायण ने युद्धकालीन कठिनाइयों का उल्लेख कर अभी कलकत्ता की योजना स्वीकार करवा ली। यहाँ पर भी देसाई ने कहा, डेढ़ सौ प्रति मास में कुछ नहीं बनेगा। कम से कम तीन सौ रुपया मासिक होना चाहिए। युद्ध के अन्त तक यह और तदनन्तर लन्दन जाने की सुविधा होने पर छः सौ पौंड वार्षिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो विवाह कर लो और कलकत्ता के लिए बिस्तर बाँध लो। मैं तुम्हारे मकान का भी प्रबन्ध कर दूँगा।"

"यह तो ठीक है। परन्तु सेठजी! विवाह की क्या आवश्यकता है?"

"देखो सदा! तुम्हारे विवाह की आवश्यकता तुमको है अथवा नहीं यह तो नहीं जानता मैं, परन्तु समाज को है। समाज तुम जैसे सुन्दर युवक को कलकत्ता की भली और आवारा लड़कियों में खुला घूमने की स्वीकृति नहीं दे सकता। विवाह तो करना ही होगा। मुझको कुछ ऐसा पता चला है कि भापा ने तुम्हारी पत्नी बनाने के लिए एक सुन्दर लड़की ढूँढ़ी भी है।"

सदानारायण चुपचाप चला आया। वह प्रसन्न था। कम से कम उसको अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए निर्वाहार्थ कुछ तो मिल ही गया था।

सदानारायण ने अपने विवाह के विषय में न तो उत्सुकता प्रकट की न ही चिन्ता। रामरक्खामल्ल इसके लिए प्रबन्ध कर रहा था। उनके संगीत भवन में एक बंगाली लड़की मैट्रिक पास कर संगीत सीखने आ रही थी। वह बंगाल बैंक के एक क्लर्क की लड़की थी। सुचिता सान्याल उसका नाम था। लड़की राधा ने चुनी थी और खटाऊजी के द्वारा बातचीत हो रही थी। खटाऊजी बंगाल बैंक, बम्बई शाखा के मैनेजर के मित्र थे और उस मित्र के द्वारा बातचीत हो रही थी। वहाँ से न तो हाँ और न ही ना में उत्तर आ रहा था।

बात यह थी कि सुचेता का पिता, प्रबोधचन्द्र सान्याल, था तो ब्राह्म–समाजी, वह जात–पात को तो मानता नहीं था परन्तु बंगाली और गैर–बंगाली के भेद–भाव को वह अपने मस्तिष्क से निकाल नहीं पा रहा था।

यों तो विष्णुनारायण ने बिरादरी की एक लड़की के रिश्ते की बात लाहौर से भी लिखी थी। रामरक्खामल्ल जब तक बम्बई की बात का निर्णय न हो जाये, तब तक लाहौर के विषय में अन्तिम निर्णय नहीं कर रहा था।

: 10 :

बालगंगाधर तिलक जेल से छूटकर आते ही राजनीतिक कार्य में लग गये। कांग्रेस नरम दल वालों के हाथ में थी और तिलक चाहता था कि कांग्रेस अपना उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य बना ले, तभी वह कांग्रेस में सम्मिलित हो सकता है। फिरोजशाह मेहता और उसके साथी इसे पसन्द नहीं करते थे।

सन् 1915 में फिरोजशाह मेहता का देहान्त हो गया। दादा भाई नौरोजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गोखले का पहले ही स्वर्गवास हो चुका था। अतः नरम दल वालों का पक्ष दुर्बल पड़ गया था।

बेलगाम में बॉम्बे प्रान्त की राजनीति का सम्मेलन हुआ तो तिलकजी वहाँ गये और कुछ मित्रों ने दोनों दलो में सुलह कराने का यत्न किया, परन्तु वे सफल नहीं हुए।

विट्ठलभाई देसाई तिलकजी से पूना में मिलने गया था। वह अपने जेल से छूटने के लिए वचन–पत्र पर तिलकजी की सम्मति लेना चाहता था। वहाँ से सम्मति लेने के बाद वह रामरक्खामल्ल से मिला। विट्ठल–भाई देसाई ने बताया, "तिलकजी महाराज का यह मन्तव्य है कि मुझको देश के राजनीतिक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। सरकार तो हमारे संगीत भवन को भी क्रान्तिकारी संस्था कह देगी। इस कारण हम अपनी शुद्ध आत्मा से कोई क्रान्तिकारी कार्य न करते हुए भी राजनीतिक काम करें।

"इस पर मैंने पूछा कि क्रान्तिकारी के क्या अर्थ हैं?

"तिलकजी का कहना था कि परिवर्तन संसार का नियम है। क्रान्ति उस परिवर्तन को कहते हैं जो तीव्र गति से हो। जो परिवर्तन अपनी स्वाभाविक चाल से हों, वे क्रान्ति की परिधि में नहीं आते।

"किसी की हत्या का क्रान्ति से सम्बन्ध है क्या? मैंने उनसे पूछा तो वे कहने लगे कि युक्ति से इसका सम्बन्ध क्रान्ति से नहीं है। हत्या अपराध है। भले ही वह धीरे–धीरे परिवर्तन लाने के लिए हो। अतः हत्या हो जाना मात्र क्रान्ति का लक्षण नहीं।

"इस प्रकार मैं निश्चिन्त हो आपके पास आया हूँ। अब आप बताइये कि हमको क्या करना चाहिए।"

"तिलकजी का कांग्रेस में सम्मिलित होने के विषय में क्या विचार है?"

"उनका कहना है कि यदि नरम दल के लोग कांग्रेस का उद्देश्य स्वराज्य प्राप्ति बना लेते, तो हम उसमें सम्मिलित हो सकते थे। वे कहते थे कि इस समय नरम दल वालों में कोई सर्वमान्य नेता नहीं है। अतः हमको जनता का नेतृत्व अपने हाथ में ले लेना चाहिए। इसके लिए उन्होंने एक होमरूल लीग नाम की संस्था बनाई है। वे इसका व्यापक प्रचार चाहते हैं।"

अतः बम्बई में भी होमरूल लीग बनी और विट्ठलभाई देसाई उसका प्रधान बन गया।

जब कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था, तिलक और एनीबेसेंट अपनी–अपनी होमरूल लीग का प्रचार कर रहे थे। इस समय रामरक्खामल्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लाहौर से तार आया कि कुछ दिन के लिए वह लाहौर में आ जाये।

रामरक्खामल्ल को श्यामनारायण के संकेत कि लाजवन्ती साधु, संत, महात्माओं में बहुत आती–जाती है, स्मरण आ गया और वह भवन का काम राधा के हाथ में छोड़ लाहौर जा पहुँचा।

लाहौर में भी होमरूल लीग की धूम थी। श्री दुनीचन्द बैरिस्टर इसके अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे। रामरक्खामल्ल घर पर पहुँचा तो वहाँ की समस्या समझ गया। लाज खाट पर बीमार पड़ी थी।

विष्णुनारायण ने बताया, "चार–पाँच वर्ष हुए ब्रह्मानन्द वैरागी, लाहौर में कथा–कीर्तन करने आये थे। मुहल्ले की बहुत सी स्त्रियाँ उनकी कथा सुनने जाती थीं। लाज भी गई थी। पश्चात् वह नित्य जाने लगी। ब्रह्मानन्द जी हरिद्वार गये तो वह हठ करके वहाँ चली गयी।

"लाज पैंतीस वर्ष से ऊपर की आयु की थी। इस कारण मैंने उसको पर्याप्त समझदार मान, जाने दिया। घर में छोटे–छोटे बच्चे थे। इस कारण सुमित्रा साथ नहीं जा सकी। सतवन्ती को साथ जाने को कहा तो उसने इन्कार कर दिया। वह कहती थी कि घर से बाहर जाकर उसके पूजा–पाठ में भारी विघ्न पड़ता है।

"लाज प्रति संक्रान्ति को वहाँ जाने लगी। जब जाती थी तो दो–तीन दिन तक वहाँ रहती भी थी। इस पर मुहल्ले की स्त्रियों में उसके चरित्र के विषय में चर्चा होने लगी। सुमित्रा के पूछने पर लाज इन्कार करती रही।

"इस प्रकार चलते हुए भी आज तीन वर्ष हो चुके हैं। पिछले मास वह वहाँ गयी तो पूरा एक मास वहाँ रही। इस मास वह जाने लगी थी परन्तु जाने से पूर्व उसके गर्भ के लक्षण प्रकट होने लगे हैं। इसको छर्दरी होने लगी है।

"सुमित्रा ने अब फिर पूछा तो उसने स्वीकार करते हुए बताया कि ब्रह्मानन्द जी के एक शिष्य सर्वदानन्द का यह गर्भ है।"

उसकी कै को रोकने की चिकित्सा की जाने लगी। रामरक्खामल्ल ने दो दिन तक तो होमरूल लीग के अधिवेशन में भाग लिया। इस अधिवेशन में भी हिन्दू–मुसलमान ऐक्य की चर्चा थी।

भारत सरकार ने मुसलमानों को राजनीतिक कामों में पृथक् प्रातिनिध्य देने का निर्णय किया था और कांग्रेस ने इसको स्वीकार नहीं किया था। इस कारण मुस्लिम लीग ने कांग्रेस की प्रत्येक बात का विरोध करना आरम्भ कर दिया था। वे सब लोग जो कांग्रेस की मानसिक अवस्था को ग्रहण कर चुके थे कि देश के सब समुदायों को मिलकर ही सरकार से माँगने पर अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिलेंगे। मुसलमानों को पृथक् प्रातिनिध्य देने के लिए तैयार हो गये थे। पूर्ण अधिवेशन में हिन्दू–मुस्लिम एकता की जय हो रही थी।

आर्य समाज को तो 1907 की एक ही डाँट ने, राजनीति से पृथक् कर दिया था। इसके साथ धीरे–धीरे आर्य समाज का नेतृत्व स्कूल मास्टरों और कॉलेज के प्रोफेसरों के हाथ में चला गया था। ये प्रायः अपने–अपने विषयों के विद्वान होते हुए भी व्यापक दृष्टि नहीं रखते थे। राजनीति को तो वे समझने में सर्वदा असमर्थ थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि 1907 की धमकी, कि स्कूल–कॉलेज जप्त कर लिए जायेंगे, अभी भी मस्तिष्क पर छायी हुई थी।

प्रान्त का राजनीतिक नेतृत्व लाला दुनीचन्द बैरिस्टर जैसों के हाथ में चला गया था। लाला दुनीचन्द धर्म, संस्कृति से सर्वथा अनभिज्ञ, इतिहास को न समझने वाले व्यक्ति थे।

रामरक्खामल्ल को आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में पहली बार डी.ए.वी. कॉलेज के एक प्राध्यापक का विकासवाद पर व्याख्यान सुनने को मिला। वह यह परिवर्तन देख कर चकित रह गया।

साप्ताहिक अधिवेशन के बाद वह प्रोफेसर साहब से नमस्कार करने जा पहुँचा। मिलने पर प्रोफेसर साहब ने पूछा, "ओह! कहाँ रहे लाला जी, इतने दिन?"

"मैं बम्बई रहने लगा हूँ।"

"तो पाँचों घी में चल रही हैं?"

"जी। पर मुझे तो आपको देखकर दुःख हो रहा है कि आपकी तो एक भी घी में नहीं रही।"

"क्या मतलब?" प्रोफेसर साहब ने सतर्क हो पूछ लिया।

"मेरा मतलब यह है कि आपका ज्ञान गोबर हो गया है। भला यह विकासवाद किस शास्त्र में लिखा है?"

प्रोफेसर इतने 'मूर्खतापूर्ण' प्रश्न की आशा नहीं करता था। उसने कहा, "लाला जी! छोड़िये इस बात को। यह पढ़े–लिखों की बातें हैं।"

रामरक्खामल्ल की हँसी निकल गयी। उसने कहा, "स्वामी जी का सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा है?"

"नहीं, क्यों?"

"इस पर भी आप अपने को पढ़ा–लिखा समझते हैं?"

वाद–विवाद में गरमा–गरमी आती देख कुछ अन्य लोग भी एकत्रित हो गये थे। प्रोफेसर ने तो वहाँ से खिसक जाने में ही कल्याण समझा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर समाज मन्दिर से निकल अपने एक साथी को कहते सुना गया, 'यह कनफटा लाला कहता है सत्यार्थ प्रकाश नहीं पढ़ा तो कुछ नहीं पढ़ा।' डी.ए.वी. कॉलेज के संस्कृत के प्राध्यापक लाला रामरक्खामल्ल के पास आकर पूछने लगे, ''क्या बात थी लालाजी?''

''मैंने तो यह कहा था कि आर्य समाज के मंच पर से विकासवाद की व्याख्या कर इस विद्वान ने सत्यार्थप्रकाश से अनभिज्ञता प्रकट की है। ये कहने लगे कि पढ़े–लिखों की बातें मुझको नहीं करनी चाहिए।''

पंडित जी हँसने लगे। बोले, ''लालाजी! जानते हैं, राज्य किसका है?''

''अंग्रेज का और इससे पहले मुसलमान का था। न मुसलमानों के काल में और न ही अंग्रेजों के काल में, हमने अपने शास्त्रों को छोड़ा है। ये शास्त्र छूट रहे हैं इन पढ़े–लिखे प्रोफेसरों के राज्य में।''

पंडितजी ने कहा, ''हम तो इन पढ़े–लिखों की अवहेलना करते रहते हैं।'' पूर्व इसके रामरक्खामल्ल कुछ और कहता पंडित जी ने वार्तालाप का विषय बदल दिया।

रामरक्खामल्ल को लाहौर में आये एक सप्ताह से अधिक हो चुका था। लाजवन्ती अब खाया–पिया हजम करने लगी थी और खाट से उठने–बैठने लगी थी। रामरक्खामल्ल होमरूल लीग के अधिवेशन और आर्य–समाज के पतन पर विचार करता हुआ उदास मन था। उसके मन में यह विचार आ रहा था कि देश में विचार परिवर्तन तीव्र गति से होने लगे हैं। इन परिवर्तनों को रोका नहीं जा सकता।

घर पर भी उसको पतनाभिमुख परिवर्तन प्रतीत हुआ था। वह लाजवन्ती को बहुत ही भले विचार की लड़की मानता था। अपने पूर्ण यौवन–काल में और अल्हड़ आयु में तो वह वासना की अवहेलना करती रही। परन्तु अड़तीस वर्ष की आयु में वह भी संसार के साथ बह गयी।

घर पर आठ दिन तक रहने पर उसे एक और बात का ज्ञान हुआ। मधु और महानारायण का बड़ा लड़का नरेन्द्र नगर के रंडी बाजार, हीरामंडी की सैर करने लगे थे। मधु को तो एक धुँधला–सा ज्ञान था कि ब्रह्मचर्य के क्या अर्थ हैं। नरेन्द्र तो इसका अर्थ ही नहीं समझता था।

वे प्रायः रात के आठ–नौ बजे के लगभग खेल के मैदान से लौटकर आते थे। एक दिन रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, ''नरेन्द्र! बहुत देरी से घर लौटकर आते हो?''

''भापा! हम परेड ग्राउंड में खेलने जाते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमसे क्या मतलब! और साथ में कौन होता है?"

"मधु दादा।"

"ओह! रात के आठ बजे तक ग्राउंड में खेला करते हो?"

दिसम्बर के दिन थे। साढ़े पाँच–छः बजे रात पड़ जाती थी। आठ बजे तक खेलने के मैदान में रहने का अर्थ था सरदी में ठिठुरते रहना। इस कारण नरेन्द्र उत्तर नहीं दे सका। वह चुप हो गया।

इस पर रामरक्खामल्ल ने कहा, "देखो नरेन्द्र! धर्म का नाम सुना है क्या?"

"जी।"

"क्या होता है वह?"

"धर्म, धर्म होता है।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा, हँसकर पूछने लगा, "यह दोहा सुना है क्या? साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप। जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप।"

"जी। हमारी हिन्दी की पुस्तक में जो छठी श्रेणी में पढ़ाई जाती थी, यह लिखा था।"

"क्या अर्थ है इसका?"

"सत्य बोलना तप है...।"

"तप के क्या अर्थ हैं?" रामरक्खामल्ल ने बात बीच में ही काट कर पूछा।

"तप कठिन कार्य को कहते हैं। इस कारण इस वाक्य का अर्थ हुआ सत्य बोलना बहुत कठिन है। कठिन कार्य तो किया ही नहीं जा सकता और यह तो बहुत ही कठिन है।"

रामरक्खामल्ल ने पूछा, "यह अर्थ तुम्हारे मास्टर ने बताये थे?"

"जी नहीं। मास्टरजी ने तो कहा था। 'यह दोहा सरल है। आगे चलो।' यह तो हम लड़के अर्थ लगाते हैं। और हम देखते हैं कि सब स्थान पर सत्य बोला नहीं जा सकता।"

"और 'झूठ बरोबर पाप' के क्या अर्थ लगाते हो?"

"पाप करने में मजा आता है। इस कारण झूठ बोलने में भी स्वाद आता है।"

"और तुमने झूठ बोला है न कि रात के आठ बजे परेड ग्राउंड से आते हो। भला क्या मजा आता है इस झूठ बोलने में?"

नरेन्द्र की आँखों में चमक दौड़ गयी। उसने कुछ उत्साहित हो कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! सत्य बताऊँगा तो आप पीटेंगे तो नहीं?"

"तुम मेरे पीटने से डरते हो? मैं पचहत्तर वर्ष का बूढ़ा और तुम पन्द्रह वर्ष के पट्ठे। मुझसे किसलिए डरते हो भला?"

नरेन्द्र ने भापा की आँखों में देखा और भापा के मुख पर मुस्कराहट तथा आँखों में शरारत के लक्षण देख उत्साहित हो कहने लगा, "भापा! माँ पूछती है तो झूठ बोल देता हूँ। वे झूठ को सत्य मान जाती हैं। इस पर मजा यह आता है कि हीरामंडी में मुजरा सुनने के लिए दो घंटे मिल जाते हैं।"

रामरक्खामल्ल कुछ इसी प्रकार की आशंका कर रहा था। इस पर उसने पूछ लिया, "ब्रह्मचर्य की बात जानते हो?"

"वही जो जटाजूटधारी भीख माँगने आते हैं।"

रामरक्खामल्ल तो इस प्रकार के उत्तरों से एकदम स्तब्ध बैठा रह गया। वह समझ रहा था कि जमाना बदल गया है।

उसने नरेन्द्र को तो यह कहा, "देखो नरेन्द्र! सदानारायण एम.ए. में प्रान्त–भर में अपने विषय में प्रथम रहा है। जानते हो क्यों?"

"क्यों रहा है?"

"इसलिए कि उसने अपने पढ़ाई के समय को नाच–गाना सुनने में नहीं गँवाया। इस समय वह ऐसे काम में लगा है, जहाँ पर से उसका नाम शीघ्र ही दुनिया–भर में विख्यात हो जायेगा।"

नरेन्द्र उत्सुकता से भापाजी की बात सुन रहा था। उसने कहा, "वह प्रातः चार बजे उठ, शौच, स्नानादि से निवृत्त हो पाँच बजे पढ़ने बैठ जाया करता था। नौ बजे तक पढ़ता था। फिर भोजन कर, वस्त्र पहन, स्कूल चला जाया करता था।

"प्रातःकाल इतनी जल्दी उठने के लिए वह रात को साढ़े आठ बजे सो जाया करता था। फुटबाल खेलने वह भी जाता था परन्तु खेलकर सात बजे से पूर्व घर लौट आया करता था और भोजन कर साढ़े आठ बजे सो जाता था।

"याद रखो, तपस्या कठिन होती है। परन्तु इसके करने पर फल भी बहुत अच्छा मिलता है।"

"परन्तु श्याम भापा तो दसवीं तक पढ़ कर भी सात सौ रुपया महीना वेतन पाते हैं। तो फिर सदा भापा के पढ़ने का क्या लाभ हुआ?"

रामरक्खामल्ल अपने परिवार की अवस्था देख चिन्ता अनुभव करता हुआ बैठा रहा। रामरक्खामल्ल ने एक ओर तो महानारायण को डाँटा और कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लड़के की देखरेख रखे। साथ ही उसने श्याम से मिलकर मधु के विषय में बताया। उसको कला से पता चला था कि श्याम रात दस बजे से पहले घर नहीं लौटता। वह प्रायः नित्य क्लब में जाता है। इस कारण मधु की देखभाल कौन करे?

कला की माँ कमला उसके पास रहती थी। इसमें कला का जीवन सुलभ हो रहा था, परन्तु कमला मधु पर देखरेख नहीं रख सकती थी। लाज की घटना तो जमाने की गति को बताने वाली और भी अधिक सिद्ध हुई। जब लाज कुछ स्वस्थ हो गई तो रामरक्खामल्ल ने उसको बैठक में बैठा पूछ लिया, "लाज! अब क्या विचार है?"

"भापा! बहुत भूल हो गयी है। मैं अपने मन पर संयम रखती हुई अपने पर अभिमान करने लगी थी कि मैं अन्य स्त्रियों से भिन्न प्रकार की मिट्‌टी की बनी हुई हूँ। मैं पथ–भ्रष्ट नहीं हो सकती। एक वर्ष तक हरिद्वार जा गुरुजी के आश्रम में रहते हुए मुझको ऐसा अनुभव होने लगा था कि वासना के वेग की बात दुर्बल आत्माओं की बनाई है। इस कारण ब्रह्मचारी सर्वदानन्द से मेल–जोल पर भी मुझको कभी भय प्रतीत नहीं हुआ। वह मेरे साथ मेल–जोल बढ़ाने लगा। मैंने इसको केवल उसकी सरलता ही समझा। उसका अपनी सेवा में तत्पर रहना, मैं उसकी सहायता मात्र ही समझती थी। इस पर वह एक दिन वर्षा की रात मेरी कोठरी में आया और मेरा पूर्ण अभिमान और दृढ़ता चूर–चूर हो गयी। मैंने उसको अपने बिस्तर में स्थान दे दिया। इसको चलते हुए एक वर्ष से ऊपर हो गया। मैं इस पतन से होने वाले परिणामों को न होते देख यह समझ बैठी थी कि मैं गर्भधारण करने की आयु से ऊपर हो गयी हूँ। इस प्रकार मिथ्या आत्मविश्वास के साथ मैं पिछले पूरे मास हरिद्वार में रही और वह प्रायः नित्य मुझसे मिलता रहा।

"मेरे मासिक के दिन तो वहीं निकल गये थे। इस पर भी मैं इसको एक साधारण शरीर की अनियमितता समझ रही थी। अब पन्द्रह–बीस दिन से यह खाना न पचने का रोग देख तो मैं भयभीत थी और यह न जानते हुए कि क्या करूँ, मैंने ही छोटे भापा से कहकर आपको तार दिलवाया था।"

"यह तो साधारण कहानी है लाज! सृष्टि के आदि काल से यही होता चला आया है। इसी कारण इससे बचने के लिए शास्त्रकारों ने विवाह की योजना बनाई है। जहाँ विवाह असम्भव है वहाँ संयम, ब्रह्मचर्य इत्यादि की महिमा का गान कर इन अनियमित सम्बन्धों से बचने का उपाय बताया है।

"मैं तो पूछ रहा हूँ क्या तुम अब विवाह करेगी? वह ब्रह्मचारी तुम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह करेगा? यदि वह नहीं करेगा तो क्या मुझको तुम्हारे लिए कोई वर ढूँढ़ना होगा?''

''भापा! मैंने भूल की है, जो इस प्रकार जीवन–भर की संचित कमाई की होली कर बैठी हूँ। मैं इससे छुट्टी पाने की इच्छा रखती हूँ। फिर मैं अधिक सावधान रहूँगी।''

''छुट्टी का क्या मतलब?''

''कहीं एकान्त में इसको प्रसव दूँ और फिर इसके पालन–पोषण का प्रबन्ध किसी के हाथ में देकर शेष जीवन भगवान के भजन में लगा दूँ।''

''ठीक है। तुमको मेरे साथ बम्बई चलना होगा। वहाँ तुम्हारी रुचि के अनुसार प्रबन्ध हो जायेगा।''

लाज अपने बड़े भापा से यही आशा करती थी। जाने से पूर्व रामरक्खामल्ल ने सदानारायण और श्यामनारायण दोनों को समझाया कि वे गृहस्थ आश्रम के उत्तरदायित्व का पालन नहीं कर रहे। उनको अपना कुछ समय बच्चों की ओर लगाना चाहिए।

रामरक्खामल्ल ने कह दिया। दोनों ने बात सुन ली और दोनों मन ही मन मुस्कराते रहे। वे जवाहरलाल के व्यवहार को भापा की शिक्षा की निरर्थकता के कारण ही मानते थे।

: 11 :

सदानारायण का विवाह सान्याल की लड़की से नहीं हो सका। उसे यह ज्ञान नहीं था कि उसके बड़े भापा बम्बई में किसी लड़की से उसके विवाह का यत्न कर रहे हैं।

उसने कलकत्ता में जाने का विचार किया तो रुक्मिणी ने अपनी मिलों के थोक ऐजैण्ट निखट्टूमल्ल भगेरिया को लिखा और वहाँ मकान का प्रबन्ध होने पर सदानारायण बिना विवाह किये ही कलकत्ता चला गया। वहाँ जाते ही उसने रायल एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में बैठ अपने विषय का अध्ययन और मनन करना आरम्भ कर दिया।

इसी समय रामरक्खामल्ल को लाहौर जाना पड़ा और रामरक्खामल्ल का उसको पत्र आया कि क्या नरेन्द्र की देखभाल वह अपने कंधों पर ले सकता है?

पत्र के उत्तर में उसने लिखा, ''भापा! मैं नरेन्द्र के विषय में जानता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको मुजरा सुनने की लटक लग गयी है। मैंने उससे कहा भी था कि संगीत के विषय में बिना ज्ञान प्राप्त किये भला क्या मजा आता है उसको? इस पर उसने बताया था कि संगीत से अधिक नाचने–गाने वाली के सौंदर्य का रस आता है।

"भापा! यह रोग मेरे बस का नहीं।"

इससे तो रामरक्खामल्ल की चिन्ता और भी बढ़ गई। वह समझ गया कि जो गये सो गये, जो अभी उतने गहरे जल में नहीं, जिससे निकलना प्रायः असम्भव है, उनको बचा लेना तो आवश्यक ही है। इससे उसने बम्बई में एक और घर निर्माण करने का विचार कर लिया।

रामरक्खामल्ल ने साधना और लेखवती को बैठाकर समझाया। उसने कहा, "मैं लाहौर में परिवार की अवस्था देख आया हूँ और उसकी अवस्था से सर्वथा निराश लौटा हूँ। उस बुरी अवस्था का एक नमूना तो मैं अपने साथ ही लेता आया हूँ। लाज का प्रबन्ध तो साधना के अधीन प्रसूतिगृह में हो जायेगा। परन्तु इसके बाद लाज की देखरेख का प्रबन्ध और फिर वहाँ रहने वाले बच्चों की देखरेख का प्रबन्ध तो और भी आवश्यक है। इसके लिए मेरी योजना यह है कि मैं बम्बई में अपना एक घर बनाऊँ। तुम दोनों वहाँ रहो। मैं भी संगीत भवन के कार्य से अतिरिक्त समय उस घर में रहा करूँ। जब तक रत्न, सदा और माणिक घर की देखभाल करने योग्य नहीं हो जाते। इस घर की देखभाल मैं करूँ और उस घर में उन सब बच्चों को लाकर रखूँ जो अभी बारह अथवा बारह वर्ष की आयु से कम के हैं।"

साधना ने पूछ लिया, "भापा! कौन–कौन हैं वे?"

"अभी तक माणिक, भूप, शान्ति और मृदुला ही हैं।"

"भापा जी! माणिक और शान्ति को तो मैं पहले ही यहाँ ले आने के विषय में विचार कर रही हूँ। यहाँ घर आप बनायेंगे तो ये दोनों तो वहाँ आवेंगे ही, परन्तु मुझको विश्वास है कि भूपेन्द्र और मृदुला यहाँ कभी नहीं आयेंगे?"

"क्यों?"

"उनकी माँ का उनके लिए मोह इतना प्रबल सिद्ध होगा कि वह उनको बम्बई से लाहौर में अधिक सुरक्षित मानेगी।"

यह एक अन्य समस्या थी। इस पर लेखवती ने कह दिया, "आपका अपने परिवार से मोह भी तो अपने परलोक कल्याण से प्रबल सिद्ध हो रहा है।"

इस वाक्य ने तो रामरक्खामल्ल को झझकोर कर नींद से जगा दिया। उसने समझ लिया कि निसंदेह अब समय आ गया है कि उसको अपने जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में करवट लेनी चाहिए। उसने यह कहा, "अच्छा एक बात तो करो कि माणिक और शान्ति को तुरन्त यहाँ मँगवा लो।

"मैं तुम्हारे प्रसूतिगृह के समीप ही तुम्हारे लिए एक मकान का प्रबन्ध करता हूँ। तुम, लेख, लाज, माणिक, शान्ति और रत्नलाल तो वहाँ रहोगे। मैं तुम्हारे खर्चे का प्रबन्ध कर दूँगा।

"लेख का कथन ठीक है कि जिनके बच्चे हैं उनको ही इनकी शिक्षा–दीक्षा का उचित प्रबन्ध करना चाहिए।"

एक फ्लैट का प्रबन्ध कर दिया गया और साधना अपने बच्चों को लेने के लिए गई तो रामरक्खामल्ल ने एक पत्र विष्णुनारायण को लिख दिया। उसने लिखा, "मैं देख रहा हूँ कि लाहौर में बच्चों की पढ़ाई का ठीक प्रबन्ध नहीं हो रहा। इस कारण यदि महानारायण और उसकी पत्नी उचित समझें तो भूपेन्द्र और मृदुला को भी माणिक तथा शान्ति के साथ भेज दें। भूप इत्यादि का मैं, रत्नलाल की शैली पर, शिक्षा का प्रबन्ध कर दूँगा।"

साधना अपने बच्चों को लेकर ही लौटी। उत्तर में उसने महानारायण की पत्नी मोहिनी के हाथ का लिखा पत्र लाकर रामरक्खामल्ल को दे दिया।

रामरक्खामल्ल ने पत्र पढ़ा तो साधना के कथन की पुष्टि पा गया। मोहिनी ने लिखा था, "बड़े भापा के चरणों में पुत्री मोहिनी की चरण–वन्दना पहुँचे।

"आगे हाल यह है कि छोटे भापा तथा भूप के पिता की सम्मति यह है कि वे अपनी जिम्मेदारी आपके कन्धों पर नहीं डाल सकते। जो कुछ त्रुटि नरेन्द्र के विषय में रही है उसको दूर कर देंगे और वे आशा करते हैं कि आपको अब अधिक सरल और श्रेष्ठ अवस्था दिखाई देगी।

"आपका आशीर्वाद बना रहना चाहिए। सोहन के विषय में उसके पिता उसका विवाह करने के लिए बहुत उत्सुक प्रतीत होते हैं। सोहन को लिखा था, परन्तु उसने अभी विवाह में मना कर दिया है। आप उससे जान कर लिखें कि वह क्या चाहता है?

"सोहन की वहाँ बनी माता रुक्मिणीजी को आप हमारा तथा माता–पिता का हार्दिक धन्यवाद दें। लड़का भूमि से आसमान पर पहुँच गया है। इस समय वह अपने माता–पिता को दो सौ रुपया मासिक भेज रहा है। इस रुपये से पिताजी ने पुरानी अनारकली में दुकान कर ली है और उस दुकान की आय से वहाँ पर ही एक मकान बनवा लिया है। बड़े भैया का विवाह हुए तो तीन वर्ष हो चुके हैं। वे अब सोहन के विवाह की बात कर रहे हैं।"

इस पत्र ने बात निश्चय कर दी। लेखवती ने कहा, "मोहिनी ने जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा है, वह स्वाभाविक ही है।"

माणिक और शान्ति को रत्नलाल अष्टाध्यायी स्मरण कराने लगा। साधना ने देखा था कि रत्नलाल ने पन्द्रह वर्ष की आयु में संस्कृत और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इसके अतिरिक्त वह बी.एस–सी. के विद्यार्थियों के साथ विज्ञान पढ़ता है। गणित और फ्रेंच भाषा वह पढ़ रहा था। इतनी उन्नति वह अन्य स्कूलों और कॉलेजों की पढ़ाई में नहीं पाती थी। इससे उसने तो दोनों को रत्नलाल से शिक्षा प्राप्त करने पर लगा दिया। सबसे बड़ी बात वह यह समझती थी कि वह अपने बच्चों के साथ संगीत भवन की प्रार्थना में सम्मिलित होती थी।

रामरक्खामल्ल ने सोहन से उसकी बहन के पत्र का उल्लेख किया तो उसने कह दिया, "रुक्मिणीदेवी जी का यह मत है कि मेरे लिए बम्बई में ही विवाह करना ठीक रहेगा।"

"क्यों? इसमें क्या प्रयोजन है उनका?"

"वे कहती थीं कि वे पंजाबी हैं परन्तु दुर्भाग्य से वे अपने पति के परिवार को कोई पंजाबी सन्तान नहीं दे सकीं। अब वे यह चाहती हैं कि गुजराती क्षेत्र में पंजाबी रक्त का संचार हो गुजराती रक्त की व्यापारिक प्रतिभा वे पंजाबी रक्त में लाना चाहती हैं।"

"तो फिर इस दिशा में कुछ हो रहा है?"

"हाँ; परन्तु भापा! सदा का क्या हो रहा है?"

उसके लिए मैं कोई उपयुक्त पत्नी ढूँढ़ रहा।"

सदानारायण के लिए पत्नी ढूँढ़ी गई। यह सदानारायण ने स्वयं किया। सन् 1916 जून मास के मध्य में सदानारायण का एक पत्र आया। उसने लिखा, "भापाजी! मेरा चित्त विवाह करने के लिए कर रहा है। और उसके लिए एक लड़की कलकत्ता में मिली है। यदि आपको इस पर आपत्ति न हो तो मैं उसका चित्र अथवा उसको स्वयं, आपके पास भेज दूँ, जिससे आप देख तथा विचार कर मेरे चयन के विषय में अपनी सम्मति दे सकें।"

रामरक्खामल्ल ने राधा से कहा, "सदा का पत्र आया है कि उसने अपने लिए एक पत्नी कलकत्ता में पसन्द की है। क्या अब भी तुम्हरा विचार है कि सुचेता से यत्न जारी रखना चाहिये?"

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि हमको सदा भैया की पसन्द का आदर करना चाहिये। सुचेता तीन–चार मास से संगीत भवन में आ भी नहीं रही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने ही कहा था कि तुम्हारे मन को यह लड़की इतनी पसन्द आई है कि जब तक उसके विवाह का कहीं निश्चय नहीं हो जाता हमें इस विषय में अपने प्रयत्न जारी रखने चाहियें।"

"ठीक है। परन्तु जब लड़के ने स्वयं ही इस दिशा में पग उठाया है तो हम उसमें बाधक नहीं बन सकते।"

"जब तुम कहती हो तो मैं सदा को लिख देता हूँ कि वह विवाह का निश्चय कर बताये कि हम कब उसकी बारात में सम्मिलित होने के लिए आयें।"

"एक बात तो उसको लिखनी ही होगी। वह यह कि बारात हो चाहे न हो, परन्तु लड़की और लड़के की ओर से एक बहुत बड़ा रिसैप्शन हो और बहुत बड़ी संख्या में हम लोग उसके रिसैप्शन में उपस्थित हों।"

"यह भी लिख दूँगा।"

राधा मुस्कराती हुई चली गई। रामरक्खामल्ल ने सदानारायण को पत्र लिख दिया, "जब तुमने पसन्द कर ली है तो हमको भी पसन्द ही समझो। बस देखने वाली बात यह है कि लड़की स्वस्थ और बुद्धिशील होनी चाहिये, जिससे वह गृहस्थ का भार सहन करने में तुम्हारा अन्त तक साथ दे सके।

"राधा तुम्हारे विवाह का यहाँ प्रबन्ध कर रही थी। जब उसको तुम्हारे पत्र की बात बताई तो उसने भी आशीर्वाद दे दिया है। वह इतना चाहती है कि बम्बई और लाहौर से बहुत बड़ी संख्या में लोग तुम्हारे विवाह पर आयेंगे। उनके लिए प्रबन्ध करना होगा।"

इसका उत्तर आया, "लड़की का पिता बम्बई में ही नौकर है और वह चाहता है कि विवाह बम्बई में ही हो। अतः मैं छोटे भापाजी को लिख रहा हूँ कि वे बम्बई आने की तैयारी रखें। राधा बहन से भी कह दें कि उनको मेरे विवाह के लिए कलकत्ता की यात्रा नहीं करनी पड़ेगी। जहाँ तक दावत का प्रश्न है, निमन्त्रण का प्रबन्ध तो उसके ही हाथ में होगा। जितने अभ्यागत वे चाहें बुला लें। ताज होटल का बड़ा रिसैप्शन हॉल तो भर ही जाना चाहिये। यदि कहीं उनकी रुचि इससे भी बड़ी हुई तो फिर रिसैप्शन दो दिन तक करना पड़ेगा।"

इस पत्र के विषय में जब राधा को बताया गया तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। रामरक्खामल्ल ने इस हँसने का कारण पूछा तो उसने पूछ लिया–"लड़की का चित्र नहीं भेजा?"

"मैंने माँगा नहीं। मैंने तो यह लिखा था कि जब उसने पसन्द कर ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तो हमारी भी पसन्द समझ लेनी चाहिये।''

''तब ठीक है। मैंने समझा था कि उसने चित्र जान–बूझ कर नहीं भेजा। भापा! जब चित्र नहीं भेजा तो निश्चय जानो कि लड़की में कुछ दोष है। कदाचित् उसकी एक आँख ही नहीं हैं।''

''पर मैं चाहता हूँ कि जब उसने एक आँख वाली पसन्द की है तो उसके प्रतिफलस्वरूप अवश्य उसमें कोई बहुत ही श्रेष्ठ गुण देखा होगा। मैं किसी पति–पत्नी के झगड़े में पड़ना नहीं चाहता।''

''मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि उसने कोई अंगहीन लड़की इसलिए चुनी है जिससे सरस्वती के आने पर वह सुगमता से उससे भी विवाह कर सके।''

''तब तो वह बहुत बुद्धिमानी कर रहा है। बहुत दूर की सोच रहा है।''

''इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारण समझ ही नहीं आ रहा, उसका चित्र न भेजने का।''

''ऐसा करो। तुम सदा को एक पत्र लिख दो और उसमें अपना सशय लिख दो। तब भी चित्र न भेजा तो फिर तुम्हारा अनुमान मानने के लिए कारण दिखाई देने लगेगा।''

''लिखूँगी।''

इसके उत्तर में सदानारायण का पत्र राधा को मिला। उसने लिखा, ''मेरी पत्नी कहती है कि वह अपने श्वसुर से फोटोग्राफ पर पसन्द होने की इच्छा नहीं रखती। वह तो सेवा से ही उनकी सम्मति अपने अनुकूल करना चाहती है। मैं समझता हूँ कि उसका विचार सर्वथा ठीक है। वह सुन्दर है अथवा असुन्दर है, इस बात का सम्बन्ध केवल मुझसे है। वह परिवार की कितनी सेवा कर सकती है अथवा अपने शील और सरल–स्वभाव से परिवार की मान–प्रतिष्ठा कितनी बढ़ा सकती है, यह जानना सास–श्वसुर का काम है। इन बातों को परीक्षा वह केवल परिवार में सम्मिलित होकर ही दे सकेगी। इसलिए वह यह इच्छा कर रही है कि कुछ दिन तक अपनी सास के चरण दबाने का अवसर मिलना चाहिए। यह अवसर देने का मैंने उसको वचन दिया है।''

राधा ने हँसते हुए यह पत्र सुना दिया। लेखवती और साधना भी इस पत्र को सुन रही थीं। साधना ने कहा, ''कलकत्ता जाकर सदानारायण को बातें करने का ढंग बहुत आ गया है।''

लेखवती ने कहा, ''ठीक ही तो लिखा है।''

इस विवाह के रहस्य का पता खटाऊजी के द्वारा चला। एक दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खटाऊजी प्रबोधचन्द्र सान्याल के साथ बहुत–सी मिठाई और सौ–एक रुपया लेकर रामरक्खामल्ल को मिलने आया।

प्रार्थना के समय वे आये थे और प्रार्थना के बाद खटाऊजी ने अपने साथ आये व्यक्ति का परिचय करा दिया।

''भापाजी! ये हैं प्रबोधचन्द्र सान्याल। बंगाल बैंक में हैडक्लर्क हैं। इनकी लड़की सुचेता सान्याल की आपके लड़के सदानारायण से सगाई के उपलक्ष्य में, यह सब कुछ आप स्वीकार कीजिये।''

राधा समीप खड़ी थी। उसने खिलाखिला कर हँसते हुए कहा, ''भापाजी! यह आप स्वीकार कर लीजिये। सदा भैया की यही इच्छा है।''

''क्या?''

''इन्हीं की लड़की को सदा भैया ने पसन्द किया है।''

''ओह...।''

बात बीच में ही काट कर खटाऊजी ने कहा, ''जो भाग्य में लिखा है उसको बंगाल और पंजाब की सीमाएँ मेट नहीं सकीं।''

इस पर प्रबोधचन्द्र ने कहा, ''मैंने लड़के को देखा और पसन्द किया था परन्तु अपने समुदाय के पक्षपात के कारण स्वीकृति देने में संकोच करता था। परन्तु राधा जी, सुचेता और सुचेता की माँ सुलोचना ने षड्यंत्र कर मुझको सबक सिखाया है। सुलोचना सुचेता को लेकर अपने मायके चली गई और वहाँ उन्होंने लड़के से मेल–मुलाकात की। सुचेता ने तो लड़के को पसन्द किया ही था, साथ ही उसके नाना–नानी ने भी पसन्द किया तो मुझको भी, यह न जानते हुए कि यह लड़का कौन है, राजी होना पड़ा। जब सुचेता के नाना ने यह शकुन पहुँचाने के लिए भेजा और आपका पता बताया तो मैं भौचक्का हो सोचता रह गया। सुलोचना ने कह दिया कि जब लड़का और लड़की ने एक–दूसरे को पसन्द कर लिया है तो हमको बाधा नहीं डालनी चाहिये। मैं विवश हो गया।

रामरक्खामल्ल ने राधा की ओर देखा तो वह प्रसन्नता से देदीप्यमान हो रही थी।

भवन में सब लड़कियों में वह मिठाई बाँटी गई। अक्तूबर की दस तारीख को विवाह होना निश्चय हुआ।

जाने से पूर्व प्रबोधचन्द्र ने कहा, ''सुचेता की माँ इतना कुछ ही लेकर लाहौर आपके भाई साहब के घर गई है।''

''तो आपको डबल खर्चा करना पड़ा है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं। जो कुछ हमें देना था, उसको दो भागों में बाँट दिया गया है। लड़के ने बताया था कि आप दोनों भाई उसके बनने–बिगड़ने में बराबर–बराबर के पत्तीदार हैं।"

समय पर विवाह हो गया। विवाह के अवसर पर लाहौर से प्रायः सब सम्बन्धी आये थे और जबलपुर में ऐमिली को भी निमन्त्रण भेजा गया था। रामरक्खामल्ल ने लिखा था, "यदि तुम अकेले नहीं आ सकती तो जवाहरलाल की माता को, तुम्हें लिवा लाने के लिए भेजा जा सकता है।"

ऐमिली ने न आ सकने का बहाना बनाते हुए सदा की पत्नी के लिए एक फाउन्टेन–पैन भेंटस्वरूप भेज दिया। सदानारायण इससे सर्वथा प्रसन्न था।

: 12 :

कई मास तक रामरक्खामल्ल अपने पारिवारिक झंझटों में लिप्त रहा था। इनमें लीन रहने के कारण वह देश की प्रगति की ओर दृष्टिपात नहीं कर सका था। वह लाजवन्ती के सम्बन्ध में लाहौर गया था दिसम्बर 1915 में और सदानारायण का विवाह हुआ था दस अक्तूबर 1916 को। इस समय तक लेख तीसरे लड़के की माँ बन चुकी थी।

इस सब काल में वह अपने लेखवती और परिवार के दो विभागों, एक जो लाहौर में स्थित था और दूसरा जो बम्बई में रहने लगा था, के विषय में निश्चय करता रहा था। जब सदानारायण का विवाह हो गया तो रामरक्खामल्ल ने विष्णुनारायण से कहा, "भैया! लेख, लाज, साधना, साधना के बच्चे, लेख का बच्चा और रत्नलाल बम्बई में ही रहेंगे। मैं शीघ्र ही पुनः संन्यास लेने का विचार कर रहा हूँ। इनका पालन कैसे होगा?"

विष्णुनारायण इस संन्यास की बात सुन भौचक्का हो मुख देखता रह गया। उसे आश्चर्यचकित हो मुख देखते हुए पा, रामरक्खामल्ल ने अपने कथन की व्याख्या कर दी।

"मैं अब छिहत्तर वर्ष से ऊपर हो चुका हूँ। मैं समझता हूँ कि मैंने गृहस्थ आश्रम का कर्तव्य पूर्ण यत्न से पालन किया है। मुझको अब छुट्टी मिलनी चाहिए। मैंने भी इस कार्य के लिए कुछ तो एकत्रित किया है। मेरे पास बीस हजार रुपये के लगभग हैं। मैं समझता हूँ कि यदि उसको किसी के हाथ में दे जाऊँगा तो वह इसका दो सौ रुपया मासिक ब्याज दे सकेगा। यदि इसमें कुछ तुम मिला दो और दो सौ रुपया मासिक साधना का वेतन है, तो यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लोगों का निर्वाह भलीभाँति हो सकेगा। यह तब तक चलेगा, जब तक हमारा परिवार संयुक्त चलता है।''

''भापा!'' विष्णुनारायण ने कहा, ''कितना चाहते हो कि मैं यहाँ के लिए दे दूँ।''

''देखो, मैंने सब प्रकार के खर्चों को कूता है और मेरा अनुमान है कि पाँच सौ रुपया मासिक यदि लेखवती को मिल जाये तो वह निर्वाह कर लेगी। इसमें एक सौ रुपए के लगभग रत्नलाल और माणिक तथा शांति की पढ़ाई का खर्चा है।''

''तो मैं एक सौ रुपया मासिक लाहौर की दुकान से भेज दिया करूँगा।''

''नहीं! मैं चाहता हूँ कि तुम पचास रुपया मासिक भेज दिया करो और पचास रुपया मासिक सदानारायण भेजा करेगा।''

''वह मान गया है क्या?''

''हाँ; उससे बात हो चुकी है। जब तक वह विलायत नहीं जाता, तब तक वह यह खर्चा देता जायेगा।''

''तो ठीक है। मैं एक वर्ष के लिए छः सौ रुपया अभी दे जाता हूँ। प्रतिवर्ष दिवाली से कुछ दिन पहले इतना रुपया भाभी को मिल जाया करेगा।''

इतना प्रबन्ध हो जाने पर उसने अपने संन्यास लेने के विषय में विचार करना आरम्भ कर दिया। इन विचारों को दिशा मिली लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर।

सदा के अपनी पत्नी के साथ विदा होने के अगले ही दिन विट्ठल भाई देसाई रामरक्खामल्ल से मिलने आया। वह संगीत भवन की प्रार्थना में सम्मिलित हुआ था और उसके बाद वह भापा से कुछ कहने के लिये उसके साथ उठकर ऊपर के आगारों में चला गया। इन दिनों ऊपर के आगार प्रायः रिक्त पड़े हुए थे। राधा अपने पति खटाऊजी की कोठी में रहती थी। सरस्वती भी अब अमेरिका जा चुकी थी। संगीत भवन छोड़े तो उसको तीन वर्ष से ऊपर हो चुके थे। लेख भी अब अपने मकान में चली गई थी। रामरक्खामल्ल ने अपने बैठने और दिन के समय विश्राम के लिए दो कमरे रखे हुए थे। रत्नलाल भी दिन के समय कभी वहाँ आता था। प्रायः वह अपनी माँ के साथ रहता था।

उन कमरों को खाली, देख देसाई ने पूछ लिया, ''इन कमरों का अब क्या प्रयोग होगा?''

''शीघ्र ही यहाँ प्रबन्ध–समिति को एक नवीन व्यवस्थापक ढूँढ़ना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह ही निर्णय करेगी कि इनका प्रयोग कैसे हो।''

''तो आप कहाँ जा रहे हैं?''

''मैं संन्यास ले रहा हूँ?''

''फिर क्या हुआ? संन्यास लेने से कर्म छूट जायेंगे क्या?''

''नहीं, कर्म तो छूट सकते ही नहीं, परन्तु मैंने अभी विचार नहीं किया, मैं किस प्रकार का जीवन व्यतीत करूँगा।''

''देखो भापा! पहले मुझ से राय कर लेना, तभी यहाँ से त्याग–पत्र देना। अपने प्रायः सब कामों में मैं तुमसे राय करता रहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि इस एक काम में तुम मुझ से राय करना।''

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। उसने कहा, ''अच्छी बात। मुझको स्वीकार है, परन्तु एक शर्त है कि मुझको समझाकर बात करिएगा। केवल आज्ञा से काम नहीं चलेगा।''

''नहीं भापा! मैं भला तुमको कैसे आज्ञा दे सकता हूँ? यह बात दूसरी है कि तुम्हारे पाँव पकड़ लूँ और मिन्नत–समाजत कर तुमको मना लूँ।''

''अच्छी बात है। मुझको अपना भविष्य का कार्यक्रम बनाने में कुछ दिन लगेंगे।''

''जरूर लगने चाहिये। इतने समय में एक बात करने के लिए मैं आपसे सहायता माँगने आया हूँ।''

''क्या करने में मैं सहायता दे सकता हूँ?''

''मैं आपको एक इण्डो–ब्रिटिश ऐसोसिएशन के हिन्दुस्तानी सदस्यों की सूची दे देता हूँ। आप उनसे मिलिये और उनको लखनऊ चलने के लिये तैयार करिये और उनको ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य के पक्ष में वोट देने के लिए प्रेरित कीजिये।''

''इससे क्या होगा?''

''होगा यह कि श्री तिलकजी पूना की सार्वजनिक सभा की ओर से प्रतिनिधि बन कर जा रहे हैं और वे कांग्रेस के उद्देश्य बदलने का प्रस्ताव करके वाले हैं। यदि हम अधिक संख्या में अपने विचार के प्रतिनिधि ले गये तो तिलकजी का प्रस्ताव स्वीकार हो जायेगा।''

रामरक्खामल्ल इस बात के लिए तैयार हो गया। सूची मिल गई और रामरक्खामल्ल ने इस विषय में सदस्यों से मिलना आरम्भ कर दिया।

एक सौ दस प्रतिनिधि बम्बई से जाने वाले थे। उनमें से केवल बीस जाने का विचार रखते थे और वे सब–के–सब नरम दल के लोग थे। उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझाना व्यर्थ मान अन्य से मिलने का कार्यक्रम बना लिया गया।

उनमें से कुछ तो लखनऊ कांग्रेस की महत्ता को ही नहीं समझते थे। उनको बताया गया कि आगामी शासन में संशोधन अभी से विचार किये जा रहे हैं, इस कारण यदि हम स्वराज्य पर बल देंगे तो इससे अगले होने वाले राज्य–संशोधनों में प्रगति होगी।

कुछ ऐसे भी लोग थे, जो जाना तो चाहते थे परन्तु विचार करते थे कि क्यों दो–तीन सौ रुपया व्यर्थ में व्यय करें। उनको आर्थिक सहायता देने के लिए रामरक्खामल्ल के पास धन था। कुछ के प्रतिनिधि चुने जाने में सन्देह था। उनके निर्वाचन में रामरक्खामल्ल घूम–घूम कर सहायता दे रहा था। इस भाग–दौड़ का परिणाम यह हुआ कि बम्बई से साठ प्रतिनिधि स्वराज्य के पक्ष में तैयार हो गये। इसी प्रकार अन्य प्रान्तों में भी यत्न किया गया तो लखनऊ में अधिकांश प्रतिनिधि स्वराज्य के पक्ष में एकत्रित हो गये।

परन्तु यहाँ पहुँचकर एक अति भयंकर परिस्थिति उत्पन्न हो गई। स्वराज्य का प्रश्न गौण और मुसलमानों के पृथक् प्रातिनिध्य पर विचार मुख्य हो गया।

कलकत्ते के कांग्रेस अधिवेशन में एक सब–कमेटी इस प्रयोजन से बनी थी कि वह हिन्दुस्तान के उस भावी शासन का ढाँचा तैयार करे, ज़ो कांग्रेस की ओर से ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के सामने रखा जाये। इस उप–समिति ने शासन का एक प्रारूप तैयार किया था और उसमें ही इस समिति ने मुसलमानों के लिए राजनीतिक निकायों में पृथक् स्थान और उनका पृथक् निर्वाचन स्वीकार कर लिया था।

जब रामरक्खामल्ल और देसाई लखनऊ पहुँचे तो पूर्ण वायुमंडल में मुसलमानों के लिए पृथक् प्रातिनिध्य और उनके लिए पृथक् चुनावों की धूम मची हुई थी। स्वराज्य पर वाद–विवाद ठंडा पड़ चुका था। स्वराज्य का विरोध करने वाले नरम दल के दो–चार नेता स्वर्गारोहण कर चुके थे। उनका पक्ष दुर्बल पड़ चुका था।

मुसलमानों को पृथक् प्रातिनिध्य और उनका पृथक् निर्वाचन यही चर्चा वेग पकड़ रही थी। यद्यपि उस समिति का वक्तव्य निकला नहीं था, परन्तु यह विख्यात हो रहा था कि उक्त बातें पास हो ही जायेंगी। प्रायः हिन्दू इस निर्णय से असन्तुष्ट थे, परन्तु वे अपने को विवश मानते थे। जब रामरक्खामल्ल ने इस विवाद का अभिप्राय जाना तो वह मुख्य–मुख्य नेताओं से मिलने का विचार बना बैठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस उप–समिति के एक सदस्य पं. मदनमोहन मालवीयजी थे। रामरक्खामल्ल सबसे पहले उन्हीं से मिलने चल पड़ा। देसाईजी का साधारण–सा परिचय उनके साथ था। इस साधारण से परिचय के आश्रय़ वे उनसे मिलने गये।

पंडित मालवीयजी ने इन दोनों महानुभावों को आदर सहित बैठाया और इनसे परिचय पूछा। देसाई ने अपना परिचय दिया और बोला, ''मैं आपसे श्री तिलकजी के साथ बम्बई में मिला था।''

''ओह! स्मरण आ गया है। आपने अपना कारोबार सम्हाला है अथवा नहीं?''

''जी नहीं। मैं तो अब संन्यास लेने का विचार कर रहा हूँ।''

''क्यों? क्या आयु है आपकी?''

''मैं इस समय पैंतालीस वर्ष की आयु का हूँ।''

''आपकी अभी संन्यास लेने की आयु नहीं हुई।''

''इसका आयु से सम्बन्ध नहीं। इसका मन की अवस्था से सम्बन्ध है।''

''परन्तु मन की अवस्था का शरीर की आयु से घना सम्बन्ध है।''

''पंडितजी! मेरी अवस्था में तो यह सम्बन्ध कुछ उलटा प्रतीत होता है। मैं युवा अवस्था में विवाह से अरुचि रखता था। प्रौढ़ावस्था में विवाह के लिए उत्सुक होने लगा था। विवाह किया परन्तु सन्तान नहीं हुई। तब मैंने अपनी पत्नी को कारोबार समझाना आरम्भ कर दिया। जब वह समझ गई तो मैं कारोबार उसके हाथ में देकर क्रान्तिकारियों में सम्मिलित हो गया। जब कुछ और बड़ा हुआ तो क्रान्तिकारियों का प्रयास अपर्याप्त मान तिलकजी के विप्लवकारी आन्दोलन में सहयोग देने लगा। उसी आन्दोलन के सम्बन्ध में लखनऊ आया था, परन्तु यहाँ आकर तो इस विप्लवकारी आन्दोलन से घृणा उत्पन्न हो गई है और अब मैं देशवासियों और विशेष रूप में नेताओं के लिए शिक्षा केन्द्र खोलने का विचार करने लगा हूँ। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि हमारे देश के नेता इतने अस्थिर–चित्त क्यों हैं?''

''क्या अस्थिरता देखी है आपने उनमें?''

देसाई ने पंडितजी के प्रश्न का उत्तर देने के स्थान रामरक्खामल्ल का परिचय दे दिया। देसाई ने बताया, ''ये मेरे परम मित्र और पथ–प्रदर्शक हैं।''

''आपको भी मैंने पहले कहीं देखा है?''

''जी, मैं आपसे लाहौर कांग्रेस कमेटी के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की कोठी पर मिला था। लालाजी ने मेरा परिचय कराया था कि मैं साधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन कर पुनः गृहस्थ में आ गया हूँ।''

''ओह! ठीक है। लालाजी को तो अब भारत लौटने का अवसर मिलना कठिन है।''

''मुझको विश्वास है कि युद्ध के बाद वे लौट आयेंगे। हमारे सेठजी तो युद्ध–काल में ही आ गये हैं। सन् 1909 में इन्हें बंगाल रैग्युलेशन ऐक्ट 1818 के अधीन पकड़ कर ऐबटाबाद जेल में डाल दिया गया था। 1910 में ये भागने में सफल हो गए और 1911 से 1914 तक बर्न में रहे। और 1914 में इनको भारत आकर स्वतन्त्रतापूर्वक रहने का अवसर मिल गया।''

''ओह! तो आप वे विट्ठलभाई देसाई हैं? आपकी चर्चा वाइसराय की कौंसिल में हुई थी।''

''जी! मैं वही हूँ। ये लाला रामरक्खामल्ल कहते हैं कि आपने कैसे मुसलमानों के पृथक् प्रातिनिध्य पर हस्ताक्षर कर दिये हैं?''

''क्या हानि है इससे?''

''हानि यह है,'' रामरक्खामल्ल ने कहा, ''कि आज पृथक् निर्वाचन और कल पृथक् प्रतिनिधि तदनन्तर पृथक् नौकरियाँ और फिर पृथक् देश।''

''यह सब बात हम समझते हैं, परन्तु हम बड़े भाई हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम छोटे भाई के मन में विश्वास बैठायें कि हम उनके साथ न्याय करेंगे।''

रामरक्खामल्ल ने मुस्करा कर पूछा, ''यह कहाँ की युक्ति है कि न्याय करने के लिए अन्याययुक्त विशेष हिमायत करनी चाहिए?''

''यह व्यावहारिकता है। जब किसी बच्चे के मन में यह विश्वास बैठाना हो कि उसके साथ अन्याय नहीं हो रहा तो उसको कभी उसके भाग से अधिक भी दिया जा सकता है।''

''यह तो मुख को लहू लगाने के समान होगा। इससे न तो उनको विश्वास बैठेगा न ही उनकी तृप्ति होगी। वे समझने लगेंगे कि हिन्दू उनको धोखा देने के लिए उनको अपने भाइयों से भी अधिक अधिकार दे रहे हैं। जब एक बार इनका राज्य हो गया तो ये पुनः मुसलमानों को गुलाम बनाकर रखेंगे। इससे वे अब पृथक् राज्य माँगेंगे। पृथक् राज्य मिल जाने पर भी संतोष नहीं होगा। ये फिर भी अन्यान्य सुविधाएँ माँगते रहेंगे।''

''ऐसा कुछ नहीं होगा। यदि परिणाम इतने गहरे निकलेंगे तो हम बहुसंख्या में होते हुए उनको कुचल डालेंगे।''

''अभी क्यों नहीं कुचल डालते?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब अंग्रेज उनकी सहायता कर रहे हैं। वास्तव में अंग्रेजों ने ही उनके दिमाग में यह पृथकता का बीज बोया है। जब स्वराज्य हो जायेगा तब हम उनको समझा सकेंगे और वे अपना पृथक् रहना छोड़ देंगे।"

"पंडितजी। यह होगा ऐसे, कि अंग्रेज इतना आपसे स्वीकार करवा उनको पृथक् नौकरियाँ, पृथक् प्रान्त और फिर पृथक् राज्य के लिए भड़कावेंगे और आप एक–एक कर सब मानते जायेंगे। अन्त में उनके लिए पृथक् राज्य हो जायेगा। तब वे हमारे राज्य पर आक्रमण करेंगे और यदि हम उनके आक्रमण का विरोध करेंगे तो अंग्रेज उनकी सहायता करेंगे और तब हम स्वराज्य प्राप्त करने पर भी अंग्रेजों के अधीन बने रहेंगे।"

"परन्तु लालाजी! आप मुसलमानों पर इतना अविश्वास क्यों करते हैं? वे भी मानव हैं। वे भी समझते हैं कि इन्सान–इन्सान से कैसा व्यवहार करता है।"

"मैं तो इतिहास को स्मरण कर ऐसी सम्भावना का अनुमान लगा रहा हूँ।"

"बीते युग की बातें छोड़िये। उस समय हिन्दुओं में भारी दोष थे। वे परस्पर झगड़ते थे। अब हिन्दू संगठित होगा। वह मुसलमान को अथवा अंग्रेज को वैसा कुछ करने नहीं देगा जैसा पहले होता रहा है।"

पंडित मालवीयजी सदा आशा से भरे रहते थे। उनका जीवन कर्म–प्रधान था और सबको अपने समान सरल और शुद्ध–पवित्र मानते थे। रामरक्खामल्ल का यह अनुमान था कि पंडित मालवीयजी से महाराज बाल गंगाधर तिलक अधिक नीति कुशल होने के कारण इस समस्या का सुझाव निकाल सकेंगे। अतः वहाँ से छुट्टी पाकर दोनों श्री तिलकजी के साथ कैम्प में जा पहुँचे। वे पूना से आये प्रतिनिधियों में ठहरे हुए थे।

तिलकजी को विदित था कि देसाई ने बम्बई से, जो नरम दल वालों का गढ़ था, साठ से ऊपर गरम दल के प्रतिनिधि भिजवाये हैं। उन्होंने पूछा, "तो आप आ गये हैं? कहाँ ठहरे हैं?"

"बम्बई वालों के कैम्प में। हमारा विचार था कि यहाँ नरम और गरम दल में संघर्ष होगा, परन्तु वह संघर्ष तो दिखाई देता नहीं। हाँ, एक नया प्रश्न उपस्थित हो गया है। यह तो उस प्रश्न से भी अधिक गम्भीर और दूरगामी प्रभाव उत्पन्न करने वाला है।"

"मुसलमानों के पृथक् अधिकारों की बात कर रहे हैं या?"

"जी हाँ। यह मिस्टर सूद का कहना है कि ब्रिटिश सरकार भारत के दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्ड करने का विचार रखती है। एक इस्लामी खण्ड और एक हिन्दू खण्ड। ये दोनों खण्ड परस्पर लड़ते रहेंगे और अनन्त काल तक अंग्रेज हम में बन्दर–बाँट कराते रहेंगे। इस नीति का श्रीगणेश उस समय हुआ था, जब अलीगढ़ मुस्लिम कॉलेज में कर्नल बैक प्रिन्सिपल बन कर आये थे। तब से ही मुसलमान कांग्रेस को हिन्दुओं की संस्था कहकर उससे पृथक् रहने का यत्न करते रहे हैं।''

''परन्तु कुछ मुसलमान तो हममें भी सम्मिलित होते रहे हैं।''

''क्षमा करें। यदि मैं यह कहूँ कि कुछ मुसलमानों को हम अपने रसूख से अपने साथ लेकर चलते रहे हैं तो ठीक होगा। ''रामरक्खामल्ल बीच में बोल उठा।

तिलक गम्भीर हो रामरक्खामल्ल के कथन की सचाई पर विचार करता रहा। फिर कुछ सोच कर कहने लगा, ''आप ठीक कहते हैं। कुछ–एक मुसलमान जो हम में आते रहे हैं, वे हमारे लिए शक्ति का प्रतीक नहीं रहे, प्रत्युत वे दुर्बलता का प्रतीक ही रहे हैं। कांग्रेस ने आरम्भ से ही यह नीति अपनाई थी कि मुसलमानों को साथ लेकर चलना है और तब से ही हम उनको साथ रखने का यत्न करते रहे हैं।

''सन् 1888 में कांग्रेस ने यह निश्चय किया था कि किसी ऐसे विषय पर विचार भी नहीं किया जायेगा, जिसको हिन्दू अथवा मुसलमान पसन्द नहीं करेंगे।

''तदनन्तर 1908 में कांग्रेस ने यह निश्चय किया कि ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के एक सौ सात सदस्य होंगे और उनमें से पाँचवाँ भाग मुसलमान अवश्य होंगे।

''सो मिस्टर सूद! तुम ठीक कहते हो कि हम कुछ–एक मुसलमानों को साथ लेकर चलते रहे हैं और अब हम एक ऐसा यत्न करने जा रहे हैं जिससे हिन्दुस्तान के सब मुसलमान हमारे साथ चल सकें। इसके लिए हमको भारी त्याग करना पड़ेगा।''

''परन्तु महाराज! कोई ऐसा त्याग, जिससे हम अपनी भावी संतानों को भी बन्धक रख जायें, तो घोर अन्याय हो जायेगा।''

''इस समय मुख्य बात है स्वराज्य प्राप्ति। शेष सब कुछ गौण है। यदि हम स्वराज्य की नींव रखेंगे तो यह भावी सन्तानों के लाभ में होगा। यदि इस लाभ के लिए उनका कुछ बन्धक भी रख दिया जाये तो हम क्षमा के योग्य हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या इस समय अन्य कोई उपाय नहीं?"

"बताओ! क्या हो सकता है?"

"जितना यत्न मुसलमानों को साथ रखने के लिए किया जा रहा है उतना यत्न हिन्दुओं को हिन्दू राज्य स्थापित करने के लिए संगठित करने में किया जाये तो लाभ अधिक होगा।"

"हम समझते हैं यहाँ गृह–युद्ध हो जायेगा। यह गृह–युद्ध नगर–नगर, मुहल्ले–मुहल्ले, गाँव–गाँव और कदाचित् घर–घर में होगा।"

"भगवन! युद्ध तब होता है जब किसी एक को यह विदित हो कि वह इतना जबरदस्त है कि विरोधी अवश्य ही हार जोयेगा। यदि हिन्दुस्तान में हिन्दू संगठित हो जायें तो मुसलमानों को विश्वास हो जायेगा कि वे गृह–युद्ध में विजयी नहीं होंगे। इस कारण वे अंग्रेज की सहायता के बिना गृह–युद्ध आरम्भ नहीं करेंगे और अंग्रेज यत्न करेगा कि हिन्दू के साथ समझौता करे। मेरी सम्मति में मुसलमान से इस दुर्बल अवस्था में समझौता करने की अपेक्षा संगठित अवस्था में अंग्रेजों से समझौता करना ठीक रहेगा।"

"परन्तु हिन्दू संगठित नहीं होंगे।"

"क्यों?"

"यह अनन्तकाल तक सम्भव नहीं।"

"कारण बताइये। केवल वक्तव्य से मेरा पेट नहीं भरता। यदि मुसलमान संगठित हो सकते हैं, यदि अन्य कोई भी समुदाय संगठित हो सकता है तो हिन्दू भी हो सकता है।"

"तो आप यही काम करिये।"

"यह तो आप ठीक कहते हैं। संगठन कार्यवाही कर सकता है जिसको इस पर विश्वास हो। मैं यही तो यत्न कर रहा हूँ। परन्तु मुझको भय है कि आप ही हमारा विरोध करने लगेंगे। कारण स्पष्ट है, आपका हिन्दू संगठन में विश्वास नहीं।"

"आप कैसे करेंगे?"

"मैं तो यह करने का विचार रखता हूँ कि हिन्दुओं में जन्म–जात जाति–पाँति का विचार मिटा दूँ। हिन्दुओं में स्वार्थरत रहने की प्रवत्ति के स्थान पर धर्म और न्याय की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दूँ। सब–के–सब धनी, निर्धन, राजा, रईस और मजदूर, ब्राह्मण और चाण्डाल को एक समान मानने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दूँ। इस देश को हिन्दुओं की बपौती और हिन्दुओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ के राज्य का उत्तराधिकारी स्वीकार करा लूँ। और कह दूँ कि यहाँ धर्म का राज्य स्थापित होगा।

"जब यह विचार पर्याप्त विस्तार पा जायेगा तो फिर एक स्वयंसेवक संस्था का निर्माण करूँ, जो इस पूर्ण देश के संगठन को चालू रख सके और उसमें क्षत्रिय भाग का निर्माण कर सके। तब मैं निश्चय से कह सकूँगा कि हिन्दूराष्ट्र का निर्माण हो जायेगा और हिन्दूराज्य भी हो जायेगा।"

"हिन्दू–संगठन तो दूर रहा, हिन्दू–जाति टूक–टूक हो जायेगी और हिन्दू–हिन्दू परस्पर लड़ पड़ेंगे।"

एकाएक तिलकजी उठ खड़े हुए और बोले, "आप तो दयानन्दी हैं न?"

"जी।"

"तभी, दयानन्द का प्रयास असफल हो गया है।"

रामरक्खामल्ल कहना चाहता था कि उनकी बात की परीक्षा हो नहीं सकी। परन्तु तिलकजी उठकर पंडाल की ओर चले गये। वहाँ विषय निर्वाचन समिति की बैठक हो रही थी।

: 13 :

रामरक्खामल्ल कांग्रेस के अन्त तक वहाँ नहीं ठहरा। विट्ठलभाई भी उसके साथ ही वहाँ से चला आया। दोनों कुछ दिन के लिए हरिद्वार चले गये। वहाँ से ऋषिकेश जा पहुँचे। बाबा काली कमली वाले के आश्रम में ठहर वे परस्पर अपने भावी कार्यक्रम पर विचार करने लगे। दिन के पश्चात् दिन व्यतीत हो रहे थे और कोई निश्चित कार्यक्रम बन नहीं पाता था।

रामरक्खामल्ल का विचार था कि यह कांग्रेस आन्दोलन तो गरम दल वालों के हाथ में क्या और नरम दल वालों के हाथ में क्या? यह निरर्थक ही है। यदि यह स्थापित न की जाती, तो भी क्रान्तिकारी दल बनते और इस संस्था की अनुपस्थिति में उनका प्रभाव क्या होता, कहना कठिन है। दूसरे देशों के इतिहास के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि वे देश को स्वतन्त्र कराने में अधिक समर्थ हो सकते।

वर्तमान परिस्थिति में लाला रामरक्खामल्ल का कहना था, "इस देश में हिन्दू ही स्वराज्य प्राप्त करने के योग्य हैं और वे प्रयत्न कर रहे हैं।

"परन्तु उनके मन में ऐसी हीन–भावना उत्पन्न हो गयी है कि वे समझने लगे हैं कि वे अकेले अति दुर्बल हैं और बिना मुसलमानों की सहायता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य तो दूर रहा, कुछ नौकरियाँ और पदवियाँ भी नहीं पा सकेंगे।''

''इस हीन–भावना का क्या कारण है?'' देसाई ने पूछा।

''एक तो यह कि इस देश में हिन्दू, जाति–पाँति, ऊँच–नीच, प्रान्त–प्रान्त की भावना और छूत–अछूत के भेद–भाव में फँसा हुआ प्राणी है। यह तुरन्त दूर होनी चाहिए।

''दूसरे, हिन्दू किसको कहते हैं? इस विषय में सब सहमत नहीं हैं। कोई चोटी रखना हिन्दू होने का लक्षण समझता है। कोई तिलक लगाना हिन्दू का लक्षण मानता है। किसी का हिन्दूपन धोती पहनने में दिखाई देता है इत्यादि। ये सब लक्षण हिन्दू के नहीं हैं। हिन्दू तो वह जन–समुदाय है जो इस देश को अपनी जन्म–भूमि तथा पुण्य–भूमि मानता है। शेष सब लक्षण सामाजिक, स्थानीय और गौण हैं।

''हिन्दुस्तान को अपनी पुण्य–भूमि मानने में यहाँ का इतिहास, यहाँ के रीति–रिवाज, यहाँ की परम्पराएँ, यहाँ का साहित्य और धर्म हमारे उत्कट प्रेम का विषय हो जाते हैं। तब यदि कोई हमारे इतिहास को गलत माने अथवा हमारे पूर्वजों को हीन, दीन, अशिक्षित कहे तो हम इसको गाली समझें, इत्यादि।

''तीसरे, यह कि धर्म, विशेषरूप में हिन्दूधर्म क्या है, यह जान लेने से ही हिन्दू संगठन बन सकेगा। हिन्दू–मूर्ति पूजक हैं; हिन्दू, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र हैं; हिन्दू शिवजी के उपासक हैं इत्यादि भावनाएँ मिथ्या हैं। इन बातों का सम्प्रदाय से सम्बन्ध है। हिन्दू धर्म तो इन सब से भिन्न है। ये बातें रह सकती हैं, परन्तु वास्तविक बात है कि यहाँ के रहने वालों के आचार–विचार ही, जिनका स्रोत हमारे शास्त्र हैं, हमारे धर्म के सूचक हैं।

''इस समय करणीय कार्य हैं–छूआछूत एवं जन्मजात वर्णाश्रम धर्म समाप्त करना। पिछड़ी जाति की कल्पना को निर्मूल करना। सब बराबर हैं, सबको उन्नति करने के अवसर समान हों और जो इस देश को जन्मभूमि, पुण्यभूमि मानते हैं, उनका संगठन हो। जो ऐसा नहीं मानते, जो इसके लिये अपना सब कुछ निछावर करना नहीं चाहते, वे हिन्दू नहीं हैं। हिन्दुस्तान उनका देश नहीं है। वे यहाँ के राष्ट्र का अंग नहीं हैं।''

''तो इसको आप संन्यासी होकर प्रचलित करना चाहते हैं?''

''और क्या घर बैठकर कर सकूँगा?''

''देखिये मिस्टर सूद! आप भगवा वस्त्र पहन लें परन्तु एक कीले से बँधकर काम करिए। यह बात दूसरी है कि कीले का रस्सा जरा लम्बा रखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे आप इधर–उधर घूम सकें। परन्तु मेरा कहा मानिए, एक संस्था में रहने से कार्य अधिक विस्तार पायेगा।''

''यह तो ठीक ही है। परन्तु प्रश्न यह है कि आश्रम जंगल में हो अथवा नगर में?''

''जहाँ कार्य का क्षेत्र हो। आपका कार्य जनता को समझाना है अथवा आत्म–शुद्धि करना?''

''दोनों। बिना आत्म–शुद्धि के ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। बिना ज्ञान के मार्ग नहीं दिखाई देगा।''

''तो ऐसा करिए, बम्बई के किसी उपनगर में आश्रम का निर्माण करिए। जहाँ आपको एकान्त भी मिले और जनता की पहुँच भी हो सके। अथवा जहाँ से आप जनता तक पहुँच भी सकें।''

इसी प्रकार के विचार–विनिमय में दो सप्ताह निकल गये और तब दोनों वापस बम्बई लौट आये। आते समय रामरक्खामल्ल कनखल में गंगा के किनारे, जहाँ सैंतीस वर्ष पूर्व उसने भगवे वस्त्र उतारे थे, वहीं बैठ उसने पुनः धारण कर लिये। इस बार उसने कुंडल नहीं पहने। परन्तु जटाजूट बढ़ानी आरम्भ कर दी। उसने सेठ देसाई को बताया कि वह अब गरीबदास है। उसके गुरु स्वर्गीय स्वामी बालकराम हैं।

सेठ देसाई सामने बैठ मुस्करा रहा था। जब गरीबदास चलने के लिये तैयार हुआ तो देसाई ने पूछ लिया, ''महाराज! अब किधर चलेंगे?''

''अब तुम जाओ। बम्बई में आश्रम का स्थान ठीक करो फिर मैं वहाँ आ जाऊँगा।''

''देखिए महाराज! इस प्रकार नहीं। आप चलिये। अभी आप संगीत भवन में ठहरेंगे। अब प्रातः की प्रार्थना तो राधा कराया करेगी। आप भवन के बड़े 'हॉल' में सायंकाल गोष्ठी लिया करेंगे। अब आपके वे व्याख्यान सार्वजनिक हुआ करेंगे। वहाँ जाने के एक मास के भीतर आश्रम का प्रबन्ध होगा। उस आश्रम में मैं कुछ नहीं करना चाहता। वह जनता की ओर से होगा और आपके प्रताप से होगा।

''मैं एक बात विचार कर रहा हूँ कि यदि आश्रम बन गया तो वहाँ एक मुद्रणालय होगा। वहाँ से एक मासिक पत्रिका निकलेगी। उसमें आप के विचारों का प्रचार होगा। उस आश्रम में चारों वर्ण समान रूप से आयेंगे। सबको समान रूप में सहायता मिलेगी। उस आश्रम में एक विशाल पुस्तकालय होगा। एक अनुसंधानालय होगी। और वहाँ से साहित्य का अनवरत प्रवाह निकलता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि इतने वर्ष मैं मृगतृष्णा के पीछे भागा फिरता था। देश को स्वतंत्र कराने से क्या लाभ, यदि उस स्वतंत्र भूमि में मानव नहीं बसते। हमको भारत में मानसिक विचार से बौने पैदा नहीं करने और न ही उन बौनों के हाथ में इस देश की बागडोर देनी है।"

देसाई ने चोरी–चोरी रुक्मिणी को एक तार भेज दिया था कि भापा ने भगवे पहन लिए हैं और जनवरी बीस को बम्बई विक्टोरिया टर्मिनस पर पंजाब मेल से पहुँच रहे हैं।

रुक्मिणी ने स्वामीजी महाराज के स्वागत का प्रबन्ध कर दिया। संगीत भवन के अधिकारी, विद्यार्थी, पुराने विद्यार्थी, उनके माता–पिता, रामरक्खामल्ल के घर के आदमी और अन्य परिचित, दो–तीन हजार की भीड़ स्वामी गरीबदास के स्वागत के लिए वहाँ एकत्रित हो गई।

गरीबदास इस प्रकार लोगों को पुष्प मालाएँ लिए खड़े देख विस्मय में देसाई का मुख देखने लगा। देसाई तो जानता था, इस कारण उसने मुस्कराते हुए कहा, "महाराज! बम्बई आ गयी। अब उतरिए।"

"ये सब लोग आपने बुला रखे हैं?"

"नहीं महाराज! मैंने किसी को नहीं बुलाया। मैंने तो केवल यह तार भेजा था कि मैं स्वामी गरीबदास जी के साथ आज इस गाड़ी से आ रहा हूँ। यह स्वागत का प्रबन्ध तो आपके चेलों की स्वेच्छा से प्रतीत होता है।"

एक क्षण तक गरीबदास ने देसाई के मुख पर देख कर कहा, "तुम मुझको बन्धनों में बाँध कर ठीक नहीं कर रहे।"

"महाराज! मैं कुछ भी नहीं कर रहा। इस पर भी यह जिस किसी ने किया है, इतना मैं कह सकता हूँ कि उसने अपने स्वार्थ के हेतु नहीं किया। देश, जाति और धर्म के लिए ही किया प्रतीत होता है।"

गरीबदास गाड़ी से उतरा। सबसे पहले वर्मा ने स्वामीजी को पुष्पमाला पहनाई। तदनन्तर कोई माला और कोई पुष्प अर्पित करने आते गये। पंक्ति बाँधे हुए लोग आगे से गुजरते गये और माला तथा पुष्प अर्पित करते चले गये।

लेखवती इत्यादि, घर के लोग भी उसी प्रकार आये, जैसे अन्य दर्शक आये थे। रुक्मिणी अपनी मोटर गाड़ी लाई थी। उसमें स्वामीजी को बैठाकर संगीत भवन को भेज दिया। वर्मा जी उनके साथ गए।

रुक्मिणी एक अन्य गाड़ी में देसाईजी के साथ स्वामीजी के पीछे–पीछे चल पड़ी। मार्ग में उसने कहा, "मैं तो समझी थी कि आप भी भगवे पहने होंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको पंडित मदनमोहन मालवीय जी ने मना कर दिया है। उनका कहना है कि मेरी आयु अभी संन्यास लेने की नहीं। हाँ मैं वानप्रस्थ ले स्वामीजी की सेवा करूँगा।"

"सत्य? परन्तु अभी तो आपने पतलून, कोट, नैक्टाई पहनी है?"

"देखो रुक्मिणी! वानप्रस्थ में परिवर्तन धीरे–धीरे होता है। वह सब अपने–अपने समय पर हो जाएगा।"

इस पर दोनों हँस पड़े। रुक्मिणी ने कहा, "एक बात से मैं प्रसन्न हूँ कि आपने महाराज तिलक का पल्ला छोड़ पंडित महामना मालवीयजी का पल्ला पकड़ लिया है।"

"तो इससे तुम प्रसन्न हो?"

"मैंने तिलकजी का भाषण, मुसलमानों को विशेष प्रातिनिध्य देने के लिए पढ़ा है। मैं मन में विचार कर रही थी कि कहीं भापा वहाँ बीच में ही न बोल पड़े हों।"

देसाई ने विस्मय में रुक्मिणी का मुख देखते हुए कहा, "यदि भापाजी वहाँ रहते तो अवश्य दो–चार जली–कटी सुनाते, परन्तु ईश्वर का धन्यवाद है कि तिलकजी तथा मालवीयजी की बातें सुन हम निराश हो पहले ही लखनऊ से चले आये थे।"

"तो आपको भी यह निराशाजनक लगा था?"

"हाँ, हमने अनुभव किया है कि अब हम राजनीतिक कार्य छोड़ देंगे। हम सांस्कृतिक कार्य ही करेंगे। इसके लिये हमने एक योजना बनाई है।"

"यह आपने मुझको पहले लिखा होता तो आपका स्वागत तो स्वामी जी से भी बड़ा हो जाता।"

"क्यों?"

"स्वामीजी तो पहले भी ऐसे विचार रखते थे। वे कहा करते थे कि ये (तिलकजी) शास्त्र तो पढ़े हैं परन्तु इन्होंने इनको यूरोप की ऐनक लगा कर पढ़ा है। तभी ये हिन्दू जाति की वास्तविक रूपरेखा नहीं समझ, सके। परन्तु आप अभी तक तो तिलकजी को धन देते रहते थे।

"मैं पंडित मदनमोहन जी को इनसे अधिक योग्य समझती हूँ।"

"योग्यता की बात तो हम कह नहीं सकते। हाँ, वे अधिक धर्मपर निष्ठावान हैं। ये तो धर्म के तत्त्व को समझ ही नहीं पाये।"

इस समय तक सब संगीत भवन पर पहुँच गये। स्वामी गरीबदास तो लपक कर सीढ़ियों से ही चढ़ते हुए ऊपर की मंजिल पर जा पहुँचे। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी ने अपना भवन में अन्तिम उपदेश दिया। उपदेश के बाद उन्होंने कह दिया, "मैं आज से संगीत भवन का कार्य छोड़ता हूँ। अभी, जब तक मेरी कल्पना का आश्रय नहीं बन जाता, तब तक मैं यहाँ रहूँगा और सायंकाल छः बजे से सात बजे तक भवन के बड़े हॉल में व्याख्यान दिया करूँगा।

"मैं विचार करता हूँ कि शीघ्र ही कोई उचित स्थान इस कार्य के लिए मिल जाएगा।

"अब कल से प्रार्थना का कार्य राधा कराया करेगी।"

"मैं?" राधा ने विस्मय से पूछ लिया।

"हाँ! यदि तुम इतने वर्ष तक मेरे उपदेशों को सुन कर यह कार्य करने में अपने को अशक्त पाती हो तो मैं अपने उपदेश में त्रुटि ही समझूँगा।"

राधा गम्भीर हो गई और चुप रही।

उसी सायंकाल नीचे के 'हॉल' में व्याख्यान हुआ। पहले दिन तो केवल दस–बारह व्यक्ति ही आये, परन्तु दिन–प्रतिदिन श्रोतागणों की संख्या बढ़ने लगी।

एक मास व्यतीत होते–होते हॉल भरने लगा। स्वामी गरीबदास शास्त्रों पर व्याख्यान देते थे, परन्तु शास्त्र की व्याख्या से देश की समस्याओं को लेकर उसके कारण और उसका सुझाव बता देते थे।

एक दिन स्वामीजी बता रहे थे, "धर्म ही कानून का मुख्य आधार है। कोई भी कानून धर्म के व्यापक नियमों के विपरीत नहीं हो सकता। इस पर भी धर्म अन्तर्प्रेरणा से पालन किया जा सकता है। कानून का पालन बाहरी दबाव से होता है।

"उदाहरण के रूप में चोरी करना अधर्म है। एक व्यक्ति जौहरी की दुकान पर जाता है और वहाँ पड़े हीरा–पन्ना देख, उनके उठाने की इच्छा करने लगता है। इससे अधर्म तो हो गया, किन्तु यह चोरी नहीं हुई। वह देखता है कि चौकीदार बन्दूक लिये दरवाजे पर खड़ा है और वह पकड़ लेगा तो सात वर्ष तक की कैद हो जायेगी। इसके डर से भयभीत वह कोई वस्तु नहीं चुराता। चोरी नहीं की गई परन्तु अधर्म तो हो गया है।

"इसी प्रकार यदि मुसलमान आज सरकार के साथ मिल कर देश की स्वतन्त्रता में सहायक बनता है, परन्तु समझौतों से हिन्दू के साथ रहता है तो अधर्म तो हो गया, यद्यपि दिखावे में देश–भक्ति बनी हुई है।

"इस कारण हम यहाँ धर्म का राज्य चाहते हैं, जिससे जो भी करना अथवा कहना हो, वह स्पष्ट रूप में अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा से हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अन्तःप्रेरणा संस्कारों से आती है। हिन्दू के संस्कार और मुसलमान के संस्कार समान होने चाहिये, तब दोनों के कर्तव्य समान प्रेरणा से सम्पन्न होंगे। यह कैसे हो? यह प्रश्न है। इसके लिए मुसलमान को कम–से–कम बाहरी व्यवहार में हिन्दू के समान हो जाना चाहिए।

"संस्कार ऐसे होने चाहिए जिससे एक मुसलमान भी अपने को हिन्दुस्तान का रहने वाला समझने लगे। हिन्दू ऐसा करता है। तभी जब–जब भी देश पर भीड़ पड़ती है, वह इसके लिए लड़ता है मरता है।

"संस्कार हों हिन्दुस्तानी जबान को सीखना, हिन्दुस्तानी पोशाक पहनना, हिन्दुस्तानी जबान में अपने और अपने बच्चों के नाम रखना और यहाँ रहने वाले पूर्वजों के लिए इज्जत और तारीफ करना।"

नित्य व्याख्यान के उपरान्त प्रश्नोत्तर होते थे। आज एक यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर सदाशिवराव ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उसने पूछा, "आपने कहा है कि मुसलमानों को हिन्दुओं के समान हो जाना चाहिए। मैं जानना चाहता हूँ कि हिन्दू–मुसलमानों के समान क्यों न हो जायें?"

गरीबदास का कहना था, "इसलिए कि दोष मुसलमान में है। उनकी निष्ठा देश से बाहर की भाषा, देश से बाहर की भूषा और देश के बाहर की भावना में है। मुसलमान अपना नाम रखता है अब्दुल मजीद खाँ। यह हिन्दुस्तानी भाषा नहीं है। एक मुसलमान तुर्की टोपी पहनता है अथवा अफगानी सलवार पहनता है, वह हिन्दुस्तानी पोशाक नहीं पहनता।

"यदि इस देश में विदेशीय आचार–व्यवहार, भाषा–भेष और भावना की आवश्यकता है, तो निस्सन्देह हिन्दू को इस देश की बातों को छोड़ मुसलमान अथवा किसी अन्य की भाषा इत्यादि ग्रहण कर लेनी चाहिए।

"मैंने तो इस आधार पर बात की है कि हिन्दू–मुसलमान में समझौता हुआ है हिन्दुस्तान में स्वराज्य प्राप्ति के लिये। न कि ईरान, अफगानिस्तान अथवा तुर्की के समर्थन के लिए।"

सदाशिव का अगला प्रश्न था, "क्या मुसलमान मुसलमान रहता हुआ हिन्दुस्तान के स्वराज्य का भागीदार नहीं हो सकता?"

"बन सकता है। मैंने किसी मुसलमान को वैदिक धर्मी होने के लिए नहीं कहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि मोहसिन खाँ में इस्लाम है क्या? तुर्की टोपी में अथवा अफगानी सलवार में इस्लाम के उसूल घुसे हुए हैं क्या? इसी प्रकार इस्लाम एक सिद्धान्त है अथवा तुर्की का सुलतान इस्लाम है। इस्लाम के मजहबी उसूलों को बदलने के लिए मैंने नहीं कहा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने आचार–व्यवहार के विषय में कहा है न? क्या इसका मजहब से सम्बन्ध नहीं है?"

"नहीं भी और है भी। कई व्यवहार ऐसे हैं कि उनका आदेश मजहब के द्वारा होता है। कुछ व्यवहार ऐसे भी हैं, जो रिवाज और परम्परा से बनते हैं। मेरा अभिप्राय उस व्यवहार से है जो मजहब के आदेश से बाहर है। यह भाषा का प्रश्न है। मुसलमान अंग्रेजी तो पढ़ लेते हैं परन्तु हिन्दी नहीं पढ़ते। जब अंग्रेजी पढ़ने में आपत्ति नहीं तो हिन्दी पढ़ने में भी नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार इस्लाम का सम्बन्ध हिन्दुस्तानी नामों से क्यों नहीं? एक रामदयाल मुसलमान क्यों नहीं हो सकता? और रुस्तम खाँ ही क्यों हो सकता है?"

"यह तो देखेंगे कि मुसलमान अपने को इन बाहरी लक्षणों में हिन्दू के समान करते हैं अथवा नहीं, किन्तु ऐसे व्यवहारों में भी, जिनका सम्बन्ध मजहब से है, हिन्दू और मुसलमान में अन्तर है। उन व्यवहारों के विषय में आप क्या कहते हैं?"

"उन व्यवहारों के विषय में परस्पर बैठकर निश्चय करेंगे कि उनमें से कौन से रखे जावें और कौन–से छोड़ दिये जायें।"

"और यदि निश्चय करने पर भी कोई अपने व्यवहार को छोड़ने को तैयार न हो तो?"

"तो फिर इस देश में या तो हिन्दू रहेंगे या मुसलमान रहेंगे।"

"देखिये स्वामीजी महाराज! यह बात झगड़े की जड़ है। इससे स्वराज्य प्राप्ति कभी नहीं होगी।"

"आप कृपया यह बतायें कि आप स्वराज्य क्यों चाहते हैं?"

"देशवासियों की आर्थिक दशा सुधारने के लिये।"

"बस अथवा कुछ और भी करणीय है?"

"बस, अधिक के लिए मुझको चिन्ता नहीं।"

"तो इसके लिए राज्य बदलने की आवश्यकता नहीं। लोगों को परिश्रमी बनाओ। उनके व्यसन छुड़ाओ, जिससे वे अपनी कमाई को व्यर्थ न गँवा सकें। उनके पास जो धन बचे, उससे सहकारी समितियाँ अथवा लिमिटेड कम्पनियाँ बनाओ और नए–से–नए उद्योग–धंधे चलाओ। देश समृद्ध हो जायेगा। हमारी आर्थिक दशा सुधर जायेगी।"

"परन्तु यह विदेशीय सरकार उद्योग–धंधों को चलने नहीं देगी।"

"आपने कोई उद्योग चलाया है?"

"नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका कोई भाई–बन्धु किसी उद्योग–धंधे के विषय में सीखने के लिए विदेश में गया है?"

"नहीं।"

"आपको किसी उद्योगपति ने बताया है कि उसको भारत का बना माल भारत में बेचने में बाधा उपस्थित होती है?"

"नहीं; परन्तु मैं जानता हूँ कि सरकार की फिस्कल (आयात कर सम्बन्धी) नीति ऐसी है कि हम विदेशों के माल से मुकाबला नहीं कर सकते।"

"मुझको यह पता है," गरीबदास ने कहा, "कि 1904 से 1909 तक स्वदेशी सम्बन्धी आन्दोलन के कारण उद्योगपतियों को करोड़ों रुपयों का लाभ हुआ था और सरकार उनके मुनाफे को रोक नहीं सकी।

"देखिये जी! स्वराज्य की माँग केवल इस कारण नहीं कि हम निर्धन हैं और धनवान होना चाहते हैं। प्रत्युत इस कारण भी है कि हमारे देश में नैतिक पतन हो चुका है। उस नैतिक पतन से देशवासियों को उभारने के लिए स्वराज्य की और भी अधिक आवश्यकता है।

"अनैतिकता को दूर करने के लिए एक आचार–संहिता का यहाँ प्रचार करना है। यदि मुसलमान उस आचार–संहिता में भागीदार बनना चाहेंगे तो इस देश में रह सकेंगे और यदि नहीं, तो उनको देश में कैसे रहने दिया जा सकता है?"

"इस आचार–संहिता में कौन–सी ऐसी बात है, जो आप आवश्यक समझते हैं?"

"इस देश से प्रेम। इस देश की वस्तुओं से प्रेम। इस देश की समृद्धता से प्रेम। इस देश के रहने वालों से प्रेम। इस देश के रहने वालों की भावनाओं का आदर और देश के रहने वालों की विचार–स्वतन्त्रता का आदर–ये कुछ बातें हैं।"

"मुसलमान ऐसा नहीं करते क्या?"

"यही तो मैं कह रहा था। देखिए, मैं समझा हूँ। मुसलमान तुर्की के सुलतान को अपना रहनुमा मानते हैं और यदि आज तुर्की हिन्दुस्तान पर आक्रमण करे तो इनमें से अधिकांश उसकी सहायता करने के लिए तैयार हो जायेंगे। इनकी स्थिति तो ऐसी है जैसे कुछ जर्मन चीन में रहते हैं और चीन पर जर्मन आक्रमण होने पर वे जर्मनी की सहायता करने लगते हैं। चीन की सरकार ऐसे जर्मनों को अपने देश में रहने न दे तो इसमें बुरा क्या है?

"इसी प्रकार मुसलमानों का देसी वस्तुओं से भी प्रेम नहीं। 1904 से 1909

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक के स्वदेशी आन्दोलन में मुसलमान, विशेष रूप में समृद्ध मुसलमान, स्वदेशी का विरोध करते थे। मुसलमानों को फारसी भाषा से अधिक प्रेम है और हिन्दी तथा संस्कृत से घृणा है। मुसलमानों को हिन्दुस्तानी पहनावे से नफरत है और तुर्की के पहनावे से प्रेम है मुसलमानों को तुर्की, मिश्र, ईरान के रहने वालों पर मुसीबत आने पर अधिक दुःख होता है और पड़ौसी हिन्दुओं की कठिनाई की उसको कभी चिन्ता नहीं हुई।

"हमारी भावनाओं का भी आदर करना वह कभी नहीं सीखा। हम गोहत्या से घृणा करते हैं और मुसलमान न केवल गोहत्या करना अपना अधिकार मानता है, प्रत्युत वह बलि की गो का प्रदर्शन करना भी पसन्द करता है। हम मूर्ति–पूजक हैं। यह ठीक है, या गलत है, इसके विषय में उसको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। परन्तु वह हमारे मन्दिर तोड़ने और हमारी मूर्तियों के नाक–कान तोड़ने में सदा तत्पर रहता है।"

"परन्तु हिन्दू भी तो उनसे घृणा करते हैं?"

"क्या कभी किसी हिन्दू–राजा–महाराजा ने अथवा किसी धनीमानी ने उनकी किसी मस्जिद को नापाक किया है। अथवा कभी किसी मुसलमानी मजहबी पुस्तक को जलाया है?"

उस दिन श्रोताओं में भारी वाद–विवाद छिड़ गया। जब सभा विसर्जित हुई तो सुनने वाले परस्पर बातचीत करते हुए बाहर निकले और दो–दो चार–चार की मंडलियों में लोग विचार–विनिमय करते हुए घरों को गये।

यह रुचिकर विषय था कि हिन्दू–मुसलमान का ऐक्य हो गया है और इसमें अब विघ्न नहीं बनना चाहिए। इसके विपरीत ऐसे लोग कम नहीं थे जो यह समझते थे कि इस ऐक्य को बहुत बड़ी कीमत दी गई है और उसके प्रतिकार में दो–चार मुसलमानों का समर्थन उस स्वराज्य की योजना को, जो पार्लियामेन्ट के सामने रखी गई है, कुछ नहीं। साधारण मुसलमान तो इसको अपने ध्येय (हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य) की ओर प्रथम–पग समझता था।

: 14 :

इस समय एक और घटना घटी। दुर्गा बम्बई में आ गई और आते ही वह संगीत भवन में पहुँची। वह होटल में ठहरी थी और प्रार्थना के समय संगीत भवन में आई तो वहाँ उपदेष्टा के स्थान पर राधा को बैठे देख चकित रह गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य उस विधि से ही चल रहा था, जिससे भापाजी ने चलाया था। विद्यार्थी ठीक साढ़े सात बजे एकत्रित होते थे। राधा भी समय पर आ जाती थी और प्रार्थना का गीत होता। तदनन्तर ईशावास्योपनिषद् के अठारह मन्त्रों का स्वर सहित पाठ होता और इसके बाद राधा एक मन्त्र की व्याख्या करती। यह ठीक था कि राधा अपने आशय को उतनी स्पष्टता से वर्णन नहीं कर सकती थी, जैसे रामरक्खामल्ल किया करता था, परन्तु दिन–प्रतिदिन वह इसमें भी योग्य होती जाती थी। साथ ही अभी स्वामी गरीबदास ऊपर की मंजिल पर रहते थे। इससे कभी कोई कठिनाई आ जाती तो वह माध्याह्न के समय उनसे जाकर पूछ लेती और अगले दिन लड़कियों को बता देती।

जब प्रार्थना तथा उपदेश समाप्त हुआ तो दुर्गा ने राधा के पास आकर पूछ लिया, "राधा बहन! भापाजी कहाँ हैं?"

"ऊपर की मंजिल पर हैं। उन्होंने यह काम मुझको सौंप दिया है और स्वयं संन्यास ले लिया है।"

"संन्यास?"

"हाँ; वे साधु हो गये हैं।"

"क्या मैं उनसे मिलने जा सकती हूँ?"

"चिट लिख कर चपरासी के हाथ भेज दो। यदि वे अपने नित्यकर्म से अवकाश पा गये होंगे तो अभी मिल लेंगे।"

दुर्गा ने चपरासी के द्वारा अपना नाम लिखकर भेज दिया और उसी समय उसको ऊपर बुला लिया गया।

आज देसाईजी और वर्माजी आये हुए थे। दुर्गा आई तो उसको भी बैठा लिया गया। वर्माजी बता रहे थे कि दस लाख रुपया एकत्रित हो रहा है। जिसमें ढाई लाख की तो भूमि जुहू में खरीद ली गई है। चौंतीस सौ गज जगह है। एक सौ पाँच रुपये गज भूमि पड़ी है। अब आर्किटैक्ट को भवन के लिए नक्शा बनाने के लिए कहा गया है। भूमि की रजिस्ट्री के लिए एक ट्रस्ट बना दिया गया है। उस ट्रस्ट का उद्देश्य रखा गया है धर्म–मन्दिर का प्रबन्ध करना। वहाँ मन्दिर बनेगा।

जब यह बात हो गई तो गरीबदास ने दुर्गा से पूछ लिया, "दुर्गा! कैसे आई हो? तुम्हरे पति कहाँ हैं?"

"उनका देहान्त हो गया है। लार्ड किचनर रूस से बातचीत करने मास्को जा रहे थे और मेरे श्रीमान उनके स्टाफ में थे। वाल्टिक सागर में टारपीडो से उनका जहाज डुबो दिया गया और जहाज के सभी प्राणी डूब गए हैं। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब विधवा हूँ और उनके एक बच्चे को लेकर हिन्दुस्तान लौट आई हूँ।''

''परन्तु तुम यहाँ और वह भी बम्बई में क्यों आई हो?''

''तो कहाँ जाती? मेरा और कोई है भी तो नहीं। यहाँ मैं आई तो थी अपने माता–पिता के पास। परन्तु मेरे माता–पिता अफ्रीका चले गये हैं। सुना है आगाखानियों ने उनको बहुत कष्ट पहुँचाया। इससे वे अपना सब धन एकत्रित कर अपने लड़के के साथ प्रिटोरिया में रहते हैं। मेरा भाई यासीन वहाँ वकालत करता है।''

''तो कहाँ ठहरी हो!''

''अभी तो एलफिंस्टन होटल में ठहरी हूँ।''

''साधन क्या है?''

''पतिदेव का प्रौविडैण्ट फण्ड का दो हजार पौण्ड मिला है। वह मैं पा गई हूँ। परन्तु मुझको शीघ्र ही कुछ प्रबन्ध करना होगा।''

''प्रबन्ध तो हो जायेगा। परन्तु बम्बई में तो तुम देखी जाओगी और पहचानी जाओगी।''

''मैं चाहती हूँ कि कोर्ट में प्रार्थना कर दूँ कि मैं अमुक औरत हूँ और मैं स्वतन्त्र रहना चाहती हूँ, मुझको संरक्षण मिलना चाहिए।''

''यह मिलेगा नहीं। तुम्हारा केस 'मुस्लिम लॉ' के अनुसार निर्णय होगा और तुम्हारे पति लियाकतअली को अधिकार दिया जायेगा कि वह तुमको पकड़ कर ले जाये।

''मैं चाहता हूँ कि तुम 'विट्ठल भाई फौण्डलिंग होम' में सोहनी के साथ जाकर रहो। वहाँ सौ से ऊपर बच्चे हैं। उनकी देखभाल और पालन–पोषण में सोहनी का हाथ बँटाओ?''

''ऐसे नहीं।'' देसाई बोल उठा, ''यह अभी रुक्मिणी के साथ रहेगी। तब तक मैं वकील से राय करूँगा कि क्या किया जा सकता है।''

''वह दुर्गा की और रुक्मिणी बहन की इच्छा पर निर्भर है।''

''अच्छी बात है। तुम यहाँ से होटल चली जाओ। मैं रुक्मिणी से बात करूँगा और यदि यह निश्चय हुआ कि तुम मेरी सेक्रेटरी बन कर रहो तो वे तुमको टेलीफोन कर देंगी अन्यथा मैं सोहनी बहन को टेलीफोन कर दूँगा कि वह तुमको 'फौडलिंग होम' में ले जाये।''

रामरक्खामल्ल को इसमें कोई शुभ प्रतीत नहीं होता था। वह इसमें अशुभ से बचने का उपाय करना चाहता था।

रुक्मिणी इस बात की तो चिन्ता नहीं करती थी कि एक सुन्दर औरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पति की सेक्रेटरी बनेगी। वह अपने पति के स्वभाव से भली–भाँति परिचित थी। उसको इस दिशा में तो कभी चिन्ता हुई ही नहीं। हाँ, वह हिन्दू–मुसलमान के झगड़े की आशंका करती थी। इस कारण उसने वकील से राय कर ली और जब उसने बताया कि कोई व्यक्ति अपने विवाह के साथी को छोड़ना चाहे तो छोड़ सकता है। उसको कोई रोक नहीं सकता। अब कौन्जुगल राइट्स को हाईकोर्ट ने एक के कहने पर इन्कार कर दिया है।

कानून से वह स्वतन्त्र है, परन्तु कानून के अतिरिक्त भी कई बातें चलती हैं। वे लड़की की हत्या करा सकते हैं। वे उस मकान को फूँक सकते हैं, जहाँ वह रहती है।

यह बात सुनकर रुक्मिणी ने पूछा, "तो क्या सरकार उसकी रक्षा नहीं करेगी?"

"करना चाहे भी तो कर नहीं सकेगी। शासन दो आधार पर चलता है। एक आतंक और दूसरे प्रजा की स्वेच्छा से अनुकूलता पर। इस विषय में आतंक सरकार चलायेगी नहीं। विदेशी सरकार आतंक का प्रयोग अपनी रक्षा के लिए तो करेगी, परन्तु न्याय के लिए करने में उसकी रुचि नहीं होगी। इस समय सरकार मुसलमानों को नाराज नहीं कर सकेगी?"

वकील के सम्मति ने तो इस बात को और भी विषम बना दिया। एक ओर मानवता का विचार था। क्या एक मानव की स्वतन्त्रता में सहायक होना चाहिए अथवा नही? दूसरी ओर हिन्दू–मुसलमान में झगड़ा हुआ तो सैकड़ों की हत्या हो सकती है। रुक्मिणी और देसाई इसका स्वयं निश्चय नहीं कर सके।

बात पुनः स्वामी गरीबदास के पास आ गई। देसाई ने वकील साहब की सम्मति और अपना भय प्रकट कर दिया। देसाई ने कहा, "यदि वह पुनः स्विट्जरलैंड में जाना चाहे तो मैं उसको खर्चा दे सकता हूँ।"

गरीबदास बहुत देर तक विचार करता रहा। अंत में उसने अपनी सम्मति देते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ कि दुर्गा को स्वतंत्रता से रहने की स्वीकृति दी जाये। उसके सामने तीन मार्ग खुले हैं। एक यह कि वह पुनः अपने मुसलमान पति के आश्रय चली जाये। इस अवस्था में उसको उसी प्रकार रहना होगा, जैसे वह रहना चाहे। दूसरे यह कि वह पुनः किसी से। विवाह कर ले। इस अवस्था में जो पति वह बरेगी, उसकी इच्छा मुख्य होगी। तीसरे वह किसी से विवाह करना न चाहे और हिन्दू बनी रहना चाहे। उस अवस्था में मैं उसकी यथाशक्ति रक्षा का प्रबन्ध करना चाहूँगा। मैं यह पाप समझता हूँ कि हम तीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ हिन्दू एक हिन्दू लड़की की रक्षा करने का यत्न भी न करें।''

इसने बात का निश्चय कर दिया। रुक्मिणी ने संगीत भवन से ही दुर्गा को टेलीफोन करते हुए कहा, ''मैं तुमको अभी संगीत भवन में मिलना चाहती हूँ। स्वामी जी का कहना है कि तुमको पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर दिया जाये। उस परिस्थिति को समझ कर जैसे तुम रहना चाहो, वैसा करने का यत्न किया जाये। बताओ तुमको मैं कब लेने आऊँ?''

दुर्गा का उत्तर आया, ''आपको आने की आवश्यकता नहीं मुझको बताइये, मैं कब और कहाँ आ जाऊँ।''

''सायंकाल छः बजे से सात बजे तक भवन के बड़े हॉल में स्वामी जी का प्रवचन होता है। तुम उस समय आना चाहो तो आ सकती हो। बातचीत तो प्रवचन के बाद ही होगी।''

''मैं आ जाऊँगी।''

आज स्वामी गरीबदास ने निम्न मंत्र का पाठ और उसकी व्याख्या कर दी–

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तꣳस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

असुर योनियाँ घोर अन्धकार से आच्छादित हैं। वे लोग जो परमात्मा पर विश्वास नहीं रखते, वे मरने के अनन्तर उन योनियाँ को प्राप्त होते हैं।

असुर योनियाँ कौन–कौन सी हैं? एक तो वे योनियाँ जिनमें घोर अन्धकार है। अन्धकार का अर्थ ज्ञान और ज्ञान से लाभ उठाने की असमर्थता के हैं। जिन योनियों में प्राणी का मन और इन्द्रियाँ मार्ग दर्शन न कर सकें, जिनमें जीव स्वभाववश कर्म करता हो, खाना, पीना सरदी–गरमी से बचना और सन्तानोत्पत्ति करना। ये कर्म भी स्वभाववश ही होते हों। सोच–विचार कर पाप–पुण्य हानि–लाभ को देख कर नहीं किये जाते हों। उन योनियों को असुर योनियाँ कहते हैं। उदाहरण के रूप में कीट–पतंग इत्यादि आसुरी योनियाँ हैं। मानवों में भी कई लोग ऐसे होते हैं जो स्वभाववश भाग्य के प्रवाह में बहते चले जाते हैं। न तो उनमें विचार कर अपना मार्ग ढूँढ़ने की शक्ति होती है, न ही इच्छा। ऐसे लोग असुर कहाते हैं। ये इन्द्रियों के विषय में रत रहते हैं और उन विषयों के पीछे–पीछे भागते रहते हैं।

इन योनियों में वे लोग जन्म लेते हैं जो परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। परमात्मा सब को देखता है और सब के साथ न्याय करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा के अस्तित्व को न मानने का अर्थ है किसी न्यायकर्ता के अस्तित्व को न मानना। ऐसे लोग, जब–जब भी पापाचार के लिए अवसर देखते हैं निशंक होकर करते हैं। उनका इन अधम योनियों में जाने का यही कारण है।

इस प्रकार प्रवचन चल रहा था। दुर्गा भी आई और भरे हुए हॉल में उस ओर बैठ गई, जिधर स्त्रियाँ बैठी थीं। आज भी प्रवचन के बाद एक मराठा ब्राह्मण उठ कर प्रश्न करने लगा। उसने पूछा, ''आप किस जाति के हैं?''

''मैं मानव जाति का हूँ।''

''मैं यह नहीं पूछ रहा। मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय इत्यादि जाति के विषय में पूछ रहा हूँ।''

''ब्राह्मण, क्षत्रिय इत्यादि वर्ण कहाते हैं। इनको किसी शास्त्र में जाति के रूप में नहीं लिखा।''

''तो जाति किसको कहते हैं?''

''यह जन्म से जाति होती है। जन्म से मैं मानव हूँ।''

''किस वर्ण में उत्पन्न हुए हैं?''

''मैं अब संन्यासी हूँ। संन्यासी का कोई वर्ण नहीं होता।''

''वेद कहाँ से पढ़े हैं?''

''अपने गुरुजी से।''

''आप इसके स्वर अशुद्ध बोल रहे थे?''

''मेरे गुरु ने बताया है कि ये स्वर शुद्ध हैं। वेद संहिताओं में ह्रस्व दीर्घ, प्लुत का संकेत तो है, परन्तु स, रे, ग, म, प, ध, नि का संकेत नहीं। मैंने मन्त्रों को भैरवी स्वर में गाया है। लय, संहिताओं की पद्धति के अनुसार ही है। स्वर भैरवी के थे।''

पंडितजी को परेशानी अनुभव हुई। इस पर गरीबदास से कह दिया, ''संहिता है आपके पास?''

''नहीं।''

''तो ऐसा करिये कल संहिता ले आइये और मेरे पास लेकर बैठ जाइयेगा। उसकी लय आप संहिता ग्रन्थ में देख लीजिये, शुद्ध होगी।''

साधारण जनता को, जो संगीत के विषय में कुछ नहीं जानते थे, इस विवाद में रुचि नहीं थी। अब वही प्रोफेसर सदाशिवराव पूछने लगा, ''हिन्दू असुर हैं अथवा देव?''

''वेद भगवान में मनुष्यों और प्राणियों की श्रेणियाँ हिन्दू–मुसलमान से नहीं की गईं। वहाँ कर्म और स्वभाव से श्रेणियाँ बनाई हुई हैं। हिन्दुओं में आसुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवृत्ति के लोग भी हैं और दैवी प्रवृत्ति के भी। इसी प्रकार से अन्य मत–मतान्तरों की बात भी है।''

''तो आप हिन्दुओं की प्रशंसा क्यों करते रहते हैं?''

''मैंने किसी भी हिन्दू की प्रशंसा नहीं की। मैंने हिन्दुस्तान के प्राचीन धर्म की प्रशंसा अवश्य की है। उसका मुकाबला अपने ज्ञान और बुद्धि के अनुसार अन्य देशों के धर्मों से अवश्य किया है।

''मैंने हिन्दू धर्म की उक्त बात कि परमात्मा को न मानने वाला ऐसे कर्म करने लगता है, जिससे वह अन्धकारमय अर्थात् ज्ञानविहीन योनियों में पड़ जाता है, कही है। इसमें आपको दोष प्रतीत होता है क्या?''

''हाँ। मैं परमात्मा को नहीं मानता। मैं मनुष्य में नेक बनना उसका स्वभाव मानता हूँ।''

''मनुष्य और पत्थर में क्या अन्तर है?''

''मनुष्य में परमाणुओं का संयोग पत्थर से भिन्न प्रकार का है। मनुष्य का स्वभाव इस संयोग के ही कारण है।''

''क्या यह संयोग किसी प्रयोगशाला में बनाकर देखा गया है अथवा किसी प्रयोगशाला में इस संयोग का विघटन होते देखा गया है?

''फिर यह संयोग सब प्राणियों में एक समान क्यों नहीं? उनमें किस प्रकार का अन्तर है, मनुष्य–मनुष्य में भी तो अन्तर है। कृपया प्रोफेसर साहब! बताएँ कि इस विषय में कहाँ, क्या देखा गया है।''

''अभी सफलता नहीं हुई। इस पर भी परीक्षण किये जा रहे हैं।''

''तो मेरा निवेदन है कि जब तक आपके परीक्षण सफल नहीं हो जाते, किसी निश्चित सिद्धान्त का प्रतिपादन तो अनधिकार चेष्टा है। आपने अभी तक उस चेतन शक्ति का तो ज्ञान प्राप्त किया नहीं, जिससे आप बोलते, विचार करते और पढ़ाते हैं, चलते–फिरते हैं और इस समय मुझसे विचार–विनिमय कर रहे हैं। परमात्मा तो अभी दूर है।''

''तो क्या आपने परीक्षा करके देख लिया है कि परमात्मा है?''

''हाँ!''

''मुझको दिखाइए।''

''आपने कौन–सी श्रेणी तक पढ़ाई की है?''

''मैंने इकानोमिक्स विषय में एम.ए. किया है।''

''क्या आप कैमिस्ट्री के किसी जटिल योग निर्माण के विषय में परीक्षण कर सकते हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु कैमिस्ट्री का प्रोफेसर तो कर सकता है?"

"तो वह सिद्ध हुआ कि बिना कैमिस्ट्री पढ़े कैमिस्ट्री का ज्ञान नहीं हो सकता। इसी प्रकार बिना अर्थ–शास्त्र पढ़े अर्थ–शास्त्र की गहराइयों के विषय में कोई कुछ नहीं कह सकता। कैमिस्ट्री की बात का, आपको कैमिस्ट्री के विद्वान से जानकर, उस पर विश्वास करना होगा। इसी प्रकार अध्यात्म भी एक विद्या है। उसकी भी शिक्षा होती है। उस शिक्षा का नाम योगाभ्यास है। योगाभ्यास में भी श्रेणियाँ होती हैं और वे आठ प्रकार की हैं–

यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार
धारणा ध्यानसमाधयोऽष्टावङ्घानि।

यम, नियम आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

"इतनी श्रेणियाँ पास करने पर क्या होता है? यह भी बताया है–

योगाङ्घानुष्ठानाद शुद्धिक्षये
ज्ञानदीप्तिराविवेक ख्यातेः।

"योग के अंगों का पालन करने से अशुद्धि का नाश होता है और ज्ञान का प्रकाश होता है। यहाँ तक कि उसको आत्मा का स्वरूप बुद्धि, अहंकार और इन्द्रियों से सर्वथा भिन्न प्रत्यक्ष दिखलाई देने लगता है।"

"आपने यह किया है? मेरा अभिप्राय है कि आपने ये श्रेणियाँ पास की हैं?"

"निस्सन्देह। यह तो नहीं कह सकता कि मैंने इनमें फर्स्ट डिवीजन लिया है। इस पर भी इनको उत्तीर्ण किया है। और मैं जो कुछ कहता हूँ, प्रत्यक्ष देखी बात कहता हूँ।"

"परन्तु हमको विश्वास कैसे आये?"

"कल प्रातःकाल पाँच बजे से पहले यहाँ आ जाइये। मैं इस योग्यता का कुछ तो प्रमाण दे ही सकूँगा। यद्यपि मैं आपको इस योग्य नहीं समझता कि आप मेरी परीक्षा लें। एक डाक्टरी परीक्षा के लिए लिखा निबन्ध पहली श्रेणी का विद्यार्थी देख नहीं सकता। इस पर भी एक विषय का योग्य विद्वान अपने विषय का सार तो किसी अनपढ़ मूर्ख को भी समझा सकता है। इस कारण कहता हूँ कि आइये। कुछ तो समझा ही सकूँगा।"

"परन्तु महाराज! मैं तो उस समय आ नहीं सकता। मैं पाँच बजे सोकर उठता हूँ। उठ कर चाय पीता हूँ। साढ़े पाँच के लगभग शौचालय जाता हूँ। स्नानादि कर साढ़े छः बजे तक आ सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम उस बात को जानने के अयोग्य हो, प्रोफेसर! तुम में जिज्ञासा नहीं है। जिसमें जिज्ञासा नहीं, वह कुछ प्राप्त नहीं कर सकता।"

"क्या कभी किसी विद्यार्थी को यह कहते सुना है कि उसके घर में खाना ग्यारह बजे से पहले नहीं बनता। इस कारण कॉलेज की पढ़ाई बारह बजे की जाया करे? कॉलेज का समय निश्चित है। विद्यार्थी कॉलेज का घण्टा बजने से पहले उपस्थित हो जाते हैं।"

"महाराज! मैं आऊँगा।"

इस प्रकार आज प्रोफेसर की खिल्ली उड़ गयी थी।

: 15 :

जब सब चले गये तो दुर्गा स्वामीजी के सामने आकर खड़ी हो गई। देसाई, वर्मा, रुक्मिणी सरला और राधा भी थीं। आज खटाऊजी भी आया हुआ था। स्वामी गरीबदास ने **सबको** ऊपर अपने कमरे में चलने का संकेत किया तो सब सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगे।

दुर्गा ने स्वामीजी के साथ–साथ चलते हुए कहा, "भापा! आज कई वर्ष के पश्चात् पुनः आपकी सूक्ष्म और तीखी युक्तियाँ सुनने का अवसर मिला है। उस प्रोफेसर को मिट्टी होते देख चित्त गद्गद हो गया है।"

गरीबदास ने हँसते हुए कहा, "दुर्गा! संन्यासियों को निजी सम्बन्धों से स्मरण नहीं किया जाता। मैं केवल स्वामी–मात्र हूँ।"

दुर्गा मुस्कराई और कहने लगी, "पर भापाजी। आप तो विचार और वाणी की स्वतन्त्रता देने में विश्वास रखते हैं न। मुझको स्वामी से भापा शब्द अधिक प्रिय और मधुर लग रहा है।"

गरीबदास खिलखिलाकर हँस पड़ा। आगे चढ़ने वाले स्वामीजी को हँसते देख, खड़े हो लौटकर प्रश्न–भरी दृष्टि में स्वामीजी की ओर देखने लगे। गरीबदास ने बताया, "दुर्गा कहती है कि यह तो मुझको भापाजी ही कहेगी। इसको यह शब्द अति मधुर और प्रिय लग रहा है, और मुझको इसे ऐसा कहने से मना नहीं करना चाहिए। यह विचार और वाणी की स्वतन्त्रता का अधिकार चाहती है।"

सब हँसने लगे। खटाऊजी ने हाथ ऊँचा कर कह दिया, "लौंग लिव अवर दुर्गा रानी। (दुर्गा रानी की जय हो)।"

इस पर देसाई ने कह दिया, "स्वामीजी महाराज! अब बताइये?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो हिन्दू हूँ और इन दो प्रकार की स्वतन्त्रता का हरण नहीं कर सकता।"

"तो हम आपको अभी भी भापाजी कह सकते हैं?"

"मैं किसी को किस प्रकार मना कर सकता हूँ? मेरा संयम तो स्वयं पर है। और मैं अपना व्यवहार ऐसा ही रखूँगा, जैसा किसी संन्यासी को होना चाहिए।"

इस समय सब स्वामीजी के आगार में पहुँच गये। वहाँ गरीबदास के बैठने पर सब बैठ गये। गरीबदास ने सबको सम्बोधन कर कहा, "मैंने आप सबको इस कारण बुलाया है कि दुर्गा की समस्या हमारे सामने उपस्थित है। आप सब इस विषय में विचार करें, जिससे इसकी सहायता हो सके।

"मैं पहले दुर्गा की इच्छा जानना चाहता हूँ कि वह क्या चाहती है?"

दुर्गा ध्यान से सुन रही थी। गरीबदास ने कहा, "दुर्गा! हमने विचार किया है और हमको तुम्हारे लिए तीन मार्ग खुले दिखाई देते हैं। प्रत्येक मार्ग की अपनी–अपनी कठिनाई और विषमता है। इस कारण यह तो तुम बताओ कि तुम किस पथ की पथिक बनना चाहती हो। तदनन्तर हम उसमें क्या सहायता कर सकते हैं, विचार करेंगे।

"प्रथम मार्ग है सर आगाखाँ के महल का। यदि तुम उधर जाना चाहो तो उसके विषय में विचार किया जाये।"

दुर्गा ने बिना एक क्षण विचार किए ही कह दिया, "मैं उस ओर जाने के लिए नहीं आई। मेरा विचार था कि यहाँ मैं कोर्ट में अपनी रक्षा की याचना करूँगी तो मुझको रक्षा मिलेगी। मैं इस प्रकार उनके झंझट से एकदम छूटने की आशा से आई थी।"

"ठीक है। अब एक दूसरा मार्ग है। तुम गृहस्थ जीवन व्यतीत करना चाहो तो तुम्हारे लिए वर ढूँढ़ा जा सकता है।"

दुर्गा ने कह दिया, "मैं वर ढूँढ़ने में विश्वास नहीं करती। मैं तो ढूँढ़ी जाने में शोभा समझती हूँ। ऐसी परिस्थिति यदि आई, जब किसी ने मुझको ढूँढ़कर मेरा चयन किया और मुझको उसका चयन किया जाना पसन्द आया तो मैं आपसे उसमें सहायता माँग लूँगी। अभी न ऐसी स्थिति है, न ही शीघ्र आने की आशा है।"

"एक तीसरा मार्ग है। परन्तु वह इतना विस्तृत है कि उस पर किस प्रकार और किस रूप में तुम चलना चाहोगी, उसका निर्णय भी तुम्हें करना होगा। तुम बच्चे की माँ, एक मुसलमान पति की भागी हुई पत्नी और एक हिन्दू पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विधवा हो। बताओ कैसे रहना चाहती हो?''

अब दुर्गा को विचार करने की आवश्यकता पड़ी। उसने इस विषय पर विचार तो किया था और कुछ निष्कर्ष भी निकाले थे, परन्तु उन निष्कर्षों का संकलन कर और उनके लिए उपयुक्त शब्द का चयन करने में उसको समय लग गया। इस समय अन्य लोग बैठे उसके मुख पर बदलने वाले रगों को देख रहे थे। अन्त में उसने मुख खोला और इन शब्दों में अपने भाव व्यक्त कर दिये। उसने कहा, "मैं हिन्दू माँ–बाप की सन्तान हूँ। मेरा परिवार आगाखाँ के परिवार के एहसान में दबा हुआ था। हम उस परिवार को विशेष विभूतियों से संयुक्त समझते थे। उस परिवार ने हमारे नाम फारसी तथा अरबी भाषा में रख दिये थे। इसके अतिरिक्त तथा कुछ रस्मों को छोड़कर, जो हम हजरत की दरगाह में मनाया करते थे, शेष हमारे परिवार में सब कुछ हिन्दुआना था। स्नान, ध्यान, भोजन–वस्त्र कुछ सीमा तक देवी–देवता भी हिन्दुआना थे।

"मैं भापाजी के उपदेशों से यह समझी थी कि हिन्दू एक भौगोलिक शब्द है। सिन्धु से इस पार बसने वाले को हिन्दू कहते हैं और हमारे रीति–रिवाज, नाम, भाषा, वस्त्र अपने देश के साथ सम्बन्ध रखते हैं। हमारे विचार और उन विचारों पर बने आधार का सम्बन्ध हमारे मजहब के साथ सम्बन्ध रखते हैं। हिन्दू लोग मजहब की सबको स्वतन्त्रता देते हैं।

"इसी विचार के अधीन मैंने आगाखाँ साहब के भतीजे से विवाह किया था। मैंने यह बात उनसे स्पष्ट कह भी दी थी कि मैं अपने मजहब में स्वतन्त्र रहूँगी। मैं भाषा, वेश, भूषा तथा भाव में उनके परिवार की परम्परा का आदर करते हुए स्वतन्त्र रहूँगी। वे मेरी इन बातों को माने तो मैं विवाह पर राजी हुई थी।

"विवाह होने के कुछ काल तक तो कार्य सुचारु रूप में चलता रहा। फिर कठिनाई अनुभव होने लगी। एक दिन हजरत विलायत से लौटे और पूर्ण परिवार की दावत हुई।

"दावत हो चुकने के बाद मेरे पति ने मुझको चिढ़ाने के लिए अथवा ऐसे ही यह बताया कि दावत में गोमांस का खूब प्रयोग किया गया था। मैं बता नहीं सकती कि क्यों? परन्तु मेरे मन में अत्यन्त घृणा उत्पन्न हुई। मैंने तीन दिन तक उपवास रखा। गायत्री मंत्र का दस सहस्र बार जाप किया। तदनन्तर ही भोजन किया। मेरे इस व्यवहार को कुफ्र माना गया और मुझको दंड दिया गया कि मैं घर से बाहर नहीं निकल सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं एक दिन अवसर पाकर भाग निकली और फिर वहाँ नहीं गयी। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि मेरा हिन्दू होना मेरे खाविंद के घर में पसन्द नहीं किया गया और मैंने मुसलमान होना पसन्द नहीं किया।

"जब मैं घर से भागी थी तो मेरा विचार विवाह करने का नहीं था। निर्मलचन्द्र, जो मुझको यूरोप और फिर स्विट्जरलैण्ड ले गये थे, मुझसे विवाह की इच्छा रखते थे, परन्तु मैंने अस्वीकार कर दिया था। मैं देसाईजी की पी. ए. बनकर रहने लगी। जो लोग देसाईजी के घर आते थे, वे मुझको उनकी मिस्ट्रैस समझते थे और बाँट कर प्रयोग करना चाहते थे। मैंने स्वीकार नहीं किया। पीछे देसाईजी से मतभेद होने पर उन सब का आना–जाना बन्द हुआ तो शान्ति से दिन व्यतीत होने लगे।

"देसाईजी से क्रान्तिकारियों के झगड़े का एक कारण यह भी था कि देसाईजी अंग्रेजों से विवाद और शत्रुता तो मानते थे, परन्तु वे संसार की अन्य किसी भी जाति से मित्रता कर अंग्रेजों से लड़ना नहीं चाहते थे। जर्मनी और तुर्की को तो वे किसी भाँति भी अंग्रेजों की तुलना में श्रेष्ठ नहीं मानते थे। यह विचार अंग्रेजों के गुप्तचर विभाग में पहुँचा तो वहाँ देसाई को निकालने का यत्न होने लगा। ब्रिटिश सरकार का विचार था कि देसाई ने अतुल धनकोष कहीं छिपाकर रखा हुआ है और वह कैसर की सहायता से भारत में क्रान्ति उत्पन्न करने का यत्न कर सकता है। उस समय मैसोपोटामिया में अंग्रेज सेना को भारी पराजय का मुख देखना पड़ा था।

"अतः एक राधाकृष्ण नाम के युवक वहाँ पहुँचे और देसाईजी के विचार जानने लगे। वहाँ उनको मैं मिल गयी। देसाईजी की शुद्ध राष्ट्रभावना और ब्रिटेन से सहानुभूति के साथ–साथ मेरा आकर्षण राधाकृष्ण को प्रेरणा देने वाले बन गये और उन्होंने युद्ध–काल में ही देसाईजी का भारत में स्वतन्त्र घूमने का कार्यक्रम बना दिया तथा मुझको अपनी पत्नी बनाने के लिए राजी कर लिया।

"यह मेरा दुर्भाग्य है कि उनके साथ दुर्घटना हुई और वे स्वर्ग सिधार गये। सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इंडिया से मुझको उनका प्रौविडैन्ट फंड मिला और साथ ही भारत के वाइसराय के नाम एक सिफारिशी पत्र मिला है। इसी पत्र के आश्रय मैं सरकार द्वारा रक्षा की आशा लेकर यहाँ आयी हूँ।

"मैं हिन्दू हूँ। हिन्दू बनकर रहना चाहती हूँ। मैं कहीं नौकरी कर अपनी आजीविका चलाना चाहती हूँ। मैं अपनी सन्तान की रक्षा करना चाहती हूँ। यदि बम्बई में रह सकूँ तो ठीक है। यदि यहाँ नहीं तो हिन्दुस्तान के किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य भाग में भी जाकर रह सकती हूँ।''

इस पूर्ण वक्तव्य को सुन गरीबदास ने कहा, ''देखो दुर्गा! सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के पत्र ने स्थिति में परिवर्तन कर दिया है, परन्तु किंचित्मात्र ही। कारण यह कि प्रत्यक्ष विरोध की इतनी आशंका नहीं जितनी छिपकर अपहरण की अथवा हत्या कर देने की है। इस अभियान का विरोध तो बलशाली–से–बलशाली सरकार भी नहीं कर सकती। इसका विरोध केवल परमात्मा ही कर सकता है।

''अतः मैं यह राय देता हूँ कि इस पत्र का प्रयोग तुम समय पर करना। इसको तुम किसी सुरक्षित स्थान पर रख छोड़ो। इसके प्रयोग का कौन–सा उचित समय होगा? यह विचार कर लिया जायेगा।

''अभी तो मेरी सम्मति यह है कि तुम बम्बई में रहो। नौकरी का प्रबन्ध कर दिया जायेगा। यदि किसी सार्वजनिक संस्था में काम करना चाहो तो सोहनी अथवा साधना के साथ कर सकती हो। सोहनी माता–पिताविहीन शिशु–गृह का प्रबन्ध कर रही है और साधना बिना पति के माताओं के गृह का। इसके अतिरिक्त तुम संगीत भवन में कम–से–कम प्रारम्भिक श्रेणियों को संगीत तो सिखा ही सकती हो।

''यदि तुम किसी दुकान, कार्यालय, कारखाने अथवा सरकारी कार्यालय में काम करना चाहो तो उसके लिए भी यत्न किया जायेगा।

''मैं अपनी शक्ति और साधनों से तुम्हारी सहायता करूँगा। ये मित्र वर्ग अपने विषय में स्वयं बता सकते हैं।''

सबसे पहले खटाऊजी ने कहा, ''मेरी यह सम्मति है कि दुर्गा को अपना पूर्व परिचय कि यह आगाखानी थी, इसका नाम रहमत था, इसके पिता अफ्रीका भागकर गये हुए हैं इत्यादि किसी को भी नहीं देना चाहिए।

''यह दुर्गा है। श्री राधाकृष्ण खन्ना की विधवा है। राधाकृष्ण खन्ना युद्ध में दुर्घटना से मर गये हैं। बस इतना ही बताना चाहिए। यह अपने को पंजाब की रहने वाली घोषित करे। सर्वसाधारण में इसके अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नहीं देना चाहिए। इसको संगीत भवन में अभी कुछ काल तक नहीं आना चाहिए। समय व्यतीत होने पर वह बम्बई की बीस लाख जनता में घुल–मिल जायेगी। यह सब अपनी सुरक्षा के विचार से इसको करना चाहिए।''

देसाई का कहना था, ''इसको एक बार शिमला की यात्रा कर लेनी चाहिए और वाइसराय के ए.डी.सी. से वाइसराय के हस्ताक्षरों वाला एक पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई के गवर्नर के नाम ले आना चाहिए। कदाचित् किसी समय उस पत्र का लाभ उठाया जा सके।''

मिस्टर वर्मा ने कहा, ''धन से कोई काम बन सके तो मैं सदा देने के लिए तैयार रहूँगा। मैं एक बात समझता हूँ कि हम लोग दुर्गा को सम्मति मात्र ही दे सकते हैं। अथवा किसी भीड़ पड़ने पर यथाशक्ति सहायता दे सकते हैं, परन्तु मुख्य बात इसके अपने विचार करने की और फिर उस पर चलने के लिए साहस बटोरने की है।

''मृत्यु का भय तो सब के लिए सदा बना रहता है। मरने वाले को कोई बचा नहीं सकता और बचने वाले को कोई मार नहीं सकता। राधा का उदाहरण सामने उपस्थित है। एक–आधे इंच के अन्तर पर मृत्यु भागती हुई निकल गई और वह बच गई। भापाजी की भी हत्या का यत्न किया गया था। एक बार नहीं दो बार। परन्तु जब जिसको मरना होता है वह तब ही मरता है। इस कारण मेरी सम्मति तो यह है कि साधारण रूप में बिना अपने पूर्व जीवन और बन्धनों का हल्ला किये, दुर्गा को रहना चाहिए।''

रुक्मिणी ने केवल इतना कहा, ''मैं दुर्गा के सामने प्रस्ताव रखती हूँ कि वह मेरी, मेरा मतलब है औलम्पिक मिल्ज लिमिटेड कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर की पी.ए. बन सकती है। इसको कुछ मेहनत से काम सीखना पड़ेगा। उसमें मैं सहायता कर दूँगी। पाँच सौ रुपया मासिक और रहने को स्थान तुरन्त मिल जायेगा। यदि मेरा प्रस्ताव स्वीकार हो तो यह कल दस बजे कम्पनी के कार्यालय में उपस्थित हो जाये।''

दुर्गा ने स्वामी गरीबदास के चरण स्पर्श कर कह दिया, ''जब आप सब मेरी सहायता के लिए तैयार हैं तो मैं अब निःसंकोच भाव से यह निर्णय करती हूँ कि मैं कल रुक्मिणीदेवीजी के कार्यालय में रिपोर्ट करूँगी।

''अभी मैं होटल में जा रही हूँ। कल मध्याह्न तक होटल का कमरा मेरे पास है। उससे पहले मैं वहाँ से चली आना चाहूँगी। अभी तो बच्चा मेरे पास ही है और होटल के एक बैरे की पत्नी की देखरेख में है। मैं कल उसको सोहनी बहन के गृह में रख दूँगी और जब कोई विश्वस्त नर्स मिल जायेगी तो उसको वहाँ से ले आऊँगी।''

परन्तु भाग्य में कुछ और ही लिखा था। दुर्गा का सब प्रबन्ध जैसा वह चाहती थी, हो गया था। उसको रुक्मिणी ने रहने के लिए कम्पनी के कार्यालय में एक कमरा दे दिया था।

दुर्गा वाइसराय से मिलने के लिए शिमला गयी थी। वहाँ पहुँच उसने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र वाइसराय को लिखा, जिसमें अपनी सत्य कथा लिख दी। साथ ही सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इण्डिया के पत्र की नकल भेज दी।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट का पत्र इस प्रकार का था—

"मेरे प्रिय मित्र!"

"पत्रवाहक दुर्गादेवी हमारे गुप्तचर विभाग के एक अति योग्य, निष्ठावान और कर्मठ अधिकारी की पत्नी है। इसके पति का देहान्त लार्ड किचनर के साथ जहाज की दुर्घटना में हुआ है। यह हिन्दुस्तान बम्बई नगर की रहने वाली है, परन्तु इसका पहला खाविंद बम्बई का कोई वरिष्ठ मुसलमान है। यह अब मुसलमान नहीं रही, इस कारण यह अब अपने मुसलमान पति की पत्नी भी नहीं रही। इस पर भी यह किसी मुसलमान हत्यारे की छुरी से भयभीत है।

"हमको एक निरपराध, निराश्रय, वफादार की पत्नी की रक्षा का प्रबन्ध यथाशक्ति करना चाहिए। मैं इसको आपकी सहायता के लिए 'रिकमैंड' (सिफारिश) करता हूँ।

आपका—मौंटेग्यू।"

दुर्गा ने पत्र में भेंट के लिए प्रार्थना की जिससे वह उक्त पत्र स्वयं दे सके। भेंट स्वीकार हुई और वाइसराय ने एक निजी पत्र बम्बई के गवर्नर के नाम दे दिया। साथ ही उसने आगाखाँ के द्वारा उसके पति को चेतावनी देने की इच्छा प्रकट की।

प्रत्यक्ष रूप में यह भेंट अति सफल रही, परन्तु शिमला से लौटने के एक सप्ताह के भीतर ही लियाकत अली खाँ संगीत भवन में अपनी बीवी का पता पूछने चला आया। राधा ने, जो उस समय भवन की मैनेजर भी थी, कह दिया कि वह रहमत नाम की लड़की का पता नहीं जानती। उसने उसे कई वर्ष से नहीं देखा।

दुर्गा को सतर्क कर दिया गया। दुर्गा ने वाइसराय के पत्र को बम्बई के गवर्नर के पास पहुँचा दिया। यहाँ भी उसे भेंट करने का अवसर मिला। दुर्गा ने यह संकेत भी दिया कि उसको विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि उसका पूर्व पति उसकी खोज कर रहा है। इससे पुनः आगाखाँ के द्वारा रहमत के पति को चेतावनी दी गयी।

इस दुहरी चेतावनी पर तो आगाखाँ और लियाकत के वालिद शरीफ में और फिर लियाकतअली और उसके वालिद के भीतर लम्बी बातचीत हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे पूर्ण परिवार के मुख्य–मुख्य व्यक्तियों में वार्तालाप हुआ। आगाखाँ ने स्पष्ट रूप में कह दिया, "मैं इस छोकरी के पीछे अपने परिवार की न तो बदनामी चाहता हूँ न ही मैं किसी मुकदमे में पड़ना चाहता हूँ। अगर लियाकत को पसन्द हो तो इसको तुर्किस्तान भेज सकता हूँ और वहाँ खलीफा की औलाद में से किसी खबसूरत लड़की से उसकी शादी करा सकता हूँ।"

"पर हजरत!" लियाकत ने कहा, "यह मेरी बीवी का सवाल नहीं। यह एक मुसलमान खातून का सवाल है। हम कैसे यह गवारा कर सकते हैं कि एक मुसलमान औरत हिन्दू हो जाये?"

"ठीक है। मगर इस वक्त आगाखाँ के परिवार का रसूख मुसलमानों के लिए एक नया दाराउलइस्लाम तैमीर कर रहा है। अगर उस रसूख में कमी आयी तो एक इतना पाक मकसद बिगड़ सकता है। एक छोकरी के लिए दीन का इतना हर्ज मुझको पसन्द नहीं।"

लियाकत चुप रहा, परन्तु वह मन–ही–मन विचार करता रहा कि क्या वह परिवार की इज्जत बचाता हुआ लड़की का सफाया नहीं कर सकता? उसको, प्रत्येक गुनाहगार की भाँति, यह विश्वास था कि वह इतना चतुर है कि सरकार की नजर से बचकर गुनाह कर सकेगा। उसको अपने परिवार की धन–दौलत और इस्लाम के रसूक पर भरोसा था।

एक दिन वह वोमैनजी पेटिट–हॉल के फोर्ट एरिया की ओर जा रहा था कि उसको एक मोटर गाड़ी में दो औरतें बैठी दिखाई दीं। उसका ख्याल था कि एक उसकी बीवी रहमत है। उसने झट से मोटर का नम्बर देखा और अपनी जेब से एक कागज निकाल, उस पर नोट कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

ब्रिटिश सैनिक सदा ही हिन्दुस्तानी सैनिकों को घटिया योद्धा मानते थे। इसका कारण स्पष्ट था कि उनकी पीठ पर ब्रिटिश साम्राज्य की असीम शक्ति होती थी और वह अपने को पराजित हिन्दुस्तानी सैनिक से श्रेष्ठ मानता था। क्रीमिया के युद्ध में भारत के सैनिक गये थे परन्तु वहाँ उनको युद्ध का विशद अवसर नहीं मिला। इससे उस युद्ध के बाद भी ब्रिटिश सैनिकों के मन में अभिमान भरा रहा।

सेना में सब उच्च पदवियाँ ब्रिटिश सैनिकों को मिलती थीं। कहीं कोई छोटी–मोटी पदवी किसी हिन्दुस्तानी सैनिक के हाथ आती भी तो वह उसकी योग्यता के कारण नहीं अपितु किसी पारिवारिक सेवाओं के लिए। ऐसे अफसर प्रायः उजड्ड, मूर्ख और अशिक्षित होते थे। ये कमीशन उनको अपने परिवार की वफादारी के आश्रय मिले होते थे।

सन् 1914–18 के युद्ध ने अंग्रेज सैनिकों और नीतिज्ञों के दिमाग से यह भ्रम निवारण कर दिया। एक तो हिन्दुस्तानी सैनिकों की शिक्षा के लिए सैनिक शिक्षणालय में स्थान बदल दिया गया और हिन्दुस्तानी योग्य विद्यार्थी अफसर बनने लगे। दूसरे, इस युद्ध में जर्मन शक्ति के सामने अंग्रेज सिपाही दुर्बल सिद्ध हुआ। इसके विपरीत हिन्दुस्तानी सिपाही जर्मन से बहुत बहादुरी से लड़ा। कुछ हिन्दुस्तानी अफसर भी ऐसे निकले, जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता और सैनिक प्रतिभा का बहुत अच्छा प्रमाण दिया।

न चाहते हुए भी सैनिक अधिकारियों को हिन्दुस्तानी सिपाहियों की प्रशंसा करनी पड़ी। इसने तो हिन्दुस्तानी राजनीतिज्ञों को भी हिन्दुस्तान के लिए अधिकार माँगने के लिए उत्साहित कर दिया।

1917 में युद्ध आरम्भ हुए तीन वर्ष हो रहे थे और किसी भी युद्ध क्षेत्र में मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ आगे नहीं बढ़ रही थीं। सैनिकों की हत्या एक बहुत भारी संख्या में हो रही थी और भरती की गति धीमी पड़ रही थी। भरती की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गति को तीव्र करने के लिए वाइसराय ने दिल्ली में देश के राजा, महाराजाओं और राजनीतिक नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया। उस सम्मेलन में और ब्रिटिश पार्लियामेंट में एकदम एक घोषणा की गई जिसमें यह कहा गया–

"भारत सम्राट की सरकार की नीति, जिसके साथ भारत का शासन पूर्ण रूप से सहमत है, यह है कि दिन–प्रतिदिन हिन्दुस्तानियों को शासन कार्य में अधिक और अधिक सम्मिलित किया जायेगा और हिन्दुस्तान में स्वराज्य को अधिकाधिक अंश में चालू किया जायेगा। यह सब इस दृष्टि से किया जायेगा कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत हिन्दुस्तान में एक जिम्मेदार सरकार बन सके। इस दिशा में शीघ्र ही एक प्रबल पग उठाया जायेगा।"

दिल्ली के सम्मेलन में महात्मा गांधी, श्री बालगंगाधर तिलक, ऐनिबेसेण्ट, पण्डित मदन मोहन मालवीय इत्यादि नेता उपस्थित थे। सबने उक्त घोषणा का स्वागत किया और जनता से अपील की कि वे ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिए अधिकाधिक संख्या में सेना में भरती हों। कुछ नेताओं ने देहातों में घूम–घूम कर भी भरती का कार्य किया।

युद्ध का अन्त तो सन् 1918 के अन्त में अमेरिका के युद्ध में सम्मिलित होने पर हुआ। अमेरिका ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध करने की घोषणा कर दी और सन् 1918 के आरम्भ में बहुत बड़ी संख्या में अमरीकी सेनाएँ, तोपें तथा बन्दूकें फ्रांस में पहुँच गयीं। सन् 1918 के अन्त में युद्ध समाप्त हुआ और जर्मनी के सम्राट् कैसर को जर्मनी छोड़नी पड़ी। वह हालैंड के एक गाँव में जाकर रहने लगा। जर्मनी में संसदीय प्रजातन्त्र की स्थापना हो गई।

जवाहरलाल मैसापोटामिया में जर्मनों का कैदी बन गया था। वहाँ से उसको एक सैनिक शिविर में रखा गया। जवाहरलाल के कैद होने का समाचार ऐमिली को मिला था और उसने वह पत्र पढ़ कर संगीत भवन के पते पर साधना को भेजा। इससे पहले कई बार ऐमिली को लिखकर पूछा गया कि जवाहरलाल का सुख समाचार आता है अथवा नहीं। उसने कभी समाचार नहीं भेजा था। इस बार भी सरकारी विज्ञप्ति ही भेज दी थी। उसके साथ उसका अपना कोई लेख नहीं था।

जब युद्ध बन्द हुआ तो ऐमिली से पुनः पूछा गया कि जवाहरलाल के आने का कोई समाचार है क्या? किन्तु वह पत्र वापस आ गया। उस पर लिखा था, "चिट्ठी पाने वाले का पता नहीं चला।" इसका अर्थ था कि ऐमिली ने मकान छोड़ दिया है।

सदानारायण कलकत्ता से बम्बई आ गया था। उसने दो वर्ष तक वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रायल ऐशियाटिक सोसायटी' के पुस्तकालय में बैठकर काम किया था। इस काम के परिणामस्वरूप उसने दो लेख सोसायटी के जर्नल में छपवाये भी थे। उन दोनों लेखों ने भारी हलचल मचा दी थी।

इस समय गरीबदास का साधना आश्रम बम्बई के समीप जुहू के स्थान पर बन कर तैयार हो गया था। वहाँ पर एक विशाल पुस्तकालय की भी स्थापना कर दी गयी थी। इस पुस्तकालय का प्रबन्ध सदानारायण के हाथ में दे दिया गया था। अब वह अपना अन्वेषण यहाँ बैठकर कर रहा था।

जब ऐमिली को भेजा हुआ पत्र लौट आया तो सदानारायण उसका पता करने जबलपुर जा पहुँचा। वहाँ जाने से पता चला कि सन् 1918 के मध्य में एकाएक वह अपना पासपोर्ट बनवा इंग्लैंड चली गयी थी।

इस पर जवाहरलाल का पता पूछने के लिए युद्ध कार्यालय दिल्ली से पूछा गया और वहाँ से समाचार आया कि मैसापोटामिया में पकड़े गये हिन्दुस्तानी अफसर तुर्की सरकार के बन्दी हैं। उनसे कैदियों की अदला–बदली कुस्तनतुनिया में होने वाली है। उसके छूटने पर सूचना भेजी जायेगी कि वह कब हिन्दुस्तान में पहुँचेगा।

युद्ध समाप्त होने के कुछ मास पूर्व ही दुर्गा को लियाकतअली ने मोटर में बैठे देखा था। मोटर रुक्मिणी की थी और रुक्मिणी ही दुर्गा के साथ बैठी थी।

लियाकत ने मोटर का नम्बर लिया। उसे लेकर उसने मोटर रजिस्ट्रेशन कार्यालय में जाकर मोटर मालिक का पता किया और देसाई के घर के नीचे चक्कर काटने लगा। दूसरे ही दिन लियाकत को दुर्गा के दर्शन हो गये। वह किसी एक कपड़ा मिल में मोटर से आयी थी। गाड़ी से उतर वह मकान पर जाने लगी तो लियाकत उसके सामने आ खड़ा हुआ।

एक क्षण के लिए तो दुर्गा घबराई, परन्तु तुरन्त ही अपने को संयत कर प्रश्न–भरी दृष्टि में उसकी ओर देखने लगी।

"पहचाना नहीं मुझको?"

"नहीं; क्या काम है आपका मुझसे?"

"तुम रहमत नहीं हो?"

"नहीं। मैं दुर्गा हूँ। अब आप एक ओर हट जाइये।"

"मैं आपसे एक बात करना चाहता हूँ।"

"कर सकते हैं। मेरे कार्यालय में आ जाइये। परन्तु वहाँ जामा तालाशी देकर ही आ सकेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों?"

"मुझको हत्यारे के पिस्तौल से डर है।"

"ओह! तो तुम मुझसे डरती भी हो?"

"देखिये, अगर बात करनी है तो यह चौकीदार है। इसको तालाशी दे दीजिये और आ जाइये।"

लियाकत अभी विचार ही कर रहा था कि क्या करे कि दुर्गा ने चौकीदार कृष्ण खड़के को कह दिया, "इस भद्र पुरुष की तालाशी ले लो। अगर कोई शस्त्र पिस्तौल, छुरी इत्यादि हो तो अपने अधिकार में कर लो। तत्पश्चात् इसको मेरे कमरे में भेज दो।"

खड़के सेना से पैन्शन प्राप्त सैनिक था। वह सेना में जमादार रह चुका था। इस कारण उसने सलाम कर आदेश पालन का आश्वासन दिया और लियाकत को बाँह से पकड़ कर मार्ग से एक ओर कर दिया। दुर्गा लिफ्ट पर चढ़कर ऊपर कार्यालय में चली गयी।

पाँच मिनट बाद लियाकत पीतमुख उसके सामने आ खड़ा हुआ। अपनी जामा तलाशी देने का उसके लिए जीवन में यह पहला अवसर था। इससे वह अपने को हीन समझ रहा था। यह अपमान उसने इसलिए सहन किया था कि वह अपनी पत्नी और एक मुसलमान खातून का पूर्ण विवरण जानना चाहता था।

जब वह वहाँ पहुँचा तो दुर्गा ने एक कुर्सी की ओर संकेत कर कह दिया, "तशरीफ रखिये।"

लियाकत बैठ गया। दुर्गा ने उसका पीत मुख देखा तो मेज पर रखी घंटी बजा दी। चपरासी आया तो उसने कहा, "इन साहब को ठण्डा पानी पिलाओ।"

चपरासी साथ के कमरे में से बर्फ में लगा ठण्डा पानी ले आया। लियाकत ने भी इसको पीकर अपना क्रोध, अपमान तथा लज्जा शान्त करनी उचित समझी। उसने जल पीकर गिलास चपरासी की ट्रे में रख दिया। जब चपरासी चला गया तो दुर्गा ने बात आरम्भ की।

"देखिये, मैं आपको जानती हूँ कि आप दरगाह के मीर साहब के साहबजादे लियाकत अली साहब हैं। आपकी एक बीवी के विषय में भी जानती हूँ। उसका नाम रहमत था। वह रहमत आपका जुल्म बर्दाश्त न कर सकने पर आपके यहाँ से भाग गयी थी। वह हिन्दू हो गयी और उसके हिन्दू हो जाने पर आपसे उसकी शादी टूट गयी थी। उसने अपनी शादी एक पंजाबी हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कर ली थी। बदकिस्मती से वह हिन्दू युद्ध में मारा गया है। अब वह उसकी बेवा है। उसका एक लड़का इस हिन्दू खाविंद से है।

"बताइये और क्या पूछना चाहते हैं?"

"यह सब कुछ मुझको मालूम है। तुम्हारी वाइसराय हिन्द को चिट्‌ठी की नकल हमको मिली है और उसमें यह सब कुछ लिखा है।"

"फिर आप किसलिए आये हैं?"

"मैं तुमसे अपने पुराने ताल्लुकात पैदा करने का इरादा रखता हूँ।"

"ताल्लुकात एकतरफा पैदा नहीं हो सकते। इसके लिए दोनों इशखास की रजामन्दी होनी जरूरी है। मेरा इरादा उन ताल्लुकात को पैदा करने का नहीं है।"

"मुझको कोशिश करने दीजिये। कोई ताज्जुब नहीं कि मैं तुममें भी वही ख्वाहिश पैदा कर सकूँ जो मेरे दिल में है।"

"यह फजूल है। हर बार जब आप मुझसे मिलने आवेंगे, आपको अपनी जामा तलाशी देनी होगी। यह मैं रोक नहीं सकूँगी। मेरी जिम्मेदारियाँ हैं अपने बच्चे की तरफ। अगर उसका वालिद जीवित होता तो मैं ज्यादा बेखौफ होती।"

"मतलब यह कि तुम खुद मरने से नहीं डरतीं। यह तो सिर्फ बच्चे की खातिर है?"

"कोई शख्स जान–बूझ कर मरना नहीं चाहता। इस पर भी मरने से अब डर नहीं रहा।"

"क्यों?"

"इसलिए कि जो चीज मरती है वह मैं नहीं हूँ। मैं रूह हूँ और मरता सिर्फ यह जिस्म है। मुश्किल यह है कि उस बच्चे को मेरे जिस्म की अभी जरूरत है। वह मेरे प्यार को महसूस करता है और उससे खुश होता है। मैं उसको बिना जिस्म के प्यार नहीं कर सकती।"

"देखो रहमत! मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। मैं कोशिश करता रहूँगा कि तुमसे मिलने का मौका ढूँढ़ता रहूँ।"

"मुझको गवर्नर बहादुर को यह खबर देनी होगी कि आप मेरा पीछा करने लगे हैं और मुझको आपसे मारे जाने का डर है।"

इसके बाद लियाकत अली उससे बिना एक शब्द कहे चला गया। दुर्गा ने गवर्नर और पुलिस इन्स्पैक्टर जैनरल को सूचना भेज दी। इन्स्पैक्टर जैनरल पुलिस खटाऊजी का मित्र था। उसके द्वारा भी उससे सुरक्षा के लिए सहायता माँगी गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नर ने क्या किया और क्या नहीं किया, इसका कुछ पता नहीं चला। इन्स्पैक्टर जैनरल पुलिस मिस्टर ई. रूवन्ज ने एक पुलिस कान्स्टेबल को दुर्गा की रक्षा के लिए साथ लगा दिया। उस दिन के बाद जब लियाकतअली दुर्गा की कम्पनी के कार्यालय में मिला था, वह पुनः दिखाई नहीं दिया।

समय व्यतीत होने के साथ बात ठंडी पड़ गई और कान्स्टेबल को दुर्गा की देखरेख से हटा लिया गया। युद्ध समाप्त हुआ तो भारत में स्वराज्य मिलने की आशाएँ बाँधी जाने लगी। भारत सचिव मांटेग्यू तथा भारत के वाइसराय चेम्स फोर्ड की ओर से पार्लियामेंट में एक बिल उपस्थित किया गया। इस बिल पर विचार करने के लिए एक जायंट पार्लियामैन्टरी कमेटी बना दी गयी। उस समय तिलक मिस्टर चिरोल पर मान हानि के मुकदमे की पैरवी के लिए इंग्लैण्ड गया हुआ था। ऐनिबेसेन्ट भी इस कमेटी के समक्ष साक्षी भरने वहाँ गई हुई थी। कांग्रेस की लंदन शाखा ने इस कमेटी के सामने कांग्रेस की ओर से वक्तव्य दिया।

जब लंदन में यह कानून, जिससे भारत शासन में सुधार होने वाला था, और जिससे हिन्दुस्तानियों को शासन में अधिक अधिकार मिलने वाले थे, बन रहा था, उस समय हिन्दुस्तान में एक कानून रौलेट ऐक्ट के नाम से पास किया जाने वाला था।

कुछ समय पहले भारत सरकार ने मिस्टर रौलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की थी। इसको भारत में क्रान्तिकारियों की गतिविधियों की जाँच और उनको रोकने के उपायों पर रिपोर्ट करने के लिए कहा गया था।

इस कमेटी ने रिपोर्ट दी जिसमें उसने क्रान्तिकारियों की हलचलों को बहुत बढ़ा–चढ़ाकर लिखा। साथ ही इनकी गतिविधियों को रोकने के लिए एक कानून बनाने की सिफारिश की थी। इस कानून को प्रभावशाली बनाने के लिए पुलिस और प्रान्त के गवर्नर को विशेषाधिकार देने की सिफारिश की गई थी।

इन सिफारिशों के आधार पर एक कानून पास करने का विचार हुआ। इसका नाम रौलेट ऐक्ट विख्यात हो गया। इसमें जिला मजिस्ट्रेट को संदेहात्मक व्यक्ति को पकड़ कर पाँच वर्ष तक कारावास में रखने के अधिकार दिये गए थे और गवर्नर को, किसी को फाँसी तक देने के अधिकार दे दिये थे। ये अधिकार किसी प्रकार का मुकदमा किये बिना, संदिग्ध व्यक्ति को अपनी सफाई का अवसर दिये बिना और बिना किसी प्रकार की अर्जी–पर्ची के प्रयोग होने वाले थे। स्वाभाविक रूप से देश में इस पर भारी रोष उत्पन्न हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाइसराय की कौंसिल में पंडित मदन मोहन मालवीय ने इस पर बहुत विस्तृत भाषण दिया और इसको घोर अन्याय का सूचक बताया। महात्मा गांधी ने अपने 'यंग इण्डिया पत्र' में इस कानून के विरुद्ध लेखों की झड़ी लगा दी। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक क्रोध भर गया और जो कुछ नये सुधारों से प्रसन्नता होने वाली थी, वह तो रही नहीं, प्रत्युत उसके स्थान रोष भर गया।

: 2 :

गरीबदास दिन के पश्चात् दिन नित्य धर्म शास्त्र की चर्चा कर रहा था और कोई चर्चा ऐसी नहीं होती थी, जिसमें देश की वर्तमान परिस्थिति पर प्रकाश न पड़ता हो। आजकल गीता पर चर्चा हो रही थी और सैकड़ों की संख्या में लोग नित्य बम्बई भर से साधना आश्रम में पहुँचते थे।

देश भर के वायुमंडल में विद्युत की सी चंचलता विद्यमान थी और कोई नहीं कह सकता था कि किस समय और किस स्थान पर यह गिर कर विनाश उत्पन्न कर देगी। कलकत्ता के बाद बम्बई ही राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र था। इन दिनों दो बार गांधीजी बम्बई में आकर चौपाटी के मैदान में व्याख्यान दे चुके थे।

मंगल का दिन था। गरीबदास के आश्रम में विशेष कीर्तन का प्रबन्ध था और कीर्तन के बाद कथा और चर्चा का आयोजन था। बम्बई से प्रायः सब परिचित और मित्र वर्ग आया हुआ था। इसके अतिरिक्त दो सहस्र से अधिक व्यक्ति आये थे। भवन के हॉल में इतने जमघट के लिए स्थान नहीं था। इस कारण बाहर मैदान में शामियाना लगाया गया था। कीर्तन समाप्त हो शास्त्र चर्चा हो रही थी। स्वामीजी कह रहे थे–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय सम्मवामि युगे–युगे।।

"साधुओं को निर्भय करने के लिए और दुष्टों को नष्ट करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए में युग–युग मैं जन्म लेता हूँ।

"ऐसा भगवान कृष्ण का कथन है। कृष्ण भगवान सोलह कला सम्पूर्ण थे अथवा नहीं, यह कहा नहीं जा सकता। इसमें सन्देह नहीं कि वे महानात्मा थे। वे कहते हैं कि मैं युग–युग में जन्म लेता हूँ धर्म की स्थापना के लिए। साधुओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को निर्भय करने के लिए और दुष्टों का विनाश करने के लिये।''

इसके बाद स्वामीजी ने साधु और दुष्ट की परिभाषा कर दी। और धर्म की व्याख्या के साथ तत्कालीन राज्य में अधर्म का स्वरूप दिखा दिया।

इस पर प्रश्नोत्तर होने लगे। किसी ने खड़े होकर पूछ लिया, ''यह रौलैट ऐक्ट धर्मयुक्त है अथवा अधर्म का प्रतीक?''

''यह अन्याय का प्रतीक है। हमारे धर्म–शास्त्र में बिना प्रमाण के, बिना साक्षी के किसी को अपराधी नहीं माना जाता। जहाँ इनके बिना दंड का विधान है वहाँ न्याय नहीं है।

''साथ ही हमारे शास्त्र के न्यायकर्ता राजा का सेवक नहीं होता। यहाँ पुलिस अधिकारी ही न्याय करेगा। अतः यह न्याय नहीं है।

''जो न्याय नहीं वह धर्म नहीं हो सकता।''

बोलो महात्मा गांधी की जय। एक गगन भेदी नारा लग गया। समीप बैठे खटाऊजी ने कह दिया, ''महाराज! यह तो राजनीतिक सभा हो रही है?''

''हमारे यहाँ राजनीति धर्मान्तर्गत ही है।''

एक अन्य ने पूछ लिया, ''इस सब नाटक में दुष्ट पात्र कौन है?''

स्वामीजी उत्तर देने ही वाले थे कि एक आदमी उठा और उसने पिस्तौल तानकर दुर्गा पर, जो स्वामीजी के पास बैठी थी, गोली चला दी। स्वामीजी ने उसको पिस्तौल तानते देख लिया था और उन्होंने धक्का देकर दुर्गा को मंच पर लिटा दिया। दनादन दो गोलियाँ चलीं और जनता ने आतताई को पकड़ उसका पिस्तौल छीन लिया। जनता का विचार था कि हत्यारे ने स्वामीजी की हत्या करने का यत्न किया है, परन्तु एक गोली तो दुर्गा के कन्धे पर लगी और दूसरी उसके पीछे बैठे एक अन्य व्यक्ति को लगी।

लोग तो गोली चलाने वाले को वहीं मार डालने का विचार करते थे, परन्तु इस समय स्वामीजी मंच से कूदकर उस हत्यारे को बचाने में लग गये। बहुत कठिनाई से उसकी जान बचाई गई। इस पर भी वह बुरी तरह घायल हो गया था। दूसरे व्यक्ति को कान पर गोली लगी थी उसका आधा कान कटकर दूर जा गिरा।

सभा विसर्जित हुई और पुलिस आकर गोली चलाने वाले को पकड़कर तथा वहाँ उपस्थित कुछ श्रोतागणों के बयान लेकर चली गयी। दुर्गा को अस्पताल पहुँचा दिया गया।

सबसे विचित्र बात यह हुई कि अगले दिन स्वामी गरीबदास पकड़ लिए गये और साधना भवन तथा संगीत भवन को पुलिस ने ताला लगा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन पुलिस ने धारा 124–ए तथा 153–ए के अधीन बगावत फैलाने का आरोप लगा स्वामीजी को मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया। स्वामी जी के पकड़े जाने का समाचार पा खटाऊजी ने अपने मित्र इन्स्पैक्टर जैनरल ऑफ पुलिस मिस्टर रूबन्ज को टेलीफोन कर दिया। मिस्टर रूबन्ज ने गरीबदास का नाम सुनते ही टेलीफोन बन्द कर दिया। खटाऊ जी समझ गया कि बात अति गम्भीर है। इस कारण उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह रात के समय रूबन्ज से मिलकर पता करेगा।

राधा संगीत भवन के विषय में भी जानकारी प्राप्त करना चाहती थी कि उसको ताला क्यों लगाया गया है? इस प्रकार टेलीफोन बन्द होने से वह भी चिंतिन्त थी। खटाऊजी को इतना संतोष था कि राधा पकड़ी नहीं गयी थी।

खटाऊजी के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब टेलीफोन बन्द होने के आधे घण्टे के भीतर ही रूबन्ज खटाऊजी से मिलने चला आया।

''खटाऊ!'' आते ही रूबन्ज ने कहा, ''तुम गधे होते जा रहे हो। भला इस प्रकार के मुकदमों के विषय में टेलीफोन पर कौन पूछता है?''

''क्यों? स्वामीजी ने कोई कत्ल किया है क्या?''

''कत्ल नहीं दोस्त! उससे भी गम्भीर बात की है। ब्रिटिश सरकार को उलटने का यत्न किया है।''

''वह तो तिलकजी महाराज कर रहे हैं। और अब तो एक अन्य इस देश में आ गये हैं गांधीजी। भला इस साधु ने क्या किया है?''

''यह तिलक और गांधी से भी अधिक भयानक जीव है। यह तो कहता है कि राजनीति और धर्म एक ही बात है।

''इसका अर्थ तो यह हो जायेगा कि राजनीति भी इतनी ही निर्दोष और मधुर है जितना कि धर्म।

''नहीं खटाऊ! तुम नहीं जानते। राजनीति में प्रायः स्वार्थी और अवसरवादी ही प्रवेश लेते हैं। यह इस कारण कि किसी चतुर व्यक्ति ने राजनीति और धर्म को पृथक्–पृथक् कर रखा है। ये स्वार्थी और अवसरवादी तो सदा खरीदे जा सकते हैं। परन्तु धर्मात्मा राजनीति में आने लगे तो फिर ये खरीदने से नहीं, प्रत्युत मार डालने पर ही टलेंगे। यह एक बहुत ही कठिन बात होगी। मजहबी दीवानों से झगड़ा करना अत्यन्त कठिन है।''

''परन्तु बाबा! वह न तो मजहबी दीवाना है न कभी सर्वसाधारण में व्याख्यान देता है।''

''परन्तु यह कल क्या पब्लिक जलसा नहीं था?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, यह तो धर्मोपदेश था। मैं भी वहाँ पर उपस्थित था।"

"तब तो तुम सरकार की ओर से गवाह बन सकोगे।"

"सरकार ने मुझको गवाही के लिए बुलाया तो मैं होस्टाईल गवाह (दोषी का सहायक) बन जाऊँगा।"

"क्यों? वह कोई पीर है क्या?"

"पीर से भी ज्यादा। वह मेरी बीवी का गुरु है।"

"बीवी का? राधा का?"

"हाँ। उसके संगीत भवन को क्यों ताला लगा दिया है?"

"यह एक दूसरा मसला है।"

"और उस हत्यारे का क्या हुआ, जिसने गोली चलाई थी?"

"वह कहता है कि वह तो बेकसूर है। गोली चलाई किसी ने और लोग उस पर टूट पड़े। वह हील–हुज्जत करता रहा। वह कहता रहा कि गोली मैंने नहीं चलायी। गोली चलाने वाला कोई और है और भाग गया है। पिस्तौल उसके हाथ से नहीं प्रत्युत भूमि पर से उठायी गयी है।

"गोली चलाने वाला फरार घोषित कर दिया गया है और वह छोड़ दिया गया है?"

खटाऊजी तो अवाक् बैठा रह गया। फिर कुछ विचार कर वह खिड़की में से झाँककर और आसमान पर देखकर पूछने लगा, "मिस्टर रूबन्ज! अभी तो दिन है। सूरज दिखाई दे रहा है और वह सीधा सिर के ऊपर है। तुम इसको रात सिद्ध नहीं कर सकोगे। वहाँ एक सौ एक गवाह ऐसे पैदा हो जायेंगे जो कसम खा–खाकर कह देंगे कि हत्यारा वही शख्स है।"

"परन्तु वह मिलेगा कहाँ? हिन्दुस्तान में तो वह है नहीं। अब तक तो वह अरब सागर की लहरों पर जहाज में बैठा हिलोरें ले रहा होगा।"

"क्या? वह भगा दिया गया है क्या?"

रूबन्ज खिलखिला कर हँस पड़ा। इससे तो खटाऊजी और भी भौचक्का हो मुख देखता रह गया।

रूबन्ज ने अपनी कुर्सी समीप खिसकाकर कहा, "देखो दोस्त! यह तो सरकार का केस है। और इसे सरकारी ऐडवोकेट मिस्टर कूपर स्मिथ तैयार कर रहे हैं। मगर मैं उस केस को असफल बनाने की योजना कर रहा हूँ। और इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ।

"पहले असल बात सुन लो। कल जब थानेदार ने कत्ल का यत्न करने वाले के बयान लिए और उसको मामूली–सी दरेड़ दी, तो वह सब बक गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बयान थे कि उसको आगा खाँ पैलेस के दारोगा ने पाँच सौ रुपये पर इस जुर्म के लिए तैयार किया था। उसने यह भी बताया है कि यह काम सर आगा खाँ ने करने के लिए कहा है। उसको दुर्गा नाम की औरत दिखाई गई थी। वह उसके पीछे एक महीने से लगा हुआ था। कल वह अवसर पा गया और गोली चला दी गई। पिस्तौल भी दारोगा ने दी थी।

"इन बयानों से आगा खाँ के वारन्ट निकलने चाहिए थे, मगर जब बात प्रैजिडैन्सी मजिस्ट्रेट को पता चली तो उसने चीफ सेक्रेटरी टू दि प्राविंशियल गवर्नमैण्ट (सूबा सरकार के मुख्य सचिव) को फोन कर दिया। इस पर गवर्नर बहादुर के यहाँ कल रात ही एक मीटिंग हुई। उसमें उक्त योजना बना मिस्टर स्मिथ को मुकदमा बनाने के लिए लगा दिया गया।

"उक्त मीटिंग में गवर्नर बहादुर, आगा ली और मजिस्ट्रेट उपस्थित कहे जाते हैं। रात को ही हत्या करने का यत्न करने वाले को हवालात से निकाल भगा दिया गया। आज प्रातः एक इटालियन जहाज जाने वाला था। उस पर वह मुजरिम और आली हजरत के परिवार के एक 'मैम्बर' लियाकतअली खाँ का पासपोर्ट, रात–रात में ही बनवाया गया और वे दोनों उस जहाज में चले गये हैं।

"मिस्टर कूपर स्मिथ मुकदमा तैयार कर रहे हैं। और इस साधु को बलि का बकरा बनाने का विचार किया जा रहा है।"

खटाऊजी ने पूछ लिया, "पर वह सब क्यों?"

"यह तो मैं जानता नहीं। कुछ भीतर–ही–भीतर बात हो रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्गा नाम की औरत को भी विलायत भेजने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

"यह तब ही होगा, जब वह इस साधु के मुकदमे में दखल न देना मंजूर कर लेगी। उसको इसी काम के लिए तैयार किया जा रहा है। अभी तक वह नहीं मानी।

"एक रुक्मिणी देवी हैं। यह दुर्गा उसकी पी.ए. है और वह उसके पास बैठी रहती है अथवा उसके घर का कोई न कोई आदमी उसके पास बैठा रहता है। अस्पताल वाले कह रहे हैं कि उसको कुछ अधिक चोट नहीं आई। इसलिए उसे अस्पताल से जाने के लिए कहा जा रहा है। परन्तु पुलिस वाले उसको अभी छुट्टी न देने के लिए कह रहे हैं।

"मेरा नाम इस बात में नहीं आना चाहिए। इस पर भी मैं चाहता हूँ कि दुर्गा को अस्पताल से ले जाकर हाई कोर्ट में एक पैटीशन करा दी जाये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस ने वास्तविक अपराधी को फरार कर दिया है। मैं आपको पासपोर्टों के नम्बर बताता हूँ। उनको बताकर आप पैटीशन करें कि आपको यह सन्देह है कि मुजरिम को और उसके जुर्म करने पर नियुक्त करने वाले को इन पासपोर्टों पर भगा दिया गया है।"

खटाऊजी स्वयं इस झमेले में पड़ना नहीं चाहता था, परन्तु मिस्टर रूबन्ज उसके लिए बहुत काम किया करता था। इस कारण उसको वह इन्कार भी न कर सका। मिस्टर रूबन्ज यह कह, कि वह इस विषय में उसको समय–समय पर निर्देश देता रहेगा, चला गया। खटाऊजी ने राधा से बात की तो उसने रुक्मिणी से इस विषय में बात करने का विचार उपस्थित कर दिया।

वह गई तो वहाँ उसको एक अन्य समाचार मिला। बम्बई के मुसलमानों ने संगीत भवन के विरुद्ध गवर्नर बहादुर को एक पैटीशन कर दी थी कि संगीत भवन धर्म परिवर्तन का एक अनुचित साधन बना हुआ है। इसको जब्त कर लिया जाए। देसाई साहब इस विषय में चीफ जस्टिस से मिलने गए हैं और उसके विचार जान कर ही आगे पग उठाया जाएगा।

राधा ने खटाऊजी की जानकारी बता दी। इन्स्पैक्टर जनरल पुलिस का नाम नहीं बताया। इस पर राधा को ही कहा गया कि वह हस्पताल में चली जाये और दुर्गा को कहे कि वह वहाँ से बिना छुट्टी लिए चली आए। यदि न आने दिया जाये तो फिर हाई कोर्ट में 'हैविअस कार्पस एक्ट' के अधीन प्रार्थना कर दी जायेगी।

राधा हस्पताल गई और वहाँ से लौट आई। दुर्गा पुलिस की हिरासत में थी। इस पर बम्बई के एक प्रसिद्ध वकील सी.डी. देशमुख से राय की गई। उसका कहना था कि दुर्गा को छुड़ाने की तो अभी बात नहीं हो सकती। हाँ, उस गोली चलाने वाले को कोर्ट में उपस्थित करने की पैटीशन की जा सकती है। एतदर्थ पैटीशन तैयार की गई और अगले दिन उपस्थित करने का विचार किया गया।

उसी सायंकाल मुसलमानों के एक जलूस ने संगीत–भवन पर धावा बोल दिया और पुलिस के देखते–देखते उसको आग लगा दी। आग बुझाने की दमकल आई और आग बुझाने में लग गई। बहुत कठिनाई से रात के दो बजे आग बुझाई जा सकी।

अगले दिन दुर्गा की ओर से हाई कोर्ट में एक अन्य पैटीशन की गई कि कातिल को फरार होने का मौका देने के लिए उसको अकारण रोका गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अपराधी को देश से बाहर करने के लिए यत्न किया गया है। यह भी पुलिस पर दोषारोपण किया गया कि रात–रात में पासपोर्ट बनवा कर कातिल को और उसके एक सहायक को भगा दिया गया है।

हाई कोर्ट ने बम्बई सरकार और पुलिस को नोटिस जारी कर दिया कि वे हाजिर होकर बताएँ कि इस गैरकानूनी कार्रवाई के लिए क्यों न उनके वारण्ट निकाले जाएँ।

: 3 :

रौलेट ऐक्ट के विपरीत देश का नेतृत्व तिलक इत्यादि नेताओं के हाथ से निकल गया था और इसे अब अहमदाबाद के एक वकील श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी अपने हाथ में ले रहे थे।

गांधीजी दक्षिणी अफ्रीका में वहाँ की सरकार के झगड़ा करने का एक नया ढंग विचार कर और उसमें तात्कालिक सफलता का अनुभव लेकर आये थे। वहाँ उन्होंने रंगभेद के विरुद्ध विरोध करने की एक योजना बनाई थी। वह यह कि एक भारी संख्या में पीड़ित लोग उस कानून की अवज्ञा करें, जो पीड़ा देने वाला हो और उसके लिए दंड भोग करें।

जब भारी संख्या में रंगभेद के कानून की अवज्ञा की गई और जेलें भरने लगीं तो सरकार झुक गई और एक समझौता हो गया और गांधीजी इसी विरोध के ढंग की परीक्षा भारत में करने के लिए चले आये। यहाँ पर भी उन्होंने इस उपाय का प्रयोग या चम्पारण में, वार्दोली के कैरा के इलाके में और फिर अहमदाबाद के कपड़ा मिलों के मालिकों और मजदूरों के झगड़े में किया। यहाँ भी सामयिक सफलता मिली।

इन स्थानों पर सफल प्रयोगों से उत्साहित हो गांधीजी ने रौलेट ऐक्ट के विरोध में इस विरोध के ढंग का प्रयोग करने की घोषणा कर दी। इस विरोध को यूरोपियन भाषा में 'पैस्सिव रैजिस्टैंस' (शान्तिमय विरोध) कहते थे। परन्तु भारत में इसका नाम सत्याग्रह रखा गया।

रौलेट ऐक्ट का विरोध अफीका के रंगभेद अथवा चम्पारण की बेदखलियों और वार्दोली में लगान वृद्धि इत्यादि झगड़ों से भिन्न प्रकार का था। अफ्रीका इत्यादि में तो कानून लागू था और उसका प्रयोग एक विशाल जनता के अधिकारों के विपरीत हो रहा था। उसकी अवज्ञा एक विशाल जनता कर रही थी, परन्तु रौलेट ऐक्ट तो कुछ सीमित व्यक्तियों के विपरीत कार्य करने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और कदाचित् वे कुछ लोग विरोध करने की अवस्था में नहीं होते। साधारण जनता के ऊपर यह कानून लागू होने वाला नहीं था। इस कारण इसकी अवज्ञा कोई कैसे करेगा, कोई नहीं जानता था। अतः इस विषय में तो अभी जनमत तैयार करने का विचार किया गया। एतदर्थ देशव्यापी आन्दोलन आरम्भ कर दिया गया। युद्ध–काल में भारी आशाएँ बँधाई गई थीं। सब का विचार था फि पार्लियामेन्ट में जो कानून उपस्थित है, वह स्वराज्य की ओर एक बहुत बड़ा पग है। इससे भारत के गरम और नरम दल के सभी लोगों को भारी आशा बँध रही थी। परन्तु इस रौलेट ऐक्ट को देख कर सब देशवासियों को क्रोध आ जाना स्वाभाविक था। अतः एक देशव्यापी आन्दोलन खड़ा हो गया।

यह आन्दोलन चल रहा था। दूसरी ओर गरीबदास के मुकदमे की तारीखें भी लम्बी और लम्बी पड़ रही थीं। उस पर 124 ए तथा 13–ए के अधीन भारत में भारत सम्राट द्वारा स्थापित सरकार को पलटने का आरोप था और पुलिस रिमाण्ड पर रिमाण्ड ले रही थी। जमानत के लिए प्रार्थना की गई, परन्तु वह अस्वीकार कर दी गई। जमानत की प्रार्थना सेशन कोर्ट और फिर हाई कोर्ट में की गई। हाई कोर्ट में गरीबदास को, एक मास से ऊपर हवालात में रखने के पश्चात् साठ हजार की जमानत पर छोड़ दिया गया।

दूसरी ओर दुर्गा की पैटीशन हाई कोर्ट में रंग लाई। पुलिस से उन पासपोर्टों, जिनके नम्बर बताये गये थे, के व्यक्तियों के नाम–धाम पूछे गये। पुलिस ने नाम बताने से इन्कार किया तो हाई कोर्ट ने कोर्ट का अपमान करने पर मानहानि के अभियोग की धमकी दे दी।

पुलिस ने एक अन्य व्यक्ति को उपस्थित कर दिया और उसको गोली चलाने वाला घोषित कर दिया। दुर्गा के वकील ने कोर्ट में कह दिया, "यह कातिलाना हमला करने वाला नहीं। इस पर भी यह तो नीचे की कचहरी में आपत्ति की जायेगी, परन्तु हम उन पासपोर्टों पर जाने वाले आदमियों का नाम चाहते हैं। इससे ही यह रहस्य प्रकट होगा।"

इस पर हाईकोर्ट के आदेश पर उस पासपोर्ट को जारी करने का रजिस्टर उपस्थित करने के लिए पुलिस ने एक सप्ताह की अवधि माँग ली। अब दुर्गा को छोड़ने के लिए जमानत उपस्थित की जाने लगी। सरकार जमानत का विरोध करती थी। हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस श्रीयुत आर्थर क्लीमैन्ट ने बीस हजार की जमानत पर उसे छोड़ दिया।

प्रैजिडैन्सी मजिस्ट्रेट तथा गवर्नर के प्रयत्नों से और खटाऊजी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यस्थता से गरीबदास के विरुद्ध मुकदमा उठा लिया गया। दुर्गा ने अपनी पैटीशन पर बल नहीं दिया और चीफ जस्टिस ने केस 'फाइल' कर दिया। साधना आश्रम से पुलिस का अधिकार उठ गया और संगीत भवन की इमारत नई बनने लगी।

जिस दिन गरीबदास छूटकर आया, उसी दिन साधना आश्रम में संगीत भवन के ट्रस्ट की मीटिंग बुलाई गई। अभी विचार–विनिमय ही हो रहा था कि सुल्ताना शमशाद की अम्मी वहाँ आ पहुँची।

अब वह कभी–कभी ही भापाजी से मिलने आया करती थी। इस कारण उसको आया देख सब चकित रह गये। संगीत–भवन के ट्रस्ट की मीटिंग में खटाऊजी, राधा, वर्मा, देसाई, सरला और रुक्मिणी तथा गरीबदास थे। ये सरकार के प्रस्ताव, कि यदि ट्रस्ट के लोग किसी प्रकार का पब्लिक वक्तव्य न दें तो सरकार सब मुकदमे वापस लेने को तैयार है और संगीत भवन के निर्माण में दो लाख रुपये की सहायता करने को भी तैयार है, और सरकार चाहती है कि दुर्गा और उसके साथी भी हाईकोर्ट से प्रार्थना वापस ले लें, पर विचार कर रहे थे।

देसाई और खटाऊजी सुलह कर लेने के पक्ष में सम्मति दे रहे थे। वर्मा, यद्यपि कहता कुछ नहीं था, परन्तु मुकदमों में अधिक लिप्त होने के पक्ष में नहीं था। इस पर भी गरीबदास की सम्मति की सब प्रतीक्षा कर रहे थे।

गरीबदास ने कुछ मिनट तक आँखें मूँद चिन्तन कर कह दिया, "मेरी सम्मति यह है कि सरकार से झगड़ा कर जीवन व्यर्थ गँवाना है। तिलकजी का मुकदमा, मिस्टर चिरोल के विपरीत असफल रहा है। जब इंग्लैंड के न्यायालय में न्याय नहीं मिल सका तो भारत में यह असम्भव है। यह तो आर्थर क्लीमैन्ट की उदारता के कारण ही इतना हुआ है। वह किसी समय भी यहाँ से वापस भेजा जा सकता है। अतः सुलह हो जानी चाहिए।

गरीबदास की इस सम्मति से बात का निर्णय हो गया। जब बात हो रही थी तो सुल्ताना ने लिखकर एक चिट भीतर भेज दी। इस पर उसको बुला लिया गया। सुल्ताना का कहना था, "मेरे पास प्रमाण हैं कि उस दिन का बलवा और भवन को आग लगाने की योजना सरकार की ओर से चलाई गई थी। सरकार का विचार था कि इससे हिन्दू–मुसलमानों में झगड़ा हो जायेगा और दस–बीस लोग इस झगड़े में मारे गये तो गांधीजी के आन्दोलन में शिथिलता आ जायेगी।"

"किन्तु झगड़ा तो हुआ नहीं?" गरीबदास का कहना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झगड़ा इस कारण नहीं हुआ कि हिन्दुओं में मुसलमानों के काम की प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं हुई। जब सरकारी एजेन्टों द्वारा बताई बात समाप्त हो गई; मतलब यह कि संगीत भवन फुक–फुक कर जलने लगा तो लोग शांति से घरों को लौट पड़े।''

''और तुमको यह सब किसने बताया है?''

''शमशाद पुलिस, प्रेजिडैन्सी मजिस्ट्रेट, गवर्नर इत्यादि को कई वर्षों से लिख रहा था कि इस भवन में संगीत सिखाने के बहाने मुसलमानों को हिन्दू बनाया जाता है। पिछले सप्ताह शमशाद को प्रैजिडैन्सी मजिस्ट्रेट की चिट्ठी आई। वह उससे मिलने गया और फिर घर पर नित्य मुसलमानों की मीटिंगें होने लगीं। सरकारी लोग तो यह चाहते थे कि बम्बई–भर में हिन्दू–मुसलमान फिसाद आरम्भ हो जाये, परन्तु शमशाद का क्रोध तो भवन को आग लगा देने तक सीमित था।

''एक बात और, शमशाद ने अपनी दुकान का सब माल एक दिन पहले निकाल लिया था और अब वह कोई दूसरी दुकान किराये पर लेने का यत्न कर रहा है।''

''मजीद के विचार अब शमशाद से नहीं मिलते। इसी कारण वह मुझको उसकी बातें बताया करता है। आज उसने बताया है कि दुकान मिल नहीं रही। काम ठप्प हो गया है। घर का खर्चा पाँच सौ रुपया महीना है। मजीद को यह स्थिति पसन्द नहीं। वह कह रहा था कि वह शमशाद से अलग होना चाहता है। शमशाद यह पसन्द नहीं करता। इससे वह उसकी अदालत में मुखबरी करने को तैयार है।

''अगर आप मुकदमा लड़ रहे हैं तो वह बतौर गवाह के हाजिर होने को तैयार है। वह सब खतो–किताबत जो शमशाद और प्रेजिडैन्सी मजिस्ट्रेट के भीतर हुई है, मैं अपने साथ ले आई हूँ। आप इससे भी लाभ उठा सकते हैं।''

गरीबदास ने वह चिट्ठियों का बंडल, जो सुल्ताना ने सामने रखा था, उठा लिया और देसाई को देते हुए कहा, ''सुल्ताना बहन! हमारे वकील देखेंगे कि इस पत्र–व्यवहार का कितना लाभ उठाया जा सकता है।

''तुम कभी–कभी मिलती रहा करो। संगीत भवन तो अब नया बन रहा है। जब उसकी दुकानें किराये पर देंगे तो यदि मजीद अपना स्वतन्त्र कारोबार करना चाहेगा तो उसको दुकान मिल जायेगी।''

''जो कुछ,'' सुल्ताना ने कहा, ''आप कहेंगे उसके मुताबिक ही मजीद करेगा। मैं यत्न कर रही हूँ कि दोनों भाई घर भी पृथक्–पृथक् ले लें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुल्ताना की सूचना से तो यह समझ आया कि अंग्रेजी सरकार हिन्दू–मुसलमानों में झगड़ा कराने में संलग्न है और इस झगड़े में मुसलमानों में दो पक्ष हो रहे हैं। एक वे जो झगड़ा करना नहीं चाहते और दूसरे वे, जो इसमें रुचि ले रहे हैं।

सुल्ताना के चले जाने पर खटाऊजी ने कहा, "यह औरत काबिले एतबार नहीं?"

"इन चिट्ठियों के निरीक्षण पर पता चलेगा कि यह क्या करने का विचार रखती है।"

देसाई का कहना था, "मजीद से मिलने का यत्न करना चाहिए। मैं भी एक बात सुन रहा हूँ। मौलाना मुहम्मदअली और मौलाना शौकतअली का नाम मुसलमानों में विख्यात हो रहा है। उन्होंने एक सन्देश जेल से भेजा है कि मुसलमानों को गांधीजी का कहना मानना चाहिए। इससे आगाखाँ का रसूख मुसलमानों में कम हो रहा है।"

खटाऊजी ने पूछ लिया, "ये मौलाने क्या चाहते हैं?"

"युद्ध–काल में इन्होंने मुसलमानों से यह अपील की थी कि मुसलमानों को अंग्रेज की सहायता नहीं करनी चाहिए। उनकी इस अपील के कारण सरकार ने इनको कैद कर दिया था।"

"क्या ये चाहते हैं कि हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिल जाये?"

"नहीं जी! ऐसा कोई ख्याति प्राप्त मुसलमान मिल नहीं सकेगा जो हिन्दुस्तान को स्वराज्य दिलाना चाहता हो। मिस्टर जिन्ना यह चाहते मालूम होते हैं, परन्तु इन मौलानाओं के सामने उनकी भी कोई गिनती नहीं। जब मौलाने कहते हैं कि तुर्की के खलीफा के खिलाफ मुसलमान लड़ नहीं सकते तो मुसलमान जोश में भर कर नारे लगाने लगते हैं।"

गरीबदास ने बात समाप्त करते हुए कहा, "संगीत भवन किसी किराये के मकान में आरम्भ कर देना चाहिए, और खटाऊजी! सरकार से जो कुछ मिले, ले लेना चाहिए। यह धन निर्धन छात्रों की छात्रवृत्ति में व्यय किया जाये।"

यह समाचार पा कि संगीत भवन की इमारत बनेगी, मजीद राधा और खटाऊजी से मिलने आया। राधा अभी तक संगीत भवन के लिए भाड़े के मकान का प्रबन्ध नहीं कर सकी थी। वह इसके लिए प्रयत्न कर रही थी। खटाऊजी ने मजीद को आया देख राधा से पूछा, "इससे क्या कहना चाहती हो?"

"आप पता करने का यत्न करिये कि यह शमशाद के साथ काम करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों नहीं चाहता? मैं इससे मिलूँगी नहीं।''

मजीद के भीतर आने से पूर्व ही राधा उठ कर भीतर के कमरों में चली गई। मजीद आया तो खटाऊजी ने उसको बैठाया और पूछा, ''किसलिए आना हुआ है?''

''अम्मी ने बताया है कि आप लोग संगीत भवन की इमारत तामीर कर रहे हैं। मैं उसमें एक दुकान लेने की ख्वाहिश रखता हूँ।"

''बिल्डिंग और उसमें हमारा सब सामान जल जाने से पाँच लाख रुपये के लगभग हानि हुई है। इसलिए स्कूल की कमेटी ने तय किया है कि जो भी किराये पर दुकान लेना चाहेगा, उसको दो वर्ष का किराया पेशगी देना होगा। किराया पाँच रुपया मुरब्बा फुट मासिक के हिसाब से होगा। कुल दस दुकानें होंगी। पाँच होंगी दस फुट चौड़ी और बारह फुट लम्बी। शेष पाँच होंगी बीस फुट लम्बी और पन्द्रह फुट चौड़ी।''

मजीद ने गिनती की और कहा 18 हजार रुपया साल का और दो साल का छत्तीस हजार रुपया?''

''हाँ; यह पेशगी देना होगा।"

''मैं दे दूँगा।''

''तो किसके नाम दुकान चाहते हो?''

''मजीद खाँ कुरैशी।''

''और शमशाद के नाम नहीं।''

''जी नहीं।''

''उसको तो कमेटी वाले देंगे भी नहीं। हम सब जानते हैं कि उसने ही भवन को आग लगवाई है। वह उनकी रहनुमाई कर रहा था, जो जलूस बना कर आग लगाने आये थे।''

''इसीलिए मैं उससे लड़ पड़ा हूँ।''

''मगर तुमने यह जानते हुए भी कि मकान पर हल्ला बोला जाने वाला है, हमको आकर बताया नहीं।''

''जी। मुझको मालूम नहीं था। मैं मुस्लिम लीग के जलसे पर अहमदाबाद गया हुआ था। मेरे पीछे ही यह सब फैसला हुआ और दुकान खाली कर दी गई। पड़ोस के दुकानदारों ने पूछा तो उनको शमशाद ने बता दिया कि वह एक बड़ी दुकान ले रहा है। सब शक कर रहे हैं कि शमशाद ने ही आग लगवाई है। इस बात की रिपोर्टें गवर्नर और डिप्टी कमिश्नर के पास गई हैं। परन्तु सुना है कि एक बड़े सरकारी अफसर उसकी सहायता कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए वह बचा हुआ है।''

''पहले भी तो दुकान तुमने अपने नाम पर ली थी और पीछे अपने भाई को उसमें घुस आने दिया था।''

''जी नहीं। यह बात नहीं। 1908 में मैंने दुकान अपनी कम्पनी के लिए ही ली थी। उसमें मैं, अम्मी और शमशाद पत्तीदार थे। अब हमारा बँटवारा हो रहा है। अम्मी अब कारोबार करना नहीं चाहतीं। वे अपना हिस्सा लेकर पंजाब चली जायेंगी। उनकी शमशाद की बीवी मुमताज से बनती भी नहीं।

''मगर मुमताज और तुम्हारी बीवी रमजान तो बहनें–बहनें हैं न?''

''हाँ, मगर उन दोनों में भी नहीं बनती।''

''क्यों?''

''रमजान अम्मी के साथ रहती है और मुमताज अम्मी के खिलाफ।''

''वजह क्या है?''

''कुछ तबियत का सवाल है। रमजान अम्मी की बातें ज्यादा पसन्द करती है। जब अम्मी कहती हैं कि खुदा हर शै में हाजर–नाजर है तो इसको ठीक समझ आता है और मुमताज कहती है कि कुरआन में लिखे के खिलाफ है। वह तो सातवें आसमान पर बैठा जबराईल से लिखी बही देखकर बहिश्तं और जहन्नुम में भेजेगा।

''इसी पर झगड़ा हो जाता है। अम्मी कहती है, 'मुमताज खुदा से डरो।' तो वह कह देती है कि जब वलि–उल–इस्लाम मुहम्मद साहब की सरपरस्ती रहेगी, किसी बात से डरने की जरूरत नहीं।

''अम्मी कहती हैं–वलि–उल–इस्लाम भी मदद नहीं करेगा, अगर हमारे अमाल अच्छे नहीं होंगे। इस पर मुमताज कहती है कि फिर वह वली ही कैसे हुआ? अपने पैराओं (भक्तों) को तो जन्नत में भेजने का उसने वायदा किया है।

''एक बार तो मुमताज ने अम्मी के जूता दे मारा था। मैं अब उससे अलहदा होना चाहता हूँ।''

''अच्छी बात है। तुम रुपया जमा करा दो। तब तुम्हरी अर्जी पर गौर किया जायेगा।''

इस बातचीत के एक सप्ताह बाद मजीद छत्तीस हजार रुपया जमा कर गया। वह सबसे पहले रुपया जमा कराने वाला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 4 :

युद्ध कार्यालय दिल्ली से यह समाचार आया कि डॉ. जवाहरलाल बीस मार्च 1919 को बम्बई पहुँचेगा। सदानारायण को उसको मिलने के लिये पायर पर भेजा गया। साधना उसके साथ थी।

जब यात्री जहाज से उतरे तो जवाहरलाल जहाज पर जंगले के पीछे खड़ा किनारे पर किसी को ढूँढ़ रहा मालूम हुआ। सदानारायण ने उसको पहचाना तो रूमाल हिला कर उसका ध्यान आकर्षित कर लिया। साधना भी हाथ हिलाकर उसका ध्यान आकर्षित कर रही थी। जवाहरलाल ने इनके अभिवादन का उत्तर तो दिया, परन्तु वह किसी अन्य को देखने का यत्न कर रहा था।

सदा ने साधना से कहा, "भैया ऐमिली को ढूँढ़ रहे प्रतीत होते हैं।"

साधना ने कुछ परेशानी तो अनुभव की, परन्तु वह चुप रही। सब यात्री जहाज से उतर आये। तब जवाहर भी उत्तर आया। सदानारायण ने उससे मिल हाथ जोड़ नमस्कार किया। साधना ने चरण–स्पर्श किये तो पहली बात उसने पूछी, "ऐमिली नहीं आई क्या?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"उसका पता नहीं कि वह कहाँ है। वह जबलपुर में भी नहीं है।"

"तो पता करने की कोशिश नहीं की?"

"की है। जहाँ तक वार ऑफिस वालों को ज्ञात है, वह यहाँ से इंग्लैंड गई थी। फिर उसका पता नहीं चला।"

जवाहरलाल ने कहा, "मैं किसी होटल में ठहरना पसन्द करूँगा।"

साधना ने कह दिया, "माताजी से तो मिल लीजिये। वे अब पिताजी से पृथक् रहती हैं।"

"क्यों?"

"पिताजी ने संन्यास ले लिया है और एक आश्रम बना उसमें रहते हैं। माताजी तो दादर स्टेशन के समीप एक भाड़े के मकान में रहती हैं।"

"और वहाँ कौन रहता है?"

"मैं रहती हूँ, लाज बहन रहती है और रत्न रहता है।"

जवाहरलाल ने कुछ विचार कर माँ के पास जाने का निर्णय कर लिया। उन्होंने घोड़ागाड़ी की और दादर को चल पड़े। जवाहरलाल के पास कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सामान नहीं था। पहनने के कपड़ों के अतिरिक्त उसके हाथ में एक अटैचीकेस था, जो वह हाथ में लिए हुए था। मार्ग में उसने सदा से पूछ लिया, "और सदा! तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं इतिहास में अन्वेषण कर रहा हूँ।"

"कहाँ?"

"पहले कलकत्ता में रॉयल ऐशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में काम करता था। अब यहाँ बम्बई में एक अपना पुस्तकालय निर्माण कर रहा हूँ।"

"मैंने यह नहीं पूछा! मैंने पूछा है किस विश्वविद्यालय की ओर से?"

"एक साधना आश्रम है। उसके तत्त्वावधान में।"

"साधना आश्रम? किसका है वह?"

जवाहरलाल ने प्रश्नभरी दृष्टि में साधना की ओर देखा। वह मुस्कराती हुई अपने पति का मुख देख रही थी। सदा ने सामने देखते हुए बता दिया, "भापाजी के आश्रम का नाम साधना आश्रम है। वह एक ट्रस्ट के अधीन है। ट्रस्ट के पास स्थावर सम्पत्ति के अतिरिक्त तीन लाख की सम्पत्ति है। वह ट्रस्ट यह अन्वेषण कार्य करा रहा है।"

"सब व्यर्थ है। क्या वेतन देते हैं ट्रस्ट वाले!"

"रहने को मकान, रोटी, कपड़ा और पॉकेट खर्चे के लिए तीन सौ रुपया मासिक।

"विवाह नहीं कराया?"

सदा हँस पड़ा। साधना ने बताया, "सदा की पत्नी के दो बच्चे हैं।"

"ओह!" जवाहरलाल ने सदा की पीठ ठोंकते हुए कहा, "रहते कहाँ हो?"

"जुहू में आश्रम है। उसी आश्रम में एक मकान रहने को मिला हुआ है।"

"तो माताजी और लाज इत्यादि वहाँ क्यों नहीं रहतीं?"

"भापाजी की ऐसी ही इच्छा है।"

"संगीत भवन बन्द कर दिया है?"

"नहीं। उसकी अध्यक्षा राधा हैं। परन्तु उस पर मुसलमानों ने, आपके मित्र शमशाद के नेतृत्व में धावा बोल कर उसको आग लगा दी थी। वह जल कर भस्म हो गया है।"

"क्यों आग लगा दी थी?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि वह अभी भी राधा को, हिन्दू हो जाने के लिए क्षमा नहीं कर सका।"

"कहाँ है आजकल वह?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसका अपनी अम्मी और भाई से झगड़ा हो गया है। उनकी दुकान का बँटवारा हो गया है। अम्मी ने उसको नोटिस दे दिया है कि वह मकान खाली कर दे। अभी वह अपनी अम्मी और भाई के पास कम्पिला हिल वाले मकान पर ही रहता है।"

"दुकान तो जल गई होगी?"

"उसने आग लगवाने का प्रयत्न करने से पहले अपना माल निकाल दुकान खाली कर दी थी। इस कारण उसको कुछ हानि नहीं हुई। अब बँटवारे में तीन पत्तियाँ हुई हैं और एक पत्ती का एक लाख चालीस हजार रुपया बना है।"

"बहुत कमाया है इन लोगों ने?"

"हाँ! व्यापार में ऐसा ही होता है।"

"परन्तु तुमने यह निर्धनों का जीवन क्यों स्वीकार कर लिया है?"

"मुझको अपने काम में जीवन का रस आ रहा है।"

"भापाजी ने तुमको मूर्ख बना रखा है।"

"भैया! तुम नहीं समझ सकते। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि शमशाद जैसे लोग धन से मूर्ख बनाये हुए जीवन व्यतीत कर रहे हैं।"

"और मेरे जैसे लोग तुमको कैसे प्रतीत होते हैं?"

सदा साधना भाभी को नाराज नहीं करना चाहता था। अन्यथा वह तो उसको निरा पशु मानता था, जो धन का भोग करना भी नहीं जानता। वह मुस्करा कर चुप रहा। बात साधना ने बदल दी। उसने कहा, "छोटे भापा भी संन्यास ले रहे हैं।"

"क्यों?"

"मेरा विचार है एक दिन लाहौर चलिये और उनसे मिल लीजिए।"

"मुझको तो पहले यहाँ 'वार आफिस' में रिपोर्ट करनी है।"

"कब करियेगा?"

"आज ही।"

जब ये लोग दादर वाले घर पर पहुँचे तो जवाहरलाल ने देखा कि लेखवती की गोदी में एक ढाई वर्ष का बच्चा है। उसने माँ को हाथ जोड़ नमस्कार की और सदा से पूछ लिया, "यह तुम्हारा छोकरा है?" सदा समीप ही खड़ा था।

सदा ने गम्भीर होकर कहा, "नहीं भैया! यह तुम्हारा और मेरा भानजा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भानजा?"

"हाँ! लाज बहन का।"

"तो उसने विवाह कर लिया है?"

"किया था। परन्तु भाग्य ने पलटा नहीं खाया।"

इस समय लाजवन्ती आ गई। इस पर जवाहर ने शोकमुद्रा में पूछ लिया, "कहाँ हुआ था तुम्हारा विवाह?"

"हरिद्वार में।"

"तो अब यहाँ क्या करती हो?"

"ताई की सेवा करती हूँ और रोटी खाने को पाती हूँ।"

साधना बोली, "आप वस्त्र बदल लीजिये। यहाँ धोती–कुरता तो मिल ही जायेगा। शेष अपने लिये नये कपड़े तो पीछे बनवा लीजियेगा।"

जवाहर के लिए एक कमरा तैयार कर रखा गया था। उसकी जेब में एक पैसा नहीं था। होटल की बात कर वह रुपयों की बात करने वाला था। पीछे उसका विचार बदल गया। उसने साधना से माँगने के स्थान वार आफिस से रुपया प्राप्त करने की बात सोच ली। इसी कारण वह अपनी माँ के पास रहने चला आया था।

यहाँ स्नान इत्यादि कर उसने कुरता और धोती पहन ली। सदा उसके लिए बाजार से चप्पल खरीद लाया। इस प्रकार तैयार हो, चाय पी, वह वार आफिस को चल पड़ा।

जाने से पूर्व सदा ने उसको एक दस रुपये का नोट देकर कहा, "भैया! यह अभी रखो। भाड़ा इत्यादि के लिए जरूरत होगी। हाँ, यदि भापाजी से मिलने चलना हो तो मैं गाड़ी लेकर, जहाँ कहो वहाँ आ जाऊँ?"

"गाड़ी है तुम्हारे पास?"

"गाड़ी एक घंटे में यहाँ आ जायेगी।"

"अब कितने बजे हैं?" जवाहर की घड़ी भी तुर्की में उतार ली गई थी।

"इस समय साढ़े तीन बजे हैं।"

"तो फिर यहीं मेरी प्रतीक्षा करना।"

जवाहरलाल को कार्यालय से पाँच सौ रुपये का चेक मिल गया। उसने अपना साधना आश्रम का पता लिख दिया। साधना आश्रम का नाम सुन कमांडिंग आफिसर ने प्रश्नभरी दृष्टि से जवाहरलाल की ओर देखा। जवाहरलाल इसका अर्थ नहीं समझा। अफसर ने चुपचाप पता लिख लिया और कहा, "ड्यूटी के विषय में तुमको दिल्ली से पता कर बताया जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादर पर सदानारायण जवाहर की प्रतीक्षा कर रहा था। एक ओवरलैंड मोटर गाड़ी मकान के बाहर खड़ी थी।

"सदा! यह गाड़ी किसकी है?"

"यह आश्रम की है। ट्रस्ट वालों ने वहाँ रहने वालों की सुविधा के लिए रखी हुई है।"

"ओह! तो ये ट्रस्ट वाले साधु नहीं हैं?"

"नहीं। केवल ट्रस्ट का चेयरमैन एक संन्यासी गरीबदास है। भापाजी ने अपना पुराना नाम ही रख लिया है।"

"तो गरीबदास जी मोटर गाड़ियों रखते हैं?"

"हाँ।"

"और भी हैं?"

"हाँ, एक और है।"

जवाहरलाल चकित रह गया। वह मोटर में बैठते हुए कहने लगा, "भापाजी की मुझको केवल यह बात पसन्द है कि वे संसार की उन्नत से उन्नत वस्तु का भोग करते हुए भी वेदों के काल की बात करते हैं।"

सदानारायण हँस पड़ा। हँस कर उसने मोटर में बैठते हुए कहा, "भैया! इसमें कारण है। भापाजी समझते हैं कि वेद–ज्ञान सब काल के लिए है। कोई भी काल वेदकाल से विलक्षण नहीं। ये रूप–रूपान्तर तो प्रकृति की माया–मात्र हैं। माया बदलती है। वास्तविक प्रकृति तो अनादि है और एक रस है।"

जवाहरलाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "भापाजी ने चेला अच्छा मूँडा है। एम.ए. फर्स्ट क्लास। जब तुम साधु बनोगे तो भापाजी से अधिक ढोंग रच सकोगे?"

सदा समझ रहा था कि जवाहर पर यूरोपियन विचार और आचार की छाप बहुत गहरी लगी है। इस पर वह भी हँस पड़ा। उसने बात बदल कर पूछ लिया–

"सैनिक कार्यालय से तुम्हारा क्या कार्यक्रम बना है?"

"अभी वहाँ से खर्चे के लिए पाँच सौ रुपये का चेक मिल गया है। मेरा कार्यक्रम दिल्ली से बनकर आयेगा। मैं अपना पता लिख आया हूँ, वे वहाँ सूचना भेज देंगे।"

"कहाँ का पता लिखाया है?"

"साधना आश्रम जूहू।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "यह ठीक नहीं किया।"

"क्यों?"

"पुलिस की दृष्टि में वह बागियों का आश्रम है।"

"सत्य?" जवाहरलाल का मुख विवर्ण हो गया।

"हाँ, कल दादर वाले मकान का पता लिखा आना।"

जवाहरलाल ने मन में विचार कर लिया कि वह कहीं निश्चिन्त हो बैठते ही पत्र द्वारा अपने कार्यालय में सूचित कर देगा कि उसने अपना पता बदल लिया है।

सदा ने जवाहरलाल का पीत मुख देखा था और वह मन में विचार करता था, कितना सुख और कितनी शान्ति है स्वतन्त्र जीवन में! नौकरी कितनी भी बड़ी क्यों न हो, दासता का एक रूप ही है।

: 5 :

जवाहरलाल की इच्छा के बिना सदा उसे बड़े भापा के पास ले गया। जवाहरलाल ने अपने पिता को चार वर्ष के पश्चात् देखा था। यह ठीक था कि अब वे संन्यासियों के वस्त्र पहने हुए थे। परन्तु उनके मुख पर वही तेज विद्यमान था, जो वह पहले देखा करता था। गरीबदास कुछ लिख रहा था। अतः दोनों जब उसके सामने जाकर खड़े हुए तो स्वामीजी ने दृष्टि उठाकर देखा। जवाहरलाल ने हाथ जोड़ नमस्कार की तो गरीबदास ने हाथ से संकेत करते हुए सदा से पूछ लिया, "सदा! यहाँ कैसे पकड़ लाये हो इसको?"

"भैया को माताजी वाला घर पसन्द नहीं आया। इस कारण यहाँ सागर तट पर ले आया हूँ।"

गरीबदास हँस पड़ा, "पर यह तो तुम्हारी बीवी को देखने आया है और इसका मन यहाँ से भयभीत है। इस पर भी यह तुम्हारी पत्नी का रूप–रंग देख उसपर मुग्ध हो यहीं टिक जायेगा। क्यों जवाहर! क्या मैं गलत कह रहा हूँ?"

"पिता जी! आया तो यहाँ रहने ही था, परन्तु इस स्थान की पुलिस में ख्याति सुन नौकरी की चिन्ता तो लगी ही है।"

"और वह चिन्ता सुचेता का दर्शन करने पर मिट जायेगी।"

सदा भापा की बातें सुन विस्मय से मुख देखता रह गया।

"पिताजी! छोटे भाई की बहू को देखने की लालसा तो है ही और यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सुन्दर हुई तो उससे तनिक हँसी–ठट्ठा करने में भी हानि नहीं मानता। इस पर भी मैं समझता हूँ कि नौकरी में गड़बड़ी रोकने के लिये यहाँ रहने का विचार उपयुक्त नहीं है।''

''नौकरी तो तुम्हारी रह नहीं सकती और तुम्हारा व्यवसाय भी चलेगा नहीं।''

''तो मैं भूखा मरूँगा?''

''भूखा मरने से बचाने का प्रबन्ध मैंने कर रखा है। लेख ने तुम्हारे और साधना के लिये एक सुन्दर कमरा सजा रखा है। साथ ही तुम ऐसा करने वाले हो कि तुम धन में लोट–पोट होते रहोगे।''

''तो सोने की वर्षा होगी क्या?''

''मूसलाधार वर्षा। अब तुम जाओ। मैं एक काम कर रहा हूँ।''

विवश जवाहर उठा और सदानारायरण उसको साथ लेकर अपने मकान में आ गया। सुचेता उस समय अपना तानपूरा ले संगीत का अभ्यास कर रही थी। वह शुद्ध कल्याण का राग गा रही थी।

गीत का एक पद था–

''दूध पूत दे अन्न धन लक्ष्मी।
सकल सम्पदा सदा सुखमणी।
सकल जगत के हो सर्वाधार।
सब पर तो हो छाये अपार।
आशा लगी तुझ पर है घनी।।
सदा सुखमणी।''

जवाहरलाल अति मधुर स्वर में संगीत लहरी सुन गृह के द्वार पर ही ठहर गया। सदा ने मुख पर देखा तो जवाहरलाल ने कहा, ''तो यह है तुम्हारी बीवी!''

''हाँ भैया!''

''यहीं ठहरते हैं। इसे गा लेने दो।''

''भैया! तब तो घंटा दो घंटा भर यहाँ ठहरना पडेगा।''

''क्यों?''

''इससे पूर्व इसका संगीत समाप्त नहीं हो सकता। यह राधा जी की शिष्या है, और कहीं यह मग्न हो गई तो रात–भर गाते–गाते ही निकल जायेगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो सदा! चलो। मैं इस मधुर गाने वाली की रूपराशि भी देखना चाहता हूँ।"

इनके सुचेता के कमरे के बाहर जाने पर उसका ध्यान भंग हो गया। वह जानती थी कि उसका पति साधना के पति को लेने गया हुआ है। इस कारण पति के साथ एक अन्य को खड़ा देख वह समझ गई। इससे उसने तानपूरा लिटा दिया और उठ कर हाथ जोड़ नमस्कार करने लगी।

जवाहर को सुचेता बहुत ही सुन्दर और ओजमयी प्रतीत हुई। वह उसकी साधना से तुलना करने लगा था। उसके मन में साधना से विवाह कर लेने के लिये भारी पश्चात्ताप लगा करता था। यह पश्चात्ताप उस समय बढ़ जाया करता था, जब वह किसी सुन्दर लड़की अथवा स्त्री को देखा करता था। इसी पश्चात्ताप के परिणामस्वरूप वह अपने पिता से नाराज रहता था।

सुचेता को देख उसने दीर्घ निःश्वास लिया और मंत्र–मुग्ध खड़ा रह गया। सुचेता उसे देख मुस्करा रही थी और वह उसकी मधुर मुस्कान पर मोहित था।

"सुचेता!" सदा ने कह दिया, "भैया को आसन दो न।"

"आइये, दादा! विराजिये। साधना बहन को साथ नहीं लाये?"

"ये अभी लौटे जा रहे हैं।"

जवाहर ने बैठते हुए कहा, "बहुत मीठा गाती हो भाभी!"

"तो आपको संगीत में भी रुचि है। आपकी और बातों में तो प्रशंसा सुनी है, परन्तु किसी ने आपकी इस अभिरुचि का उल्लेख नहीं किया। तब तो आपको साधना बहन को लेकर यहाँ आ जाना चाहिये। नित्य संगीत के रसास्वादन का अवसर मिलेगा।"

आश्रम में पाचक साँझा था। उसका काम प्रातः–सायं भोजन तैयार कर खिलाना मात्र था। भोजन के अतिरिक्त चाय इत्यादि का प्रबन्ध सुचेता को स्वयं करना पड़ता था। पूर्व इसके कि जवाहरलाल उसकी तथा उसके संगीत की प्रशंसा आरम्भ करता, सुचेता उठ कर बोली, "आपके लिये चाय ले आऊँ। तब तक ये आपका मनोरंजन करेंगे।"

वह गई तो जवाहर ने मुस्कराते हुए सदा से कहा, "तुम तो मुझ से चतुर सिद्ध हुए हो। बहुत सुन्दर पत्नी पा गये हो।"

"तो साधना भाभी से भी अधिक सुन्दर है यह?"

"मेरी हँसी करते हो, सदा!"

"भैया! अपनी–अपनी सूझ–बूझ है न। मेरी दृष्टि में तो साधना भाभी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलना संसार की कोई स्त्री नहीं कर सकती। भैया, कहीं साधना के स्थान पर सुचेता के स्वभाव की स्त्री होती तो दो वर्ष तक नौकरानी बन पति के घर में न रहती। या तो तुम्हारी हत्या कर देती अथवा जूतों से नित्य तुम्हारी मरम्मत करती रहती और ऐमिली तो एक घंटा भर न टिक सकती। वह पहले दिन ही लंदन का टिकट कटा भाग गई होती।''

''और मेरी नौकरी छूट जाने पर भूखों मरती। मैं तो साधना हाउसकीपर को भी रोटी, कपड़ा तथा दो सौ रुपया महीना देता था।''

''वह अब तीन वर्ष तक आपके युद्ध पर रहने के समय क्या पाती रही है? आप अपना आधा वेतन ऐमिली के लिए लिख गये, परन्तु साधना के लिये क्या दे गये थे? उसने तो कभी गिला प्रगट नहीं किया। जब वह आपके मैसापोटामिया चले जाने पर यहाँ नौकरी करने पर विवश हुई थी, तब भी उसने आपके प्रति एक भी उलाहने का शब्द नहीं कहा था और वह चुड़ैल खा–पी कर बिना सूचना दिये चल दी।''

''उसको तो तुमने खराब किया था। पहले साधना को हाउस कीपर से पत्नी के पद पर आसीन किया और उसमें तथा मुझ में प्रथम झगड़े का बीजारोपण किया। तदनन्तर उसके और उसके मित्र लैफ्टिनैन्ट सूरजसिंह के बीच तुम स्वयं खड़े हुए और फिर उसको अपना प्रेम देने का आश्वासन देकर भाग खड़े हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे चले जाने के पश्चात् तुमने उसकी सुध नहीं ली और वह एक पृथक् मकान ले तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही। जब तुम उसके पास नहीं गये तो वह भाग गई है।''

''भैया! मैंने उसको कभी किसी प्रकार का भी आश्वासन नहीं दिया। मैं सदा उसको तुम्हारे लिये ही तैयार करता रहा हूँ और जब वह तुम्हारे शयनागार में जाकर सोने लगी तो मैं निश्चिन्त हो चला आया था। मैं देख रहा था कि तुम मुझ पर भारी संदेह करते थे, परन्तु यह जानकर कि एक निराधार संदेह, बिना नींव की दीवार की भाँति, ठहर नहीं सकता, मैं मन में सन्तुष्ट हो आ गया था।''

इस समय सुचेता एक ट्रे में चाय लेकर आ गई। उसने ट्रे को दोनों भाइयों के बीच में रखते हुए कह दिया, ''तो आते ही लड़ने लगे दादा से? एक–दो दिन आराम तो कर लेने देते।''

''सुचेता! यह लड़ाई नहीं है। यह तो एक विषय पर मतभेद है।''

''क्या मैं विवाद का विषय तो नहीं?''

''हाँ, इनको तुम बहुत भाई हो। तुम्हारी मोटी–मोटी, कमल–पत्रों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान आँखों पर तो ये कहते थकते नहीं।''

''तब तो ठीक है दादा! साधना दीदी को जाकर ले आइये और तब तक मैं आपके लिये एक आगार तैयार कर देती हूँ। इस प्रकार जहाँ आप नित्य भजन–कीर्तन सुन सकेंगे, वहाँ मेरे आँखों के नित्य दर्शन कर आनन्द विभोर हुआ करेंगे।''

''और साधना के बिना यहाँ नहीं रह सकते?''

''दीदी ने तीन वर्ष तक जो तपस्या की है, क्या उसको भूल जाना चाहते हैं?''

''तपस्या का फल भगवान देता है। हम क्षुद्र जीव, भला उसका फल देने की क्षमता रखते हैं क्या?''

''तो भगवान आपको उसके साथ न्याय करने की प्रेरणा नहीं देता?''

सुचेता तीनों के लिये चाय बनाने लगी थी। खाने को मिठाई थी। नमकीन और भुनी मूँगफली तथा बादाम–पिस्ते थे।

जवाहरलाल का ध्यान तो पूर्ण रूप से सुचेता की ओर था। उसने कह दिया, ''अभी तक तो मुझ को उसके प्रति किसी प्रकार की प्रेरणा मिल नहीं रही। मेरे मन में तो अब अपना जीवन सुचेता रानी के चरणों में व्यतीत करने की प्रेरणा मिल रही है।''

''इस प्रेरणा को मानना बहुत मंहगा पड़ेगा। नौकरी इत्यादि छूट जायेगी।''

''पर तुम्हारी सेवा तो मिल जायेगी।''

''इसकी कुछ भी आशा है आपको?''

''आशा ही तो जीवन का सार है।''

''देख लीजिये। कहीं जीवन का सार लेते–लेते जीवन ही निस्सार न कर बैठें?''

चाय बन गई थी और तीनों पी रहे थे। सुचेता ने चाय की चुस्की लगाते हुए कहा, ''मृगतृष्णा के पीछे भागते हुए निश्चय मृत्यु के ग्रास होते तो बहुत सुने हैं।''

''परन्तु तुम मृगतृष्णा हो क्या?''

''मृगतृष्णा का भ्रम तो देखने वाले के मन में होता है। वास्तव में तो वह मरु–भूमि ही होती है। आपकी आँखें शुष्क रेती को सुहावना सरोवर देख रही हैं। मैं तो आपका पथ–प्रदर्शन कर आपको अत्यन्त शीतल, सुखद सुहावने सरोवर पर ले जाना चाहती हूँ। साधना दीदी आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। चलिये मैं आपको वहाँ छोड़ आती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय समाप्त हुई तो सुचेता ने अपने पति को कहा, "इनको बम्बई ले चलने के लिये मोटर तैयार करवा दीजिये। ये आज माताजी के घर में रहेंगे।"

"और यहाँ क्यों नहीं?" जवाहरलाल ने पूछ लिया।

"आज नहीं। मुझको आपके स्वागत के लिए तैयारी करनी होगी।"

"क्या तैयारी करनी होगी?"

"यह आपके भाई साहब बता देंगे। एक बार पहले भी मुझको तैयारी करनी पड़ी थी।"

"क्यों सदा, यह क्या बात है?"

"भैया, जब हम किसी से प्यार करते हैं तो किसी प्रकार की तैयारी की आवश्यकता अनुभव नहीं करते। परन्तु ये औरतें तो न जाने क्या-क्या तैयारी करती रहती हैं।

"मेरे कलकत्ता के एक मित्र थे कालिकाचरण। एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में परिचय हुआ तो इससे भी परिचय हो गया। बस फिर क्या था, लगे देवीजी की प्रदक्षिणा करने।

"एक दिन मैं इसके मौसिया भाई के घर किसी काम से गया हुआ था। वहाँ से लौटने में देरी हुई तो यह आते ही बोली, 'बाजार चलना चाहिये।' मैंने पूछा, किसलिए, तो कहने लगी कि मेरा जूता टूट गया है।

"मैं समझा नहीं। कारण अभी चार-पाँच दिन हुए तो यह नया सैंडल लेकर आई थी। इसने मुस्कराकर कहा कि मेरे मित्र कालिकाचरण की खोपड़ी बहुत मजबूत निकली है। यह नया मजबूत जूता भी टूट गया है।

"मैं समझ गया। मैंने हँसते हुए कहा कि ऐसे कामों के लिए एक लकड़ी का जूता बनवा रखो। तुम सुन्दर हो और आज इस देश में मूर्खों की संख्या कम नहीं है। कहाँ तक जूते खरीदती फिरोगी?

"इसके कुछ ही दिन बाद मैं बम्बई चला आया। मैं समझता था कि यहाँ कलकत्ता से मूर्ख कम हैं। इस कारण अभी तक लकड़ी का जूता बनवाया नहीं। यह है इसकी तैयारी करने का अर्थ।"

जवाहर गम्भीर हो सुचेता का मुख देख रहा था और वह मुस्कराती हुई चाय पी रही थी। जवाहर ने सदा के डील-डौल को देखा तो वहाँ से चल देने का निश्चय कर प्याला सासर में रख उठ खड़ा हुआ।

"अच्छा भाभी! अब चलता हूँ। तुम्हारा जूता बन कर आ जाये, तब एक दिन मैं उसका रसास्वादन करने आऊँगा।"

"हाँ, यदि यह व्यर्थ का खर्चा करवाने का फैसला ही कर चुके हैं तो फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना ही होगा। दादा! इस छोटी बहन पर कृपा बनाये रखना। चलिये, आपको साधना दीदी के हाथ सौंप आऊँ।''

: 6 :

गांधीजी की घोषणा थी कि देश 'रौलेट ऐक्ट' को स्वीकार नहीं करेगा। इसको लागू किया गया तो घोर संघर्ष आरम्भ हो जायेगा। यह संघर्ष शान्तिमय होगा, लोग कानून की अवज्ञा करेंगे और फिर उसका दण्ड भोगेंगे। अंग्रेज शासक को शासन चलाना असम्भव हो जायेगा। विवश सरकार को कानून वापस लेना पड़ेगा।

'यंग इण्डिया' में प्रति सप्ताह इसी प्रकार के, गांधीजी के वक्तव्य निकलते थे और देश–भर के सब हिन्दुस्तानी समाचार–पत्रों में वे वक्तव्य उद्धृत होते और पूर्ण देश में उत्तेजना बढ़ती जाती थी।

गरीबदास अब दैनिक समाचार–पत्र रत्नलाल से सुनता था और आने वाले तूफान का अनुमान लगा रहा था। ऐंग्लो इण्डियन इस कानून की सफाई देते थे। वे लिखते थे–यह निर्विवाद सत्य है कि पिछले छः–सात वर्षों से हिंसात्मक क्रान्तिकारियों ने देश में भारी हानि पहुँचाई है। उस प्रवृत्ति के लोगों से शासन, जो अब बहुत अंशों में जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में जाने वाला है, की रक्षा करनी आवश्यक है। अंग्रेज चाहता है कि आंशिक स्वराज्य का परीक्षण शान्ति से चल सके जिससे शीघ्रातिशीघ्र स्वराज्य की अगली किश्त दी जा सके।

क्रान्तिकारियों के लिए मुकदमों की लम्बी पेचीदगियाँ न सम्भव हैं न हितकर, इसलिए यह कानून बनाया गया है। यह आशा नहीं करनी चाहिये कि अफसर लोग किसी से अन्याय करेंगे। उनकी निजी शत्रुता किसी से होगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार इन लँगड़ी युक्तियों से जनता सन्तुष्ट नहीं होती थी। अब तो नरम दल के अवशिष्ट नेता भी गांधीजी की युक्ति मानते थे कि न्याय के लिए अपराधी को अपनी सफाई देने, अपने वकील द्वारा सरकारी पक्ष को असत्य सिद्ध करने की स्वीकृति और फिर छोटी अदालत में निर्णय विपरीत होने पर, बड़ी कचहरी में अपील करने का अधिकार होना चाहिये।

गांधीजी स्वयं नरम दल के नेता थे। वे स्वराज्य तो चाहते थे, परन्तु ब्रिटिश राज्यान्तर्गत। वे स्वराज्य प्राप्ति के लिए यत्न करना चाहते थे परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शान्तिमय ढंग से। वे यह कहते थे कि शान्तिमय ढग का अर्थ संविधानात्मक नहीं। उनका कहना था कि जब कोई संविधान ही नहीं तो संविधानात्मक उपायों के कुछ अर्थ नहीं।

जब गांधीजी से पूछा जाता कि संविधान के क्या अर्थ हैं, तो वे कह देते कि देश का संविधान उस देश के रहने वालों द्वारा निर्मित होना चाहिये। बाहर से लाकर चालू किये कायदे–कानून देश का संविधान नहीं कहाते।

ऐसे कायदे–कानून की अवज्ञा करना प्रत्येक देशवासी का अधिकार है। यह पाप नहीं, प्रत्युत पुण्य है। पाप तो तब होता जब अवज्ञा करते हुए किसी दूसरे को हानि पहुँचाने का यत्न होता। यहाँ तो स्वयं दुःख, कष्ट और हानि सहने की बात है। हम अन्याय को सहन नहीं करेंगे परन्तु इसके प्रतिकार में किसी दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेंगे। अहिंसात्मक सत्याग्रह का अर्थ जनता तक पहुँचाने का यत्न होने लगा।

गांधीजी ने 30 मार्च को आन्दोलन आरम्भ करने का निश्चय कर दिया। प्रथम भूल यह हुई कि घोषणा और आन्दोलन प्रारम्भ करने के दिन में केवल तीन–चार दिन का अन्तर रखा गया। देश के अनेक स्थानों से तार आये कि इस आन्दोलन की तैयारी के लिये पर्याप्त समय नहीं है। अतः 29 मार्च को यह आन्दोलन एक सप्ताह के लिए पीछे कर दिया गया और 6 अप्रैल इसके आरम्भ करने का दिन नियत किया गया।

प्रोफेसर सदाशिव, जो गरीबदास के धर्म तथा वेद सम्बन्धी विचारों की स्वीकार नहीं करता था, परन्तु स्वामीजी की विवेचनात्मक प्रतिभा को मानता था, एक दिन जुहू चला आया। उसने देखा कि साधना आश्रम को पुलिस के अधिकार में लेने के पश्चात् तो आश्रम में चहल–पहल बहुत बढ़ गई है। रविवार का दिन था, स्वामीजी अपने ध्यान–चिन्तन में अवकाश पा मिलने के लिए आये हुओं से बातचीत कर रहे थे कि प्रोफेसर आ पहुँचा। गरीबदास ने देखा तो कह दिया, "आइये प्रोफेसर साहब! बहुत दिन के बाद दर्शन हुए हैं।"

"महाराज! आप हम से दूर चले आये हैं। जिस दिन यहाँ आयें उस दिन दूसरा कोई काम नहीं हो सकता।"

"यह ठीक भी तो है। जिस दिन अध्यात्मवाद का वातावरण मस्तिष्क में बन जाये उस दिने सांसारिक बातों से छुट्टी रहनी ही चाहिए।"

"आप भी संसार और अध्यात्म को पृथक्–पृथक् समझते हैं?"

"मैंने इनको एक कभी माना नहीं। हाँ, दोनों में समन्वय हो सकता है। समन्वय होना चाहिए भी। इस समन्वय के बिना अन्य कोई चारा भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा सदा यह कहना है कि एक को छोड़कर दूसरे को अपनाने वाला घोर अन्धकार में पड़ता है। ईशवास्योपनिषद् में स्पष्ट लिखा है कि जो विद्या में ही रत रहते हैं वे भी नरक में जाते हैं। विद्या में रत रहने का अर्थ स्पष्ट है। जो ज्ञानवान तो हैं, परन्तु उस ज्ञान का उपयोग संसार में नहीं करते, वे विद्या में ही रत रहे माने जा सकते हैं।''

''तो क्या आत्मा परमात्मा का वास्तविक ज्ञान रखने वाला भी सांसारिक काम कर सकता है?''

''हाँ! निर्लिप्त भाव में यदि अकर्तापन भी आ जाए अर्थात् करने वाला समझने लगे कि वह कर भी नहीं रहा, तो फिर कर्म फल बाँधते भी नहीं।''

''महाराज! आज तो मैं आपसे अपने देश और समाज की वर्तमान स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त करने आया हूँ।''

''इस समय एक घंटा भर मुझे अवकाश है। आप पूछ सकते हैं यदि बात समाप्त न हुई तो माध्याह्नत्तर पुनः बैठ जायेंगे।''

''तो आपके कहने का अभिप्राय है कि मैं यहाँ ठहरूँ?''

''कुछ हानि है क्या? यहाँ हमारे साथ भोजन करिये। विश्राम करिये और फिर चर्चा होगी। रविवार के कारण आज विशेष समारोह होगा। उसको भी देखियेगा।''

सदाशिव ने पूछ लिया, ''क्या गांधीजी का यह सत्याग्रह आन्दोलन धर्मयुक्त है?''

''हाँ, इस आन्दोलन को मैं धर्मयुक्त मानता हूँ।''

''स्वराज्य प्राप्ति का उद्देश्य तो धर्मयुक्त है। मैं तो आन्दोलन की रूपरेखा, जो गांधी ने खींची है, इसके विषय में पूछ रहा हूँ?''

''अभी तो कुछ रूपरेखा निकली नहीं। गांधीजी अवज्ञा की बात कर रहे हैं। किस बात की अवज्ञा करेंगे? उन्होंने अभी बताया नहीं। उन्होंने आन्दोलन आरम्भ करने की बात कही है। यह तो उस दिन से, जब हमने स्वराज्य प्राप्ति अपना अधिकार घोषित किया है, चल रहा है।

''मैं आन्दोलन का अर्थ जन–चेतना समझता हूँ। यह तो निरन्तर उस दिन से हो रहा है, जब से सरकार ने यह बताया था कि अंग्रेजी राज्य भारत के लिए ईश्वरीय देन है। हम यह चेतना दे रहे हैं कि विदेशीय राज्य कभी भी कल्याणमय नहीं हो सकता। महर्षि स्वामी दयानन्द ने सन 1877 में ही यह कहना आरम्भ कर दिया था। वह चेतना धीरे–धीरे बल पकड़ रही है। बीच में सन 1886 में कांग्रेस बनने में इस चेतना को दबाने का यत्न किया गया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु यह दबा नहीं सकी। सन 1888 में ही तिलक प्रभृति नेताओं ने यह कहना आरम्भ कर दिया था कि विदेशीय सरकार देश का कल्याण नहीं कर सकती। इस घोषणा के पश्चात् कांग्रेस का प्रयास असफल होने लगा था। वह पूर्ण रूप से असफल हुआ 1916 में जब औपनिवेशिक स्वराज्य की घोषणा करने के लिए कांग्रेस बाध्य हो गई।

"अब गांधीजी इसी चेतना को और उग्र करने के लिए यत्न कर रहे हैं। यह रौलेट ऐक्ट तो एक बहाना–मात्र है। यह ऐक्ट लागू नहीं होना चाहिये, परन्तु यदि यह ऐक्ट न बनता तो क्या स्वराज्य प्राप्ति की चेतना विलुप्त हो जाती अथवा अनावश्यक हो जाती?

"सो मेरा तो यह कहना है कि गांधीजी का वर्तमान आंदोलन तो धर्मयुक्त ही है। हम तो इससे भी आगे जाना चाहते हैं। हम पूर्ण स्वराज्य चाहते हैं। फिर स्वराज्य के साथ सुराज्य चाहते हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि जो कुछ भी गांधीजी चाहते हैं वह अधर्म है। वह अधूरा तो है।"

"स्वामीजी महाराज! मैं तो सत्याग्रह की उस रूपरेखा के विषय में जो चम्पारण में, वार्दोली में अथवा मजदूरों की हड़ताल में प्रकट की गई थी, पूछ रहा हूँ।"

"उसके भी दो अंग रहे हैं। चम्पारण में बेदखलियों का विरोध था और वार्दोली में लगान में वृद्धि का विरोध था। किसानों ने कानून की अवज्ञा की। जिनके विरुद्ध कानून का कुठाराघात चल रहा था, उन्होंने ही इसकी अवज्ञा कर दंड सहन किया। आन्दोलन तो उन किसानों की कठिनाइयों को सर्व साधारण के ज्ञान में लाने के लिए था।

"सरकार राज्य तब ही कर सकती है, जब सर्व साधारण यह समझे कि राज्य न्याय का है। इस कारण सरकार आन्दोलन से डरती है और जब सरकार का दंड–चक्र किसानों पर चला और उसका अन्याय संगत होना जनता को पता चला तो सरकार ने डर कर समझौता कर लिया।

"परन्तु मजदूरों की बात भिन्न है। उसमें मजदूरों का वेतन वृद्धि के लिए आन्दोलन तो ठीक था। हड़ताल का अर्थ यह है कि जब वेतन कम है तो वहाँ काम बन्द। परन्तु यह बात यहाँ तक ही सीमित नहीं रही। हड़ताल करने वाले मजदूरों ने न तो अपने लिए अन्य स्थानों पर काम ढूँढ़ा, न ही मिलों में नये मजदूरों को काम करने दिया। यह तो धर्मानुकूल नहीं था।

"फिर एक और अवस्था उत्पन्न हो गई। मिल मालिक वेतन और मजदूरी की अन्य माँगों के विषय में कोई मध्यस्थ डालने के लिए तैयार नहीं थे। उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार करने के लिये गांधीजी ने भूख–हड़ताल कर दी। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि मिल मालिकों ने मध्यस्थ स्वीकार किये और मध्यस्थों ने मजदूरों के पक्ष में निर्णय दिया।

"यह परिणाम ठीक हुआ अथवा गलत, मैं नहीं जानता। परन्तु जिस ढंग से यह कराया गया, वह अधर्मयुक्त था। एक नेता द्वारा मरने का भय दिखा कर कोई अच्छी अथवा बुरी बात मनवानी अधर्मयुक्त है।

"परन्तु प्रोफेसर साहब! अभी तो ऐसी कोई बात नहीं की गई, न ही ऐसा क़िसी बात के करने की धमकी दी गई है। अभी तो आन्दोलन इस बात का है कि जनता में चेतना उत्पन्न की जाये कि विदेशीय राज्य अन्याय संगत है और उसका तत्कालीन उदाहरण रौलेट ऐक्ट है। यह सर्वथा धर्मयुक्त है।"

"परन्तु महाराज!" सदाशिव ने कहा, "इस आन्दोलन का निश्चित परिणाम यह होने वाला है कि सरकार और जनता में मुठभेड़ हो जाये। पहल कौन करेगा। जनता अथवा सरकार? विचारणीय नहीं कदाचित् निर्णय भी नहीं हो सकेगा। इस मुठभेड़ से सैकड़ों कदाचित् सहस्रों मारे जायेंगे। यह तो पाप हो जायेगा।"

"तब यह धर्म आन्दोलन का रूप धर्म युद्ध हो जायेगा और इसमें मरने वाले स्वर्ग को प्राप्त करेंगे।"

सदाशिव हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "महाराज! यह अधर्म हो जायेगा। यह स्वराज्य प्राप्ति तक नहीं ले जा सकेगा। जो मारे जायेंगे उनके आश्रित जीवन भर दुःख और क्लेश का भोग करेंगे। देश में वैसा ही आतंक छा जायेगा जैसा 1857 के विद्रोह के पश्चात् छा गया था और देश पिछड़ जायेगा।"

"देखो जी! जहाँ तक इस आन्दोलन का सम्बन्ध है, यह धर्मयुक्त है। जहाँ तक सरकार से मुठभेड़ हो जाने का भय है, यह स्वाभाविक है। जहाँ तक मरने–जीने का प्रश्न है, यह कर्म फल के अधीन है। युद्ध में और विशेष रूप में धर्म–युद्ध में मरने वाले स्वर्ग में जाते हैं। यह निर्विवाद है।

"शेष रहा स्वराज्य प्राप्ति। यह भी कर्माधीन है। यदि जनता में बहुसंख्यक इसके अधिकारी हो गये हैं तो स्वराज्य मिलेगा और यदि स्वराज्य से किसी कम बात के अधिकारी हैं, तो वह कम बात मिल जायेगी। बहुतों के परिवार वाले दुःखी होंगे तो पाप की भागी जनता होगी जो इनका दुःख निवारण नहीं करेगी। यदि असफलता से और सरकार की दण्ड नीति से आतंक फैल गया तो जनता की जीवन–मीमांसा अशुद्ध होने के कारण ही होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो आपने सिद्धान्त का बखान कर दिया, परन्तु मैं तो यह जानने आया हूँ कि देश की वर्तमान परिस्थिति में इन परिणामों से आप इस आन्दोलन को धर्मयुक्त मानते हैं? धर्म के परिणाम दूषित नहीं होने चाहिये।"

"मैंने तो सिद्धान्त के साथ वर्तमान परिस्थिति में दोष और श्रेय भी बाँट दिया है। अब सुनिये क्या होता मालूम हो रहा है। जनजागृति से अवस्था वह नहीं रही, जो 1857 के पश्चात् थी। राजनीतिक दृष्टि से जनता स्वराज्य की, भले ही वह सुराज्य न हो, अधिक इच्छुक है। अंग्रेजी राज्य की अच्छाइयों के प्रचार और प्रमाणों के दिखाई देने पर भी स्वराज्य की इच्छा व्यापक होती जाती है। इस कारण कहीं मुठभेड़ हो गई और कोई हत्याकाण्ड घट गया तो आतंक वैसा व्यापक नहीं होगा जैसा उस समय हुआ था।

"जनता और नेता राजनीतिक दृष्टि से आतंकित नहीं होंगे। अतः आन्दोलन अपने परिणाम उत्पन्न करेगा। यों तो 1857 का विद्रोह भी सफल हुआ था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का राज्य चला गया था। उसके स्थान पर विद्रोहियों का राज्य नहीं हुआ। वह इस कारण कि विद्रोही राज्य करने के योग्य नहीं थे। इस बार भी आन्दोलन सफल होगा। वर्तमान शासन बदलेगा, परन्तु कितना? जितने के हम योग्य हैं।"

"महाराज! यदि आन्दोलन न किया जाये तब भी तो शासन सुधार होने वाले हैं। व्यर्थ में जान जोखिम में डालने की आवश्यकता क्या है?"

"आन्दोलन, जैसा मैंने अभी बताया है न तो कांग्रेस ने आरम्भ किया है न गांधीजी ने। आन्दोलन वास्तव में हिन्दू रक्त में विद्यमान है। यह, जब–जब भी धर्म की ग्लानि होती है तब–तब ही हिन्दू रक्त में से प्रादुर्भूत होने लगता है। कभी यह राम का रूप धारण करता है कभी कृष्ण का। कभी राणा सांगा का और कभी प्रताप का। कभी शिवाजी का और कभी गुरु गोविन्द का। कभी स्वामी दयानन्द का और कभी श्यामजी कृष्ण वर्मा का। कभी वीर सावरकर का और कभी तिलक का, कभी अरविन्द और कभी पंडित मालवीयजी का। अब यह गांधीजी के रूप में प्रादुर्भूत हो रहा है। परन्तु कौन कितना सफल हुआ है और कितना सफल होगा, यह उसकी योग्यता अर्थात् उसमें ईश्वरीय शक्ति के संचार के अनुसार है और होगा।"

"इस विषय में मेरा आपसे मतभेद है।"

"वह कब और किस विषय में नहीं हुआ?"

"बात यह है कि आप सब बातों का ईश्वर, कर्मफल तथा आत्मा से सम्बन्ध कर देते हैं। इस कारण मैं आपकी युक्ति से सहमत नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा मैं भी अधिकतर वही परिणाम निकालता हूँ जो आप निकालते हैं।''

''इसका अर्थ यह हुआ कि मार्ग भिन्न–भिन्न होने पर भी हम एक जैसे परिणामों पर जा पहुँचते हैं।''

''जी। देखिये, मैं यह समझता हूँ कि गांधी जी एक अनभिज्ञ व्यक्ति हैं। उनको संसार की आर्थिक शक्तियों का ज्ञान नहीं है। इस कारण वे देश को उल्टे मार्ग पर ले जा रहे हैं। मेरा दृढ़ मत है कि आन्दोलन करने से देश की उन्नति नहीं होगी, उन्नति तो घोर तपस्या के फलस्वरूप ही हो सकती है। उस तपस्या के लिये हमको कॉलिज, स्कूलों में भरती हो जाना चाहिये। हमको अर्थशास्त्र, जो इस युग में सब कुछ अपने अधीन कर रहा है, का अध्ययन करना चाहिये।

''जिस दिन हम अर्थशास्त्र के रहस्यों को समझ जावेंगे, उसी दिन हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे।''

''यहाँ तक तो आपका कथन ठीक है कि हम को ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। परन्तु मैं इस बात से सहमत नहीं कि ज्ञान प्राप्त होते ही पके आम की भाँति स्वराज्य हमारे सामने आ गिरेगा। यह तो उपनिषद् में भी लिखा है कि ज्ञान से दग्ध कर्म ही सिद्धि प्राप्त करा सकता है। परन्तु न तो अकेला कर्म और न ही अकेला ज्ञान, सिद्धि दिलाने में समर्थ है। रही बात महात्मा जी की, कि वे ज्ञानविहीन हैं, मैं नहीं जानता। इस पर भी यदि कर्म ठीक हुआ तो उनमें ज्ञान की विद्यमानता माननी होगी।''

सदाशिव सदा की भाँति युक्ति और प्रमाण से निरुत्तर हो रहा था। यह तीस मार्च का दिन था। उस दिन के समाचार पत्रों में यह समाचार था कि गांधीजी ने आन्दोलन उद्घाटन का कार्य एक सप्ताह के लिये स्थगित कर दिया है।

इसका उल्लेख करते हुए सदाशिव ने कहा, ''महाराज! आज का समाचार पत्र पढ़ा है?''

''हाँ, पढ़ा है। आन्दोलन आरम्भ की तिथि 6 अप्रैल कर दी गई है।''

''क्या समझे हैं आप, इससे?''

''महात्मा जी अपने जादू के से प्रभाव पर आवश्यकता से अधिक विश्वास करने लगे हैं। यह कुछ अच्छे लक्षण नहीं हैं।''

''यह वकील, जन–जन के मन को नहीं जानता।'' प्रोफेसर का कहना था।

''मेरी शुभकामनाएँ गांधी जी के साथ हैं।'' गरीबदास ने कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाशिव सदानारायण को पुस्तकालय के एक कोने में बैठे स्वाध्याय करते देख उसके पास जा बैठा। सदानारायण ने पुस्तक बन्द कर दी और प्रोफेसर साहब का कुशल समाचार पूछने लगा। दोनों पूर्व परिचित थे।

"आजकल क्या हो रहा है?" प्रोफेसर ने पूछा।

"मैं भारतीय ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर खोज कर रहा हूँ। मैं अभी तक वर्तमान युग का सबसे बड़ा फ्रॉड (छलना) विकासवाद पर काम कर रहा था। विकासवाद को मैंने दो भागों में बाँटा है। एक विचार यह है कि सब जन्तु एक प्रकार के एक–कोषाणु (सिंगल सैल्युलर) प्राणी अमीबा से उत्पन्न हुए हैं। इस पर मैंने एक लेख लिखा है जो लगभग पाँच सौ पृष्ठों का है। इसमें दो सौ चित्र और दो सहस्र प्रमाण दिये हैं। उन सब से तो यही सिद्ध होता है कि एक जन्तु दूसरे प्रकार का जन्तु नहीं बन सकता। न ही कभी बनता देखा गया है।

"दूसरे भाग का सम्बन्ध इस विकासवाद के मनुष्य पर प्रयोग किये जाने से है। इस पर अब एक खोजपूर्ण पुस्तक लिख रहा हूँ। मेरा यह मत है कि यह कथन मिथ्या है कि मनुष्य में शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक विकास हुआ है।"

"तो तुम घड़ी की सुई पीछे को घुमाने में लगे हो।"

"यह पीछे और आगे का निर्णय करने ही तो बैठा हूँ। मुझको तो कुछ ऐसा अनुभव हुआ है कि आज के विद्वान घड़ी की सुई पीछे को घुमा रहे हैं। मैं इस निर्णय पर पहुँच सुई को उल्टी घुमाने लगा हूँ।"

: 7 :

सदानारायण दूसरे–तीसरे दिन दादर वाले मकान पर जाता रहता था और वहाँ का कुशल–समाचार लाता रहता था। एक दिन वह गया और समाचार लाया कि रत्नलाल दो दिन से घर नहीं आया। जाने से पहले वह अपनी माँ को एक पत्र दे गया है। पत्र अंग्रेजी में था। लेख ने साधना से पत्र पढ़वाया था। उसमें लिखा था कि वह लाहौर जा रहा है। छोटे भापा तथा नरेन्द्र इत्यादि से मिलने को चित्त कर आया है। उनको मिलकर कुछ दिन में लौट आयेगा।

ताईजी ने छोटे भापा को पत्र लिख दिया था। अभी तक उनका उत्तर नहीं आया। रत्नलाल 'प्राइवेट स्कूल ऑफ सायंसिज' नाम की एक संस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोले हुए था। उसने प्राइवेट रूप में उन विद्यार्थियों की सहायता के लिए यह स्कूल खोला था जो विज्ञान में 'प्राइवेट ट्यूशन' करना चाहते थे। इस समय भी बीस के लगभग विद्यार्थी इस स्कूल में उपस्थित थे। दस मैट्रिक की परीक्षा देने वाले थे और शेष दस एफ.ए. तथा बी.ए. के थे। सदानारायण इस स्कूल में भी गया। वह भी बन्द पड़ा था। सदा ने भी एक पत्र लाहौर लिख दिया।

रत्नलाल चार अप्रैल से घर नहीं आया था। पाँच तारीख को लेख ने पत्र लिखा था और 6 अप्रैल को सदानारायण ने पत्र लिखा था। सात तारीख को पंजाब से सब समाचार आने बन्द हो गए। समाचार–पत्रों में भी पंजाब के समाचार नहीं थे। विष्णुनारायण का कोई पत्र नहीं आया।

पाँच तारीख को सायंकाल गांधीजी पंजाब जाते हुए पलवल स्टेशन पर पकड़ लिए गए। उन्हें पंजाब गवर्नर की आज्ञा से पकड़ा गया था। सात तारीख को गांधीजी को बम्बई लाकर छोड़ दिया गया। बस यही समाचार था जो पंजाब के बाहर के हिन्दुस्तानियों को मिला। इससे यह अनुमान लगाया जा रहा था कि पंजाब में कोई उपद्रव हो गया है।

नौ अप्रैल को पंजाब के एक नेता का दिल्ली से वक्तव्य निकला कि अमृतसर और लाहौर में 6 अप्रैल के दिन विद्रोह हो गया है और उस विद्रोह को दबाने के लिए सरकार ने अनेक स्थानों पर गोली चलाई है। उसी दिन गांधीजी का यह वक्तव्य निकला, "मुझको यह जानकर बहुत दुःख हुआ है कि पंजाब के कई स्थानों पर रौलेट ऐक्ट के विरुद्ध आन्दोलन शान्तिमय नहीं रहा। मेरी सब से यही अपील है कि शान्त रहें। किसी पर आक्रमण करना इस आन्दोलन को हानि पहुँचाना है।"

सदानारायण ने गांधीजी का वक्तव्य स्वामी गरीबदास को सुनाया तो वे खिलखिला कर हँस पड़े। सदानारायण विचार कर रहा था कि रत्नलाल भी पंजाब में इसी आन्दोलन की लपेट में आ गया है। परन्तु वह स्वामीजी तथा ताई लेखवती को बता नहीं रहा था।

पन्द्रह तारीख को कलकत्ता से लाहौर के एक वकील गोवर्धनदास का वक्तव्य पूर्ण देश में प्रसारित किया गया। इसमें वकील महोदय ने पंजाब की उन सब घटनाओं का उल्लेख कर दिया जो पाँच तारीख से तेरह तारीख तक लाहौर और अमृतसर में घटीं। इस वक्तव्य में पूर्ण घटना का दोषारोपण पंजाब के गवर्नर सर माइकल ओ. ड्वायर के मत्थे लगाया गया। इस वक्तव्य के बाद सरकारी विज्ञप्ति निकली और उसमें लोगों के अशान्तिमय और विनाशात्मक कार्रवाइयों का उल्लेख किया गया और फिर सेना की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अशांतिमय विद्रोह को दबाने के लिए पंजाब के छः जिलों में मार्शल लॉ लगाने की घोषणा की गई।

इस पर धीरे–धीरे पंजाब से समाचार आने लगे। यह समाचार तो लगभग जुलाई के मध्य में मिला कि पंजाब में सेना ने सहस्त्रों शस्त्रहीन नागरिकों को बन्दूकों और बमों से भून डाला है। इस समय गांधीजी का यह वक्तव्य निकला, कि पंजाब के लोगों ने क्या किया और क्या नहीं किया यह निष्पक्ष जाँच का विषय है। परन्तु यह निर्विवाद है कि सरकार ने आवश्यकता से अधिक शक्ति का प्रयोग किया है और अगणित शस्त्रास्त्र विहीन लोगों को मौत के घाट उतार दिया है।''

तत्पश्चात् मार्शल लॉ के मुकदमे की घोषणा की गई और गांधीजी तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं ने इस मुकदमे की पैरवी के लिए देश के चोटी के वकीलों का एक आयोग लाहौर भेज दिया। प्रथम मुकदमे में पंजाब के चोटी के नेता थे। इनमें लाला हरकृष्णलाल, डॉ. गोकुलचन्द नारंग, लाला दुनीचन्द बैरिस्टर के नाम उल्लेखनीय हैं।

सरकारी पक्ष की बात निराधार, प्रमाण–रहित, होने पर भी सैनिक अधिकारियों ने सब–के–सब कैदियों को अपराधी माना और उनको आजन्म कैद का दंड दे दिया। मुकदमे की पूर्ण कार्रवाई समाचार–पत्रों में छपी तो विलायत के कट्टर भारत–विरोधी टोर, अंग्रेज भी दाँतों तले उँगलियाँ दबाने लगे।

सितम्बर के महीने में सरकार ने अपनी नीति बदली। सर माइकल ओ. ड्वायर अपना पूर्ण समय बिताकर गवर्नर पद से रिटायर हुआ और उसके स्थान पर नया गवर्नर आया। उसके प्रयत्न पर अथवा विलायत की पार्लियामेंट में आन्दोलन के परिणामस्वरूप सब मार्शल लॉ के बन्दी, जिनको मृत्यु दंड नहीं हुआ था, छोड़ दिये गए। जिनको मृत्युदण्ड हुआ था, उनको आजन्म कारावास का दंड हो गया। धीरे–धीरे मार्शल लॉ ढीला किया जाने लगा और मार्शल लॉ के कारणों और इसके कार्य करने की गतिविधि की जाँच करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई। एक अंग्रेज जज हंटर इसका अध्यक्ष नियुक्त हुआ। 'हंटर कमेटी' में पहले तो कांग्रेस ने सहायता करने का विचार प्रकट किया, परन्तु जब सरकारी अफसरों पर कांग्रेस को जिरह करने की स्वीकृति नहीं दी गई तो कांग्रेस ने अपनी अलग जाँच–कमेटी नियुक्त कर दी।

इस समय तक अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन हो चुका था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे और प्रधान थे पंडित मोतीलाल नेहरू। अप्रैल से नवम्बर के भीतर ही देश ने मार्शल लॉ के आघात को सहन कर इससे उत्पन्न आतंक को मनों से उतार पुनः स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन पर विचार करना आरम्भ कर दिया।

अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में यह निर्णय हुआ कि नवीन शासन–सुधारों का प्रयोग किया जायेगा और उनसे देश का हित साधन किया जायेगा। श्री बालगंगाधर तिलक यह चाहते थे कि इन सुधारों में, सरकार को उतना ही सहयोग दिया जाय, जितना सरकार जनता के सहयोग की इच्छुक है। इसके लिए अंग्रेजी का एक शब्द विचार किया गया, 'रिसपौन्सिव को–ऑपरेशन'। परन्तु यह स्वीकार नहीं हो सका। गांधीजी के मत का स्वागत हुआ। वह मत इंग्लैंड तथा हिन्द के सम्राट् का धन्यवाद कर इस सुधार के स्वागत के पक्ष में था।

अमृतसर कांग्रेस के अधिवेशन पर सेठ देसाई और स्वामी गरीबदास भी गये हुए थे। इस बार सदानारायण और लाहौर से श्यामनारायण भी आये हुए थे।

श्यामनारायण ने इन सबके लिए अमृतसर में एक मकान भाड़े पर ले रखा था। दिन–भर ये लोग कांग्रेस के जलसे–जलूस देखते थे और रात को मकान में इकट्ठे रहते थे। प्रायः सब बड़े–बड़े नेता, महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, मौलाना मुहम्मदअली और शौकतअली, बंगाली नेता श्री सी.आर. दास आदि के जलूस निकाले गये।

मौलाना मुहम्मदअली और शौकतअली भी जेल से छूट कर आये थे। ये मुसलमानों को तुर्की के खिलाफ युद्ध के लिए भरती होने से मना करने के कारण पकड़े गये थे। देसाई और स्वामी गरीबदास कुछ बड़े–बड़े नेताओं से मिलते भी रहे।

एक दिन सदानारायण आया और बोला, "भापा! रत्नलाल कांग्रेस पंडाल में बैठा दिखाई दिया है। वह 'प्रेस गैलरी' में था और वहाँ बैठा गांधीजी के व्याख्यान की रिपोर्ट ले रहा था। मैं दर्शकों में था। मैंने उसे देखा तो समाचार–पत्रों के सम्वाददाताओं के कक्ष में चला गया। परन्तु मेरे जाने से पहले गांधीजी का व्याख्यान समाप्त हो चुका था और बहुत से सम्वाददाता उठ कर जा चुके थे। वह भी अपने स्थान पर नहीं था। मैं अधिवेशन समाप्त होने तक उसकी प्रतीक्षा करता रहा। किन्तु वह फिर दिखाई नहीं दिया।"

"अच्छा, उससे मिलो तो पूछना कि वह घर वालों से क्यों छिपा हुआ है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन सदानारायण और श्यामनारायण प्रेस गैलरी का चक्कर काटने लगे। ग्यारह बजे रत्नलाल आया। वह बंगाली फैशन का कुरता, धोती, सिर से नंगा और पाँव में स्लीपर पहने हुए था। श्याम ने उसे देखा तो सामने जा खड़ा हुआ। रत्नलाल हँस पड़ा, ''तो भैया! देख लिया है मुझको?''

''देख ही नहीं लिया, भागे हुए पट्ठे को पकड़ लिया है। क्या कर रहे हो यहाँ?''

''एक समाचार–पत्र का 'कौरस्पौंडेन्ट' हूँ।''

''किस पत्र के?''

''लाहौर के 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' का।''

''कल सदा ने तुमको देखा था, परन्तु उसके इस कक्ष में आने से पूर्व तुम लापता हो गये थे।''

''किस समय की बात है?''

''जब गांधीजी व्याख्यान दे रहे थे।''

''मेरी ड्यूटी समाप्त हो गई थी। मैं यहाँ से निकल, भाग कर गाड़ी पकड़ने चला गया था। लाहौर जाकर रिपोर्ट देनी थी, जिससे कि वह आज छप सके।''

''यह नौकरी कैसे मिल गई तुम्हें और फिर घर बताकर क्यों नहीं आये?''

''भैया! यह तो आराम से बैठ कर बताऊँगा। मैंने आप सब को देखा है, परन्तु मेरी इच्छा थी कि अधिवेशन के अन्तिम दिन आप से मिलूँ। आजकल तो भाग–दौड़ रहती है। मैं दस बजे के लगभग लाहौर से चलता हूँ। ग्यारह बजे यहाँ पहुँच सीधा पंडाल में आ जाता हूँ। चार बजे की गाड़ी से मुझको लाहौर जाना होता है। इस कारण समय नहीं मिल रहा था।''

''भापाजी यहाँ से लाहौर चलेंगे। वहाँ तो मिलोगे?''

''हाँ, अब पकड़ा गया हूँ तो मिलूँगा ही।''

इस पर भी अगले दिन रत्नलाल भापाजी से मिलने उस घर में आया जिसमें ये सब लोग ठहरे हुए थे। गरीबदास ने रत्नलाल को देखा तो हँस पड़ा।

रत्नलाल ने चरण–स्पर्श कर अपनी सफाई प्रस्तुत करते हुए कहा, ''भापा जी! मैं तो निर्मलचन्द्रजी के साथ पंजाब में बलवा कराने के विचार से आया था। उनको किसी ने बताया था कि गांधीजी ने पंजाब में आने का कार्यक्रम बनाया हुआ है और पंजाब के गवर्नर उनको पंजाब में घुसने नहीं देंगे। गांधीजी पकड़े जायेंगे। निर्मल जी का विचार था कि उस समय हम बलवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करवा सकते हैं। मेरी ड्यूटी गुजराँवाला में लगी। मैं वहाँ अकेला था। छः अप्रैल को मैंने सार्वजनिक सभा में भाषण दिया और लोगों को भड़का दिया। दुर्भाग्य से गांधीजी के पकड़े जाने का समाचार गुजराँवाला में अगले दिन पहुँचा। यदि मीटिंग के समय समाचार आ गया होता तो बहुत भारी विद्रोह हो जाता। अगले दिन समाचार आने के कारण हमारी पूर्ण शक्ति हड़ताल करवाने में लग गई। तत्पश्चात् गांधीजी छूट गये और हम जो यह बलवा कराने पर तुले हुए थे, गांधीजी के छूट जाने पर अपने काम में उग्रता नहीं ला सके। यद्यपि तार तो मेरे पास भी आया था। मैंने उसको छिपा रखा था। हड़ताल तो रही परन्तु अंग्रेजों पर हमला नहीं कराया जा सका। तेरह तारीख को मार्शल लॉ लगा दिया गया। मेरे वारंट निकल गए और मैं वहाँ से भाग खड़ा हुआ। मैं लाहौर पहुँचा तो वहाँ भी मार्शल लॉ लगा हुआ था। लाहौर में छिपकर एक सप्ताह पड़ा रहा। एक दिन निर्मलचन्द्रजी आये और मुझको कहने लगे कि मैं एक लेख लिखूँ जिसमें अंग्रेजी सरकार के दृष्टिकोण से मार्शल लॉ की आवश्यकता प्रकट करूँ। मैंने लिखा तो वह लेख लेकर चला गया। दूसरे दिन वह आया और मुझको बंगाली ढंग के कपड़े पहनाकर इस समाचार–पत्र के कार्यालय में ले गया। मेरी एक अंग्रेज से भेंट हुई। उसने मुझसे अनेक प्रश्न पूछे और मैंने सुव्यवस्थित भाषा में उत्तर दिये।

"वह अंग्रेज, मिस्टर डब्ल्यू वाटसन एम.ए. कैन्टव है। बहुत ही सुलझे दिमाग का आदमी है और 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' का ऐडीटर है। उसने मेरे लेख और मेरे साथ प्रश्नोत्तर से प्रभावित हो मुझ को एक सौ रुपया मासिक वेतन और प्रत्येक छपे लेख पर पचास रुपये पारिश्रमिक देने का वचन दिया है और मैं नौकर हो गया हूँ।

"मेरा नकली नाम सतीश घोष रख दिया गया है और मेरा एक बंगाली महाशय, जो उसी पत्र के कार्यालय में हैड क्लर्क है, के घर में रहने का प्रबन्ध कर दिया गया है। यह सब प्रबन्ध निर्मलचन्द्रजी ने कर दिया और मैं वहाँ भेष तथा नाम बदल कर रहता हूँ। इस प्रकार आठ महीने हो गये हैं। मेरा बैंक बैलेंस पाँच सहस्र हो चुका है। मुझको बाबू सन्तोष चटर्जी के घर में रहते हुए केवल तीस रुपया मासिक देना पड़ता है। बीस रुपया भोजन का और दस रुपया कमरे का किराया। बीस रुपये के लगभग ऊपर का खर्चा होता है। समाचार–पत्र की ओर से लाहौर से बाहर जाता हूँ तो सैकण्ड क्लास का रेल भाड़ा और दस रुपये नित्य भत्ता मिलता है।

"मैं हिन्दुस्तान के विषय में लेख लिखता हूँ। कभी–कभी प्राचीन हिन्दुस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के गौरव पर भी। एक लेख कालिदास की विभूतियों पर लिखा तो वह लन्दन की ओरिएन्टल मैगजीन में भी छप गया। मिस्टर वाटसन ने स्वयं ही वहाँ भेजा था। एक सौ पौंड उसका पारिश्रमिक मिला है। इस प्रकार बहुत मजे में रहते हुए भी इतना रुपया एकत्रित कर लिया है। मेरा कई भाषाओं का ज्ञान मेरी सहायता कर रहा है।

"केवल निर्मलचन्द्र जी और सन्तोष चटर्जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता कि मैं पंजाबी हूँ। चटर्जी के घर के सब लोग जानते थे कि मैं बंगाली युवक हूँ। उनका विचार है कि मैं भागलपुर में पला हूँ। इस कारण मेरे उच्चारण में विकृति आ गई है। आज मैंने अपने पंजाबी माता–पिता का पुत्र होने की बात उस परिवार के एक अन्य प्राणी को बताई है। मैं समझता हूँ कि अब यह बात उस परिवार को पता चल जायेगी और कदाचित् मुझे नौकरी से छुट्टी मिल जायेगी। मैंने यह निर्णय कर लिया है कि मैं अपने पंजाबी होने की बात अपने ऐडीटर को भी बता दूँ। इस निर्णय के करने में आप से और माता जी से मिलने की प्रबल इच्छा का हाथ है।"

"और चटर्जी के घर का वह प्राणी जिसको तुमने अपना रहस्य बताया है, एक लड़की है?"

रत्नलाल ने रक्त मुख और झुकी आँखों से कहा, "जी। वह है अमला चटर्जी।"

"तो तुम एक अन्य बंगाली लड़की हमारे घर में लाने का विचार करते हो?"

"हाँ भापा जी! विचार है कि भाभी सुचेता को बंगला में बातें करने के लिये घर में ही एक साथी मिल जायेगा। एक दिन वे कहती थीं कि जब कई दिन तक उनको बंगला में बात करने का अवसर नहीं मिलता तो उनका मुख पीड़ा अनुभव करने लगता है।"

"ओह! तो सुचेता पर दया आ गई है?"

"जी नहीं। मैं विवाह तो अपने ही लिये कर रहा हूँ। यह तो एक अतिरिक्त लाभ प्रतीत हुआ है।"

"अब तुम्हारा क्या कार्यक्रम है?"

"मैं रात आठ बजे की गाड़ी से जाऊँगा। मैंने अपना 'न्यूज डिस्पैच' एक अन्य व्यक्ति के हाथ भेज दिया है। इस पर भी कल प्रातःकाल मुझ को ड्यूटी पर पहुँचना है।"

"अच्छा ऐसा करो, कल अपने अफसर को अपना परिचय दे देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्रान्तिकारी होने की बात बताने की आवश्यकता नहीं। इस पर भी भेष और नाम बदलने का कुछ कारण तो बताना ही होगा। कुछ बहाना बना देना। यदि नौकरी छूटती है तो बम्बई चले आना। स्वयं नौकरी मत छोड़ना। परन्तु रत्नलाल! तुम इतनी उच्च शिक्षा पाकर चारण का काम कर रहे हो। एक अंग्रेज की नौकरी करने का यह अर्थ नहीं कि उनकी मिथ्या प्रशंसा करते रहो अथवा हिन्दुस्तानियों की, सत्य भी क्यों न हो, निन्दा करते रहो। वे, हमारी घर की बात, जो अप्रशंसात्मक है, सुनने का अधिकार नहीं रखते।''

''भापा! मैं अपने लेखों की फाइल सदा भैया को दिखाऊँगा। आप उनसे सुनियेगा। यदि कुछ अनुचित, अनजाने में भी, लिखा गया होगा तो मैं उसका संशोधन किसी आगामी लेख में कर दूँगा।

''मिस्टर वाटसन इतना तो जानता है कि मैं स्वाभिमानी हिन्दुस्तानी हूँ और वह मेरी भावनाओं का आदर करता है। समाचार–पत्र के कार्यालय में मैं घोष के नाम से विख्यात हूँ। छोटे भापा के मकान के साथ ही एक सोमनाथ रहते हैं। उनका सबसे छोटा लड़का मदन गोपाल हमारे कार्यालय में काम करता है। उसके भय से मैं छोटे भापा को मिलने नहीं गया। मार्शल लॉ के दिनों में यह लुकाव–छिपाव अत्यावश्यक था। अब मैं धीरे–धीरे अपना परिचय मदन गोपाल को भी दे दूँगा। मेरा गुप्तवास समाप्त हो गया है।''

''तो ऐसा करना, हम परसों लाहौर आयेंगे। श्याम के घर में सेठ जी ठहरेंगे और विष्णु के घर में सदा वगैरह ठहरेंगे। मैं सुथरों की धर्मशाला में ठहरूँगा। हमको वहाँ मिलना। हमारा तीन दिन तक वहाँ रहने का विचार है। तब तक तुम अपने विषय में बताना। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम बम्बई में काम करोगे।''

''और भापा! मेरा विवाह यहाँ होगा अथवा नहीं?''

''हो सकता है, परन्तु अभी बाधाएँ हैं।''

''क्या?''

''सबसे बड़ी बाधा तो जाति की है। दूसरी प्रान्तीयता की है और तीसरी रुपये–पैसे की है। अभी तो तुम्हारी नौकरी भी संदिग्ध ही है।''

: 8 :

सदा नारायण ने अमृतसर से लाहौर जाते हुए रेलगाड़ी के फर्स्ट–क्लास के डब्बे में बैठे हुए अपने मन पर कांग्रेस के अधिवेशन के प्रभाव का वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए कहा, "भापा जी! एक बात का श्रेय तो गांधी जी को देना ही होगा। वह यह कि जलियाँवाले बाग जैसा भयंकर कांड होने के बाद भी लोग त्रसित अथवा आतंकित नहीं हैं। कुछ अल्पकाल के लिये वे भयभीत रहे प्रतीत होते हैं परन्तु इस अधिवेशन के होने तक तो वह आतंक निर्मूल हो चुका था। लाखों रुपये तो चन्दा एकत्रित हुआ है। सहस्रों स्वयं सेवक कार्य करने वाले उपस्थित ही गये हैं। परन्तु इस सब निर्भीकता के पीछे एक दूषित वातावरण बन रहा है। वह इन मौलानाओं का गांधी जी के साथ घुसे रहने के कारण है। हिन्दू यह अनुभव कर रहे हैं कि उनकी वर्तमान उन्नति, विशेष रूप में नये सुधारों का मिलना हिन्दू–मुसलमान ऐक्य के कारण ही है और मुसलमान यह अनुभव करने लगे हैं कि उनके सहयोग के बिना हिन्दू एक पग नहीं चल सकते।"

इस पर देसाई कहने लगा, "मैं तिलकजी से मिला था। उन्होंने भी इस परिस्थिति पर चिन्ता व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था कि भावनाओं का सागर उमड़ रहा है और नेतागण तिनकों के समान विवश एक दिशा में बहते चले जा रहे हैं। यह प्रवाह उनके बस में क्या होगा, वे तो स्वयं भी अपने बस में नहीं रहे!"

"मैंने पूछा कि वे मौलाना भाइयों से मिले हैं? तो वे बोले कि हाँ उनमें बातचीत हुई है। वे अच्छे आदमी नहीं हैं। वे कहते हैं कि हम एक नवीन तहजीब की ड्योढ़ी पर खड़े हैं। यह हिन्दू–मुसलमान मित्रता एक नवीन संयुक्त सभ्यता (कम्पोजिट सिविलाइजेशन) का निर्माण कर रही है।

"वे कहने लगे कि एक अन्य मौलाना, जिसका वे नाम नहीं जानते, कहने लगा कि एक–आध हिन्दू लड़की से तो वह भी विवाह करना पसन्द करेगा। तिलकजी का कहना था कि यह मित्रता चल नहीं सकती।

"खिलाफत के विषय में जब मैंने उनका विचार जानना चाहा तो तिलक जी कहने लगे कि गाधीजी ने बल देकर यह बात चला दी है। यद्यपि कोई नहीं चाहता था कि भारत की राजनीति में यह विदेश–नीति का प्रश्न मिला दिया जाये, परन्तु गांधीजी की बात का विरोध करना किसी के बस की बात नहीं थी। तिलकजी ने एक बात कही थी, कि दूसरे देश के विषय में कांग्रेस के प्लेटफार्म पर बात करनी उचित नहीं होगी। परन्तु गांधीजी ने कह दिया यह अपने देश के छः करोड़ नागरिकों की बात है। इस पर उन्होंने पूछा कि क्या ये छः करोड़ वहाँ की राजनीति का मार्गदर्शन कर सकेंगे? तो गांधीजी कहने लगे कि यह देखना उनका काम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर पंडित मोतीलालजी बोले कि हमारे 'युनाइटेड फ्रन्ट' के लिये यह आवश्यक है। इस पर तिलकजी की धारणा थी कि जब वर्किंग कमेटी में यह बात है तो खुले अधिवेशन में तो कोई विचार की बात कर ही नहीं सकता।

अपने मन की धारणा बताते हुए स्वामी गरीबदास ने कहा, "जो आशायें गांधीजी से मेरे मन में उत्पन्न हुई थीं, वे अब विलीन होती जाती हैं। यह महापुरुष अपने मन में अनेक दुर्बलताएँ रखता है। वे दुर्बलताएँ सामयिक नीति तक ही सीमित नहीं, प्रत्युत वे सिद्धान्तों में भी परिवर्तन कर देती हैं।"

"पंडित मोतीलाल योग्य व्यक्ति प्रतीत होते हैं परन्तु वे संस्कारों से मिश्रित–सभ्यता के उपासक ही हैं।" देसाई का कहना था।

"सेठ साहब!" गरीबदास ने कहा, "मिश्रित–सभ्यता तो विचार की जा सकती है, परन्तु इसका अर्थ यह कहाँ से हो गया कि हम मस्जिदों में जाकर कुरान पर वाज सुना करें और हजरत वलीउलइस्लाम का सजदा किया करें? और खलीफा को, जो हमसे किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं रखता, अपने देश में प्रतिष्ठित कर दें?"

लाहौर में देसाई श्यामनारायण के घर में ठहरा। सदानारायण अपने माता–पिता के पास चला गया और गरीबदास मस्ती दरवाजे के बाहर सुथरों की धर्मशाला में जाकर ठहर गया। इस पर भी सब कूँचा हिंगना में एकत्रित होने लगे थे।

रामरक्खामल्ल को पुनः गरीबदास बना देख सब मुहल्ले के लोग और अन्य परिचित भी मिलने के लिए आने लगे थे। वकील फकीरचन्द मिला तो कहने लगा, "भापा! पुनः साधु हो गये हैं?"

"हाँ भैया! अब अवस्था भी तो इसी के योग्य है।"

"परन्तु देखने में तो वैसे ही प्रतीत होते हो, जैसे आज से तेरह वर्ष पूर्व थे?"

"वैसे तो मैं उसी अवस्था में अभी चालीस वर्ष तक और रहने की आशा करता हूँ?"

"भापा, कितनी आयु होगी अब?"

"कुछ ही महीनों में इक्यासी वर्ष की हो जाएगी। मैं अभी भी दस मील बिना थकान के चल सकता हूँ।"

"मुझको तो डायबिटीज हो गई है। मेरे लिए तो सीढ़ियाँ चढ़नी भी कठिन हो गई हैं। मैं अब मकान की बैठक में ही सोता हूँ।"

"फकीरचन्द! यह धन्धा छोड़–छाड़ मेरे आश्रम में आ जाओ। दो वर्ष में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस रोग से मुक्ति दिलवा दूँगा।''

''मोहन की माँ घर से बाहर जाने नहीं देती।''

''क्यों?''

''उसको लगा रहता है कि किसी समय भी मैं आँखें बन्द न कर लूँ।''

''और यदि यहाँ बन्द हो गयीं तो वह तुमको पकड़ लेगी?''

फकीरचन्द मुस्कराया और चुप रहा। बात बदल गयी। फकीरचन्द ने कहा, ''महानारायण के लड़के नरेन्द्र ने मुझको अपने पिता के नाम नोटिस देने को कहा है।''

''अच्छा? क्या नोटिस है?''

''यही कि उसका बाबा चौधरी विष्णुनारायण बहुत वृद्ध हो गया है और दुकान का काम सम्हाल नहीं सकता और उसका पिता महानारायरण सर्वथा अनपढ़ है। इस कारण बाप–बेटा दोनों मिलकर पारिवारिक सम्पत्ति नष्ट कर रहे हैं। अतः जायदाद का तुरन्त बँटवारा हो जाना चाहिए। यदि यह एक महीने के भीतर न किया गया तो अदालत में जायदाद पर रिसीवर बैठाने का प्रार्थन–पत्र दे दिया जायेगा।''

''और तुम विष्णुनारायरण को यह नोटिस देने वाले हो?''

''विष्णुनारायरण, महानारायण, श्यामनारायण, सदानारायण, जवाहरलाल और रत्नलाल को।''

''तुमने विष्णुनारायरण को इसकी सूचना दी है?''

''यह हमारे पेशे की आचार–संहिता के विपरीत है।''

गरीबदास विस्मय में फकीरचन्द का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर पूछने लगा, ''उसने तुमको कुछ फीस भी दी है?''

''हाँ, एक सौ रुपया।''

गरीबदास विचार करता था कि शर्करा रोग के कारण इसका मस्तिष्क दुर्बल हो गया है। वह उस समय की बात स्मरण कर रहा था जब सोमनाथ ने इसको रामरक्खामल्ल पर मूठा मुकदमा करने का विचार प्रकट किया था। तब इसने पूर्ण स्थिति विपक्षी रामरक्खामल्ल को बता दी थी। तब फकीरचन्द कुछ अधिक धनी भी नहीं था। आज तो वह गली में आते हुए देख आया था कि उसने शानदार मकान बनवा लिया है। वैसे भी वह रूप–रंग से अब सम्पन्न प्रतीत होता था।

गरीबदास को आया जान श्याम, कला, मधु, सदानारायण, विष्णुनारायण, महानारायण, सुमित्रा, सतवन्ती, मोहिनी, नरेन्द्र, भपेन्द्र परिवार के सब सदस्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एकत्रित हो गये थे।

मध्याह्नोत्तर भोजनोपरान्त सब बैठे थे कि गरीबदास ने बात आरम्भ कर दी। उसने विष्णुनारायरण से पूछ लिया, ''भैया! कितनी आयु हो गई है तुम्हारी?''

''भापा! त्रेसठ वर्ष का हो चुका हूँ।'

''तुम्हारा पोता कह रहा है कि तुमको अब संन्यास ले लेना चाहिए।''

''कौन पोता कह रहा है?''

''नरेन्द्र का विचार है कि परिवार की सम्पत्ति तुम्हारे हाथ में सुरक्षित नहीं है।''

''सत्य? यह उसने तुमको कहा है?''

''मुझको कहा तो नहीं। परन्तु यह उसके मन में है।''

''क्यों नरेन्द्र! बड़े भापा ठीक कहते हैं क्या?''

नरेन्द्र पीत मुख चुप बैठा था।

''क्यों नरेन्द्र! आजकल क्या करते हो?'' गरीबदास ने पूछ लिया।

महानारायण ने इसका उत्तर देते हुए कहा, ''पिछले वर्ष यह बी. ए. में फेल हुआ है और इसने अनारकली बाजार में विलायत से माल मँगवाने की एक एजेन्सी खोल रखी है। पेंसिलें, चाकू, छुरी, काँटे और इसी प्रकार का सामान मँगवाता है। भापा ने दस हजार रुपया काम के लिए दिया था। एक वर्ष हो गया है, घर पर एक पैसा नहीं दिया और अब यह रात को दुकान पर ही रहता है। दुकान एक बैठक पर है। एक गोदाम चंघर मुहल्ले में लिया हुआ है।''

''कैसा काम है नरेन्द्र?'' गरीबदास ने पुनः पूछा।

''भापा!'' भूपेन्द्र बीच में बोल उठा, ''बैठक पर जुआ होता है और यह अपना, कमीशन निकालता है।''

''और तुम क्या करते हो?''

''मैं अगले वर्ष बी.ए. की परीक्षा दूँगा।''

''क्या विषय लिये हैं?''

''अर्थशास्त्र और इतिहास।''

''किस कॉलेज में पढ़ते हो?''

''फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में।''

''फिर क्या करोगे?''

''एम.ए. तक पढ़ने का विचार तो है ही।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो नरेन्द्र!" गरीबदास ने कह दिया, "जब तक तुम्हारा पिता जीता है तुम परिवार में बँटवारे के विषय में कुछ कह नहीं सकते।"

"मेरे वकील ने कहा है कि संयुक्त परिवार में बच्चा पैदा होते ही भागीदार बन जाता है।"

"ठीक है, परन्तु अपने पिता के द्वारा।"

"पिता अगर निखट्टू हो तो भी?"

"परन्तु महानारायण तो निखट्टू नहीं है?"

"कैसे कहते हैं? बड़े भापा! वे निरक्षर भट्टाचार्य, क्या कमा सकते हैं?"

"और तुम क्या कमाते हो?"

"मैंने पिताजी से दस हजार रुपया लेकर बैठक सजा ली है। प्रत्यक्ष रूप में तो इम्पोर्ट का काम करता हूँ। वह काम तो अच्छा है। तीस–प्रतिशत तक लाभ दे जाता है। परन्तु उसकी माँग इतनी कम है कि बहुत मुश्किल से डेढ़ दो सौ रुपया महीना बनता है।

"इस कारण इसकी पूरक आय के लिए उसी बैठक पर सायंकाल जुआ होता है। इससे औसत आय दो से तीन सहस्र रुपया मासिक हो जाती है। इसमें से एक सहस्र नियम से पुलिस को देना पड़ता है।"

"इस पर भी तुम बँटवारा चाहते हो?"

"हाँ भापा! पिछले मास तीन दिसम्बर को मैंने भापाजी से कहा था कि बँटवारा हो जाये। एक ओर मैं हजार–दो हजार की प्राप्ति कर लेता हूँ। और दूसरी ओर दुकान वर्ष–भर में दस–पन्द्रह हजार रुपया पैदा करती है। मेरी दुकान में दो हजार की पूँजी लगी है और इस दुकान में एक लाख रुपये से ऊपर लगा है।"

"तुम यह काम कब से कर रहे हो?"

"चार–पाँच महीने हुए हैं।"

"पहले कहाँ से खाते थे?"

"भापा! सब बड़ों से लेकर खाते हैं। मैंने खाया है तो कौन–सी अनहोनी बात की है?"

"और सब बड़ों पर दावे भी करते हैं क्या?"

"तो यह फकीरचन्द ने बताया है आपको?"

"कौन फकीरचन्द?"

"वही वकील का बच्चा फकीरचन्द। वह अब चीफ कोर्ट में प्रैक्टिस करने लगा है और समझने लगा है कि बहुत बड़ा आदमी हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उसको नहीं जानता। मैं एक बात जानता हूँ कि तुम आवारा हो गए हो। पाँच वर्ष हुए मैं आया था और तुमको हीरामंडी में मुजरा सुनने के लिए जाने से मना कर गया था। तुम माने नहीं। अब तुम जुआरी, शराबी और वेश्यागामी हो गये हो। अपने बाप–दादे की गाढ़े पसीने की कमाई तुम इन व्यसनों में नष्ट करना चाहते हो।"

"किसी ने आपको गलत बताया है भापा! मैं जुआरी नहीं हूँ। जुआ दूसरे खेलते हैं। मैं तो केवल कमीशन लेता हूँ। मद्य तो भैया श्यामनारायण भी पीते हैं और वे वेश्यागामी भी हैं। इस प्रकार मैं किसी से भी, किसी भी काम में अधिक नहीं हूँ। अब मधु की बात ही देख लो। वह ईसाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाता है और वहाँ की एक अध्यापिका के साथ रहता है।"

"बिना विवाह के?"

"यह तो वह बतायेगा कि उसने कब विवाह किया है। कम–से–कम मुझको तो उसके विवाह पर जाने का निमन्त्रण नहीं मिला।"

"भापा!" मधु ने कह दिया, "लिल्ली का विवाह हो चुका है परन्तु उसका घरवाला विलायत चला गया है। वह अपने साथ एक अन्य लड़की को ले गया है। विवाह टूट नहीं सकता। वे कैथोलिक हैं। इस कारण वह मेरे साथ रहती है।"

गरीबदास घर में यह सब परिवर्तन देख चकित रह गया। उसने कुछ विचार कर कह दिया, "आज तुम सब एकत्रित हो। मेरा कहा सुन लो। तुम नये विचार के लोग अधर्मयुक्त आचरण करने लगे हो। इससे सब पृथक्–पृथक् हो जाओ। नहीं तो घर में मुकदमेबाजी आरम्भ होने वाली है, जो सब को बरबाद करके रख देगी।"

"कौन मुकदमा कर रहा है?" श्याम का प्रश्न था।

"तुम नहीं श्याम! यह तो नरेन्द्र और मधु करेंगे।"

"नहीं भापा! मैं मुकदमों में विश्वास नहीं रखता।" मधु ने तुरन्त कह दिया।

"तुम किस बात में विश्वास रखते हो?"

"भापा! मुझको डेढ़ सौ रुपया वेतन मिलता है। लिल्ली को दो सौ रुपया। इस पर भी हमारा निर्वाह नहीं होता। हम प्रतिमास कुछ–न–कुछ ऋण लेकर निर्वाह करते हैं। प्रतिवर्ष हमको ऋण चुकता करना होता है। तब मैं डैडी से अथवा माताजी से माँग लेता हूँ। यदि ये नहीं देते तो चोरी कर लेता हूँ। माँ को दिखाई तो देता नहीं। उसके पास हो तो चुरा लेता हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैडी के पास हो तो डाका डाल लेता हूँ। वैसे कभी मेरे पास भी होते हैं तो डैडी के पास रख जाता हूँ।''

''तुम्हारे पास कहाँ से आते हैं?''

''क्लब में कभी हाथ चल जाता है तो अनायास ही हजार–दो हजार इकट्ठा हो जाता–है।''

''तो तुम भी जुआ खेलते हो?''

''डैडी भी तो खेलते हैं।''

''देखो विष्णु! बरबादी से बचना चाहते हो तो बँटवारा कर दो।''

''तो भापा! तुम करवा जाओ। क्यों महानारायण! क्या कहते हो?'' श्याम ने कह दिया।

''बड़े भापा ठीक कहते हैं। मैं समझता हूँ कि मैं नरेन्द्र के साथ तो रह सकता ही नहीं।''

''क्यों श्याम! क्या कहते हो?''

''मैं भापाजी की सम्पत्ति में अपना भाग नहीं समझता। इसलिए मैं कोई सम्मति नहीं देना चाहता।''

''पर डैडी!'' मधु बोल उठा, ''हमारा भाग तो आपको माँगना चाहिए।''

''तुम्हारा कुछ भाग नहीं बनता।''

''बनता क्यों नहीं? मैं बाबा का पोता नहीं हूँ क्या?''

''अबे गधे!'' श्याम ने कह दिया, ''जब मैं पुत्र नहीं बन रहा तो तुम मेरे बाप के पोते कैसे हो सकते हो?''

''तो डैडी! मुकदमा होगा।''

''तो कर ले। मुकदमे मुफ्त में नहीं हो सकते।''

नरेन्द्र ने कह दिया, ''फकीरचन्द ठेके पर मुकदमा करने को तैयार है। जीत गए तो पचास प्रतिशत उसका।''

''यह तो वाजिब ही है। मैं उससे मिल लूँगा।''

इस पर विष्णुनारायरण ने कह दिया, ''मैं तो बड़े भापा को मध्यस्थ बना फैसला करने को कहूँगा।''

''बड़े भापा क्या फीस लेंगे?'' नरेन्द्र ने पूछ लिया।

गरीबदास हँस पड़ा और बोला, ''जो तुम प्रसन्नता से दे दोगे।''

''देखो बड़े भापा! बिना पैसे के काम नहीं चलता। मधु बता रहा था कि तुम सब बम्बई से फर्स्ट क्लास में आये हो। कांग्रेस सैशन में एक सप्ताह के लिए तीन सौ रुपये भाड़े का मकान लिया है। इस कारण भगवे पहनने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तो रुपये की आवश्यकता रहती है। इससे मैं कहता हूँ कि फकीरचन्द पचास प्रतिशत माँगता है। वह तो मुकदमा करके इतना लेगा और आप तो मध्यस्थ बनकर निर्णय करेंगे। इस पर भी आपको मैं अपने भाग का बीस प्रतिशत दे दूँगा।''

गरीबदास मुस्कराता हुआ नरेन्द्र का मुख देख रहा था। मधु ने कह दिया, ''भापा! सेठ देसाई जितना कुछ आपको देते हैं उसके बाद हमारे हिस्से में से भी आपको कुछ लेने की इच्छा है क्या।''

''मैंने माँगा है क्या? यदि तुम दोगे तो मैं इन्कार नहीं करूँगा।''

''तब तो ठीक है। आप हमारा फैसला करवा दें।''

''सब लोग मध्यस्थाधिकार पत्र लिख दो। तभी मैं इसमें मगज–पच्ची करना चाहूँगा।''

''कैसे लिख दें?''

''वाहे भगत के स्थान के सामने कर्मचन्द वसीका नवीस रहता है। उसको बुला लाओ। वह एक अधिकार–पत्र लिख देगा। फिर कल कचहरी चल कर उसको मैजिस्ट्रेट के सामने अटैस्ट करवा दो। तब मैं निर्णय करने पर विचार आरम्भ करूँगा।''

''कौन–कौन हस्ताक्षर करेंगे उस अधिकार–पत्र पर?''

''जो–जो विष्णुनारायण की सम्पत्ति के भागीदार हैं?''

''आप हैं या नहीं?''

''नहीं। मैं उसकी सम्पत्ति का भागीदार नहीं हूँ। मैं अपने पिता की सम्पत्ति में भागीदार हूँ। उस समय की बहियों से पता कर लेंगे कि उनकी कितनी सम्पत्ति थी। उससे मैं आधे का भागीदार हूँ। बाद की कमाई में से कुछ नहीं।''

इस घोषणा से नरेन्द्र और मधु संतुष्ट थे। वे तैयार हुए तो दूसरे भी तैयार हो गये। गरीबदास ने सदानारायण को कहा कि वह कर्मचन्द स्टाम्प फरोश को बुला कर अभी सब प्रबन्ध कर दे। मैं शीघ्रातिशीघ्र इस नरक कुण्ड से भाग जाना चाहता हूँ।

: 9 :

इस समय रत्नलाल आया तो गरीबदास उसको लेकर दूसरे कमरे में चला गया। घर के सब लोग कर्मचन्द से मध्यस्थाधिकार पत्र लिखवाने में लग गये। विष्णुनारायरण तो कर्मचन्द को कह कर कि वह कानूनी बात पक्की कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे, स्वयं गरीबदास के साथ रत्नलाल की बात सुनने के लिए उधर जा बैठा। वह यह तो सदानारायण से जान चुका था कि रत्नलाल मिल गया है, परन्तु वह अभी तक समझ नहीं सका था कि उसने लाहौर में रहते हुए घर से सम्पर्क क्यों नहीं रखा?

गरीबदास रत्नलाल तथा विष्णुनारायण और सुमित्रा के साथ पृथक् कमरे में जा बैठा था। उसने रत्नलाल से पूछ लिया, "तुमने अपनी माताजी को भी पत्र नहीं लिखा?"

"निर्मलचन्द्र ने समझा दिया था कि कोई भी हरकत मेरा सब रहस्य खोल सकती है और मार्शल लॉ कोर्ट से मुझको मौत का दण्ड होगा। इस कारण मैं चुप था। यह तो उस दिन आपको देख मैंने निश्चय किया था कि इस प्रकार यहाँ पड़ा रहना ठीक नहीं।

"परसों अमृतसर से आने पर मुझको पता चला कि अमला ने मेरा पंजाबी होना अपनी माँ को बता दिया है। उसने अपने पति मिस्टर चटर्जी को रात को बता दिया। मैं तो रात को जाकर अपने कमरे में सो रहा। प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो समाचार पत्र के कार्यालय में जाने लगा तो अमला मुझको मकान के दरवाजे पर मिली और बोली कि उसका पिता उससे बहुत नाराज है। माँ ने उसको कह दिया है कि उसका मुझसे विवाह नहीं होगा। साथ ही मैं अपने लिए मकान ढूँढ़ लूँ।

"मैंने मिस्टर वाटसन को सब बात बता देने का निश्चय कर लिया और वह भी चटर्जी के उससे मिलने से पूर्व ही। इस कारण मैं सीधा ऐडीटर की कोठी पर जा पहुँचा। वह बँगले के बरामदे में बैठा समाचारों का निरीक्षण कर रहा था। पिछले दिन मैंने पं. मोतीलालजी से अपनी भेंट का वृत्तान्त भेजा था और वह ज्यों का त्यों छप गया था। वाटसन उसको पढ़ बहुत प्रसन्न था। पंडितजी ने हिन्दुस्तानी कौम की ब्रिटिश सम्राट के प्रति भक्ति का वचन दिया था और यह कहा था कि अब प्रान्तों के गवर्नरों पर निर्भर है कि वे जनता के प्रतिनिधियों के कामों में कितना हस्तक्षेप करते हैं। जितनी स्वतन्त्रता वे मन्त्रियों को देंगे उतनी ही जनता सम्राट की भक्त बनी रहेगी।

"मैंने पूछा था कि क्या वे मुसलमान और हिन्दू मिनिस्टरों में झगड़े के समय भी गवर्नर का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करेंगे? तो वे कहने लगे कि उनको विश्वास है कि वे अपने झगड़े स्वयं निपटा लेंगे?

"मैंने कहा कि क्या आपकी यह इच्छा आपको ऐसी कल्पना करने के लिए नहीं कह रही?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वे चुप रहे फिर कुछ विचार कर बोले कि यह अंग्रेज की 'डिवाइड एण्ड रूल' की नीति और हिन्दुस्तान के विवेक में प्रतिस्पर्धा होगी। देखें कौन जीतता है।

''मिस्टर वाटसन ने मुझे देख कर कहा, 'घोष वैल डन! और क्या है तुम्हारे थैले में?'

''मैंने बताया कि मैं आज तिलकजी से अपनी भेंट का विवरण दूँगा। परन्तु मैं आपसे आज एक आवश्यक बात करने आया हूँ।

''विस्मित सा वह पूछने लगा कि क्या बात है? मैंने बताया कि मैं मार्शल लॉ अधिकारियों से एक फरार व्यक्ति हूँ? यह सुन बड़े जोर से उसके मुख से निकला, 'क्या?'

''मैंने बताया कि मुझ पर गुजराँवाला के मार्शल लॉ अधिकारियों को सन्देह हो गया था कि मैंने वहाँ बलवा कराया है। इससे मेरे वारण्ट थे। अतः मैं वेश बदल कर आपके यहाँ नौकरी करता था। अब वर्तमान परिस्थिति में मैं इस वेश बदलने की आवश्यकता नहीं समझता। मैंने यह उचित समझा कि मैं आपको यह बात बता दूँ जिससे आप निश्चय कर सकें कि मुझको यहाँ नौकर रखेंगे अथवा नहीं?

''मिस्टर वाटसन मेरी स्वीकारोक्ति सुन गम्भीर हो गया। मैं उसके सामने बैठा उसके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था। एकाएक उसने कुछ निश्चय किया और पूछने लगा, 'मुझको सत्य बताओ। तुम क्रान्तिकारी हो?'

''मैंने कहा, हम सब क्रान्तिकारी हैं। परन्तु मैं हिंसात्मक (वायलैंस) क्रान्ति का विश्वास नहीं रखता।

''वह कहने लगा कि मैं एक योग्य युवक हूँ। उसे विश्वास है कि मैं बहुत तरक्की करूँगा। यदि मैं सत्य कहता हूँ तो मैं उसके समाचार–पत्र में रह सकता हूँ।

''मैंने उसका धन्यवाद किया और अपने स्थान पर आकर तिलकजी से भेंट का विवरण लिखने लगा। मैं अपने काम में ग्यारह बजे तक संलग्न रहा। इस समय मिस्टर चटर्जी मेरे पास आया और पूछने लगा कि निर्मलचन्द्र कहाँ है? मैंने कहा कि मुझे ज्ञात नहीं।

''इस पर वह कहने लगा कि 'वह बेईमान है। उसने मेरे विषय में उसको धोखा दिया है।'

''मैंने कह दिया, 'डैडी! ऐसे ही सब बच्चे उसको पुकारते थे। वह बेईमान नहीं है। वह भी आपकी तरह ही धोखा खा गया है। मेरा रहस्य उसको भी विदित नहीं था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'परन्तु ऐसा तुमने क्यों किया?'

" 'अपनी जान बचाने के लिए। ऐसा न करता तो फाँसी के तख्ते पर लटक जाता।'

"चटर्जी मेरा मुख देखता रह गया। फिर पूछने लगा, 'तो तुम भद्र लोक में से हो?'

"मैंने उसको भ्रम में रखने के लिए कह दिया, 'मैं नहीं समझा।'

"इस पर उसने बात बदल दी। उसने कहा, 'अब तुम हमारे मकान में नहीं रह सकोगे।'

" 'बहुत अच्छा।'

" 'तो कहाँ जाओगे?'

" 'अपने चाचा के घर में।'

" 'वह कहाँ है?'

" 'शहर के अन्दर है।'

" 'तो तुम लाहौर का रहने वाला है?'

" 'नहीं। मैं बम्बई का रहने वाला हूँ। मेरा चाचा यहाँ रहता है। आज उसके घर चला जाऊँगा। मिस्टर चटर्जी! मैं आपका बहुत आभारी हूँ। आपने उस विपत्ति के समय मेरी बहुत सहायता की है। मैं कभी आपकी कोई सेवा कर सका तो बहुत प्रसन्न हूँगा।'

" 'तुमने हमारे घर में एक समस्या उत्पन्न कर दी है।'

" 'मुझको बहुत दुःख है इस बात का।'

" 'तो तुम अनुभव करते हो?'

" 'मैंने अमला को प्रेरणा नहीं दी। यह तो उसने मुझको अपने साथ विवाह के लिए तैयार किया है। मेरा सदा आग्रह रहा है कि अपने माता–पिता से पूछ कर बात करे।"

" 'यह तो वह कहती रही है। हम भी तुमको बंगाली युवक समझ उसको स्वीकृति देते रहे हैं। परन्तु रात उसने अपनी माँ को बताया कि तुम पंजाबी हो, तो उसकी माँ ने उसको तुमसे बातचीत करने से मना कर दिया है।

" 'पर तुम बंगला भाषा इतनी शुद्ध बोलते थे कि हम सब धोखे में आ गये।'

" 'मैं पंजाबियों के प्रति आपके मन में घृणा की भावना के विषय में नहीं जानता था। जानता होता तो अमला के प्रस्ताव को कभी स्वीकार नहीं करता।'

" 'वह तो अब भी यही चाहती है। परन्तु हमारी भी यहाँ बिरादरी है। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब बदनाम हो जायेंगे।'

" 'मुझको बहुत ही खेद है। मुझको क्षमा कर दीजिये।'

"मैं अपना काम समाप्त कर चुका था और कार्यालय से होटल में भोजन करने जा रहा था। मैंने अब चटर्जी के घर न जाने का निश्चय कर लिया था।

"मैं कार्यालय से निकल माल रोड के फुटपाथ पर आया तो अमला कार्यालय के बाहर मेरी प्रतीक्षा में खड़ी थी। रोने से उसकी आँखें फूली हुई थीं। मैंने पूछा, 'अमला! क्या कर रही हो यहाँ?'

" 'मैं आपकी प्रतीक्षा में खड़ी थी।'

" 'किस लिए?'

" 'मैं माँ का घर छोड़ आई हूँ। आप मुझको ले चलिए।'

" 'कहाँ?"

" 'अपने घर।'

" 'यह कैसे हो सकता है? अमला! तुम अभी अल्पवयस्क हो। तुमको तुम्हारे माता–पिता की स्वीकृति के बिना ले जाना अपराध है। यह पाप भी है। मैं यह नहीं करूँगा। मैं तुमको कहता रहा हूँ कि मेरा तुमसे विवाह तुम्हारे माता–पिता की स्वीकृति से हो सकेगा।'

" 'परन्तु अब क्या करूँ? माता–पिता स्वीकार नहीं करते?'

" 'तो उनको मनाओ।'

" 'कैसे?'

" 'सत्याग्रह करके।"

" 'परन्तु आप तो कहते थे कि किसी बात को मनवाने के लिए सत्याग्रह उचित माँग नहीं है?"

" 'मैंने यह कहा था कि मर जाने की धमकी देकर किसी को राजी करना पाप है। सत्याग्रह का अर्थ नहीं। यह तो दुराग्रह होगा।"

" 'तो सत्याग्रह क्या होगा?'

" 'जब तक तुम वयस्क नहीं हो जातीं, विवाह स्वीकार नहीं करना। जब वयस्क हो जाओगी तो मेरे पते पर आ जाना अथवा वहाँ सूचना भेज देना। मैं तुमको आकर ले जाऊँगा।'

" 'और आपके माता–पिता?'

" 'वे मान जायेंगे।"

" 'परन्तु मुझसे तो यह बात हो नहीं सकेगी। आप चल कर मेरी माँ को कह दीजिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'माँ को नहीं। मैं तुम्हारे पिता को कह सकता हूँ।" 'क्या वे भीतर हैं?'

" 'हाँ हैं।'

" 'पर क्या कहेंगे?"

" 'चली आओ। अभी बात कर देता हूँ। मैं वही कुछ कहूँगा जो एक आत्माभिमानी अपने मान की रक्षा करते हुए कह सकता है।'

"अमला मुख देखती रही। मैंने कहा, 'चलो भीतर।' वह चल पड़ी। मैं उसको उसके पिता के कमरे में ले गया। वहाँ अमला को बैठाकर मैंने खड़े–खड़े ही कह दिया, 'मिस्टर चटर्जी! मैं जब कार्यालय से निकला तो यह बाहर सड़क पर खड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। यह कहती है कि यह घर से मेरे साथ जाने के लिए भाग आई है। मैंने इसको कहा है कि मैं तुमको इस प्रकार, इस समय, अपने साथ नहीं ले जा सकता। यह अल्पवयस्क है। यदि यह अपने वयस्क होने तक अविवाहित रह सकी और तब इसने मुझसे विवाह की इच्छा व्यक्त की तो मेरे पास आ सकेगी अथवा मुझको लिखेगी तो मैं आकर इसको ले जाऊँगा। मैं तब तक इसकी प्रतीक्षा करूँगा। मैं इसको आपके हवाले करके जा रहा हूँ। आप इसको समेटिये।'

"इतना कह, बाप–बेटी, दोनों को वहाँ बैठे छोड़ कर मैं चला आया। होटल में खाना खाया और इधर आपसे मिलने चला आया हूँ।"

"और यहाँ खाना खाने क्यों नहीं आये?"

"अभी होटल वाले से दाम लेने हैं।"

"महीने के पैसे दिये हैं?"

"ऐसा है कि प्रायः दोपहर का खाना घर से बाहर खाया जाता है। इस कारण पेशगी दाम देकर पचीस प्रतिशत की रियायत करा लेता हूँ।"

गरीबदास ने रत्नलाल को घर के झगड़े की बात बताई तो विष्णुनारायण ने कह दिया, "भापा! अब तुम निर्णय करा कर ही जाओ। मैं इस लड़के से बहुत तंग हूँ।"

"मैं भी यही विचार कर रहा हूँ कि दो–चार दिन यहाँ ठहर जाऊँ और सबको पृथक्–पृथक् कर दूँ। एक बार पृथक्–पृथक् होकर फिर जिस–जिस का मन मिले साझेदारी कर लें।"

इस समय श्याम और कला उसी कमरे में आ गये। श्याम ने कला का हाथ पकड़ा हुआ था। जब दोनों बैठे तो गरीबदास ने पूछ लिया, "श्याम! क्या कर आये हो?"

"हमने कर्मचन्दजी को बात समझा दी है। वे मजमून बना रहे हैं। बनाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे सबको सुनायेंगे। तत्पश्चात् कल सब–जज के सामने आपको भी चलना होगा। और परिवार के सब पुरुषों को चलना होगा। वहाँ मजिस्ट्रेट के सामने दस्तखत करने होंगे।''

''ठीक है। किसी वकील को भी साथ ले चलना।''

''ले चलेंगे।''

इस समय कला ने पूछ लिया, ''भापाजी! यह मधु इसके बाद तो तंग नहीं करेगा?''

''चोर–डाकू तो किसी समय भी तंग कर सकते हैं। इसके लिए साधु आदमियों को अपनी रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए।''

''मेरी रक्षा कौन करेगा?''

''श्याम को करनी चाहिए।''

''भापाजी! इनसे कह दीजिये। इतने दिन तक दया–दृष्टि रखी है कुछ देर और रखें।''

''फिर क्या होगा?''

''फिर क्या होना है? वही जो सबके साथ होता है। बाल्यकाल, यौवन, वृद्धावस्था और फिर मरण।''

''श्याम!'' गरीबदास ने डाँटकर कहा, ''क्या बात है?''

''भापा! मैं समझने लगा हूँ कि मेरे पूर्ण दुर्भाग्य का कारण यह औरत ही है। इसने ही मधु के मन में वे संस्कार डाले हैं जिसका परिणाम वह अब है। वह पढ़ा–लिखा गुंडा है। केवल अपनी माँ को ही तंग नहीं करता, प्रत्युत मेरी भी छाती पर सवार हो जाता है और जो माँगता है देना पड़ता है।''

''और तुम सहन कर रहे हो?''

''हाँ। क्या करूँ? मैं उसको पुलिस के हवाले करने की बात करता हूँ तो यह रोने लगती है।''

''भापा जी! मधु को समझाओ।'' कला ने कहा।

''उसको समझाने का उपाय यह ही है कि उसे कैद करा दिया जाय।''

कला भौचक्की हो देखती रह गई।

''पर श्याम!'' गरीबदास ने पूछ लिया, ''तुम ने शराब पीना तथा जुआ खेलना कब से आरम्भ किया है?''

''जब से जिमखाना क्लब में जाने लगा हूँ। यों आदत तो अभी नहीं पड़ी। अभी पाँच दिन आपके साथ रहा हूँ। मैंने एक बूँद नहीं पी। परन्तु क्लब में जाकर पिये बिना नहीं रह सकता। मात्रा से अधिक तो उस दिन पीता हूँ जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिन मधु की अपनी माँ से छीना–झपटी देखता अथवा सुनता हूँ।''

''मैं समझता हूँ, तुमको पिता की सम्पत्ति में से हिस्सा मिल जायेगा। तुम नौकरी छोड़ कला को लेकर किसी एकान्त में जाकर रहो। और अपना शेष जीवन शांति से व्यतीत करो।''

''देखें, क्या मिलता है? तत्पश्चात् निर्णय करूँगा।''

: 10 :

रत्नलाल अब अपने चाचा के घर सोने लगा था। उसको अपने पिता वाला कमरा मिल गया और वह उसमें बैठ अपने लेख लिखने लगा था। दिन में छः घण्टे समाचार एकत्रित करने का काम और सप्ताह में एक लेख हिन्दुस्तानी कला–कौशल, ज्ञान–विज्ञान और संस्कृति तथा सभ्यता पर देता था। इस लेख के लिए उसको अपने समाचार पत्र से साठ रुपये पारिश्रमिक मिल जाता था।

अभी गरीबदास लाहौर में ही टिका था। देसाई बम्बई चला गया था। सदानारायण घर की सम्पत्ति के बँटवारे में भापा की सहायता कर रहा था। सम्पत्ति के मूल्यांकन में देरी लग रही थी।

दुकान में लगी पूँजी, माल और उधार खाते का ढाई लाख रुपया था। मकान और दुकानों की लागत कीमत सवा दो लारव के लगभग थी। भूषण इत्यादि बीस हजार के थे।

गरीबदास ने बँटवारे के तीन समय नियत किये। एक वह समय जब विष्णुनारायण के पिता का देहान्त हो चुका था। लाला धन्नाराम के देहान्त के समय कुल सम्पत्ति चालीस हजार की थी। उस चालीस के तीन भाग कर दिये। एक विष्णुनारायण का, एक रामरक्खामल्ल का और एक बहन सतवन्ती का। तेरह–तेरह हजार हिस्से में आये।

बँटवारे का दूसरा समय तब था जब श्यामनारायण घर छोड़ कर चला गया था। उस समय की किताबें देखी गयीं और उस समय की सम्पत्ति की कीमत कूती गई। दुकान और जायदाद अस्सी हजार रुपये की थी। इसके पाँच हिस्से किये गए। विष्णुनारायण, महानारायण, सदानारायण, श्यामनारायण और लाजवंती। प्रत्येक को सोलह–सोलह हजार रुपया मिला गया। श्यामनारायण के सोलह हजार में से छः हजार ग्वाल मंडी के मकान का किराया काट लिया गया।

तीसरा समय बँटवारे का वह था जब नरेन्द्र ने बी.ए. पास किया। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय सम्पत्ति एक लाख अस्सी हजार की थी। इसका पचास प्रतिशत दुकान पर काम करने वालों का भाग और शेष नब्बे हजार को नरेन्द्र, महेन्द्र, मृदुल, मधु, सदा के दो बच्चे और मधु की लापता बहन सुनीता में बाँटा। तेरह–तेरह हजार के सात भाग किये गए। इस प्रकार विष्णुनारायण को अठावन हजार रुपया मिला। महानारायण को अपने भाग का पैंतालीस हजार रुपया और तीन बच्चों के भाग का उन्तालीस हजार रुपया। श्यामनारायण के अपने भाग का दस हजार रुपया तथा ग्वाल मंडी वाला मकान और दो बच्चों का छब्बीस हजार रुपया। सदानारायण को सोलह हजार अपने भाग का और दो बच्चों के भाग का छब्बीस हजार रुपया। गरीबदास को तेरह हजार रुपया। गरीबदास ने अपना तेरह हजार रुपया साधना को दे दिया। सदानारायण ने अपने भाग का सोलह हजार रुपया साधना आश्रम के पुस्तकालय को दे दिया और बच्चों का छब्बीस हजार उनकी माँ सुचेता के नाम जमा करा दिया।

जिन–जिन को रुपये की जरूरत थी, दे दिया गया। उनमें नरेन्द्र और मधु थे। इनके अपने–अपने भाग का तेरह–तेरह हजार नकद दिलवा दिया। दूसरों को महानारायण, जिसको दुकान मिली थी, से प्रोनोट लिखवा दिये गये। छः रुपया सैकड़ा ब्याज लिखवा दिया।

इस प्रकार निर्णय कर गरीबदास बम्बई जा पहुँचा। ये सब झगड़े चलते हुए मार्च मास आ गया।

इस समय मार्शल लॉ में हुए अत्याचारों की जाँच के लिए नियत हुई कांग्रेस की जो कमेटी थी उसकी रिपोर्ट छप गई। दूसरी ओर हंटर कमेटी की रिपोर्ट भी छप गई। इन दोनों रिपोर्टों के परिणामस्वरूप कांग्रेस ने अपना विचार बदल दिया। कांग्रेस ने प्रस्ताव पास कर दिया कि ये सुधार अपर्याप्त हैं। तुरन्त औपनिवेशिक ढंग का स्वराज्य मिलना चाहिए। यदि यह न दिया गया तो सरकार असहयोग (नान कोऔपरेशन) का आन्दोलन चलाया जायेगा। ऐसा कहा जाता है कि यह गांधी जी की अन्तर्प्रेरणा का परिणाम था।

अगस्त मास में कलकत्ता में इस विषय पर विचार करने के लिए कांग्रेस का विशेषाधिवेशन किया गया। इस अधिवेशन के अध्यक्ष श्री लाला लाजपतराय थे। वे सात वर्ष तक अमेरिका में रहकर आये थे। उन दिनों इनके हिन्दुस्तान और इंग्लैंड में वांरट थे। और भी कई लोग जो पुराने कैदी थे, छूट गये थे। भाई परमानन्द, वीर सावरकर इत्यादि छोड़ दिये गए थे। सावरकर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रत्नागिरी में नजरबन्द रखा गया था, परन्तु भाई जी को कुछ शर्तों के साथ छोड़ दिया गया था।

कलकत्ता में कांग्रेस के विशेषाधिवेशन में यह निश्चय हुआ कि सरकार को अन्तिम बात कह दी जाये कि भारत को तुरन्त स्वराज्य दे दिया जाये। इस स्वराज्य की माँग के साथ खिलाफत का मसला हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तसल्ली के अनुसार तय कराया जाए। अन्यथा सरकार से असहयोग किया जाये। यह कब किया जाए और कैसे किया जाए? इसका निर्णय करने के लिए महात्मा गांधी जी को एकाधिकार दे दिया गया।

अहमदाबाद में कांग्रेस ने इस निर्णय को अपने नियमित कांग्रेस अधिवेशन में पारित किया तो गांधी जी ने एक करोड़ रुपया और इतनी ही संख्या में स्वयंसेवकों की माँग की और कहा कि यदि यह मुझको मिल जाए तो मैं स्वराज्य और खिलाफत का प्रश्न एक वर्ष में तय करवा दूँगा।

प्रथम अगस्त 1921 को यह असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया गया। इसी दिन देश में एक दुर्घटना हो गई। श्री बाल गंगाधर तिलक का देहान्त हो गया।

गांधीजी ने इसी दिन चार योजनाएँ जनता के सामने रखीं। एक, हिन्दू–मुसलमान ऐक्य, दूसरी, अहिंसा का व्रत, तीसरी, स्कूल, कॉलेज, कचहरी और सेना का बहिष्कार, और चौथी, खद्दर का प्रयोग। इनके लिए प्रयास होने लगे। परन्तु फरवरी 1922 में एक घटना हो गई, जिसने सारा–का–सारा काम समाप्त कर दिया। चौरी–चौरा नाम के एक गाँव में जनता के एक जलूस और पुलिस में मुठभेड़ हो गई। जनता ने पुलिस पर धावा बोल दिया। पच्चीस कान्स्टेबल मारे गये। थाने को आग लगा दी गई और मृत–पुलिस के सिपाहियों को उस आग में जला दिया गया।

गांधीजी के पास यह समाचार पहुँचा तो उन्होंने आन्दोलन स्थगित कर दिया। स्थगित का अर्थ था बन्द। इस समय सरकार ने दमन–चक्र उग्र कर दिया। जहाँ आन्दोलन के चलते हुए गांधीजी को पकड़ने में सरकार डरती थी, वहाँ आन्दोलन बन्द होने पर सरकार ने गांधीजी को पकड़कर विद्रोह का मुकदमा चला दिया। गांधीजी ने, जो–जो आरोप उन पर लगाये थे वे स्वीकार किये और कह दिया कि वर्तमान सरकार को भारत पर शासन करने का अधिकार नहीं, इस कारण जो कुछ उसने किया वह अपराध नहीं है।

गांधीजी को छः वर्ष का दण्ड हुआ। आन्दोलन शान्त हो गया। छोटे–बड़े नेताओं में अनैतिकता का प्रादुर्भाव हुआ। धन, जो स्वराज्य के नाम पर एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था, अनर्गल कार्यों में व्यय होने लगा। जनता में भी पतन आ गया। वही बातें जिनको करने के लिए आन्दोलन–काल में बल दिया जाता था, अब न करने के लिए स्पर्धा होने लगी।

खद्दर कुछ–एक के पहनने की वस्तु रह गई। हिन्दू–मुसलमान ऐक्य उन लोगों के पालन करने की वस्तु रह गई जो कांग्रेस से वेतन अथवा अन्य प्रतिकार पाते थे। और स्कूल, कॉलेज, कचहरियाँ, पुलिस और सेना में भरती होना लाभ की बात मानी जाने लगी।

मुसलमानों ने दंगे करने आरम्भ कर दिये। खिलाफत का प्रश्न सुलझा, तुर्की के एक जनरल अतातुर्क कमाल पाशा की करनी से। खलीफा तुर्की से भाग कर रोम में चला गया और तुर्की में प्रजातन्त्रात्मक राज्य की स्थापना हो गई।

मुसलमानों को अब हिन्दुओं से ऐक्य रखने की आवश्यकता नहीं रही और देशव्यापी हिन्दू–मुसलमान झगड़े आरम्भ हो गये। कांग्रेस इस संयुक्त मोर्चे में दरार आती देख विक्षुब्ध हो उठी। कांग्रेस के छोटे–बड़े नेता इन झगडों में कारण ढूँढ़ने लगे और प्रायः नेतागण इसमें हिन्दुओं को दोषी मानने लगे।

कांग्रेस ने हिन्दू–मुसलमानों में झगड़ों का कारण जानने और उन कारणों को दूर करने का उपाय ढूँढ़ने के लिए तीन बड़े नेताओं की एक कमेटी नियुक्त की। कमेटी में तो देश के प्रमुख व्यक्ति थे। लाला लाजपतराय, श्रीयुत सी.आर. दास और मौलाना मुहम्मद अली। ये तीन नेता किसी भी एक बात पर सहमत नहीं हो सके। इन झगडों के तीन कारण ढूँढ़े गये। एक मस्जिदों के सामने बाजा बजाना, दूसरे– गो–हत्या और तीसरे– मुसलमानों से रोटी–बेटी का सम्बन्ध।

रोटी–बेटी का सम्बन्ध व्यक्तिगत था। इसमें केवल यह कहा गया कि जनता को उदारता का व्यवहार करना चाहिए। मस्जिदों के सामने बाजे और गो–हत्या का सम्बन्ध व्यक्ति से नहीं प्रत्युत समाज के साथ सम्बन्ध रखता था। इन प्रश्नों पर ले–दे होती रही और अन्त में बिना किसी निर्णय के कमेटी भंग हो गई। मौलाना मुहम्मद अली ने कोकानाडा कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए कह दिया कि गो–हत्या के प्रश्न पर वे अपने सहयोगी, कमेटी के अन्य सदस्यों से, सहमत नहीं हो सके। वे अपनी जाति के मुख से पौष्टिक भोजन छीनने की धृष्टता नहीं कर सके।

बात समाप्त हो गई। गांधीजी बीमार होने के कारण जेल से छूट आये और हिन्दू–मुसलमान के झगड़ों में हिन्दुओं को दोषी बताने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 11 :

गरीबदास और देसाई महात्मा गांधी के इस असहयोग आन्दोलन से सर्वथा उदासीन रहे। आन्दोलन के दिनों में साधना आश्रम के समारोह फीके रहते थे। प्रायः सार्वजनिक कामों में रुचि लेने वाले व्यक्ति देशव्यापी आन्दोलन में भाग ले रहे थे। इन समारोहों में बहुत कम लोग आते थे।

कभी–कभी देसाई उदास–मन आश्रम में आता और घंटों ही वहाँ एकान्त में चुपचाप बैठा चिन्तन करता रहता थ। कभी गरीबदास पूछता भी, "सेठ भैया! क्या हो रहा है?"

"चित्त में बहुत बेचैनी है। उसको शान्त करने के लिए यहाँ चला आता हूँ।"

"बेचैनी किस विषय में है?"

"देश में होने वाले आन्दोलन के विषय में।"

"इसमें कुछ दोष दिखाई देता है क्या?"

"यह सब–कुछ उलट–पुलट दिखाई देता है। परन्तु महाराज! दोष क्या है और कहाँ है? मेरी समझ में नहीं आ रहा। जब मौलानाओं की मनोवृत्ति पर विचार करता हूँ तो चित्त में ग्लानि भर जाती है और जब लाला लाजपतराय और पंडित मदनमोहन मालवीय जैसे निष्ठावान हिन्दुओं को उनमें मिल कर काम करते देखता हूँ तो अपने उस ग्लानि की सतर्कता पर ही संशय होने लगता है।"

"कितनी सहायता दी है इस आन्दोलन में?"

"रुक्मिणी ने पाँच लाख तो तिलक–स्वराज्य फंड में दिया है। मैंने दो लाख एक कौमी शिक्षा केन्द्र खोलने के लिए दिया है।"

"तो दुःख होने लगा है यह सब–कुछ देने पर?"

"दुःख नहीं महाराज! मैंने तो इस धन को कभी भी अपना नहीं समझा। जनता का है। जनता की रुचि के अनुसार दे रहा हूँ। विस्मय तो जनता की अभिरुचि पर है।"

"जनता का नाम प्रकृति है। यह तो निर्जीव है। इसको चलाने वाले नेता हैं। विस्मय तो इन नेताओं की बुद्धि पर है। परन्तु सेठ भाई! यदि रोग के कारण पर जाएँ तो इन नेताओं की सूझ–बूझ पर भी विस्मय करने को स्थान नहीं है। ये सब–के–सब अंग्रेजी शिक्षा की उपज हैं। और–तो–और हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पूज्य स्वर्गीय नेता बाल गंगाधर तिलक अपनी ओरायन पुस्तक में कितना कुछ अनर्गल लिख गये हैं कि उसे पढ़ कर क्रोध भी आता है और दुःख भी होता है।''

''क्या लिखा है उन्होंने?''

''वे लिखते हैं कि सम्पात वर्ष और नक्षत्र वर्ष में ये 20.4 मिनट का अन्तर होता है। इस प्रकार सम्पात वर्ष नक्षत्र वर्ष से दो सहस्र वर्ष एक मास पीछे खिसक जाता है। वेदों में मृगशिरा, वसन्त सम्पात में आया लिखा है। इससे यह सिद्ध हुआ कि वेदों को लिखे 6000 से 8000 वर्ष हुए हैं।''

''तो फिर?''

''फिर कुछ नहीं। तिलक महोदय के कथन से अनर्थ नहीं हो जायेगा। परन्तु मेरे मस्तिष्क में तिलक जैसे नेता बालक–मात्र प्रतीत होने लगे हैं। यह उन्होंने क्या लिखा, कहना कठिन है। उन्होंने श्री उमेशचन्द विद्यारत्न से कहा प्रतीत होता है कि 'हमने मूल वेद नहीं पढ़े। हमने तो केवल साहब लोगों के अनुवाद पढ़े हैं।'

''ऐसी अनधिकार चेष्टा तो ये अँग्रेजी स्कूल, कॉलेजों में पढ़े लोग ही कर सकते हैं। यही कुछ गांधीजी प्रभृति नेता कर रहे हैं। इतिहास और राजनीति का एक अक्षर पढ़े बिना ये देश के नेता बने हैं तो देश रसातल को ही जायेगा।''

''तो कुछ नहीं हो सकता? महाराज!''

''एक ही उपाय है। वह है हिन्दुओं का अपने आपको पहचानना। इसके लिए स्वाध्याय की आवश्यकता है। यह अँग्रेजी शिक्षा में पले नेतागण कुछ नहीं कर सकेंगे।''

''इतना बड़ा आन्दोलन असफल रहा। यह खेद का विषय तो है परन्तु विस्मय का नहीं।''

गरीबदास अभी देसाई से बातें कर रहा था कि सदानारायण मोटर भगाता हुआ आश्रम में आ पहुँचा। वह सामने आया तो गरीबदास ने उसे देख मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''रोनी सूरत क्यों बनाई है? मैं जानता हूँ। जाओ देह का संस्कार कर दो। मैं नहीं जाऊँगा।''

सदानारायण और देसाई विस्मय से देखते रह गये। गरीबदास ने देसाई के विस्मय का समाधान कर दिया, ''इस लड़के की ताई लेखबती का शरीर शान्त हो गया है।''

देसाई घबरा कर उठा और सदा जिसकी आँखें तरल हो रही थीं, को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साथ लेकर टेलीफोन पर चला गया। वहाँ से उसने रुक्मिणी, वर्मा, सरला, खटाऊजी तथा अन्य परिचितों को टेलीफोन पर इस दुर्घटना की सूचना दे दी।

देसाई ने सदानारायण से पूछा, ''क्या हुआ था माताजी को?''

सदा ने घटना का सविस्तार वृत्तान्त बता दिया।

: 12 :

जवाहरलाल अपनी नौकरी पर गया तो साधना से मिल कर भी नहीं गया। साधना आश्रम से सुचेता तथा सदानारायण से खरी–खरी बातें सुन वह दादर वाले मकान में पहुँच गया। उसको छोड़ने के लिए सदा और उसकी पत्नी सुचेता भी गये थे। सुचेता ने साधना को जवाहरलाल के सामने ही कह दिया, ''साधना बहन! अपने पतिदेव को समेट कर रखो। ये बिना तुम्हारे संरक्षण के चिकनी भूमि पर चलने लगते हैं। अभी तो हम इनको आश्रम से पकड़ लाये हैं, परन्तु कोई दूसरा क्यों ऐसा करेगा?''

साधना सुचेता के कथन का अर्थ समझती थी। इससे अपने पति की किसी उच्छृंखलता का अनुमान लगा लज्जा से आँखें नीचे किये बैठी रही। जब सदा और उसकी पत्नी गये तो जवाहरलाल उठ कर बोला, ''मैं जा रहा हूँ। अवकाश मिला तो कल मिलने आऊँगा और तब अपने भावी जीवन का कार्यक्रम बनायेंगे।''

साधना मुख देखती रह गई। जवाहरलाल गया तो फिर नहीं आया। कुछ दिन तक तो साधना प्रतीक्षा करती रही, तत्पश्चात् वह अपने काम में संलग्न हो गई। लेख के मन पर इस घटना का भारी दुष्प्रभाव हुआ था।

रुक्मिणी ने देसाई ट्रस्ट के अधीन प्रसूति–गृह खोल रखा था। उसमें वे औरतें प्रसव–काल निकालने के लिए आती थीं जो अपने अनियमित सम्बन्ध से गर्भ धारण कर लेती थीं।

ट्रस्ट के सब सदस्य इसको समाज के रोग की चिकित्सा नहीं समझते थे। यह तो सागर में डूबने वाले प्राणी को 'लाइफ बैल्ट' फेंकने के तुल्य ही था। साधना इसमें कुछ और अधिक कह रही थी। वह यह कि जिनके पास इस ट्रस्ट की 'लाइफ बैल्ट' पहुँच जाती थी और जो उसको प्रयोग में ला सामयिक निर्वाह कर लेती थीं, उनको भवसागर से पार करने के लिए साधना आश्रम का मार्ग दिखा देती थीं। वह इसको इस प्रकार समझती थी जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइफ–बैल्ट पहने व्यक्ति को नौका में चढ़ा समीप खड़े जहाज पर चढ़ा दिया जाये।

समय–समय पर इस प्रसूति–गृह का विज्ञापन दिया जाता था। विज्ञापन प्रायः यह होता था– ''उन दुखियारी बहनों के लिए जो मन के किसी दुर्बल क्षण में अनिच्छित गर्भ धारण कर अपनी लज्जा को छिपाने के लिए साधन नहीं रखतीं, देसाई प्रसूति–गृह अपनी सेवाएँ निःशुल्क अथवा बहुत ही न्यून शुल्क पर देता है। रोगी का नाम–धाम गुप्त रखने का प्रत्येक प्रबन्ध है। सरकार द्वारा रजिस्टर्ड, कार्पोरेशन द्वारा समर्थित, प्रसूति–गृह जाति–पाँति के बंधनों से मुक्त, सब के लिए है। सूचना भेजने पर अपनी ऐम्बुलैन्स भी भेज सकता है।''

दिन–प्रतिदिन इस प्रसूति–गृह को प्रयोग करने वाली स्त्रियों की संख्या बढ़ रही थी। इसमें कई कारण थे– बम्बई में कारखानों में स्त्रियों को अधिक और अधिक काम पर नियुक्त होना; नगर में पुरुष कर्मचारियों के परिवार के साथ न रह सकने की विवशता; जीवन यापन का दिन–प्रतिदिन महंगा होता जाना।

इस मजदूर वर्ग के साथ अब तो मध्य वर्ग की स्त्रियाँ भी पर्याप्त संख्या में आने लगी थीं। प्रायः अविवाहित लड़कियाँ जो अपने निकट–सम्बन्धियों की वासना का शिकार हो जाती थीं, अथवा विधवाएँ जो समाज की कुप्रथा के कारण, इच्छा रहते हुए भी, विवाह नहीं कर सकती थीं।

कभी–कभी कोई धनी परिवार की स्त्री भी आ जाती थी। इस प्रसूति–गृह में सब के साथ समान व्यवहार और सब की समान सेवा की जाती थी। प्रसूति–गृह में एक लेडी डॉक्टर और पाँच–छः परिचारिकाएँ रखी हुई थीं।

एक दिन एक लड़की आई। वह टैक्सी में सवार होकर आई थी। उसको साधना के सम्मुख उपस्थित किया गया तो साधना को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि वह देखी–भाली है। नियमानुसार साधना ने उसका नाम–धाम रजिस्टर में लिखा। उसने लिखवाया, ''नाम अनवरी। एक रईस की नौकरी में थी। उस रईस से सम्बन्ध बनने पर गर्भ ठहर गया है।''

''रईस का क्या नाम है?''

''उसने कहा है कि असल नाम न बताऊँ।''

''मैं यह कहती हूँ कि बताये बिना काम नहीं चलेगा। हम यहाँ सत्य नाम बताने वालों को ही भरती करते हैं।''

''और यदि मैं झूठ बोल दूँ तो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम्हारा ईमान जाने। हम तो तुमको सत्य कहने के लिए कहते हैं। अब जो भी तुम कहोगी, सत्य मान लेंगे।"

इस पर वह गम्भीर हो साधना का मुख देखने लगी फिर बोली, "आपने विज्ञापन में लिखा है कि सब बात गुप्त रखेंगे।"

"तो तुम विज्ञापन पढ़कर आई हो?"

"मैंने तो नहीं पढ़ा, परन्तु मेरे साहब ने पढ़ा है। उन्होंने ही मुझको बताया है और यहाँ भेज दिया है। उन्होंने यहाँ के खर्चे के लिए धन भी दिया है।"

"हम यह सब कुछ गुप्त रखेगे। तुम निर्भय होकर बता सकती हो।"

"वे रुस्तमजी काउसजी हैं। बम्बई के एक बहुत धनी–मानी आदमी हैं।"

"तुम कहाँ की रहने वाली हो? तुम तो पारसी जाति की प्रतीत नहीं होतीं?"

"मैं पंजाबिन हूँ। लाहौर की रहने वाली हूँ।"

"लाहौर किस मुहल्ले में रहती थीं?"

"याद नहीं आता। मैं बहुत छोटी थी, तीन–चार वर्ष की रही हूँगी जब मैं अपनी माँ और भाई के साथ बम्बई आई थी। पहले हम एक अच्छे मकान में रहते थे। फिर माँ अंधी हो गई और हम भीख माँगने लगे। एक दिन मैं बहुत प्रातःकाल उठी। हम पटरी पर सो रहे थे। मुझ को प्यास लगी थी। मैं नल को ढूँढ़ती हुई चल पड़ी। नल बहुत दूर जाकर मिला। मैंने पानी पिया और उस दिशा को भूल गई जिधर से आई थी। मैं चली जा रही थी। माँ नहीं मिली। थक गई तो एक स्थान पर खड़ी हो रोने लगी। इस समय ये सज्जन हाथ में आमों की टोकरी लिए मेरे सामने आ खड़े हुए और मुझसे रोने का कारण पूछने लगे। मैंने बताया कि मैं माँ को ढूँढ़ रही हूँ। इन्होंने पूछा कि तेरी माँ क्या करती है?"

"मैंने बताया भीख माँगती है। फिर वह कहने लगा यह आम खाओगी। उसने एक आम मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं भूखी थी। रोना बन्द कर आम चूसने लगी। उसने और लेने के लिए पूछा। मैंने सिर हिलाकर हाँ की तो उसने अपने साथ चलने के लिए कहा।

"मैंने कहा कि मैं तो माँ को ढूँढ़ रही हूँ। उसने कहा कि वह भी मिल जाएगी।

"मैं उसके घर चली गई। उसने मुझको नहलाया, कपड़े पहनने को दिये और नए कपड़े पहना नौकरानी के हवाले कर दिया। मुझको बहुत सुन्दर कमरा, फर्नीचर, वस्त्र और भोजन मिलने लगा। एक बीमार औरत का प्यार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और नौकरों की मान प्रतिष्ठा मिली। मैं अपनी माँ और वहाँ जाने से पूर्व की अवस्था भूल गई। मुझको अपना नाम भी भूल गया है। इतना ही स्मरण है कि मैं लाहौर में रहती थीं। एक डैडी और एक भैया थे।''

साधना को कुछ संदेह हुआ। उसको यह कला की कहानी प्रतीत हुई। उसे स्मरण हो आया कि कला की भी एक लड़की चोरी हो गई थी, कहीं यही न हो।

साधना ने पूछ लिया, ''यह अनवरी तुम्हारा बचपन का नाम है?''

''नहीं। यह तो उस बीमार स्त्री ने रखा था, जिसकी मैं टहल–सेवा करती थी। पहले तो सब मुझको 'ए लड़की' कहा करते थे। पीछे उस बीमार औरत ने रुस्मतजी से राय कर के मेरा नाम अनवरी रख दिया।''

''तुम लोग ग्वाल मंडी में रहते थे?''

अनवरी मुख देखती रह गई। वह स्मरण करने का यत्न कर रही थी। साधना ने अब उससे पुनः पूछ लिया, ''तुम्हारे भाई का नाम मधु था क्या?''

''हाँ,... नहीं याद नहीं रहा। कुछ ऐसा ही था।''

''तुम्हारा नाम सुनीता नहीं था क्या?''

''आप मुझको जानती हैं क्या?''

''हाँ। मैं समझती हूँ कि मैं तुमको पहचान गई हूँ। तुम बाबू श्यामनारायण की लड़की हो। तुम्हारी माँ का नाम कला था।''

''मुझको इस समय कुछ भी स्मरण नहीं पड़ रहा।''

''तुम अपने माता–पिता के पास जाना चाहोगी?''

''नहीं। मुझको इसमें कुछ अर्थ प्रतीत नहीं होता।''

''तो प्रसव के पश्चात् फिर यही काम करोगी?''

''बात यह है कि रुस्तमजी बहुत अच्छे आदमी हैं। उनकी पत्नी भी बहुत अच्छी हैं। वे बीमार रहती हैं। इस कारण मैं उनके साथ सह–पत्नी के रूप में रहती हूँ।''

''कितने वर्ष हो गये हैं उनके पास रहते हुए?''

''पहले बच्चे के रूप में रही। फिर लड़की के रूप में। युवती होने से पहले ही उनकी बीवी बन गई थी।

''उनकी पत्नी हमारे सम्बन्ध को जानती थी। जब गर्भ के लक्षण दिखाई देने लगे तो इसके विषय में वे दोनों विचार करने लगे। दो दिन हुए रुस्तमजी आपके इस गृह का विज्ञापन लिए हुए आये और अपनी पत्नी से राय कर मुझको समझा–बुझाकर टैक्सी में बैठा यहाँ भेज दिया। उन्होंने आते समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच सौ रुपया दिया है और कहा है कि आवश्यकता पड़ने पर और भी देंगे। प्रसव के पश्चात् वे बच्चे का भी प्रबन्ध कर देंगे और पुनः मुझको घर में रख लेंगे।''

दूसरे दिन साधना उसको लेकर लेखवती के पास पहुँची और उसको दिखाकर बोली, ''ताई! यह सुनीता है।''

सुनीता ने लेखवती को पहचाना तो रोने लगी। लेखवती ने उसकी पूर्ण कथा सुनी और अत्यन्त दुःख अनुभव करती हुई साधना से बोली, ''इसको रखो। इसके भापाजी से पूछना कि इसका क्या किया जाये।''

मधु के अपने माता–पिता से व्यवहार की बात लेखवती सुन चुकी थी। सुनीता ने भी कहा था कि वह अपने मालिक रुस्तमजी के घर में बहुत प्रसन्न है। इस कारण जीवन को नीरस पा वह कहने लगी, ''साधना! इसको चाय पिलाकर प्रसूति–गृह ले जाओ। फिर अपने भापाजी से राय कर लेना।''

इतना कहते–कहते वह वहीं भूमि पर लेट गई और तत्काल उसने प्राण छोड़ दिये।

द्वितीय भाग परिपूर्ण

081
167946

■ ■ ■

Central Library
167946
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-B आगत संख्या 167946

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

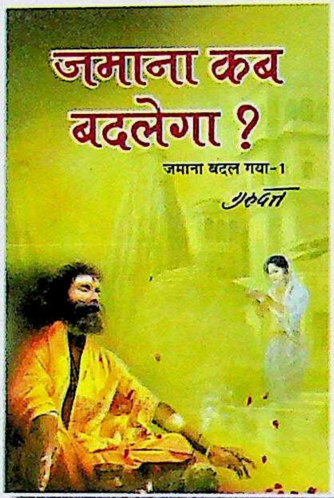

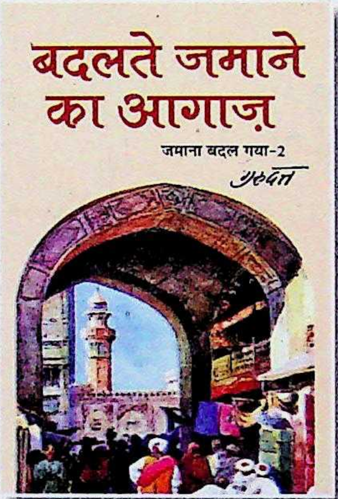

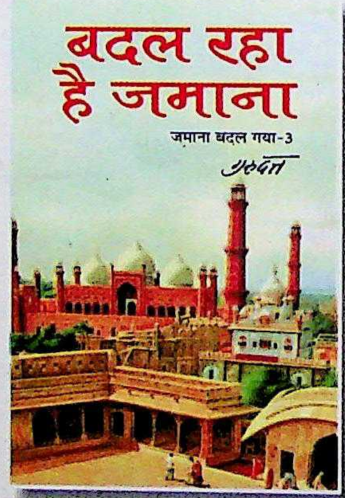

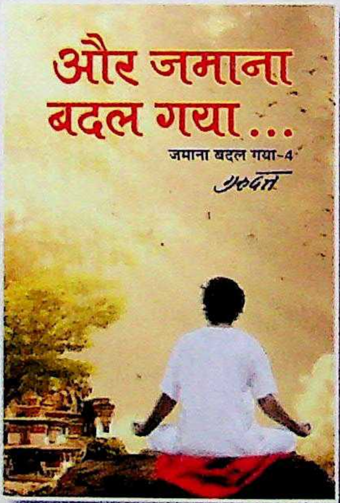

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005, फोन- 9213527666, 7065618655
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com
www.hindisahityasadan.com

9789386336743

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar